

आचार्य पूज्यपाद महाराज जी द्वारा विरचित

सिद्ध भक्ति

प्रवचनकर्ता

अर्ह योग प्रणेता

मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

प्रकाशक

आर्हत विद्या समिति

कृति : सिद्ध भक्ति

आशीर्वाद : परम पूज्य सन्त शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
परम पूज्य आचार्य श्री 108 समयसागर जी महाराज

प्रवचनकर्ता : अर्ह योग प्रणेता मुनि श्री 108 प्रणम्य सागर जी महाराज

पुण्यार्जक : प्रणम्यवाणी देवदूत

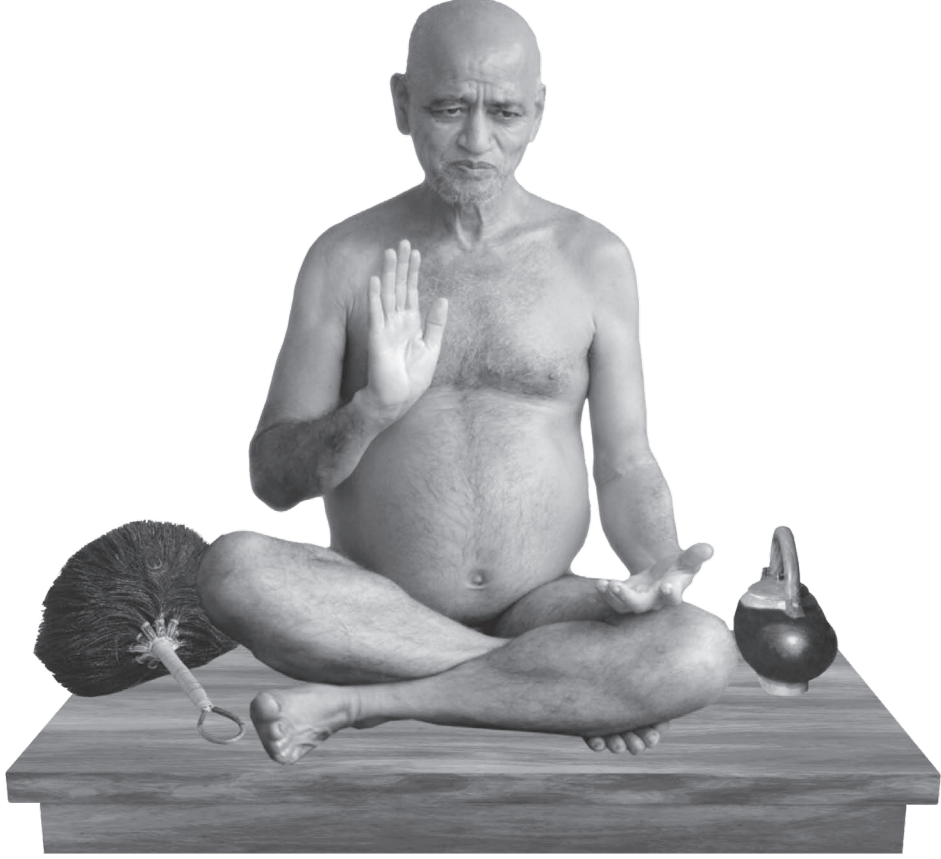
संस्करण : प्रथम, जुलाई 2024

प्रतियाँ : 1000

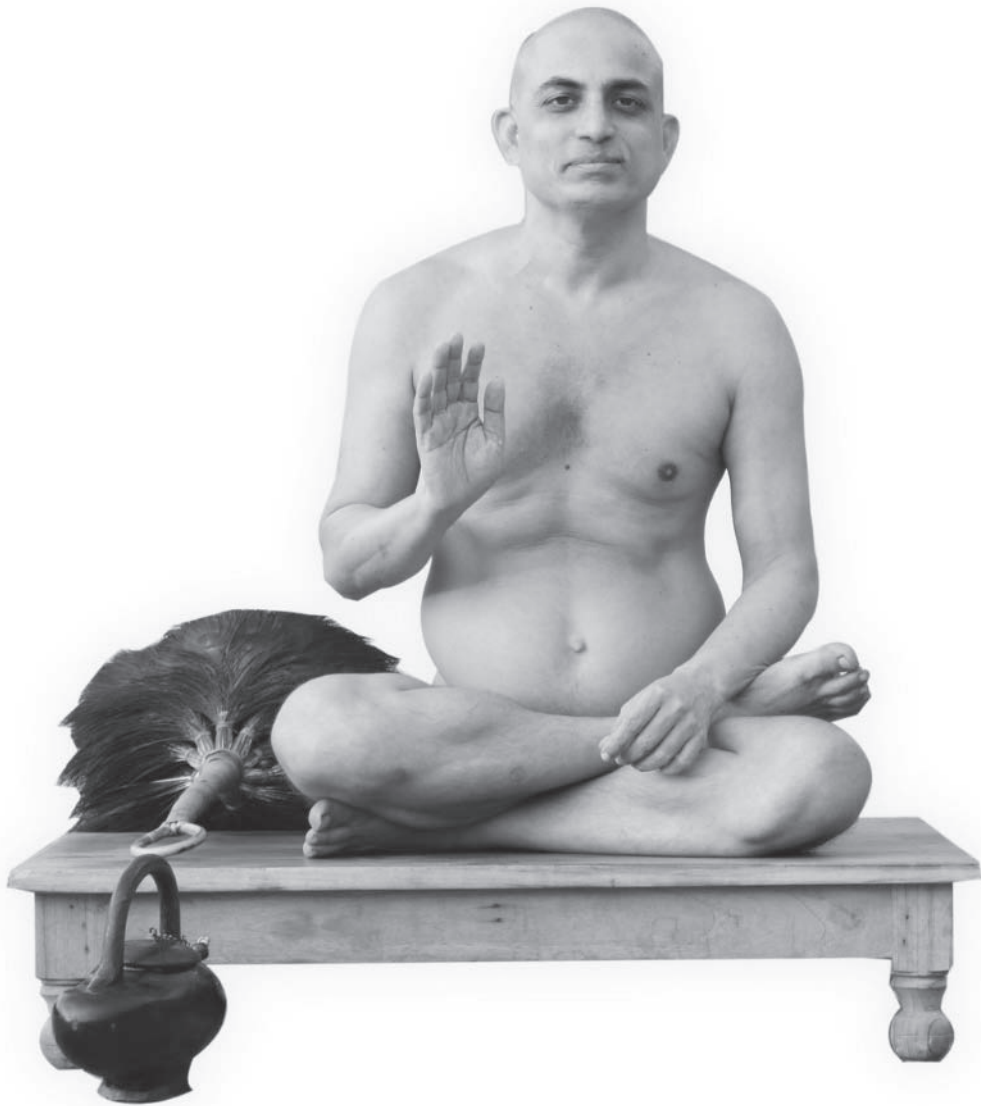
आईएसबीएन : 978-81-969868-0-3

प्रकाशक : आर्हत विद्या समिति, गोटेगाँव
मोबाइल: 9425837476

प्राप्ति स्थान : १. आर्हत विद्या समिति, गोटेगाँव,
मोबाइल : 9425837476 (नवीन जैन)
२. आचार्य अकलंक देव जैनविद्या शोधालय समिति
109, शिवाजी पार्क, देवास रोड, उज्जैन (म. प्र.)
दूरभाष: 2519071



संत शिरोमणी परम पूज्य आचार्य
श्री 108 विद्यासागर जी महाराज



अहं योग प्रणेता
मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

अर्ह योग प्रणेता मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

पूर्व नाम	: ब्र. सर्वेश जी
पिता-माता	: श्री वीरेन्द्रकुमार जी जैन, श्रीमती सरितादेवी जैन
जन्म	: 13.09.1975, भाद्रपद शुक्ल अष्टमी, भोगाँव, जिला-मैनपुरी (उ.प्र.)
शिक्षा	: बी.एस.सी. (अंग्रेजी माध्यम)
भाई	: सचिन जैन
बहिन	: सपना जैन
गृहत्याग	: 09.08.1994
क्षुल्लक दीक्षा	: 09.08.1997, नेमावर
ऐलक दीक्षा	: 05.01.1998, नेमावर
मुनि दीक्षा	: 11.02.1998, माघसुदी पूर्णिमा, बुधवार, मुक्तागिरिजी
दीक्षा गुरु	: संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

चातुर्मास स्थान

2008- बेगमगंज	2016- बिजौलिया
2009- सिरोंज	2017- रेवाडी
2010- नारसिंहपुर	2018- दिल्ली
2011- घंसौर	2019- मेरठ
2012- गोटेगांव	2020- मुज़फ्फरनगर
2013- उज्जैन	2021- आगरा
2014- भिंडर, राजस्थान	2022- पनागर
2015- मंदसौर	2023- सतना

अर्ह योग प्रणेता मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज द्वारा साहित्य सृजन

संस्कृत भाषा में टीका ग्रन्थ

१. लिङ्गपाहुड़ (नन्दिनी टीका)
२. शील पाहुड़ (नन्दिनी टीका)
३. समाधि तन्त्र (आर्हतभाष्य)
४. चैतन्य चन्द्रोदय (चन्द्रिका टीका)
५. बारसाणुवेक्खा (कादम्बिनी टीका)
६. आत्मानुशासन (स्वस्ति टीका)
७. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय (मंगला टीका)
८. प्रश्नोत्तर रत्नमालिका ('नीति-पथ')
९. तत्त्वार्थ सूत्र (तत्त्व संदीपिनी टीका, संस्कृत-प्राकृत)
१०. संस्कृत एवं प्राकृत भक्ति (आठ भक्तियों की टीका)

हिन्दी में अनुवादित ग्रन्थ

१. सत्सकर्म पंजिका
२. दश भक्ति टीका
३. प्रवचनसार (सरोज भास्कर टीका)
४. कथा कोश
५. सत्य शासन परीक्षा
६. युक्त्यनुशासन
७. नाममाला (भाष्य)
८. सत्संख्यादि अनुयोगद्वार
९. पात्रकेसरी स्तोत्र
१०. अष्टाष्टक स्तोत्र
११. संन्यास एषोस्तु किमात्मघातः
१२. चतुर्विंशति तीर्थकर स्तुति (आ. माघनन्दि)
१३. नियमसार
१४. समयसार
१५. परीक्षामुख
१६. प्रतिक्रमण-ग्रन्थत्रयी

पद्यानुवाद

१. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय
२. प्रश्नोत्तर रत्नमालिका
३. तत्त्वार्थ सूत्र
४. पात्र केसरी स्तोत्र
५. कल्याणमन्दिर स्तोत्र
६. श्री वर्धमान स्तोत्र
७. मंगलाष्टक
८. माघनन्दी कृत अभिषेक पाठ
९. उपयोग शतक

प्रवचन ग्रंथ

१. बारसाणुवेक्खा
२. नई छहढाला प्रवचन
३. परमात्म योग (समाधि तन्त्र)
४. जीव विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय - २)
५. मनोविज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-६)
६. लोक विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-३, ४)
७. व्रत विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-७)
८. अध्यात्म योग (इष्टोपदेश)
९. प्रवचनसार का सार (गाथा १-२६)
१०. प्रवचनसार का सार (गाथा २७-६०)
११. प्रवचनसार का सार (गाथा ६१-१०१)
१२. प्रवचनसार का सार (गाथा १०२-१३६)
१३. प्रवचनसार का सार (गाथा १३७-१७५)

१४. कर्म बंध विज्ञान
१५. धर्म का मर्म (अपने को समझें)
१६. राम कथा
१७. पञ्च लब्धि
१८. स्त्री को मोक्ष क्यों नहीं
१९. मेरी भावना को अपनी भावना बनाएँ
२०. तत्त्व विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-१)

संस्कृत भाषा में मौलिक काव्य ग्रन्थ

१. स्तुति पथ
२. श्रायस पथ
३. सिद्धोदयाष्टकम्
४. श्री वर्धमान स्तोत्र
५. अनासक्त महायोगी (आचार्य श्री का जीवनवृत्त)
६. उपयोग शतकम्
७. अर्ह अष्टाङ्ग योग शतकम्
८. आ. श्री शान्तिसागर स्तुति शतकम्
९. श्री शान्तिनाथ स्तोत्र (शतकम्)
१०. महामह नन्दीश्वर विधान
११. गोवैभवशतकम् (आयुर्वेद सम्बन्धी)
१२. चतुर्विंशति-जिनस्त्रोत्रम् (पूजा एवं विधान)
१३. मुनिसुव्रत भगवान् आराधना

प्राकृत भाषा में मौलिक ग्रन्थ

१. तित्थयर भावणा (सोलहकारण भावनाओं पर प्राकृत गाथाएँ)
२. दार्शनिक प्रतिक्रमण
३. अष्टपाहुड़ (प्राकृत टीका १६)
४. धम्मपह
५. प्राकृत रचना भास्कर
६. प्राकृत शिक्षा भाग १-२-३-४
७. गोमटेस पडिमा भक्ति

अन्य मौलिक कृतियाँ

१. युगद्रष्टा (भगवान् ऋषभदेव पर उपन्यास)
२. जैन सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य
३. खोजो मत पाओ (लाइफ मैनेजमेंट)
४. आलेख पथ (२० सैद्धान्तिक आलेख)
५. समयसार का ज्ञानी आत्मा कौन?
६. अन्तर्गन्ज (भजन एवं हायकू)
७. लहर पर लहर (कविता संग्रह)
८. बेटा! (शिक्षाप्रद सूक्तियाँ)
९. नई छहढाला
१०. लक्ष्य (जीवंधर चरित्र)
११. मुनिसुव्रतनाथ विधान
१२. अर्ह दोहावली
१३. अर्ह ध्यान योग
१४. जिंदगी क्या है? (प्रवचन ग्रन्थ)

संकलन

१. संवाद (आचार्य श्री और बाबा रामदेव की चर्चा)
२. A Talk (संवाद का अंग्रेजी अनुवाद)
३. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय अनुशीलन

अंग्रेजी भाषा में

१. Fact of Fate (Article)
२. Twelve Contemplation
३. I Love You My Soul

प्रस्तावना

प्रस्तुत कृति 'सिद्धभक्ति' परम पूज्य मुनिश्री प्रणम्यसागर जी की प्रवचनात्मक प्रस्तुति है। मुनिवर प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के प्रकाण्ड विद्वान् हैं। उनके द्वारा लिखित अनेक कृतियाँ आज प्रकाशित हैं, प्रचलित तथा लोकोपकारी हैं। इस कृति में उन्होंने पूज्यपाद स्वामी की 'सिद्धभक्ति' की विशिष्ट व्याख्या की है। जो सामान्य जन समुदाय के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। इससे पूर्व कि प्रस्तुत कृति पर प्रकाश डाला जाये, आचार्य पूज्यपाद स्वामी का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक है। संस्कृत की भक्तियों के रचयिता आचार्य पूज्यपाद स्वामी में कवि, वैयाकरण और दार्शनिक इन तीनों व्यक्तित्वों का एकत्र समवाय पाया जाता है। आचार्य जिनसेन ने आदिपुराण में, आचार्य शुभचन्द्र जी ने ज्ञानार्णव में, आचार्य जिनसेन ने हरिवंश पुराण में तथा अन्य आचार्यों ने भी आचार्य पूज्यपाद स्वामी की ज्ञानगरिमा एवं महता का उल्लेख किया है। उनकी निम्नलिखित रचनाएँ उपलब्ध हैं... 1. देशभक्ति, 2. जन्माभिषेक, 3. तत्त्वार्थवृत्ति (सर्वार्थसिद्धि), 4. समाधितन्त्र, 5. इष्टोपदेश, 6. जैनेन्द्र व्याकरण, 7. सिद्धिप्रिय स्तोत्र। इनका मूल नाम देववन्दि था। इन्हें बुद्धि की प्रखरता के कारण 'जिनेन्द्रबुद्धि' और देवों के द्वारा चरणों की पूजा किये जाने के कारण 'पूज्यपाद' कहा गया है। साँप के मुँह में फंसे हुए मेंढक को देखकर इन्हें वैराग्य हो गया था।

अनुराग को ही भक्ति कहा गया है। अनुराग मोह का रूपान्तर है किन्तु वीतराग के प्रति किया गया अनुराग मोह की कोटि में नहीं आता है। भक्त का अनुराग निःस्वार्थ होता है जबकि मोह स्वार्थपूर्ण होता है। वीतरागी से अनुराग करने का अर्थ है- तदनुरूप होने की प्रबल आकांक्षा का होना। आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने सिद्धभक्ति में सिद्धरूप होने की प्रक्रिया प्रदर्शित की है।

जैनागम में भक्ति के द्वादश भेद हैं- 1. सिद्धभक्ति, 2. श्रुतभक्ति, 3. चारित्राभक्ति, 4. योगिभक्ति, 5. आचार्यभक्ति, 6. पञ्च गुरुभक्ति, 7. तीर्थंकर भक्ति, 8. शान्ति भक्ति, 9. समाधिभक्ति, 10. निर्वाणभक्ति, 11. नन्दीश्वरभक्ति और 12. चैत्यभक्ति। आचार्य पूज्यपाद स्वामी की संस्कृत में सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चारित्राभक्ति, योगिभक्ति, आचार्यभक्ति, निर्वाणभक्ति और नन्दीश्वरभक्ति, ये सात भक्तियाँ ही उपलब्ध हैं। ये भक्तियाँ काव्य की दृष्टि से अत्यन्त सरस और गम्भीर हैं। आठों कर्मों के नाश से शुद्ध आत्मा की प्राप्ति होना सिद्धि है और इस सिद्धि को प्राप्त करने वाले सिद्ध कहलाते हैं। साधक को सिद्धभक्ति के प्रभाव से सिद्ध पद की प्राप्ति हो जाती है।

सामान्य रूप से अपने श्रद्धेय के प्रति विशुद्ध भावों की अभिव्यक्ति ही भक्ति है। **भक्ति शब्द की व्युत्पत्ति है...** **भज+क्तिन्=भक्ति अर्थात् उपासना, अनुरक्ति इत्यादि।** परन्तु जैनाचार्यों ने श्रद्धेय के यथार्थ रूप-स्वरूप को भक्ति के माध्यम से सुस्पष्ट किया है। यथा सिद्धभक्ति में मत-मतान्तरों में सिद्धों का स्वरूप किस प्रकार का है एवं वास्तविक स्वरूप क्या होना चाहिए, खण्डन-मण्डन करते हुए यथार्थ भक्ति का परिचय दिया है। इन भक्तियों में जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों-मान्यताओं को सुस्पष्ट करते हुए अपने इष्ट का गुणानुवाद किया गया है जो उनके समीप जाने के लिए एक निमित्त है। पूजा, प्रार्थना, वन्दना, स्तुति, स्तोत्र, स्मरणादि सभी इसके अविनाभावी हैं। अतः किसी भी निमित्त से अपने इष्ट-प्रभु का गुणानुवाद करते हुए पुकारना भक्ति है।

भक्ति में याचना नहीं अपितु निष्काम प्रार्थना की जाती है। भक्त कहीं-कहीं भक्ति के निमित्त से अपने कष्ट निवारण हेतु प्रार्थना भी करता है किन्तु दीनतापूर्वक नहीं, अपना समर्पण प्रदर्शित करता है। अपने मिथ्या मन-वचन-काय के बल का विसर्जन करना ही भक्ति है। वास्तव में भक्ति का यथार्थ फल मुक्ति है। इसी उद्देश्य को लेकर जैनाचार्यों ने भक्ति को भी महत्व दिया है।

सतना (म.प्र.) में ‘सिद्धचक्र विधान’ के आयोजन के समय परम पूज्य मुनिवर प्रणम्यसागर जी के मन में विधान के साथ-साथ ‘सिद्धभक्ति’ पर प्रवचन करने का अत्युत्तम विचार आया जो कि प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रणयन का कारण बना। मुनिप्रवर कहते हैं कि किसी भी मंगलकार्य को प्रारम्भ करने से पहले सिद्ध भगवान को स्मरण किया जाता है। जिन आत्माओं ने अपने आठों कर्मों को नष्ट करने का मोक्षपुरुषार्थ किया है वे सिद्धपद को प्राप्त कर लेते हैं। मुनिप्रवर कहते हैं कि ऐसे सिद्ध भगवन्तों का स्मरण करने से हमारे अन्दर भी पुरुषार्थ जागृत होना बड़ी बात नहीं है लेकिन यह तब होगा जब हम उनकी ओर दृष्टि रखेंगे।

मुनिश्रेष्ठ कहते हैं कि ‘अर्ह’ का ध्यान करके अपनी विशुद्धि बढ़ानी चाहिए। श्रावक जिनवाणी में पढ़ते हैं...

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।

सिद्धचक्रस्य सद् बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम्॥

अर्थ- ‘अर्ह’ यह अक्षर परमब्रह्म-परमेष्ठी के वाचक हैं। सिद्ध समूह के इन सुन्दर बीजाक्षरों को मैं मन-वचन-काय से नमस्कार करता हूँ।

‘अर्ह’ के ध्यान करने की पुष्टि आचार्य योगीन्द्र देव कृत ‘ज्ञानांकुशम्’ नामक ग्रन्थ के इस श्लोक से भी होती है-

गच्छन् वा यदि वा सुप्त, आलापं चापि भोजनं।

कुर्वन्नाप्नोति तद् ध्यानं, येनात्मा लभते शिवम्॥12॥

अर्थ- चल रहा हो, सोया हुआ हो, बोल रहा हो अथवा भोजन कर रहा हो, उस समय भी वह ध्यान को प्राप्त करता है। जिससे आत्मा शिवपद को प्राप्त करता है।

आचार्य पूज्यपाद स्वामी ऐसी ही स्थिति का वर्णन करते हुए ‘दृष्टोपदेश’ ग्रन्थ में लिखते हैं...

ब्रुवन्नपि हि न ब्रूते, गच्छन्नपि न गच्छति।

स्थिरिकृतात्मतत्त्वस्तु, पश्यन्नपि न पश्यति॥41॥

अर्थ- जो आत्मतत्त्व में स्थिर हो गया है, वह बोलता हुआ भी नहीं बोलता है, चलता हुआ भी नहीं चलता है और देखता हुआ भी नहीं देखता है। अर्थात् वह सम्पूर्ण क्रियाओं को करता हुआ कोई भी क्रिया नहीं करता है।

मुनिवर अपने प्रवचनों में कहते हैं कि तुम हर समय सोते-जागते, उठते-बैठते हुए ‘अर्ह-अर्ह’ का ध्यान करो। ऐसा करते हुए सिद्धों के अमूर्त आदि गुणों तक पहुँच जाओ तो अच्छा है अन्यथा केवल पाठ करना भी लाभप्रद है। ‘अर्ह’ के नाद करने से बहुत से असाध्य रोग भी ठीक हो जाते हैं। थायराइड, पेट की बीमारियाँ, अनिद्रा, डिप्रेशन जैसे रोग भी ‘अर्ह’ के नाद से ठीक हो जाते हैं। मिथ्यात्व से रहित, सिद्धों के अनुपम गुणों में आकृष्ट होकर ही भक्ति की जाती है। ‘तत्-अनुपम-गुण-प्रग्रह-आकृष्टि-तुष्टः’। यह पद

विचारणीय है- जैसे कुएँ में गिरी वस्तु को रस्सी से ऊपर खींचा जाता है, वैसे ही संसार रूपी गहन कूप में गिरे भव्य जीवों को सिद्ध-परमेष्ठियों के अनुपम गुणों में की जाने वाली भक्ति रूपी रस्सी ही तिराने में समर्थ हो सकती है। **भक्ति का लक्ष्य 'स्वात्मोपलब्धि' ही होना चाहिए।** गुरुवर बच्चों को प्रेरित करते हुए कहते हैं कि हमारा लक्ष्य सांसारिक उपलब्धियों का नहीं अपनी आत्मा की उपलब्धि की ओर ही रहना चाहिए। आचार्य कहते हैं कि कार्य उपादान की योग्यता से ही होता है। जिस प्रकार स्वर्ण पाषाण की किट्ट-कालि-मा को अग्नि के सोलह ताव द्वारा दूर करके शुद्ध स्वर्ण प्राप्त किया जाता है, **उसी प्रकार अष्ट कर्मों से आवृत्त हुआ भव्य आत्मा 'बारह तप व चार आराधना रूप सोलह ताव' देकर कर्म-कीट रहित होकर सिद्ध पर्याय को प्राप्त होता है।**

मुनिप्रवर कहते हैं कि श्रोताओं में तीन गुण होने चाहिए...1.सभा में बैठने की योग्यता, 2.सुनने की योग्यता, 3. समझने की योग्यता। यदि आपका दिमाग सन्तुलित होगा तो आप सन्तुलित जीवन जी सकेंगे और धर्म के माध्यम से आपकी योग्यता बढ़ते-बढ़ते मोक्ष तक पहुँचा सकती है।

आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने दूसरे पद में अन्य दर्शनों की मान्यताओं का निराकरण करके सिद्ध भगवान के अनुपम गुणों का सुन्दर चित्रण किया है। पद्य है...

**नाभावः सिद्धि-रिष्टा न, निज-गुण-हतिस्तत् तपोभिर्न युक्तेः,
अस्त्यात्मानादि बद्धः स्व-कृतज-फल-भुक्-तत्-क्षयान् मोक्षभागी।
ज्ञाता दृष्टा स्वदेह- प्रमिति, रूपसमाहार-विस्तार-धर्मा,
ध्रौव्योत्पत्ति-व्ययात्मा, स्व-गुण-युत इतो नान्यथा साध्य-सिद्धिः॥२॥**

बौद्ध दर्शन के अनुसार तेल के क्षय हो जाने पर दीपक की लौ इधर-उधर, ऊपर-नीचे कहीं न जाकर वहीं समाप्त हो जाती है, उसी प्रकार कर्मों का क्षय हो जाने से आत्मा वहीं समाप्त हो जाता है, यही सिद्धि है। उक्त कथन का निराकरण करने के लिए आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने लिखा है- **“नाभावः सिद्धि-रिष्टा”** अर्थात् का अभाव हो जाने रूप सिद्धि इष्ट नहीं है।

योग व वैशेषिक दर्शनों की मान्यता है कि बुद्धि, ज्ञान, सुख, इच्छा आदि विशेष गुणों का नाश सिद्धि है। आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने लिखा है... **“तत्तपोभिर्न युक्तेः”!** क्योंकि कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति अपने विशिष्ट गुणों का नाश करने के लिए तप आदि को नहीं करता।

चार्वाक मानते हैं कि आत्मा की उत्पत्ति पृथ्वी आदि से होती है। वे आत्मा के अस्तित्व को शरीर से अति-रिक्त स्वीकार नहीं करते। निराकरण स्वरूप आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने **“अस्त्यात्मा”** पद दिया है। अर्थात् आत्मा है।

ईश्वरवादी दर्शन आत्मा को **“सदा-अकर्मा”** मानते हैं। भक्ति में **“अनादि बद्धः”** पद देकर उसका निराकरण किया गया है। अर्थात् प्रत्येक आत्मा अनादिकाल से कर्मबद्ध है, वह अपनी विशुद्धि, साधना व तपश्चरण आदि से कर्म रहित होता है।

वेदान्त दर्शन जीव को लोकव्यापी मानता है, जिसका खण्डन **“स्वदेह प्रमिति”** पद देकर किया है। अर्थात् आत्मा नामकर्म के उदय से प्राप्त अपने शरीर प्रमाण है। आत्मा संकोच विस्तार स्वभाव वाला होने के कारण

जैसा शरीर प्राप्त होता है, उसमें रहता है। जैसे चींटी के शरीर में संकोच को तथा हाथी के शरीर में विस्तार को प्राप्त होता है।

सांख्य दर्शन की मान्यता है कि कर्म का कर्ता पुरुष(आत्मा) नहीं है अपितु प्रकृति है तथा कर्मफल का भोक्ता भी आत्मा नहीं है। इसका निराकरण करने के लिए **“स्व-कृतज-फल-भुक्”** पद दिया है जिसका भाव है कि अपने द्वारा किये गये कर्मों के फल को स्वयं भोगता है।

वैशेषिक और योग दर्शनों की मान्यता है कि सिद्ध अवस्था में आत्मा के गुणों का नाश हो जाता है। यहाँ **“ज्ञाता-दृष्टा”** पद देकर उसका खण्डन किया गया है। अर्थात् मुक्त अवस्था में भी आत्मा ज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य आदि अनन्त गुणों का स्वामी रहता है।

नैयायिक दर्शन गुण और गुणी में सर्वथा भेद मानता है, उसका निराकरण **“स्व-गुण-युत”** पद द्वारा किया गया है। भाव यह है कि आत्मा सदैव अपने आत्मीय गुणों से तन्मय रहता है।

सांख्य दर्शन आत्मा को कूटस्थ नित्य मानता है तथा बौद्ध दर्शन मानता है कि आत्मा क्षण-क्षण में नष्ट हो रहा है। इनका निराकरण करने के लिए आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने यहाँ **“ध्रौव्योत्पत्ति व्ययात्मा”** पद दिया है। अर्थात् आत्मा सांख्य दर्शन की तरह कूटस्थ नित्य नहीं है अपितु द्रव्यदृष्टि से नित्य है तथा बौद्ध दर्शन की तरह सर्वथा क्षणिक भी नहीं है किन्तु पर्यायदृष्टि से अनित्य एवं उत्पाद-व्यय स्वभाव वाला है। अर्थात् आत्मा नित्यानित्यात्मक है।

इस स्तुति पद में द्रव्यसंग्रह की गाथा नम्बर 2 का मानो सजीव चित्राण ही है-

जीवो उवओगमओ अमुत्तिकत्ता सदेह परिमाणो ।

भोक्ता संसारत्थो सिद्धों सो विस्ससोड्ढगई॥2॥

- द्रव्यसंग्रह

भावार्थ: जो जीने वाला है, उपयोगमय है, अमूर्तिक है, कर्ता है, स्वदेह प्रमाण वाला है, भोक्ता है, संसार में स्थित है, सिद्ध है और स्वभाव से ऊर्ध्वगमन करने वाला है, वह जीव (आत्मा) है।

आचार्य कहते हैं...यह जीवात्मा अनादिकाल से कर्मों से बद्ध है तथा कर्मों से मुक्त होने के लिए रत्नत्रय की प्राप्ति आवश्यक है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र्य तीनों के अन्तरंग-बहिरंग कारणों के मिलने पर ही रत्नत्रय की प्राप्ति होती है। सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में दर्शन मोहनीय कर्म का उपशम, क्षय, क्षयोपशम अन्तरंग कारण है। पाँच लब्धियों की प्राप्ति भी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में कारण हैं...क्षयोपशम लब्धि, विशुद्धि लब्धि, देशना लब्धि, प्रायोग्य लब्धि, करणलब्धि...ये पाँच लब्धियाँ होती हैं। मुनिवर ने पाँच लब्धियों का सुष्ठु रूप से वर्णन किया है। मनुष्य के लिए सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में बहिरंग कारण हैं...जाति स्मरण, जिनबिम्ब दर्शन और धर्म उपदेश श्रवण। रत्नत्रय की विशुद्धि से संसारी आत्मा चार घातिया कर्मों का क्षय करके अनन्त चतुष्टय प्राप्त करता है तथा अरिहन्त अवस्था को प्राप्त होता है। सामान्य अरिहन्त केवली और तीर्थंकर में अन्तर होता है। तीर्थंकर विशेष पुण्यशाली होते हैं, स्वयंभू होते हैं तथा समवशरण आदि बहिरंग लक्ष्मी के स्वामी होते हैं। अरिहन्त अवस्था में केवलज्ञान के द्वारा समस्त लोकालोक को जानते-देखते रहते हैं।

अरिहन्त देव शेष चार अघातिया कर्मों की प्रकृतियों का क्षय करके सिद्ध अवस्था को प्राप्त होकर अनन्त-

काल के लिए ऊपर लोकाग्र में विराजमान हो जाते हैं, क्योंकि आत्मा का स्वभाव ऊर्ध्वगमन का है। आचार्य कहते हैं कि अघातिया कर्मों की प्रकृतियाँ भी बेड़ी के समान बलवान हैं, उनको भी केवली भगवान ही काट सकते हैं अन्य सामान्य मुनिजन नहीं। चार अघातिया कर्मों के अत्यन्त क्षय होने से उत्पन्न सूक्ष्मत्व, अवगाहनत्व, अगुरुलघुत्व व अव्याबाधत्व गुणों से सुशोभित होते हैं। विशेष ज्ञातव्य है कि सिद्धक्षेत्र पर सभी सिद्धपरमेष्ठियों के सिर लोकान्त से स्पृष्ट रहते हैं और शेष भाग अपनी-अपनी अवगाहना के अनुसार नीचे रहता है। मनुष्य जिस शरीर से मुक्त होता है, उसका वह अन्तिम शरीर चरम शरीर कहलाता है। मुक्त जीवों का शरीर चरम शरीर से कुछ कम आकार वाला होता है। सम्पूर्ण कर्मों के क्षय होने से सिद्ध अवस्था में पूर्व शरीर के आकार का तथा अमूर्तिक ही रहता है। सिद्ध भगवान सभी रोगों से मुक्त होते हैं और अनन्त सुखों को प्राप्त हो जाते हैं।

मुनिश्रेष्ठ कहते हैं कि ध्यान की दो ही अवस्थाएँ हैं- पद्मासन व खड्गासन। आसन की सिद्धि के बिना ध्यान की सिद्धि नहीं और ध्यान की सिद्धि के बिना केवलज्ञान नहीं होता। सिद्धों को ज्ञान चक्षु से ही देखा जा सकता है। सिद्धपरमेष्ठी का सुख आत्मा के उपादान से उत्पन्न होने से स्वाभाविक है, शाश्वत है, अव्याबाध है, अनुपम है, आत्मा के सभी प्रदेशों में व्याप्त होकर रहता है, न कभी घटता है और न कभी बढ़ता है। सिद्धपरमेष्ठी का सुख संसारी जीवों के सुख से अत्यन्त विलक्षण आत्मसापेक्ष है।

सिद्धपर्याय पूर्ण स्वतंत्रता का प्रतीक है। सिद्धपरमेष्ठी के क्षुधा, तृषा आदि दोषों का पूर्ण अभाव हो गया है अतः उन्हें भोजन, पानी आदि से कोई प्रयोजन नहीं रहता। शरीर का अभाव होने से अशुचिता का स्पर्श नहीं है अतः उन्हें सुगन्धित द्रव्यों से कोई प्रयोजन नहीं है। अनन्तवीर्य सम्पन्न होने से त्रिकालवर्ती समस्त पदार्थों को देखते-जानते रहने पर भी वे कभी थकते नहीं, अतः कोमल शय्या से भी कोई प्रयोजन नहीं रहता। जैसे रोग के अभाव में औषधि का कोई प्रयोजन नहीं, उसी प्रकार सिद्धपर्याय में पर द्रव्यों का कोई प्रयोजन नहीं रहता।

सिद्ध भगवान अष्ट कर्मों के क्षय से अनन्त गुण रूपी सम्पत्ति के स्वामी होकर लोकाग्र में शोभायमान हैं। वे अनेक प्रकार के नय, तप, संयम, सम्यक्त्व ज्ञान-दर्शन-चारित्र आदि से सिद्ध अवस्था को प्राप्त हुए हैं। जिनका यश समस्त जगत में व्याप्त है, ऐसे उन त्रिकालवर्ती सिद्धों को शीघ्र सिद्ध पद की प्राप्ति के लिए नमस्कार करता हूँ। ठीक ही है जो जिस गुण का इच्छुक है, वह उन गुणों से युक्त महापुरुषों की आराधना करता ही है। आचार्य पूज्यपाद स्वामी कहते हैं कि मैं आपके समान बनना चाहता हूँ, अतः शीघ्र सिद्ध पद की प्राप्ति के लिए मैं आपकी प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल, इन तीनों सन्ध्याओं में वन्दना करता हूँ।

समस्या है तो समाधान भी है

पूज्य गुरुवर ने सिद्ध भक्ति के साथ-साथ श्रावकों को विभिन्न विषयों के प्रति जागरूक होने के लिए महत्वपूर्ण सन्देश भी दिये हैं। ‘श्रेणिक चारित्र’ के माध्यम से बुद्धि चातुर्य बढ़ाने की प्रेरणा दी है। राजा उपश्रेणिक के कथानक से शिक्षा मिलती है कि विपत्ति के समय भी अपने धर्म पालन के प्रति सावधान रहो। राजा श्रेणिक व अभयकुमार के बुद्धि चातुर्य की बहुत सी कथाओं का समावेश किया गया है। आज की युवा पीढ़ी डिग्रियों के पीछे भाग रही है। लेकिन कोई समस्या आती है तो एकदम हताश, निराश हो जाते हैं और डिप्रेशन में चले जाते हैं तथा कभी-कभी तो आत्महत्या तक कर लेते हैं। आज पारिवारिक हिंसा के समाचार भी समाचार पत्रों में बहुत देखने को मिलते हैं। ऐसी गम्भीर परिस्थितियों से बचने के लिए ही महाराज जी

ने बार-बार कहा है कि...**समस्या है तो समाधान भी है।** विपरीत स्थिति में पलायन मत करो, उनका साहस पूर्वक सामना करो व समाधान खोजो। अपने बुद्धि चातुर्य को बढ़ाओ। आज प्रत्येक श्रावक-श्राविका को **‘श्रेणिक चारित्र’** पढ़ने की महती आवश्यकता है।

शरीर का रोग- सबसे बड़ा आतंकवादी

मुनिश्रेष्ठ कहते हैं कि सबसे बड़ा आतंकवादी शरीर का रोग है। जब रोग शरीर को घेर लेते हैं तो यह मनुष्य धर्म-कर्म सब भूल जाता है। रोग का आन्तरिक कारण असाता का उदय है और बाह्य कारण गलत खान-पान व दोषपूर्ण दिनचर्या है। भोजन विज्ञान के प्रति सचेत करते हुए कहते हैं कि भोजन शाकाहारी हो, प्रकृति के अनुकूल हो तथा समय पर ही करें। विविध खाद्यान्नों व उनकी विशेषताओं की ओर भी संकेत किया है। आज बाहर खाने की प्रवृत्ति बढ़ी है। अभक्ष्य भक्षण से बचें। आज बलवान समाज की नितान्त आवश्यकता है। निश्चिन्ता को ही सबसे बड़ी निरोगता कहा गया है।

मुनिवर ने श्रावकों के लिए बहु आयामी सार्थक उपदेश दिये हैं। उन पर चलकर श्रावकगण अपना मोक्ष-मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। साथ ही समाज को सशक्त बनाने की भी महाराज की प्रबल भावना है। वे कहते हैं कि बच्चों को सही दिशा निर्देश दें। आज धनोपार्जन अशान्ति का बहुत बड़ा कारण बन गया है। इस अंधी दौड़ के कारण बच्चों के विवाह में देरी और सन्तानोत्पत्ति का सुख भी बहुत पीछे छूट गया है। समाज में कुरीतियाँ व्यप्त हो गयी हैं। सन्तान दो भी नहीं एक ही अधिक है की मानसिकता बन रही है। जैनेतर विवाह सम्बन्धों की तथा विवाह सम्बन्ध-विच्छेदों की मानो बाढ़ ही आ गयी है। जैन धर्मावलम्बियों की संख्या कम होती जा रही है।

सिद्ध भगवान् ज्योति स्वरूप हैं, भगवान् के प्रकाश का स्मरण करने से पाप रूपी अन्धकार नष्ट होता है। सिद्ध भगवान् का स्मरण ही लोकयश का कारण है। तपस्या का मार्ग ही मोक्ष का मार्ग है। शुद्धात्मा बनने के लिए सिद्धों से श्रेष्ठ आदर्श अन्य कोई नहीं है। अतः सिद्धों का ध्यान करना चाहिए।

इस प्रकार प्रस्तुत कृति में मुनिवर ने सिद्धों की आराधना करते हुए उनके अपरिमित गुणों का वर्णन तो किया ही है, साथ-साथ जन-कल्याण के हेतुभूत विविध विषयों पर अपना मार्गदर्शन भी दिया है। महाराज जी की प्रबल भावना है कि सभी श्रावक जन स्वस्थ, बलिष्ठ, संयमी तथा सदाचारी बनें। समाज व धर्म का सर्वांगीण विकास हो तथा जैन धर्म की विजय पताका सर्वत्र फहराती रहे।

प्रो. श्रीचन्द्र जैन
(पूर्व प्राचार्य के.एल.पी. कालेज, रेवाड़ी)
अजित प्रसाद जैन

अणुक्रमणिका

1. स्वात्मोपलब्धि- सिद्ध भक्ति का प्रयोजन	1
2. सिद्धों के अस्तित्व की स्वीकारता ही सम्यग्ज्ञान है	15
3. भव्य आत्मा में ही सिद्ध होने की योग्यता होती है	30
4. लगन लगाओ सिद्धों में	45
5. जीवन में गुरु का महत्व	58
6. सिद्धों में उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य	66
7. सम्यग्दर्शन की पहचान करने और योग्य उपादान बनने की प्रक्रिया	81
8. गणित के ज्ञाता और शून्य के आविष्कारक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान	97
9. धर्म सनातन नहीं-अहिंसा की परंपरा सनातन है	110
10. अरिहंत और सिद्ध का अंतर	127
11. हर व्यक्ति में स्वयं भगवान बनने की शक्ति है	143
12. सिद्ध भगवान में प्रकट अष्टगुण	157
13. अरिहंत भगवान अष्टकर्मों का नाश करके ही सिद्धत्व प्राप्त करते हैं	167
14. सिद्ध भगवान का स्वरूप	192
15. आत्मा और शरीर का स्वभाव अलग अलग है	208
16. श्रद्धा की सहज सरल अभिव्यक्ति ही प्रभु की अराधना	221
17. सिद्ध भगवान का अनन्त सुख परम शांति देने वाला है	239
18. सिद्ध भगवन्तों के अतिशय की महिमा	254
19. सांसारिक सुख : सुखानुभूति अथवा दुःख का प्रतिकार	271
20. सच्चा सुख तो सिद्ध अवस्था में ही है	282
21. प्राचीन जैन ग्रंथों में मिलेंगे आज के सभी वैज्ञानिक सिद्धांत	295

22. पर्यावरण प्रदूषण का कारण - प्रतिद्वन्दता	309
23. जहाँ अपेक्षाएँ नहीं वहाँ दुख नहीं	323
24. श्रावक भी सुख की अनुभूति कर सकता है	336
25. क्षण-भंगुर जीवन जी रहा अपने लिए	350
26. सिद्ध भगवान क्षुधा -तृषा से मुक्त हैं	364
27. भक्ति और श्रद्धा	379
28. भक्ति से परिणामों में विशुद्धता	394
29. श्रमण परंपरा की मौलिकता विविध संस्कृति व धर्म के परिपेक्ष में	408
30. सिद्ध भगवान अनन्त प्रकाश से प्रकाशित हैं	423
31. सिद्ध भगवान की महिमा	435

1. स्वात्मोपलब्धि- सिद्धभक्तिका प्रयोजन

ओकारं बिंदु संयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव, ओंकाराय नमो नमः॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥

मंगलाचरण में सिद्ध भगवन्तों के स्मरण का महत्व



आज की यह मंगल बेला, जब आप सिद्ध भगवन्तों को याद करने के लिए, उनकी महापूजा करने के लिए, सिद्धचक्र विधान के माध्यम से यहाँ उपस्थित हुए हैं। यह सिद्धचक्र विधान तब और मंगलकारी हो जाता है, जब यह महामह नंदीश्वर की पूजा होने के बाद, नन्दीश्वर के पर्व होने के बाद, यह फिर से इस वर्षा-योग की शुरुआत में एक और मंगल शुरुआत हो गई, जो सिद्धचक्र विधान के माध्यम से हो रही है। यह मंगल शुरुआत इसलिए कहलाती है क्योंकि जब भी कभी हमें मंगलाचरण करना होता है, हमें सिद्धों को पहले याद करना होता है। किसी भी मंगल कार्य की शुरुआत सिद्ध भगवन्तों के स्मरण के साथ होती है। **अगर आप अपने जीवन में कोई भी अच्छा कार्य करने के लिए तत्पर हो, कोई भी मंगल कार्य करना चाहते हो और उससे पूर्व में अगर आप सिद्धों का स्मरण करते हैं तो आपका वह कार्य सिद्ध होता है, ऐसा आचार्यों का कहना है।** इसीलिए जब भी कभी चाहे ग्रन्थ का प्रारम्भ हो या किसी मंगल कार्य की शुरुआत हो, सिद्ध भगवन्तों को स्मरण किया जाता है। जब हम यहाँ उपदेश देने के लिए बैठते हैं और उस उपदेश की शुरुआत करते हैं तो उस समय पर भी हम सिद्धों को ही नमस्कार करते हैं। आपको ध्यान रहता नहीं है, आपका ध्यान उस ओर जाता नहीं है और वह ध्यान अगर जाए तो आपके मुख से भी सिद्धों का स्मरण जरूर हो। आपका मुख जरूर खुले और आप जरूर मुख खोलकर के उन सिद्धों का नाम ले। वह सिद्धों का नाम लेना और अच्छा हो जाता है और उसमें जागृति आ जाती है और उसमें ऊर्जा आ जाती है जब हम किन्हीं मुनि महाराज के साथ में वह सिद्धों का नाम ले रहे होते हैं। जब मंगलाचरण किया जाता है... **‘ओं नमः सिद्धेभ्यः’** सिद्धों के लिए नमस्कार हो। किसी भी मंगल कार्य की शुरुआत में आप इस मन्त्र का उच्चारण कर सकते हैं। **‘णमो सिद्धाणं’** इस मन्त्र का उच्चारण कर सकते हैं। सिद्धों का स्मरण करके जब हम कोई भी कार्य करते हैं तो वह कार्य अपने आप में पूर्ण होता तो है ही, आनन्द के साथ पूर्ण होता है। इसलिए आप कह सकते हैं, आपके अन्दर यह भावना आ सकती है कि हमें सिद्धों के बारे में और जानना है।

सिद्धचक्र विधान में सिद्ध भक्ति के योग का महत्व

जब आप लोग अपनी तरह से सिद्ध भगवान की स्तुति कर रहे हैं तो मेरे मन में आया, हम अपनी तरह से सिद्ध भगवान की भक्ति करें और जब दोनों भक्तियाँ एक साथ मिल जाएँ तो कहना ही क्या है? सोने पर सुहागा। यानि आपका सिद्ध-चक्र विधान और उन्हीं दिनों में हमारा सिद्ध-भक्ति पर उपदेश। ये दोनों ही काम अगर एक साथ हो रहे हैं तो आप मान कर चलिए कि आपके हर कार्य, आगे आने वाले सिद्ध होंगे और आपके लिए उन सिद्ध भगवानों के विषय में जो श्रद्धा उत्पन्न होगी, वह एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। इसी हेतु आचार्य पूज्यपाद महाराज की सिद्ध-भक्ति से हम यह बात प्रारम्भ करते हैं, जो आचार्य संस्कृत में कुछ पंक्तियों के माध्यम से उन सिद्धों की स्तुति करते हुए कहते हैं...

**सिद्धानुद्धृतकर्मप्रकृतिसमुदयान्, साधितात्म- स्वभावान्,
वन्दे सिद्धि-प्रसिद्धयै, तदनुपमगुणप्रग्रहाकृष्टि-तुष्टः ।
सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुण-गणोच्छादि-दोषापहाराद्,
योग्योपादान-युक्त्या दृषद् इह यथा हेम-भावोपलब्धिः ॥१॥**

यह स्रग्धरा छन्द कहलाता है। सात-सात अक्षरों के बाद में इसमें रुकना होता है। बड़ा छन्द कहलाता है और इस छन्द को पढ़ने की भी एक अपनी लय होती है। अगर आप कुछ सीखना चाहते हैं तो इस तरह की चीजों को भी सीख सकते हैं। **यह छन्द विद्या आनी चाहिए और काव्यों को पढ़ने की कला भी आप लोगों के अन्दर आनी चाहिए क्योंकि गुरुकुल की पद्धति में ये सभी कलाएँ सिखाई जाती हैं।** अगर आपने convent स्कूलों में पढ़ाई की है तो कोई बात नहीं, कम से कम जितनी देर आप हमारे सामने उपस्थित हैं, उतनी देर ही समझ ले कि हम गुरुकुल में पढ़ रहे हैं। इसी के माध्यम से आपको ये कुछ-कुछ विद्याएँ पढ़ने को, सीखने को मिल सकती हैं। आप चाहे तो इस छन्द को फिर से एक लय में दोहरा सकते हैं, पढ़िए एक साथ...

**सिद्धानुद्धृतकर्मप्रकृतिसमुदयान्, साधितात्म- स्वभावान्,
वन्दे सिद्धि-प्रसिद्धयै, तदनुपमगुणप्रग्रहाकृष्टि-तुष्टः ।
सिद्धिः स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुण-गणोच्छादि-दोषापहाराद्,
योग्योपादान-युक्त्या दृषद् इह यथा हेम-भावोपलब्धिः ॥१॥**

सिद्ध कौन?

यह भगवान सिद्धों की स्तुति करते हुए आचार्य पूज्यपाद महाराज कहते हैं...वे सिद्ध भगवान **‘उद्धृत कर्म प्रकृति समुदयान् सिद्धान्’** सिद्ध कैसे हैं? जिन्होंने कर्म प्रकृतियों के समुदाय को अपनी आत्मा से धो डाला है... उनको सिद्ध कहते हैं। ऐसी आत्माएँ जिन्होंने अपने पुरुषार्थ से, जो अनादि काल से लगी हुई अपनी आत्मा के कर्म समूह थे, उन सबको विनष्ट किया, ऐसा पुरुषार्थ किया। उसी पुरुषार्थ को हम मोक्ष-पुरु-

पार्थ कहते हैं। चार पुरुषार्थों में जो मोक्ष-पुरुषार्थ होता है, वह पुरुषार्थ ही कर्म-कलंक को धोने के लिए होता है। चाहे वह शुभ कर्म हो, चाहे अशुभ कर्म हो। सभी कर्मों से रहित मेरा यह आत्मा शुद्ध बन जाए, इसलिए ही यह मोक्ष-पुरुषार्थ किया जाता है और इसी तरह का मोक्ष-पुरुषार्थ जिन जीवों ने किया, उन्होंने अपनी आत्मा से इन कर्मों के समुदाय को, समूह को अलग कर लिया। कर्मों से अलग हो गए तो सिद्ध हो गए। अगर आपसे कोई पूछ बैठे कि **सिद्ध किसे कहते हैं? जिन्होंने अपनी आत्मा से आठ कर्मों के समूह को पृथक कर लिया है, आठ कर्मों का समूह जिन्होंने अपने अन्दर से नष्ट कर दिया है, उन्हीं को हम सिद्ध कहते हैं।** इतना बड़ा पुरुषार्थ जिन्होंने किया, ऐसे सिद्ध भगवन्तों का स्मरण करने से अगर हमारे अन्दर भी कोई पुरुषार्थ जागृत हो जाए तो कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन वह **पुरुषार्थ तब जागृत होता है, जब हम उस ओर दृष्टि रखे होते हैं।** कई लोग सिद्ध-चक्र विधान तो करते हैं, अच्छा कार्य करते हैं लेकिन उन्हें शायद ही स्मरण हो पाता हो कि सिद्ध-चक्र विधान का क्या प्रयोजन है? शायद पूरा विधान होने के बाद भी उन्हें पता न रहता हो कि सिद्धों की स्तुति हुई कि नहीं हुई? और सिद्धों की भी स्तुति हुई तो वह कैसे हुई? कुछ हमने उनके गुणगान किए तो क्या हम किसी गुण में कुछ आकृष्ट हुए कि नहीं हुए? यह सिद्धों का स्वरूप अगर हम जानेंगे तो सिद्धों के इस विधान के उपरान्त भी हम चलते-फिरते, खाते-पीते, उन सिद्धों का ध्यान कर सकते हैं। आचार्य कहते हैं...अगर आपके अन्दर किसी भी तरह का, कोई भी चीज को प्राप्त करने का भाव है, तो उस भाव को निरन्तर बनाए रखो।

ध्यान में अर्ह बीजाक्षर के आलम्बन का महत्व

अभी मैं एक ग्रन्थ 'ज्ञानाकुशम' नाम से पढ़ रहा था। उसमें यह लिखा हुआ है कि अगर आपको शिव अर्थात् सिद्धत्व की प्राप्ति करनी है, तो आप अपने अन्दर हमेशा उस सिद्धत्व का ध्यान करने के लिए अर्ह का ध्यान करो। किसका ध्यान करो? अर्ह! अब आपको हमेशा सिद्ध कैसे याद रहेंगे? सिद्ध तो अमूर्त आत्माएँ हैं, उनके गुणों का चिन्तन करने का time लगाना पड़ेगा, निकालना पड़ेगा। मन उसमें जोड़ना पड़ेगा तब कुछ आपके लिए उपलब्ध होगा और वह हमेशा कर पाना आपके बस की बात नहीं है। क्योंकि अमूर्त आत्माओं का ध्यान करना किसी के लिए भी बहुत जल्दी नहीं हो सकता, सहज नहीं होता। आचार्य कहते हैं... आलम्बन लो। किसका लो? ऐसे अक्षरों का आलम्बन लो, जो अक्षर हमें उन सिद्धों की याद दिलाते हो। वे क्या हैं? **वह सिद्ध-चक्र विधान का सबसे बड़ा बीजाक्षर है, इसे अर्ह बीजाक्षर कहा जाता है।** क्या बोलते हैं? अर्ह! आप लोगों के दिमाग में पहले बैठ जाए, यह अर्ह है क्या? सभी लोग कहते हैं... महाराज! योग कराओ, महाराज ध्यान कराओ। कराएँगे, शान्ति से कराएँगे। अभी हमें कहीं जाना तो है नहीं है। पाँच महीने यहाँ पर रुकना है, सब काम शान्ति से होगा, सब कुछ होगा। लेकिन उससे पहले आपकी मानसिकता तैयार हो, आपके मन में यह विचार आए कि यह है क्या? अर्ह का ध्यान किसका ध्यान है? यह अर्ह ही क्यों कहा गया? इस अर्ह बीजाक्षर को सामने लाने का प्रयोजन क्या? प्रयोजन यही है कि जो लोग पूजा विधान कर लेते हैं, वे पूजा विधान कर ले और जो पूजा विधान नहीं भी कर पाते हैं और जिनके अन्दर पूजा विधान करने के बाद भी विशुद्धि नहीं बढ़ती है, तो वह अर्ह-ध्यान करके अपनी विशुद्धि बढ़ाते हैं और अर्ह तक की यात्रा करते हैं। यह अर्ह, जिसे हम मंगलाचरण में कह रहे हैं, सभी ने अपनी जिनवाणी में पढ़ रखा होगा- **'अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः सिद्धचक्रस्य सद्बीजं'** सिद्ध-चक्र का यह बीज है, बीज मन्त्र है। जो शुद्ध परमेष्ठी हैं, ब्रह्म परमात्मा हैं, उनका यह स्मरण कराने वाला बीजाक्षर है। ऐसे इस अर्ह को अगर

आप ध्याते हैं तो वह ध्यान आपका निरन्तर बना रह सकता है और आचार्य कहते हैं कि आपको कुछ करने की जरूरत नहीं है। आप केवल बस अर्ह-अर्ह-अर्ह इस अर्ह बीजाक्षर का ध्यान करें। यह बीजाक्षर ही आपको हमेशा सिद्धों की याद दिलाएगा। आपके अन्दर शुद्ध भावना उत्पन्न करेगा और आचार्य यहाँ तक लिखते हैं कि चलते-फिरते, खाते-पीते, सोते हुए भी इस बीजाक्षर का आप स्मरण करते रहो।

अर्ह ध्यान की निरन्तरता से शिव की प्राप्ति

अभी तक मुझे ऐसा कोई reference मिला नहीं था। लेकिन अभी मुझे एक 'ज्ञानांकुशम्' नाम का एक ग्रन्थ मिला, जो आचार्य योगीन्द्र देव का है, उसमें एक श्लोक मिला... 'गच्छन् वा यदि वा सुप्त' चलते हुए हो, चाहे सोते हुए हो, 'आलापं यदि वा भोजनं' आपस में बातचीत कर रहे हो अथवा भोजन कर रहे हो। ये कुछ भी काम कर रहे हो, अगर आप हमेशा ध्यान करते रहते हो और इस तरह से अर्ह का ध्यान करते रहते हो तो 'येन आत्मा शिवम् लभेत' उससे वह आत्मा शिव की प्राप्ति हो जाता है। यह मुझे reference मिल गया तो यह reference भी मुझे देखा जाए, यहीं शान्तिनाथ भगवान के चरणों में मिला है। अब हमने तो पहले से ही एक भजन के अन्दर यह भाव लिख दिया था। हमने तो पहले से ही अर्ह का जो भजन लिखा था, उसके अन्दर यह भाव डाल दिया था।

भोजन से पहले तू ध्या ले, चलते फिरते भी तू गा ले,
सोने से पहले जग करके, मन को इसका नाद सुना ले।
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध मन्त्र से तू अपना मुख खोल,
ओं अर्ह, ओं अर्ह, ओं अर्ह बोल,
सभी कार्य की सिद्धि से तू, पहले इसको बोल,

अर्ह ध्यान से अमूर्त आत्मा के स्वरूप का ध्यान

यह भाव आपको अब समझ में आएगा कि जब हम यह भजन पढ़ रहे हैं, जब हम यह भाव अपने अन्दर ला रहे हैं तो हम आपको उसी ओर प्रेरित कर रहे हैं, जो प्रेरणा आपको किसी विधान से मिलती है, किसी ध्यान से मिलती है। ये भाव जब हमने लिखे, उस समय पर हमारे सामने ग्रन्थ नहीं था। लेकिन जब इन भावों की पुष्टि हमें एक आचार्य के ग्रन्थ से हो गई तो मेरे मन का उल्लास, आनन्द और बढ़ गया और मुझे लगा कि वास्तव में अर्ह ध्यान से ही सब कुछ होने वाला है। आप सिद्धों का स्मरण चलते-फिरते कैसे करेंगे? जिसका स्मरण करना है, उसका नाम लेते रहो। अर्ह-अर्ह-अर्ह, बातचीत करते हुए भी अर्ह-ओं अर्ह-अर्ह अर्ह अर्ह, सोने से पहले अर्ह अर्ह अर्ह अर्ह करते-करते सो जाओ। सोने में भी नौद आ जाए तो आपको स्वप्न आए तो उसमें भी आप अर्ह अर्ह कर रहे हो। उठो तो सबसे पहले अर्ह-अर्ह का ध्यान करो। कैसे ध्यान करें? कुछ नहीं करो। आचार्य कहते हैं- very simple. सिर्फ आपको अक्षरों का ही ध्यान करना है और अक्षरों का ध्यान करते-करते, आप उसमें जो अमूर्त गुण हैं, अमूर्त आत्माओं के जो स्वरूप हैं, वहाँ तक आप पहुँचने के लिए, अगर आपके पास ज्ञान हो तो आप अर्ह का चिन्तन करते-करते वहाँ तक पहुँच जाना और अगर ज्ञान नहीं हो तो केवल अर्ह-अर्ह करते रहना।

अर्ह का ज्ञान, ध्यान और विधान

हम आपको ज्ञान भी दे रहे हैं, ध्यान भी दे रहे हैं और अब विधान भी दे रहे हैं। यह तीनों की संयोजना यहाँ बन रही है। अर्ह का ज्ञान मतलब सिद्धों का ज्ञान। **अर्ह का विधान मतलब सिद्धों का विधान और सिद्धों का विधान मतलब अर्ह का विधान। क्या अलग है?** सब कुछ वही है। बिना अर्ह बीजाक्षर के, सिद्ध-चक्र विधान का कोई अस्तित्व ही नहीं है। वह अर्ह ही वह बीजाक्षर है, जिसका स्मरण, भक्ति पढ़ते हुए भी किया जाता है, मन्त्र पढ़ते हुए भी किया जाता है।

अर्ह - सिद्धों के समूह के साथ जुड़ने का साधन

जैसे हम णमोकार को सिर्फ पढ़ते रहें, हमें णमोकार के अरिहन्त, सिद्ध याद न भी आएँ तो पढ़ने से भी उसका हमें लाभ मिलता है कि नहीं मिलता? बोलो! पढ़ते तो रहते हैं न लोग। उन्हें नहीं भी पता हो तो भी पढ़ते रहते हैं। जो जैन नहीं हैं, उनको भी अगर नहीं भी पता हो अरिहन्त-सिद्ध कुछ भी तो णमो अरिहन्ताणं अगर पढ़ेंगे तो उन्हें लाभ मिलेगा कि नहीं मिलेगा? मिलता है। **कितने ही लोगों ने सिर्फ श्रद्धा से उस मन्त्र के अक्षरों को पढ़कर के ही इतनी विद्या प्राप्त कर ली कि वे बड़े-बड़े विष उतार सकते हैं।** उन्होंने ऐसी सिद्धि कर ली, जिसके माध्यम से सिर्फ णमोकार के अक्षरों की श्रद्धा करके वे आपके बड़े-बड़े उपद्रव दूर कर सकते हैं। उन्हें कुछ ज्ञान नहीं है कि अरिहन्त क्या होते हैं? सिद्ध क्या होते हैं? अरे भाई जो बड़े लोग होते हैं, उन बड़े लोगों के पास तक पहुँचना हो तो हमें उनका नाम तो लेना ही होता है और अगर हम उनके नाम के लेने के साथ में भी चलते हैं तो भी हमारे बड़े-बड़े काम हो जाते हैं। आज दुनिया के मन्त्री, दुनिया के सांसद, मोदी मोदी मोदी मोदी क्यों चिल्लाते हैं? नहीं समझ में आ रहा है? भले ही उन्होंने मोदी को साक्षात कभी handshake किया हो, न किया हो। उसका साक्षात, कभी अभिवादन किया हो, न किया हो लेकिन चिल्लाते रहते हैं। क्योंकि भाई! जिसकी सत्ता चल रही है, उसका नाम लेते रहो। काम अपना उसी से बन जाएगा। आदमी के लिए सिर्फ इतना ही पर्याप्त होता है। अगर हम किसी से जुड़ना चाहते हैं तो हम उसका नाम लेना पहले सीखें। **अरिहन्तों से जुड़ना चाहते हैं, अरिहन्तों का नाम लो, सिद्धों से जुड़ना चाहते हो, सिद्धों का नाम लो और सिद्धों के समूह से जुड़ना चाहते हो तो अर्ह का नाम लो, अर्ह का नाम लो।** सिद्ध एक नहीं हैं, भगवान एक नहीं हैं, भगवान कितने हो चुके? अनन्त हो चुके, countless हैं, वे infinite हैं। उनकी आप counting नहीं कर सकते हैं। लेकिन अगर आप उन पूरे समूह को एक साथ स्मरण में लाना चाहते हैं तो उनको किस नाम से हम कह सकते हैं? अर्ह किसी एक single सिद्धात्मा का नाम नहीं है।

सिद्धचक्र - सिद्ध समूह की आराधना

सिद्धचक्र! चक्र का मतलब क्या होता है? यह जो चक्र बना दिया आपने इसलिए इसको सिद्ध-चक्र बोलते हो क्या? गोले का नाम चक्र होता है क्या? चक्र का मतलब क्या होता है? चक्र मतलब चक्र, भगवान का चक्र, धर्म-चक्र, दिग्विजय का चक्र। वह चक्र है क्या? चक्र मतलब होता है... एक group अर्थात् एक समूह। चक्र का दूसरा पर्यायवाची नाम क्या होता है? समूह। **‘सिद्ध चक्रस्य सद् बीजं’** अर्थात् सिद्ध-चक्र का श्रेष्ठ बीज। सिद्ध-चक्र का मतलब क्या हुआ? सिद्ध समूह का। जितने भी सिद्ध भगवान हैं, उनको अगर

एक बीज अक्षर से आप कह पाओगे तो उसका नाम है... अर्ह अर्ह।

अर्ह नाद से दूर होती हैं बीमारियाँ

अर्ह अर्ह बोलते रहा करो, नहीं तो thyroid हो जाएगी, आवाज नहीं निकलेगी तो doctor कहेगा operation कराओ। समझ आ रहा है? जिनको सिद्ध भगवान पर विश्वास होगा, अर्ह पर विश्वास होगा तो वे कहेंगे doctor साहब से कि नहीं! मुझे operation कराने की जरूरत नहीं है। मैं तो अर्ह अर्ह करके ही सही कर लूँगा। ताली बजा लेते हो, विश्वास तो कुछ है नहीं है आप लोगों में। कुछ भी नहीं है, कुछ भी नहीं है। सिर्फ दिखावे की सब क्रियाएँ होती हैं, दिखावे के सब काम होते हैं, विश्वास नाम की कोई चीज तो होती ही नहीं है। यहाँ दिल्ली की एक महिला बैठी है, उसकी शक्ल देख लो। यह मेरठ की हैं। क्या नाम है? अम्बिका। अब देखो इनका गला रुक गया था, thyroid हो गई थी, बिल्कुल मुँह से आवाज़ नहीं निकल रही थी। doctors ने कहा...थोड़ा-थोड़ा कुछ न कुछ बोलते रहा करो, अगर नहीं बोलोगे और कुछ नहीं करोगे तो थोड़े ही दिनों में operation कराना पड़ेगा। यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है, यह तो एक case है, ऐसे बीसों case हो चुके हैं, हम सबको सामने नहीं रख सकते हैं। जो अभी सामने present में है, उसकी बात बता रहा हूँ। इनका कोई काम नहीं है क्योंकि यह अर्ह को जानते हैं, अर्ह पर इनका श्रद्धा है, अर्ह के trainer भी हैं तो ये क्या करें? इन्होंने कहा...न मुझे कोई दवाई खाना, न मुझे कोई doctors की सुनना। मुझे क्या करना? अर्ह का नाद करना। कहना नहीं, **एक मन्त्र जाप होता है और एक नाद होता है। कभी-कभी जब औषधि के रूप में उस अर्ह का उपयोग करना होता है, तो नाद करना होता है। ओं अर्ह...अर्ह...यह नाद कहलाता है- दीर्घ नाद।** इस तरह का नाद आधा घण्टे रोजाना करती थी और thyroid की problem दूर हो गई और अच्छे ढंग से आवाज आने लगी, कोई operation की जरूरत नहीं पड़ी।

अर्ह नाद के लाभ

आपको तो क्या है? अगर कह भी देंगे...दो चार बार अर्ह अर्ह अर्ह कर लिया, थक गया, हमसे नहीं होता। ऐसे करने से कुछ नहीं होता है। जिन्दगी भर दवाईयाँ खाते रहो कुछ नहीं होने का। अगर आप विश्वास कर लो तो बड़ी-बड़ी बीमारियाँ केवल अर्ह के नाद से दूर हो सकती हैं। जो भी पेट की बीमारियाँ हैं, liver की बीमारियाँ हैं, heart की बीमारियाँ हैं, ये फेफड़ों की, lungs की बीमारियाँ हैं, गले की बीमारियाँ हैं, जब हम अर्ह पढ़ते हैं, अर्ह का नाद करवाते हैं तो पेट से लेकर गले तक और यहाँ तक कि मस्तिष्क तक उस अर्ह की जब ध्वनि पहुँचती है, तो ये सारी की सारी बीमारियाँ दूर करने की एक मात्र औषधि है... यह अर्ह का नाद। करो तो.. दो चार बार किए, छोड़ दिए। कम से कम 11 बार सुबह और 11 बार शाम को, रात को सोने से पहले, आप अर्ह का सिर्फ नाद करो। किसी भी तरह की कोई बीमारियाँ जैसे कहते हैं...बच्चे का दिमाग स्थिर नहीं है, मन नहीं लगता है, depression में जा रहा है, अनिद्रा की बीमारियाँ हैं, नींद नहीं आती है, उल्टे-सीधे स्वप्न आते हैं, सारी बीमारियों का एक इलाज बता रहा हूँ... अर्ह का नाद करके सोओ। आपको किसी भी तरह की कोई दिक्कत नहीं होगी। लेकिन सोने से पहले दीर्घ नाद होना चाहिए। भीतर के सारे तन्तु खुल जाने चाहिए। **आप सोचो सिद्ध भगवान कितनी बड़ी चीज होती है? कुछ बड़ी चीज लगती**

है कि नहीं आपको? जिन्होंने अपने सारे कर्मों के समुदाय को धो दिया, इतना पुरुषार्थ किया है, उन्होंने अपनी आत्म-शक्ति कितनी जागृत की होगी और अगर हम उनका स्मरण करेंगे तो क्या हमारी छोटी-छोटी आपदाएँ दूर नहीं होंगी। बड़े लोगों का, सिद्ध पुरुषों का, केवल नाम स्मरण करने से ही अपना काम बन जाता है। यह विश्वास जब आपके अन्दर आएगा तब जाकर के कहीं आपको सिद्ध-चक्र के विधान, ध्यान, ज्ञान का कोई लाभ मिलेगा।

आत्मा के स्वभाव को जो साधे वह सिद्ध

इसलिए आचार्य कहते हैं- ये सिद्ध कैसे बने? यह तो जानो। अपने कर्मों को धो लिया तो कर्म कैसे धोए? **‘साधितात्म स्वभावान्’** जिन्होंने अपनी आत्मा के स्वभाव को साध लिया। आत्मा का स्वभाव क्या? आत्मा का स्वभाव ज्ञान मात्र, दर्शन मात्र, शान्ति मात्र, सुख मात्र है। ऐसी उस आत्मा का जो स्वभाव है, उसको जिन्होंने साध लिया। साध लेने का मतलब क्या होता है? साध लेने का मतलब? क्या बोले आपकी भाषा में? कोई चीज जब आपके बस में नहीं होती और आप उसे पकड़ते हो, किसी भी तरह से उसे रोकना चाहते हो तो उसे क्या बोलते हैं? साधना। समझ आ रहा है? यह साधने का महत्व आपको तब समझ में आएगा, कभी आपको paralysis हो जाए, भगवान न करे कभी हो लेकिन बता रहा हूँ। अगर किसी को paralysis हो गया, अब उसका हाथ काँपता है। अब उससे पूछो, हाथ को रोक, रोक, रोक कर दिखा। नहीं समझ में आ रहा? जब उसका हाथ काँप रहा है और उस काँपते हुए हाथ को वह रोक पाए, इसका नाम है- साधना। ऐसे ही आत्मा का परिणाम हमेशा कर्मों के साथ, कर्म के विकारों से जुड़ा हुआ, राग-द्वेष, ममता-मोह के भावों में जुड़ा हुआ रहता है। जब वह केवल अपनी यह साधना करता है कि मुझे अपने ज्ञान स्वभाव में रहना है, मुझे अपने सुख स्वभाव में रहना है, मुझे केवल दृष्टा भाव में रहना है। यह उसको अपनी आत्मा को ऐसे ही साधना पड़ता है, जैसे किसी paralysis वाले को खुद रोकना पड़े कि मेरा हाथ चलते हुए कैसे रुक जाए? सरल है कि कठिन है? उदाहरण यही ध्यान रखना। paralysis हो गया हो, हाथ काँप रहा हो और फिर उसको रोक कर दिखाए। ऐसे ही हम सब अनादि के रोगी हैं।

सिद्ध वन्दन का प्रयोजन, सिद्धों की प्राप्ति

हमारे सारे परिणाम राग-द्वेष-कषायों से आविष्ट रहते हैं और उस समय पर हम अपने परिणामों को खुद रोकें...नहीं! मुझे कषाय नहीं करनी, मुझे राग नहीं करना, मुझे मोह नहीं करना, मैं अपने ज्ञान-दर्शन स्वभाव की साधना करूँगा। इसका नाम है- **‘साधितात्म स्वभावान्’** जिन्होंने अपनी आत्मा के स्वभाव को साध लिया हो। उन्हें हम सिद्ध भगवान कहते हैं। यानि कर्मों के समूह से अपने आप को दूर करने के लिए भी क्या करना पड़ेगा? अपनी आत्म स्वभाव की साधना करनी पड़ेगी। जिन्होंने वह साधना कर ली **‘साधित’** अर्थात् साध लिया। अब उन्हें कुछ साधने की जरूरत नहीं है। अब उन्हें कुछ करने की जरूरत नहीं है। वह complete उन्होंने अपना काम कर लिया है। **ऐसे सिद्धों की मैं वन्दना करता हूँ... वन्दे सिद्धिः प्रसिद्धयै** वन्दना भी करते हैं, नमस्कार भी करते हैं तो किस लिए? सिद्धि की प्रसिद्धि के लिए। प्रसिद्धि मतलब प्राप्ति के लिए। मैं ऐसे सिद्धों की प्राप्ति के लिए...हे भगवन्! हे सिद्ध परमेश्वर! आपकी वन्दना करता हूँ। सिद्धों की वन्दना, सिद्धों की प्राप्ति के लिए की जाती है। सिद्ध भगवान बनने के लिए की जाती है।

मिथ्यात्व से रहित हो सिद्धों की भक्ति

आप लोग किस लिए करते हैं? हमारी मम्मी का देहान्त हो गया था, दादी का देहान्त हो गया था, पापा-दादा चले गए थे, उनकी स्मृति में मुझे एक सिद्ध-चक्र विधान रचना है। क्या मिलेगा इससे आपको? उनकी स्मृति में! उनकी स्मृति कर रहे हो या आप सिद्धों की स्मृति कर रहे हो? उनकी स्मृति में अगर आप इस तरीके के विधान रच रहे हो तो आप वन्दना किसकी कर रहे हो? और क्या प्राप्ति के लिए कर रहे हो? प्राप्ति का तो कोई उद्देश्य है नहीं है। हमारा तो उद्देश्य इतना ही है...उनकी स्मृति में हो जाए। हमें कहीं ऐसा लगता है कि इसके पीछे भी हमारे अन्दर यह धारणा बनी रहती है कि उनकी स्मृति में करेंगे तो शायद उनकी आत्मा सन्तुष्ट रहेगी। क्योंकि वह जो धारणा है, मिथ्या-भाव है, वह तो मिथ्यात्व के साथ चलेगा जब तक कि आपको सम्यग्दर्शन न हो जाए। वह मिथ्या-भाव यही होता है कि जो हमारे पूर्वज चले गए हैं, उनकी आत्मा को शान्ति मिल जाए। **उनकी आत्मा कभी हमारे लिए कोई, भूत-प्रेत बन कर सामने न आ जाए। इसलिए क्या करो? उनके उपलक्ष्य में कुछ कर लो। यह लोगों में डर रहता है।** क्या डर कर भगवान की स्तुति कर रहे हो? किसी ने कह दिया था या हमने कभी कोई भगवान के सामने अपना कोई commitment कर लिया था कि भगवन्! हमारा यह काम बन जाए तो हम एक सिद्ध-चक्र विधान कर लेंगे, इसलिए सिद्ध-चक्र विधान कर रहे हो। क्या कर रहे हो? किसलिए कर रहे हो? क्यों? कुछ तो बोलो! कुछ उद्देश्य अगर ऐसे हैं तो मैं आपसे कह रहा हूँ, आप अपने उद्देश्यों में परिवर्तन लाएँ। अच्छे उद्देश्यों के साथ किए गए अच्छे कार्य ही हमें अच्छा लाभ देते हैं अन्यथा कार्य तो सब हो जाते हैं लेकिन अगर हमारे उद्देश्य अच्छे नहीं होते हैं तो हमें उससे कभी कोई लाभ की प्राप्ति नहीं होती है।

सिद्धों के अनुपम गुण की प्राप्ति ही हो सिद्ध भक्ति का उद्दिष्ट

सिद्धों की स्तुति करने का कितना बड़ा उद्देश्य रखा जाता है? 'वन्दे' पढ़ रहे हो न? 'सिद्धि: प्रसिद्धयै' वन्दना किसलिए की जा रही है? सिद्ध बनने के लिए। सिद्धि की प्राप्ति करने के लिए कि मुझे भी ऐसी सिद्धि की प्राप्ति हो, जैसे सिद्धों को हो गई है। सिद्धों को जो उपलब्धि हो गई, उसी का नाम क्या है? सिद्धि और सिद्धि की प्रसिद्धि के लिए ही हम वन्दना कर रहे हैं और वह वन्दना हम करने वाले कैसे हैं? 'तदनुपमगुणप्रग्र-हाकृष्टि-तुष्टः' उनके जो अनुपम गुण हैं, उनके जो ऐसे गुण जो किसी दूसरों के द्वारा जानने में नहीं आते हैं, ऐसे अनुपम गुण, जिसकी उपमा किसी के द्वारा नहीं दी जाती है, उन गुणों में आकृष्ट होकर कर, मैं सन्तुष्ट हो रहा हूँ। करने वाला ऐसा होना चाहिए।

सिद्ध भक्ति में भक्त के भाव कैसे हो?

वन्दना करने वाले को ही बन्दा कहा जाता है। बन्दा सुनते हो न? बन्दा। वह बन्दा खुदा का ही बन्दा नहीं होता है। बन्दा! सिद्धों का भी बन्दा होता है। जो वन्दना करे, उसका नाम क्या है? बन्दा। वन्दे तो यह क्रिया हो गई और बन्दा कैसा होना चाहिए? उसके लिए आचार्य कह रहे हैं...जिसके अन्दर सिद्धों के गुणों के आकर्षण में सन्तोष होता हो। सिद्धों के गुणों की ओर खिंचने में जिसको सन्तुष्टि मिलती हो, उससे तुष्ट होता हो, satisfied होता हो, वह बन्दा मैं हूँ। **जो आचार्य पूज्यपाद महाराज स्वयं अपने आप की कह रहे हैं। मैं किधर खिंच रहा हूँ? मेरा आकर्षण किधर है? आपके गुणों की ओर मेरा खिंचाव है और**

इसलिए मैं सन्तुष्ट होता हुआ, मैं आपकी स्तुति कर रहा हूँ। आपके अनुपम गुणों की स्तुति कर रहा हूँ। ऐसे बन्दे होने चाहिए। सुन रहे हो? बन्दे बन्दे, किसके बन्दे? सिद्धों की वन्दना करने वाले बन्दे कैसे होने चाहिए? जो सिद्धों के गुणों में आकृष्ट होकर के ही सन्तुष्ट हो जाते हो। सिद्ध भगवान के गुणों की बात, चलो जरूर सुनेंगे। एक बार नहीं, 10 बार सुनेंगे। ऐसा आकर्षण जिनके अन्दर होता है, उन्हीं को निकट भव्य जीव कहा जाता है। निकट भव्य जानते हो? जो जल्दी वर्तमान में न सही तो कुछ निकट काल में, जिन्हें कुछ अपनी आत्मा के कुछ गुणों की उपलब्धि हो सकती है। सम्यग्दर्शन आदि हो सकता है, उन्हें निकट भव्य कहा जाता है।

स्व आत्मा की प्राप्ति ही सिद्धि

ऐसे निकट भव्यों के लिए आचार्य कह रहे हैं... वह सिद्धि, जिसको मैं प्राप्त करना चाहता हूँ, वह सिद्धि किसका नाम है? बेटी का नाम है? सिद्धि किसका नाम है? किसी पत्नी का नाम है? यहाँ छोटी सी definition है। कुछ याद न हो, एक 7 अक्षरों का यह सूत्र याद कर लेना... **'सिद्धि: स्वात्मोपलब्धि:'** बोलो! **'सिद्धि: स्वात्मोपलब्धि:'** ऐसा लगता है जैसे बिल्कुल हिन्दी को जानते ही नहीं हो। संस्कृत से तो दूर-दूर का वास्ता ही नहीं हो। **'सिद्धि: स्वात्मोपलब्धि:'** सिद्धि किसे कहते हैं? सिद्धि की कोई परिभाषा पूछे? सिद्ध बनकर के उन्होंने क्या उपलब्धि कर लिया? क्या प्राप्त कर लिया? **स्व आत्मा की उपलब्धि जिन्होंने कर ली, उनका नाम है- सिद्धि। स्व-आत्मा की उपलब्धि कर लेना मतलब जो अपनी आत्मा है, उस अपनी आत्मा को ही प्राप्त जिन्होंने कर लिया।** किसी दूसरी चीज को प्राप्त नहीं करना है, अपने को ही प्राप्त कर लेना। यह शरीर अपना नहीं, यह कर्म अपने नहीं, यह भाव अपने नहीं, आत्मा तो इन सब चीजों से बहुत दूर हो चुकी है। उस आत्मा को प्राप्त करने का नाम सिद्धि है। उसी को यहाँ पर स्व-आत्मा की उपलब्धि कहा जाता है। इसलिए यह definition आपको ध्यान में रहनी चाहिए।

स्वात्मोपलब्धि:...एक बड़ा मंत्र

कुछ रोजाना सीख कर के अगर जाओगे, एक-एक वाक्य, एक-एक मन्त्र, एक-एक sentence भी अगर रोजाना याद करोगे..लिखोगे तो पाँच महीने में वह सुमेरु पर्वत के समान बड़ा, एक बहुत बड़ा भण्डार आपके सामने हो जाएगा। सिद्धि! बोलो! **'सिद्धि: स्वात्मोपलब्धि:'...****'सिद्धि: स्वात्मोपलब्धि:'...****'सिद्धि: स्वात्मोपलब्धि:'** यह मन्त्र है, स्व-आत्मा की उपलब्धि। सिद्धि मुझे क्या चाहिए? सिद्ध-चक्र विधान से सिद्धि की प्राप्ति चाहिए। **सिद्धि का मतलब? स्व आत्मा की मुझे उपलब्धि चाहिए, प्राप्ति चाहिए।** क्या चाहते हैं हम? सिद्धि चाहते हैं। ऐसी सिद्धि चाहते हैं और कोई मन्त्र-सिद्धि, विद्या-सिद्धि, रस-सिद्धि, कुछ नहीं चाहते हैं। **क्या चाहते हैं? स्व-आत्मा की उपलब्धि।** बस! यह उपलब्धि मिले। यह सबसे बड़ा achievement है।

स्वात्मोपलब्धि ही हो हमारा उद्दिष्ट

बच्चों सिखाते रहते हो न...कुछ achieve करो... कुछ achieve करो। क्या achieve करो? यह कौन सिखाएगा? यह achieve करो। यह तो इसी गुरुकुल में आकर के सीखने को मिलेगा **'सिद्धि: स्वात्मो-**

पलब्धि: 'सबसे बड़ा achievement, ऐसा achievement अगर इससे एक बार आपका कोई agreement हो जाए तो इस जन्म में न सही, अगले-अगले जन्मों में भी यह आपका agreement काम करता रहेगा, अगर एक बार आपने यहाँ बैठ कर के agreement कर लिया कि मुझे क्या चाहिए? **'सिद्धि: स्वात्मोपलब्धि:'** I want only my own soul and nothing. क्या चाहिए आपको? और कुछ नहीं चाहिए, मुझे केवल अपनी आत्मा चाहिए, अपनी ही आत्मा की उपलब्धि चाहिए और कुछ नहीं चाहिए। इसका नाम है... सबसे बड़ा achievement और यह agreement आप आज बैठकर के कर सकते हो। चाहे हम इस जन्म में उपलब्ध करें, चाहे किसी जन्म में करें लेकिन हमें करना है, तो करना है। संकल्प एक बार का अगर आत्मा में आ जाता है, तो वह किसी न किसी जन्म में अपने साथ में जरूर उपलब्ध हो जाता है।

दोषों को दूर करना ही गुणों को प्रकट करना

इसलिए यह ध्यान रखो **'सिद्धि: स्वात्मोपलब्धि:'** और यह कैसे होती है? **'प्रगुणगुण गणोच्छादि दोषा-पहाराद्'** आत्मा के अन्दर अनेक-अनेक गुण हैं और उन गुणों का उच्छेदन कर रखा है अर्थात् उनको ढक रखा है, उनको नष्ट कर रखा है। किन्हींने? गुण को नष्ट करने वाले क्या कहलाएँगे? दोष कहलाएँगे। दिन को दूर करने वाले क्या कहलाएँगे? रात्रि कहलाएँगे। प्रकाश को मिटा देने वाला क्या कहलाएँगा? अन्ध-कार कहलाएँगा। गर्मी को दूर कर देने वाला क्या कहलाएँगा? ठण्डा कहलाएँगा। इसी तरह से गुणों को नष्ट कर देने वाली चीजें क्या कहलाएँगी? दोष कहलाएँगी और उन दोषों का जिन्होंने अपहरण मतलब दूर कर दिया हो...अपहर अपहर, एक दिन शान्ति-धारा में पड़ाया था न? **अपहर अपहर मतलब क्या कर दिया? दूर कर दिया, दूर कर दिया। उन सिद्धों ने अपने अन्तरंग से, अपने आत्मा के गुणों को आच्छादित करने वाले जो दोष थे, उन दोषों को दूर कर दिया।** जब दोष दूर हो जाएँगे तो गुण अपने आप प्रकट हो जाएँगे। अन्धकार दूर हो गया है मतलब इसका यही है, प्रकाश आ गया। अपने आप जिस स्थान पर ठण्डक चली गई मतलब क्या है? गर्मी। गर्मी चली गई मतलब क्या है? ठण्डक। जो जिसका विरोधी होता है, उस विरोधी का अगर निष्कासन कर दिया जाएगा तो उसका अपना वह स्वाभाविक भाव उसमें प्रकट हो जाएगा। इसलिए आचार्य कहते हैं...यह सिद्धि की उपलब्धि कैसे होगी? अपने-अपने दोषों का अपहरण करने से, दूर करने से, दोषों को दूर करने से होगी और इन दोषों को दूर करने के लिए ही, यह हम भगवान की भक्ति करते हैं। कैसे होती है?

'सिद्धि: स्वात्मोपलब्धि: प्रगुणगुण गणोच्छादि दोषापहाराद् योग्योपादान युक्त्या'

यह एक बड़ा शब्द है। यह काम योग्य उपादान की युक्ति से होता है। यह उपादान क्या होता है?

उपादान अर्थात् आत्मा की योग्यता

जिसमें कार्य घटित होता है, उसको उपादान कहते हैं। अगर कार्य आत्मा में घटित होना है, तो आत्मा उपादान कहलाएगी। अगर कार्य शरीर में घटित होना है, तो शरीर उपादान कहलाएगा। क्या सुना? **उपादान का मतलब क्या होता है? जिसमें कार्य घटित हो।** मानो आपको भोजन करा दिया गया और

आपने भोजन कर लिया और भोजन करने के बाद आपकी तबीयत बिगड़ गई। भोजन आपको बिल्कुल नहीं पच रहा तो क्या कहेंगे? शरीर की उपादान शक्ति सही काम नहीं कर रही है। समझ में आ रहा है? इसी तरह से आत्मा की उपादान शक्ति! हम आपको यहाँ सिद्धि-भक्ति पढ़ा रहे हैं, आपको अच्छी बातें बता रहे हैं और आपका मन नहीं लग रहा। अरे महाराज! कुछ भी चुटकुले सुनाते नहीं हैं। बस! वह सिद्धों-सिद्धों की बातें, अहं अहं अहं करते रहते हैं। अब आज फंस गए तो फंस गए... कल से नहीं आएंगे। यह जो emotion है, यह जो आपके अन्दर का भाव है, यह क्या बता रहा है? आपका उपादान मतलब आपकी आत्मा अभी योग्यता को प्राप्त नहीं है। आपकी इस सभा में बैठने की eligibility नहीं है। इस सभा में बैठने की योग्यता भी उन्हीं के अन्दर होगी, जो कुछ अपनी आत्मा का हित चाह रहे होंगे, वही यहाँ बैठ पाएँगे और जिन्हें अपनी आत्मा का हित नहीं चाहना, वह यहाँ से उठ जाएँगे। यह योग्यता होती है। इसी तरह से सिद्धि की प्राप्ति उन्हें होगी, जिनकी आत्मा में कुछ योग्यता आ जाती है... योग्य उपादान उसी को कहते हैं। उस योग्य उपादान की युक्ति से ही काम होता है।

योग्य उपादान में ही संभव है, आत्मोपलब्धि

‘दृषद इह यथा हेम-भावोपलब्धिः’ एक उदाहरण देकर के अन्त में कहा गया... जैसे पाषाण होता है और बहुत से ऐसे स्वर्ण पाषाण होते हैं जिनके अन्दर स्वर्ण रहता है लेकिन ऊपर से वह पाषाण दिखाई देता है। स्वर्ण की प्राप्ति उस पाषाण के अन्दर एक बड़े process के माध्यम से की जाती है। बहुत बड़ा process होता है। उस स्वर्ण को हथौड़े से तोड़ा जाता है, पाषाण को तोड़ा जाता है। स्वर्ण जहाँ पर उपस्थित होगा, उतने matter को अलग से निकाला जाता है, तपाया जाता है, गलाया जाता है। फिर उसको बहुत process के बाद में उसका पूरा स्वर्ण तत्त्व बाहर निकाला जाता है। **जैसे स्वर्ण पाषाण के अन्दर से स्वर्ण की उपलब्धि हो जाना, उसकी सिद्धि कहलाता है... उसी तरह से इस आत्मा के अन्दर से आत्म-तत्त्व की उपलब्धि हो जाना, आत्मा की सिद्धि कहलाती है।** इसे आत्म-सिद्धि कहते हैं और यह सिद्धि जो होती है, यह योग्य उपादान के होने पर ही होती है। मतलब हर किसी का आत्मा इस योग्य हो, जरूरी नहीं है। आप देख लो! संसार के अन्दर किसको यह बातें जो मैं बोल रहा हूँ अच्छी लगेंगी? आप लोगों को अच्छी लग रही हैं कि नहीं? बोल ही नहीं रहे! सुनना पड़ रहा है, महाराज! अब हम तो विधान करने आए थे, आप ज्ञान देने लग गए तो मैं क्या करूँ? ऐसा तो नहीं। अगर आपको सिर्फ अच्छा लग रहा हो तो समझ लेना, हम योग्य उपादान रखने वाले हैं और हमारा उपादान इसी योग्यता के साथ अगर बना रहेगा तो आप देख पाओगे, जब तक दीपावली आएगी तब तक आपके उपादान की योग्यता बहुत बढ़ चुकी होगी।

योग्य उपादान के गुण तथा लक्षण

1) सभा में बैठने की योग्यता

रोजाना थोड़ी-थोड़ी चोट करना है, रोजाना थोड़ा-थोड़ा सा अपनी योग्यता बढ़ाना है और वह योग्य उपादान की युक्ति से ही काम होता है, अयोग्यता से काम नहीं होता है। योग्य होना चाहिए। **सभा में बैठने की योग्यता होनी चाहिए, सुनने की योग्यता होनी चाहिए, समझने की योग्यता होनी चाहिए। इतनी तीन योग्यताएँ हैं कि नहीं? सभा में बैठने की योग्यता! सभा में बैठने की योग्यता क्या? सभा में सभ्यता के**

साथ बैठना। सभा में बैठने के लिए जिस तरह से बैठाया गया है, उस तरह से हम बैठे रहें। आपस में कोई बातचीत न करें। कुछ भी जो है, कोई comment न करें। यह क्या है? यह सभा में बैठने की योग्यता होती है। नहीं तो बहुत से लोग क्या करते रहते हैं? सुनते प्रवचन हमारा हैं और उसका बगल में बैठे वाले लोग को पूरी की पूरी, कुछ न कुछ अपने दिमाग से उसकी story सुनाते रहते हैं। देखना! महाराज यह बोल रहे हैं, महाराज ने यह बोल दिया, अब महाराज यह बोलेंगे, महाराज को यह बोलना चाहिए था। महाराज यह क्यों नहीं कहते? महाराज वह क्यों नहीं करते हैं? ऐसे भी कुछ लोग होते हैं। जैसे कभी picture देखने जाओ न किसी के साथ में और जिस बन्दे ने पहले से picture देख रखी हो तो उसके साथ बैठ जाओ आप। वह आपको कुछ देखने ही नहीं देगा। वह देखने से पहले ही बोलने लग जाएगा...अब देखना यह होने वाला है, अब देखना यह होने वाला है। उसको मजा उसी में आ रहा है। क्या बताने में मजा आ रहा है? यह बताने में मजा आ रहा है कि देखो! मुझे पता है कि क्या होने वाला है? कभी भी picture देखने जाओ, यह भूल मत कर बैठना। उससे पूछ लेना, बगल में बैठे वाले व्यक्ति से पूछ लेना, तूने पहले picture देखी तो नहीं? आप silent तरीके से पूरे mood के साथ में picture देखने का enjoy तभी कर पाएँगे, जब बगल में बैठा हुआ व्यक्ति silent रहे और वह तभी possible है, जब उसने वह picture पहले से न देखी हो। अगर उसने देखी है, तो वह हर चीज़ को पहले से बोल कर रखेगा और बगल वाले को परेशान करता रहेगा। समझ आ रहा है? मैं क्या कहना चाह रहा हूँ? ज्यादातर लोग पढ़े-लिखे होते हैं तो बगल वाले व्यक्ति को क्या करते हैं? इसी तरीके से परेशान करते रहते हैं। यह सभा में बैठने की योग्यता नहीं कहलाती है। पहली योग्यता...सभा में बैठने की।

2) सुनने की योग्यता

दूसरी योग्यता उसकी? दूसरी योग्यता...सुनने की। सुनने की योग्यता का मतलब? सुनने की भी एक योग्यता होना चाहिए। सुनने की योग्यता के लिए क्या चाहिए? हमारे पास कान तो हैं, हम सुन तो रहे हैं, इतने से काम नहीं चलेगा। सुनने की योग्यता का मतलब होता है...वह व्यक्ति सुनने को उत्सुक रहना चाहिए। सुनने की इच्छा उसमें बनी रहनी चाहिए। अब क्या कहेंगे? अब क्या होने वाला है? कान बिल्कुल, जैसे बोलते न...खड़े के खड़े रह गए। मतलब एक भी झपकी न आ जाए। उसको कहते हैं...सुनने की योग्यता। आ रही है? कुर्सी में बैठे हुए लोगों सुन रहे हो? वह देखो! यह सुनने की योग्यता बड़ी चीज़ है। अगर किसी के अन्दर कोई सुनने की योग्यता नहीं दिखाई दे रही है तभी आपको यह समझ में आएगा कि हाँ! यह योग्यता है। क्योंकि उसमें वह योग्यता नहीं है। अगर एक व्यक्ति सुनते-सुनते लुढ़क जाए तो समझ लेना, यह अयोग्य है और हम कम से कम सुन रहे हैं तो योग्य हैं। इसलिए लुढ़का हुआ भी एक-आध दिखाई देना चाहिए। ये योग्यताएँ हैं। सभा में बैठने की योग्यता होनी चाहिए, सुनने की योग्यता होनी चाहिए। तीसरी योग्यता है...समझने की योग्यता। किसकी?

3) समझने की योग्यता

आपके अन्दर एक understanding होनी चाहिए। हमें क्या समझाया जा रहा है? हम उस चीज़ को समझ पा रहे हैं कि नहीं? हमारा भाव वहाँ तक पहुँच रहा है कि नहीं? हम कुछ शब्दों के माध्यम से उस भाव तक पकड़ पा रहे हैं कि नहीं? यह योग्यता कहलाती है...समझने की योग्यता। यह तीन योग्यताएँ को

लेकर आप बैठेंगे और इन तीन योग्यताओं के साथ में अगर आप सभा में कुछ सुनेंगे तो आपके भीतर कुछ उतरेगा। यह समझने की योग्यता कहाँ से आएगी? अब महाराज! हमें तो कुछ समझदारी है नहीं, हम तो कुछ abcd जानते नहीं हैं, आप जो बताओ बस उतना ही हम सुन लेते हैं। अगर आपको इतना भी श्रद्धान है कि जो हमें कहा जाएगा, हम उसको समझने की कोशिश करेंगे तो यही भाव आपके समझने की योग्यता को बढ़ाता चला जाएगा। समझ में आ रहा है? इसलिए हम पूछते रहते बीच-बीच में। समझ में आ रहा है? आप 'हओ' कहते हो, इसका मतलब है कि आप में समझने की योग्यता है। ये तीन योग्यताएँ अगर आपकी बनी रहेंगी तो आपका उपादान योग्य बनता चला जाएगा।

योग्यता कैसे बढ़ाएँ

योग्य उपादान के लिए तत्त्व को सुनना, सभा में बैठना और तत्त्व को समझना, यह अगर हमारे अन्दर आने लग जाता है, तो हमारी योग्यता बढ़ने लग जाती है। इसलिए आप यहाँ बैठ कर के क्या करते हैं? अगर आपसे कोई पूछे, कोई third person, आप यहाँ से निकल करके जाएँ और आपसे कोई पूछे... आप यहाँ बैठकर के क्या करते हैं? घण्टे भर क्या करके आए आप? अगर आपको एक sentence बोलना होगा तो क्या बोलेंगे? **'सिद्धि स्यात्मोपलब्धि'** यह भी बोल सकते हैं और यह कह सकते हैं कि हम अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए प्रतिदिन प्रवचन सुनने जाते हैं। आखिर बच्चा प्रतिदिन class में क्यों जाता है? किसलिए? केवल पढ़ने के लिए नहीं, केवल पढ़ने के लिए जाएगा तो काम नहीं बनेगा, योग्यता बढ़ाने के लिए! हम वह पढ़ाई पसन्द ही नहीं करते जिसमें योग्यता न बढ़े। कभी आपको बताएँगे कि पढ़ने में और योग्यता बढ़ाने में क्या अन्तर होता है? वह एक अलग विषय है, तो आज आपके दिमाग में क्या आना चाहिए? कि हमें योग्य उपादान से युक्त होना है- **'योग्योपादान युक्त्या'** सिद्धि तो होगी, कैसे होगी वह? हमारे ही उपादान में होगी, हमारी ही आत्मा में होगी लेकिन हम उस आत्मा के उपादान की शक्ति को कैसे बनाएँ? योग्य बनाएँ। योग्य बनाने के लिए हमारे पास में तीन प्रकार की एक quality होनी चाहिए। एक तो सभा में बैठने की योग्यता होनी चाहिए, दूसरी हमारे पास में एक सुनने की योग्यता होनी चाहिए और तीसरी हमारे पास में सुने हुए को समझने की योग्यता होनी चाहिए। समझ रहे हो कि नहीं? मतलब आप में तीनों योग्यताएँ हैं। काम चलता रहेगा। ठीक है! आप भी हमको सुनते रहोगे और हम भी आपको सुनाते रहेंगे। कुल मिलाकर के आप भी हमको झेलते रहोगे, हम भी आपको।

उपसंहार

कल वीर शासन जयन्ती थी। हम क्या बोलते हैं? कल के दिन क्या हुआ? गणधर परमेष्ठी ने भगवान की दिव्य वाणी को झेला। बोलते तो हो आप, हमसे मना कर रहे हो। जब भगवान की वाणी को झेलने वाले, कौन हैं? गणधर परमेष्ठी हैं तो हमको भी अगर झेल रहे हो तो झेलना ही कहलाएगा। यानि झेलने का मतलब यह हो गया कि आप हमें जो दे रहे हैं, वह हम ग्रहण कर पा रहे हैं। आप जो भार हमें दे रहे हैं या जो हमें भारी-भारी बातें बता रहे हैं, उन्हें हम झेल पा रहे हैं। मतलब उठा पा रहे हैं, उन्हें हम ग्रहण कर पा रहे हैं। वह बुरा शब्द नहीं है, आप उसको बुराई में क्यों ले रहे हो? झेलना! **गणधर परमेष्ठी ने भगवान की वाणी को झेला। उनके लिए तो बोल रहे हो और हमारे लिए मना कर रहे हो।** यह क्या बात हुई? सुनी

ही नहीं केवल, समझी भी तो समझ कर के भीतर धारण की। उसी का नाम क्या होता है? झेलना। हमने यहाँ से कोई ball फेंकी और आपने उसको catch कर लिया। इसका मतलब क्या हो गया? आपने उसको झेल लिया। बस! इसी का नाम तो झेलना होता है और क्या होता है? इसी तरह से आप को भी झेलना है। झेलने से ही योग्यता बनेगी। रोजाना कुछ-कुछ catch करोगे, उसी से योग्यता बनेगी। जब हम अपनी इस योग्यता को बढ़ाएँगे तो हमें आगे सिद्धों के और भी गुण समझ में आएँगे।

**शून्य बिना नर जगत में, नहीं बना भगवान।
शून्य बिना नर जगत मे कैसे बने महान॥१॥**

**कुछ पाने की दौड़ मे, सदा अधूरा होय।
अज्ञानी की यह दशा, तृष्णा पूरित होय॥२॥**

2. सिद्धों के अस्तित्व की स्वीकारता ही सम्यग्ज्ञान है

कार्य-सिद्धि के लिए योग्य उपादान भी आवश्यक



आप लोगों की धर्म आराधना का, वीर शासन जयन्ती के उपरान्त प्रतिदिन कुछ न कुछ धर्म का भाव बढ़ता जाता है। जब भगवान महावीर स्वामी अपने समवशरण में विराजमान हो करके उपदेश दे रहे थे, उस समय पर एक मगध राज्य का राजा, राजा श्रेणिक के भी पिता, जिन्हें उपश्रेणिक कहा जाता था, वे उपश्रेणिक राजा अपने राज्य का भली-भाँति पालन करते थे। राज्य में जिस भी तरह के कोई भी अन्याय होते थे, उन अन्यायों का निराकरण भी बहुत ही बुद्धिमत्ता के साथ किया करते थे। वह एक वंश कहलाता था, इसे शिशुनाग वंश के नाम से जाना जाता है। एक ऐसे ऐतिहासिक राजा, जिनका इतिहास में भी वर्णन मिलता है और हिन्दू धर्म में भी वह राजा के रूप में स्वीकृत हैं, मान्य हैं और उन राजा के उस वंश में अनेक पुत्र हैं। यह बात आपको यहाँ पर इसलिए कह रहा हूँ कि कल आपके सामने एक शब्द आया था... **‘योग्योपादान युक्त्या’** योग्य उपादान से युक्त होने पर ही कोई भी कार्य बनता है। **चाहे वह मोक्ष का कार्य हो, धर्म-पुरुषार्थ का कार्य हो, अर्थ-पुरुषार्थ का कार्य हो या काम-पुरुषार्थ का कार्य हो, हर कार्य में योग्यता चाहिए और वह योग्य उपादान से ही योग्यता आती है।** जब हम योग्यता की बात करते हैं तो वह योग्यता यूँ तो देखा जाए हर किसी में होती है लेकिन हर कार्य के लिए योग्यता हर किसी में नहीं होती। योग्यता...हर किसी में कुछ न कुछ हुआ करती है लेकिन हर कार्य के लिए योग्यता हर व्यक्ति में नहीं होती। हर योग्यता का अपना-अपना एक मूल्य है और उस मूल्य के अनुरूप अगर वह योग्यता हमारे सामने आती है, तो वह कार्य घटित होता है। आपके सामने यह इसलिए कह रहा हूँ कि जो राजा उपश्रेणिक थे, उनके 500 पुत्र थे। आप समझें कि वर्धमान महावीर के समय में भी होने वाले राजाओं के सैकड़ों पुत्र हुआ करते थे और उन पाँच सौ पुत्रों में एक पुत्र है...जो राजा श्रेणिक के रूप में बाद में विख्यात हुए। वह श्रेणिक के नाम से उनके एक पुत्र है। 500 पुत्रों की योग्यताएँ एक तरफ और एक पुत्र की योग्यता एक तरफ। यह कहते हैं... योग्य उपादान से युक्त होना।

योग्यता में निरन्तरता

वह योग्य उपादान कहाँ से आता है? इस जन्म में हमारे लिए जो मिल गया, वह हमारे पास में दिखाई देने लग जाता है और उसके अनुसार जब हम अपना जीवन जीते हैं तो वह हमारी योग्यता तो बन जाता है लेकिन वह योग्यता भी हम कहाँ से लेकर के आते हैं? वह योग्यता भी हमारे अन्दर कहाँ से आती है? अगर हम कहें कि सारी योग्यताएँ इसी जन्म से उत्पन्न हुई हैं तो यह कहने से हर व्यक्ति के अन्दर योग्यता आ जानी चाहिए लेकिन वह योग्यता हर व्यक्ति के अन्दर नहीं हुआ करती है। उसी योग्यता को बढ़ाते रहने का जो कार्य चलता है, जन्म-जन्मान्तरों का वह कार्य आगे चलकर के उस योग्यता को बढ़ाता चला जाता है।

योग्यता की कसौटी

आप कहते हैं...हम धर्म कर रहे हैं। धर्म करते हुए भी, वह हमारी योग्यता को बढ़ाने वाला धर्म होना चाहिए।

अगर धर्म करने से हमारी योग्यता नहीं बढ़ती, हमारे भीतर के कषायों में कमी नहीं आती, हमारे भीतर के परिणामों में सुधार नहीं होता तो धर्म से योग्यता नहीं बढ़ सकती। आखिर योग्यता बढ़ाने की चीज क्या हो सकती है? बाहर आप किसी भी तरह की institute में अपने बच्चों को पढ़ाएँ या खुद भी किसी भी तरह का course करें, आपको योग्यता बढ़ाने के लिए यही चीजें बताई जाएँगी, जो आपको यहाँ बताया जा रहा है। योग्यता किस से बढ़ती है? जब भी आपको योग्य बनाने की बात आएगी, आपसे कहा जाएगा आप सबसे पहले अपने दिमाग को सन्तुलित रखें। क्या करें? **योग्य व्यक्ति का सबसे पहला लक्षण क्या है? Balanced mind होना।** दिमाग अगर आपका सन्तुलित है, तो आपकी योग्यता है और आप अपनी योग्यता को बनाए रखें हैं। जो योग्यता मिली है, उसको बनाए रखना भी बड़ी चीज है और उसको बढ़ाना तो और बड़ी चीज है।

योग्यता में वृद्धि के उपाय

योग्यता मिली है... उसको बनाए रखने का काम कैसे होगा? सबसे पहली condition बताई जाती है कि आप अपने mind को पहले balanced बनाएँ। Balanced mind का मतलब आप यहाँ बैठे हैं, **आपके दिमाग balanced है कि नहीं? यह मैं नहीं कह सकता। यह आप समझ सकते हैं।** आप यहाँ बैठे हैं। आप बैठे हो करके भी, भीतर-भीतर से कुछ भी हो सकते हैं। हो सकता है कि आप यहाँ बैठे हुए सोच रहे हो कि यहाँ पर विधान करने आए हैं। रिश्तेदारों ने बुलाया है, अब रिश्तेदारी निभा रहे हैं लेकिन सोच रहे हैं, अभी तो दूसरा ही दिन हुआ है, आठवाँ दिन तो बहुत दूर है। कैसे काम चलेगा? आठ दिन तक घर में कौन रहेगा? क्या होगा? बच्चे क्या कर रहे होंगे? बड़े क्या कर रहे होंगे? घर में क्या चल रहा होगा? आपके दिमाग में यह सब जैसे ही विचार आया यहाँ बैठकर के, it means... आपका mind क्या है? Unbalanced चल रहा है।

Balanced mind

Balanced mind का मतलब क्या है? आप यहाँ बैठे हो, आपको घर की कोई चिन्ता नहीं है। आप यहाँ बैठे हो, आप उपदेश सुन रहे हो, आपको बाहर की कोई चिन्ता नहीं है और आप यहाँ बैठकर के अपने दिमाग की शान्ति के साथ में, अपना वह कार्य, जो सुनने का कार्य है, समझने का कार्य है, वह कर रहे हो। **यह कार्य होना ही आपके mind के balance को बताता है।** अगर आपका दिमाग सन्तुलित होगा, आप सन्तुलित जीवन जिएँगे तो आपके लिए धर्म आपकी योग्यता को बढ़ाने वाला बन जाएगा। धर्म के ही माध्यम से योग्यता बढ़ती है और वही योग्यता बढ़ते-बढ़ते मोक्ष तक हमें पहुँचाती है।

यहाँ जो भी आत्माएँ मोक्ष को प्राप्त करती हैं, उन आत्माओं के बारे में कहा जा रहा है कि वे क्या करती हैं? क्या उन आत्माओं के अन्दर घटित होता है? आखिर हमने सिद्धों के बारे में सुना तो बहुत है लेकिन वे सिद्ध होते क्या हैं? कैसे होते हैं? **उनके बारे में अगर हम थोड़ा सा जानना चाहते हैं तो सबसे पहली condition आपके लिए बताई कि आपका mind पहले balanced होना चाहिए।** अगर mind balanced रहेगा तो आपको कुछ भी बताया जा सकेगा और जो भी बताया जाएगा, वह आपकी समझ में आएगा, आपके भीतर उतरेगा।

सिद्ध भगवन्तों की सिद्धियों का श्रद्धान

भगवान सिद्धों की भक्ति करते हुए, जो आचार्य पूज्यपाद महाराज ने अनेक तरह के छन्दों के माध्यम से सिद्धों का स्मरण किया है, अगर हम इन्हीं छन्दों को देखें तो पहले हमने आपके सामने पहला छन्द रखा था। आज हम दूसरा छन्द पढ़ने की तैयारी में हैं। पढ़ें? सभी के पास में किताबें हैं?

**‘नाभावः सिद्धिरिष्टा, न निजगुणहतिस्तत् तपोभिर्न युक्तेः,
अस्त्यात्मानादिबद्धः, स्वकृतजफलभुक्-तत् क्षयान् मोक्षभागी।
ज्ञाता दृष्टा स्वदेह - प्रमिति - रूपसमाहार - विस्तार - धर्मा,
ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा, स्वगुणयुत इतो, नान्यथा साध्यसिद्धिः ॥2 ॥**

आचार्य कहते हैं... ‘नाभावः सिद्धि रिष्टा’ अगर कोई यह कहे कि इस तरह की सिद्धि होती ही नहीं है, तो यह हमारे लिए इष्ट नहीं है। बहुत से ऐसे भी लोग हैं, जो कहते हैं... भगवान होते नहीं और होते हैं तो इस तरह से कोई भगवान बन जाता है, उनके अन्दर अनन्त ज्ञान आदि उत्पन्न हो जाता है। ऐसी कोई सिद्धि हो जाती है, जिससे स्वात्मा की उपलब्धि हो जाती है, ऐसा भी विचार उनके अन्दर दृढ़ता के साथ में नहीं बनता। कैसे बनेगा? भगवान सिद्ध हो जाते हैं या सिद्ध होते हैं और इस तरह की वह सिद्धि कर लेते हैं, इस बात की स्वीकारता होना भी बहुत बड़ी चीज है। **यह स्वीकारता का नाम ही श्रद्धान का समीचीन होना है। यह स्वीकारता का नाम ही अपनी आस्था को सिद्धों से जोड़ना है और यह स्वीकारता होने पर ही आपका ज्ञान समीचीन बनता है...जिसे हम right knowledge कहते हैं।** अगर आपके दिमाग में यह चल रहा है कि नहीं! इस तरह की कोई सिद्धि नहीं होती, कोई भी आत्मा सिद्ध नहीं बन सकता, किसी को भी स्वात्मोपलब्धि नहीं हो सकती है, कोई के अन्दर भी कर्म का अभाव नहीं हो सकता है, तो यह आपका मिथ्या ज्ञान है मतलब कि आपका मुख उल्टा है। एक दिन कहा था न आपसे... एक उल्टा मुख और एक सीधा मुख। मुख अगर उल्टा रहता है, तो सीधी बात भी उल्टी लगती है और मुख जब सीधा हो जाता है, तो फिर हर सीधी बात सीधे-सीधे ग्रहण करने में आ जाती है। अगर हमारे मन में यह चल रहा है कि इस तरह की कोई सिद्धियाँ नहीं होती हैं। ऐसे कोई सिद्ध भगवान नहीं होते हैं, ये सिर्फ कल्पनाएँ हैं तो आप वास्तविकता से दूर हैं और आचार्य कहते हैं... इस तरह की सिद्धि का कोई अभाव हो सकता है, ऐसा सम्भव ही नहीं है अर्थात् अभाव नहीं होता है, इस तरह की सिद्धि का भी सद्भाव होता है।

अभाव तथा सद्भाव का सिद्धान्त

अगर हम यह मान ले कि केवल अभाव होता है, तो हम आपसे पूछते हैं कि क्या चीजें सिर्फ अभावात्मक ही होती हैं? भावात्मक नहीं होती? ऐसी कोई चीज बताओ जो सिर्फ अभाव रूप में हो और जिसका सद्भाव न हो? ऐसी कोई चीज होती है? जिसका भाव होगा, उसी का अभाव होगा। जो अभाव रूप में होगी, उसका कभी सद्भाव भी होगा। केवल अभाव रूप में कोई चीज नहीं हो सकती या यूँ कहें हम आप से कि दुनिया में कोई ऐसी चीज बताओ जो केवल एक विधि रूप में रहती हो, निषेध रूप में न हो? मतलब यहाँ पर जैसे कहा कि सिद्धि नहीं होती। अगर असिद्धि है, तो सिद्धि भी है। अगर संसार है, तो मुक्ति भी है। हर चीज की उल्टी चीज दुनिया में हमेशा रहती है। यह जैन दर्शन का एक बहुत बड़ा logic है। **जैन दर्शन का सबसे**

बड़ा logic क्या है? हर चीज अपने विधि रूप के साथ में, निषेध रूप में भी हुआ करती है और जिसका निषेध होता है, उसकी विधि भी होती है और जिसकी विधि होती, उसका निषेध भी होता है।

आत्मा संसार में है, तो सब संसार में ही आत्मा होती है। संसार से भी मुक्त आत्माएँ हैं, यह इसी बात से सिद्ध है कि अगर आत्मा संसार में है, तो मुक्त आत्माएँ भी किसी दूसरे संसार में हैं। आत्मा बंधा हुआ है, बद्ध है। अगर आत्मा बद्ध है, तो कोई आत्मा मुक्त भी है। कोई ऐसी चीज बताओ, जो सिर्फ एक रूप में रहती हो? अगर काला रंग होता है, नीला रंग होता है, तो सफेद भी होता है। अगर दिन होता है, तो रात भी होती है। प्रकाश होता है, तो अन्धकार भी होता है। ऊपर कुछ होता है, तो नीचे भी कुछ होता है। प्रकृति में कहीं भी आप अपने ज्ञान को दौड़ाओ...आपको अगर फल वाले वृक्ष मिलेंगे तो बिना फल वाले भी वृक्ष मिलेंगे। सुगन्धी वाले फूल मिलेंगे तो बिना सुगन्धी के फूल भी मिलेंगे। कुछ कांटेंदार वृक्ष मिलेंगे तो कुछ फूल वाले भी वृक्ष मिलेंगे। हर तरीके का विपरीत स्वभाव इस प्रकृति के अन्दर सर्वत्र दिखाई देगा आपको। यह एक बहुत बड़ा logic है।

अगर बंध है तो मुक्ति भी है

अगर संसार में रहने वाली यह सभी संसारी आत्माएँ बंधी हुई हैं कषायों से, मिथ्या बुद्धियों से तो आचार्य कहते हैं...इन से मुक्त भी हुए लोग हैं। सिद्धि का अभाव नहीं है। सिद्धि अगर अभाव के रूप में हो गई तो फिर दुनिया में, संसार में, सिर्फ दुःख के अलावा कुछ नहीं बचेगा। दुःख ही दुःख रह जाएगा, सुख की कल्पना ही रह जाएगी, सुख मिलेगा नहीं। अगर दुःख है, तो सुख भी है। अकेली कोई चीज कभी नहीं रहती। पुरुष है, तो स्त्री है। science में सिखाया जाता है...positive pole है, तो negative pole भी है। हर चीज अपने anti-product के साथ में हमेशा इस दुनिया में रहा करती है। कोई भी चीज का, विरोधी चीज का अभाव कभी नहीं हो सकता है। **हर चीज में विरोधपने का सद्भाव भी बना रहता है। यह एक बहुत बड़ा logic है,** इस बात की सिद्धि करने का कि अगर इस संसार में रहने वाली आत्माएँ कषा-यवान हैं, इस संसार में रहने वाली आत्माएँ परेशान हैं तो कहीं न कहीं ऐसा संसार भी है, जहाँ रहने वाली आत्माएँ कषायों से रहित होती हैं, परेशानियों से रहित होती हैं। उसी का नाम क्या है? सिद्ध है और ऐसी उपलब्धि का नाम ही सिद्धि है। सिद्धि! सबके मुँह खुलते नहीं हैं बहुत आसानी से। **‘सिद्धि आत्मोपलब्धी’!** केवल कल के लिए था, आज नहीं है? उसी सिद्धि की बात यहाँ की जा रही है, वह सिद्धि का अभाव नहीं है। आचार्य कहते हैं- **‘नाभावः’** और आगे कहते हैं कि अगर वह सिद्धि का अभाव हो जाएगा तब तो इस संसार में कभी भी सुख का कोई सद्भाव ही नहीं हो सकता है।

आत्मा से ज्ञान का अभाव कभी नहीं हो सकता

‘नाभावः सिद्धिरिष्टा, न निजगुणहतिस्तत् तपोभिर्न युक्तेः’ कुछ लोग ऐसा कहते हैं, जब यह आत्मा तपस्या करती है, निर्वाण प्राप्त हो जाता है, तो ऐसे दुनिया में बहुत सी philosophy चलती है, दर्शन है, जिनमें यह समझाया जाता है कि आत्मा के बुद्धि आदि गुणों का उच्छेद हो जाता है। मतलब निर्वाण में, मुक्ति में, आत्मा के अन्दर कोई बुद्धि नहीं रह जाती है, ज्ञान नहीं रह जाता है। उनसे भी वह आत्मा रहित हो जाता है। उसके लिए आचार्य कहते हैं...यह बात युक्त नहीं है। यह बात सटीक तर्क के अनुसार उतरती नहीं है क्योंकि अगर आत्मा के अन्दर से ज्ञान का ही अभाव हो जाएगा तो संवेदना का ही अभाव हो जाएगा। आत्मा के अन्दर अगर संवेदना ही नहीं रहेगी तो फिर वह आत्मा इतना बड़ा तप करने के बाद में क्या प्राप्त

करेगी? संवेदन किसको होगा? जो ज्ञानवान होगा। सुख का भी संवेदन हमें ज्ञान से होता है। ज्ञान का अभाव कभी भी आत्मा से हो नहीं सकता है लेकिन कुछ दर्शनकार मानते हैं कि ज्ञान भी आत्मा से छूट जाता है। तब आचार्य कहते हैं...नहीं! यह कभी भी सम्भव नहीं है क्योंकि आत्मा का और ज्ञान का एकमेकपना स्वभाव से है। **ज्ञान से रहित आत्मा की कल्पना कभी की ही नहीं जा सकती है। जैसे उष्णता से रहित अग्नि की कल्पना नहीं की जा सकती। मतलब जहाँ अग्नि है, वहाँ पर उष्णता है, heat है। उसी तरह से जहाँ पर आत्मा है, वहाँ पर ज्ञान है।** ज्ञान मोक्ष में भी रहता है और ज्ञान संसार में भी रहता है। ज्ञान से रहित आत्मा नहीं होता। आत्मा जिन चीजों से रहित होता है, वह उसकी बाहर की चीजें होती हैं, जो आत्मा ने बाहर के तत्वों को अपने ऊपर रख रखा होता है। इसलिए कहा जाता है... **‘ज्ञान स्वभाव वाला आत्मा’**। आत्मा का स्वभाव कैसा है? ज्ञान स्वभाव है, ज्ञानमय है। आत्मा कभी भी ज्ञान से रहित नहीं होता। एक छोटे से छोटा insect भी होता है, कीड़ा भी होता है, तो वह भी अपने ज्ञान से काम करता है, उसके अन्दर भी ज्ञान होता है। इसलिए ज्ञान आत्मा का एक अपना निजी स्वभाव है। उस ज्ञान स्वभाव वाले आत्मा के लिए कभी भी ज्ञान से रहित होना, यह अगर कोई कहता है, तो आचार्य कहते हैं- यह भी युक्तियुक्त बात नहीं बैठती है।

जैन कुल में जन्म लेने का फल

फिर आत्मा कैसी है? आचार्य कहते हैं... **‘अस्ति आत्मा अनादि बद्धः’** आत्मा कैसी है? पढ़ो! बोलो! देखो! जानो! **‘अस्ति आत्मा अनादि बद्धः’** अस्ति मतलब है। आत्मा...कैसी? आत्मा अनादि काल से बद्ध है। बद्ध मतलब बंधा हुआ। जीवन भर जैन धर्म में जीने के बाद भी, जब लोग यह पूछा करते हैं कि महाराज! हमारी आत्मा इस संसार में कब से है? मुझे बड़ा आश्चर्य लगता है। इसलिए भी लगता है कि हम जान गए और यह नहीं जान पाए लेकिन यह बातें जानना हर किसी के लिए बहुत जरूरी है। अगर आपके बेटे ने जैन कुल में जन्म लिया है, तो उसे आत्मा की यह philosophy जरूर सिखाना चाहिए। अगर उसने यह आत्मा के बारे में, यह आत्मा के सिद्धान्तों को नहीं जाना तो उसका जैन कुल में जन्म लेने का कोई फल नहीं हुआ। आपने उसको बहुत बड़ा बना दिया, बहुत अच्छा उसके लिए पढ़ा-लिखा करके अच्छी job दिला दी, एक बड़ा आदमी भी बना दिया, अच्छा पैसा भी कमाने लगा, यह जैन कुल में जन्म लेने का फल नहीं है। यह तो कोई सामान्य कुल में भी व्यक्ति जन्म लेकर इतना बड़ा काम कर सकता है, बड़ा आदमी बन सकता है। **आपको अगर कोई बड़ा काम करना है तो सबसे बड़ा काम है...उस बच्चे को जैन philosophy से परिचित कराना। आत्मा, परमात्मा, शरीर, मन, इसका ज्ञान अगर उसे इस जन्म में नहीं होगा तो आखिर किस जन्म में होगा?** अगर उस व्यक्ति ने आत्मा को नहीं जाना और उसे यह भी पता नहीं कि आत्मा कब से है? जब भी किसी से पूछते हैं...आत्मा कब से है? किसी के पास कोई उत्तर नहीं होता। थोड़ा सा विचार करेगा, अब होगी जब से है तब से है। क्या पता? जब से दुनिया शुरू हुई है, जब से यह पृथ्वी बनी है, तब से, उसके बाद में, फिर कुछ दिनों बाद यहाँ पर प्राणी उत्पन्न होने लगे तभी से यह आत्मा है। तभी से यहाँ पर जन्म होने लगे और तभी से जीव-जन्तु यहाँ पर दिखाई देते हैं। जब से पृथ्वी बनी है तब से आत्मा बननी शुरू हो गई है। क्यों पढ़े-लिखे बच्चों, पृथ्वी कब से बनी है? अभी कोई 10-20 हजार वर्ष पहले से? पृथ्वी कब से बनी बच्चों? कितने हजार वर्ष पहले से? बस! 10, 20, 50 हजार वर्ष पहले से। ज्यादा से ज्यादा एक लाख वर्ष पहले से, इससे ज्यादा तो science में कोई है ही नहीं। कोई

पदार्थ ही नहीं है, जो एक लाख वर्ष पुराना, उससे ज्यादा कोई पुराना कोई पदार्थ हो, कोई कण हो, ऐसा science ने अभी तक खोजा ही नहीं। carbon data के आधार पर हर पदार्थ की प्राचीनता को, पुरा-तनता को, पहचाना जाता है और एक लाख वर्ष से पुरानी कोई चीज दुनिया में कहीं पर भी आज तक हासिल नहीं हुई है।

निराधार एवं अतार्किक है- Evolution की Theories

चलो मान लेते हैं, एक लाख वर्ष पुराना अगर आपके पास में कोई पदार्थ है, तो इसका मतलब है...वह पृथ्वी भी एक लाख वर्ष पुरानी है। बस! आप की दुनिया एक लाख वर्ष पहले से शुरू हुई है, इतना मान ले। उससे पहले आप क्या थे? कुछ नहीं था। यह धरती थी? नहीं थी। बच्चों से पूछो, क्या कहते हैं? यह धरती तो यहाँ पर कैसे बनी? यह तो पहले एक आग का गोला था, वह कहीं से आग का गोला पहले कहीं गिरा, फिर वह ठण्डा हो गया, फिर उसके अन्दर अनेक जीवाश्म पैदा होने लग गए, फिर उसमें धीरे-धीरे प्राणियों की वृद्धि होने लग गई और वह वृद्धि होते-होते amoeba से लेकर के आज यह मनुष्य बन गया है। यह पढ़ाया जाता है। **जिस पढ़ाई में लाखों रुपए दे करके आप अपने बच्चे के दिमाग के अन्दर यह ज्ञान पैदा कर देते हो, यह भर देते हो कि इस पढ़ाई के माध्यम से इस बच्चे ने यह सीख लिया है। क्या सीख लिया? कुछ वर्ष पहले यह पृथ्वी उत्पन्न हुई है, तभी से यहाँ पर लोगों का जीवन शुरू हुआ है। उससे पहले इस पृथ्वी पर कोई जीवन नहीं था।** origin of earth...यह science में सिखाया जाता है। पृथ्वी की शुरुआत...यह science में बताई जाती है। मनुष्य की शुरुआत...यह science में बताई जाती है और इसी science को पढ़ाने के लिए हम बच्चे को देश में भी पढ़ाते हैं, विदेश में भी पढ़ाते हैं। देश की बड़ी-बड़ी universities में छान लो, बाहर की भी cambridge जैसी universities में भी छान लो, हर जगह यही पढ़ाई मिलेगी। इसका नाम science है और इस science में यह बताया जाता है कि कोई भी इस पृथ्वी पर अगर जीवन है, तो वह एक time से शुरू हुआ है, हमेशा से कोई जीवन यहाँ पर नहीं था। यह science की philosophy है और इस को पढ़ाने के लिए हम लाखों रुपए खर्च करते हैं। हर उस university में अपने बच्चे का admission देने के लिए, जिस की fees लाखों में हो, जदोज-हद करते हैं। इसके लिए हम जिन्दगी भर मेहनत करते हैं।

यथार्थ तत्त्वज्ञान को सीखने की आवश्यकता

बच्चे को हम कभी वह philosophy नहीं पढ़ा पाते हैं, जो actual है, real है। उसे पढ़ाने के लिए तो यहाँ free में बिठा देते हैं। महाराज के सामने बिठाल दो। जब free में बिठाल दोगे तो जो बच्चा दस लाख रुपए की, पाँच लाख रुपए की fees देकर के जिस चीज को सीख कर के आया है, वह अगर हमारे सामने free में बैठ कर के कोई चीज सीखेगा तो उसके दिमाग में कैसे उतरेगी? बताओ? सुन रहे हो कि नहीं? आपने उसका दिमाग खराब कर रखा है और वह दिमाग अगर उसका पहले लाखों रुपए देकर के खराब हो चुका है, तो अब वह free में कैसे सुधरेगा? बताओ! सम्भावना है? हमें तो नहीं लगता। जब तक आप उसकी कीमत नहीं चुकाएँगे तब तक उस बच्चे को लगेगा ही नहीं कि यह भी एक कोई study होती है, यह भी कोई philosophy है। यह भी कोई सीखने की चीज है और इसको सीखने के लिए भी हमें कुछ time लगाना चाहिए, कुछ money लगाना चाहिए और इसके लिए कोई तैयार नहीं होता है। सब यहाँ पर आ कर के free में बैठ जाते हैं। क्या करें महाराज फिर? कल से Ticket की व्यवस्था करो! सही बता

रहा हूँ। **कीमत ज्ञान की भी तभी होती है, जब आदमी उसको कुछ खर्च करके उस ज्ञान को ले।** तभी आदमी के दिमाग में आएगा कि हमने कुछ नई चीज सीखी है, कोई नया course किया है और यहाँ सब free में मिलता है इसलिए जिसका मन आए बैठ जाता है, जब मन आए उठ कर चला जाता है। जिस पढ़ाई का कोई भी प्रयोजन नहीं है, senseless है, reality-less है, उस पढ़ाई के लिए लाखों रुपये खर्च किए जाते हैं और जिस पढ़ाई में reality बताई जा रही है, उसके लिए आपको एक रुपये देने में भी परेशानी होती है। बोलो! सही कह रहा हूँ, गलत कह रहा हूँ? आपके मन में चल रहा होगा...महाराज चाहते क्या हैं? चाहने से कुछ नहीं हो जाता लेकिन जो real बात है वह तो कह ही सकता हूँ न! और यही reality है। जिस बच्चे को आपने बड़ी-बड़ी universities में पढ़ाने के बाद में उसके दिमाग में कूड़ा भर रखा है, यह कचड़ा भर दिया है कि इस पृथ्वी का एक प्रारम्भिक बिन्दु है, उसको अगर हम यह सीखने के बाद में यह सिखाएँगे कि इस पृथ्वी का कोई प्रारम्भिक बिन्दु नहीं है। यह पृथ्वी अनादि काल से चली आ रही है, यह जीव यहाँ पर अनादि काल से है, यहाँ पर हर आत्मा अनादि काल से है, तो उसके दिमाग में यह चीजें अपने आप अगर जाएँगी तो मुझे नहीं लगता कि वह free में जा पाएँगी। इसलिए ऐसे बच्चों के लिए भी एक class, paid class होनी चाहिए। पढ़े-लिखे बच्चों के लिए, जो बड़ी-बड़ी institute में पढ़ कर के अपने आप को बहुत पढ़ा-लिखा मानते हैं। उन्हें भी पढ़ाने के लिए, अगर आपको उनके दिमाग को सुधारना है, तो एक, paid class की एक आपको योजना बनानी चाहिए। आप लोग तो ठीक है। जैसा कहो वैसा 'अहो' करने लग जाते हो, जैसा कह दो वैसा 'हूँ' करने लग जाते हो। लेकिन जो लोग वास्तव में तर्कशील होते हैं, अच्छे ढंग से argument करते हुए logical हर चीज को समझना चाहते हैं, उन्हें समझाने के लिए भी इस तरह की classes की आवश्यकता है।

अधूरा है- आधुनिक विज्ञान

आत्मा अनादि काल से बद्ध है, यह सही है, तो आत्मा का अस्तित्व अनादि काल से सिद्ध हो जाता है और जब आत्मा अनादि काल से है, तो कुछ वर्षों पहले फिर आत्मा कभी भी नई उत्पन्न नहीं हो सकती है। पृथ्वी पर जीवन कुछ वर्षों पहले शुरू हुआ, उससे पहले यहाँ पर कोई जीवन ही नहीं था तो इसका मतलब यह हो गया कि यह जो आप ऋषभदेव भगवान की जय, नेमिनाथ भगवान की जय और अजितनाथ भगवान की जय और यह चौबीस तीर्थकरों की जय बोलते हो, यह सब की जय बोलना ही बेकार है। यह हुए कब? यह एक हजार, दो हजार, लाख वर्ष पहले हो गए कि उससे भी पहले के इनके काल चले आ रहे हैं? यह हुए कब? जब यहाँ पर पृथ्वी ही नहीं थी, यहाँ पर जन-जीवन ही नहीं था तो यह हुए कब? यह सोचने की बात है और कोई भी तर्कशील व्यक्ति अगर इस तरह से सोचेगा तो उसकी समझ में आएगा...इतिहास में, भूगोल में, हमें जो science के माध्यम से चीजें सिखाई जाती हैं, वह अधूरी हैं, incomplete हैं। वह knowledge हमारे लिए एक तरह से अगर हमारे जहन में बस गयी है, तो उसे निकालने के लिए हमें इस तरह के injection लगाने की बहुत जरूरत है, जो यहाँ पर लगाए जा रहे हैं। यह injection जब तक आप अपने बच्चों में नहीं लगाओगे, उनकी बुद्धि कभी सीधी नहीं हो सकती है। **संसार कब से है? पृथ्वी कब से है? आत्मा कब से है? मनुष्य कब से है? जनजीवन इस पृथ्वी पर कब से है? बोलो कब से है?** अगर आपने उसका कोई time period बताना शुरू कर दिया तो वह अनादि नहीं रहा। वह क्या हो गया? आदि हो गया। उसका initial point अगर आपने बता दिया तो उसकी beginning हो गई और

यहाँ कह रहे हैं...since beginningless time. कब से चला रहा है? beginningless time से चला आ रहा है। उसकी कोई beginning नहीं है और beginning कभी होती भी नहीं है।

आत्मा का अस्तित्व अनादि-अनन्त

आत्मा का संसार में अगर कहीं पर उत्पन्न होना हो जाएगा, आत्मा अगर उत्पन्न हो गई, आत्मा अगर कहीं नई बन गई तो वह आत्मा मिट भी सकती है। जो चीज बन जाती है, वह मिट भी जाती है लेकिन जो चीज हमेशा से होती है, अनादि से होती है, वह कभी भी मिटती नहीं है। **अगर आत्मा का सम्बन्ध past time में beginningless time से है, तो future में भी endless time तक रहेगा।** मतलब भविष्य में भी यह आत्मा, हमारा आत्मा, हमारा जीव, कब तक रहेगा? बोलो! अनादि तो past time की अपेक्षा से हो गया, जो निकल गया। अब हम आगे की बात करें, आगे हम कब तक रहेंगे? आगे हमारे सामने कोई एक certain time नहीं है कि हम इतने ही काल तक यहाँ पर जन-जीवन रहेगा। इतने ही काल तक यहाँ पर लोग रहेंगे। जीवन हमेशा रहा है, हमेशा रहेगा। **अनादि...पिछले अपेक्षा से है और अनन्त...आगामी अपेक्षा से है।** इसलिए कहा जाता है, अनादि-अनन्त काल से इस आत्मा का अस्तित्व है और रहेगा।

अनन्त की परिभाषा

अभी जो मोक्ष चले गए, उनकी तो हम चिन्ता कर ही रहे हैं...यहाँ की आत्माएँ घट जाएँगी, वे घटने पर भी घट तो जाएँगी लेकिन इतनी नहीं घट जाएँगी कि उनकी संख्या में कोई कमी आ जाए। क्या सुना? जो मोक्ष चले गए, मोक्ष जाते रहेंगे, अभी भी अनन्त मोक्ष में हैं और अनन्त काल बाद भी अनन्त ही मोक्ष में रहेंगे और अनन्त और चले जाएँगे। फिर भी इस संसार में रहने वाली आत्माओं की संख्या में कमी नहीं आएगी क्योंकि संसार में रहने वाली आत्माएँ भी अनन्त हैं और मोक्ष में जाने वाली आत्माएँ भी अनन्त हैं। **अनन्त उसी को कहते हैं...जिसमें से अनन्त निकल भी जाए तो अनन्त ही बना रहे, उसी संख्या का नाम अनन्त कहलाता है।** सुन रहे हो? बहुत बड़े-बड़े गणित हैं। दिमाग फट जाएँगे, हमारे पास इतने बड़े-बड़े गणित हैं। अनन्त वह संख्या होती है, जिसमें से कितना भी निकल जाए फिर भी उसका अन्त नहीं हो सकता, उसमें संख्या में कभी कमी नहीं आ सकती। अगर आपको इसका एक छोटा सा उदाहरण समझना है, तो आप समुद्र को देखना। समुद्र के अन्दर समुद्र की अपार जलराशि है। आप रोजाना उसमें से जल निकालते रहो, गिलास भर-भर के निकाल लो, बाल्टी भर-भर के निकाल लो, अगर समुद्र का जल कभी भी कम हो जाए तो बता देना। समुद्र में से कितना भी जल निकाल लिया जाए, समुद्र का जल कभी कम नहीं होता। यह एक सामान्य उदाहरण से आप समझ सकते हो। इसी तरह से अनन्त राशि, जीवों की संसार में है। अनन्त जीव भी मोक्ष चले जाते हैं तो भी यहाँ पर अनन्त जीव बने रहते हैं। अनन्त की संख्या ही संसार में है और अनन्त की संख्या ही मोक्ष में है। **‘अस्ति आत्मा अनादि बद्धः’**, आत्मा कब से बद्ध है? अनादि काल से बंधा हुआ है। हमारा आत्मा कब से संसार में है? अनादि काल से।

आदमी का विकास किससे हुआ?

Science में पढ़ोगे तो Darwin का सिद्धान्त पढ़ाया जाएगा। न जाने कौन-कौन से सिद्धान्त पढ़ाए जाएंगे? बन्दर बना दिया जाएगा, बन्दर से शुरू करके मनुष्य बना दिया जाएगा। जैसे बन्दर ही सब मनुष्य बन गए हैं। अब बन्दर बचे ही न हो। कैसे-कैसे पागल लोगों के सिद्धान्त, हमें किताबों में पढ़ाए जाते हैं और हम उसे शिक्षा कहते हैं, विद्या कहते हैं। जिसे उटपटांग लोग, कोई भी गली चलते, कुछ भी बोल देता है, वह scientist बन जाता है, वैसे ही सिद्धान्त हैं। आदमी का विकास किससे हुआ? बन्दर से हुआ। Darwin की परिकल्पना सब ने पढ़ी होगी और यह बड़े मोटे-मोटे heading के साथ में सिखाया जाता है और वह क्या कहता है? हम सब पहले बन्दर थे। धीरे-धीरे विकास होते-होते बन्दर से यह मनुष्य बन गया है और वह इतनी बड़ी प्रमाणिक, उसकी बात हो गई है कि आज तक इतिहास में science की books में ऐसे ही पढ़ाया जाता है और यही सब के दिमाग में रहता है, सब बन्दर से ही मनुष्य बने हैं। मतलब सबका origin कहाँ से शुरू होता है? बन्दर से। अगर ऐसे बन्दर आप बन गए हो और science के तरीके से ऐसे बन्दर जब नाचने लग गए हैं तो फिर इन बन्दरों को सही तरीके से नचाने में बहुत time लगेगा, बहुत कष्ट उठाना पड़ेगा। आप सोचो! **क्या कोई बन्दर से मनुष्य बनता है? बन्दर भी कहाँ से आया? जब बन्दर से मनुष्य बन गया तो बन्दर क्या खत्म हो गए? या बन्दर से मनुष्य बनने की जो formation थी, वह रुक क्यों गई?** आज तक कभी कोई दिखाई देता है, बन्दर मनुष्य बन रहा हो। कहीं पर दिखाई दे रहा है, कोई भी science के अन्दर, कोई भी उन्होंने laboratory में दिखाया हो... देखो! यह बन्दर से मनुष्य का formation हो रहा है। कुछ नहीं है, फिर भी science पढ़ने के बाद में बच्चा collar उठा करके बोलता है... मैं science पढ़कर कर आया हूँ। कहाँ देखा तूने? science में कहाँ लिखा है? कब experiment किया है कि बन्दर से मनुष्य बना है? यहाँ मैं कोई बात बोलूँगा तो मुझे बताओ, experiment करके दिखाओ। जब आप हमको प्रत्यक्ष बताएँगे तब हम जानेंगे, ऐसे मुँह उठाकर बोलता है। मैं उस पगले से पूछता हूँ...तूने कहाँ देखा है कि बन्दर से मनुष्य बना है? कौन सी laboratory में दिखाया गया है? बता? यह जितनी भी बातें हैं, बेअकली की बातें लोग पढ़ते हैं, सीखते हैं और अपने आप को scientist कहते हैं, यह सबसे बड़ा आश्चर्य, हमें समझ में आता है।

आत्मा अनादि काल से बद्ध है

जब तक हमारे दिमाग में यही नहीं होगा कि हम कौन हैं? मेरी आत्मा कब से बंधी हुई है? मेरी आत्मा का क्या कोई भी प्रारम्भिक बिन्दु हो सकता है कि नहीं हो सकता है? जब हमें अपने ही बारे में किसी भी तरह का concept clear नहीं है, हम दुनिया की science के बारे में क्या खाक जानेंगे। अगर हम पढ़ भी लेंगे, बड़ी-बड़ी degrees भी कर लेंगे तो उससे क्या मिल जाएगा? सिवाय इसके कि आपका बेटा engineer है, scientist है, doctor है। एक label के अलावा और क्या मिलेगा? भीतर से तो वह खोखला है। यह पढ़ने पर ज्ञात होता है- **‘अस्ति आत्मा अनादि बद्धः’** ध्यान रहेगा? **आत्मा कैसी है? हम कब से हैं? तुम कब से हो? अभी भी अच्छे से आवाज नहीं आ रही।** क्या अभी भी सब को accept नहीं हो रहा है? कब से हो? अरे! भले ही मनुष्य के रूप में अनादि काल से न हो, पुरुष या स्त्री के रूप में अनादि काल से न हो लेकिन कुछ न कुछ अस्तित्व के रूप में तो अनादि से हो। इसलिए यह सिद्धान्त पहले दिमाग में रखो, आत्मा अनादि काल से बद्ध है।

अनादि परम्परा कर्म करना और फल भोगना

अब बद्ध है, तो उसको मुक्त भी किया जा सकता है। कैसे मुक्त होगा? 'स्व-कृतज-फलभुक्' जो आत्मा अनादि काल से है, वह क्या करता रहता है? बस! अपने किए हुए कर्मों के फलों को भोगता रहता है। आत्मा अनादि काल से क्या करता आया है? एक line में महाराज ने बात लिख दी, आचार्यों ने बात लिख दी एक छोटी सी line में, **अनादि काल से बंध करके संसार में आत्मा ने क्या किया? अपने कर्मों के फलों को भोगा। कर्म करता है और उसी के फल को भोगता है, इसके अलावा कोई काम नहीं करता है।** कैसे भी कर्म हो? चाहे वह किसी भी गति में ले जाने वाले कर्म हो, चाहे वह उसको तिर्यच बना देने वाले कर्म हो, चाहे मनुष्य बना देने वाले कर्म हो, चाहे वह दरिद्र बना देने वाले कर्म हो, चाहे हिंसात्मक कर्म हो, चाहे अहिंसात्मक कर्म हो...कर्म करेगा, उसका फल भोगेगा। बस! कर्म करना और फल भोगना यही संसार में अनादि काल से चलता चला आ रहा है। कर्म करना कभी बन्द नहीं होता और उस कर्म का फल भोगना भी कभी बन्द नहीं होता। कर्म के फल को भोगने का भाव ही उसके अन्दर हमेशा बना रहता है कि वह क्या भोग रहा है?

संसार-कर्म फल की देन

अभी आपसे पूछा जाए, आप क्या हो? आप फटाक से बोलोगे। बताओ? मैं आपसे पूछ रहा हूँ कि आप सुखी हो कि दुःखी हो? जल्दी बोलो! तुम लोग ढंग से बोलते नहीं हो। जो बच्चे ढंग से नहीं बोलते हैं, माँ उनसे परेशान होने लग जाती है। सोचने लग जाती है...भाई! यह बच्चा बोलता नहीं है, इतना बड़ा हो गया है। क्या बात है? इसका इलाज कराया जाए। इसकी tongue खराब है कि इसकी vocal problem है? क्या है? Doctor को दिखाया जाए? सुन रहे हो कि नहीं? बोलते क्यों नहीं? मैं क्या पूछ रहा हूँ? तुम लोग सुखी हो कि दुःखी हो? आपने एक क्षण में बोल दिया, मैं सुखी हूँ। यह सुखी हो रहे हो, यह सुख होना, यह क्या है? आपको पता है...**आप अपने कर्म का फल भोग रहे हो इसलिए सुखी हो। साता वेदनीय कर्म का फल भोग रहे हो, इसलिए सुखी हो और अगर कहीं से आवाज आ जाए कि नहीं महाराज! मैं दुःखी हूँ तो वह भी कर्म का फल भोग रहा है। वह असाता वेदनीय कर्म का फल भोग रहा है।** दुनिया में कोई भी इंसान से आप एक ही question कर लेना कि वह सुखी है या दुःखी है? दो में से एक ही answer देगा। सुखी होगा तो भी कर्म का फल भोग रहा है, दुःखी होगा तो भी कर्म का फल भोग रहा है। कर्म का फल भोगते हुए ही उसे अनुभव होता है कि मैं संसार में रह रहा हूँ। संसार में कर्म-फल भोगने के अलावा और कोई काम होता ही नहीं है। जो भी आपने कर्म किए, अभी कर रहे हो या पिछले कर्म के फल हैं, वे कर्म के फल से ही आपको सब कुछ मिल रहा है...सुख या दुःख, सद्भाव या अभाव, अनुकूलताएँ या प्रतिकूलताएँ। किससे मिल रही हैं? सब कर्म का फल भोग रहे हैं। हमारे पास में अच्छी चीजें हैं, बुरी चीजें हैं...किसके फल से हैं? सब कर्म के फल से हैं।

जीव स्वयं ही अपने कर्म-फल का कर्ता और भोक्ता

महाराजा उप श्रेणिक की मैं बात कर रहा था। उनके पास में सब कुछ था और सब कुछ होते हुए भी जब कोई कर्म का उदय आता है, तो चीजें अपने आप से भी बिगड़ने लग जाती हैं। एक राजा उनके लिए परेशान करता है। एक राजा उनके ऊपर आक्रमण करना चाहता है और वह आक्रमण कर भी देता है और वह उस

से लड़ते हैं और लड़ने के बाद में उसे जीत भी लेते हैं। जीतने के बाद में एक सज्जनता के नाते, पहले के जो क्षत्रिय राजा हुआ करते थे, वह एक काम किया करते थे कि भाई! अगर राजा को हमने जीत भी लिया है, तो जीतने के बाद में वह अगर मान लेता है कि हाँ! मैं हार गया हूँ, वह अपने चरणों में नम्रीभूत हो जाता है, तो उसे उसका राज्य वापस कर देते हैं। ठीक है! मुझे तेरा राज्य नहीं चाहिए। मेरे पास जो है, ठीक है। बस उदंडता मत करना, शान्ति से रहना। यह पहले के राजाओं के बहुत बड़े-बड़े काम हुआ करते थे। उन्होंने भी ऐसे ही किया। कृतज्ञता के वशीभूत होकर के, उसको उसका राज्य दे दिया और उसने अपनी दुष्टता नहीं छोड़ी। तब उसने क्या किया? महाराज को प्रसन्न करने के लिए उसने बहुत सारे उपहार, gift उनके पास में भेजे और उसी gift में उसने एक घोड़ा भेजा...अश्व! दुष्ट अश्व! जिसे कह सकते हैं।

उपश्रेणिक का अश्व प्रकरण



जब उप श्रेणिक राजा ने उसको देखा तो बाकी सब चीजें तो ठीक हैं...भाई! यह jewellery है, यह property है, यह है, वह है, सब चीजें। यह तो सब रख दो। यह घोड़ा, बड़ी अच्छी चीज है। सफेद रंग का, बड़ा बढ़िया घोड़ा दिख रहा है। यह जो इसने भेजा है, इस पर सवारी की जाए और वह उस पर सवारी करने निकल गए। जब सवारी करने निकल गए तो दुष्ट घोड़े के लक्षण ही अलग होते हैं। उसे रोका जाएगा तो भागता है। उसे किसी भी तरीके से control किया जाएगा, उतना ही uncontrol होता है। यह दुष्ट घोड़े का लक्षण होता है। अब वह जब उस पर सवारी करने निकले तो वह दुष्ट घोड़ा क्षण भर में न जाने कहाँ से जंगल में पहुँच गया और जंगल में पहुँचने के बाद में, जितना उसको रोकने का प्रयास करें वह उतना ही उड़ता चला जाए। ऐसे भयानक जंगल में उसको ले गया घोड़ा कि आखिरकार, वह घोड़ा भी चलते-चलते, चलते-चलते, उड़ते-उड़ते, एक तरह से वह इतनी दौड़ लगा रहा था, जैसे उड़ रहा हो और एक जगह जा कर के, जब वह खुद ही अपना एक तरह से control खो बैठे तो वह जाकर के गड्ढे में गिर पड़े। घोड़ा आगे न जाने कहाँ चला गया? सुन रहे हो? हमने आपको कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया? क्षण भर में एक राजा एक गड्ढे में जा करके गिर पड़ा। आप सोचो! **एक राजगृही का एक बहुत बड़ा राजा है**, बहुत सारी रानियाँ हैं, सैकड़ों पुत्र हैं और कर्म का उदय कैसे आता है? घोड़े पर सवार होने का लालच आया और उस लालच ने उस आदमी को अदृश्य जगह पर ले जाकर के जहाँ डाल दिया, वहाँ एक भी हितैषी नहीं है, कोई पूछने वाला नहीं है और वह राजा होकर के गड्ढे में पड़ा हुआ है, कराह रहा है। आधी हालत तो उस घोड़े ने ही खराब कर दी, उस पर बिठाकर के और आधी हालत उनके गिरने से, उस गड्ढे में गिरने से खराब हो गई, एक तरह से बिल्कुल मूर्छित से पड़े हुए। हालत उनकी ऐसी बिगड़ गई कि उन्हें खुद होश नहीं कि हम कहाँ पड़े हैं? क्या कर रहे हो वहाँ पर भी? बोलो! **‘स्व-कृतज-कर्म-फलभुक्’** क्या कर रहे हैं? अपने किए हुए कर्म का फल भोग रहे हैं।

संसार की अनिश्चितता

सुन रहे हो कि नहीं? देखते-देखते न जाने कैसे-कैसे लोग? किन-किन बीमारियों से ग्रस्त होकर के चले जाते हैं, सोचकर के आश्चर्य लगता है। एक कन्नौज वाला सुनील, जिसको कोई लोग जानते हो तो, सुन रहे हो? इत्र का काम करता था, Mumbai में रहता था। Mumbai के प्रभात, जो आपने नाम सुना होगा, उनका वह भाई है। अच्छा-खासा, हष्ट-पुष्ट मनुष्य, देखने में किसी भी तरीके से कहीं से कोई कमजोर नहीं, कुछ नहीं और इस corona के काल में वह काल का ग्रास बन गया। आज भी सोचने पर आश्चर्य होता है।

कल किसी ने ला करके समाचार दिया कि उसके यहाँ से समाचार आया। उसकी पत्नी ने नमोस्तु बोला है। मेरे दिमाग में एकदम से आया कि मैंने बहुत पहले सुना था कि शायद उसकी corona में death हो गई लेकिन किसी ने उसकी पुष्टि बहुत निकट में आकर नहीं की थी। फिर मैंने पूछा...क्या ऐसा है? उसने कहा हाँ! ऐसा ही है। लोग जो सामने आते हैं, अच्छे-खासे लोग होते हैं और देखते-देखते भी किस तरह से चले जाते हैं, क्या हो जाता है? हम जब तक जीवित रहते हैं तब तक यह सोच भी नहीं सकते हैं कि हमारे जाने के बाद में जब हम इस दुनिया से निकल जाएँगे तो हमारी family चल पाएगी? दो बेटियाँ हैं, उसकी पत्नी है, किसी भी तरीके से घर में अगर कोई व्यक्ति सोचे कि इस व्यक्ति के बिना जीवन चल जाएगा तो कहेगा नहीं! चल ही नहीं सकता है। Business इतना बड़ा है, कोई भी उसको, business को नहीं कर सकता, इतना बड़ा business है लेकिन चले जाने के बाद में, सब कुछ चलता रहता है।

सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं

जब तक हम यहाँ बैठे रहते हैं, कान-आँखें चलती रहती हैं, मन चलता रहता है तब तक हमें लगता है, नहीं! अभी तो हमें बहुत इकट्ठा करना है। अभी तो हमें बहुत कमाना है, अभी तो हमें बहुत ऊँचा आदमी बनना है। अभी तो हमें और यह property खरीदनी है, अभी तो हमें और वह property खरीदनी है। यह दिमाग में चलता रहता है और उसी के कारण से हमारे अन्दर वह परिग्रह की, मूर्छाओं की, वासनाएँ बढ़ती रहती हैं। हम क्या कर रहे होते हैं? हमें यह तो सब दिखाई दे रहा है कि हम यह कर रहे हैं, यह कर रहे हैं, यह कर रहे हैं। **यह जो कर्म कर रहे हैं, इसका फल भी हम भोगेंगे। वह कब भोगेंगे? वह भोगने का तो अभी तुमको time ही नहीं मिलेगा।** मान लो आज आपके पास में property जितनी है और उससे आप satisfied नहीं हो और आपके दिमाग में चल रहा है, कल का business जब इतना बढ़ जाएगा, अगले साल में जब हमारी इतनी profit हो जाएगी तब हम अपनी property को और कहीं पर 50 एकड़, 20 एकड़, 100 एकड़ लेकर के डाल देंगे। तब हम एक बहुत बड़े आदमी हो जाएँगे। यह विचार आपके अन्दर आज चल रहा है। इस विचार से आपको पता है कि आपके भीतर क्या हो रहा है? आप अपनी आत्मा को बाँध रहे हैं। किससे? उस property से, उस land से, उस अचेतन चीज से और यह विचार आपके अन्दर कर्म के साथ में बंध रहे हैं। किसी को नहीं मालूम, आप अपने भीतर-भीतर खुश हो बस! मैं आगामी पाँच साल में 100 करोड़ का आदमी बन जाऊँगा। आप विचार कर रहे हो, कर रहे हो न? अरे! कर तो लो, मन के लड्डू खाने में क्या जा रहा है? इसी विचार में आगामी पाँच साल में, आपके दो साल गुजरे, तीसरे साल में कुछ attack आया और आप चले गए। बोलो तो? यूँ तो बोलो कि महाराज! ऐसी बडुआ क्यों दे रहे हो? यह बद् दुआ नहीं है, यह आसपास अगर आँख खोल करके देखोगे तो सब दिखाई देने लग जाएगा कि आदमी क्या कर रहा है? **अपने कर्म का सिर्फ फल भोगता है। तुम्हें मिलेगा उतना ही, जितने तुम्हारे कर्म में है और वह तुम्हें अभी मिल चुका है और उसका फल क्या है?** अगर उससे अपने आप को विरक्त करोगे तो इस संसार से मुक्त होगे और उससे अपने आप को बांधे रखोगे तो इस संसार के गड्ढे में पड़े रहोगे और विरक्त करने के लिए मन बनता नहीं है, कमी कहीं हो न जाए।

मूर्च्छा (परिग्रह) से कर्म बंध

कोई भी आदमी दान देते हुए, कभी आप देख लेना, किसी भी तरह का दान देता है, अपनी हैसियत से कभी कोई दान नहीं देगा। 100 करोड़ का आदमी, अगर एक लाख भी दान देगा तो उसे लगेगा, यह मैंने कितना

बड़ा दान दे दिया। जबकि 100 करोड़ के turnover वाले आदमी के लिए एक लाख रुपये का दान वैसा ही है...जैसा एक लाख कमाने वाले व्यक्ति के लिए एक रुपये का दान। समझ में आ रहा है? लेकिन **आदमी अपने आपको मूर्च्छाओं से बाँधे रखता है और इन मूर्च्छाओं से जो कर्म बंध हो रहे हैं, इनके फल को कब भोगेगा?** अब यह जन्म तो चला गया। 2 साल में निपट गया, 4 साल में निपट गया, चलो 5 साल में भी, 10 साल में भी सही, कितना जीओगे? यह कर्म का फल तो यहाँ पर जो हमने बाँधा, यह कहाँ मिलेगा? यह जन्म-जन्मान्तरों में अब उस पैसे से बंधे रहने का फल मिलेगा। मतलब जन्म-जन्मान्तरों में पैसे की वासना आपको बाँधे रखेगी। अगले जन्म में भी आप जहाँ जन्म लोगे, वहाँ पर भी आपके अन्दर जन्म के बाद ही, जैसे ही आप बड़े होंगे, बस पैसा-पैसा-पैसा दिखेगा और फिर आप पैसे की दौड़ में, फिर अपना जीवन अन्त करोगे क्योंकि यह वासना अनादि काल से आपके अन्दर चल रही है। हर नए जन्म में, वह नए रूप में और हमारे अन्दर बंध जाती है। हम उसका फल भोगते-भोगते ही अनादि काल गुजार चुके हैं, अनन्त काल भी गुजार लेंगे।

पिछले कर्म के पुण्य से मिला उत्कृष्ट कुल में जन्म

क्या करते-करते? **‘स्व-कृतज-फलभुक्’** सुन रहे हो? **‘भुक्’** अर्थात् भोंकने वाला नहीं, भोगने वाला। हम अपने कर्मों का फल ही भोगते हैं। अगर तुम्हें आज 10 करोड़, 20 करोड़ मिले हैं तो आज उसका फल, आप भोग रहे हो। लेकिन अगर आपको 50 करोड़ की चाहत है और वह आपके कर्म के फल में नहीं है, तो आप 50 करोड़ तक पहुँच नहीं पाओगे, वह दिन देख नहीं पाओगे, आप बीच में निपट जाओगे क्योंकि वह कर्म का फल है ही नहीं आपके पास में। **आप सिर्फ इच्छा कर रहे हो और उस इच्छा से आप जन्म-जन्मान्तर के लिए, उस मूर्च्छा से बंध रहे हो, जो आपने आज बुद्धिपूर्वक अपने अन्दर पैदा कर ली है।** इसलिए जैन दर्शन में सिखाया जाता है...सबसे पहला धर्म श्रावक के लिए यदि है, तो क्या कहा गया है? अर्थ का अर्जन करो, यह कहा गया? धन कमाओ, यह कहा गया? वह तो तुम कमा ही लोगे। कैसे कमा लोगे? जो अपने पिछले कर्म के पुण्य हैं, उसके फल से तुम्हें मिल रहा होगा। उत्कृष्ट कुल में जन्म लिए हो, थोड़ा पुरुषार्थ करोगे और अच्छा कमा लोगे और अच्छा पैसा आ जाएगा। यह हो जाएगा लेकिन आचार्यों ने इसको धर्म नहीं कहा। धर्म किसको कहा? श्रावक कैसे धर्म करेगा?

श्रावकों के धर्म का स्वरूप

धर्म होता है, भीतर की कषायों का त्याग करने से, भीतर के लोभ का त्याग करने से और वह लोभ का त्याग अगर श्रावक कर पाता है, तो आचार्यों को पता था कि सबसे बड़ा लोभी आदमी इस धरती पर है, तो मनुष्य है। मनुष्य के अन्दर, अगर सबसे ज्यादा लोभ है, तो अपने धन का लोभ है। जरूरत पड़ जाए तो अपने बीवी-बच्चों को भी दाँव पर लगा देगा, धन नहीं छोड़ेगा। इसलिए आचार्यों ने सबसे पहला धर्म अगर कहा, यह बहुत scientific है यह बात, जो आपसे कह रहा हूँ, **श्रावक का, सबसे पहली बात अगर उससे कही गई, धर्म कहा गया तो क्या? अपनी लोभ कषाएँ भीतर से कम करना** और वह कम कैसे होंगी? आचार्यों ने कहा...**दान सबसे पहला धर्म है।** दुनिया के सब धर्मों में जैन धर्म इसीलिए श्रेष्ठ कहलाता है, जैन धर्म इसलिए बड़ा कहलाता है क्योंकि एकमात्र ऐसा धर्म है, जो दान को श्रावकों का सबसे बड़ा धर्म कहता है।

दान की महिमा

आप पढ़ लेना दुनिया की philosophy, किसी भी philosophy में दान देना आपको सबसे पहला धर्म नहीं मिलेगा। यह केवल जैन philosophy में मिलेगा। क्यों? क्योंकि आचार्यों को, तीर्थंकरों को, यह बात पता है कि यह आदमी अगर लोभी है, तो किसका लोभी है? **धन का लोभी है और इसके अन्दर से अगर धन निकलेगा तो ही इसके भीतर से कोई धर्म उपजेगा।** नहीं तो बाहर-बाहर यह सिर्फ सुनता रहेगा, करेगा कुछ नहीं। सुनते-सुनते 5 महीने भी निकाल लेगा, इसके अन्दर कुछ भी परिवर्तन नहीं आएगा। परिवर्तन कब आएगा? जब यह भीतर से अपने कुछ लोभ को कम करेगा। इसलिए अपनी patience को और अपने possessions को control करने के लिए कहा गया। जिस पर हमारा अधिकार है, उनको भी control करो और अपने अन्दर जो यह कषाय है, उसको भी control करो। यह भीतरी धर्म है और इसी धर्म के लिए आचार्यों ने कहा...श्रावकों का प्रमुख धर्म पहले दान और बाद में पूजा। पूजा बाद में रखा है क्योंकि पूजा भी करते हुए कुछ छोड़ना है। त्याग करोगे तो पूजा होगी। सुन रहे हो कि नहीं? ऐसा लग रहा है सब को साँप ने काट लिया, सूँघ लिया क्या बोलते हो? साँप सूँघ गया? पूजा भी तब होती है जब पहले त्याग होता है। सिद्धचक्र विधान करने वालों से पूछ लो। पहले कुछ निकालना पड़ता है, पूजा तो बाद में शुरू हुई न? पहले कुछ त्याग का भाव किया, दान का भाव किया तब पूजा शुरू होती है। भगवान अपनी पूजा तब शुरू कराते हैं, जब पहले तुम कुछ उनके चरणों में अर्पित कर दो, त्याग कर दो। समझ रहे हो कि नहीं? कल मैंने क्या बोला था? **श्रोता को कैसा होना चाहिए?** सभा में बैठने योग्य भी होना चाहिए, सुनने की योग्यता वाला भी होना चाहिए और समझने की योग्यता होनी चाहिए। समझने का मतलब ही होता है कि वह इशारों में बात समझ जाए।

बिना दान के भगवान की पूजा भी नहीं होती

क्या कह रहा हूँ? भगवान, तीन लोक के नाथ, मैं सोच रहा था कि भगवान ने तो अपना काम अपने उपदेशों से कर लिया और जब भी उनकी पूजा होती है, भगवान की पूजा करते हो तो बिना दान के भगवान की पूजा नहीं हो सकती है। अब मैं भगवान के बाद कहाँ पर आ रहा हूँ? पंच परमेष्ठी हैं अपने सामने और उन पंच परमेष्ठी में अरिहन्त और सिद्धों की पूजा तो आप ने कर ली। अब क्या बचा? बोलो तो? इनकी पूजा कैसे करोगे? इनकी पूजा के लिए भी आपको कुछ करना पड़ेगा कि नहीं करना पड़ेगा? तरीका अगर देखा जाए तो वही सर्वश्रेष्ठ है, जो अरिहन्तों ने किया है, सिद्धों ने किया है। पूजा बाद में, दान पहले। इसी तरह से मुनि महाराज के लिए भी, आचार्य परमेष्ठी के लिए भी, पूजा बाद में, त्याग पहले, दान पहले। यही सही विधि है और इसी विधि से आगे चला जाएगा तो काम बनता है और यह विधि अगर टूट गई तो काम बिगड़ जाता है। क्या कह रहा हूँ मैं? ऐसा लग रहा है कि शायद इस logic को बताए बिना यह चतुर्मास शुरू हो गया है। यह logic शायद आपके दिमाग में नहीं है और यह चतुर्मास शुरू हो गया है। अब तो शुरू हो गया है। जबकि यह शुरूआत में ही यह logic बता देना था। कब? जिस दिन हम आए थे, हमें उसी दिन बता देना था, यह मेरी गलती हो सकती है लेकिन मैंने सोचा, अभी नए-नए लोगों को यह logic बताएँगे तो यह कहीं बिदक नहीं जाएँ। इसलिए अभी 3 दिन बाद मैं यह logic क्यों बता रहा हूँ? क्योंकि इसके बिना कोई काम होने का ही नहीं।

कषायों के त्याग से ही पंच परमेष्ठी से जुड़ाव

आपके अन्दर जो भी भक्ति होगी, जो भी समर्पण होगा, वह आपके अन्दर मुनि महाराज से, आचार्य परमेष्ठी से, वह भाव, वह शक्ति, वह भक्ति का भाव होगा, वह भाव आपका उस व्यक्ति विशेष से ही होगा। आपको यह नहीं सोचना है कि यह committee में हैं। यह पहले की committee है, यह बड़ी committee है, यह committee इस तरह की है, यह committee उस तरह की। यह committee के काम नहीं होते हैं। यह व्यक्ति का व्यक्ति से जुड़ने का भाव है। **व्यक्ति का पंच परमेष्ठी से जुड़ने का भाव है। जो व्यक्ति पंच परमेष्ठी से जिस तरह से जुड़ने की भावना करेगा, उसका वह धर्म पंच-परमेष्ठी के माध्यम से उसके पास में पहुँचेगा।** committee से धर्म नहीं होते हैं। हमें किस से जुड़ना है? पंच परमेष्ठी से जुड़ना है कि committee से जुड़ना है? बोलो तो! उद्देश्य तो पहले बताओ। जब हमें पंच परमेष्ठी से जुड़ना है, तो हमें सिर्फ पंच परमेष्ठी पर ही ध्यान रखना है। हम जो कुछ भी करेंगे, हम जो कुछ भी अपने अन्दर से त्याग करेंगे, वह किसके लिए? वह किस से जुड़ने के लिए होगा? वह पंच परमेष्ठी से जुड़ने के लिए होगा लेकिन उस त्याग की कोई कीमत नहीं होती है। जुड़ने के लिए त्याग करना आवश्यक होता है। जितना आप अपने भीतर से कषायों को त्याग करते जाओगे, छोड़ते जाओगे, आपके अन्दर उतना ही पंच परमेष्ठी से लगाव होता चला जाएगा।

अच्छे कर्मों का महत्व

यह श्लोक का अर्थ आज तो पूरा होने का नहीं। बात यहीं पर अटक गई... **‘स्व-कृतज-फलभुक्’** सब क्या कर रहे हैं? अपने-अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं। अब यहाँ पर फल भोगते हुए भी, कुछ ऐसे अच्छे कर्म कर लिए जाएँ, जिनका फल हम आगे भी भोगे तो कम से कम सुख-पूर्वक भोग सकें। वह कैसे होगा? उसके लिए ही जितने भी प्रकार के विधान, आयोजन आदि होते हैं, यह सब इसलिए होते हैं ताकि आप अपने अच्छे कर्मों का फल आगे भोग पाओ और जो बुरे कर्मों के फल आपके अन्दर पहले से बंधे पड़े हैं, आपकी सत्ता में पड़े हैं, आपकी आत्मा से पहले से वह लगे हुए हैं, वह अगर अपना फल दे तो उससे भी आपका कुछ बिगाड़ न हो पाए, आपको कुछ दुःख न हो पाए और आप अच्छे कर्मों के फलों के माध्यम से उन पाप कर्मों के फलों को भी शान्त कर दें। **यही एक अक्ल की बात आचार्यों ने हमें सिखाई है। बुरे कर्मों को पहले जीतेंगे तब हम अच्छे कर्मों को जीतने की योजना आपको बता पाएँगे।** क्या करना है? जो करना है, वह भी आपके सामने आएगा। आज के लिए मैं इतना पर्याप्त समझता हूँ। इसी श्लोक का आगे का अर्थ आगे के दिनों में होगा।

3. भव्य आत्मा में ही सिद्ध होने की योग्यता होती है

सिद्धों की आराधना का यह क्रम, सिद्ध भगवन्तों की पूजा और उनकी भक्ति के साथ में चल रहा है। जब हम सिद्धों की बात करते हैं तो सिद्धों की वह प्रक्रिया भी हमारे दिमाग में होनी चाहिए, जिसके माध्यम से कोई भी आत्मा, सिद्ध आत्मा बन जाता है। जो आत्मा सिद्ध बनता है, उसके लिए आचार्यों ने कहा है कि वह अपनी भव्यत्व शक्ति से सहित होना चाहिए।

भवितव्यता की अपेक्षा जीवात्मा के भेद



इस संसार में दो प्रकार के जीवात्मा होते हैं- एक भव्य आत्मा होते हैं और एक अभव्य आत्मा होते हैं। जो भव्य होते हैं, वह कभी न कभी सिद्धि को प्राप्त हो जाते हैं। किन्तु जो अभव्य होते हैं, वह कभी भी सिद्धि को प्राप्त नहीं होते हैं। भव्य होना, अभव्य होना, यह उस आत्मा के लिए एक स्वाभाविक भाव होता है और जहाँ स्वाभाविक भाव आ जाता है, वहाँ पर... 'पर' का कोई भी उसमें हस्तक्षेप नहीं होता है। जो भव्य आत्मा होते हैं, वे भव्य ही रहते हैं और जो अभव्य आत्मा होते हैं, वे अभव्य ही रहते हैं। यह हमेशा स्मरण में रहे कि भव्य जीव के अन्दर ही वह शक्ति उद्घाटित हो सकती है, जिसके माध्यम से वह कभी न कभी रत्नत्रय को प्राप्त होकर सिद्धि को उपलब्ध हो जाता है। **अभव्य जीव कभी भी सिद्धि प्राप्त नहीं कर सकता, शुद्ध नहीं बन सकता, सिद्ध नहीं बन सकता, आत्मिक सुख प्राप्त नहीं कर सकता।** अभव्य जीव को कभी भी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति नहीं हो सकती। आपकी भाषा में कहें तो अभव्य जीव कभी भी अपना मुँह सीधा नहीं कर सकता। अपना मुख सीधा करने का मतलब ही है...सम्यग्दर्शन को उपलब्ध होना, सम्यग्ज्ञान ज्ञान को उपलब्ध होना और ऐसा कृत्य करने का जो परिणाम उत्पन्न होता है, वह नियम से भव्य जीव के अन्दर ही उत्पन्न होता है। इसलिए जब भी हमारे मन में यह विचार आए कि जो आत्मा सिद्ध बन गए हैं, वे कौन से आत्मा हैं? वे नियम से इस संसार में भव्य आत्मा थे, जो सिद्ध बन गए। आगे भी जो सिद्ध बनेंगे, वे भव्य आत्मा ही सिद्ध बनेंगे, अभव्यों को कभी सिद्धि की प्राप्ति नहीं होती, अभव्यों को कभी भी स्व-आत्मा की उपलब्धि नहीं होती।

द्रव्य हमेशा गुण के साथ रहता है

यह बात यहाँ जो इन छन्दों में कही जा रही है, इसी दूसरे छन्द को कल हमने पढ़ा था... 'नाभावः सिद्धि-रिष्टा' सिद्धि का अभाव कभी भी इष्ट नहीं है। 'न निजगुणहतिस्तत् तपोभिर्न युक्तेः' और न ही कभी आत्मा के अपने गुणों का कभी भी विनाश होता है। सिद्धि में क्या रह जाता है? आत्मा अपने गुणों के साथ में, उन गुणों का पूर्ण रूप से प्रकट करके उनका अनुभव करता है। इसलिए आचार्यों ने कहा कि सिद्धि में कभी भी आत्मिक गुणों का विनाश नहीं होता है, गुणों का विनाश नहीं होता है। इसलिए जो लोग कहते हैं कि बुद्धि का विनाश हो जाता है, ज्ञान का विनाश हो जाता है, तो आचार्य कहते हैं...नहीं! ज्ञान आत्मा का गुण है और आत्मा का गुण होने के कारण से जिस पदार्थ का जो गुण होता है, वह गुण कभी भी उस पदार्थ से अलग नहीं किया जा सकता। **जैसे उष्णता अग्नि का अपने आप में एक गुण है, अग्नि को इससे कभी**

भी उष्णता को अलग नहीं किया जा सकता। कोई भी पुद्गल पदार्थ होता है, उसके अन्दर भी एक गुण होता है। वह स्पर्श सहित होता है, रस सहित होता है। इन स्पर्श-रस आदि गुणों को कभी भी उन पुद्गल पदार्थों से अलग नहीं किया जा सकता। **ठीक इसी तरह आत्मा के अन्दर ज्ञान गुण है, उस ज्ञान गुण को आत्मा से अलग नहीं किया जा सकता।** इसलिए यह बात हमेशा ध्यान में रहे कि जो भी आत्माएँ सिद्ध हो जाते हैं, वे हमेशा ज्ञानमय-आनन्दमय बने रहते हैं।

प्रत्येक जीव कर्म का कर्ता तथा भोक्ता है

‘अस्त्यात्मानादिबद्धः’ यह भी कल आपने सुन लिया था कि आत्मा अनादि काल से इस संसार में है। “स्वकृतजफलभुक्” अपने किए हुए कर्म के फल को भोगने वाला है। कोई भी आत्मा हो, चाहे वह छोटे से छोटा जन्तु हो, प्राणी हो, हर प्राणी कोई न कोई कर्म कर रहा है। अगर आप यह देखो कि किसी के पास में मुँह नहीं भी है, मन नहीं भी है, बोलने की क्षमता नहीं भी है, तो भी वह **जीवात्मा के अन्दर कोई न कोई कर्म चल ही रहा है। वह कर्म कर रहा है** और उसका वह कर्म, उसके भीतर जो भी कषायें पड़ी हुई हैं, जो भी उसके भीतर अनादि काल से बन्धे हुए उसके भाव हैं, उन्हीं भावों के अनुसार उसके कर्मों का बन्ध होता रहता है। इसलिए संसार में कोई भी आत्मा, कर्म-बन्ध से रहित नहीं और उन कर्मों का फल भोगने से भी रहित नहीं।

कर्म बंध तथा फल की निरंतरता

संसार का प्रत्येक आत्मा हर समय कर्म भी बांध रहा है और हर समय कर्म का फल भी भोग रहा है। आप यहाँ बैठे हैं, यहाँ बैठे-बैठे भी आपके कर्म बन्ध रहे हैं और यहाँ बैठे-बैठे भी आप कर्म का फल भी भोग रहे हैं। यहाँ आप बैठे हुए हैं, शान्ति से बैठे हैं, आपके कहीं पर भी शरीर में दर्द नहीं हो रहा है, आपकी बुद्धि सही काम कर रही है और आप उपदेशों को अच्छे ढंग से सुन रहे हैं। यह सब आप के अनेक कर्मों के फल से ही सम्भव है। आपकी इन्द्रियाँ काम कर रही हैं। **इन्द्रियावरणी कर्मों का क्षयोपशम** आपको प्राप्त है, उसके फल से आपकी इन्द्रियाँ काम कर रही हैं। आपका ज्ञान काम कर रहा है। **ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम** से आपका वह ज्ञान काम कर रहा है, जिससे आप सुन पा रहे हैं, समझ पा रहे हैं। आप यहाँ सुखपूर्वक बैठे हैं, आपको किसी भी प्रकार की असाता नहीं हो रही है, आपका **सातावेदनीय कर्म** काम कर रहा है। आप यहाँ पर बैठ करके सुन पा रहे हैं। **अन्तराय कर्म का क्षयोपशम है** आपके लिए, इसलिए आप इस लाभ को ले पा रहे हैं अन्यथा अगर **लाभान्तराय कर्म का उदय** आपके लिए आ जाए तो तुरन्त ही आपको यहीं, सभा में बैठे-बैठे call आ जाएगा कि वहाँ पर आपके चाचा के यहाँ पर एक लड़का हो गया है। आपको तुरन्त यहाँ से उठकर जाना पड़ेगा, सोर लग गई है। यह क्या है? यह अन्तराय कर्म है।

ऐसे अनेक कर्मों का फल आप यहाँ बैठे-बैठे अनुभव कर रहे हैं लेकिन आपको सिर्फ यह ध्यान रहता है... मैं फलाने चन्द हूँ, मैं फलाना सेठ हूँ, मैं फलाना आदमी हूँ, मैं ऐसा हूँ, मैं वैसा हूँ। यह नहीं ध्यान रहता कि हम कितने कर्मों का फल भोग रहे हैं? और उन कर्मों के फल से ही हम यहाँ पर बैठ पा रहे हैं और यहाँ बैठ कर के भी हम कर्म ही बान्ध रहे हैं। कौन से कर्म बन्ध रहे हैं? जैसा आपका मन में भाव चल रहा होगा, वैसा आप कर्म बान्ध रहे हैं।

यथा भाव तथा बन्ध

यहाँ बैठकर के भी आपके बैठने का उद्देश्य क्या होगा? मन के अन्दर कहीं मायाचारी चल रही होगी तो उसका भी कर्म का बन्ध हो सकता है। यहाँ बैठकर के आप अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए बैठे हैं या किसी दूसरे को देखने के लिए बैठे हैं या किसी और कारण से यहाँ पर बैठे हैं, यह आपके मन का भाव हो सकता है। अगर आपका भाव उपदेश सुनने के अलावा कुछ अन्य है, तो यह आपके अन्दर का मायाचार का भाव, आपके अन्दर मायाचारी रूप में, जो अनेक तरह के कर्म बान्धता है, वह बन्ध रहा है। कोई भी तरह का कर्म आपके अन्दर बन्ध सकता है- अशुभ भी, शुभ भी। अगर आप के भाव शुभ हैं, मन-वचन-काय की चेष्टाएँ, आप की एकता के साथ में यहाँ पर काम कर रही हैं। जैसा आपका मन, वैसा ही आप के बैठने के क्रिया और उसी तरह के आपके भीतर के भाव हो रहे हैं तो आपके अन्दर शुभ भावों के माध्यम से, कर्म का बन्ध हो रहा है। **कर्म का बन्ध हर समय होता है और कर्म का फल भी हर समय भोगा जाता है।** आप यहाँ बैठकर के जिस प्रकार के कर्मों का फल भोग रहे हैं, उसी के साथ में आप अपने भावों को लिए हुए उन कर्मों को बान्ध भी रहे हैं। लेकिन इतना अच्छा है कि जो यहाँ पर बैठकर के आप कर्म बान्धेंगे, वे सभी शुभ कर्म होंगे, पुण्य कर्म होंगे, अच्छे कर्म होंगे। बस! आपका मन सही होना चाहिए।

Therapy Centre

मन आपका केवल सुनने में लगना चाहिए, अन्यथा दुनिया में इससे बड़ा कोई therapy centre नहीं हो सकता है। **यहाँ पर बैठकर के आपके मन की चिकित्सा शुभ भावों के माध्यम से इस तरह से की जाती है कि आप कितने भी अशुभ भावों को लेकर के यहाँ आए हो लेकिन यहाँ एक घण्टा बैठकर के अगर आप मन से सुन लोगे तो आप अच्छे होकर के, अच्छा मन लेकर के, यहाँ से जाओगे।** यह बहुत बड़ा therapy centre है। दूसरे doctors के यहाँ पर जाओगे, वे आपके लिए किसी भी तरह से अच्छी बातें सुनाएगा, वे तब सुन पाओगे जब आप बीमार होंगे और बीमार अवस्था में अच्छी बातें भी सुनाई जाएँ तो अच्छा नहीं लगता। लेकिन अगर आप स्वस्थ अवस्था में अच्छी बातें सुनते रहोगे तो आपको कभी बीमार होना ही नहीं पड़ेगा। यह अपने आप में उपदेश सुनना एक बहुत बड़ी therapy है।

गुरुओं का सानिध्य, पुण्य का कारण

मन को balance बनाए रखने के लिए, मन को अच्छा बनाए रखने के लिए, **इससे अच्छी कोई therapy नहीं हो सकती है।** इसीलिए आचार्यों ने कहा कि जहाँ पर उपदेश सुनने को मिल जाए, गुरुओं का सानिध्य मिल जाए, लाख काम पड़े हो, वह छोड़कर के जाना क्योंकि उससे जो आपके मन में पुण्य आएगा, वह दुनिया की किसी भी काम से नहीं आएगा। कभी-कभी लोग यहाँ पर बैठकर के भी अपने कुछ काम जो पीछे के बाकी होते हैं, वह करते रहते हैं।

गुरु उपदेश पाना, पूजा फल के समान

मान लो किसी को पूजा करनी है। आवाज आई कि उपदेश शुरू हो गए हैं, पूजा अधूरी छोड़ कर आ गए। अब यहीं पर चलो, यहीं पर बैठे-बैठे उपदेश सुन लेंगे, पूजा पूरी कर लेंगे। **आपको यह ज्ञान में होना चाहिए**

कि गुरु के उपदेश सुनने से बढ़कर के दुनिया में और कोई दूसरी बड़ी पूजा नहीं होती है। अगर आप उपदेश सुन रहे हो मतलब तीर्थकर भगवान की वाणी सुन रहे हो, भगवान के समवशरण में बैठकर के भी आप को सुनना ही होता है। बहुत लम्बे समय तक सुनना होता है और जो भगवान की पूजा आदि का time होता है, वह अलग होता है। लेकिन आप अगर अपनी यही आदतें बरकरार रखोगे तो आप भगवान के समवशरण में भी बैठे होंगे तो वहाँ पर भी बैठकर के भगवान की पूजा करोगे, उपदेश नहीं सुनोगे। क्योंकि आपका मन किस में लगा है? पूजा करने में लगा है। पूजा अधूरी न रह जाए, पूजा में कमी न हो जाए, अगर हमें 6 पूजाएँ करनी हैं तो 6 ही हो जानी चाहिए। एक पूजा से पेट नहीं भरता महाराज! मन भी नहीं भरता इसलिए हमें 6 पूजा का नियम है, हमें 6 पूजाएँ पूरी करनी ही होती हैं। यहाँ पर बैठे-बैठे कुछ लोग वे भी करना चाहते होंगे। इसलिए आपसे कह रहा हूँ, अपना मन एक जगह लगाओ, आपकी पूजा का जो फल आपको मिलेगा, भगवान के कहे हुए उपदेशों को सुनने से वही फल हमें प्राप्त होता है।

मोक्ष का भागी कब बनता है?

इसलिए यहाँ कहा जा रहा है...अपने कर्मों का फल भोग करके ही हर प्राणी इस संसार में जीता है लेकिन मोक्ष का भागी कब बनता है? आगे उसे कहा जा रहा है -

‘तत् क्षयान् मोक्षभागी’

‘तत् क्षयान्’ किसके क्षय से? जो वह कर्म करता रहा है, उन सभी कर्मों का क्षय होने पर यह जीव मोक्ष का भागी बनता है।

मोक्ष कब मिलेगा?

जब हमारे आत्मा में किसी भी प्रकार के कर्म न हों। जो कर्म हमने बान्ध रखे हैं, उन कर्मों को हम सभी निकाल दें, उनको घटाते रहें, उनकी निर्जरा करते रहें। कर्मों का थोड़ा-थोड़ा घटते जाना, निकलते जाने का नाम निर्जरा कहलाता है। क्या बोलते हैं? **‘निर्जरा निर्जरणम्’** कर्म थोड़ा-थोड़ा निकल रहा है, यह निर्जरा हो रही है और जब कर्म पूरा निकल जाएगा तो उसी का नाम मोक्ष कहलाता है। कर्मों का आत्मा में सर्वथा अभाव हो जाता है। उस आत्मा में न अच्छे कर्म होते हैं, न बुरे कर्म होते हैं यानि वह आत्मा न अच्छे कर्मों से बन्धी रह जाती है, न बुरे कर्मों से बन्धी रह जाती है।

कर्म आत्मा का स्वाभाविक भाव नहीं है

अब आप सोचो कि आत्मा में अच्छे कर्म भी नहीं होते हैं तो आप कहोगे...आत्मा में अच्छे कर्म नहीं हैं तो फिर आत्मा अच्छी कैसे होगी? यह जो कर्म हैं, यह हमारी एक प्रवृत्ति है। **यह हमारे आत्मा के ऊपर एक चढ़ा हुआ अलग पौद्गलिक matter है। ये जो कर्म हैं, ये बाहरी तत्त्व हैं।** यह कर्म हमारी अपनी आत्मा का कोई स्वाभाविक भाव नहीं है, स्वभाव नहीं है। इसलिए इन कर्मों का अभाव चाहे वे अच्छे हो, चाहे बुरे हो, दोनों ही प्रकार के कर्मों का अभाव करने से आत्मा मोक्ष का भागी होता है। यानि जो आत्माएँ मोक्ष में हैं, न उनके पास में अच्छे कर्म हैं, न उनके पास में बुरे कर्म हैं। न वे कर्म बन्धे हुए हैं और न वे उस तरह के

कोई कर्म कर रहे हैं मतलब कर्म करने से रहित होना और वह तभी होगा जब आप किसी भी तरह के कर्म बान्धे हुए न हों।

निष्काम-निष्कर्म अवस्था

अगर आपने अच्छे कर्म बान्ध लिए हैं तो वे अच्छे कर्म-फल देंगे, आपको अच्छे काम में लगना पड़ेगा। बुरे कर्म बान्ध रखे हैं, वे बुरे कर्म-फल देंगे, आपको बुरे काम में लगना पड़ेगा। कोई भी काम में लगना नहीं...न अच्छे काम में लगना, न बुरे काम में लगना। यह कैसे होगा? सुन रहे हो कि नहीं? अच्छे कर्म करना तो हर कोई सिखाता है लेकिन अच्छे भी कर्म नहीं करना, यह केवल जैन दर्शन सिखाता है। किसी भी तरह के कर्म नहीं करना। निष्काम हो जाओ, निष्कर्म हो जाओ, किसी भी तरह का कोई कृत्य करो ही नहीं।

श्रमणत्व की साधना

कैसे हो पाएगा? जब तक आपका घर है, परिवार है, बेटे हैं, बेटियाँ हैं, पति है, पत्नी है, हमें तो नहीं लगता कि यह कभी ऐसा हो पाएगा। क्योंकि आप जब भी शान्ति से बैठ भी जाओगे, कुछ भी कर्म नहीं भी करोगे तो भी आपके किए हुए कर्म आपको याद आएँगे और तुरन्त ही आपको कोई न कोई कर्म आपके भावों से होता रहेगा। **ऐसे निष्कर्म होने के लिए ही एक साधना की जाती है। इसी को कहते हैं- श्रमणत्व की साधना।** इसी को कहते हैं- साधु की साधना और इसी को कहते हैं- मुनि की साधना। यह निष्कर्म होने के लिए की जाती है। क्या करना है? कुछ नहीं करना है। आप पूछने आ जाते हो कभी-कभी...महाराज! कैसे करें? क्या करें? जब महाराज को ही कुछ नहीं करना है, तो फिर आपको महाराज कुछ करने के लिए कैसे कह सकते हैं? इसलिए कहना पड़ता है...भाई! ठीक है कर लेना। जो तुम्हारे मन में हो जाए वह कर लेना। जैसे हो जाए, वैसे कर लेना। जो तुम्हारी इच्छा हो जाए, वह कर लेना। महाराज जब इसी तरह की बातें करते हैं तो इसी का मतलब होता है कि हमें इन शुभ कामों से भी ज्यादा मतलब नहीं है। अच्छा काम है, शुभ काम है लेकिन इन कामों में जितना indulge एक श्रावक होता है, उतना साधु नहीं होता है। यूँ नहीं कह रहा हूँ कि शुभ काम नहीं करना चाहिए या महाराज शुभ काम की अनुमोदना नहीं करते। भाई! अनुमोदना तो कर ही लेंगे। जब यहाँ बैठे हैं तो कुछ न कुछ अच्छे भावों की अनुमोदना करना है। भाई! इससे अच्छा भाव कौन सा होगा? इसी भाव की अनुमोदना करो लेकिन इसी अनुमोदना में महाराज हमेशा लगे रहते हो, ऐसा भी नहीं है। उनके लिए वह time भी मिलता है, जब वह शुभ-अशुभ, दोनों प्रकार के भागों से ऊपर उठकर के मात्र अपने ज्ञायक-स्वभाव को देखते हैं, अपने ज्ञान-स्वभाव को देखते हैं। अपने ज्ञाता-दृष्टा भाव में रहते हैं, अपने सम्यक्त्व की आराधना करने के लिए भी उन्हें समय मिलता है। वह समय उनका सबसे कीमती समय होता है। सबसे कीमती समय होता है क्योंकि उस समय पर क्या होता है? निर्जरा शक्ति होती है।

मोक्ष-पुरुषार्थ अर्थात् मात्र ज्ञाता-दृष्टा भाव

न शुभ चाहिए, न अशुभ चाहिए। अच्छी निर्जरा का समय वही होता है। सबसे ज्यादा कर्म की निर्जरा उस समय पर होती है। **समभाव के साथ सामायिक में बैठते हैं, आत्म-ध्यान में बैठते हैं, उस समय पर वह**

सबसे अच्छी कर्म-निर्जरा करने का समय होता है। महाराज के लिए सबसे favorable time कौन सा है? सबसे अच्छा उनके लिए, अपने लिए अच्छा लगने वाला समय कौन सा है? आपके सामने बैठते हैं तब? नहीं! नहीं! इससे भी best time होता है, जब कोई भी सामने नहीं होता है। किसी भी तरह का कोई काम करने का भाव नहीं होता है और सिर्फ शान्ति से बैठना होता है, उस समय पर **‘तत् क्षयान् मोक्षभा-गी’** उस समय पर मुनि महाराज यही भाव करते हैं...सब तरह के कर्मों से भगवन्! मेरा मन हट जाए। मुझे न शुभ कर्म करने का भाव है, न अशुभ कर्म करने का भाव है। उसी को कहते हैं- कर्मों के क्षय होने से मोक्ष की प्राप्ति होने का पुरुषार्थ करना। इसलिए वही पुरुषार्थ, मोक्ष-पुरुषार्थ कहलाता है और यह कार्य सिर्फ एक श्रमण कर सकता है, एक साधु कर सकता है। वह कर सकता है, जिसने परिग्रह का, आरम्भ का, सब तरह के गृह-परिवार के मोह का त्याग करके, वह निश्चित हो करके जब बैठा है, तो उसके जीवन में यह जो क्षण आते हैं, ये क्षण सबसे महत्वपूर्ण क्षण होते हैं।

णिकम्मा: निष्काम अवस्था

लेकिन वह क्षण आपके लिए तो ऐसा लगता है...महाराज! क्या कर रहे हैं? कुछ तो नहीं कर रहे हैं। एक शब्द आता है प्राकृत में, जिसे आप लोग निष्कर्म बोलते हैं, अगर इसी को प्राकृत में बोलेंगे तो जानते हो? क्या बोलते हैं? **‘णिकम्मा’** क्या बोलते हैं? **‘णिकम्मा’** इसी को हम अपनी भाषा में बोलें तो क्या बोलेंगे? निकम्मा। क्या बोलते हैं? यह शब्द आप लोगों ने कितना बुरा बना रखा है मतलब आपकी dictionary में यह शब्द जो है, एक अच्छे शब्दों की list में नहीं आएगा।

गृहस्थ में निकम्मापन

भाई! अगर आपसे कोई कहे, आप कैसे बैठे हो? आप किसी से कह देना कि मैं निकम्मा बैठा हूँ। सामने वाले को फिर देखना। कैसे वह आपको सुनाता है? **घर में निकम्मे बैठे हो? घर में अगर कोई काम करने वाला व्यक्ति काम न करे और निकम्मा बैठा रहे तो उसको कितनी सुनने को मिलती हैं।** आप देख लेना घर में, निकम्मा आदमी घर में बैठा अच्छा नहीं लगता और निकम्मे आदमी को हर कोई कुछ न कुछ कहकर के चला जाएगा और कहेगा...भाई! इस घर में हम केवल नौकर नहीं हैं, जो आपके लिए सब कमा करके लाते हैं और इतना सब कमाते हैं और इतनी मेहनत करते हैं और आप यहाँ बैठे-बैठे खाते रहते हो। यह निठल्लापन, यह निकम्मापन यहाँ नहीं चलेगा, कुछ काम किया करो। चाहे अपनी दुकान पर चलो या किसी दूसरी दुकान पर बैठने का काम करो, काम करना है। घर में किसी को, आदमी को, कोई भी निकम्मा नहीं बैठने देता, कितना भी किसी से कोई स्नेह हो। आजकल की तो एक परिपाटी चल गई है। पहले तो कम से कम बेटों को घर से ढकेला जाता था..चल दुकान पर जा, चल कुछ काम कर, कुछ job कर। आजकल तो बेटियों को भी ढकेला जाता है। एक जमाना था, जब बेटियों से कुछ नहीं कहा जाता था। बेटियाँ कभी भी job नहीं करती थी, बेटियाँ कभी कोई घर के बाहर का कोई काम नहीं करती थी। आज तो देखो हर बेटा तैयार है। पढ़ने-लिखने का मतलब ही क्या है? अगर उसने बाहर का कोई काम नहीं किया। घर-परिवार के लोग उसे टोचते रहते हैं, इतनी पढ़ाई पढ़ ली, इतनी बड़ी-बड़ी पढ़ाई पढ़ ली, इतना पैसा खर्च कर लिया और घर में बैठा हो, job नहीं कर रही है। यह निकम्मापन एक तरह का दोष बन गया

है जबकि यह पहले एक बहुत बड़ा गुण माना जाता था।

साधु में निकम्मापन

निकम्मा होने का मतलब है- किसी भी तरह का कर्म नहीं करना। लेकिन अगर कर्म, वह मनुष्य जो कर्म करने के लिए ही तत्पर हुआ है, वह कर्म नहीं करता है, तो उसके लिए सुनने को मिलता है। **यही निष्कर्मपना, यही निकम्मापन, साधु का सबसे बड़ा गुण माना जाता है।** जो साधु जितना बड़ा निकम्मा होगा, वह उतनी ज्यादा कर्म की निर्जरा करने वाला होगा और उतनी ही कम समय में मोक्ष जाने वाला होगा। लेकिन जो गृहस्थ, जो श्रावक, जितना निकम्मा होगा, वह उतना ही ज्यादा ढीठ होता जाएगा, प्रमादी होता जाएगा और उतना ही ज्यादा वह कर्म का बन्ध करने वाला हो जाएगा।

आज कार्यों का विभाजन नहीं रहा

इसलिए आज सबको सकम्मा बनाया जाता है, निकम्मा किसी को बैठाया नहीं जाता। हर किसी के लिए कुछ न कुछ काम करो। हर किसी के लिए किसी काम में लगाने का। लेकिन पहले के लोग अपने आप में इतने परिपुष्ट हुआ करते थे कि वे घर में जो भी काम होते थे, वह घर के काम, घर के लोगों के लिए होते थे, बाहर के काम बाहर के लोगों के लिए होते थे। **महिलाओं के और पुरुषों के कामों का एक विभाजन हुआ करता था, आज कामों का विभाजन नहीं रहा।** महिलाएँ तो पुरुषों के सब काम करने लग गई हैं लेकिन जब पुरुष, महिलाओं वाले काम नहीं करते हैं तो कई बार महिलाएँ भी आक्रोशित हो जाती हैं। हम तो तुम्हारे काम कर देते हैं, तुम हमारा काम नहीं करते हो। भाई! तुम्हारा काम क्या है? रोटी बनाना, भोजन बनाना। यह अगर पुरुष न करें तो महिला आक्रोशित होने लगती है। पहले के समय में यह विभाजन रहा करता था, किसका क्या काम है? यह काम करना और अगर आपको निष्कर्म होना है, तो आप अपने अच्छे-बुरे सब कामों को छोड़कर के सामायिक भाव में आ जाएँ।

श्रावक के निष्कर्म होने की भावना

सामायिक के समय पर अगर आप बैठे होंगे तो श्रावक के लिए भी एक निष्कर्म करने की भावना आ जाती है। जब वह सामायिक में, ध्यान में बैठा हो, उस समय पर वह निष्कर्म भावना को भा सकता है कि हाँ! हमें अब कोई भी कर्म नहीं करना है। यह निकम्मापन अपने आप में बहुत अच्छा गुण है और यह निकम्मापन अपने आप में सबके लिए कर्मों से बचाने वाला है। लेकिन इस निकम्मे भाव को भी लोगों ने सर्वथा एक बुरे भाव के रूप में ले लिया है। आप चाहते हैं कि हम कभी निकम्मे हो कर के बैठें? **निकम्मा मतलब? कर्म रहित होकर के बैठे, हम कोई भी कर्म न करें, न भीतर से, न बाहर से।** न अच्छा सोचे, न बुरा सोचे, कभी आप ऐसा करने की एक कोशिश करना। आज मैं न अच्छा सोचूँगा, न बुरा सोचूँगा। आप देखना! यह कितना कठिन काम है। आप सोचना शुरू करोगे या नहीं सोचना शुरू करोगे तो भी आपके दिमाग में विचार आते हैं और आप बुरा नहीं सोचना चाहते हो तो भी बुरा सोच जाते हो। अच्छा सोचना भी अपने आप में बहुत बड़ी एक प्रक्रिया है लेकिन अच्छा भी नहीं सोचना। यह उससे भी बड़ी प्रक्रिया है। इसी को सिद्धान्त की भाषा में शुद्धोपयोग कहा जाता है।

अशुभोपयोग-शुभोपयोग से शुद्धोपयोग की यात्रा

तीन प्रकार के उपयोग हमारे ज्ञान के रहते हैं। एक अशुभोपयोग, एक शुभोपयोग और इन दोनों से जो ऊपर उठ जाता है, उसको बोलते हैं- **शुद्धोपयोग**। अशुभ कार्यों से छूट कर के जब आप शुभ में लग गए तो यह आपका **शुभोपयोग** है लेकिन शुभ को भी छोड़ करके केवल अपनी आत्म-स्वभाव की ओर आना, यह शुद्धोपयोग कहलाता है। अपने किए हुए कर्म का फल जब तक आदमी भोगता रहता है तब तक या वह अशुभोपयोगी होगा या शुभोपयोगी होगा। लेकिन जब वह कर्म-फल पर भी विचार करना छोड़ देता है तब वह शुद्धोपयोग की दशा में आता है। ऐसी दशा में पहुँचा हुआ श्रावक भी अपने अन्दर यह भावना करता है, कि मेरे अन्दर कब ऐसी शुद्धोपयोग की दशा आए, जो दशा एक श्रमण के अन्दर, मुनि महाराज के अन्दर रहा करती है। उस दशा को प्राप्त करने के लिए भावना करना भी अपने आप में निकम्मा होने की भावना कहलाती है। सुन रहे हो? अब सही तरीका बताऊँ? **बाहर से निकम्मे मत रहना लेकिन भीतर भावना करना कि मैं कब निकम्मा हो जाऊँ?** क्योंकि अगर आप निकम्मा होने की भावना करोगे तभी आप सिद्ध बन पाओगे। सिद्ध जितने भी हैं, सब क्या हैं? बोलो क्या हैं? नहीं बोलोगे। तुम्हें ऐसा लग रहा है कि उनको गाली कैसे दे दें। यह गाली लग रही है न तुमको? बुरा लग रहा है न? आपने यह शब्द बुरा दिमाग में भर रखा है।

निष्काम अवस्था- सिद्ध अवस्था

सभी सिद्ध क्या हैं? सभी निकम्मे हैं, सभी **‘निष्कम्मा’** हैं। कोई कुछ नहीं कर रहे हैं, जो जहाँ बैठे हैं, वहाँ से हिलते तक नहीं हैं, टस से मस नहीं होते हैं। जैसे निकम्मा आदमी बिल्कुल ढीठ हो जाता है, निष्ठुर हो जाता है, किसी की नहीं सुनता, ऐसे ही जितने भी सिद्ध बन गए। सब कैसे हैं? सब निष्कर्म हो गए हैं, निकम्मे हो गए हैं। उनके अन्दर कोई हलन-चलन नहीं, कोई movement नहीं। किसी भी तरीके का कोई effort नहीं, कोई भी उनके अन्दर tendency नहीं। सिर्फ वे जैसे हैं, वैसे ही बैठे रहे हैं और बैठे रहेंगे। इसका नाम क्या है? निकम्मा, totally निकम्मा। ऐसा निकम्मा होने की इच्छा करोगे? कई लोग कहेंगे...महाराज! ऐसे निकम्मे बैठकर के तो हम bore हो जाएँगे। निकम्मे तो बैठ ही नहीं सकते हैं। यही आपके अन्दर का ज्ञान, जब वास्तव में इस निष्कर्म शब्द को जानेगा तब आप समझ पाओगे कि सिद्ध क्या चीज है? और हमें सिद्ध बनने की भीतर से इच्छा है कि नहीं है। यह सिद्ध भगवान की भक्ति करते हुए उनके गुणों में आकृष्ट हो करके, इस तरह से अपने अन्दर सन्तोष लाया जाता है...हे भगवन्! जैसे आप निष्कर्म बैठे हैं, निःकम्म बैठे हैं, ऐसे ही मैं भी निःकम्म हो करके बैठा हूँ, आप की नकल कर रहा हूँ। इसी का नाम है- सामायिक। ऐसा निष्कर्म भाव, इसी को आचार्यों ने कहा-

‘निष्कम्मा अट्ट गुणा, किंचूणा चरमदेहदो’

आप लोगों ने द्रव्य-संग्रह तो पढ़ी होगी? बहुत शिविर लगे होंगे, बहुत सब लोगों ने सब कुछ पढ़ा होगा। उसमें सिद्धों का वर्णन करते हुए एक line आती है- **‘निष्कम्मा’**। प्राकृत में उसको **‘निष्कम्मा’** ही कहते हैं। जिसके सब कर्म निकल गए, जिनमें से सभी कर्मों का अभाव हो गया, उन्हें क्या बोलते हैं? **‘निष्कम्मा’** अब आप देखो! आप को निष्कर्म होने की भावना आ रही है कि नहीं? यह सिद्धत्व की ओर जाने की भावना है।

‘तत् क्षयान् मोक्षभागी’

तत् मतलब चाहे वे अच्छे कर्म हो, चाहे बुरे कर्म हो, सबके क्षय से ही यह जीव मोक्ष का पात्र बनता है और जब तक यह कर्म करेगा तब तक यह मोक्ष का पात्र नहीं बन सकता है।

महाराज उपश्रेणिक प्रकरण



आपको कल बताया था, उपश्रेणिक के बारे में। किसी भी तरह का कर्म है, तो उस कर्म का फल भी किसी न किसी रूप में मिल ही जाता है। **उन्होंने किसी राजा से युद्ध किया,** किसी से द्वेष किया और उस द्वेष का फल उन्हें बाद में भी मिला और उसी के फल के कारण से उनकी वह दुर्गति हो गई कि वह एक घोड़ा, दुष्ट घोड़ा उन्हें ले जाकर के एक जंगल में एक गड्ढे में पटक दिया, इतना तो सुना था आप लोगों ने। अब वह क्या है? वे कल से वहीं गिरे पड़े हैं। अब उनको निकालना है कि नहीं? आपने तो याद दिलाया नहीं।

भीलों के सरदार द्वारा गड्ढे से निकाला जाना

अब वे जब गड्ढे में गिरे पड़े हैं तो देखो! यह भी कर्म का फल है। जो कुछ भी अपने जीवन में घटित होता है, वह सब क्या होता है? **‘स्व कृतज फल भुक्’** यह ध्यान रखना। अपने ही किए हुए कर्म के फल से वह आदमी गड्ढे में गिरा, बिल्कुल चोटिल हो गया, चोट लग गई, घायल हो गया। बिल्कुल ही उनकी हालत खराब हो गई और उस गड्ढे में पड़े हुए एक-दो दिन भी हो गए। उसके बाद में उस गड्ढे के आसपास वहाँ जो जंगल था, भील लोग वहाँ घूमा करते थे तो एक भीलों का सरदार उस गड्ढे के आस-पास आकर के देखता है कि यहाँ कोई व्यक्ति गिरा हुआ है, कराह रहा है और उसको देखकर के, वह पहले तो उस व्यक्ति को निकालता है और निकालने के बाद में उसे वह पहचान जाता है। देखता है...अरे! इनके बारे में तो मैंने बहुत सुना था, इनको तो मैंने देखा था। यह तो बहुत बड़े राजा हैं और यह यहाँ गड्ढे में पड़े हैं तो वह व्यक्ति बड़ा आश्चर्य में पड़ गया कि यह राजा की यह दुर्दशा कैसे हो गई? उन्होंने उस व्यक्ति ने जो भीलों का सरदार था उसने उन राजा को निकाल करके उनसे पूछा कि यह हाल आपका कैसे हो गया। इसी को बोलते हैं- बेहाल हो जाना। कैसा हाल हो गया? बेहाल। राजा को तो कैसा होना चाहिए था? खुशहाल होना चाहिए था और राजा की यह खुशहाली, बेहाली में बदल गई है। यह हाल कैसे हो गया? राजा ने बताया कि यह मैंने जिस राजा से युद्ध किया, उसकी दुष्टता के कारण से मुझे यह फल भोगना पड़ा और आज मेरा यह हाल हो गया। अब मुझे पता नहीं है कि मैं अपने घर तक कैसे कब पहुँच पाऊँगा? लेकिन अभी मैं इस गड्ढे से निकल पाया। आपने मेरे ऊपर बहुत उपकार किया। वह व्यक्ति कहता है- अरे स्वामी! आप तो मेरे ही स्वामी हो। मेरे लिए यह उपकार करने का समय मिल गया, यह मेरे लिए बहुत बड़ी सौभाग्य की बात है और वह कहता है कि आप मेरे घर चलो। **वह राजा उपश्रेणिक को लेकर के घर ले जाता है** और घर ले जा करके, उन्हें कुछ सेवा करने की, खिलाने-पिलाने की, पूरा वह आयोजन करता है। पूरा बन्दोबस्त करता है।

भोजन में आचार-विचार का महत्व

अब वह राजा उपश्रेणिक, जब अपनी चेतना में आते हैं और यह देखते हैं कि यह भीलों का सरदार है, यह

सब कुछ खाता-पीता है, इसका आचार-विचार सब कुछ बदल चुका है। उन्होंने उससे पूछा...भाई! बताओ तुम किस जाति के हो? वह कहता है कि मैं क्षत्रिय राजा हूँ लेकिन किसी कारण से अपने पद से च्युत हो गया तो मैं इस भीलों का यहाँ सरदार बन गया। बहुत दिनों से मैं इन्हीं भीलों की संगति में हूँ तो भीलों जैसा ही मेरा यह सब भोजन-पान, आचार-विचार हो गया। **वह उपश्रेणिक राजा कहते हैं-** मैं तुम्हारे साथ रह तो सकता हूँ लेकिन तुम्हारा जो परिवार है। जिस तरह से तुम लोगों के साथ में उठते-बैठते, भोजन करते हो मैं उन सब के साथ में भोजन नहीं कर सकता। सुन रहे हो कि नहीं?

विपरीत परिस्थितियों में भी खान-पान पर संयम

अगर आपकी ऐसी स्थिति बनी पड़ी हो तो आपका क्या हाल होगा? मैं यह पूछना चाह रहा हूँ। आप अधमरी स्थिति में हो, आपका शरीर चोटिल हो, आपको कोई भी व्यक्ति ले जाकर के कुछ भी खिला-पिला रहा हो और आप उससे पूछो...आप किस जाति के हो? आपका कैसा आचार-विचार है? आपका किस के साथ उठना-बैठना है? आपका कैसा खान-पान है? यह पूछोगे? या जो कुछ भी वह दे देगा, सब खा लोगे? पहले खा तो लो फिर बाद में देखेंगे। कई लोग तो पानी पीने के बाद में जाति पूछा करते हैं। लेकिन वह राजा उपश्रेणिक ने पहले पूछ लिया और कहा कि नहीं! देखो! आप भीलों की संगति में इस तरह से गलत खान-पान करते रहे हो। मैं आपका भोजन, आपके परिवार के साथ, आप लोगों के साथ में बैठकर के नहीं कर सकता। अब देखो उस भील का उत्तर, उस सरदार का उत्तर! वह कहता है...कोई बात नहीं, मेरा खान-पान वास्तव में गड़बड़ हो चुका है। **मेरे आचार-विचार वास्तव में इन लोगों की संगति के कारण** से गड़बड़ हो चुके हैं लेकिन मेरी एक पुत्री है और वह पुत्री बहुत शुद्ध है, सात्विक है, बिल्कुल सदाचार और कुलाचार का पालन करने वाली है। उस पुत्री के हाथ का बना हुआ, आप भोजन कीजिए। आपके अपने आचार-विचार की जो शर्त है, वह पूरी हो जाएगी और मुझे भी जो सेवा का मौका मिलना है। वह मौका मिल जाएगा, मेरे ऊपर बहुत बड़ा उपकार होगा। वह उपश्रेणिक इस बात को स्वीकार कर लेते हैं मतलब सबके साथ बैठकर के भोजन नहीं करना।

कुलाचार का महत्व व पालन की आवश्यकता

यह अपने आप में एक गुण है या दोष है? मैं आप लोगों से यह पूछना चाह रहा हूँ। आप जहाँ कहीं भी जाते हैं, किन्हीं भी parties में शामिल हो जाते हैं। किन्हीं भी प्रकार के reception में शामिल हो जाते हैं और उस समय पर आपके सामने कितनी भी तरह के लोग हो सकते हैं लेकिन आपके लिए वहाँ पर भोजन करना जरूरी होता है क्योंकि आपको अपना व्यवहार निभाना है। सिर्फ व्यवहार निभाना है। **यहाँ उस उपश्रेणिक राजा को देखो। जो जंगल में, एकान्त में अकेला पड़ा है, असहाय है।** एक सहायता करने वाला मिला लेकिन फिर भी उसने अपने मन में विचार किया कि नहीं? मैं तुम लोगों के साथ बैठकर भोजन नहीं करूँगा। यानि हम जिनके साथ बैठकर के भोजन कर रहे हैं, वे साथ में बैठे हुए लोगों का भी महत्व कुछ होता है हमारे भोजन में कि नहीं? यह एक जानने की चीज है। नहीं समझ में आ रहा? मान लो आप किसी ऐसी जगह पर, ऐसे hotel में, ऐसी party में शामिल हो, जहाँ आस-पास बहुत सारा, सब कुछ ऐसा ही है, जो आप के योग्य नहीं है। आपके कुलाचरण, सदाचरण के योग्य नहीं है लेकिन आप अपनी

table पर, उनके साथ में अपना भोजन लेकर के बैठ गए। क्या यह भी उचित है? अगर इस उदाहरण से देखा जाए तो। समझ में आ रहा है? यानि जिन लोगों का भोजन हम कर रहे हैं, जहाँ से बना हुआ भोजन आता है, हमें उसका ध्यान रखा जाता है कि यह भोजन किसके हाथ का बना हुआ है? किसी भी जगह पर जाने से पहले यह देख लेना, यह भोजन बनाने वाले लोग कौन हैं? भोजन किसके हाथ का बना हुआ है? भोजन कौन सी table पर रखा हुआ है? कौन से बर्तन में रखा हुआ है? कितना decorated जगह है, यह देखने की जरूरत नहीं है। हम उसी में लट्टू हो जाते हैं। भाई! बिल्कुल साफ neat and clean है, सब कुछ है, बढ़िया decorated है। हमें क्या करना है? सब कुछ इतनी सफाई से बना हुआ है लेकिन सबसे important चीज क्या है? जानते हो? यह आचार-विचार की परम्परा राजा तक भी निभाया करते थे, आप सोचो! आप तो कहीं से कहीं तक कुछ नहीं लगते हो और उस जमाने की बात कर रहा हूँ। जब ईसा की 500 वर्ष पहले जब यह राजा, भगवान महावीर स्वामी के समय की यह बात कर रहा हूँ, उस समय पर इन राजाओं में इतना विचार! उस भील के हाथ का, उनके बने हुए भोजन का, उन्होंने मना कर दिया स्पष्ट रूप से तो भील को कहना पड़ा कि नहीं! मेरी बेटी है और वह बेटी बिल्कुल शुद्ध है, सात्विक कुलाचार वाली है, वह कभी-किसी के साथ ऐसा-वैसा भोजन नहीं करती है। आप उसके हाथ का भोजन कीजिए। उन्होंने उसको स्वीकार कर लिया लेकिन उसी के पिता के साथ भोजन करना स्वीकार नहीं किया। अभी आप यह देखो! कितनी बड़ी बात है। समझ रहे हो न? इससे क्या सीखना है? अच्छा आचरण करना भी अपने आप में बहुत कठिन काम है।

Relation या Religion, किसे दे महत्व?

निकम्मा होना तो उससे बहुत कठिन काम है ही लेकिन अच्छे कुल में, अच्छी जाति में उत्पन्न हुए हैं तो अच्छे ही लोगों के द्वारा बना हुआ भोजन ग्रहण करना। **यह एक आपके अन्दर का भाव होना चाहिए और यह भाव अगर छूटता चला जाएगा तो आपका कुल-धर्म, आपका सदाचार, आपका वर्णाचार, सब छूट जाएगा और यह सबसे ज्यादा हो रहा है।** आप कब, किस party में जा करके पूछ पाते हो? क्या किसने बनाया? आपको तो अपने व्यवहार निभाने से मतलब जबकि आपको इतनी खाने की जरूरत भी नहीं है। आपका पेट भरा हुआ होगा तो भी आप अपना धर्म बिगाड़ोगे। लेकिन खाकर के, दिखा करके आओगे... नहीं! मैं आया था आप की party में, मैंने भोजन कर लिया है। यानि इतनी कौन सी मजबूरियाँ हैं? ऐसी कौन सी चीजें हैं? जिसके कारण से हमें अपना relation बनाए रखने के लिए, अपना religion बिगाड़ना पड़ता है। यह एक सोचने की बात है। relation महत्वपूर्ण है कि हमारा अपना भीतर का religion, जो हमारा अपना nature है, वह महत्वपूर्ण है। अब नहीं बोल रहे कोई भी। ऐसा तो नहीं लग रहा, महाराज हम को डाँट क्यों रहे हो? डाँट नहीं रहा हूँ, आपसे पूछ रहा हूँ।

भोजन में शुद्धि एवं विवेक का अहं स्थान

आपके अन्दर यह भाव होना चाहिए। जब भी हम भोजन करते हैं, यह भोजन किसके हाथ का बना हुआ है? यह सीख लो। अब hotel में जाओगे, एक तरफ veg होता है, एक तरफ nonveg होता है। हम तो veg कर लिए, nonveg नहीं किया। बनाने वाला कौन था? उस non-veg, जो एक तरह का कसाई आदमी

है, उसके हाथ से बना हुआ अगर आपने veg भोजन कर लिया तो वह क्या veg कहलाएगा? वाजिब कहलाएगा क्या? विचार करो! उन्हीं बर्तनों में वह बना है, उसी की लार उसमें भी लग रही है और कई बार तो चम्मच, उसकी उसमें भी सब चली जाती है। उसे क्या फर्क पड़ रहा है इन चीजों का? बस इतना है कि उसने वहाँ कुछ बनाया था, यहाँ कुछ बना रहा है। दो तरह की चीजें, वह पका रहा है। बाकी आदमी एक है, चम्मच एक है, बर्तन एक है, स्थान एक है, सब कुछ एक है। **मैं आपसे सिर्फ प्रश्न रख रहा हूँ। आप उस परिस्थिति में क्या करोगे? आपके भीतर का वजूद क्या कहेगा आपसे? यह मैं पूछना चाह रहा हूँ** और अगर आप हमें नहीं बता पा रहे हो तो अपने मन में कुछ विचार कर लेना कि ऐसी परिस्थितियों में, मैं क्या करूँगा? उधर वह एक राजा है, बीमार पड़ा हुआ है। मैं आपसे पूछ रहा हूँ, अगर आप सभी train में हो और train में बहुत सारे लोग बैठे होते हैं और आपके आसपास गन्दे लोग भी बैठे हैं। आपको भूख लगी है, आपको भोजन करना है। आप क्या उन्हीं के साथ बैठकर के भोजन करना चाहोगे? भले ही आपका अपना भोजन होगा। अगर बगल में बैठ कर के कोई गन्दा भोजन कर रहा है, तो क्या आप वहाँ पर बैठकर के अपना अच्छा शाकाहार भोजन कर लोगे? क्या वह स्थान उचित है?

क्षेत्र-शुद्धि तथा मर्यादा

यह भी एक सोचने की चीज है। जैन दर्शन में यह भी स्थान की मर्यादा, इसको क्षेत्र-शुद्धि कहा गया है। कोई भी श्रावक हो, वह भी इतना विचार पहले रखा करता था कि जहाँ पर क्षेत्र-शुद्धि होगी, वहीं पर हम अब भोजन करेंगे। इसलिए वह हर कहीं पर अपना भोजन करने नहीं बैठ जाता था। **यह विचार अगर बने रहेंगे तो कुछ यह कुल परम्परागत विचार-आचार बने रहेंगे** और अगर यह सब छूट जाएँगे?...क्या रखा है छुआछूत में? क्या है? यह सब differentiate करने में? यह सब partiality करने में क्या रखा है? ऐसा सोचकर के आजकल के बच्चे सबके साथ सब कुछ करने लग जाते हैं। इधर देखो! क्षत्रिय राजा और वे कह रहे हैं कि नहीं! तुम्हारे साथ भोजन नहीं करूँगा। उन्होंने बेटी का भोजन कर लिया और बेटी ने अच्छी तरह से उनको रखा, अच्छी तरह से उन को भोजन कराया, उनके लिए औषधि का उपचार कराया और धीरे-धीरे वह राजा स्वस्थ हो गए।

चातुर्मास की सफलता कैसे?

इससे यह समझना है, यह सीखना है कि हमें अपने अन्दर, अपने आचरण को बनाए रखने के लिए, खुद से संकल्पित होना पड़ता है और अगर हम कहीं भूल रहे हो तो उसी भूल को याद दिलाने के लिए ये उपदेश होते हैं। **ये साधु आपके नगरों में आते हैं और इस तरह से यह चातुर्मास आदि होने का मुख्य उद्देश्य यही होता है कि हम अपनी अगर आचार-विचारों की परम्परा से दूर हट रहे हैं तो पुनः अपनी line पर आ जाएँ।** आपके अन्दर पुनः line पर आना उपस्थापित होना, यह होने का भाव आएगा तो इस चातुर्मास की सफलता होगी। हटने का भाव करो, कुछ गलत line पर चले गए तो अब पुनः हटने का भाव करो। नहीं! वहाँ से हटना है। हम रात्रि में भोजन करने लगे, गलत करने लगे, अब हमें छोड़ना है, यह विचार आना चाहिए। यूँ नहीं, केवल बस! ऐसे ही बस चलता रहता है। हाँ! सब होता है। अब हम मुनि महाराज भी, अब वहाँ चौके में भी, कुछ पूछ नहीं पाते हैं क्योंकि हम सबके मुँह पर mask लगवा देते हैं और फिर पूछेंगे तो

फिर आप mask हटाओगे तो फिर हमको दिक्कत होगी। इसलिए वहाँ पर सबके मुँह बन्द करवा देते हैं। जब सबके मुँह बन्द करा दिये हैं तो फिर अब हम ही कैसे फिर मुँह खुलवाएँ? सुन रहे हो? मुँह खोलने का मौका यही है हमारे पास में। यहाँ पर पूछ रहा हूँ।

वर्षायोग बने...एक जीवन की उपलब्धि

जिन लोगों के घरों में रात्रि-भोजन होते हैं, कम से कम इतना तो मन बना लेना, इतना तो सोच लेना, घर के लोगों! कि इन आने वाले वर्षा-योग के इन दिनों में, 5 महीने तो दीपावली तक तो हम रात में कोई भी तरह का भोजन नहीं बनाएँगे, इस तरह का विचार कर लेना। जब सब लोग विचार करेंगे तो सब हो जाएगा क्योंकि यहाँ पर सास भी सुनने बैठी है, ससुर भी बैठे हैं, बहुएँ भी बैठी है और पति भी बैठे हैं। सब बैठे हैं और सबका मन एक साथ बन जाएगा और सबने एक साथ प्रवचन सुन लिया होगा तो कोई किसी पर आपत्ति नहीं दर्ज करेगा। थोड़ा हमें कोस लेगा, कोई बात नहीं। समझ में आ रहा है? एक अकेला कोई सुनकर जाएगा और कहेगा तो उसको दिक्कत हो सकती है, इसलिए सब अच्छे से मन बना लेना। अकेले-अकेले मुझे पूछने का मौका नहीं मिलता है। कौन रात में खाता है? नहीं खाता है, हमारे सामने जो भी आएँ, कम से कम दीपावली तक तो इतना भाव रखें कि हम रात में भोजन नहीं खाएँगे, रात में भोजन नहीं बनाएँगे। **आखिर क्या बचेगा? अगर यह भी न करोगे तो। इतना मन हो जाएगा? कितने लोगों के घरों में रात्रि में भोजन नहीं बनता, नहीं खाया जाता?** थोड़ा हाथ उठाओ, थोड़ा सा idea तो ले ही लो। धर्म, धर्म, धर्म, धर्म, धर्म-नगरी कहलाती है, हाथ तो अच्छे उठ रहे हैं। फिर भी थोड़ा सा ठीक-ठीक है, सन्तुष्टि लायक है। पूरे-पूरे total hundred percent तो नहीं हैं। जो नहीं हैं, वे भी अपने मन में कुछ विचार लाएँगे, परिवर्तन लाएँगे। रात्रि के समय में भोजन करना, वैसे ही अपने आप में बुरी चीज है लेकिन वर्षा-योग में, चातुर्मास के time पर तो और बुरा काम है।

बुराइयाँ छोड़ना ही कर्म क्षय की शुरुआत

अपने कर्मों का क्षय करने के लिए, पहले हमें अपने पाप-कर्मों का क्षय करना पड़ेगा। घर में निकम्मा हो करके नहीं बैठ जाना। कल से कहो...महाराज! हम तो निकम्मे होकर बैठ गए, सब यहाँ पर खाली पड़ा रहे। सुन रहे हो? पहले क्या करना पड़ेगा? **पहले बुरे कर्मों का क्षय करने के लिए बुराइयाँ छोड़नी पड़ेंगी तब जाकर के आपकी वह स्थिति बनेगी, जो निष्कर्म की स्थिति आती है।** इसलिए, यह निष्कर्म भाव अपने आप में बहुत बड़ा भाव है लेकिन अगर आप शुभ भावों को भी अपना लेते हैं तो यही आपके लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। क्योंकि गृहस्थ श्रावक शुभ ही कर पाता है, शुद्ध नहीं कर पाता। शुद्धोपयोग में, वह नहीं पहुँच पाता है। उसके लिए वह बहुत कठिन होता है, इसलिए यह जो पहले बुराई वाली चीजें हैं, इनसे बचो।

तामसिक भोजन-अनिष्ट भोजन

हर घर में आज लहसुन-प्याज बनने लगा है। मैं किसी से भी पूछ लेता हूँ तो वे हाँ ही कर देता है। यह कौन सा समय आ गया है? हम जिस समय में घरों में रहा करते थे, जीते थे, जमाना था, कभी घर में लहसुन-प्याज आता नहीं था और अगर कभी किसी मामा-नाना की संगति के कारण से कभी कुछ आ जाए

तो घर में तहलका मच जाता था। प्याज खाता है? लहसुन खाता है? ऐसा बुरा-बुरा सुनाते थे कि पूछो न और यहाँ एक fashion है, हर किसी से पूछो, सबके घर में प्याज चलता है, लहसुन चलती है। **जैनों का यह इतना common हो गया, प्याज-लहसुन खाना इतना जरूरी हो गया, उसके बिना कोई taste नहीं आता।** सारे मसाले फीके हैं, किसी चीज में कोई taste नहीं है बिना प्याज लहसुन के, सबके लिए। मैंने दो-चार लोगों का एक test लिया...भाई! आपके घर में प्याज-लहसुन? बोले- हाँ! खाते हैं। लड़कियाँ भी खाती हैं, लड़के भी खाते हैं। सबके लिए बिल्कुल common हो गया है। जबकि यह भोजन कितना मादक होता है? कितना तामसिक भोजन होता है? कि इस भोजन को करने वाला व्यक्ति हमेशा अपने आप में रह ही नहीं सकता है। ये उन्मुक्त बना देने वाले पदार्थ कहलाते हैं, मादक भोजन कहलाते हैं। जैसे शराब पीने से मादकता आती है, वैसे ही यह **लहसुन-प्याज खाने से मादकता आती है।** इन भोजनों के अन्दर इतनी heat होती है, इन लहसुन-प्याज में इतनी गर्मी होती है और उसके बिना किसी का काम नहीं चल रहा है।

वर्षायोग-चरित्र निर्माण का अवसर

आप विचार करो, यह पद्धतियाँ अगर आप कम नहीं करोगे, अपने घरों में अगर इन चीजों पर रोक नहीं लगाओगे तो आगे ये सब चीजें ही रोकने में पूरा चतुर्मास का समय निकल जाएगा। हम आपको कुछ नया नहीं सिखा पाएँगे, उससे ऊपर नहीं उठा पाएँगे। पता पड़ेगा, आप पूरे चतुर्मास में बस लहसुन-प्याज ही छोड़ पाए। ज्यादा से ज्यादा आलू छोड़ पाए, रात्रि-भोजन छोड़ पाए, इससे ज्यादा कुछ नहीं कर पाओगे क्योंकि आप की शुरुआत ही वही से हो रही है। अगर यह सब छोड़े बैठे होते तो कुछ ऊपर की चीजें बोलता, आगे की चीजें बोलता। ये सब के चरित्र अगर बन गए हैं तो इन चरित्रों को साफ-सुथरा बनाने की कोशिश करो। स्थापना तो हो रही है, हमारी तो हो गई, तुम्हारी भी 9 तारीख को हो जाएगी लेकिन उस स्थापना के साथ-साथ कुछ इस तरीके का agreement होना चाहिए कि हम इन आगामी दिनों में अपने आचरण में भी परिवर्तन लाएँगे। हम जिस कुल में उत्पन्न हुए हैं, उन कुलों में ये चीजें ऐसी नहीं है कि बिल्कुल खुली छूट के साथ में खाई जाती हैं। अरे! जब कभी-कभी कोई औषधि के रूप में लेना पड़ जाए, एक अलग बात होती है लेकिन सामान्य से इसको भोजन बना लेना और उसके बिना ही सब्जी नहीं बनना, यह अच्छी बात नहीं है।

आचार विचार में भी पवित्रता लाना जरूरी

मैं यँ नहीं कह रहा हूँ कि बिल्कुल अभी से तुम छोड़ ही दोगे लेकिन कुछ परिवर्तन आएगा कि नहीं? यह कोशिश तो कर सकते हो कि भाई देखो! कम से कम हमें इन पवित्र दिनों में, जब हमें मुनि महाराज का सानिध्य मिला है, हम हर तरह की पवित्रता अपना रहे हैं तो अपने आचार-विचार की पवित्रता भी अपनाएँ। **हम इतने असहाय तो नहीं हो गए,** जैसे वह उस उपश्रेणिक राजा की तरह कहीं जंगल में पड़े हो। हमारे पास घरों में खाने-पीने सब कुछ है और हम अपनी मनचाही हर tasty चीज बना सकते हैं तो हम उस उपश्रेणिक राजा की ओर देखें कि जो राजा जंगल में कहीं असहाय स्थिति में पड़ा है और उस समय पर भी वह अपने आचार-विचार की बात कर रहा है और उसने, जिसने उसको बचाया, उसके भी हाथ से उसने

भोजन नहीं किया, उसके साथ बैठकर के भोजन नहीं किया। हमें यह सीखना पड़ेगा।

आचरण में सुधार...मोक्ष पुरुषार्थ की शुरुआत

यहीं से हमारी शुरुआत होती है और यही हमें सीखकर के तैयार होना है। आने वाले दिनों में, हम जिन लोगों के साथ बैठकर के भोजन करेंगे, वे लोग भी हमारी तरह ही अच्छे होने चाहिए। हमारी तरह अच्छे होने का मतलब? आप भी वैसे ही हो तो वे भी वैसे ही हैं। आप भी लहसुन-प्याज-आलू खाते हो वे भी खाते हैं तो फिर आप-वह सब बराबर ही हो गए। जब आप कुछ अलग होंगे तो आप कुछ अच्छा करोगे। समझ आ रहा है? यह भी अपने आप में एक बहुत बड़ा त्याग होता है और जिस तरह से आप कलश की स्थापना करने के लिए अनेक-अनेक तरह के त्याग करने का मन बनाते हो, यह त्याग भी बहुत जरूरी है। जिसे हम कहते हैं, अपने आचरण में सुधार लाना।

कलश स्थापना से Energy

आखिर उन कलशों में energy कहाँ से आएगी? हम तो उसमें मंत्र फूँकेंगे ही लेकिन वह मंत्र भी काम नहीं करेंगे, अगर आपके आचरण उसमें अच्छे, उस समय के आचरण अच्छे नहीं होंगे। मानो बहुत energy से भरी हुई कोई चीज आपके घर में पहुँच भी गई लेकिन आपके अगर आचरण अच्छी नहीं है, तो वह energy भी काम नहीं करेगी। इसलिए **ध्यान रखना, अच्छे आचार-विचारों के साथ में किए हुए कार्य ही सफल होते हैं और उन्हीं कार्यों से आपके घर में सुख-समृद्धि और सम्पन्नता रहेगी। इसलिए अपने आचरणों पर ध्यान देते हुए, ध्यान देना है कि हमें पहले अच्छे कर्म करने में मन लगाना है, बुरे कर्म छोड़ना है और सब कर्मों से रहित हो गए सिद्ध भगवान, उनके हाथ जोड़ना है।** धन्य भगवन्! आपने अच्छे भी छोड़ दिए, बुरे भी छोड़ दिए। इतना बड़ा पुरुषार्थ आप में आ गया। इसी का नाम मोक्ष-पुरुषार्थ है। इस मोक्ष-पुरुषार्थ की प्राप्ति हमको भी हो, हमारा मन कभी भी दुर्बल न हो।

ज्ञानी वसता शून्य में, उसका सब संसार।

पर ज्ञानी के चित्त मे, किंचित् ना संसार॥३॥

4. लगन लगाओ सिद्धों में

सिद्धों की भक्ति, आराधना में लगा हुआ समय ही सार्थक समय होता है



दुनिया में अनेक तरह के लोग, अनेक तरह के जीवों की भक्ति आदि किया करते हैं किन्तु जो शुद्ध आत्मा को जानता है, जो सिद्ध परमेष्ठियों को जानता है और सिद्ध भगवन्तों में अपना मन लगाता है...उसी के अन्दर, उसी की आत्मा में शुद्धता का भाव जागृत होता है।

हर व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य अपनी आत्मा को शुद्ध बनाना होना चाहिए। जब हम अपनी आत्मा को शुद्ध बनाने के उद्देश्य में लगते हैं, यह हमारा, जब एक प्रयोजन बन जाता है तब हमें सिद्ध भगवानों की आराधना करने में अच्छा लगता है। हम अगर भगवान की पूजा कर रहे हैं, आराधना कर रहे हैं और हम अपने लिए कुछ भी उससे प्रयोजन नहीं रख रहे हैं तो उस पूजन, आराधना का प्रयोजन भी केवल हमारे लिए थोड़ा-सा पुण्य बंध होगा, इससे ज्यादा कुछ नहीं होगा। इसलिए हमेशा ऋषियों मुनियों ने कहा है, अगर आप अपने जीवन को उन्नत बनाना चाहते हैं तो अपने-आप को सिद्ध भगवन्तों से जोड़ो। अगर आप अपने को सिद्ध भगवान से जोड़ेंगे तो आपकी आत्मा में शुद्धि होगी, आपकी आत्मा भी सिद्ध बनेगी। आत्मा को सिद्ध बनाने के लिए ही, जब हम तत्पर होंगे तभी हमें सिद्ध भगवान के गुणों में आकर्षण होगा।

निष्कर्म- जीवन का वास्तविक आनन्द

हम भला अमूर्त आत्माओं के गुणों में क्या आकर्षण पैदा कर सकते हैं? और एक व्यक्ति का मन भला क्यों किन्हीं ऐसे अदृश्य, अमूर्त आत्माओं में लग सकता है जिन्हें उसने कभी देखा न हो? कल जिस तरह से हमने सुना कि उन अमूर्त आत्माओं के अन्दर और कुछ होता नहीं है, उन्हें कुछ करना होता नहीं है, वह सब निकम्मा होकर के बैठे रहते हैं। भला कौन अच्छा आदमी निकम्मा होना चाहेगा? ये बातें आपको इसलिए बताई जा रही हैं ताकि आपके मन के अन्दर यह विचार आ जाए कि हम अपने अन्दर जो सिद्धों के प्रति गलत धारणा रखते हैं, उस धारणा को हम सुधारें। **जब व्यक्ति निष्कर्म होता है, जीवन का वास्तविक आनन्द उसे तभी उपलब्ध होता है। कर्म करने से आनन्द नहीं आता...आनन्द, कर्म रहित होने से होता है।** जब आप काम-काम, काम-काम चिल्लाते रहते हैं तो आपके अन्दर काम तो आता है लेकिन उससे सुख नहीं आता है। सुख जब भी आएगा तब आपके अन्दर एक परिणाम आएगा कि हाँ! अब बहुत काम हो गया है, अब तो विश्राम करना है। जब आप विश्राम करने के mood में होते हैं, आराम करने के mood में होते हैं, उस समय पर आपका वह विश्राम ही आपका सुख होता है, काम सुख नहीं होता है। दिनभर जब आप काम करते हुए थक जाते हैं तब आपके लिए सुख चाहने के लिए नींद की जरूरत पड़ती है और आप एक गहरी नींद में जब पहुँच जाते हैं तब आपको लगता है कि हाँ! अब हमने कोई सुख की, चैन की नींद सो ली। बोलते हैं न? क्या बोलते हैं? सबसे बड़ा अगर हमें दिनभर का कोई सुख मिलता है तो किस में? अरे! हमें कम से कम चैन की नींद तो सोने दो। जब नींद में भी कोई व्यवधान उत्पन्न होता है तो उस समय पर व्यक्ति के लिए लगता है कि भाई! दुनिया में हर time पर तुम व्यवधान उत्पन्न करते रहते हो, हर time पर

कुछ-न-कुछ सामने आता रहता है, एक सोने का time तो हमें कम से कम निश्चितता से सोने दो। आदमी को जीवन में यह जरूरी क्षण है...चैन की नींद सोना। यह अपने आप में एक सुख है कि दुःख है? बताओ?

ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव की साधना

अगर आपके लिए निद्रा आ रही हो और उस निद्रा के समय पर आपको कोई काटने लग जाए, कोई जगाने लग जाए, कोई आपके सामने ढोल-ढमाका बजाने लग जाए तो आपको कैसा लगेगा? सोने नहीं दे रहा है। दिन भर तो काम करते-करते थक गए, दिन भर तो इधर-उधर की बातें करते थक गए, अब थोड़ा सा चैन की नींद तो ले लेने दे तो चैन की नींद कहाँ से आए? जब चैन हो तो चैन की नींद आए। अब वह चैन बाहर भी होना चाहिए और चैन भीतर भी होना चाहिए। बाहर अगर चैन नहीं है, तो भीतर की नींद नहीं आती और भीतर अगर चैन नहीं है, तो भी नींद नहीं आती। चैन दोनों जरूरी हैं...बाहर का भी चैन चाहिए और भीतर का भी चाहिए। अगर बाहर से कोई भी परेशान करने लग जाता है। कुछ नहीं है तो, सतना एक बात के लिए तो प्रसिद्ध है ही है, कि यहाँ पर मच्छर बहुत हैं। कहीं भी चले जाओ, किसी भी room में घुस जाओ, आपको कोई मिले या न मिले लेकिन मच्छर सब जगह मिलेंगे। अगर उन मच्छरों के बीच में रहकर के, आपको नींद भी आना चाहे तो आ नहीं सकती। क्या करना अब उनसे? क्या कहोगे? रात के अंधेरे में, जब वे अपना आक्रमण प्रारंभ करते हैं तब उस समय पर आपके मन में आएगा कि देखो! यह चैन की नींद भी नहीं लेने दे रहे। बाकी तो कोई चैन दुनिया में हमें चाहिए नहीं लेकिन यह भी अगर एक छोटा सा चैन मिलता है तो उसमें भी यह व्यवधान डालते हैं। क्या करोगे? मच्छरों के लिए आपके पास में कोई भी उपाय नहीं है। अगर वह आपके पास में बार-बार आता है, बार-बार आपको परेशान करता है, बार-बार काटता है, बार-बार तंग करता है तो आपके लिए क्या उपाय है? एक उपाय है, जो यहाँ सिद्ध भक्ति में बताया जा रहा है। सिद्ध भक्ति में क्या कह रहे हैं? जो हम दूसरा काव्य पढ़ रहे थे। उस दूसरे काव्य की तीसरी लाइन हमें आज पढ़ना है...

**ज्ञाता दृष्टा स्वदेह - प्रमिति - रूपसमाहार - विस्तार - धर्मा,
ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा, स्वगुणयुत इतो, नान्यथा साध्यसिद्धिः ॥2॥**

एक चीज है जो यहाँ बताई जा रही है, यह चीज सिद्ध भगवंतों में है। क्या है? सिद्ध भगवान अपने अनेक-अनेक गुणों को धारण करते हैं लेकिन उनके गुणों में सबसे बड़ा जो गुण है, वह यहाँ बताया जा रहा है कि वह भगवान ज्ञाता और दृष्टा होते हैं। क्या होते हैं? ज्ञाता-दृष्टा! ज्ञाता दृष्टा का मतलब? 'ज्ञाता' मतलब जानने वाला... 'दृष्टा' मतलब देखने वाला। वह सिर्फ हर चीज को जानने वाले होते हैं और देखने वाले होते हैं। यूँ नहीं समझना कि वहाँ सिद्धालय में या लोक के अग्र भाग में जहाँ पर वह विराजमान हैं, वहाँ पर उनके लिए, अन्दर कुछ हो नहीं रहा है या वह कुछ कर नहीं रहे हैं, वे कर रहे हैं। क्या कर रहे हैं? जानने की क्रिया कर रहे हैं और देखने की क्रिया कर रहे हैं। वह कोई लकड़ी की या कोई लोहे के pipe की तरह, बिल्कुल ठूठ की तरह, बिल्कुल निश्चेष्ट होने के बावजूद भी, निर्जीव नहीं हो गए। उनके अन्दर जीवत्व है। निकम्मा बाहर से हो गए, बाहर के कोई काम नहीं करने। जो काम थकाते थे, नींद दिलाते थे ऐसे कोई भी बाहर के काम नहीं करना लेकिन उनका भीतर का कार्य चल रहा है, भीतर की क्रिया चलती रहती है और वह क्रिया

क्या है? जानना और देखना। सिर्फ यही वह क्रिया है, जिसके माध्यम से वह दुनिया को जानते हैं, देखते हैं लेकिन दुनिया से जुड़ते नहीं। लोक का ऐसा कोई भी पदार्थ नहीं, विश्व का ऐसा कोई भी द्रव्य नहीं, पदार्थ नहीं, जो उनके ज्ञान में जानने में न आता हो, देखने में न आता हो। लेकिन सब कुछ जानने और देखने के बावजूद भी वे क्या बने हुए हैं? वे ज्ञाता बने हुए हैं, वे दृष्टा बने हुए हैं। हमें जानना है तो जाना जा सकता है और जानना आत्मा का परम धर्म है, आत्मा का स्वभाव है। यह जानना कभी भी छूट नहीं सकता..चाहे हम संसार में रहें, चाहे हम सिद्ध बन जाएँ। जानना और देखना तो हमारे अन्दर चलता रहेगा। हम कहीं भी बैठे होंगे, कुछ न कुछ जान रहे होंगे, कुछ न कुछ देख रहे होंगे लेकिन उस जानने-देखने के साथ में, हम कुछ करने भी लग जाते हैं। जानने-देखने के साथ में हमारे दिमाग में कुछ न कुछ और आने लग जाता है कि हमें ऐसा नहीं जानना...ऐसे जानना; ऐसे नहीं...इसको मानना, ऐसे मानना। यह जो हमारे अन्दर आने लग जाता है इसे वह नहीं किया करते हैं और यह कार्य केवल संसारी जीवों में हुआ करता है।

सिद्ध भगवान सभी पदार्थों को देख रहे हैं

सिद्ध भगवान सभी पदार्थों को देख रहे हैं, सभी चीजों को देख रहे हैं। दुनिया में जितनी भी आत्माएँ हैं वह भी उनको दिखाई दे रही हैं। जितने भी शरीर आदि हैं वह भी उनको दिखाई दे रहे हैं। जितने भी पौद्गलिक पदार्थ हैं वह भी सब उनके जानने में आ रहे हैं, दिखाई दे रहे हैं और वह सब दिखाई दे रहे हैं। भीतर से लेकर बाहर तक, सब दिखाई दे रहा है। आपने कभी कल्पना की? भगवान क्या देख रहे हैं? हम जो छुपाते हैं वह सब भगवान को दिखाई दे रहा है। उनके ज्ञान में सब कुछ आ रहा है; सब कुछ उनके ज्ञान में प्रतिबिम्बित हो रहा है। जैसे दर्पण के सामने अपने-आप सब कुछ प्रतिबिम्बित होने लग जाता है, वैसे ही सारा वहाँ पर reflect होता रहता है। हम जो अभी यहाँ सोच रहे हैं, आगे सोचेंगे, वह उनके ज्ञान में पहले से ही reflect हो रहा है। ऐसा भगवान का वह जो ज्ञान है, उस ज्ञान में ज्ञातापन-दृष्टापन, यह बहुत बड़ी उनकी quality है। कल आपने निकम्मा तो सुन लिया और निकम्मा सुन कर के हो सकता है, आपका मन बिगड़ गया हो। बोलो कि नहीं, हमें नहीं सिद्ध भगवान बनना लेकिन आज सुनिए वे क्या करते हैं? वे ज्ञाता हैं, दृष्टा हैं।

आत्मा और ज्ञान दोनों एकमेक हैं

जानना यह किसी के द्वारा नहीं होता है, यह अपनी आत्मा का एक स्वभाव है। आत्मा और ज्ञान के बीच में कोई difference नहीं है। आत्मा और ज्ञान के बीच में कोई भेद की line नहीं है। आत्मा और ज्ञान दोनों एकमेक हैं। आत्मा और ज्ञान दोनों के अन्दर एक गुणवत्ता है कि ज्ञान आत्मा है और आत्मा ही ज्ञान है। अब उस आत्मा को जानना भी है और देखना भी है। ज्ञान भी एक गुण है आत्मा के अन्दर जिससे वह जानता है और दर्शन भी एक गुण है जिससे वह देखता है।

हमारा जानना-देखना क्रमबद्ध लेकिन भगवान एक साथ जानते-देखते हैं

जब हम और आपकी बात आती है जानने और देखने की तो सिद्धान्त ग्रंथों को पढ़ने से समझ में आता है कि हम लोग कभी-भी एक साथ जानना और देखना नहीं कर सकते। **हमारा जानना-देखना एक क्रम से होगा। हम देखेंगे पहले, जानेंगे बाद में और जो सिद्ध भगवान होते हैं, वे जानना-देखना एक साथ करते हैं... simultaneously, वे एक साथ दोनों क्रियाएँ करते हैं..** जानते भी हैं और देखते भी हैं। हमारा जो जानना-देखना है, वह तो एक order के साथ चलता है। पहले हम देखेंगे फिर जानेंगे। पहले क्या करेंगे? देखना होता है। फिर बाद में जानना होता है। हमें पता नहीं पड़ता कि हमने कब जान लिया कब देख लिया? लेकिन जब भी आप किसी भी चीज को जानते हैं, चाहे वह he हो या she हो मतलब male हो या female हो, चेतन पदार्थ हो या अचेतन पदार्थ हो। जब भी आप किसी भी चीज को जानते हैं, उससे पहले आप उसे देखते हैं। बिना देखे हुए, आप किसी भी चीज को जान नहीं सकते। भगवान भी जान रहे हैं, देख रहे हैं। हम भी जान रहे हैं, देख रहे हैं लेकिन भगवान एक साथ कर रहे हैं, उनके जानने-देखने में क्रम नहीं है। उनके जानना-देखना एक साथ हो रहा है। **जिस क्षण पर, जिस moment में, वह जान रहे हैं-उसी क्षण पर वह देख भी रहे हैं।** वे जो देखते हैं, जो जानते हैं, वह सिर्फ देखने और जानने रूपी होता है। उसमें ऐसा कुछ नहीं होता है कि जानने से कोई हमारे अन्दर हर्ष उत्पन्न हो जाए, जिसको हमने नहीं जाना, उसके कारण से हमारे अन्दर कोई दुःख उत्पन्न हो जाए, यह सब उनके अन्दर नहीं होता।

बात मच्छर की.....

आपसे बात कर रहा था उस मच्छर की.. भूल गए? जब आपको मच्छर काटे और आपके पास में कोई भी उस मच्छर को भगाने का कोई भी उपक्रम न हो। उपक्रम क्या करोगे? ज्यादा से ज्यादा हाथ चलाओगे, ज्यादा से ज्यादा आपके पास कोई कपड़ा होगा वह हिला दोगे। वह कितनी देर मानेगा? वह तो घूम फिर कर बार-बार आपके पास आ जाएगा। वह क्यों मानेगा? उसे नहीं पता कि आप उसे भगा रहे हो क्योंकि उसके पास में मन नहीं है। उसे बस! इतना पता है कि हमको अगर कोई भी, थोड़ा-सा भी छूने की या हवा देने की कोशिश करता है, तो इसका मतलब हमें यहाँ पर खतरा है। हमें यहाँ से हट जाना है। बस वह हट जाता है लेकिन उसे यह नहीं पता होता है कि यही आदमी हमें बार-बार हटा रहा है। यही आदमी हमें बार-बार भगा रहा है और उसे यह भी पता नहीं होता है कि हम बार-बार एक ही जगह पर आ रहे हैं। बार-बार एक ही जगह पर मंडरा रहे हैं क्योंकि उसके पास में आगे-पीछे का विचार करने के लिए मन नहीं होता है। वह जिस moment पर, जिस तरह की क्रिया करता है बस! वह उसी तरह की क्रिया करता है। जब बैठना होगा, किसी के ऊपर बैठ जाएगा। काटना होगा, काट लेगा। हटना होगा, हट जाएगा। हटने के बाद यह नहीं सोचेगा कि मैं यहाँ से हट गया हूँ तो मुझे फिर से यहीं पर बैठना है। आपको लगता है कि वह बार-बार मेरे पास आ जाता है लेकिन वह अपने उस घूमने के कारण से, उसके आस-पास और कोई चीज नहीं होने के कारण से, बार-बार घूम करके आ जाता है। वह यह नहीं जानता है कि मैं जिस चीज के पास पहले आया था, उसी चीज के पास बार-बार आ रहा हूँ। उसकी ज्ञान इन्द्रिय, चाहे वह घ्राण-इन्द्रिय के रूप में हो। मच्छर

है तो उसके पास में चक्षु-इन्द्रिय भी होगी लेकिन वह चक्षु-इन्द्रिय भी काम नहीं करती है। वह तुमको नहीं देखती है, वह आपके पास अगर बार-बार आता है तो अपनी घ्राण-इन्द्रिय के कारण से आता है। उसकी घ्राण-इन्द्रिय सशक्त होती है। उसे वहाँ कुछ smell आती है, वह आपको नहीं आएगी। वह उसी को आएगी और उसके कारण से वह बार-बार वहीं पर आएगा और आप बार-बार उसको हटाओगे, हटाने के अलावा आप कुछ और कर भी तो नहीं सकते हो। कुछ और तो नहीं करना? मारना तो नहीं है? मारोगे तो नहीं न? बोली तो क्या करोगे? बार-बार उसे हटाने की कोशिश करोगे और बार-बार वह आपके ऊपर आ जाएगा। मतलब क्या हुआ? मच्छर काटता है यह उसका जुनून है, आप खुजला लेते हो यह आपका सुकून है। जानते हुए भी आप उसे मारते नहीं क्योंकि आपको पता है उसमें मेरा ही तो खून है। नहीं समझ आया? अपने खून को मारा जाता है क्या? जब आपको पता है कि इसमें मेरा ही खून है तो फिर, उसको मारे क्यों? यही सोच करके कोई भी दयावान व्यक्ति कभी भी मच्छरों को मारता नहीं है। उसके काटने पर भी अगर हम कुछ बने रह सकते हैं और उससे भी कुछ सीख सकते हैं तो वह एक ही चीज है, मालूम है? वह आपसे क्या कह रहा है? वह आपसे कह रहा है कि आप सिद्ध भगवान बनो।

मच्छर कह रहा है-आप सिद्ध भगवान बनो

मच्छर आपसे क्या कह रहा है? आप सिद्ध भगवान बनो। कैसे बनो? बोला...मैं आपको सिद्ध भगवान बनने में सहयोगी बन रहा हूँ और मैं जब आपको काटूँ तो आप मुझे काटना नहीं, मारना नहीं, भगाना नहीं। आप क्या करना? आप ज्ञाता-दृष्टा बनना। क्या बनना? ज्ञाता दृष्टा। ज्ञाता दृष्टा का मतलब? बस! आप सिर्फ जानो। वह यह बताना चाह रहा है कि हम हैं यहाँ पर, आप मुझे देख लो। मैं काट रहा हूँ, यह भी आप जान लो। **इसके अलावा आप मेरे साथ कुछ न करो, आप ज्ञाता-दृष्टा बनने की साधना करो।** मतलब क्या हुआ? मच्छर आपको आपके स्वभाव के निकट पहुँचाने के लिए आता है और वह कहता है कि हमको कितना ही भगाओगे हम भागेंगे नहीं। आपके भगाने से नहीं भागेंगे। जब सूर्य का प्रकाश आ जाएगा, हम अपने आप चले जाएँगे। लेकिन जब तक अंधकार रहेगा तब तक हम आपको छोड़ेंगे नहीं क्योंकि उसे अंधकार में दिखाई देता है। उसकी अंधकार में गति होती है, अंधकार में उसका ज्ञान काम करता है और जैसे ही प्रकाश आता है वह सब अपने आप छू-मंतर हो जाता है, अपने आप भाग जाता है। वह मच्छर आपके लिए और किसी तरीके से जाने वाला नहीं है। अगर आप उस समय पर ज्ञाता-दृष्टा बन जाएँ तो आपको बड़ा आनन्द आएगा, आपको सुख मिलेगा। उससे भी प्रेम होगा और आपके मन में एक भाव आएगा कि देखो! बेचारा तड़फ रहा था, कम से कम हमारे पास बैठ करके शान्त तो हो गया। जैसे वह शान्त हो गया ऐसे ही हम भी शान्त हो जाएँ और उसको देखते रहें।

ज्ञाता-दृष्टा बनो और स्वभाव के निकट आओ

ज्ञाता-दृष्टा बनना अपने आप में बहुत बड़ा कठिन काम है और केवल ज्ञाता-दृष्टा बनकर के जो व्यक्ति, किसी भी चीज को जानने और देखने के माध्यम से, उससे न द्वेष करता है, न राग करता है, तो वह व्यक्ति अपने स्वभाव के निकट आने लग जाता है। अगर आपको सिद्धों के पास पहुँचना है तो आपको यह साधना करनी पड़ेगी। किसी को भी देखकर, जानकर के, आप सिर्फ इतना ही देखो कि यह है और मैं इसको जान

रहा हूँ, यह है मैं इसको देख रहा हूँ। इसके आगे कुछ नहीं सोचना, इसके आगे जैसे ही आपने कुछ सोचा तो आपको या तो राग आएगा या द्वेष आएगा। जैसे ही आपने उसके आगे सोचा कि यह व्यक्ति अच्छा है, यह मेरे पास आया है, यह मेरा है, यह मेरे अनुकूल है, यह मेरे लिए है, यह मेरा मित्र है...यह राग के साथ जानना हो गया। जैसे ही आपने उसको देख कर के सोचा अरे! यह तो मेरा दुश्मन है, यह मेरे प्रतिकूल है, यह पहले मेरे लिए बुरा कर चुका है, यह फिर से मेरे सामने आ गया, यह आपने द्वेष के साथ जानना शुरू कर दिया। राग के साथ जान रहे हो या द्वेष के साथ जान रहे हो, ये राग या द्वेष के साथ जानने की दोनों ही जब तक आपके साथ में क्रियाएँ चलेंगी तब तक आपका संसार बना रहेगा। **संसार से मुक्त होने का सीधा-साधा तरीका यह है कि जैसा स्वभाव सिद्धों का है बस! उसी स्वभाव की साधना करो।** सिद्ध कैसे हैं? ज्ञाता-दृष्टा। बोलो! ज्ञाता-दृष्टा। वह कौन हैं? वे सिद्ध हैं, जो पूर्ण शुद्ध हो चुके, जिनके अन्दर कुछ नहीं है। वह अपनी पूरी whole अपनी आत्मा से जान रहे हैं। अपनी आत्मा के पूरे एक-एक Point से, एक-एक प्रदेश से, वे देख रहे हैं लेकिन न किसी को राग के साथ जान रहे हैं, न किसी को द्वेष के साथ जान रहे हैं।

क्या भगवान सब देखते हैं?

आप भगवान की आराधना कर रहे हैं तो आपको क्या लगता है कि भगवान हमारी आराधना से प्रसन्न हो जाते हैं? बोलो! लगता तो है। जितना ज्यादा हम शान्तिनाथ भगवान के चरणों में सिर घिस लेंगे, जितना ज्यादा वहाँ हम बार-बार माथा टेकेंगे, जितना ज्यादा हम अपने हाथों से भगवान को बार-बार पोंछ-पोंछ करके, अपने सिर पर लगाएँगे उतने ही ज्यादा भगवान प्रसन्न हो जाएँगे। ऐसा ही कुछ है न? कुछ लोग इसी काम में लगे भी रहते हैं। जिनको कहीं नींद नहीं आती उन्हें भगवान के चरणों में नींद आ जाती है। वह कई बार ऐसे बैठ जाते हैं, जैसे भगवान और हमारे बीच में कोई दूसरा आए ही नहीं। कोई दूसरा दर्शन करने वाला है तो उन्हें कोई मतलब ही नहीं है। वह घिस रहे हैं तो घिसे ही जा रहे हैं, बैठे हैं तो बैठ ही जा रहे हैं। क्या सोच कर के? शायद यही सोच करके कि भगवान हमारी इस तरह की पूजा से प्रसन्न हो जाएँ। यह भाव भी आपके मन में आता तो होगा ही? सिद्ध भगवन्तों की आराधना करते हैं, आठ-आठ दिन तक करते हैं, खूब रोजाना नए-नए बड़े-बड़े अर्घ चढ़ाते हैं, रोजाना अर्घ दुगने-दुगने होते चले जाते हैं मतलब दुगने-दुगने हमारे ऊपर भगवान प्रसन्न होते चले जा रहे हो। क्या होता है दुगना-दुगना? कभी आठ अर्घ चढ़ाए, कभी सोलह चढ़ाए, फिर बत्तीस चढ़ाए, फिर चौंसठ चढ़ाए। अर्घ दूने हो रहे हैं मतलब भगवान भी हम पर और-और-और प्रसन्न हो रहे हैं। ऐसा? देखो! **अनन्त सिद्ध भगवान की आप आराधना कर रहे हो, करते रहो।** लेकिन उन सिद्ध भगवान के अन्दर यह तो जानने में आएगा ही कि हाँ! यह एक स्थान है, यहाँ पर इतने सारे लोग बैठे हैं, यह मांडला बना हुआ है, इधर श्री जी विराजमान हैं, इधर मुनि महाराज हैं, इधर श्रावक हैं, इधर श्राविका हैं। सब as it is उनके ज्ञान में ज्यों का त्यों reflect हो रहा है।

भगवान प्रसन्न-नाराज होने वाले नहीं हैं

आप खूब पूजा करो, खूब आरती करो लेकिन उनके अन्दर यह जानना तो हो रहा है कि हाँ! **यह जो कुछ भी दृश्य देखने में आ रहा है, यह दृश्य कहीं न कहीं चल रहा है और यह उनके जानने में, देखने में आ**

रहा है। लेकिन यह फलाने चंद जी हैं, यह फलाने सेठ जी हैं। यह हमारे लिए बहुत ज्यादा प्रसन्न करने में लगे हुए हैं या इन्होंने बहुत बड़ी-बड़ी हमारे लिए योजना बनाई हैं या हमारी पूजा करने के लिए इन्होंने बहुत अपना द्रव्य खर्च किया है तो इन पर थोड़ा-सा अनुकंपा की जाए, प्रसन्न हुआ जाए, अवतार लिया जाए, इनके समक्ष आया जाए, यह कभी नहीं होगा। सुन रहे हो सेठ जी? फिर क्या करें महाराज? भगवान की पूजा करने से, भगवान के अन्दर तनिक भी राग उत्पन्न होने वाला नहीं है। वह सब जानेंगे कि आप किन भावों से भगवान की पूजा कर रहे हैं? किन भावों से आप उनकी आराधना कर रहे हैं? यह भी जान रहे हैं। भीतर से आपके भाव उनकी आराधना में कितने लग रहे हैं यह भी जान रहे हैं और जिसके नहीं लग रहे उसको भी जान रहे हैं। मान लो, कोई कहे कि सिद्ध-विद्ध कोई होते नहीं हैं, कोई उनको गाली दे, यह सब बेवकूफी की बातें हैं, ऐसा कुछ नहीं होता है। यह सब यूँ ही बेकार की बातें करते रहते हैं, कोई संसार के अलावा कोई दुनिया में मोक्ष-वोक्ष, कहीं कुछ नहीं होता है, कोई निर्वाण नहीं होता, कोई ऐसी जगह है ही नहीं। satellite से मैंने पूरी दुनिया देख ली है, कहीं कुछ देखने में आया नहीं है, तो भी भगवान उसके ऊपर कोई नाराज होने वाले नहीं हैं। उसको द्वेष से नहीं जानेंगे कि अरे! देख मेरे होते हुए भी तू मेरे अस्तित्व को नकार रहा है तो उसको द्वेष से देखें, ऐसा भी नहीं है। समझ रहे हो? क्यों नहीं है? क्योंकि वह मात्र ज्ञाता हैं, मात्र दृष्टा हैं।

ज्ञाता-दृष्टा इसको कहते हैं

आपने जो स्वर बोले उन स्वरों में भी वह भेद नहीं करेंगे कि आपने वह स्वर मिष्ट स्वर बोले, मधुर स्वर बोले कि कटुक स्वर बोले। वह उनके लिए गाली के रूप में हैं या स्तुति के रूप में हैं। उन्हें उससे भी प्रयोजन नहीं है क्योंकि उन्हें केवल इतना पता है कि यह सब पुद्गलों का परिणामन है। **शब्द भी पुद्गलों की वर्गणाओं से बनते हैं,** बस! यह शब्द हैं। अगर उन्हें यह समझ में आ गया कि यह गाली है और यह स्तुति है तो यह भी उनके अन्दर राग-द्वेष उत्पन्न कर देगा, उन्हें यह भी समझ नहीं आता। उन्हें सिर्फ जो जैसा पदार्थ है वैसा दिखाई दे रहा है, वैसा उनको जानने में आ रहा है। आप चाहे सोलह, बत्तीस या दो सौ छप्पन अर्धों से उनकी पूजा करें और चाहे दो सौ छप्पन बार उनके ऊपर ओं फट, ओं फट करके; चाहे उन्हें फट-फट करो, चाहे छिंद-भिंद करो, चाहे उन्हें तलवार लेकर के काटने की कोशिश करो, उन्हें उससे कुछ भी होने-जाने वाला नहीं है। क्या समझ आ रहा है? ज्ञाता-दृष्टा इसको कहते हैं। जब ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव की आराधना होती है तो राग और द्वेष की कमी होने लग जाती है।

Positivity-Negativity

यूँ कहें कि राग-द्वेष की कमी जैसे-जैसे होती जाएगी, आप ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव की ओर आते जाएँगे और ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव में जैसे-जैसे आपका मन लगता जाएगा, राग-द्वेष का अभाव भी वैसे-वैसे होता जाएगा। दोनों चीजें एक साथ चला करती हैं। **जितना आपके अन्दर positivity आएगी, negativity अपने आप उतनी कम हो जाएगी और negativity जितनी कम होगी, उतनी positivity आपके अन्दर आती चली जाएगी।** जैसे किसी भी औजार पर जंग लग जाती है- चाकू आदि पर तो जितना आप उसे घिसोगे उतना ही वह चमकेगा और जितना चमकेगा उतनी जंग उसकी उतर जाएगी। ठीक इसी तरह

से, जिसे सिद्ध स्वभाव की आराधना करनी होती है, जो अपनी आत्मा को शुद्ध बनाना चाहता है, वह ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव की आराधना करने लग जाता है। जानना है और देखना है।

मनुष्य राग या द्वेष के साथ जानते हैं

हम हर समय पर किसी न किसी राग या द्वेष के साथ जानते हैं या देखते हैं। किसी भी व्यक्ति को देख लेना, किसी भी अपने घर के व्यक्ति को देख लेना, आपको अपने घर में भी किसी को देखना होगा तो आप उसको केवल देखेंगे नहीं, जानेंगे नहीं। हाँ! यह मेरा है, यह मेरा पोता। पड़ोसी का होगा तो यह पड़ोसी का पोता। यह मेरा नाती, यह पड़ोसी का नाती, आपके अन्दर कभी भी जानना-देखना इस रूप में नहीं होगा कि यह भी एक बालक है और वह भी एक बालक है। बस! न मेरा है न किसी का है, यह एक बालक है। यह भी एक मनुष्य पर्याय को लिए हुए जीव है, इस रूप में आपका अगर जानना प्रारंभ नहीं होगा तो आपके ज्ञाता-दृष्टा पने की साधना कभी भी प्रारंभ नहीं हो पाएगी। **सिद्ध भगवन्तों की पूजा से किसी को सिद्ध बनना नहीं हुआ, कोई भी सिद्ध नहीं बन सकता। सिद्ध बनने के लिए आपको सिद्ध भगवान के इन गुणों की ओर ध्यान रख करके, आचार्य कहते हैं- हे भगवन्! हम आपके उन गुणों में आकृष्ट होकर के तुष्ट हो रहे हैं।**

ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव में रहने से मानसिक रोग नहीं होते

पहले काव्य की दूसरी लाइन, क्या लिखा था? **आपके गुणों में आकृष्ट होकर के तुष्ट हो रहे हैं।** मैं ऐसा हूँ, जब हम भी ऐसे ही होंगे तो भगवान के गुणों में आकृष्ट होकर के ज्ञाता बनना है, दृष्टा बनना है। ऐसा आकर्षण भगवान के गुणों में आएगा और फिर हम उससे तुष्ट होंगे। आज हम ज्ञाता बने, आज हम दृष्टा बने, थोड़ी देर के लिए भी अगर हम ज्ञाता-दृष्टा बनकर के घर में बैठे, मन्दिर में बैठे, आपको लगेगा कि यह कितनी बड़ी चीज है और कितनी अच्छी चीज है। **दुनिया का tension, सब बाहर-बाहर, ऊपर-ऊपर से हट जाएगा, उतर जाएगा। आप सिर्फ ज्ञाता और दृष्टा बने रहें।** कोई व्यक्ति है, आप बैंक से आ रहे थे, आपके पास में पाँच-दस लाख रुपए थे और उसने किसी भी तरीके से, आपके वे पाँच-दस लाख रुपए निकाल लिए और वह चलता बना। सुन रहे हो? अब क्या करोगे आप? FIR दर्ज कर लो, उसके पीछे दौड़ लो, किसी भी तरीके की complaint कर लो, news निकाल लो, कुछ नहीं होने का। जो होना था, वह हो गया और अगर आपके अन्दर जितना द्वेष होगा, जितना अपने धन से राग होगा, वह सब राग और द्वेष उस समय पर सामने आ जाएगा। उतनी आकुलता आपके अन्दर होगी। उस आकुलता को, उस दुःख को, दूर करने का कोई भी उपाय नहीं होगा। अगर कुछ बाहरी उपाय हो सकता है तो इतना ही हो सकता है कि आपको कोई नौद की गोलियाँ खिला दे तो थोड़ी देर के लिए आप शान्त रह सकते हो। नहीं तो आप अपने अन्दर वह शान्ति महसूस कर ही नहीं सकते हो। बताओ?

विचार से ही सुकून, विचार से ही चैन खो रहा है

आपके हाथ में से कोई 10 लाख रुपए चुटकी से उड़ा करके ले जाए और आप खड़े-खड़े देखते रह जाओ। क्या करोगे? आप बताओ! परेशान होने के अलावा आपके पास क्या होगा? वह परेशानी दिन भर होना

ठीक है। अब रात में जब सब अपने-अपने कमरे में सो गए, पूरी दुनिया में सन्नाटा मचा हुआ है लेकिन आप अब रात में भी परेशान हैं। अब क्या करोगे? आप कहीं पर भी, किसी भी तरीके से, चैन नहीं पा रहे हो। अपनी छतों पर घूम लीगे, थक जाओगे, नींद नहीं आएगी। क्या करोगे? अगर आपके अन्दर एक शक्ति हो तो आपको 10 लाख रुपए का नुकसान होने पर भी चैन आ सकता है, नींद आ सकती है, नुकसान की बात क्यों कह रहा हूँ? 10 लाख रुपए मिल जाएगा तो भी चैन आ जाएगा क्या? तब तो आ ही जाएगा। चैन कब जाता है? जब जो हमारे हाथ में होता है, हमारे पास होता है, वह निकल जाता है तो चैन जाता है। नहीं समझ में आया? और 10 लाख कहीं से मिल गया तो फिर आपकी नींद उड़ जाए, ऐसा तो नहीं होता होगा। उसमें अगर थोड़ी देर गुलगुलाते भी रहो...यार बहुत अच्छा हो गया, 10 लाख मिल गए, 10 लाख मिल गए, सोचते-सोचते भी नींद आ जाती है। अगर उसमें भी ज्यादा कूलने लग गए तो हो सकता है, उसमें भी नींद चली जाए। लेकिन उस तरह के chance लोगों के सामने कम होते हैं। ज्यादातर chance ये होते हैं, जब वे नुकसान में होते हैं तब उनका चैन गायब हो जाता है। अब नुकसान क्या था? वह 10 लाख रुपए थे, वह कागज के नोट थे। वे क्या थे? कागज के, special type के कागज पर, अच्छी मोहर लगी हुई, वे नोट थे और उस तरह के नोट से आपने इतना अनुबंध जोड़ लिया था कि ये 10 लाख हैं और इसके कारण से मैं 10 गुणा ऊँचा आदमी हूँ। किससे? जिसके पास में एक लाख हैं। यह आपके दिमाग में सब figure जुड़ी हुई है और इसी के कारण से आपको वह नोट, वह कागज नहीं दिखाई देंगे, वह आपको बहुत बड़ी कीमती वस्तु दिखाई देगी। मान लो, उसी दिन अगर कहीं PM modi घोषणा कर दें कि जितने भी 2000 के नोट थे या 5000 के नोट थे उन सबकी value zero हो गई है। अब कोई भी उनकी, कोई value नहीं रही है। आपको पता हो कि वह 10 लाख के नोट सब पाँच-पाँच हजार के थे, अब उनकी कोई value नहीं रही। उसी second moment में आपके अन्दर क्या feeling आएगी? कुछ नहीं हुआ। वे एकदम से कागज थे, कागज की तरह कोई भी ले गया। अरे पगला! चोरी करके ले गया, हमसे धोखा दे कर ले गया, उसके भी कुछ काम का नहीं रहा, आपको सुकून मिल गया। मिल गया कि नहीं? बोलो तो मिलेगा कि नहीं? जब विचार से ही सुकून मिल रहा है, विचार से ही चैन खो रहा है, तो हम अपने विचार पर ही ध्यान क्यों नहीं देते हैं? न आपके पास में 10 लाख उस समय था, न 10 लाख जाने के बाद में आपके पास में कुछ आ गया, नया चैन देने के लिए। लेकिन आपके सामने एक विचार आया। वह विचार क्या है? उस कागज की कीमत आपने 10 लाख लगा दी है, वह आपको 10 लाख दिखाई दे रहा है, तो वह विचार आपके सामने, आपको राग से जोड़ कर के आपकी नींद खो रहा है। वही विचार, अगर आप यह सोच लो कि नहीं, यह कुछ नहीं है। यह कागज है, इनकी कोई कीमत नहीं होती है, modi कहे या न कहे। लेकिन इनकी अपने दिमाग में कोई कीमत नहीं है। क्यों नहीं है? इनमें क्या रखा है? ये सब कागज के ढेर हैं, पुद्गल पदार्थ हैं। इनमें क्या कोई सुख मिल सकता है? क्या इनके अन्दर कोई सुख छुपा हुआ है? कुछ नहीं है, यह सिर्फ हमारा विचार है। **आपके लिए 10 लाख खोने के बाद भी, नींद आने का अगर कोई तरीका है तो सिर्फ उस भाव को ज्ञाता-दृष्टा भाव से देखना है** और अगर आपकी यह ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव को साधने की साधना होगी तो आप बड़े से बड़ा नुकसान झेल करके भी कभी depression में नहीं जाओगे, यह guarantee से कहता हूँ। यह साधना जब तक आपके अन्दर विचार के रूप में नहीं आएगी, विचार ही आपके अन्दर नहीं आएगा, आप किसी भी क्षण depression में जा सकते हो। आप खतरों के बीच में बैठे हो, आपके साथ कुछ भी हो सकता है। आपकी जिंदगी को बचाने के लिए कोई डॉक्टर सामने नहीं आ

सकता और कुछ नहीं कर सकता, सिवाय आपके। यह आपने कोरोना में भी देख लिया होगा। जिनके पास में हिम्मत थी, हिम्मते-मर्दा जो थे, वह corona में भी, ICU में भर्ती होने के बाद भी, बाहर निकल करके आ गए। जिनके पास में हिम्मत नहीं थी, वे केवल नाम सुनकर ही मरते रहे। एक पड़ोस में यह मर गया, रिश्तेदार में वह मर गया, ऐसे सुनते-सुनते ही कई मर गए। पता है न, य दृश्य तो सबने देखा है न? अगर आपके अन्दर ज्ञाता-दृष्टा भाव आएगा तो आप बड़ी से बड़ी आपत्तियों को भी झेल पाएंगे।

ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव की ओर आना

मैं चाहता हूँ, यह जैन समाज का व्यक्ति इतना कमजोर नहीं होना चाहिए। **अगर कोई जैन समाज का व्यक्ति नींद की गोलियाँ खा कर के सोता है, तो मुझे आश्चर्य होता है कि इसने भगवान के अपरिग्रह के सिद्धान्त को, अहिंसा के सिद्धान्त को, ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव को, कुछ नहीं जाना, इसने अपनी जिंदगी खराब कर ली।** एक जैन समाज के व्यक्ति को तो कम से कम अरिहन्त और सिद्धों की पूजा करते हुए जिंदगी निकल जाती है। इतना ज्ञान होना चाहिए कि आखिर सिद्ध और अरिहन्त हमें क्या सिखा करके गए हैं? क्या उपदेश देकर के गए? हमारे अन्दर उस उपदेश की एक छोटी सी भावना तो होनी चाहिए। कभी हम इस तरह का भाव तो करें कि ज्ञाता-दृष्टापना होता क्या है? आप अपने घर के बीच में बैठ जाओ, घर के अन्दर बैठ जाओ। आज एक कोशिश करना, कोशिश नहीं करते हो आप। यहाँ सुनते हो सिर्फ, practical के नाम पर आप बिल्कुल zero हो आप।

10 मिनट के लिए ज्ञाता-दृष्टा भाव (only to know and to see)

अगर हम आपसे कहें, अपने घर में केवल एक 10 मिनट के लिए practice करना। आप घर के आंगन में, घर के कमरे में, कहीं पर भी, आप शान्ति से 10 मिनट बैठ जाना और सिर्फ इतना सोचना, मैं 10 मिनट के लिए ज्ञाता-दृष्टा भाव में आता हूँ। **करना क्या है? मुझे कुछ नहीं करना है, मुझे सिर्फ जानना और देखना है। कहाँ क्या हो रहा है?** कोई सी आवाजें आ रही हैं? सिर्फ आवाजें हैं...कोई चिल्ला रहा है, पापा-पापा, दादा-दादा, सिर्फ सुनो। क्या कर रहे हो? सिर्फ सुनना है, जानना है और देखना है। एकदम से चिल्लाना नहीं कि मैं यहाँ हूँ। बोलना नहीं...आजा बेटा, आजा बेटा, ऐसा कहना नहीं। सिर्फ सुनना है, दादा-दादा बुलाया जा रहा है, पापा-पापा बुलाया जा रहा है। सुन नहीं रहे हो जी...जल्दी आ जाओ, भोजन कर लो, तैयार हो गया है। आप क्या कर रहे हो? क्या कर रहे हो? **एक अभ्यास करो, मैं आपसे कह रहा हूँ। एक अभ्यास करना शुरू करो...सिर्फ 10 मिनट, ज्यादा नहीं। सिर्फ ज्ञाता दृष्टा.. दूसरों की सिर्फ सुनो,** वह चिल्ला रहा है, काम बिगड़ा जा रहा है...देखते रहो, बिगड़ जाने दो, कुछ नहीं हो रहा है। तुम्हारे बिना कोई आग नहीं लग रही है, कुछ नहीं जला जा रहा है। कुछ नहीं होगा लेकिन तुम्हारी आकुलता इतनी नहीं कि मैं नहीं अगर बोलूंगा, मैं नहीं उसको कुछ कहूंगा तो वह कुछ का कुछ कर लेगा, कुछ नहीं होगा। तुम शान्ति से बैठ कर के देखो, **only to know and to see** बस! कोई reaction नहीं। केवल आपको अपने मन के अन्दर यही देखना है, मैं केवल इस दृश्य को देखने वाला दृष्टा हूँ और इस दृश्य को जानने वाला ज्ञाता हूँ। बस! I am only to know and तो see बस और कुछ नहीं हूँ। आपको कुछ नहीं करना, एक 10 मिनट अगर आप ऐसा करना सीख गए, आज दुनिया में हर कोई depression,

stress, tension न जाने क्या-क्या बिमारियाँ लेकर के बैठे हैं। अगर आप ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव की **10 मिनट practice** करोगे, आप सारा का सारा दिन भर का **tension release** अपने आप कर लोगे।

मैं ज्ञाता हूँ, मैं दृष्टा हूँ

यह स्वभाव के निकट जितना आओगे, आपको विभाव भाव अपने आप उतने ही दूर नजर आएँगे। कोई भी व्यक्ति कितना भी कुछ कहे, 10 मिनट अगर आप शान्ति से बैठ करके, सिर्फ जानो और देखो तो आपको लगेगा कि दुनिया पागल है या फिर मैं? बोलो आप ही बोलो! **10 मिनट अगर आप अपने स्वभाव में आओगे, आपको लगने लगेगा कि दुनिया पागल है।** दुनिया पागल है या फिर मैं पागल हूँ। उसने यह बात सही बोली, जब तक तुम दुनिया को पागल नहीं समझोगे तब तक तुम पागल दूसरों के लिए तो हो सकते हो। लेकिन मैं ज्ञाता हूँ, मैं दृष्टा हूँ, दुनिया पागल है, मैं पागल नहीं हूँ, मैं ज्ञाता हूँ, मैं दृष्टा हूँ। यह वह अध्यात्म है, इसको जाने बिना आपका जीवन शून्य है, अंधकार में है। भगवान के ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव को देख करके थोड़ा-सा, हमें अपने अन्दर भी यह भावना करनी चाहिए कि हम भी ज्ञाता-दृष्टा बने तो कैसे बने? हे भगवन्! आपके स्वरूप की साधना करे तो कैसे करें? ऐसे करें कि थोड़ी देर के लिए, अपने मन में हम सिद्धों को याद करे या न करे लेकिन अपने स्वभाव में आने के लिए मैं ज्ञाता हूँ, मैं दृष्टा हूँ... **10 मिनट! अगर आपके अन्दर यह ज्ञाता-दृष्टापने का भाव आने लगेगा तो उसकी जो vibration है, तो वह बहुत देर तक आपके दिमाग में चलेंगे और आपको दुनिया में कुछ भी होगा। आप भले ही दुनिया से जुड़े हुए होंगे लेकिन आपको लगेगा दुनिया के किसी कार्य-कलाप का मेरे ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ रहा है।** पागल है दुनिया... ऐसा कहने की जरूरत नहीं पड़ेगी। बस! आपको समझ में आएगा और कहना भी नहीं किसी से। नहीं समझे? कह मत देना, आज मैं महाराज के प्रवचन में सुनकर आया... तू तो पागल है, दुनिया पागल है, कहना नहीं है। यह सिर्फ realize करने की चीज़ें हैं... दुनिया पागल है और मैं ज्ञाता दृष्टा हूँ।

अर्ह ध्यान योग का motive—अहं से अर्ह की यात्रा

यह मंत्र है...दुनिया पागल है और मैं....जितनी बार इसको रटोगे, उतना ही आप अपने भीतर तक पहुँचते जाओगे। दुनिया पागल है या दुनिया में पागलपन है, उसके अलावा दुनिया में कुछ नहीं है। हर कोई आपको पागल-सा दिखाई देने लगेगा। जब आप अपने स्वभाव की ओर आओगे और यही स्वभाव की ओर आने का मतलब है...सिद्धों की ओर जाना। **अहं से अर्ह की यात्रा** करना इसी को कहा जाता है। **अर्ह ध्यान योग का motive क्या है? अहं से अर्ह की यात्रा करना।** जो अहं हमारे अन्दर भरा पड़ा है...मैं ये..मैं ये..मैं यह..मैं वह। यह सब छोड़ कर के अर्ह की ओर अगर चलना है तो थोड़ा ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव में आना पड़ेगा और यही साधना आपको ध्यान के साथ कराई जाती है और इसमें लोगों को आनन्द आता है। देश में विदेश में, बहुत लोग करते हैं। यह स्वभाव में आने के लिए, अगर आप अपने अन्दर, एक छोटी सी चेष्टाएँ करते हैं तो आपके कृतित्व बुद्धि, जो आपकी पर-द्रव्य से जुड़ी है, वह अपने आप कम हो जाएगी। आप उतनी देर के लिए, अगर निकम्मे हो गए तो वास्तव में आप उतनी देर के लिए भीतर से वीतराग हो गए।

उतनी देर के लिए आप भीतर से अपने स्वभाव में आ गए मतलब उतनी देर के लिए आप वीतराग स्वभाव का आलंबन ले लिए। इसी को कहते हैं- वीतराग-भाव...कोई से, मुझे कोई राग नहीं है; किसी से, मुझे कोई द्वेष नहीं है। मैं अपनी पत्नी को भी देख रहा हूँ तो राग से नहीं देख रहा हूँ। यह मेरी पत्नी नहीं है, she is only a lady. थोड़ी देर के लिए तो उसको ऐसे देखो। **अगर आपके अन्दर यह my और mine का भाव थोड़ा सा कम होगा तो आप कुछ धर्म का भीतर से बीज बो पाओगे।** धर्म का कुछ फल, आप प्राप्त कर पाओगे। अन्यथा यह पूजा विधान, सब अनादि काल से होते आए हैं, कुछ नहीं होने जाने का। वह तो मैना सुंदरी थी। उसने अपने पति का कोढ़ तो दूर कर लिया था। तुम तो वह भी कुछ नहीं कर सकते हो, तुम कुछ नहीं कर सकते हो। तुम तो एक जुखाम भी दूर नहीं कर सकते हो। कभी मतलब का विधान करके, अगर जुखाम भी दूर करने की कोशिश करो, वह तुम्हारे से भी नहीं होगा। कोई एक छोटी सी बीमारी हो, वह भी दूर नहीं होगी, कोढ़ तो बहुत दूर की बात है। इन सब बातों से कुछ नहीं होने-जाने का।

स्वदेह के बराबर ही आत्मा है, इसके अलावा कुछ नहीं है

जब तक आपको यह पता न हो कि हमें, इस पूजा का प्रयोजन क्या? हमें सिद्ध भगवान, जिनकी हम आराधना कर रहे हैं, वे हैं क्या? ज्ञाता दृष्टा यह भाव जानना बहुत जरूरी है और इस ज्ञाता दृष्टा भाव में आने पर ही आपको यह लगेगा... 'स्वदेह प्रमिति' मैं कितना हूँ? स्वदेह बराबर हूँ। मतलब मैं दुनिया में समझ रहा हूँ, मैं बहुत बड़ा businessman हूँ, मैं बहुत बड़ा company का मालिक हूँ, मैं बहुत बड़ा नेता हूँ, मैं बहुत बड़ा hero हूँ। तुम कुछ नहीं हो। जिस दिन तुम्हें 98 की जगह 99 degree temperature हो जाएगा, तुम्हें अपनी औकात समझ में आ जाएगी। मैं क्या हूँ? किसको बचाना है? आदमी को अपने आप समझ में आ जाता है, मुझे किसको बचाना है? मैं क्या हूँ? मैं कितना हूँ? जब ज्वर आएगा तो ज्वर कितने में आएगा? बुखार कितने में आएगा? जितना मेरा शरीर है उतने में ही बुखार आ रहा है, उतना ही मैं हूँ। बस! तब आपको समझ में आएगा, यही मैं हूँ। अब यह उतर जाए तो मुझे कुछ शान्ति मिले। **स्वदेह के बराबर ही आत्मा है, इसके अलावा कुछ नहीं है।** सिर्फ मान्यताएँ हैं, मानना है। जैसे हमने कागज के नोटों में मान लिया 10 लाख है, ये 5 लाख है, यह मेरा साम्राज्य है, ये सिर्फ मान्यताएँ हैं, कुछ नहीं है। आप क्या हो? **आप सिर्फ उतने ही हो जितना आपका शरीर है और आपके शरीर में जो चेतना आपके अन्दर विद्यमान है, वही आपका प्रमाण है।** उतनी ही आप भूमि घेरे हुए हो। बाकी सब तो अपराध के दायरे में आने वाली चीजें हैं। क्या सुन रहे हो? जितनी जमीन पर तुम बैठे हो, बस उतने ही हो। बाकी तो सब तुमने अपराध कर रखा है। वह सब तुमने ग्रहण कर रखा है, दूसरे से छीन रखा है, दूसरे के हिस्से का ले रखा है, जबरदस्ती कब्जा कर रखा है, आपका कुछ नहीं है। **'स्वदेह प्रमिति'** भगवान सिद्ध भी.. जो उनकी देह थी, बस! उतनी देह प्रमाण ही उनकी आत्मा रह गई। उसके अलावा सब छोड़ दिया, छूट गया। जो अपना है ही नहीं है, वह छूटेगा तो है ही। वह सब उनसे अलग हो चुका। इसी तरह से, हमें अपना स्वसंवेदन करने के लिए यह भावना करनी चाहिए कि मैं अपने स्वदेह प्रमाण चैतन्य आत्मा हूँ, स्वदेह में स्थित हूँ, मैं अपनी देह को छोड़कर के किसी दूसरे की देह में कभी भी स्थित नहीं हो सकता और कोई दूसरा भी अपनी देह छोड़कर के मेरी देह में स्थित नहीं हो सकता। हर कोई जीव, यहाँ पर **'स्वदेह प्रमिति'** के साथ रह रहा है। बस! हर जीव अपनी-अपनी देह प्रमाण है। छोटा हो, बड़ा हो, यह उसके अन्दर जो छोटा और बड़ापन आ जाता है। यह **'उपसमाहार विस्तार धर्माः'** यह संसारी जीव का धर्म है। कभी वह समाहार कर लेता है। मतलब संकोच कर लेता है

और कभी विस्तार स्वभाव वाला होकर के, बड़ा बन जाता है। कभी dinosaur और हाथी की तरह, बड़े-बड़े मगरमच्छों की तरह, बड़ा शरीर वाला हो जाता है। कभी छोटे-छोटे virus की तरह, छोटे जीव-जंतुओं की तरह, छोटे शरीर वाला हो जाता है, यह उसका एक धर्म है। कौन सा? **‘उपसमाहार’** अर्थात् उपसंहार कर लेना, समेट लेना और **‘विस्तार धर्माः’** विस्तार कर लेना। आत्मा का विस्तार भी हो जाता है, आत्मा का संकोच भी हो जाता है। यह उसका अपना धर्म है और उस धर्म के कारण से कोई जीव छोटा, कोई जीव बड़ा दिखाई देता है लेकिन है हर जीव अपनी देह बराबर-स्वदेह प्रमाण है। इसके अलावा, इस संसार में कोई भी जीव, अपनी देह को छोड़कर के, कहीं पर भी रह नहीं सकता है। हर किसी को अपना स्व-संवेदन करने के लिए, इस तरह से ज्ञाता-दृष्टा भाव में आकर के **‘स्वसंवेदगम्यमय’** हूँ, ऐसा भाव करना चाहिए। यह भाव अगर, यहाँ पर आप, कुर्सी पर भी बैठे-बैठे करोगे तो भी हो जाएगा। चाहे बैठे करो, चाहे लेटे करो, कैसे भी करो? खड़े होकर के करो, यह भाव कहीं भी किया जा सकता है।

**यत्न करो तुम प्रथम ही, बनने नित ही शून्य।
शून्य बने बिन मनुज का, कैसे हो अघ शून्य॥४॥**

**शून्य बना वो ही रहा, निर्विकल्प निश्चिन्त।
जो विकल्प चिन्ता करे मूर्खता का चिन्ह॥५॥**

5. जीवन में गुरु का महत्व



आज का यह मंगल दिन जब आप लोग, जो मुनिसंघ यहाँ सतना में पधारा है, उनको रोकने के लिए भरसक जोर लगायेंगे, ऐसे मंगल दिन की शुरुआत आज से होती है। यह जितने भी बाहर के लोग आते हैं, यह support करने के लिए आते हैं कि महाराज! आप जहाँ पर हो वहीं पर रहना, कहीं जाना नहीं और यह लोगों ने अपना एक मानस बना लिया है कि इस बार जो भी यात्रा होगी, जो भी गति होगी, टिकट अगर लेंगे, कहीं से भी बनेगी तो सतना की बनेगी। **सभी के लिए इस चातुर्मास में अपने-अपने मनोभावों को पवित्र करने का एक उल्लास के साथ में भाव तो बनता है और वह भाव ही बनाना हमारे लिए बहुत आवश्यक है।**

साधुओं के चातुर्मास के लिए उल्लसित होना

जीवन में अनेक अवसर आते हैं, जिन अवसरों पर हम बड़े-बड़े काम करते हैं। जिनेन्द्र भगवान के मन्दिर बनते हैं, वेदी प्रतिष्ठा होती है, पंच कल्याणक भी होते हैं और इन सब कार्यों से भी ज्यादा लोगों के मन में **एक आनन्द भाव आता है, मुनि महाराज के वर्षायोग के होने का। इसका क्या कारण है?** जब हम भगवान की प्रतिष्ठा करते हैं, पंचकल्याणक करते हैं, उस समय पर हम एक जिनालय का निर्माण करते हैं, वह हमारे लिए जिन-धर्म की स्थाई प्रभावना का एक कार्य हो जाता है। किन्तु जब हम किन्हीं साधुओं के चातुर्मास के लिए उल्लसित होते हैं, उनके लिए जब हमारे मन में आनन्द का भाव आता है, तो उस समय पर वह प्रभावना का भाव हमारे अन्दर, कहीं मन्दिर से भी ज्यादा दिखाई देता है।

श्रावकों के द्वारा की जाने वाली कलश-स्थापना

उसका क्या कारण है? उसका एक ही कारण है कि जब हम भगवान के लिए कुछ करते हैं, मन्दिर में कुछ करते हैं, तो हमें करने के बाद में फिर कुछ करना नहीं होता है। हमने भगवान को स्थापित कर दिया, मन्दिर बना दिए, अब हम चाहे आर्यें या न आर्यें, भगवान आपको कुछ भी नहीं कहेंगे। सामने जो आपने स्थापित किए हैं, उनकी तरफ से आपको कुछ भी संकेत नहीं मिलेगा। लेकिन जब हम मुनि महाराज के वर्षायोग की स्थापना करते हैं और उसमें शामिल होते हैं, तो ऐसा नहीं है कि हम जैसे मन्दिर बना करके घर पर बैठ जाते हैं, ऐसे नहीं बैठ पाएँगे। **हमें मुनि महाराज के वर्षायोग की स्थापना के उपरान्त भी प्रतिदिन मुनि महाराज के पास में आना पड़ेगा और प्रतिदिन उनके माध्यम से हमें धर्म-लाभ लेना पड़ेगा।** इस बात का जो agreement होता है, इसी को कहते हैं...श्रावकों के द्वारा की जाने वाली कलश-स्थापना।

गुरु की संगति का प्रभाव

यह भाव सभी के अन्दर जब आने लग जाता है कि अब हमें कुछ न कुछ प्रतिदिन मिलेगा, भगवान के पास आने से तो हमें माँगना पड़ता है, लेना पड़ता है और यहाँ आकर के तो हमें कुछ नहीं करना पड़ता है, बैठ

जाना पड़ता है, यह अपने आप देते जाते हैं, देते जाते हैं, देते जाते हैं। जब व्यक्ति केवल लेने के mood में हो और देने वाला केवल देने के mood में हो तो लेने वाले को बड़ी आसानी लगती है और बड़ा आनन्द आता है कि हमें करना कुछ नहीं है...बस! जाकर बैठ जाओ, अपने आप सब मिलता रहता है। ठीक ऐसा ही भाव प्रवचनों में, उपदेशों में, मोक्ष मार्ग को जानने में, तत्त्व का उपदेश सुनने में आदमी के अन्दर आने लग जाता है और यह भाव जब आता है, तो फिर वह अपने आप में, स्वयं भी मोक्ष के पथ पर चलते हुए, उसके साथ में अगर थोड़ी देर के लिए भी हो लेता है, तो उसके अन्दर यह भाव आने लग जाता है कि हमने भी कुछ प्राप्त कर लिया। आप देखो! दिन भर में 24 घण्टे में आप केवल एक घण्टे हमारी संगति में आते हो, इससे ज्यादा तो नहीं आते? थोड़ी बहुत देर के लिए शाम को आ गए, अब देखा जाए तो थोड़ी बहुत देर के लिए आहार चर्या के समय पर आ गए और ऐसे करते-करते आपके लगभग कितने? दो से तीन घण्टे मुश्किल से निकलते होंगे। इतने निकल आते हैं? 24 घण्टे में अगर आपने तीन घण्टे भी मुनि महाराज के सानिध्य में निकाल लिए तो आप यह मान कर के चलना कि ये तीन घण्टे, तीन घण्टे प्रतिदिन के जुड़ते-जुड़ते पाँच महीने में कितने घण्टे हो जाएँगे? ये इतने घण्टे हो जाएँगे कि आपको लगेगा कि जब मुनि महाराज का यहाँ से गमन होगा तो आपको लगेगा कि हमारे पास की कोई बहुत बड़ी चीज छूट गई है और यह उसी का प्रभाव होता है, जो आप हर दिन आ-आ कर के अपने अन्दर एक कुछ भाव संजोते रहते हैं।

वर्षायोग! धर्म-संग्रह का काल

आचार्य कहते हैं...धन का और धर्म का, प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा सा भी अगर संग्रह किया जाए तो एक दिन वह सुमेरु पर्वत की तरह बहुत बड़ा हो जाता है। किसका करना है? धन का और धर्म का, दोनों का संग्रह करना है। धन का संग्रह तो आप करते ही रहते हो, वह तो आपकी दुकान चल ही रही है। धर्म का संग्रह करने के लिए आपको मन बनाना पड़ता है। आपको धर्म का संग्रह करने के लिए चारों तरफ देखना पड़ता है, वह कितना कर रहा है? हम कितना करें? वह कर रहा है कि नहीं कर रहा है, वह जा रहा है कि नहीं जा रहा है, तो हम जाएँ, यह आपको सोचना पड़ता है। धन का संग्रह करने के लिए कभी कोई धनिक यह नहीं देखता कि बगल वाले ने दुकान खोली है तो हम दुकान खोले। पहले वह दुकान खोल ले, उसके बाद में हम दुकान खोले, ऐसा नहीं सोचता। उसमें तो वह सबसे पहले दुकान खोलने को तैयार हो जाता है कि वह न आ पाए, मैं अपनी पहले दुकान खोल लूँ ताकि ग्राहक मेरे पास में पहले आ जाए। हो सकता है, भगवान से प्रार्थना करे...भगवान! यह दो घण्टे बाद ही आए, मेरी दुकान 10 बजे खुल जाए तो इसकी 12 ही बजे खुले। यह धनिक के मन के अन्दर भाव रहता है, जब उसे धन कमाने की इच्छा होती है लेकिन जब धर्म कमाने की इच्छा होती है तो तू चल...मैं आया। ऐसा? जब धर्म कमाने की इच्छा होती है तब उसके अन्दर यह भाव आने लग जाता है। हाँ-हाँ! चलो-चलो! तुम चलो, मैं आता हूँ। प्रवचन शुरू हो रहे हैं, हाँ-हाँ, अभी शुरू होने दो, मैं आता हूँ। प्रवचन शुरू होने के उपरान्त, जब शुरू हो जाते हैं, तब तक भी भगवान की पूजा आदि में लोग लगे रहते हैं, सोचते रहते हैं...हाँ! अभी तो पौने नौ बज रहे हैं, 8:30 बज रहे हैं, अभी महाराज आए होंगे मंच पर, अभी धीरे-धीरे शुरूआत होने दो। जब माहौल बनेगा तब तक हम पहुँच जाएँगे और कुछ लोग तो अन्त-अन्त तक आ ही जाते हैं। कुछ न मिले तो श्री जिनवाणी जग कल्याणी यही करने को मिल जाए और यह भी अगर उसने कर ली, इतने में भी वह आ गए तो वह सन्तुष्ट हो जाते हैं। अगर उनसे कभी पूछा जाए...क्यों? प्रवचन में आते हो? आते हैं। रोजाना आते हो? आते हैं। क्या सीखा? क्या

जाना? महाराज! वो जब आते हैं, उस समय आपकी **श्री जिनवाणी** शुरू हो जाती है। मैं क्या करूँ? इस तरीके के भी लोग होते हैं। लेकिन यह तरीका हमारे लिए यह बताता है कि हम धन कमाने की इच्छा में जितना ज्यादा अपना मन लगाते हैं, धर्म कमाने की इच्छा में उतना मन नहीं लगाते हैं। धर्म कमाने के लिए भी व्यक्ति को पहले यह सोचना चाहिए कि जैसे हम धन कमाने के लिए अपनी दुकान पहले खोलने को तैयार होते हैं, हम आगे-आगे होने को तैयार होते हैं, ऐसे ही धर्म कमाने के लिए भी हमें आगे होना चाहिए। जब व्यक्ति के अन्दर इस तरह की भावना आने लग जाती है, तो वह यह नहीं सोचता है कि मैं जब तक प्रवचन समाप्त हो जाएगा तब तक मैं जाकर के बैठ ही जाऊँगा। नहीं! वह सबसे पहले आगे की line में बैठने की कोशिश करता है। School में भले ही वह back bencher रहा हो लेकिन **प्रवचन में धर्म की सभा में वह आगे आकर के अगर बैठने की इच्छा करता है, तो इसका मतलब है कि वह धर्म को पहले-पहले प्राप्त करने की इच्छा करता है।** ऐसी धर्म को प्राप्त करने की इच्छा सभी लोगों के मन के अन्दर होनी चाहिए।

भाव-विशुद्धि का सुअवसर

आने वाले समय में यह जब आपके सामने मौका आ रहा है, तो कहते हैं, समझदार लोगों को कभी मौका चूकना नहीं चाहिए और ऐसा मौका जब आपके सामने आया है, तो आप अपने मन में यह भावना रखें कि देखो गुरुदेव हमेशा स्वयं भी अपना कल्याण करते हैं और दूसरों के कल्याण की भी भावना बनाए रखते हैं और **उसी कल्याण की भावना से गुरुदेव ने यह चातुर्मास सतना के लिए दिया है।** इसमें उन्हें श्रावक की भी भावनाओं का ध्यान है और मुनि महाराज की भी भावनाओं का ध्यान है। जहाँ श्रावकों के लिए अच्छा ज्ञान मिले, ध्यान मिले, अच्छी उनके अन्दर मनोवृत्तियाँ बने, शायद इसी भावना से आचार्य महाराज ने इस तरह का हमें आदेश दिया है और इस आदेश की पूर्ति में अगर अब सहयोगी होंगे तो कौन होंगे? श्रावक होंगे। अभी आप लोग विधान कर रहे हो, अभी तो यहाँ पर पुण्यार्जक परिवार दिखाई दे रहे हैं, कुछ उनके भी परिवार दिखाई दे रहे हैं। जब यह विधान पूरा हो जाएगा, तब क्या करोगे? उसके बाद भी कुछ होगा? क्यों पुण्यार्जक सेठ जी! ऐसे ही आगे की पंक्ति में बैठे दिखाई दोगे पाँच महीने तक? दिखोगे? ऐसा भाव होना चाहिए। यह भाव अगर बनेगा, तब जाकर के आपके अन्दर यह भावना आएगी कि जैसे हमें धर्म में आगे आना है, वैसे-वैसे हमें इस धर्म-भाव में भी अपने अन्दर आगे आते हुए अपने मन के अन्दर की विशुद्धि को बढ़ाते जाना है। यही हमारे अन्दर के मोक्ष-मार्ग को बढ़ाने की एक प्रक्रिया होती है।

हमारे जीवन में गुरु का महत्व

इसलिए भगवन्तों की स्तुति करते हुए, आचार्यों की स्तुति करते हुए हमेशा यह भाव रखो- **जो स्वयं मोक्ष पथ पर बढ़े जा रहे और भव्यों को भी साथ ले जा रहे।** जो स्वयं चलते हैं, उनके चलते हुए कदमों को देख करके भी बहुत से लोग चलना सीख लेते हैं और वह अपने आप चलने लग जाते हैं। अपने आप उनके साथ होने लग जाते हैं और इसी तरह की भावना जब साथ में चलने वालों की हो जाती है, तो मोक्ष-मार्ग बड़ा सरल हो जाता है। चलाना नहीं पड़ता किसी को। गुरुदेव किसी को चलाते हैं? किसी को नहीं चलाते हैं। वे सिर्फ जो है, स्वयं चलते हैं और उनके चलने को देख कर के लोग चलना सीख लेते हैं। आज अगर हम

लोगों ने भी चलना सीखा है, तो किसको देख कर के? गुरुदेव को देख कर के। जब गर्मी के दिनों में आदेश दिया...शहपुरा से सतना जाना है। विचार तो आया एकदम से, इतनी दूर है लेकिन वे स्वयं जब चलते हैं, तब पता पड़ता है कि आज भी वह वृद्धावस्था में, इतनी उम्र होने पर भी कितना वह विहार करते हैं? वह वहीं डोंगरगढ़ से अमरकंटक गए और अमरकंटक से फिर डोंगरगढ़ गए। अगर शिष्य के मन में कहीं भाव भी आ गया कि नहीं! हमें इतना नहीं जाना। 300 किलोमीटर कहाँ जाएँगे? कहीं आसपास का कोई स्थान दे दो, तो शिष्य बोलने की हिम्मत नहीं कर पाएगा। क्यों नहीं? क्योंकि गुरु चल रहे हैं। जब गुरु चल रहे हैं तो शिष्य कैसे थक सकता है? गुरु जब चलते हैं तो उनके चलने को देख कर के ही शिष्य चलना सीख लेता है और अगर उसके मन में कभी कोई कमजोरी आती है, तो वह याद कर लेता है कि पूर्व के दिनों में भी गुरु के साथ कितना लम्बा-लम्बा विहार करते थे। आज अपने मन की होने लगी है, तो अपने मन की तरह से चलने लगे हैं। ऐसा मन में विचार आते ही सारे प्रश्न शान्त हो जाते हैं और गुरु की आज्ञा है, तो जैसे गुरु ने आज्ञा दी है, वैसा ही करना है। चाहे पानी बरसे या न बरसे, चाहे गर्मी अपने चरम पर हो, चाहे वह दूसरे महीने में गर्मी आ रही हो, पहले महीने में गुरु की आज्ञा का पालन करने से ही शिष्य को चलना आने लग जाता है। इसलिए गुरु हमेशा चलते हुए, शिष्य को अपने आप सब कुछ सिखा देते हैं। जो स्वयं मोक्ष पथ पर बड़े जा रहे और भव्यों को भी साथ ले जा रहे। वे किनको साथ ले जाएँगे? केवल भव्य जीव ही उनके साथ में जा पाएँगे, अभव्य जीव तो कहीं न कहीं छूट जाएँगे। लेकिन जो भव्य होंगे, गुरु की आज्ञा के अनुसार अपने मन को चलाने का भाव रखेंगे और वह यह सोचेंगे कि इस पंचम काल में हमें भले ही अरि-हन्त भगवान नहीं दिखते, भले ही हमें इस पंचम काल में ऋद्धिधारी मुनि महाराज नहीं मिलते लेकिन इस पंचम काल में अगर हमें चलाने वाले निर्ग्रन्थ दिगम्बर आचार्य मिलते हैं तो यह भी हमारे लिए बहुत बड़ा सौभाग्य की बात है और इसी सौभाग्य को वह अपना भाग्य मानता हुआ चलने लग जाता है' **जो स्वयं मोक्ष पथ पर चले जा रहे और भव्यों को भी साथ ले जा रहे !'**

मोक्ष का पथ - गुरु का साथ

यह मोक्ष का मार्ग, यह मोक्ष का पथ भी एक पथ है, रास्ता है। इस रास्ते का चलने का भी एक आनन्द है और वह आनन्द उन्हीं को आता है जो उनके साथ में चलने की कोशिश करें। साथ-साथ चलते हुए भी अगर कहीं पीछे भी रह जायें तो कोई बात नहीं लेकिन उनके ध्यान में रहे कि चल तो उसी रास्ते पर रहा है। एक ही रास्ते पर चलना, एक ही तरह से चलना और इस रास्ते पर चलते हुए अगर कहीं कोई दुःख भी आ जाए, कष्ट भी आ जाए तो वह भी दूर हो जाता है। क्यों हो जाता है? क्योंकि गुरु का साथ, हमारे साथ है और गुरु का आशीर्वाद हमारे साथ है, तो वह बड़े-बड़े कष्टों को भी उस सफर में उठा लेता है और किसी भी तरह से उसे उस सफर में कोई suffer नहीं होता है। क्या सुना? सफर में कोई suffer नहीं होता है। कौन सा suffer? एक suffer मतलब कष्ट होना... **Suffer!** उस सफर में उसे कोई suffer नहीं होता है, कोई कष्ट नहीं होता है। क्योंकि-

है निराली डगर, मोक्ष का ये सफर।

मोक्ष के सफर में गुरु का साथ

यह भी एक मोक्ष का सफर है लेकिन यह डगर अपने आप में निराली है, दुनिया से अलग हट के चलती है। इसकी पगडंडियाँ अलग बनी होती हैं और ये पगडंडियाँ दूसरों को दिखाई नहीं देती हैं। बस चलती चली जाती हैं और भीतर गहरे-गहरे संस्कार डालती चली जाती हैं और इन पगडंडियों पर चलते-चलते जीव एक दिन उस सिद्धशिला के ऊपर तक पहुँच जाता है। **यह सब गुरु के उपकार की महिमा होती है।** अगर आपके पास जुबां है तो एक हमजुबां भी चाहिए मतलब जो हमारे भावों को भी समझ सके, हम जो बात कहते हैं, उस बात को भी समझ सके। हम जिस तरह से सफर में हैं, हमारे साथ भी वे वैसे ही चल सके और जैसा कष्ट हमें होता है, वैसा ही कष्ट उनको भी होता है तो उसको भी देख कर के हम समझ सकें कि इस सफर में कष्ट होना भी एक आम बात है और यह चलता है। लेकिन सफर में एक साथी होना चाहिए, वह साथी कैसा होना चाहिए? वह गुरुदेव जैसा ही होना चाहिए।

आदमी को एक हमसफर की जरूरत पड़ती है

कोई भी सफर हो सब कट जाता है, अकेला होने पर सफर बोझिल हो जाता है। लेकिन जब सफर में हमसफर कोई होता है, तो क्या होता है? सफर आसानी से निकल जाता है। आप लोगों ने तो सब अपने हमसफर बना ही रखे हैं। नहीं समझ आया? अपनी जिन्दगी में, 20 साल से 30 साल के बीच में सब अपना एक साथी ढूँढ लेते हैं। सब हमसफर ढूँढ लेते हैं। इनके साथ में अब अपनी आगे की जिन्दगी बहुत अच्छे से निकलेगी। जितनी भी अपनी 40-50 साल की जिन्दगी है, अब इनके साथ में आराम से निकल जाएगी क्योंकि इस सफर में भी एक हमसफर चाहिए। सबने बना रखे हैं। सब खुश हो न? बोलो तो! अच्छे से कट रही है? बहन है, चाचा है, ताऊ है, ताई है, फूफा है, बुआ है, सब हैं आपके पास में, नाना हैं, नानी हैं, मामा हैं, मामी हैं, सब हैं। इतने परिवार में रहने के बाद भी आदमी को एक हमसफर की जरूरत पड़ती है।

सच्चा हमसफर कौन? आचार्य परमेष्ठी और गुरुदेव

एक सोचने की बात है और जो आदमी इन सब चीजों को छोड़ कर निकल जाता है, जो आदमी इन सब का त्याग करके इन सबको भी छोड़कर के निकल जाता है, उसे किसी हमसफर की अगर जरूरत पड़ती है तो वह कौन सा हमसफर उसे चाहिए? वह आचार्य परमेष्ठी होते हैं, वह गुरुदेव होते हैं, जिनके कारण से वह इन सबको छोड़कर के एक के पीछे पड़ जाता है। **सोचो! कितनी ताकत होती है? कितनी हिम्मत की बात होती है?** आप सबके बीच में रहकर के भी एक हमसफर ढूँढते हो और वे सबको छोड़ कर के एक को ढूँढते हैं और उस हमसफर को अगर वे पा लेते हैं तो उन्हें लगने लग जाता है...हाँ! इनके साथ में चलने पर अब हमें कभी कहीं कोई गम, कोई दुःख नहीं होगा क्योंकि बस इनको देखते रहो, इनको याद करते रहो। जब भी कभी कोई दुःख की बात आए, इनको याद कर लो। अपने आप आपके लिए लगने लगेगा कि हाँ, इससे ज्यादा कष्ट तो गुरुदेव बहुत सहन कर चुके हैं। किसी भी तरह का गम होगा, आपको अगर अपने गुरु का स्मरण हो जाएगा, उनकी याद आ जाएगी, आपके गम अपने आप हल्के पड़ जाएंगे। आप भी यही सीख लो।

दाम्पत्य जीवन निभाने वाले लोगों के लिए सबसे बड़ा आशीर्वाद

आपने अगर कोई अपना हमसफर बना भी लिया है, तो उसको भी यही सिखा दो और दोनों मिलकर के एक इस राह पर चलते हुए गुरु की आदर्श बनाते हुए चलने की कोशिश करो। अब यूँ तो नहीं कहूँगा कि आपने गलती कर ली हमसफर बना कर क्योंकि वह आपने समझदारी से ही काम किया है, पूरे होशोहवास में किया है। सबके साथ मिलकर के किया है, सबको invitation देकर के किया है, सबको जानकारी देकर के की है तो यूँ तो नहीं कह सकता कि आपने गलती से कर ली। यहाँ पर आकर के कह जरूर देते हो कभी-कभी...महाराज! गलती हो गई। लेकिन आपकी गलती को भी मैं समझता हूँ कि आप क्यों कह रहे हो। महाराज गलती हो गई ताकि महाराज हमसे कहीं नाराज न हो जाएँ कि मेरे से ऐसी उम्मीद नहीं थी महाराज को लेकिन फिर भी हमने ऐसा कर लिया तो कभी लोग आकर के कह देते हैं- महाराज! गलती हो गई। गलती नहीं हो गई..तुमने जो कुछ भी किया है, ठीक है। अब तुम एक से दो हो गए हो, अब दोनों को उसी सफर पर चलना है, जिस सफर पर गुरु चल रहे हैं। अगर ऐसा आपका उद्देश्य बन जाता है, तो यही सबसे बड़ा आशीर्वाद उन दाम्पत्य जीवन निभाने वाले लोगों के लिए होता है। लोग शादी, विवाह कर करके आते हैं...महाराज! आशीर्वाद दे दो, इनका जीवन अच्छे से चले। अब अलग-अलग सबको क्या आशीर्वाद दूँ? एक साथ सबके लिए कह रहा हूँ, जिन्होंने भी अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए, सुख से जीने के लिए अपना साथी ढूँढ लिया है, वह उन दोनों साथियों के लिए मैं कह रहा हूँ कि वे दोनों मिलकर के हमेशा अपने जीवन में एक गुरु की कल्पना जरूर करें।

गुरु वही जिसके माध्यम से हमारे परिणामों में शान्ति आए

एक गुरु को अपने सामने आदर्श बना कर के जरूर रखें और गुरु वही होना चाहिए जिसके माध्यम से हमारे परिणामों में शान्ति आए। हमें एक नया रास्ता मिले और जब भी कभी हम भटके, हमें वह ऐसा ज्ञान दे, ऐसा ध्यान दे, ऐसा विवेक दे, जिसके माध्यम से हम पुनः अपने रास्ते पर आ जाएँ। ऐसा गुरु भी अगर एक बार अपने आप में, अपने अन्तरंग में संकल्प के साथ पकड़ करके रख लीगे तो आपका जीवन बहुत अच्छे ढंग से निकल जाएगा। यह गुरु की महिमा जान लो। इसलिए कहना पड़ता है अगर हम अपने जीवन में एक साथी बना करके रखते हैं तो आध्यात्मिक जीवन का भी एक साथी होना चाहिए। एक लौकिक जीवन का साथी होता है, तो एक अलौकिक जीवन का भी साथी होना चाहिए जो हमारी अध्यात्म यात्रा को आगे बढ़ाता चला जाए और ऐसा गुरु जब हमारे सामने मिला होता है, तो फिर अपने आप मन प्रसन्न होने लग जाता है। गुरु की स्तुति के अलावा और कुछ दिखाई नहीं देता है। अरे! गुरु पूर्णिमा केवल एक दिन गुरु का गुणगान करने के लिए नहीं होती है, जिसको ऐसा हमसफर मिल जाता है, वह हर दिन गुरु पूर्णिमा मनाया करता है और हर दिन उसके लिए गुरु सामने होते हैं। जब-जब गुरु का गुणगान हो जाए, जब-जब गुरु का स्मरण हो जाए, गुरु पूर्णिमा उसके सामने होती है। आज मैं बिना किसी भूमिका के आपके सामने, गुरु के लिए जो लिखी हुई चार पंक्तियाँ हैं, वह पढ़ रहा हूँ...

**है निराली डगर मोक्ष का ये सफर,
क्या हमें गम जो गुरु सा मिला हमसफर।**

जिनकी वाणी में तत्त्वों का होता जिकर,
जिनका मन इतना पावन हो करुणा का घर।
इसलिए भक्त उनके बड़े जा रहे,
इसलिए भक्त उनके बड़े जा रहे।
जो स्वयं मोक्ष पथ पर चले जा रहे,
जो स्वयं मोक्ष पथ पर चले जा रहे।
और भव्यों को भी साथ ले जा रहे,
और भव्यों को भी साथ ले जा रहे।

जो गुरुदेव हैं, उन गुरुदेव के भक्तों की कहीं कोई कमी नहीं है और वह भक्त गुरुदेव के साथ चलने के लिए तैयार होते हैं और गुरुदेव एक सूर्य की तरह हैं लेकिन वह अपनी किरणों को भी जहाँ-जहाँ भेज देते हैं, वे सब किरणें भी उन्हीं गुरु में, उन्हीं सूर्य में समाहित होने की भावना करती हैं। क्यों करती है? क्योंकि उनके पास में एक शक्ति है। जानना चाहोगे क्या? आज सबसे बड़ी चीज जो उनके पास में है...

जो सदाचार संयम का मेरु शिखर,
जो सदाचार संयम का मेरु शिखर।
जिनके चरणों में देवों की रहती बसर,
जिनके चरणों में देवों की रहती बसर।
वो गुरु मेरा विद्या का सागर महां,
वो गुरु मेरा विद्या का सागर महां।
जिनके चरणों में झुकता है सारा जहाँ,
जिनके चरणों में झुकता है सारा जहाँ।
उनके चरणों में हम भी चढ़े जा रहे,
उनके चरणों में हम भी चढ़े जा रहे।

चरणों में चढ़ने का मतलब? कोई चढ़ाई करना है? मतलब उनके चरणों में हम भी चढ़ गए हैं। जैसे आपने पूजा की द्रव्य चढ़ा दी, ऐसे हमने अपने आप को गुरु के चरणों में चढ़ा दिया। यह आपके पैरों की वस्तु है। अब चाहे इसे ठुकराओ, चाहे प्यार करो, यह आपकी वस्तु हो गई। इस वस्तु को गुरु के लिए समर्पित कर देने का नाम है...गुरु के चरणों में चढ़ गए, अर्पित हो गए। उन गुरु के लिए...

उनके चरणों में हम भी चढ़े जा रहे,
जो स्वयं मोक्ष पथ पर बड़े जा रहे।
और भव्यों को भी साथ ले जा रहे,

आया स्वर्णिम ये अवसर ये स्वर्णिम दिवस,
आया स्वर्णिम ये अवसर ये स्वर्णिम दिवस।

एक राही चला ले के संकल्प बस,

एक राही चला ले के संकल्प बस।

आत्मा के अलावा परिग्रह है सब,

आत्मा के अलावा परिग्रह है सब।

छोड़ दो साथ इनका अकेला हो अब,

छोड़ दो साथ इनका अकेला हो अब।

जो ऐसी भावना करके चलते हैं कि आत्मा के अलावा सब कुछ परिग्रह है, अपना तन भी परिग्रह है, अपने शिष्य भी परिग्रह हैं। अपने कोई भी तरह की आसपास चीजें हैं, वे सब क्या हैं? परिग्रह है। उस परिग्रह को परिग्रह की तरह ही छोड़ कर के जो हमेशा चला करते हैं लेकिन फिर भी उनके पीछे लाखों चले-चले जाते हैं।

उनके पीछे भी लाखों चले जा रहे,

उनके पीछे भी लाखों चले जा रहे।

जो स्वयं मोक्ष पथ पर बड़े जा रहे,

जो स्वयं मोक्ष पथ पर बड़े जा रहे।

और भव्यों को भी साथ ले जा रहे,

और भव्यों को भी साथ ले जा रहे।

ओं अर्ह नमः, ओं अर्ह नमः।

6. सिद्धों में उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य



SCAN TO WATCH

इस सिद्धचक्र मण्डल विधान के अन्तर्गत सिद्ध भगवान की भक्ति करते हुए आप सिद्धों से जुड़ रहे थे और उन्हीं की भक्ति में आचार्य पूज्यपाद देव रचित कुछ काव्यों को पढ़ते हुए आपको कुछ भक्तियों के मूल अर्थ के साथ में एक विस्तृत स्वाध्याय कराया जा रहा है। शायद अभी कुछ लोगों को ज्ञात नहीं हो रहा है कि **यहाँ पर एक स्वाध्याय भी चल रहा है, यहाँ पर प्रवचन भी चल रहा है, यहाँ पर विधान भी चल रहा है और यहाँ पर class भी चल रही है।** सब लोग अलग-अलग तरह से, अलग-अलग view अपना रखते हैं और जिस angle से हर चीज को पहले देखते आए हैं, उसी angle से हर चीज को देखते हैं।

स्वाध्याय...प्रवचन...class

लोग समझते हैं- **स्वाध्याय** का मतलब होता है...जहाँ पर 10-15 कुछ बुजुर्ग लोग बैठे हो। **class** का मतलब होता है...दो-चार लोग बैठे हुए किसी ग्रंथ को बाँच रहे हो और **प्रवचन** का मतलब होता है...जहाँ बहुत सारे लोग बैठे हो, वह प्रवचन होता है। ऐसा कुछ सबकी अपनी-अपनी अवधारणा में चलता है लेकिन आप लोग अपनी मानसिकताएँ बदले और अपने view को change करें। जैसा आपको यहाँ view दिखाई दे रहा है, उसी के according आप सोचने की कोशिश करें और यह देखें कि यहाँ पर class भी है, स्वाध्याय भी है और यहाँ पर प्रवचन भी है क्योंकि ये तीनों चीजें अलग-अलग नहीं होती हैं। जहाँ हम किसी चीज को ग्रंथ के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं, वह हमारे लिए स्वाध्याय कहलाता है। आचार्य पूज्यपाद देव सिद्ध-भक्ति का हम स्वाध्याय कर रहे हैं। उन आचार्य पूज्यपाद महाराज के द्वारा यह रचित **सिद्ध-भक्ति** को पढ़ना, यह अर्थ के साथ पढ़ना, अपने आप में स्वाध्याय कहलाता है। उसी के साथ में class का रूप वह हो जाता है कि जहाँ पर किन्हीं विशेष लोगों को, अलग से categorize करके बुलाया जाता है तो वह class हो जाती है। लेकिन जब यहाँ पर सभी तरह के लोग बैठे हैं, सभी उम्र के लोग बैठे हैं, सभी तजुबों के लोग बैठे हैं तो यह भी एक class का रूप होता है, जो general-class कहलाती है, सबके लिए कहलाती है। जब उसी चीज को हम विस्तार के साथ में कहने लग जाते हैं, किन्हीं दृष्टान्तों के माध्यम से, उदाहरणों के माध्यम से, समझाते हुए, जब हम उसी चीज को पढ़ने लग जाते हैं, सीखने लग जाते हैं तो वही धर्म-उपदेश कहलाता है, वही प्रवचन कहलाता है। समझ आ रहा है आप लोगों को? अब क्या समझेंगे कि सब कुछ है, सब यहीं चल रहा है, three-in-one चल रहा है। class भी है, प्रवचन भी है, स्वाध्याय भी है, धर्मोपदेश भी है...three-in-one है और all-in-one है। इसी को आप समझ सकते हो और इस तरह से हम यह दूसरे काव्य को पढ़ रहे थे। शायद दो-तीन लाइनों का अर्थ हुआ था, चौथी लाइन का अर्थ अभी-भी बाकी था। हम दूसरे काव्य को फिर से पढ़ते हैं। एक-बार, दो-बार, चार-बार, जब हम किसी चीज को पढ़ते हैं तभी शायद हमारे दिमाग में कुछ थोड़ा-सा बैठ पाता है।

नाभावः सिद्धिरिष्टा न निजगुणहतिस्तत् तपोभिर्न युक्तेः।

अस्त्यात्मानादिबद्धः स्वकृतजलफलभुक्-तत् क्षयान् मोक्षभागी।

ज्ञाता दृष्टा स्वदेह-प्रमिति-रूपसमाहार-विस्तार-धर्मा, ध्रौव्योत्पत्तिव्ययात्मा स्वगुणयुत इतो, नान्यथा साध्यसिद्धिः ॥२॥

यह दूसरे काव्य की तीन लाइनों का वर्णन काफी हो चुका था।

ज्ञाता-दृष्टा-स्वदेह-प्रमिति और उपसमाहार-विस्तार-धर्मा।

आत्मा का स्व-संवेदन

यह आत्मा का वह धर्म कहलाता है, जिसके कारण से वह आत्मा संकोच-विस्तार स्वभाव के साथ में, जैसा-भी उसके लिए शरीर मिलता है उसी शरीर में वह फैल जाता है। अगर वह छोटा-सा जीव बनता है, तो आत्मा उतना ही होते हुए भी छोटा भी हो जाता है और बड़ा शरीर मिलता है तो वही आत्मा बड़े शरीर में भी फैल जाता है। **यह किसका धर्म है? यह शरीर का धर्म नहीं है। यह किसका धर्म है? यह आत्मा का धर्म है।** अब आप विचार करो कि अगर आत्मा का ऐसा धर्म नहीं होता तो क्या होता? मान लो आत्मा का एक ही धर्म होता कि वह एक size में बिल्कुल constant हो जाती और फिर उसको मान लो हाथी बनना पड़ जाता, dinosaur बनना पड़ जाता तो क्या होता? क्या वह पूरे शरीर को संभाल सकता? क्या पूरे शरीर में उसकी संवेदना हो सकती? क्या पूरे शरीर का संचालन वह आत्मा कर सकता? नहीं कर सकता। जैसे मान लो आपके शरीर के ऊपर कपड़े पड़े हैं। उन कपड़ों का संवेदन जिस तरह से आत्मा को होता है, क्या शरीर का संवेदन उसी तरह से होता है? नहीं होता न! अगर कपड़े पर मच्छर काट जाए तो कोई फर्क नहीं पड़ता। कपड़े में काँटा लगा हो तो कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन वही काँटा जब शरीर में लग जाता है, वही मच्छर जब शरीर पर काटता है, तो बहुत फर्क पड़ता है। हमारी आत्मा के प्रदेश जिससे जुड़े हुए हैं, वहीं पर हमारा संवेदन है, वहीं पर हमारा ज्ञान काम करता है और उसी को हम अपनी आत्मीयता के साथ में ग्रहण करते हैं। शरीर से हमारी आत्मा का संवेदन है, कपड़े से नहीं है। कपड़े से तो हमारा एक अहं का भाव जुड़ जाता है लेकिन आत्मा का जो वास्तव में स्व-संवेदन भाव आता है, वह शरीर के साथ आता है। अब वही शरीर मान लो बहुत बड़ा हो जाए और आत्मा के प्रदेश उसमें न फैले हो, आत्मा उसमें न फैली हो तो ऐसी हालत होती जैसे-शरीर के ऊपर कपड़ा पड़ा है लेकिन वहाँ तक हमारी कोई पहुँच नहीं है। उस अंग को कोई काट दे, वह अंग कहीं बिखर जाए, कुछ हो जाए तो उससे फिर शरीर पर प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। उसके जीवन पर प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए, लेकिन ऐसा होता नहीं है।

आत्मा शरीर-प्रमाण है

आत्मा अगर शरीर से बड़ी हो जाती है तो भी नहीं चलता, आत्मा अगर शरीर से छोटी रह जाती है तो भी नहीं चलता। या यूँ कहें कि शरीर अगर आत्मा से बड़ा हो जाता है तो भी नहीं चलेगा और शरीर अगर आत्मा से छोटा हो जाए तो भी नहीं चलेगा। आत्मा का कोई एक size हमने मान लो एक constant बना लिया और उससे अगर कहीं वह छोटा हो गया तो क्या करेगा? आत्मा बाहर फैल रही है, शरीर उतना-सा! उसके अन्दर एक छोटे से शरीर में उसका बस संवेदन है और बाकी की आत्मा बाहर फैली हुई है। अब आत्मा शरीर के बिना बाहर फैली हुई क्या करती? क्या करेगी? कुछ नहीं कर पाएगी। यह व्यवस्था बनती ही नहीं

है। इसलिए यह बात हमेशा याद रखना है कि आत्मा शरीर-प्रमाण है। जितना आत्मा के लिए शरीर बनता है, आत्मा उतना ही होता है और आत्मा अगर छोटा शरीर अपने लिए बना लेता है, तो वह आत्मा उतने ही शरीर में संकुचित होकर रह जाता है। यह उन प्रदेशों की फैलने की और सिकुड़ने की जो एक क्षमता है, जैसे कोई elastic होती है, उसी तरह से यह आत्मा के प्रदेशों का यह एक स्वभाव है, यह उसका एक धर्म है। इस धर्म के कारण से हम उस आत्मा को किसी-भी जीव के अन्दर देखते हैं तो पूर्ण देखते हैं। किसी भी शरीर में, हम उस आत्मा को सोचते हैं तो वह पूर्ण देखते हैं। ऐसा नहीं है कि शरीर कहीं अलग लटक रहा है, आत्मा कहीं अलग बाहर जा रही है। कहीं शरीर छोटा है कि कहीं आत्मा छोटी है, ऐसा नहीं होता। यह इस धर्म के माध्यम से जाना जाता है।

आत्मा का स्वरूप:...अद्वैत-ब्रह्मवाद

ऐसा भी नहीं है कि एक ही आत्मा है, उसके कई portion कर दिए गए हो। नहीं समझे? एक-ब्रह्म की कल्पना की जाती है। दुनिया में एक ब्रह्म है, एक भगवान है, एक ब्रह्मात्मा है और सब हम लोग क्या हैं? उसके part हैं, एक portion कर दिए जाते हैं। एक अद्वैत-ब्रह्मवाद, जो दुनिया में philosophy चलती है, उसके according लोग ऐसा सिखाते हैं। क्या सिखाते हैं? कि उसके portion हैं, यह सब उसी के जो हैं part हैं और यह सब part एक-न-एक दिन उसी पूर्ण-ब्रह्म में मिल जाते हैं। अलग-अलग नहीं हैं, हमारा अपना अलग-अलग कोई entity नहीं है, कोई अस्तित्व नहीं है। इस तरह की जो philosophy सिखाई जाती है वह philosophy जैन दर्शन के बिल्कुल अलग पड़ती है।

आत्मा का स्वरूप: जैन दर्शन

जैन-दर्शन क्या कहता है? तीर्थकरों की भाषा क्या कहती है? हर जीव स्वतंत्र है। अपने स्व-अस्तित्व को अलग-अलग रखे हुए है, उसका अस्तित्व किसी दूसरे के अस्तित्व पर निर्भर नहीं है, किसी दूसरे का वह part नहीं है। वह अपना स्वयं में उसका जीवन है, स्वयं उसके गुण हैं, स्वयं उसका अपना धर्म है और स्वयं उसका संचालन वह जीव खुद अपने कर्मों से कर रहा है। यह बात जब आपके दिमाग में रहेगी तब आप दुनिया में फैला हुआ जो एक ब्रह्मवाद है, एक अद्वैत-दर्शन है, बहुत बड़ा दर्शन दुनिया में हर किसी को सिखाया जाता है। उससे आप जैन-दर्शन को distinguish कर पाएँगे, अलग कर पाएँगे। यह बात जब आपके अन्दर आएगी तभी आप समझ पाएँगे कि जैन-दर्शन की मौलिक विशेषताएँ क्या हैं? यह मौलिक विशेषता है। आत्मा का अपना धर्म कभी भी छूटता नहीं है। वह अपने स्वभाव को, अगर कर्म के कारण से बना रहा है, तो कर्म के अलग हो जाने पर भी उसका कोई-न-कोई स्वभाव बना रहता है। यह उपसंहार, संहार और यह विस्तार, यह आत्मा के ही शरीर के रूप में विस्तृत होने वाले धर्मों के कारण से, वह आत्मा कभी छोटा, कभी बड़ा बन जाता है।

Nonveg क्यों नहीं खाना चाहिए?

अब हम आपसे एक बात करते हुए आगे बढ़ते हैं। आजकल एक बहुत बड़ी चीज चलती है। लोगों के लिए जब veg-non veg की बात कही जाती है, तो जो non-veg खाने वाले होते हैं, वे हमेशा एक तर्क

दिया करते हैं कि आप लोग किसी भी animal को मारने में, काटने में तो कहते हो कि यह नहीं करना चाहिए, इसको नहीं खाना चाहिए। लेकिन आप भी तो plants का सेवन करते हो मतलब पेड़-पौधों-फलों आदि का सेवन करते हो, इसमें भी जीव होते हैं और हम जिसको खा रहे हैं, उसमें भी जीव होते हैं। ऐसे लोगों के लिए कभी भी यह नहीं सिखाना चाहिए कि हम non-veg इसलिए नहीं लेते क्योंकि उसमें हिंसा होती है। यूँ नहीं बोलना चाहिए। मैं अब आपसे नई बात कह रहा हूँ। अगर आप हिंसा की बात करोगे तो वे कहेंगे कि भाई, जीव तो सभी हैं, जीव तो सभी मर रहे हैं, जीव में हिंसा होती है। आपके लिए पेड़-पौधे-वनस्पति में भी जीव होते हैं...आपने ही कहा है और आप उनको भी मार देते हैं, उनको भी खाते हैं तो हिंसा तो उसमें भी होती है। आपको यह नहीं कहना चाहिए कि इसमें हिंसा या अहिंसा का धर्म है। अगर आप यह कहते हो कि हम non-veg नहीं लेते तो हम क्या नहीं लेते? हम गंदी-चीजें नहीं लेते। गंदी-चीजों में क्या आता है? किसी का खून पीना, किसी का माँस खाना, गंदे सड़े-गले शरीर का हम भोजन नहीं करते। उन लोगों के लिए, जो बहुत ज्यादा non-veg का आग्रह करने वाले होते हैं, उन्हें आप हिंसा-अहिंसा मत समझाइए। **उन्हें आप एकेन्द्रिय-चार इन्द्रिय जीव मत समझाइए।** उन्हें यह समझाइए कि हम जो भोजन लेते हैं, उस भोजन में माँस नहीं होता, माँस एक गंदी-चीज है। हम जो भोजन लेते हैं उसमें किसी का खून नहीं बहता, खून एक गंदी चीज है। शरीर के अन्दर जो अवयव बनते हैं, जो शरीर के अन्दर extract निकलता है, वे सारी गंदी-चीजें शरीर के अन्दर होती हैं, हम उनका ग्रहण नहीं करते, हम वे गंदी-चीजें नहीं खाते। वह कहेगा कि आप वनस्पति लेते हैं। वनस्पति में कभी खून नहीं होता, वनस्पति में कभी हड्डियाँ नहीं होती, वनस्पति में कभी कोई चर्म नहीं होती, वनस्पति में कभी किसी का माँस नहीं होता। कोई भी जो गंदी-चीजें हैं- माँस, खाल, हड्डियाँ और भी खून आदि, वसा आदि, ये जितनी भी गंदी-चीजें हैं, ये सब कोई भी चीजें वनस्पतियों में नहीं हुआ करती। जैसे हमारे लिए साँस लेना जरूरी है, जैसे हमारे लिए जल पीना जरूरी है, जैसे हमारे लिए धरती पर रहना जरूरी है, वैसे ही हमारे लिए वनस्पति का सेवन करना भी जरूरी है। उसके बिना मनुष्य का जीवन चल नहीं सकता। यह उसी तरह की जरूरत है, जैसे जल पीने की जरूरत है, श्वास लेने की जरूरत है, तो जल में भी जीव होता है, श्वास लेते हैं उसमें भी जीव होता है। **हम उस जीव की हिंसा से नहीं बच सकते हैं, जिससे हमारा जीवन चलता है। इसी तरह से वनस्पति की हिंसा से हम नहीं बच सकते क्योंकि उसके बिना हमारा जीवन नहीं चलता है।** भले ही गेहूँ हो, चावल हो, पक गए हो लेकिन वे भी धान्य के बाद ही पकते हैं। वह भी एक फसल है। उसमें भी वनस्पतियों का ही वह एक प्रारूप है, वह सूखा है, कोई गोला है। लेकिन बिना वनस्पति के, बिना अन्न के हमारा जीवन नहीं चल सकता लेकिन बिना माँस खाए हमारा जीवन चल सकता है। किसी दूसरे को मारे बिना, किसी दूसरे का खून पिए बिना, हम जी सकते हैं। पानी पियो क्योंकि यह बात सभी के लिए समझ में आती है कि कोई भी चीज जो गंदी है वह क्या है? शरीर से जुड़ा हुआ माँस, खून, ये गंदे पदार्थ होते हैं। अब अगर ये चीजें खाने में आने लग जाती हैं तो आचार्य कहते हैं- इसके माध्यम से आपके लिए फिर कभी-भी आपके मन में, आपके किसी-भी तरह से विचारों में शुद्धता नहीं आ सकती। यह एक तर्क अगर आप दे सकें तो इस तर्क के माध्यम से ही लोग समझ पाएँगे। हिंसा-अहिंसा का तर्क देंगे तो किसी को समझ नहीं आएगा। आप उसके बाद में फिर एकेन्द्रिय, दो इन्द्रिय आदि की philosophy दिखाएँगे, वह उसकी समझ में नहीं आने वाली। इसलिए इन लोगों से जो non-veg करते हैं, अगर कहा जाएगा तो सिर्फ इतना ही कहा जाता है। शरीर का जो धर्म है, वह धर्म अलग है और आत्मा का जो धर्म है, वह धर्म

अलग है। शरीरों में भी जो वनस्पति है, जो जल है, इनके जो शरीर हैं- ये शरीर pure होते हैं, ये natural-product से बनी हुई चीजें होती हैं। ये जो माँस हैं, चर्म है, वसा है, रक्त है, ये सब चीजें एक अलग तरीके के जीवों से बनती हैं, इनमें बहुत हिंसा होती है लेकिन जल है, वनस्पति है, पृथ्वी है, इनमें भी जीवन होता है लेकिन इनके शरीरों में कभी भी अशुद्धियाँ नहीं होती हैं। यह बात अगर समझ में आएगी तभी आपको कुछ दूसरे के लिए समझाना हो सकेगा। यह भी यहाँ पर सीखना है।

ध्रौव्य, उत्पत्ति और व्यय

अब इसी के आगे अब हम अगली लाइन में बढ़ते हैं- 'ध्रौव्योत्पत्ति-व्ययात्मा' आत्मा कैसा है? ध्रौव्य, उत्पत्ति और व्यय, इन तीन गुणों से सहित है। ये भी इसके अपने धर्म हैं। यह क्या धर्म होते हैं? ध्रौव्य का मतलब ध्रुवत्व बना रहना अर्थात् आत्मा कभी-भी नष्ट नहीं होता, ध्रुव रूप में हमेशा रहेगा। उसके अन्दर उत्पाद और व्यय, ये दो धर्म उसके साथ में और चलते हैं और ये दोनों धर्म उसके ध्रौव्यत्व को बनाए रखने के साथ चलते हैं। उत्पाद का मतलब कुछ नई पर्याय उत्पन्न होना, व्यय का मतलब पुरानी पर्याय का छूट जाना। पर्याय का मतलब एक परिणामन, एक change, जिसको कहते हैं। मतलब आत्मा के अन्दर भी हमेशा change होता रहता है और दुनिया का कोई भी पदार्थ होगा, उसके अन्दर भी हमेशा यह उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य की प्रक्रिया चलती रहती है। इसी को बोलते हैं... 'उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य युक्तं सत्' 'सत्' अर्थात् जिसका existence होता है, वह हमेशा इन तीनों गुणधर्मों के साथ चलता है। उसमें पूर्व-पर्याय का विनाश भी होता है, नई-पर्याय उत्पन्न भी होती है और वह जो जीव है या कोई भी अजीव है, वह ज्यों का त्यों बना भी रहता है।

उदाहरण (शरीर में घटित कर)

अब हम इसी चीज को अपने शरीर में घटित कर सकते हैं, इसी चीज को अपनी आत्मा में घटित कर सकते हैं। शरीर में घटित करना है, आप देखे आपका बचपन था, अभी है? बचपन जैसी हरकत तो कर सकते हो लेकिन बचपन अभी नहीं कहा जाएगा। आपका बचपन चला गया, शैशव-अवस्था आपकी चली गई। शरीर वही था, शरीर तो वही था, उसी शरीर में वह बचपन आया था, उसी शरीर में वह शैशव-अवस्था आई थी, अब वह अवस्था चली गई। आपके अन्दर क्या आ गया? क्या बोले? युवावस्था आ गई। किसी को वृद्ध नहीं कहना, बुरा लगता है। क्या आ गई? युवावस्था आ गई। सब युवा हैं तो शैशव अवस्था चली गई, युवावस्था आ गई लेकिन शरीर तो वही रहा। शरीर में परिवर्तन तो हुआ, बचपन का शरीर अलग था, अब युवावस्था का, वही शरीर में जो परिवर्तन हुआ है, उसका अनुभव अलग है लेकिन शरीर तो वही है। जो पिछली अवस्था चली गई, इसी को कहते हैं- व्यय हो गया। पिछली पर्याय चली गई, जो चली गई अब वह नहीं आएगी। आ जाएगी? बुला पाओगे? वह नहीं आ पाएगी। अब जो आ रही है, वह नई आएगी। जो आज है, वह भी कल नहीं रहेगी, भले ही वह आपको पता पड़े या न पड़े। कितनी बारीकी से रोजाना mirror देखना, शीशा देखना लेकिन फिर भी, आपको पता नहीं पड़ेगा कि आप में क्या changes आ रहे हैं? वे changes आपको अलग से दिखाई देने लग जाते हैं। पाँच-साल बाद, दस-साल बाद, वे आपको दिखाई देने लग जाते हैं। मतलब वे जो change चलते रहते हैं, हर एक समय पर, हर एक क्षण,

जो change होते हैं, उसको कहते हैं- व्यय-उत्पाद। उसके साथ में जो द्रव्य constantly उसके साथ बना रहता है, उसको कहते हैं- ध्रौव्य। यह उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य की प्रक्रिया हमारे शरीर के साथ भी चल रही है।

उदाहरण (आत्मा में घटित करके)

अगर हम इसको अपनी आत्मा के साथ देखें तो यह हमारी आत्मा के साथ भी चल रही है। शरीर में वही आत्मा थी जो बचपन में थी। उस आत्मा के अन्दर अगर हम आत्मा को समझेंगे तो कैसे समझ सकेंगे? **आत्मा को समझने का एक ही तरीका है। हम उसके ज्ञान को देखें क्योंकि यह आपको पहले बताया जा चुका है...ज्ञान-आत्मा, आत्मा-ज्ञान, both are same.** ये दोनों बिल्कुल एक समान चीजें हैं। अगर हमें अपनी आत्मा को समझना है, तो अपने ज्ञान को समझें। बचपन में हमारा ज्ञान था, बोली तो? ज्ञान तो था, कैसा था? ऐसा ही था, जैसा आज है? ऐसे ही समझते थे जैसे आज समझते हैं? पहले हमको ज्ञान तो था लेकिन वह ज्ञान कैसा था? बहुत ही नादानी वाला, बहुत ही मंद-मंद क्षयोपशम वाला, बहुत ही थोड़ा-थोड़ा। ज्ञान हमारा धीरे-धीरे बढ़ा, पहले हम यह भी नहीं समझते थे कि हमें कहाँ बैठना है? कहाँ उठना है? कहाँ किससे क्या बोलना है? कहीं-भी शुरू हो जाते हैं।

चौके में बच्चों को खड़ा नहीं करना चाहिए

जैसे छोटे बच्चे अभी भी होते हैं, कहीं भी होते हैं, उनके साथ हमेशा risk रहती है। कई बार तो मन्दिर में ही वे कुछ भी कर देते हैं, होता तो है ही। उनके साथ में risk रहती है क्योंकि उन्हें वह समझ नहीं है। इसी तरह से वे चौके में भी कुछ भी कर सकते हैं। आप उन्हें अपने पास में खड़ा कर लेते हो। उन्हें तभी अपने पास में खड़ा करना चाहिए जब उनके पास में इतनी समझ आ जाए कि वे समझ सके। नहीं तो वहीं पर कहने लग जाएँ- मम्मी-मम्मी-मम्मी, सुसू-सुसू-सुसू तो मुश्किल हो जाए, इससे भी अन्तराय हो जाते हैं। मम्मी उसको फिर तुरन्त लेकर भागे। इस तरीके के बच्चे जब तक रहते हैं तब तक उनको चौके में भी खड़ा नहीं किया जाता। क्यों? समझदारी तो है, बच्चा हमारा बहुत समझदार है, बच्चा हमारा बहुत राजा-बेटा है। राजा-बेटा तो है! अभी उसको राजा-बेटा बनने में time लग रहा है। आठ साल की minimum age इसीलिए रखी गई है, थोड़ी उसको समझदारी आने दो। यह बात अलग है कि आठ साल वाली समझदारी सात साल में भी आ जाती है, दिखाई देने लग जाती है तो काम चल जाता है। भैया ठीक है! पकड़ ले, हाथ लगा ले, चम्मच पकड़ ले। यह अलग matter है लेकिन बच्चे को इतनी knowledge होनी चाहिए कि वह वहाँ पर कुछ भी गलत न बोले, न कोई गलत action करे। यह अगर भाव आया तो कैसे आया? वही बच्चा है, वही ज्ञान है, वही knowledge है। पहले उसकी जो knowledge थी, वह उतनी परिपक्व नहीं थी, धीरे-धीरे वही चीज परिपक्व होती गई तो पुरानी वाली चीज क्या हो गई? चली गई। सब बच्चों ने ऐसे ही किया है, बिना बच्चा हुए कोई बड़ा नहीं बना है इसलिए किसी को शर्माना नहीं चाहिए। आज भले ही अपनी मूँछे आ गई, दाढ़ी आ गई, समझदार हो गए हो लेकिन बचपन में सब ऐसा ही करते हैं। बचपन की जो ज्ञान की, हमारी जो क्षमता थी वह अलग थी, आज हमारी जो ज्ञान की क्षमता है वह अलग है। लेकिन हमें ध्यान आएगा तो हमें याद आएगा...वह पुरानी पर्यायें, हम क्या करते थे? वह क्या हो गई? सब व्यय

हो गई। अब हमारे सामने क्या आ गया? नया ज्ञान आ गया। हमें बड़ा लगता है कि हमारे पास में बहुत नई-नई knowledge आती है, नई-नई information आती है हमारे पास तो हमारी knowledge बहुत बढ़ रही है। हमेशा आत्मा के अन्दर, ज्ञान के अन्दर भी यह व्यय, यह उत्पाद चलता रहता है लेकिन आत्मा तो वही है, ज्ञान वही है, जो पहले भी था, आज भी है। इसको क्या कहते हैं? **उत्पाद-व्यय और ध्रौव्य। ये तीन शक्तियाँ हैं। जो हमेशा हर पदार्थ में काम करती हैं। चाहे वह जड़-पदार्थ हो, चाहे चेतन-पदार्थ हो।** ये तीनों शक्तियाँ हर पदार्थ में काम करती हैं। इन्हीं तीनों शक्तियों के कारण से, हर पदार्थ अपने अस्तित्व को बनाए रखता है, existence उसका बना रहता है, सत् वह बना रहता है।

पदार्थ का अस्तित्व नष्ट नहीं हो सकता

सत्-न, ऐसी कोई चीज नहीं है, जो सत्य नहीं हो, जिसका कोई अस्तित्व न हो। सत्य होता है, वही इस धरती पर रहता है। आप कल भी थे, आज भी हैं और कल भी रहेंगे, यही अस्तित्व है, यही सत् है, लेकिन वह अस्तित्व बिखर सकता है, अलग-अलग रूप में जा सकता है। जब कोई चीज बहुत सारी चीजों के combination से बनती है, तो फिर उसके अपने-अपने अस्तित्व बिखर कर भी अलग-अलग रूप में चले जाते हैं लेकिन अस्तित्व तो हर particle का बना ही रहता है। कोई भी particle ऐसा नहीं है, जो कभी अस्तित्व में दिखाई दे रहा हो, आया हो और वह फिर एकदम से बिल्कुल गायब हो जाए, ऐसा नहीं होता। अदृश्य हो सकता है लेकिन वह particle बिल्कुल नष्ट नहीं हो सकता, यह जैन धर्म का सिद्धान्त है। इसी को Einstein ने कहा कि कोई भी energy, कोई भी पदार्थ, कभी-भी नष्ट नहीं होता... **यही Einstein की theory है। यह पूरी की पूरी इसी उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य पर लागू होती है** और इसी को अपनी भाषा में कहें, जो अपनी व्यावहारिक भाषा में बोलते हैं। भाई! कल भी लोग आए थे, आज भी कुछ लोग हैं, कुछ लोग चले भी गए तो अब क्या करोगे? पूरे चातुर्मास भर यह चलता रहेगा। क्या चलता रहेगा? आना-जाना लगा रहता है। क्या लगा रहता है? आना-जाना लगा रहता है। आप लोग बोलते हो न? अरे भाई! यह आना-जाना तो लगा रहता है। आपको पता नहीं कि आपने इसके अन्दर पूरी theory बोल दी। **जो जैन दर्शन की theory है, आना-जाना लगा रहता है अर्थात् उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य, ये तीनों हमेशा चलते रहते हैं।** आने का मतलब कुछ नया आ जाना। जाने का मतलब कुछ पुराना चला जाना और लगे रहने का मतलब फिर भी उसमें कुछ लगा रहता है। लगा रहने का मतलब जैसे मान लो यहाँ पर आदमी लोग हैं, औरतें भी हैं, बच्चे भी हैं, बड़े भी हैं, सब हैं। यह रोजाना दिखाई देंगे, भले ही कुछ कहीं चले जाएँगे। घूमने, कहीं-कहीं के दर्शन करने चले जाएँ, कहीं-कहीं चले जाएँगे लेकिन आने-जाने के बाद में यहाँ पर यह सब व्यवस्था लगी रहेगी कि नहीं लगी रहेगी? बोलो तो? सब लगे रहेंगे। लगे रहने का मतलब यहाँ पर हमेशा आदमी भी दिखाई देंगे, औरतें भी दिखाई देंगी, बूढ़े भी दिखाई देंगे, बच्चे भी दिखाई देंगे, युवा भी दिखाई देंगे। सब दिखाई देगा और सब आना-जाना करते भी रहेंगे, इसका नाम क्या है? **‘उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य युक्तं सत्’**। यह सत् है, अस्तित्व है, बना रहेगा। यह अस्तित्व कैसे बना रहेगा भाई? महाराज की सभा चल रही है, रोजाना महाराज का उपदेश होता है, रोजाना class चलती है, यह सत् है। यह क्या है? सत् है लेकिन उस class में रोजाना लोग वही रहते हो, जरूरी नहीं है। कोई कभी छुट्टी ले जाएगा, कोई कभी नया आ जाएगा लेकिन फिर भी यह class तो चलती रहेगी। ऐसे बहुत कम लोग मिलेंगे, जिन्हें दिवाली के दिन award दिया जाए, जिन्होंने कभी कोई class miss न की हो ऐसे लोगों को दिवाली के दिन एक विशेष

award देना, कमेटी से घोषणा कर देना। कम-से-कम सुबह का जो उपदेश होता है, जो प्रवचन होता है, वह miss न किया जाए। अपने किन्हीं शारीरिक कारणों से, अगर कुछ हो जाए, चलो उसको भी छूट दे देना। महिलाओं के कुछ शारीरिक कारण होते हैं, पुरुषों के भी लिए, कभी-कभार अगर कोई विशेष बीमारी आ जाए तो अलग बात है। लेकिन सामान्यतया भी उसका एक ratio निकाला जा सकता है कि किसने पाँच महीने के अन्दर कितनी class miss की? एक अच्छी व्यवस्था बनाएँ? जो regular student होते हैं, उनको अलग तरीके का profit मिलता है। उनको अलग तरीके की, उनकी presence का ही एक बहुत बड़ा benefit दिया जाता है और वह होना भी चाहिए। अतः regular student बनने की कोशिश करो। बाकी तो सब आना-जाना लगा रहता है। आज ये दिल्ली वाले दिख रहे हैं, कल न दिखेंगे, फिर कभी आ जाएँगे, फिर न दिखेंगे, यह आना-जाना तो चलता रहता है लेकिन सभा का अस्तित्व तो बना रहना चाहिए। सत् यह है! क्या है? कि यह उपदेश की सभा, यह सुबह के प्रवचन की सभा तो चलती रहेगी। इस तरीके का विचार आने का नाम ही है कि हम उस सिद्धांत से जुड़ रहे हैं, जो हमें तीर्थंकरों ने दिया-
‘उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य युक्तम् सत्’

मुक्त जीवों में उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य

अब यह बात हमें संसारी जीवों में तो समझ में आती है, अब हम बात मुक्त जीवों की कर रहे थे। अब मुक्त तो एक बार मुक्त हो गए, एक बार सिद्ध बन गए। **एक बार सिद्ध बनने के बाद भी उनमें यह धर्म क्या घटित होता है कि नहीं होता है?** यह एक सोचने की चीज है। अब उनमें उत्पाद क्या? कोई नई knowledge तो आएगी नहीं, कोई नया शरीर तो उनका बनेगा नहीं, अब उनमें उत्पाद नया क्या? व्यय कोई पुरानी चीज का तो होगा नहीं। **वे एक बार सिद्ध बन गए तो सिद्ध बन गए। एक बार शुद्ध हो गए तो शुद्ध हो गए। आपको यह ध्यान रखना है पदार्थ चाहे शुद्ध हो, चाहे अशुद्ध हो, उसमें उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य, ये तीनों शक्तियाँ कायम हैं, तीनों का धर्म हमेशा चलेगा।** चाहे वह चीज का परिवर्तन अब हमें दिखाई दे या न दे लेकिन वह चीज अगर है, तो उसके अन्दर उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य चल रहा है। शुद्ध आत्माएँ हैं, सिद्ध आत्माएँ हैं, अब उनमें क्या नया उत्पाद हो रहा है? जो उनके अन्दर एक बहुत ही सूक्ष्म-परिवर्तन, उनके हर एक गुण में प्रति समय चल रहा है। मतलब एक पर्याय होती है, परिणति होती है, वह हर समय बनी रहती है। नई पर्याय उत्पन्न होना, पुरानी पर्याय का विनाश होना और द्रव्य का ज्यों का त्यों बना रहना, यह उसमें भी चलता रहता है। लेकिन ज्ञान नया नहीं आएगा लेकिन ज्ञान में परिवर्तन तो हर समय पर है और परिवर्तन होते हुए भी, वह कभी शुद्ध से अशुद्ध नहीं होगा, वह शुद्ध का शुद्ध में ही रहेगा।

उदाहरण

जैसे कभी हम किसी चीज को, किसी process से purify कर लेते हैं। purify जब तक हम करते जाते हैं, तब तक तो उसके अन्दर हमें changes दिखाई देते हैं लेकिन जब वह चीज पूरी pure हो जाती है तब भी उसके अन्दर changes तो होते ही रहते हैं लेकिन उसकी pure form में ही होंगे। उसकी form जैसी pure बन गई है, वह वैसी ही रहेगी, वह change नहीं होगी,

लेकिन फिर भी उसकी pure form के अन्दर भी उत्पाद चल रहा है, व्यय चल रहा है, चीज ज्यों की त्यों बनी है, ऐसा आपको समझना पड़ेगा।

उदाहरण

जैसे आपने दूध से घी निकाला। दूध से जब तक आप घी निकालते गए तब तक तो आपको दूध के अन्दर change हो रहे हैं वे समझ में आते गए। अब जब वह घी बन गया तो घी में अब क्या कोई change नहीं हो रहा? अब वह अगर अपनी pure form में भी है, शुद्ध भी है, तो भी उसमें change होता है। परिवर्तन के बिना कोई भी चीज टिकती ही नहीं है। घी में हमें फिर भी परिवर्तन दिखाई दे जाएगा क्योंकि पौद्रलिक चीज है। कभी वह, उसमें smell आने लग जाएगी, कभी कुछ दिखाई दे जाएगा। लेकिन जो शुद्ध आत्माएँ हैं, उनमें कभी ऐसा change नहीं आएगा कि वे pure से impure हो जाएँ। **They will be always in pure position.** वे हमेशा एक ही, उसी pure स्थिति में रहेंगी और उनके लिए किसी भी तरह का उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य होते हुए भी, व्यय किसी भी तरह से, उनकी सिद्ध पर्याय का नहीं होगा। लेकिन उस सिद्ध पर्याय के अंतर्गत आत्मा के जो गुण हैं, ज्ञान-सुख आदि, वे सभी हर समय परिवर्तनशील हैं, यह जानना पड़ेगा। अब आपसे कोई पूछे...भाई! **इन सिद्धों में क्या यह उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य?** तब कहना, हम समझ तो सकते हैं लेकिन अब समझा नहीं सकते हैं। कैसे समझ में आएगा? बोले...class में आया करो, सुबह बैठा करो तुम भी वहीं पर आकर समझ लिया करो। अगर वहाँ बैठोगे तो कुछ समझ में आएगा, वरना कुछ समझ में नहीं आएगा। अब हमने आपको इतनी देर समझाया और समझाने के बाद भी आपको कितना समझ में आया? भाई! उसमें परिवर्तन होता है, होता है, शुद्ध-शुद्ध रहता है। अब यही चीज समझने की है और यह चीज अगर आपको समझाने में नहीं आती है, तो देखो आप! जो लोग यहाँ बैठेंगे, उनकी समझ में तो आ जाएगा कि हाँ! जो कहा जा रहा है, वह समझ में आ गया। लेकिन हम उसको दूसरे के लिए explain कर पाएँ, कोई जरूरी नहीं है।

नय-विवक्षा

यही चीज हमारे लिए इस उपदेशों के माध्यम से लाभदायक सिद्ध होती है। मतलब उपदेशों को सुनने का, गुरुओं के सानिध्य में बैठने का, यही लाभ होता है कि हमें कम-से-कम अपने लिए तो सब समझ में आ जाता है। हम चाहे दूसरों को समझा पाएँ या न समझा पाएँ। लेकिन कई लोगों की यह परेशानी होती है, जिन लोगों के लिए दूसरों को समझाने की आदत पड़ती है, तो वह हर चीज दूसरों को समझाने के लिए ही समझते हैं। बोले...हमें क्या समझाना है? हम तो सब समझे-समझाए हैं। उन्हें हर चीज इसलिए समझानी पड़ती है कि हमें दूसरों को समझाना है और जब तक दूसरों को समझाने लायक शब्दावली उनके मुँह से नहीं निकलती तब तक वे कहते हैं- नहीं! हमें समझ में नहीं आया। समझ में तो आया लेकिन आप समझा नहीं पा रहे हैं, यह भी आपको समझ में आ जाना चाहिए। इसका नाम ही समझदारी है। अब आपसे कोई पूछे...सिद्धों में उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य होता है। आप मानते हो कि नहीं? आपको समझ में आता है कि नहीं? क्या बोलोगे? आता है। सिद्धों में उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य होता है कि नहीं होता? होता है। कैसे होता है? क्या बोलोगे? बोले...वह शुद्ध है, शुद्ध रूप में ही होता है। अब शुद्ध का शुद्ध में ही होना भी अपने-आप में,

change होने के साथ में, बना रहना, यही उनका उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य गुण के साथ में चला करता है। ऐसी सिद्धों की, हम यहाँ पर भक्ति करते हुए, उनके गुणों का स्मरण करते हैं। मतलब उनका केवल-ज्ञान कभी भी-न नया होगा, न पुराना होगा और नया-पुराना उसमें पर्याय हो भी रही है लेकिन फिर भी वह वैसा का वैसा होते हुए भी, नया भी है और पुराना भी है। हम कहेंगे कि न वह नया हो गया, न पुराना हो गया। हम दोनों बातें कहेंगे। अब ये दोनों बातें कैसे कह दी? इसी का नाम है- **अनेकान्त-दर्शन, नय-विवक्षा**।

द्रव्यार्थिक नय, पर्यायार्थिक-नय

द्रव्यार्थिक नय से किसी पदार्थ में कोई नया-पुरानापन नहीं आता। **पर्यायार्थिक-नय** से उस पदार्थ को नया और पुराना कहा जाता है। इसको भी समझने के लिए आपको अभी classes और attend करनी पड़ेंगी। कहीं दूसरे की नहीं, यहीं पर भी अगर करते रहो, समझ में आ जाएगा। यह द्रव्यार्थिक-नय क्या है? पर्यायार्थिक-नय क्या है? कभी फिर detail में बताएँगे। अभी इनको याद रखना, यह शब्द भी ध्यान रखना कि आखिर हमें शब्द सुनने को मिले हैं तो कभी इनका हम अक्षर से अर्थ भी समझेंगे। **द्रव्यार्थिक-नय** से किसी पदार्थ में कोई change नहीं होता और **पर्यायार्थिक-नय** से हर पदार्थ में change होता है। ये अनेकान्तवादी, जो स्याद्वादी लोग होते हैं, ये हर उल्टी चीज को कहेंगे, दोनों तरह की चीजें कहेंगे और दोनों तरह की चीजों को सिद्ध भी करेंगे...इसी का नाम **स्याद्वाद** है। पदार्थ में change होता भी है और पदार्थ में change नहीं भी होता है। हम दोनों कहेंगे और दोनों चीजें बिल्कुल सही होंगी। **जिनको स्याद्वाद नहीं आता, अनेकान्त नहीं आता, उनकी खोपड़ी घूमेगी और जिसको आता है, उसकी बिल्कुल नहीं घूमेगी**। वह सिर्फ दूसरों को घुमाएगा। खोपड़ी घूम रही है क्या? नहीं घूम रही? यूँ तो कहना पड़ेगा, घूम रही है। कैसे घूम रही है? आपको सिर्फ इतना ही सुनना है, इतना ही समझना है कि कोई भी पदार्थ अगर अपने अस्तित्व को बनाए रखता है तो किस नय से? द्रव्यार्थिक-नय से। किसी भी पदार्थ में नया-पुराना-पन होता है तो किस नय से? पर्यायार्थिक-नय से। बस! इतना आपको समझना है।

साध्य की सिद्धि

यहाँ आगे कहा जाता है- '**स्वगुण युत इतो**' वह आत्मा अपने ही गुणों से युक्त है। अपने गुण उसके कभी भी छूटते नहीं हैं। '**इतः नान्यथा साध्यसिद्धिः**।' इससे हट कर, कभी भी और प्रकार से साध्य की सिद्धि नहीं हो सकती है। अर्थात् अगर आप आत्मा के इतने गुण-धर्मों को, इतनी विशेषताओं को जानेंगे तो आप अपनी आत्मा को भी शुद्ध बना पाएँगे। **शुद्ध बनाने का नाम ही साध्य की सिद्धि कहलाती है**। हमारे लिए साध्य क्या है? अपनी आत्मा को शुद्ध बनाना, यह साध्य है। उसकी सिद्धि करना? इतने हमें उसकी विशेषताएँ और इतने process से हमें निकलना होगा तब हम उस साध्य को, सिद्ध बना पाएँगे। अर्थात् आत्मा वही सिद्ध होगी, जो इन गुणों को अपने अन्दर मानेगी कि हमारी आत्मा में भी यह गुण हैं और उन सिद्धों की आत्मा में भी यही गुण हैं। तभी साध्य की सिद्धि होगी, नहीं तो वही होगा जैसे वह गड्ढे में उपश्रेणिक पड़े हुए थे।

राजा उपश्रेणिक का तिलकावती से अनुराग



भूल गए? याद है? याद दिलाना पड़ता है। अब गड्ढे में पड़े हुए थे, अब गड्ढे से निकले तो कहाँ पहुँच गए? **भीलों के सरदार के पास पहुँच गए।** वहाँ पहुँचे तो वहाँ पर भी तबीयत धीरे-धीरे ठीक हुई। उन्हें सबसे ज्यादा चिन्ता थी कि मैं निरोगी हो जाऊँ, निरोगी हो जाऊँ और निरोगी हो गए। किसके कारण से? उनकी बेटी की सेवा के कारण से। जानते हो बेटी का नाम क्या था? जो सरदार था भीलों का, उसका नाम था- यमदंड और उसकी बेटी का नाम था...तिलकावती। सुन तो लो, भले ही अपने बेटी का नाम मत रखना ऐसा। तुम भला ऐसा भीलों की बेटी का नाम क्यों रखोगे। त्रिशला तो रख लोगे, चंदना भी नहीं रखते। कोई नाम ही नहीं रखता, ऐसे अच्छे-अच्छे नाम- प्रभावती, मृगावती, यह भी नहीं रखते। क्यों? सब old type के लगते हैं। क्या new type के हैं? बस! आसी, ईसी, ईशिका, आशिका, माशिका, बस! ये सब अच्छे लगते हैं। जिन नामों के कोई अर्थ होते हैं, वही नाम अच्छे लगते हैं। उसकी बेटी का नाम क्या था? तिलकावती। देखो नाम भी कभी-कभी कैसे काम कर जाते हैं? तिलकावती का मतलब होता है- जो सभी स्त्रियों में तिलक के समान मतलब सिरमौर सिद्ध हो जाए, उसका नाम क्या है? तिलकावती। जैसे कभी तिलक चंद कोई नाम मिल जाता है मतलब कभी-कभी नाम भी काम के अनुरूप मिल सकता है। भाई! वह सभी आदमियों के बीच का कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति बन गया, अध्यक्ष बन गया, सभी आदमियों का सिरमौर हो गया। वह क्या हो गया? तिलक चंद। त्रिलोकी चंद तो मिल जाता है। ऐसे ही उसका नाम क्या था? तिलकावती। अब देखो एक सामान्य से भील की बेटी का नाम क्या था? तिलकावती। अब राजा उपश्रेणिक की उसने सेवा की। सेवा करने के बाद में राजा निरोग हो गए और राजा के निरोग होने के बाद में, राजा के मन में उसकी सेवा करते-करते ऐसा अनुराग पैदा हो गया कि राजा सोचने लगे..यह बेटी, इसकी पुत्री मुझे मिल जाए।

राजा उपश्रेणिक का तिलकावती से विवाह का प्रस्ताव

क्या सोच रहे हो? राजा गलत सोच रहा है कि तुम गलत सोच रहे हो? राजा क्या सोचने लगा? मिल जाने का मतलब क्या? वह आपकी तरह नहीं सोच रहा। मिल जाने का मतलब यह है- पहले के राजा लोग, जब भी कभी किसी के लिए विचार करते थे तो कभी गलत विचार तो कर ही नहीं सकते हैं। मिल जाने का मतलब यह नहीं है कि हम उसके साथ में कभी कोई कैसी जबरदस्ती कर लें या कभी कोई अन्याय कर लें। उसके मन में भाव आया यह अगर तिलकावती हमारे साथ ब्याह दी जाए, इसका मेरे साथ विवाह हो जाए तो हमारा आगे का जीवन बहुत अच्छा-सुखी हो जाए। ऐसा भाव उसके अन्दर आने लग गया। अब आपके समझ में बात आयी। सही सोच रहा है राजा कि नहीं गलत सोच रहा है? बोलो तो? अरे! आप अपनी धारणा से ही बताओगे, कुछ भी बोलोगे तो राजा के लिए यह सोचना भी गलत नहीं होता है। यह वह समय था, वह समय होता था जब एक राजा के कई रानियाँ हुआ करती थी। आज के समय की यह सोच गलत हो सकती है लेकिन उस समय की यह सोच गलत नहीं थी। राजा अपनी पसंद से कितनी ही रानियों के साथ विवाह कर सकता था। कन्याओं के साथ विवाह कर सकता था और एक राजा के कई-कई रानियाँ होती थी और वह सभी उनके राजगृह में रहती थी। सभी इज्जत के साथ रहती थी और सभी उन राजा की रानी होने के लिए, उन रानियों को भी यह सौभाग्य लगता था कि मैं इस राजा की रानी हूँ। कोई चोरी नहीं होती थी, छुपा-छुपी नहीं होता था। समझ आ रहा है? **जैसे आजकल दिखाई देता है... live in**

relationship. यह सब पाप के काम पहले नहीं होते थे। पहले मन में भाव आता था तो वह साफ-सुथरा होकर सबके सामने आ जाता था। राजा ने भी जब यह भाव किया कि तिलकावती मुझे चाहिए तो उसने उसके पिता से कहा- क्या आप अपनी बेटी का विवाह हमसे कर सकते हो? कहना तो पड़ेगा ही। अब जब उसने सरदार ने सुना तो वह झेंप गया, सोच में पड़ गया। इतना बड़ा राजा और मैं तो कहाँ? यह एक तरह से इनके दास की तरह हूँ और मेरी बेटी! क्या इसको यह रानी बना कर रख पाएँगे? उसके मन में विचार आया।

यमदंड का प्रश्न... राजा उपश्रेणिक से

महाराज आप क्या कह रहे हो? क्या आप मेरी बेटी को स्वीकार कर लो? क्या इसको रानी बना कर अपने राजमहल में रख लो? मेरे लिए सौभाग्य की बात तो है लेकिन चिन्ता की बात ज्यादा है। चिन्ता यून है कि मेरी बेटी का क्या होगा? मैं आपकी बात को इंकार नहीं कर सकता क्योंकि आप हमारे राजा हैं, स्वामी हैं, आपका आदर करता हूँ। लेकिन मेरी बेटी के लिए, अगर जीवन पर्यंत के लिए दुःख मिले तो मैं ऐसा कभी भी विवाह संबंध, अपनी बेटी के लिए नहीं कर सकता। वह दुःख मिलना उसको निश्चित है क्योंकि आपकी पहले से ही बहुत सारी रानियाँ हैं। आपके पुत्र हैं और उनके बीच में अगर यह जाएगी तो लोग इससे क्या कहेंगे? कहीं इसके लिए तरह-तरह के comments करेंगे, तरह-तरह से इसको टोकेंगे। इसकी इज्जत नहीं होगी क्योंकि यह कहाँ से ले आए? भीलों की लड़की ले आए, यह उसके लिए सम्मान नहीं मिलेगा तो हमारी बेटी तो जिंदगी भर परेशान ही रहेगी, वह depression में चली जाएगी और आप राजा होने के नाते हम आपसे मना नहीं कर सकते। अब आप ही निर्णय करो, आपको करना क्या है? देखो! समझदारी की बात चल रही है कि नहीं चल रही है? ऐसे कहना पड़ता है। पिता अगर बेटी का रिश्ता करता है तो वह सब कुछ समझ कर करता है, यून नहीं कि बेटी को कहीं भी पटक देता है। सोच-समझ कर कि बेटी मेरी जीवन पर्यंत के लिए यहाँ सुखी रहेगी, मेरे धर्म के अनुकूल है। अब उसके धर्म के अनुकूल तो कुछ भी नहीं है, उसके लिए तो वह एक तरह से, वह तो स्वयं समझो कि वह नरक में है और उसके लिए तो स्वर्ग मिल रहा है। धर्म तो उपश्रेणिक को देखना चाहिए था, **उपश्रेणिक को धर्म की चिन्ता नहीं है** लेकिन उसे यह चिन्ता है कि मेरी बेटी अगर इतने बड़े राजा के साथ विवाह दी जाएगी, इतने बड़े कुल में चली जाएगी तो यह सुख से कैसे रह पाएगी? वहाँ पर इसकी इज्जत कैसे रह पाएगी? अगर निरादर के साथ रहेगी तो हमेशा दुःखी रहेगी। उससे अच्छे तो अपनी छोटी सी झोपड़ी है, अगर कहीं भी हम अपने ही cast के लोगों के साथ विवाह करेंगे तो सुखपूर्वक तो जीवन भर रहेगी। अब राजा के लिए ही उसने यह प्रश्न करके छोड़ दिया। किसने? उस यमदंड ने।

राजा उपश्रेणिक का यमदंड को आश्वासन

अब वह राजा सोचता है बात तो सही कह रहा है। लेकिन राजा का मन उस बेटी पर है और वह चाहता है कि इसका विवाह मुझसे हो जाए तो वह राजा होने के नाते, अब उसकी हर शर्त मानने को मजबूर है। क्या कहता है? कहता है कि तुम बताओ क्या करना है? मैं तो तुमको दिलासा दिलाता हूँ, विश्वास दिलाता हूँ कि तुम्हारी बेटी का कभी अनादर नहीं होने दूँगा। जैसे सभी रानियाँ हमारे राजघराने में रहती हैं, सबके साथ

रहेगी, मिलकर रहेगी, सबके बीच में रहेगी। मैं जैसा कहूँगा वैसा ही होगा, आप बिल्कुल निश्चित रहें। लेकिन वह उसका पिता कहता है- नहीं राजन! आपकी इन बातों से मुझे इतना बड़ा विश्वास नहीं बन सकता। आप क्षमा करें। मैं इतनी बड़ी risk नहीं ले सकता। अपनी बेटी को जिंदगी भर के लिए परेशानी में नहीं डाल सकता। वह बाद में रोए-चिल्लाए, बाद में मेरे पास आए तो फिर वह न वहाँ की रहे, न यहाँ की रहे। आपके लिए भी सिर-दर्द, हमारे लिए भी सिर-दर्द। राजन! आप अच्छे से सोच लो, आप बहुत बड़े राजा हैं। मैं तो आपका छोटा सा दास हूँ लेकिन मैं आपके ऊपर छोड़ रहा हूँ। आपका निरादर नहीं कर रहा हूँ लेकिन आप सोच लो। राजा के कहने के बाद भी उस सरदार ने राजा को यह प्रति उत्तर दिया और जब राजा ने फिर यह बात सुनी तब फिर राजा सोचता है...तुम बताओ कि तुम्हें क्या चाहिए? तुम्हें इतना ही तो चाहिए कि तुम्हारी बेटी को आदर मिले, मिलेगा। नहीं राजन! इतनी सी बात से मैं मान नहीं सकता और वह हो भी नहीं सकता। Practically यह बात नहीं हो सकती, आप कह जरूर रहे हो। अभी आपका राग उसके ऊपर है, इसलिए आप कह रहे हो और कल के दिन आपका राग उससे हट जाएगा, कभी कोई दूसरी स्त्री मिल जाएगी तो आप उस बात को भी भूल जाओगे। आप राजा हो, हम आपके ऊपर claim करने बाद में तो जाएँगे नहीं कि आपने हमारी बेटी के लिए ऐसा कहा था और वैसा नहीं हो रहा है। आप कहोगे, सब रह रही हैं, वह भी रह रही है। मैं क्या करूँ? राजन सोच लो लेकिन राजा सोच में पड़ गया और वह सरदार बार-बार राजा से कहता है और राजा भी उससे कहता है- तुम मेरी बात मान लो, तुम मुझ पर विश्वास कर लो, तुम्हारी बेटी के साथ ऐसा कुछ नहीं होगा। तुम मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि वहाँ पर सब कितनी सारी स्त्रियाँ एक साथ, कितने अच्छे आनन्द के साथ रहते हैं। वैसे यह भी रहेगी लेकिन उसको यह बात बिल्कुल भी गले नहीं उतरती है।

यमदंड द्वारा विवाह के लिए शर्त

राजा ने अपने मन में विवाह करने की ठानी हुई है, मन उसका आ चुका है। अब क्या करें? अब वह जो उसका पिता है, जो सरदार है, वह कहता है- राजन बहुत सोच-समझने के बाद में, मैं आपके लिए एक अन्तिम बात कहने की एक जुर्रत कर रहा हूँ, आप मुझे क्षमा करना। मेरी हैसियत की बात नहीं है लेकिन फिर भी मैं आपसे कहने की दुस्साहस कर रहा हूँ। आप मुझे क्षमा करना। अन्ततः उसे एक बात कहनी पड़ी और वह बात जानते हो क्या है? क्या कहा उसने? उसने कहा राजन मैं आपकी बात को तब मान लूँगा जब आप मुझे एक मेरे साथ promise कर लो। मैं अपनी बेटी को आपके लिए दूँगा। मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली मानूँगा क्योंकि आप जैसे राजा के लिए मेरी पुत्री का विवाह होगा। यह उसके लिए भी भाग्य की बात है, मेरे लिए भी भाग्य की बात है। लेकिन बेटी का निश्चित रहना बहुत जरूरी है और अगर आपका वास्तव में उससे राग है, आगे चलकर के संतानें होंगी, यह संतानें भी आपस में लड़े-भिड़े नहीं और कोई भी अगर उसकी संतान होगी तो कभी नहीं चाहेगा कि कोई भी तुम्हारे पहले की जो संतानें हैं, उनके साथ में वह संतान घुल-मिल कर रह पाए, नहीं रह पाए। वह संतान के लिए भी दुःख का कारण बन जाएगा और उसका एक ही उपाय मुझे आगे तक के लिए समझ में आ रहा है। **अगर आप यह हमें विश्वास दिलाएँ कि इससे उत्पन्न होने वाली संतान को मैं राजा बनाऊँगा तो मैं अपनी बेटी का विवाह तुमसे करा सकता हूँ, कर सकता हूँ।** उसने कितनी बड़ी शर्त रख दी। आपके बहुत सारे पुत्र होंगे लेकिन अगर इसका पुत्र उत्पन्न होगा तो वह राजा बनेगा, आप यह विश्वास दिलाओ।

तिलकावती का विवाह...राजा उपश्रेणिक के साथ

राजा को उस समय पर, उस तिलकावती को ग्रहण करने के लिए यह विश्वास भी दिलाना पड़ा और यह भी उसने उसके साथ में वायदा कर दिया। लेकिन राजा की बात है, ठाकुर की बात है, कह दिया तो कह दिया। पहले ऐसी लिखा-पढ़ी नहीं होती थी, ऐसे कोई court के claim नहीं चलते थे, बात की बात रहती थी। बात की बहुत साख हुआ करती थी। राजा कह रहा है न...mobile पर न उसके लिए कोई recording करने की जरूरत है और न उसके लिए कोई लिखा-पढ़ी करने की जरूरत है। राजा ने कह दिया, उसने सुन लिया और बेटी के लिए उसने कह दिया और बेटी को भी समझा दिया। ऐसा करके, वह सरदार तैयार हो गया। राजा तैयार हो गया तो सरदार भी तैयार हो गया और तिलकावती का विवाह राजा उपश्रेणिक के साथ में हो गया। किस शर्त के साथ? इसका पुत्र ही अब आगे राजा बनेगा। सुन रहे हो? यह कहानी भी साथ में चल रही है।

अपने-अपने गुणों से हर कोई युक्त रहता है

‘स्व गुण युत इतो’ अपने-अपने गुणों से हर कोई युक्त रहता है। अगर वह भील भी है तो उसके भी अपने गुण हैं। राजा है तो उसके अपने गुण हैं। हर जाति का अपना गुण होता है। हर जाति की अपनी quality होती है और हर जाति अपने अन्दर एक सम्मान का भाव रखती है। कोई भी व्यक्ति अपने-आप को अपमानित होकर कभी-भी नहीं जीना चाहता। यह जैन धर्म हमेशा सिखाता है कि हर जाति का, हर धर्म का सम्मान करो। कभी किसी का अपमान न होने पाए। हर कोई अपने-अपने गुणों से युक्त है, वह अगर भील है तो भील के गुणों से युक्त है। भील के जैसे उसका जीवन है, वह उतने में मस्त है लेकिन अगर आप उसके लिए कुछ चाहते हो तो वह भी अपनी शर्तों के साथ ही आपके लिए मंजूरी देगा, यह उसकी बहुत बड़ी गुणवत्ता है। इसलिए कभी किसी को छोटा न आँकना चाहिए, न समझना चाहिए। उस भील ने अपनी गुणवत्ता दिखाई और अपनी बेटी के लिए, इतना पहले से ही उसके लिए agreement करा दिया। बेटी चिन्ता मत कर... तेरे लिए कहीं पर भी, उस राज-घराने में भी किसी भी तरह से अपमान नहीं होगा। इस राजा ने वादा किया है कि तेरा बेटा ही राजा बनेगा। तब जाकर उस तिलकावती का राजा उपश्रेणिक से विवाह होता है। आगे क्या होता है? यह आगे की scheme में आएगा, आगे की scene में आएगा। अभी आपको यह ध्यान रखना है कि अगर किसी भी व्यक्ति के अन्दर गुण हैं तो वह गुण वही होते हैं, जो किसी बड़े व्यक्ति में भी हुआ करते हैं। सिद्धों के गुण, सभी संसारी आत्माओं में है और सभी संसारी आत्माओं के जो गुण हैं, वे किसी के भी एक गुण न कम है, न ज्यादा है। आँकने का नजरिया हमारा अलग-अलग हो सकता है लेकिन हर आत्मा में उतने ही गुण हैं, जितने सिद्धों में हुआ करते हैं। चाहे वह भील हो, चाहे भील की बेटी हो और चाहे वह राजा हो। कौन से गुणों की बात कर रहा हूँ? आत्मा के गुणों की। वे गुण नहीं, जो तुम नापते रहते हो। क्या बोलते हो? जन्म-पत्री में दिखाते रहते हो। उससे गिनते रहते हो। उन गुण की बात नहीं कर रहा। वे गुण भी देखे जाते हैं, वह अलग चीज है लेकिन आत्मा के गुण किसी में कम नहीं हैं। यह जो हमारे अन्दर एक भाव बनेगा, श्रद्धा बनेगा, इससे भी बहुत बड़ी सामाजिक समरसता आती है। समाज में रहना है, सब लोगों के साथ में रहते हुए, सब लोगों के धर्म को ध्यान में रखते हुए भी अपने अन्दर यह भाव रहे कि हम किसी का अपमान नहीं करते हैं। भले ही हम अपने धर्म का दृढ़ता से पालन करते हैं लेकिन

हम किसी भी धर्म का कभी भी अपमान नहीं करते हैं। क्योंकि हमें पता है कि सबके पास में अपने-अपने गुण हैं... 'स्व गुण युत इतो' अपने धर्म का दृढ़ता से पालन करो लेकिन कभी किसी दूसरे को अपमान की दृष्टि से न देखो। यह पहले सीख लो तब अनेकान्तवाद आपको समझ में आएगा। सम्यग्दर्शन में इससे आपके कहीं कोई बट्टा नहीं लगेगा। न सम्यग्दर्शन यह कहता है कि कभी किसी का अपमान करो, यह कह ही नहीं सकता। धर्म कभी किसी का अपमान करना सिखाता ही नहीं है। अपमान तब होगा जब आपके अन्दर गर्व आएगा, मद आएगा। सम्यग्दर्शन में पहले ही कह दिया जाता है, मद नहीं रखना।

स्मयेन योऽन्यानन्त्येति, धर्मस्थान् गर्विताशयः ।
सोऽत्येति धर्ममात्मीयं, न धर्मो धार्मिकैर्विना ॥

चाहे धार्मिक हो, चाहे अधार्मिक हो, किसी के सामने मद नहीं करना। यह अपने अन्दर आना चाहिए और तभी आप समाज के अन्दर, अन्य धार्मिक लोगों के साथ भी एक समरसता से रह सकेंगे और यही बात यहाँ पर आपको सिद्धों के गुणों के माध्यम से भी समझाई जा रही है।

शान्तिनाथ भगवान की जय।

शून्य बने तब देह में ध्यानी ध्याता नन्त।
एकमेक हो ध्यान से ध्याता पाए नन्त॥६॥

यात्रा कर तू शून्य से शिखर मिले स्वामेव।
जो कुछ भी ना जानता पाता सब स्वामेव॥७॥

7. सम्यग्दर्शन की पहचान करने और योग्य उपादान बनने की प्रक्रिया

सिद्धों की आराधना और सिद्धों की भक्ति का यह क्रम चल रहा है। इसी क्रम में आचार्य पूज्यपाद द्वारा रचित इस सिद्ध भक्ति का तृतीय पद्य पढ़ते हुए आगे की बात प्रारंभ करते हैं...

स त्वन्तर्बाह्य- हेतु- प्रभव- विमल- सदृश- ज्ञान- चर्या
संपद्धेति- प्रघात- क्षत- दुरिततया, व्यञ्जिताचिन्त्य-सारैः।
कैवल्यज्ञानदृष्टि - प्रवर - सुख - महावीर्य - सम्यक्त्वलब्धि-
ज्योतिर्वातायनादि- स्थिरपरमगुणै- रद्भुतैर्भासमानः ॥3॥

योग्य उपादान बनने की प्रक्रिया



आचार्य कहते हैं- यह जो साध्य की सिद्धि होती है, सिद्ध भगवन्तों को अपनी स्व-आत्मा की उपलब्धि होती है। यह किस प्रक्रिया के माध्यम से होती है? उस प्रक्रिया को यहाँ पर और थोड़ा आगे बढ़ाते हुए कहा जा रहा है। एक शब्द ऊपर आया था **‘योग्य उपादान युक्त्या’** यह आप लोगों ने सुना था। **योग्य उपादान की युक्ति से साध्य की सिद्धि होती है।** उसी तरह से यहाँ पर कहा जा रहा है कि वह **योग्य उपादान कैसे बनता है?** आचार्य कहते हैं- **‘स त्वन्तर्बाह्य- हेतु’** उसके लिए अन्तरंग हेतु और बाह्य हेतु दोनों प्रबल होने चाहिए और इन्हीं दोनों हेतुओं से **‘प्रभव’** अर्थात् उत्पन्न होता है। वह निर्मल **‘सदृश- ज्ञान-चर्या’** वह निर्मल सम्यग्दर्शन, निर्मल सम्यग्ज्ञान और निर्मल सम्यग्चारित्र **‘संपद्धेति’** इन्हीं संपत्तियों की **‘हेति’** से, हेति कहते हैं- एक तरह की छैनी। छैनी समझते हैं न! **‘जिन परम पैनी सुबध छैनी डारी अंतर भेदिया’** एक यह छैनी जिसके माध्यम से हमारे कर्म कटते हैं। हमारी आत्मा से वे कर्म हटते हैं, इसके लिए जो सम्पत्ति चाहिए, वह यह निर्मल सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र की ही होनी चाहिए। इसी संपत्ति की छैनी से, इसी के प्रघात से क्षत कर दिया है जिन्होंने **‘दुरत’** अर्थात् पाप को और उससे उत्पन्न हो गया **‘व्यञ्जिताचिन्त्य-सारैः’** अचिंतय सार्वभूत सुख जिनकी आत्मा में उत्पन्न हो गया, उसके लिए यहाँ पर यह दो लाइन में एक प्रक्रिया बता दी गई। सबसे पहली जरूरत है कि जब तक दोनों कारण सही ढंग से नहीं मिलेंगे तब तक कार्य नहीं होता। दो कारण एक अन्तरंग कारण और एक बाह्य कारण और यह दोनों ही कारण तीनों चीजों के लिए आवश्यक हैं। सम्यग्दर्शन के लिए भी, सम्यग्ज्ञान के लिए भी और सम्यग्चारित्र के लिए भी।

सम्यग्दर्शन के बहिरंग हेतु

अगर हम सम्यग्दर्शन की बात करते हैं तो सम्यग्दर्शन के लिए भी अन्तरंग का कारण होना चाहिए और बाहर का भी कारण होना चाहिए। अर्थात् अगर आपके अन्दर सम्यग्दर्शन का सही परिणाम उत्पन्न होगा तो उसके लिए यह दोनों हेतु आवश्यक हैं। एक हेतु से काम नहीं चलता। बहिरंग हेतु अलग होते हैं और अन्तरंग हेतु अलग होते हैं। अगर हम सम्यग्दर्शन की बात करें तो बाहरी कारण तो हमारे हाथ में होते हैं हम उन्हें मिला लेते हैं। आचार्यों ने कहा...सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिए बाहरी तीन कारण मनुष्य के लिए चाहिए। कितने? तीन कारण।

- जाति स्मरण
- जिनबिंब दर्शन
- धर्म उपदेश श्रवण

जाति स्मरण से सम्यग्दर्शन

कभी-कभी सम्यग्दर्शन जाति स्मरण से भी हो जाता है। किससे? जाति स्मरण का मतलब होता है पूर्व जन्म की बातें याद आ जाना। पूर्व जन्म के संबंधों का ज्ञान हो जाना। यह जाति स्मरण कहलाता है। ऐसी अनेक घटनाएँ पुराणों में हैं, जिसके माध्यम से जाति से जो भी कारण होंगे, वे सब बाहरी कारण हैं। जब आपका मन किसी पुरानी स्मृति में लग गया और आपको सहसा याद आ गया कि पहले मेरा जन्म वहाँ हुआ था, मैं यहाँ था, मेरा इस तरीके से मरण हुआ था और मैं यहाँ पर आकर उत्पन्न हुआ हूँ, तो आपको अपने आप अपनी आत्मा पर विश्वास हो सकता है। तत्त्व पर श्रद्धान हो सकता है। बंध और मोक्ष की व्यवस्था पर श्रद्धान हो सकता है। इस श्रद्धान होने का नाम ही सम्यग्दर्शन है, believe करना। हम जान तो लेते हैं लेकिन believe नहीं कर पाते और जब हमारे इस तरीके का श्रद्धान उत्पन्न हो जाता है, एक विश्वास उत्पन्न हो जाता है तो वही सम्यग्दर्शन का भाव कहलाता है।

जिनबिम्ब दर्शन से सम्यग्दर्शन

वह सम्यग्दर्शन का भाव प्राप्त करने के लिए आचार्य कहते हैं- बाहरी कारण पहला तो जाति स्मरण है, दूसरा जिनबिंब दर्शन। भगवान के बिंब का दर्शन करना भी सम्यग्दर्शन का कारण है। अर्थात् प्रतिदिन आप जो दर्शन करते हैं, यह दर्शन भी आपके लिए एक नियम सा तो बन जाता है लेकिन इसके पीछे की अगर आपको सैद्धान्तिक प्रक्रिया पता हो तो इस दर्शन से भी बहुत लाभ हो जाता है। भगवान का दर्शन एक नियम के रूप में करना क्योंकि हम जैन हैं, हम आते हैं। मन्दिर में आना हमारा कर्तव्य है, हमें प्रतिदिन भगवान के दर्शन करना चाहिए। इसलिए होता है, यह एक अलग प्रक्रिया होती है। लेकिन अगर हम थोड़ा सा ज्ञान के साथ में भगवान का दर्शन का भी लाभ उठाते हैं तो आचार्य कहते हैं उससे भी सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है। जिनेन्द्र भगवान के बिंब के दर्शन से भी हमें पूरा का पूरा संसार का स्वरूप समझ में आ जाता है। ये भगवान क्यों ऐसे बैठे हैं? आँख बंद किए हुए, आँख नीची किए हुए। क्यों इनके अन्दर

सब कुछ इतना शान्त सौम्य वातावरण लहरा रहा है? क्या इन्होंने प्राप्त कर लिया है? क्या इनका यह स्वरूप है? बाहरी स्वरूप क्या है? अन्तरंग स्वरूप क्या है? यह जैसा भी कुछ हमारे दिमाग में आने पर जो हमारे अन्दर एक आल्हाद उत्पन्न हो जाए तो वह जिनबिंब दर्शन भी सम्यग्दर्शन का कारण बन जाता है।

धर्म उपदेश श्रवण से सम्यग्दर्शन

सम्यग्दर्शन के अभी हम आपको बाहरी कारण बता रहे हैं। पहला-जाति स्मरण, दूसरा- जिनबिंब दर्शन और तीसरा- **धर्म उपदेश सुनना**। गुरुओं का उपदेश सुनना। उपदेश सुनने से भी हमारे दिमाग के तंतु खुलते हैं। हमें वह विशुद्धि बढ़ती है। हमें वह अन्तरंग का **सम्यग्ज्ञान** उत्पन्न होता है जो हमें बाह्य जगत में नहीं होता और उसके माध्यम से भी हमारे अन्तरंग में सम्यग्दर्शन के परिणाम बन सकते हैं।

सम्यग्दर्शन के अन्तरंग कारण: पाँच लब्धियाँ

यह बाहरी कारण आचार्यों ने कहे हैं। मनुष्यों की अपेक्षा से कहा जा रहा है, तिर्यचों की अपेक्षा से कहा जा रहा है। दोनों के लिए यह तीन कारण बताए और जब हम अन्तरंग कारण की बात करते हैं तो आचार्य कहते हैं यह बाहरी कारण होने पर अन्तरंग में जो कारण होना चाहिए...वह पाँच लब्धियाँ हैं। ये अन्तरंग कारण हैं। कौन सी पाँच लब्धियाँ कही जाती हैं? जिसे हम **क्षयोपशम लब्धि कहते हैं, विशुद्धि लब्धि कहते हैं, देशना लब्धि कहते हैं, प्रायोग्य लब्धि कहते हैं और अन्तिम पाँचवीं करण लब्धि कही जाती है। ये पाँच लब्धियाँ होती हैं।** बाहर के भी आपको कारण मिलते रहे, अन्तरंग के भी कारण बढ़ते रहे और दोनों कारणों की जब प्राप्ति हो जाती है तब अन्तरंग में वह सम्यग्दर्शन का परिणाम, सम्यग्ज्ञान का, सम्यग्चारित्र का वह परिणाम घटित होता है। **सम्यग्ज्ञान के लिए बाहरी कारण अलग हो सकते हैं, सम्यग्चारित्र के लिए बाहरी कारण अलग हो सकते हैं।** लेकिन अन्तरंग कारण अगर एक कहा जाए तो वह है- **आत्म विशुद्धि**। क्या है? आत्म विशुद्धि। क्षयोपशम लब्धि से लेकर अन्तिम जो करण लब्धि है वहाँ तक आत्म-विशुद्धि ही बढ़ती चली जाती है। उस विशुद्धि के नाम अलग-अलग आ जाते हैं लेकिन वह सब क्या है? अपनी विशुद्धि को बढ़ाना।

क्षयोपशम लब्धि

क्षयोपशम लब्धि में आपके पास में जो आपको जन्म से मिला है वह सब आपका क्षयोपशम लब्धि समझ लो। जैन कुल में आपको जन्म मिला, मनुष्य का शरीर मिला, अच्छी बुद्धि मिली, विरोग शरीर मिला। यह सब क्या है? यह सब क्षयोपशम लब्धि है।

विशुद्धि लब्धि

इसके बाद में आपको विशुद्धि बढ़ानी है, अपने कर्मों की अनुभाग शक्ति को कम करना और उसके लिए अपने अन्तरंग में एक आल्हाद रूप परिणाम उत्पन्न करना, आनन्द का परिणाम अपने अन्दर लाना, संक्लेश को छोड़ना, ये विशुद्धि बढ़ाने के कार्य हैं।

देशना लब्धि

यह बाहरी साधनों के माध्यम से जब होने लग जाते हैं तो विशुद्धि बढ़ती है तब वह देशना लब्धि भी काम करती हैं। देशना लब्धि गुरु के उपदेशों को सुनना। **यह बाहरी कारण भी है और एक अन्तरंग कारण भी है।** ये सबसे अच्छी चीज आपको बता रहा हूँ। देशना लब्धि गुरु उपदेश के रूप में बाहरी कारण में भी रखी गई है और वही देशना लब्धि अन्तरंग कारण भी है जब आपकी विशुद्धि बढ़ते-बढ़ते हुए उपदेश बिल्कुल आत्मसात हो जाए और अन्तरंग में आपके परिणाम इतने आनन्दमय हो जाएँ कि हाँ! आज हमने जो सुना है यह वास्तव में तथ्यभूत बात है, सत्य बात है, परमार्थ की बात है। ऐसी बातें हमें कभी कहीं सुनने को नहीं मिलती। ऐसा परिणाम अन्तरंग में जब उत्पन्न होने पर विशुद्धि और बढ़ जाती है और परिणामों में निर्मलता आ जाती है उसका नाम देशना लब्धि कहा जाता है। बाहर की देशना से ही वह **देशना लब्धि** की भी प्राप्ति होती है। देशना सुनना अलग बात है और देशना की लब्धि हो जाना अलग बात है। भगवान के समवशरण में पहुँचने के बाद में जैसे इंद्रभूति गणधर ने भगवान की देशना सुनी और देशना सुनने के बाद उनके अन्तरंग में कहीं कोई किसी भी तरीके का संदेह नहीं रहा। इतनी निर्मलता, इतनी निर्मलता, इतनी निर्मलता आ गई कि तत्क्षण उनके अन्दर का सारा का सारा ज्ञान तो सम्यग्ज्ञान हो ही गया। बड़े-बड़े ज्ञान की ऋद्धियाँ प्रकट हो गई। अवधि ज्ञान, मनःपर्यय ज्ञान जैसे ज्ञान प्रकट हो गए। यह उसी देशना को सुनकर। देशना लब्धि रूप जो एक ज्ञान के माध्यम से सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति हो जाना, यह भी अन्तरंग के लब्धियों के माध्यम से होता है।

दर्शन, ज्ञान, चारित्र की लब्धियों की प्राप्ति good achievements

अन्तरंग और बहिरंग की लब्धियाँ, ये कारण जब मिल जाते हैं तो दर्शन की भी, ज्ञान की भी और चारित्र की भी तीनों लब्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। इन लब्धियों को ही वास्तव में कहा जाए...बहुत बड़े-बड़े good achievements. जिन्हें आप लोग कहते हो अपने career में हमने क्या कमाया? क्या हमने achieve किया? इस आध्यात्मिक जो यात्रा है, इस आध्यात्मिक यात्रा के अंतर्गत यह achievement कहलाता है। सम्यग्दर्शन को जिसने प्राप्त कर लिया, उसने बहुत बड़ा लब्धि मतलब बहुत बड़ी चीज achieve कर ली। सम्यग्ज्ञान जिसने प्राप्त कर लिया, उसने बहुत बड़ी चीज achieve कर ली। **सम्यग्चारित्र का जिसने पालन कर लिया, उसने बहुत बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली। यह आत्मा की उपलब्धियाँ हैं।** इनके लिए कहा जा रहा है कि जो अपनी विशुद्धि को बढ़ाते हुए देशना के माध्यम से भी, अब ये प्रायोग्य लब्धियाँ और करण लब्धियाँ, ये तो अन्तरंग में घटित होने वाले इतने बड़े-बड़े परिणाम हैं, इतनी विशुद्धि के परिणाम हैं कि उनसे वह कर्म अपने आप घटते-कटते चले जाते हैं। अभी तो हमें इन पाँच लब्धियों के नाम भी याद नहीं होते हैं। **पहली लब्धि- क्षयोपशम लब्धि, दूसरी लब्धि- विशुद्धि लब्धि, तीसरी लब्धि जो आपके सामने चल रही है।** विशुद्धि के साथ देशना सुनीगे तो आनन्द आएगा, क्लेश के साथ देशना सुनीगे तो देशना का कोई महत्व नहीं रह जाएगा।

प्रायोग्य लब्धि

इन तीन लब्धियों के होने पर प्रायोग्य लब्धि के परिणाम होते हैं जिसमें कर्मों की स्थितियाँ बहुत कम हो

जाती हैं। अंतः कोटा-कोटी प्रमाण उनकी स्थितियों का ही केवल बंध होता है। बड़े-बड़े सागरों प्रमाण जो स्थितियाँ बनती थी, वे नहीं बनती। इस तरह से और जब विशुद्धि बढ़ती चली जाती है तो उसी को कहते हैं- **करण लब्धि**। चौथी- **प्रायोग्य लब्धि**। कौन सी लब्धि? इसमें आप बहुत कुछ योग्य बन जाते हैं। चौथी लब्धि में देशना सुनते-सुनते आपकी अन्तरंग की योग्यता इतनी बन जाती है कि वह सम्यग्दर्शन के लिए भी आपको कारण बना सकती है और सम्यग्चारित्र की ओर भी आपको बढ़ा सकती है।

करण लब्धि

प्रायोग्य लब्धि के बाद में अन्तिम आती है- **करण लब्धि**। जिस करण लब्धि में ऐसे-ऐसे अद्वितीय परिणाम, अपूर्व परिणाम उत्पन्न होते हैं, जिसके माध्यम से कर्मों के जितने भी हमारे ऊपर आवरण होते हैं वे उस संबंधी गुण की प्रकटता के लिए हट जाते हैं। सम्यग्दर्शन को आवरित करने वाले कर्म अलग होते हैं, सम्यग्चारित्र के ऊपर आवरण डालने वाले कर्म अलग होते हैं और उन सब कर्मों को हटाने के लिए अलग-अलग type की विशुद्धि चाहिए।

आत्म विशुद्धि कैसे होगी?

लेकिन शुरुआत कहाँ से होगी? शुरुआत सम्यग्चारित्र से नहीं होगी। **शुरुआत सम्यग्दर्शन से होगी**। पहले यहाँ के जो मोहनीय कर्म के परिणाम हैं यह अन्तरंग और बहिरंग दोनों हेतुओं से जब हटते हैं तो सम्यग्दर्शन का भाव उत्पन्न होता है। **तत्त्व का श्रद्धान करना, देव शास्त्र गुरु का भी श्रद्धान सही ढंग से कर लेना यह भी अपने आप में सम्यग्दर्शन का भाव कहा गया है**। देखा-देखी का भाव नहीं कहा गया। क्या सुन रहे हो? वीतराग भगवान पर ही श्रद्धान होना। दुनिया में भगवान तो अनेक हैं लेकिन हम किसी की बुराई नहीं कर रहे हैं। लेकिन भगवान की जो दशा वास्तव में दिखाई देती है, भगवान का जो स्वरूप होना चाहिए, वह अन्तरंग में ऐसा भाषित होने लग जाए कि वीतरागता के अन्दर ही भगवान का स्वरूप होता है। जहाँ हमें वीतरागता नहीं दिखाई देती वहाँ पर वह भगवान का स्वरूप नहीं हो सकता। सरागता में कभी भगवान की कल्पना हो ही नहीं सकती। राग-द्वेष-मोह आदि, हिंसा आदि, युद्ध आदि के बीच में रहने वाले पुरुषों के लिए भगवान की कल्पना आप कर सकते हो। लेकिन अगर कोई व्यक्ति बिना किसी पक्षपात के अच्छे ढंग से सोचकर, विचार कर, यह निर्णय लेने की कोशिश करेगा कि भगवान कैसे होने चाहिए? तब उसे भगवान ऐसे ही नजर आने चाहिए जैसे बिल्कुल उनके ऊपर न कोई आवरण है, न भीतर है, न बाहर है। निरावरण, देह भी निरावरण, आत्मा भी निरावरण। ऐसा अन्तरंग बहिरंग से सच्चा पुरुष ही सच्चा भगवान हो सकता है। इस तरह की विचारधारा दृढ़ता से मन में समा जाने का नाम सम्यग्दर्शन कहलाता है।

निर्ग्रथ गुरु का श्रद्धान सम्यग्दर्शन का कारण

जब आपको ऐसे भगवान, भगवान लगने लगेंगे तब आपको उनकी वाणी पर जो श्रद्धान होगा, वह शास्त्र का श्रद्धान होगा। वह श्रद्धान आपके अन्दर भी विशुद्धि को बढ़ाता चला जाएगा। **वह भी सम्यग्दर्शन कह-लाएगा और उन्हीं शास्त्रों के अनुरूप मोक्ष मार्ग पर चलने वाले गुरुओं को देख कर के भी आपके अन्दर यह श्रद्धान आएगा कि निर्ग्रथ गुरु का श्रद्धान करने के लिए हमारे अन्तरंग में ऐसा आह्लाद का**

भाव होना चाहिए कि वह निर्ग्रथ गुरु आरंभ परिग्रह, क्रोध कषाय, काम कषाय इनसे रहित होने चाहिए। इस तरह का जब भाव आपके अन्दर आएगा तो आप को जो श्रद्धा की भावना गुरु के प्रति उत्पन्न होगी, वही श्रद्धान आपके लिए सम्यग्दर्शन का कारण बनेगा। ये छोटी चीजें नहीं हैं, आज की दुनिया में बहुत बड़ी चीजें हैं। हमारा श्रद्धान का भाव एक जगह हो। ज्ञान का भाव कहीं भी जाए। knowledge हमें सब हो सकती है। दुनिया में कितने तरह के देवता हैं? कितने तरह के देवता कितने तरह से पूजे जाते हैं? कितनी उनकी प्रतिष्ठा बढ़ रही है? दुनिया में कितने-कितने लोग उनको मानने वाले हैं? यह सब knowledge की चीजें हैं। हो सकता है। लेकिन आस्था, श्रद्धा, विश्वास, अन्तरंग से अपने आप, रात के स्वप्न में भी यह कहे वीतराग भगवान के दर्शन के बिना कोई दर्शन हमारे मन को आह्लाद नहीं देता तो इस परिणाम का नाम सम्यग्दर्शन कहलाता है। अपने आप देख कर के ही भाव उमड़ने लग जाएँ।

स्वप्न में आए आचार्य श्री

जैसे आचार्य श्री को देखकर अपने-आप भाव उमड़ते हैं। अपने आप इस आत्मा ने जिन्हें कभी देखा नहीं। जिनका चित्र भी तब देखा जब पहले उनको स्वप्न में देख लिया। आप सोच सकते हो कि कभी किसी का स्वप्न पहले देख लिया जाए और उस व्यक्ति को बाद में देखा जाए। ऐसा हो सकता है? हमें भी आश्चर्य होता है लेकिन हमारे साथ वह चीज घटित हुई। वह आज भी मुझे याद आती है और आज भी मैं उस आश्चर्य से भर जाता हूँ कि ऐसा कैसे हुआ? क्योंकि जहाँ जन्म हुआ वहाँ तो वह केवल एक चातुर्मास किए और निकल गए। जिस चातुर्मास में उन्होंने वहाँ चातुर्मास किया, उस चातुर्मास में इस काया का जन्म हुआ। **1975 का फिरोजाबाद में जब चातुर्मास था** तब इस काया का, इस आत्मा के लिए नए शरीर का जन्म हुआ। अब आप सोचो उसके बाद में वह कभी उधर आए नहीं और उधर के लोग भी उधर कभी इस तरह से दर्शन आदि करने ज्यादा आते नहीं। मन्दिरों में भी कोई ज्यादा उनकी photo वगैरह उस समय पर थी नहीं। बस नाम जरूर रहता था। नाम सुनने में आ जाता था...बुंदेलखंड में एक बहुत बड़े आचार्य हैं, जिनके दर्शन कर लो तो ऐसा लगता है कि भगवान के दर्शन कर लिए। यह नाम सुनने में आता था। उस समय छोटी सी उम्र में भी यह नाम सुनते-सुनते, एक दिन उनके दर्शन स्वप्न में हो गए और स्वप्न में होने के बाद में फिर वह एकदम से line बदलने लग गई। दिमाग में अलग-अलग चीजें आने लग गई। पहले दिमाग वही चल रहा था जैसे आप लोगों का चलता है। IIT करना है, यह job करना है, यह career बनाना है। पहले यही दिमाग चलता था। यह नहीं होगा तो यह business करेंगे, यह business करेंगे। दुनिया की ऐसी कोई गलियाँ नहीं जो छान न ली हों थोड़ी सी उम्र में। लेकिन फिर भी वह एक स्वप्न आने के बाद में इस तरह से भीतर से एकदम से line हटने लगी।

आचार्य श्री के प्रथम दर्शन

अन्तरंग के परिणाम बदलने लगे कि उसी परिणाम बदलने का यह परिणाम निकला कि उनके दर्शन करने के लिए जब पहली बार उनका दर्शन किया था। पहली बार उनके दर्शन करने से पहले कितनी-कितनी मन में योजनाएँ बनाई थी। **आचार्य महाराज का पहली बार अगर दर्शन करूँगा तो जहाँ पर उनके दर्शन होंगे, वहीं पर मैं बिल्कुल उनके चरणों में लेट जाऊँगा।** चाहे वहाँ पर मिट्टी हो, चाहे नाली बह रही हो,

ऐसी मन में योजना बना कर रखी थी। पहले दर्शन में उनके चरणों में लेट कर के ही दर्शन करूँगा। किसी ने समझाया नहीं लेकिन अपने अन्तरंग का भाव अपने आप कोई चीजों को सुनकर उनके प्रति इतनी श्रद्धा केवल सुन कर उत्पन्न हो गई। लेकिन दर्शन बहुत बाद में हुए। उससे पहले भी एक संघ में पहुँच गए और वहाँ पर रहने लग गए और अभी आचार्य महाराज के दर्शन नहीं हुए। उस संघ को छोड़ कर फिर दर्शन करने के लिए निकला। कोई बहाना बनाकर और वह दर्शन सबसे पहला कुण्डलपुर में 1995 के चातुर्मास में आचार्य श्री का सबसे पहला दर्शन हुआ था। उसी समय पर मैंने जगनमोहन लाल जी पंडित जी थे, उनको देखा था। उससे पहले हमने कभी उनको नहीं देखा था। उस समय उनकी प्रतिमाएँ बढ़ गई थी। समाधि की प्रक्रिया चल रही थी। आचार्य श्री वहाँ जिस मंदिर में, बावन मंदिर में बैठते थे, उसी के सामने उनका एक छोटा सा स्थान बना था। वहाँ पर उस समय पहली बार मैंने उन पंडित जी को देखा था, समाधि ले रहे हैं। बस! केवल जानने में ज्यादा नहीं आया था। नाम वगैरह तो विद्वानों के तो बाद में समझ में आया कि यह बहुत बड़े विद्वान हैं।

गुरुओं के दर्शन के आनन्द का भाव ही सम्यग्दर्शन का भाव

जब बाद में थोड़ा उनको पढ़ा समझा लेकिन उस समय पर थोड़ा सा देखा था। पहली बार जब आचार्य श्री का दर्शन किया तो उनके चरणों में ऐसे ही लेट गया जैसी कल्पना थी और लेटने के बाद में जब उठा, उनकी तरफ देखा तो मैं कुछ बोलता उससे पहले गुरु जी ने मुझसे पूछ लिया। मुझे लगा कि मुझे स्वर्ग के सारे आनन्द मिल गए जो आनन्द होने चाहिए। उसके बाद ही तत्क्षण यह मन में भाव आ गया, जीवन में अब अगर गुरु बनाऊँगा तो इन्हीं को बनाऊँगा, नहीं तो निगुरु रह जाऊँगा। निगुरु जानते हो? बिना गुरु के रह जाऊँगा। नहीं तो बिना गुरु के अपना जीवन जी लूँगा। लेकिन अगर गुरु बनाऊँगा तो इन्हीं को बनाऊँगा। शरण में रहूँगा तो इन्हीं की रहूँगा। **सिर्फ एक भाव उनके दर्शन से प्रकट हो गया। क्या उनका उस समय पर शरीर था? क्या उनका उस समय पर बैठने का बोलने का ढंग था?** देख कर उनके शरीर पर, जब वह लघु शंका इत्यादि करके आते और उनके पैरों पर पानी रहता तो पानी को भी अगर हम अपने napkin से हटा लेते, उस पानी को भी अपने माथे पर लगा लेते तो ऐसा लगता है तीर्थंकर को छू लिया हो। इतना आनन्द आता था। उस आनन्द के भाव से ही मेरे मन में भाव आया कि यह आनन्द का भाव ही सम्यग्दर्शन का भाव है। ऐसा आनन्द जब गुरुओं के दर्शन से आने लग जाता है तब सम्यग्दर्शन होता है। हमें नहीं पता कि कब अन्तरंग में प्रायोग्य लब्धि हो गई? कब अन्तरंग में करण लब्धि हो गई? लेकिन जीवन में कभी-कभी, किसी-किसी दर्शन में वह आनन्द आता है और वही आनन्द हमारे जीवन को भीतर से परिवर्तित कर देता है।

आचार्य श्री के प्रथम दर्शन से ही हम उन्हीं के हो गए

दुनिया कुछ भी कहे, कितना ही विरोध करे, कितनी ही बाहर की परिस्थितयाँ प्रतिकूल हों लेकिन अगर भीतर से कुछ घटित हो गया है, तो सब कुछ अनुकूल भी होता चला जाता है। दूसरे संघ का था। दर्शन पहली बार किए। **दूसरे संघ के लोग कहते थे...दूसरे संघ के ब्रह्मचारी को, दूसरे संघ के व्यक्ति को महाराज देखते तक नहीं है। कहाँ जा रहे हो? लेकिन भाव क्या था? दर्शन हमें करना है।** देखना उन्हें

नहीं है, उनको हमें देखना है। हमारे अन्दर ललक है कि हमें उनका दर्शन करना है। वह हमें देखें या न देखें, कोई बात नहीं और वह दर्शन करने के बाद में जब उन्होंने अपने मन से पहली बार पूछ लिया, यह उनके शब्द थे। क्यों कहाँ से आए हो? यह उन्होंने सबसे पहली बार पूछा था। बस उसी में इतना glad-glad हो गया कि आज तक भी वह याद रहता है। वह विशुद्धि, वह आनन्द और उस समय पर दो-तीन दिन उनके निकट रहा। बस केवल उनके चरण पोंछता रहता था, हाथ पोंछ लेता था। इतनी वहाँ पर मुझे सुविधा एक महाराज जी थे उन्होंने दे दी थी। 'बेटा पोंछ लिया कर, कर लिया कर' निकट में आने का उन्होंने मुझे एक उस समय पर एक अवसर दिया और वह अवसर आज भी याद आता है, तो याद करने से मन में आज भी उतनी विशुद्धि बढ़ जाती है, जितनी 95 में बढ़ती थी। इस तरह की जो विशुद्धियाँ हैं, होती हैं, यही हमारे लिए, मुझे महसूस होता है कि यह सम्यग्दर्शन का कारण बन जाती है। फिर अपने आप मन से भाव निकल आते हम उन्हीं के हो गए हैं। और किसके होना है? आपको लगता है यह क्या महाराज पढ़ते हैं? हम उन्हीं के हो गए। किसके हो गए? अब हो गए तो हो गए। तुम्हें समझ में नहीं आता? नहीं आता। हमारी अपनी समझ है, हमारा अपना समर्पण है, हमारे अपने भाव हैं।

सच्चे देव- शास्त्र- गुरु के प्रति समर्पण का भाव ही सम्यग्दर्शन का भाव

यह जो भावना भीतर से आ जाती है, वीतरागता के प्रति, भगवान् जिनेंद्र देव के प्रति, गुरुओं के प्रति, शास्त्रों के प्रति- एक ऐसा समर्पण का भाव, इसके अलावा दुनिया में कुछ भी सच्चा नहीं है। इसी को आचार्यों ने सम्यग्दर्शन का भाव कहा है।

अन्तरंग में कषायों की मन्दता से उत्पन्न आनन्द सम्यग्दर्शन का परिणाम

यह भाव केवल बाहरी कारणों से नहीं मिलता। बाहर में तो आचार्य महाराज हो, चाहे कितने प्रकार के जिनबिंब हो, चाहे बड़े से बड़े जिन मन्दिर हो, सब कोई, सब कुछ देखता है। लेकिन अन्तरंग में भी अगर उस समय पर कर्मों की मन्दता से, परिणामों की मन्दता से, कषायों की मन्दता से, आनन्द का भाव उत्पन्न हो जाए, संक्लेश बिल्कुल छूट जाए और विशुद्धि के भावों से जिस समय पर तुम्हारा मन भर जाए, उसे अपनी dairy में हमेशा के लिए अंकित कर लेना। Dairy नहीं भी हो तो अपने दिमाग में हमेशा के लिए feed कर लेना। यह हमारा जो परिणाम है ऐसा परिणाम ही सम्यग्दर्शन का परिणाम होता है। किसी से कहने की जरूरत नहीं।

व्यवहार सम्यग्दर्शन के बाद ही आत्मानुभव सम्यग्दर्शन

लोग कहते हैं...आत्मानुभव से सम्यग्दर्शन होता है। कभी नहीं होता है! **आत्मानुभव वाला सम्यग्दर्शन दूसरा सम्यग्दर्शन है। वह बाद में होगा। वह तब होगा जब तुम निर्ग्रथ बन जाओगे।** लेकिन निर्ग्रथ बनने से पहले तुम्हें जो सम्यग्दर्शन होगा, वह तब होगा जब तुम निर्ग्रथ गुरुओं को देख कर तुम्हारे आँखों से आँसू छलकने लग जाएँगे। यह सम्यग्दर्शन पहले होना चाहिए। तब जाकर के आत्मानुभव, आत्मानुभूति वाला सम्यग्दर्शन होता है। लोग सबसे पहले उस सम्यग्दर्शन को पकड़ लेते हैं, सम्यग्दर्शन में आत्मा का अनुभव होता है। बड़े-बड़े सम्यग्दृष्टि कोई भी सम्यग्दर्शन की चर्चा करेगा, गुजरात में तो यह चलता ही है,

trademark है। क्या? तुमको आत्मानुभव हुआ कि नहीं? तुमने आत्मा दर्शन किया कि नहीं? आत्मानु-भूति की कि नहीं? पुरे गुजरात के अन्दर सिखाया जाता है। यह पूरा एक trend चलता है, sect चलता है। आत्मानुभव के बिना सम्यग्दर्शन नहीं होता। मैं आपसे कहना चाह रहा हूँ, यह बहुत बड़ा भ्रम है। शास्त्रों को पढ़ने के बाद भी लोगों के अन्दर इतना बड़ा-बड़ा भ्रम पैदा हो जाता है कि वह आत्मानुभव के सम्यग्दर्शन को तो जान पाते हैं लेकिन वास्तव में पहले जो सम्यग्दर्शन होना चाहिए, जो हम कहते हैं...देव शास्त्र गुरु की श्रद्धा से सम्यग्दर्शन होता है, वह सम्यग्दर्शन जब पहले होगा तब जाकर बाद में आत्मानुभव वाला सम्यग्दर्शन होगा। वह सम्यग्दर्शन की कोई चर्चा नहीं करता। वह तो हम कर ही लेते हैं, हम गए थे, हमने दर्शन कर लिए थे, हमने महाराज को आहार दिए थे, हमने बातचीत कर ली थी, हमको आशीर्वाद मिल गया था। वह दर्शन की कीमत जब तक आपके लिए नहीं होगी तब तक आपको आत्मानुभव वाले सम्यग्दर्शन की कभी भी line मिलेगी नहीं। कहते रहोगे, कभी भी होगा नहीं।

देव- शास्त्र- गुरु के प्रति श्रद्धा से होता है- व्यवहार सम्यग्दर्शन

वह आत्मानुभव वाला सम्यग्दर्शन केवल और केवल निर्ग्रथ गुरुओं को, व्यवहार सम्यग्दर्शन है बाकी का जो श्रावकों के लिए होने वाला सम्यग्दर्शन है, जिसे व्यवहार सम्यग्दर्शन कहा जाता है। वह सबसे पहले यदि होगा तो वह निर्ग्रथ गुरुओं के, जिन बिंबों के दर्शन से होगा। शास्त्र के पढ़ने पर भी ऐसा आह्लाद जब आपके अन्दर आ जाए कि हमारे अन्दर देव और गुरु के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो जाए तो उस श्रद्धा से होगा। अन्यथा वह सम्यग्दर्शन आप जिंदगी भर कहोगे, गाओगे लेकिन होगा नहीं। **पहले परिणामों की निर्मलता चाहिए और वह परिणामों की निर्मलता आती है, जब कोई साधक समाधि लेता है।** आप देखना वह कितना बड़ा समर्पण करता है। सिद्धार्थ जी सामने बैठे हैं, पूछना इनसे, इन्होंने अपने पिताजी की भी समाधि देखी होगी और भी आप लोगों ने समाधियाँ देखी होंगी। समाधि लेने वाले क्षपक के अन्दर उस समय पर ऐसा आह्लाद उत्पन्न होता है कि उसे कुछ नहीं मिलता लेकिन ऐसा लगता है हमें जगत की सारी सम्पदा मिल गई। आपको लगेगा वह शरीर छोड़ रहा है, खाना-पीना छोड़ रहा है, सब छोड़ रहा है। लेकिन उसके भीतर अन्तरंग में लगता है कि मुझे तीन लोक की निधि मिल गई। **इस परिणाम का नाम सम्यग्दर्शन होता है।** यह परिणाम जीवन में कभी भी उत्पन्न हो सकता है। लेकिन उत्पन्न होना चाहिए। एक बार जरूर ऐसा परिणाम जिसके जीवन में आता है, समझना वही हमारे लिए अमूल्य निधि है। वह समाधि के समय पर भी हो सकता है, वह आपका व्रत धारण करने के समय पर भी हो सकता है। वह आपका कभी भी जिनेन्द्र भगवान के दर्शन के समय पर भी हो सकता है और कभी किसी निर्ग्रथ गुरु के दर्शन करने पर भी हो सकता है।

सम्यग्दर्शन की प्रक्रिया

मैं आज भी देखता हूँ कितने ही लोग दूर दराज से आते हैं। जब इस कुण्डलपुर में अभी जब मेला था। इस कुण्डलपुर में आया, इधर लोग न जाने कहाँ-कहाँ से आसाम से, सिंगापुर से, तमिलनाडु से, न जाने कहाँ-कहाँ से लोग उस समय पर कुण्डलपुर में आए। **आचार्य श्री के दर्शन के लिए तो लालायित रहते ही थे लेकिन हम लोगों के भी दर्शन करने पर उनकी आँखों में इतने आँसू आ जाते थे। मैं सोचता था कि**

किस लिए रो रहे हैं? महाराज! आपको अभी तक देखा नहीं। आज पहली बार आपके दर्शन हुए, आज पहली बार आपके दर्शन हुए। ऐसे रोने लग जाते, दर्शन करने के बाद में कि वह अपने भावों को संभाल नहीं पाते। क्या है? यह परिणामों की विशुद्धि कहलाती है। कौन किसके लिए रोता है भला? क्या हमने उनको दिया? क्या उसने हमसे लिया? दूर रहकर के भी केवल, ज्ञान के माध्यम से इतना जुड़ाव हो जाना कि एक न एक बार हमें ऐसे मुनि महाराज के भी दर्शन हो जाना। ऐसे भाव आ जाना और लोग जब इस तरह से दर्शन करके भावभूत हो जाते हैं तब लगता है कि आज भी सम्यग्दर्शन की प्रक्रिया जारी है।

ज्ञान व चारित्र में निर्मलता के परिणाम ही आत्मानुभव सम्यग्दर्शन

आत्मानुभव से कभी सम्यग्दर्शन नहीं होगा और कभी हो भी नहीं सकता। जिन लोगों ने अपनी गलत धारणा बना ली है वह हमारे सामने आकर के शास्त्रार्थ भी करना चाहें तो कर लेना। **कभी भी आत्मानुभव श्रावक को हो नहीं सकता। आत्मा कभी भी प्रत्यक्ष आपके लिए अनुभव में आ नहीं सकती क्योंकि आत्मा प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय है ही नहीं।** आत्मा के लिए अगर आपका अनुभव होगा तो पहले आपको ऐसे गुरुओं की शरण में ही आकर के अध्यात्म को सीखना पड़ेगा और उस अध्यात्म के अनुसार जब आपके परिणाम निर्मल होते चले जाएँगे, सम्यग्दर्शन के साथ में ज्ञान में निर्मलता आए, ज्ञान की निर्मलता के साथ चारित्र में निर्मलता आए और वह निर्मलता ऐसी बढ़ती चली जाए कि वह इंद्रभूति की तरह भगवान के समवशरण में बैठ कर ही सब छोड़ दे। कुछ नहीं चाहिए; बस! भगवान आपका रूप और आपका स्वरूप जैसा ही हमको चाहिए और कुछ नहीं चाहिए। ऐसे परिणामों का नाम आत्मानुभव होता है।

आत्मानुभूति कर्मों के क्षयोपशम का कारण

इंद्रभूति ने वह आत्मानुभव किया तो कैसे किया? पांडित्य धारण जब तक किए रहे तब तक नहीं हुआ। जब समर्पण किया, सब कुछ उनके लिए छोड़ दिया, उनके लिए वह आत्मानुभूति का परिणाम तुरंत उत्पन्न हो गया। उस आत्मानुभूति के कारण से अवधि ज्ञान, मनःपर्यय ज्ञान जैसे कर्म क्षयोपशम को प्राप्त हो गए। ऋद्धियाँ प्रकट हो गईं। **यह सारा का सारा जो जीवन चलता है, यह सब समर्पण के आधार पर चलता है और समर्पण की अपनी एक बहुत बड़ी साधना होती है और यह अन्तरंग में अपने कर्म जब उस लायक होते हैं तभी वह भाव आता है।** अन्तरंग में वह परिणाम जब तक आपके भीगेंगे नहीं, निर्मलता आएगी नहीं तब तक वह भावानुभूति आपको होगी नहीं।

पंचम काल में आत्मानुभूति नहीं, श्रद्धानुभूति करें

मैं कहता हूँ कि आज आत्मानुभूति की जरूरत नहीं है, आज श्रद्धानुभूति की जरूरत है। पहले अपनी श्रद्धा की अनुभूति करो कि हमें देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा है कि नहीं। तमाम ऐसे लोग दुनिया के अन्दर हैं, जो बहुत बड़ा-बड़ा शास्त्रों का स्वाध्याय करते हैं। **आत्मा की बहुत बड़ी-बड़ी चर्चाएँ करते हैं लेकिन श्रद्धा के नाम पर बिल्कुल शून्य होते हैं। गुरुओं के प्रति श्रद्धा होती ही नहीं है। पंचम काल में गुरु होते ही नहीं है। जिसकी श्रद्धा में यह है, गुरुओं के प्रति श्रद्धा कहाँ से होगी?** जब तक आपको इस तरह की श्रद्धा निर्गुण गुरुओं को देख कर के मैं कहता हूँ- पंचम काल में नहीं होते, नहीं होते होंगे। मैं कहता हूँ अगर

आपने यह सोच लिया कि नहीं थे, चलो कोई बात नहीं, नहीं होंगे, कोई बात नहीं। लेकिन अगर वर्तमान में आपको आचार्य गुरुदेव को देखने के बाद भी यह भाव उत्पन्न होता है तो मैं कहता हूँ...आपके अन्दर सम्यग्दर्शन की कोई भूमिका अभी तक बनी नहीं।

देशना लब्धि से परिणामों में विशुद्धि

सम्यग्दर्शन का भाव जब भी बनेगा आपको हमेशा देव, शास्त्र, गुरु के निकट आना पड़ेगा। उन्हें स्वीकार करना पड़ेगा। चाहे पंचम काल हो, चाहे चौथा काल हो। जितनी हमारी श्रद्धा है उसके अनुसार आज भी गुरुओं का विचरण हमें दिखाई देता है और उन्हीं के माध्यम से हमें जब यह तत्त्व का उपदेश सुनने को मिलता है तो देशना की लब्धि होती है। अन्यथा देशना लब्धि नाम की कोई लब्धि हमारे लिए प्रकट हो ही नहीं सकती। देशना लब्धि किसको कहते हैं? आचार्यों के उपदेश को देशना लब्धि कहा गया, निर्ग्रन्थ गुरुओं के उपदेश को देशना लब्धि कहा गया और **वह देशना लब्धि अगर हमें एक बार उपलब्ध हो जाती है तो हमारे परिणामों में इस तरह की विशुद्धि आए बिना रहती नहीं है।**

कर्मों का उदय

कभी भी कोई भी कार्य घटित होता है केवल बाहरी कारण से नहीं होता, अन्तरंग कारण भी देखा करो, यह जीवन में हर क्षण घटित करना। मानो आपके घर में कोई संतान उत्पन्न हुई और वह संतान जन्म से ही मान लो उसको paralysis है, अपाहिज है। क्या करेंगे? बताओ? डॉक्टरों को दिखाना, सब तरह के इलाज कराना और कराने के बावजूद भी उसमें कोई सुधार न दिखाई दे। तब क्या करेंगे? तब यह सूत्र लगाना। केवल बाहरी कारणों से ये सब काम नहीं होते हैं, अन्तरंग का कारण भी बहुत बलवान होता है। **अन्तरंग में कर्म का उदय तीव्र है तो तमाम बड़े-बड़े चिकित्सकों के पास में जाने के बावजूद भी उसके लिए कोई सुधार की गुंजाईश दिखाई नहीं देती तब हमें उसके भी कर्मों को देखना और अपने भी कर्मों को देखना।** वह जीव भी अपने कर्म का फल भोग रहा है क्योंकि कर्म के उसके लिए तीव्र उदय चल रहे हैं। जिस के कारण से कोई भी बाहर का इलाज उसके लिए काम नहीं कर रहा है। उस जीव के लिए भी यह समझ में आना और आपको भी समझ में आना सब कुछ हमारे हाथ में नहीं होता है। बाहरी कारण हमारे हाथ में हो सकते हैं, अन्तरंग कारण हमारे हाथ में नहीं होते। हम बाहरी कारणों की समायोजना कर सकते हैं, मन्दिर में बच्चे को ला सकते हैं, गुरु के उपदेश सुनने के लिए बच्चे को बिठा सकते हैं। लेकिन उपदेश सुनने के बावजूद भी उस बच्चे के अन्दर विशुद्धि आए, उसका मन उपदेश सुनने में लगे, यह उसकी अन्तरंग योग्यता के ऊपर निर्भर करेगा। हम संस्कार केवल बाहर से दे सकते हैं। अगर उसके अन्तरंग में कर्म का उदय अच्छा चल रहा है, तो वह संस्कार को ग्रहण कर लेगा, नहीं तो उसके लिए वह संस्कार भी कोई काम नहीं करता। एक ही पिता के चार पुत्र उत्पन्न होते हैं और चारों की दिशाएँ आप देखते हो अलग-अलग हो जाती हैं। दो भाई होते हैं। एक भाई का मन कहीं अच्छे मार्ग पर लगता है तो एक भाई का मन कहीं किसी दूसरे मार्ग पर लग जाता है और दोनों के संस्कार एक ही होते हुए भी दोनों की गतियाँ अलग-अलग हो जाती हैं। परिणामन अलग-अलग हो जाते हैं, विचार अलग-अलग हो जाते हैं, श्रद्धाएँ अलग-अलग हो जाती हैं, धर्म के रास्ते अलग-अलग हो जाते हैं। क्या करेंगे? इसलिए अन्तरंग कारण को भी

कभी-कभी देखा करो। किसी भी तरह की कोई भी बीमारी है तो वह हम केवल बाहर से नहीं सुधार सकते हैं, उसके भीतर का कारण भी अगर उस समय पर मंद उदय के साथ में होगा तो चिकित्सा संभव है। अगर तीव्र उदय होगा तो चिकित्सा भी संभव नहीं हो पाती। कितने ही लोग ऐसे होते हैं, छोटा सा बुखार आता है, छोटा सा जुकाम होता है, कुछ होता है, कुछ का कुछ दवाई ले लेते हैं, किसी की death हो जाती है और कोई ठीक भी हो जाते हैं। क्या करोगे? एक दवाई लेता है, उसके लिए रोग और बढ़ जाते हैं और एक दवाई लेता है वही doctor से और उसी तरह की वही दवाई लेने के बाद में उसके रोग ठीक हो जाते हैं। **समय कब, कहाँ पर किस तरह से हमारी बुद्धि को घुमा दे? कौन सा समय हमारे लिए कौन से अनर्थ का कारण बन जाए?** यह सब चीजें जब हमारे संज्ञान में रहती हैं तो हम बाहरी कारणों को देखने के साथ-साथ अन्तरंग कारण भी देखने लग जाते हैं। कर्म का उदय एक बहुत बड़ा कारण होता है। किसका उदय? कर्म का उदय। पहले के बंधे हुए कर्म के उदय इस तरह से हमारे सामने प्रक्रिया बना देते हैं, योजना बना देते हैं कि वे चीजें हमारे जीवन में घटित हो जाती हैं।

अपने अन्तरंग आत्मा के उपकार में लगे

अभी एक घटना हुई एक मुनि महाराज का murder हुआ। अब सबको वह चीज पता है तो हम क्यों उसको, क्या कहे, कुछ अलग से छुपाए उसको, आप सोचो कि उस कारण के लिए, उस कार्य के लिए क्या-क्या कारण मिले? उन कारणों को अगर हम देखें तो कहना पड़ेगा कि अन्तरंग और बहिरंग कारणों के मिलने से ही काम होता है। जब हम नहीं जानते हैं तो हम केवल बाहरी कारणों पर टूटते हैं, दुनिया टूटती है लेकिन हमें अन्तरंग कारण पर भी कभी-कभी ध्यान देना पड़ता है। क्या करोगे? कभी-कभी उपकार करना भी, किसी के लिए मदद करना भी, एक बहुत बड़ी दिक्कत का कारण हो सकता है। आदमी क्या उपकार करना छोड़ दे? क्या दया करना छोड़ दे? लेकिन अगर अन्तरंग में मान लो कोई घटना किसी कर्म के उदय से उसी तरह की संयोजना से बनती जा रही है तो वह बनाने वाला भी नहीं समझ पाता और उसके साथ में जो लोग जुड़ते हैं वे भी नहीं समझ पाते। किसी के लिए कोई उपकार किया, किसी को कोई पैसे कहीं से दिला दिए, बाद में वही पैसे माँगने के लिए फिर से कहा गया तो अब ये पैसे कहाँ से दिए जाए? व्यक्ति को ही समाप्त कर दिया जाए। उपकार भी आदमी के लिए कभी-कभी अपकार का कारण बन सकता है। तब जाकर वह अध्यात्म याद आता है जो आचार्य पूज्यपाद देव ने कहा है बाहरी किया हुआ उपकार भी वास्तव में उपकार नहीं होता है, इसलिए अपने अन्तरंग आत्मा के उपकार में लगे।

उत्तम अन्तरंग-बहिरंग कारण मिलना आत्मा की संपत्ति

वह जो बाहरी उपकार है, वह उपकार भी 'परोपकृतिमुत्सृज्य स्वोपकारपरो भव' क्या कहा गया? पर के उपकार को भी छोड़ कर के स्वयं के उपकार में लगे। तब ये आध्यात्मिक बातें याद आती हैं क्योंकि पर उपकार करने पर भी ऐसा अपकार देखने को मिलता है। इसलिए आचार्यों ने कहा इस संसार में किसी के पीछे पड़ो नहीं। संसार की भलाई के कामों में भी ज्यादा पड़ो नहीं, कुछ नहीं होना संसार का। भला होगा सो होता रहेगा। अपना भला पहले देखो। इतने बड़े आचार्य जब यह बात कहते हैं तो सामान्य से समझ में नहीं आती। परोपकार नहीं करें और दुनिया में परोपकार का ही सबसे बड़ा नाम होता है। परोपकारी आदमी

को ही भगवान कहा जाता है। स्व उपकार में अगर कोई लगा हो तो उसे कोई भगवान नहीं कहेगा। परोप-कार इतनी बड़ी चीज है लेकिन कभी-कभी वह परोपकार के जब ऐसे प्रत्यक्ष परिणाम दिखाई देते हैं, ऐसे उसके प्रति उत्तर मिलते हैं तब जाकर उन आचार्यों की बातें याद आती हैं। यह परोपकार भी हमारे लिए अहित का कारण बन सकता है, बन जाता है। **‘उपकुर्वन्परस्याज्ञो दृश्यमानस्य लोकवत्’** यह उपकार तो अज्ञान लोग भी करते रहते हैं, यह तो दुनिया में दिखाई देता रहता है। अपनी आत्मा का उपकार करो और आत्मा का उपकार करने के लिए क्या करो? अगर अन्तरंग बहिरंग कारण अच्छे मिल गए हैं तो इसी संपत्ति को सबसे बड़ी संपत्ति समझो। यहाँ पर **‘संपत्’** यह जो शब्द लिखा है, यह क्या है? यह संपत्ति है, आत्मा की संपत्ति।

‘विमल-सद्दर्शन-ज्ञान-चर्या’

निर्मल सम्यग्दर्शन, निर्मल सम्यग्ज्ञान, निर्मल सम्यक् चर्या, चारित्र ये आत्मा की संपत्ति हैं। इसको संपत्ति समझ कर इसी को हेति बना लो, इसी को छैनी बना लो और इसी छैनी से बस अपने कर्म काटो। दूसरों के कटे, न कटे कोई चिन्ता की बात नहीं है। अपने कर्म काटो। यह जब सुनने को मिलता है तब लगता है कि यह समय बड़ा खराब है। परोपकार के कार्यों में भी कई बार जब किसी भी से लोग उलझ जाते हैं तो उसके भी परिणाम अच्छे सामने नहीं आते हैं। कितना खराब समय है। आदमी के लिए किसी न किसी तरह से कोई help कराओ, कोई समय पर उसकी सहायता कराओ और किसी भी तरीके की बात कहने के बाद में जब उससे दोबारा कोई बात करो तो उसके तेवर ही बदल जाते हैं। यही भाई-भाई में होता है और यही सामने हर किसी के सामने नजर आने लग जाता है और इस तरीके के कार्य देख कर ही शायद वह आचार्य पूज्यपाद महाराज भी अध्यात्म के इतने बड़े आचार्य हैं, यह बात बड़े-बड़े आचार्यों ने नहीं कही जो उन्होंने कहने की हिम्मत की **‘परोपकृतिमुत्सृज्य स्वोपकार परोभव’** यह छोड़ो परोपकार में कुछ नहीं रखा है। इससे पहले कोई आचार्यों ने इस तरह से नहीं कहा और बाद के भी किन्हीं आचार्यों ने नहीं कहा। यह सिर्फ और सिर्फ आचार्य पूज्यपाद महाराज पाँचवी शताब्दी के बहुत बड़े आध्यात्मिक आचार्य हुए उन्होंने कहा। ये बातें जब आज भी दिमाग में आती हैं तो लगता है यह बातें अक्षरशः सत्य है। इसलिए अपना उपकार करो, अपने बारे में सोचो। दुनिया में तो यह सब चलता ही रहेगा। आंदोलनों से, इन चीजों से, उन चीजों से क्या किसका होने वाला है? जिसका जो होना था वह हो गया लेकिन आगे भी अगर कुछ अच्छा होगा तो इन आचार्यों की आध्यात्मिक बातों में लगने से ही अच्छा होगा।

पहले अपना लोटा छानो

आत्म हित के लिए अपने आप को तत्पर करना यह सबसे बड़ा उपकार कहा गया। इसलिए आचार्यों ने कहा पहले अपना लोटा छानो, दूसरों की बातें बाद में करना। यहाँ बैठ कर भी मैं अपना ही लोटा छान रहा हूँ। यह उपदेश आपको लग रहा है, मैं आपको दे रहा हूँ। मैं आपको नहीं दे रहा हूँ यह उपदेश मैं अपने आपको ही दे रहा हूँ। मुझे इन उपदेशों से कोई प्रयोजन नहीं है लेकिन धर्म की बात सुनाने के लिए भी आचार्यों ने कहा। अगर नहीं सुनाई जाती है तो उसके लिए भी आचार्य कह देते हैं...ये कृतघ्न हैं, ये अज्ञानी हैं, जो अपने को जानते हुए भी, धर्म की बात जानते हुए भी, दूसरों को नहीं बता रहा है। वहाँ पर भी दोष

लगने लग जाता है तब जाकर कुछ बोलना पड़ता है, कुछ कहना पड़ता है लेकिन **उसमें भी स्वयं उपकार ही प्रमुख होता है।** तब जाकर वह धर्म के उपदेश से भी अपने को लाभ मिलता है। इसलिए हर किसी व्यक्ति को आज आत्म-हित के कार्य में लगना चाहिए। सबसे बड़ा कार्य है। बाकी संसार के कार्य तो खूब हो चुके हैं, होते रहेंगे, खूब करते रहते हो। संसार के कार्यों में ही सारी जिंदगी व्यतीत होती है। सब अपने संबंधी रिश्तेदार उन्हीं की चिंताओं में, उन्हीं के career बनाने में, उन्हीं के लिए कमाने में सारी जिंदगी निकलती है।

आत्म हित के लिए तत्पर होना मनुष्य पर्याय की उपलब्धि

अपने आत्म हित के लिए तत्पर होना, यह सबसे बड़ी इस मनुष्य पर्याय की उपलब्धि है। इस तरह की उपलब्धि के लिए ही यह वर्षा योग हुआ करते हैं कि इन समुदाय के बीच में बैठ कर यहाँ के लोगों को यह उपलब्धि प्राप्त हो। इस तरह के निमित्त बन जाते हैं कि मुनि महाराज तीन-तीन सौ kilometer से चलकर आपकी नगरी में आकर बैठ जाते हैं। सब चाहिए, बाह्य निमित्त भी होना चाहिए, अन्तरंग निमित्त भी होना चाहिए तभी कार्य घटित होगा। हमारा भी कार्य दोनों कारणों से ही घटित होगा और आपका भी कार्य दोनों कारणों से घटित होगा। एक बात एक universal law है, यह हमेशा गाँठ बांध कर अपने जीवन में रख लेना। **जिंदगी का कोई भी कार्य, संसार का कोई भी कार्य, कहीं पर भी घटित होता है, वह दोनों कारणों से घटित होता है- अन्तरंग और बहिरंग।** चाहे वह मोक्ष मार्ग का हो, चाहे लौकिक मार्ग का हो। यह law सबके लिए है, universal law है। यह हर काम जब तक सामने वाले पदार्थ में योग्यता नहीं होगी, आप उस पदार्थ को किसी दूसरे रूप में convert नहीं कर सकते हो। लकड़ी में आप electricity नहीं डाल सकते हो। किसी wire में, किसी लोहे की चीज में ही आप electricity का flow डाल सकते हो। यह उसकी योग्यता है, लकड़ी की नहीं है। यह बात तो बाद में science कहती है कि लकड़ी ऊष्मा का कुचालक है, यह सुचालक है, यह bad conductor है, यह good conductor है। लेकिन यह उसकी योग्यता सबसे बड़ी चीज है, यह बहुत बड़ी science है। हमें पहले ही जैनाचार्यों ने हर पदार्थ की अपनी योग्यता दे दी। बाहरी कारणों से current आएगा तो लोहे में आएगा। wire में आएगा लकड़ी में नहीं आएगा क्योंकि उसके लिए वह बाहरी कारण उसके अन्तरंग कारण को हिलाने में समर्थ नहीं है। इसका अन्तरंग कारण ऐसा है जो लोहे में होता है, उसको हम magnet बना सकते हैं। लकड़ी को कभी magnet नहीं बना सकते क्योंकि इसमें ही वह अन्तरंग कारण विद्यमान है, जिसको अगर हम बाहरी कारण से जोड़ेंगे तो magnet बन जाएगा। लकड़ी कभी magnet नहीं बनेगी। सबने physics पढ़ी होगी। थोड़े बहुत practical भी किए होंगे। Science भले ही आज अपनी भाषा में कहे they are good conductor, they are bad conductor लेकिन यह conductor भी कहाँ से conduct हो रहे हैं? ये उनके अपने-अपने conduct हैं। उनकी अपनी-अपनी quality है। हर एक पदार्थ की किस पदार्थ में बाहरी कारण के मिलने से क्या घटित होगा और किसमें घटित नहीं होगा? जैसे हम कहें अभव्य को कितना ही उपदेश सुनाओ, उसके लिए कभी भी सम्यग्दर्शन नहीं होगा। वह क्या है? वह bad conductor है। मोक्ष मार्ग के लिए bad conductor उसके अन्दर कोई current जाने की नहीं और जो भव्य होगा उसके लिए उपदेश सुनाओगे तो वह मोक्ष मार्ग पर चलने लगेगा सो वह good conductor है। वह good conductor कहाँ से आया? योग्यता उसकी अपनी निजी होती है। हर द्रव्य की अपनी

निजी योग्यता होती है जिससे वह योग्य भी बनता है और अयोग्य भी बनता है। यह सिद्धान्त हमें जैन दर्शन में पहले सिखाया गया, वैज्ञानिकों ने तो बाद में यह सिद्धान्त सामने लाया। लेकिन अगर हम इन सिद्धान्तों को इस तरह से समझने की कोशिश करेंगे तो हमें समझ में आएगा कि विज्ञान अपनी भाषा में कोई बात कहता है तो कहे लेकिन वह धर्म विरुद्ध कोई बात कह नहीं सकता है और होते भी नहीं है। ऐसे आचरण, ऐसा ज्ञान, ऐसा सम्यग्दर्शन जिसके माध्यम से यह आत्मा अपने आप को pure बनाती चली जाए, कर्मों से मुक्त करती चली जाए उसको यहाँ पर आचार्य कहते हैं...इसी को अपना अन्तरंग का सबसे बड़ा कारण समझो और यही हमारी उपलब्धि है। यह रहती है तो सब रहता है।

राजा उपश्रेणिक का तिलकावती के साथ नगर प्रवेश और चिलाती का जन्म



जंगल में भी लोगों को चीजें उपलब्ध हो जाती हैं। उस घोड़े ने उपश्रेणिक गड्डे में गिरा दिया तो वहाँ पर भी उसको क्या मिल गया? **तिलकावती मिल गई।** भूल गए? भूल जाते हो? खो जाते हो? एकदम से change हो गया। कहाँ तो घोड़े ने गिरा दिया गड्डे में और कहाँ वह ठीक भी हो गया और ठीक होने के बाद में उसे तिलकावती से विवाह भी हो गया। अब देखो यह क्या है? आदमी ने, किसी दूसरे शत्रु ने, उसको मारने की पूरी साजिश कर ली थी। लेकिन वह मरा नहीं, जी भी गया और फिर से विवाह भी कर लिया और फिर से एक नया राजा बनकर के फिर से अपने राज्य में आ गया, प्रवेश कर लिया और फिर उसका स्वागत प्रजाजनों ने वैसे ही किया जैसे आप मुनि महाराज का नगर में प्रवेश होने पर स्वागत करते हैं। ऐसा ही स्वागत घर में है। अरे! राजा आ गया, राजा आ गया। इतने महीने के बाद में, कहाँ से राजा विलुप्त हो गया था? फिर से राजा आ गया। अपने साथ में एक कन्या को और लाया है। रानी को और लाया है तो जितनी भी महिलाएँ थी, सब देखने को पड़ी। उनका तो वह धर्म ही होता है- नई बहू का मुँह देखना। अच्छा-अच्छा, चढ़ा-चढ़ा करके, अच्छी-अच्छी gift दे-दे करके उस बहू का मुँह देखने के लिए सब महिलाएँ, पूरे राज्य की महिलाएँ तत्पर हो गई। **राजा एक नई रानी लेकर के आ गया,** राजा एक नई रानी लेकर के आ गया और उस राजा का जलवे के साथ में पूरे फिर से नगर में प्रवेश हो गया। राजा ने उस रानी को सबसे बड़ी रानी बना दिया लेकिन राजा के मन के अन्दर एक चिन्ता लग गई। क्या लग गई? वह चिन्ता यही लग गई, अब इस रानी का जो पुत्र होगा वह पुत्र को मुझे राजा बनाना है कि मेरे सामने इतने-इतने योग्य मेरे पुत्र है। इनको राजा बनाऊँ? उससे उसके मोह में आकर के कह तो दिया था। मैंने सब कुछ कर तो लिया लेकिन अब जब राजगद्दी पर बैठ कर के वह सोचता है कि इतने योग्य पुत्रों को कैसे अयोग्य घोषित कर दूँ? और एक की पुत्री को कैसे इसके पुत्र को राजा बनाने की बात सोच लूँ? कुछ दिनों बाद में उसके तिलकावती से पुत्र भी जन्म हो गया और उसका नाम था चिलाती पुत्र। चिलाती एक नाम सुना? नहीं सुना। तुम पुराणों के प्रमुख पुरुषों के नाम सुनते कहाँ हो? वह चिलाती नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ और उस उपश्रेणिक के बड़े-बड़े पुत्र और हैं और उन सब में श्रेणिक राजा सबसे योग्य उनका पुत्र, दुनिया में घोषित है। सब लोग मानते हैं लेकिन अब राजा चिन्ता में पड़ा है कि मैंने इसकी माँ के पिता को यह वचन दिया है कि मैं इसी को राजा बनाऊँगा तो अब वह सोचता है इसको राजा कैसे बनाऊँ? चिन्ता एक चल गई। योग्यता वहाँ पर भी दिख रही है, अन्तरंग और बहिरंग कारणों से मिलकर के सब काम होता है। दिखाई दे रहा है? जीवन था तो जंगल में जाकर के भी बच गया। घोड़े ने गड्डे में पटक दिया तो भी बच गया। वहाँ से भी निरोग होकर के आ गया। क्यों? अभी जीवन था, आयु शेष थी,

पुण्य कर्म अभी भी सामने आ रहा था। एक और नीलांजना मिल गई। यह सब क्या है? अन्तरंग के पुण्य और पाप का फर्क हमेशा चलता रहता है। पाप कर्म का उदय आया, गड्ढे में गिर गया, जंगल में चला गया। पुण्य कर्म का उदय आया, फिर जंगल से बाहर आ गया, फिर से राजा बनकर के प्रतिष्ठित हो गया। फिर उसके एक पुत्र और बढ़ गया, जिसका नाम उसने चिलाती रखा। लेकिन अब चिन्ता बढ़ गई। वह तो उसके बिना तो काम होता ही नहीं है। परिवार बढ़ेगा, मोह में पड़ोगे चिन्ताएँ तो बढ़ेंगी। अब चिन्ता का निराकरण कैसे हो? वह आपको कल बताया जाएगा। सिद्ध भगवान की भक्ति भी करते रहना है और थोड़ी सी दूसरे चीजों को समझ कर के अपने जीवन को भी देखते रहना है।

**कुछ जानना से अहं हो यात्रा हो अवरुद्ध।
जो करता अभिमान है खुद ही बना विरुद्ध॥८॥**

**तू अनंत दृग ज्ञान में, सुख अनंत का पिंड।
शून्य नहीं ना समझता मन में भरा घमंड॥९॥**

8. गणित के ज्ञाता और शून्य के आविष्कारक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव भगवान

सिद्ध परमेष्ठि के गुण



बहुत दिनों से सिद्ध भक्ति की आराधना, सिद्धों की आराधना की जा रही है और सिद्धचक्र विधान भी चल रहा है। आपका सिद्धचक्र विधान तो आज पूरा हो रहा है लेकिन हमारी सिद्ध भक्ति अभी आधी भी नहीं हुई है। हम उन्हीं सिद्धों के बारे में जानते हुए, आगे बढ़ते हुए, उन सिद्धों के विशेष गुणों का स्मरण करते हुए, अपनी बात को आगे बढ़ाते हैं। काव्य नंबर तीन की कुछ दो लाइनें अभी भी बाकी हैं। एक बार इस काव्य को पुनः पढ़ते हैं फिर आगे बढ़ते हैं...

स त्वन्तर्बाह्य- हेतु- प्रभव- विमल- सदृश- ज्ञान- चर्या
संपद्धेति- प्रघात- क्षत- दुरिततया, व्यञ्जिताचिन्त्य-सारैः।
कैवल्यज्ञानदृष्टि - प्रवर - सुख - महावीर्य - सम्यक्त्वलब्धि-
ज्योतिर्वातायनादि- स्थिरपरमगुणै- रद्भुतैर्भासमानः। 3।

यह सिद्ध भगवान हैं, जो अद्भुत गुणों के द्वारा भासमान अर्थात् प्रकाशमान होते हैं। सिद्धत्व पाने से पहले उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति करना भी आवश्यक होता है और जो प्रक्रिया पहले बताई थी...अन्तरंग और बहिरंग निमित्तों के माध्यम से सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र की पूर्ति करते हुए, अपने सभी प्रकार के घातिया कर्म रूपी पापों को क्षय करते हुए, जो सारभूत वस्तु को प्राप्त कर लेते हैं और कैवल्य ज्ञान-दृष्टि से संयुक्त हो जाते हैं, वह पहले अरिहन्त बन जाते हैं। उन अरिहन्तों के पास कैवल्य ज्ञान की दृष्टि है, प्रवर सुख है, उत्कृष्ट सुख है, अनन्त सुख है, महावीर्य है।

वीर्य-महावीर्य क्या है?

वीर्य कहते हैं...आत्मा की शक्ति को और यह शक्ति आत्मा की जब होती है, तभी शरीर में आती है। आज लोग इस वीर्य शब्द को शरीर की शक्ति से जोड़ते हैं लेकिन जैनाचार्यों की दृष्टि में अगर आप देखेंगे तो यह वीर्य शब्द आत्मा की शक्ति के लिए आता है। आपको पता होना चाहिए अन्तराय कर्मों के क्षयोपशम में एक वीर्य अन्तराय कर्म का क्षयोपशम भी बताया जाता है। यह अन्तराय कर्म हमारी आत्मा के लिए विघ्न रूप होते हैं और इन्हीं विघ्नों के कारण से हमारी शक्तियाँ, जो आत्मा की शक्तियाँ हैं, वह प्रकट नहीं होती हैं तो वह अनेक तरह के व्यवधान हमारे अनेक कार्यों में किया करते हैं। यह वीर्यांतराय कर्म का क्षयोपशम होना, इस वीर्यांतराय कर्म के हटने पर आत्मा की शक्ति का प्रकट होना बहुत जरूरी है। इसी के माध्यम से वह वीर्य उत्पन्न होता है...जिसे आत्म-वीर्य कहते हैं, आत्म-शक्ति कहते हैं। यही

शक्ति यहाँ पर जब पूर्ण रूप में प्रकट हो जाती है, तो इसे महावीर्य कहा गया। महावीर नहीं कह रहे हैं, महावीर्य अर्थात् अरिहन्त बनने पर अनन्त शक्ति उनकी आत्मा में प्रकट हो गई और वह अनन्त शक्ति ही वह अनन्त ज्ञान के साथ में काम करती है तभी हमारा वह ज्ञान स्थाई रह पाता है, काम कर पाता है।

शरीर में शक्ति, आत्मा की शक्ति से ही आती है (वीर्यातराय)

किसी भी कार्य के लिए, किसी भी इन्द्रिय को चलाने के लिए आपके शरीर में शक्ति होना जरूरी है लेकिन आपको अगर जैन दर्शन की knowledge नहीं होगी तो आप कभी महसूस नहीं कर पाएँगे कि **शरीर में भी जो शक्ति आती है, वह आत्मा की शक्ति से ही आती है। आत्मा के अन्दर वीर्यातराय कर्म का क्षयोपशम होगा तो आत्मा की उस शक्ति से ही शरीर की शक्ति बनेगी।** अगर आत्मा में वह शक्ति का क्षयोपशम नहीं है, तो आपके पास में पाँच इन्द्रियाँ होते हुए भी आप उनमें काम नहीं कर पाएँगे। इसलिए जैन दर्शन में जहाँ पर शरीर विज्ञान के बारे में भी ढंग से बताया जाता है, वहाँ पर आत्मा के विज्ञान के बारे में भी बताया जाता है और आत्मा के साथ लगा हुआ यह जो शरीर है, इस शरीर का विज्ञान भी हम तभी समझ पाते हैं, जब हम थोड़ा आत्मा और कर्मों का विज्ञान भी जान पाएँ। यह सारा विज्ञान है और इस विज्ञान का प्रस्तुतिकरण करना जैन दर्शन के प्रमुख विद्वानों का कार्य है, जैन मनीषियों का कार्य है। आदमी के लिए कहीं पर भी सूत्र नहीं मिलते हैं, वैज्ञानिक प्रस्तुति करने के लिए लेकिन जैन दर्शन के अन्दर जब भी हम झाँकते हैं, आचार्यों की कोई भी कृति हम पढ़ते हैं, चाहे हम यह भक्ति पढ़ ले, चाहे न्याय पढ़ ले, चाहे त्रिलोपपण्णति पढ़ ले, चाहे समयसार पढ़ ले, चाहे गोम्मटसार पढ़ ले, हमें हर जगह पर विज्ञान ही विज्ञान दिखाई देता है। कैसे दिखाई देता है? उसको देखने की दृष्टि होना चाहिए।

कर्मों के क्षयोपशम से आत्म शक्ति की प्राप्ति

जब हम शक्ति की बात करते हैं, हर किसी के पास में शक्ति होती है लेकिन आचार्य कहते हैं...आपकी आत्म शक्ति से ही सब काम होते हैं। जब हम आत्म शक्ति की बात करते हैं तो हम बात करते हैं...हमारे अन्दर बस जुनून होना चाहिए, हमारे अन्दर encouragement होना चाहिए, हम इसी को आत्म शक्ति मान लेते हैं लेकिन आचार्य कहते हैं...यह आत्म शक्ति नहीं है। आत्म शक्ति वह है जो आपके कर्मों के क्षयोपशम से आपको प्राप्त है। क्षयोपशम तब तक चलता है जब तक संसार की दशा में हम एक संसारी सामान्य जीव की तरह व्यवहार करते हैं और जब वही क्षयोपशम बढ़ते-बढ़ते, कर्मों का भाव घटते-घटते पूर्णतया अभाव हो जाता है, कर्म हमारी आत्मा से पूर्णतया हट जाता है तब हमें कहना पड़ता है यह जो शक्ति प्रकट हुई है अरिहन्त भगवान में, उनकी आत्मा में यह कर्म के क्षयोपशम से नहीं हुई है, यह कर्म के क्षय से हुई है।

कर्म विज्ञान में क्षयोपशम और क्षय में अन्तर

एक क्षय होता है और एक क्षयोपशम होता है। अभी तो आप यह नाम भी नहीं जानते हो। जब तक आपको क्षयोपशम और क्षय जैसे नामों का वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं आएगा, इनका भावार्थ समझ में नहीं आएगा, आप क्या जीव विज्ञान समझ पाएँगे? क्या कर्म विज्ञान समझ पाएँगे? **कर्म विज्ञान के माध्यम से भी बहुत बड़ा गणित समझाया जाता है क्योंकि कर्मों का क्षय करने का भी एक बहुत बड़ा गणित है।**

जैन दर्शन के अनुसार गणित का अर्थ

गणित का मतलब होता है...एक पद्धति के अनुसार जब भी कोई कार्य किया जाए और उस पद्धति के अनुसार उसका आगे process बढ़ता चला जाए और उसका समाधान मिलता चला जाए, उसी का नाम गणित कहलाता है। जब आप कर्म विज्ञान के माध्यम से कर्मों के क्षय की प्रक्रिया पढ़ेंगे तो आपको पूरा का पूरा उसमें गणित नजर आएगा। मैं गणितज्ञ महोदय से कहना चाहता हूँ...गणित का नाम केवल गिनतियों को गिनना या अंकों को जोड़ना-घटाने का विज्ञान, जिन्होंने बताया हो, हम उन्हीं को गणितज्ञ न कहें। जिन्होंने हमें कर्मक्षय की प्रक्रिया बताई है और वह systematic ढंग से बताई है, हम उसको भी गणित के रूप में सामने लाएँ। किन कर्मों का क्षय कहाँ पर होता है? कितनी संख्या में वह कर्म कहाँ पर नष्ट होते हैं? और उनके नाश होने से आत्मा की जो शक्ति प्रकट होती है, वह भी संख्यात्मक है। विशुद्धि का गणित अलग है और स्थिति जब हमारे अन्तरंग आत्मा में कर्मों के माध्यम से पड़ती है तो उसका गणित अलग है। गणित के बिना तो कोई काम चलता ही नहीं है। आपने अगर गणित पढ़ा है, तो इसका मतलब यह है कि आपने पूरी जैन आचार्यों की परंपरा को पढ़ लिया है और न केवल जैन आचार्यों की परंपरा को, आप अगर गणित को समझेंगे तो आप तीर्थंकरों से उस गणित का origin बताना शुरू करेंगे और हमें करना चाहिए।

षट्खंडागम में सर्वप्रथम गणित सूत्रों की रचना

हमने सुना शून्य का आविष्कार किसने किया? किसी बेटी ने बताया...आर्यभट्ट ने किया, किसी ने कहा... वराहमिहिर ने किया, किसी ने कहा...भास्कराचार्य ने किया और फिर बात आई, आते-आते यहाँ तक आ गई कि **गणित का आविष्कार करने वाले या लिखने वाले सबसे पहले आचार्य हुए...आचार्य यतिवृषभ।** हम आचार्य यतिवृषभ को भी देखें और अगर हम उससे भी पहले देखने की कोशिश करेंगे तो हमें षट्खंडागम में भी बहुत बड़ा गणित मिलेगा। मनुष्यों की संख्या 29 अंक प्रमाण बताना कोड़ा-कोड़ा-कोड़ा-कोड़ा-कोड़ी से ऊपर और कोड़ा-कोड़ा-कोड़ी से नीचे, यह है मनुष्यों की संख्या का गणित। जब कभी भी हम कोड़ा-कोड़ी की बात करेंगे, करोड़ों की बात करेंगे तो करोड़ कभी शून्य के बिना बन नहीं सकते हैं। **षट्खण्डागम सूत्रों से हमारा यह शून्य लिखित रूप में शुरू हो जाता है, तो हम कह सकते हैं कि आचार्य धरसेन महाराज के शिष्य आचार्य पुष्पदंत और भूतबली ने सबसे पहले गणित सूत्रों की रचना षट्खण्डागम में कर डाली है।** अप्रमत्त मुनियों की संख्या कितनी? प्रमत्त मुनियों की संख्या कितनी? आहारक रिद्धि वाले मुनियों की संख्या कितनी? सारे सयोग केवलियों की संख्या कितनी? एक संख्या प्ररूपणा ही है। उस संख्या प्ररूपणा में गणित के अलावा कुछ है ही नहीं है।

आचार्य पुष्पदंत और आचार्य भूतबली जैन गणितज्ञ

‘सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तर

भावाल्पबहुत्वैश्च’ ।।1.9।।

-तत्त्वार्थ सूत्र

यह जो हम सूत्र तत्त्वार्थ सूत्र में पढ़ते हैं, इस सूत्र के आधार पर ही षट्खण्डागम सूत्रों में सत् का प्ररूपण है,

पहली पुस्तकों में और फिर उसके बाद में तीसरी पुस्तक में पूरा गणित का अनुयोग है, जिसे द्रव्य अनुगम कहा जाता है, संख्यानुगम कहा जाता है और उसमें पूरा का पूरा गणित है। इस ज्योतिष मण्डल में कितने ज्योतिषी देवों के विमान हैं? संख्यात हैं कि असंख्यात हैं कि अनन्त हैं। सारा गणित उसके अन्दर समाया हुआ है। हमें उन गणितज्ञ आचार्यों की श्रेणी में आचार्य यतिवृषभ से भी ऊपर आचार्य पुष्पदंत और भूतबली का नाम आगे रखना चाहिए। यह बात तभी संभव है, जब हम ऐसे विद्वानों के साथ में बैठें, विद्वानों के साथ में गोष्ठी हो, विद्वानों के साथ में विचार विमर्श हो और इसी तरह की भूमिका आज Dr अनुपम जैन ने यहाँ पर बना दी है। यह भूमिका अगर उन्होंने बनाई है, तो इस कार्य को क्रियान्वयन करने का कार्य वास्तव में सतना समाज के ऊपर जाता है। अगर यह सतना समाज चाहेगी तो यहाँ पर बहुत अच्छे ऐसे ही प्रबुद्ध विद्वानों की एक बहुत अच्छी गोष्ठी हो सकती है। जब कोई विद्वान बात कहेंगे तभी उस बात को और आगे चलकर बढ़ाने का मौका मिलता है और विद्वानों के पास में जब कोई बात पहुँचती है, उनकी समझ में आता है, तो वह उसको लिखित रूप में, जब उसकी drafting करते हैं, तब वह government के पास पहुँच पाएगी। तब हमारे जब document तैयार होंगे, तब हमारे गणितज्ञ तैयार होंगे और हमारे आचार्यों का नाम भी गणितज्ञों की श्रेणी में आएगा। यह काम करना होगा, केवल बातों से नहीं।

शून्य के आविष्कारक भगवान ऋषभदेव

हम अनेक तरह का पैसा अनेक तरह के आयोजनों में लगाते हैं लेकिन वास्तव में समय के अनुसार भी हमें देखते हुए अगर चलना चाहिए तो आज वह समय है जब हम पाठ्य पुस्तकों में अपने गणितज्ञ सिरमौर आचार्यों का नाम लिखा सकते हैं और मैं कहता हूँ...हमें अपनी प्राचीन परंपरा को देखते हुए, शून्य के आविष्कार के रूप में अगर हमें किसी को कहना है, तो हमें भगवान ऋषभ देव को कहना चाहिए। इस युग में सबसे पहले अगर केवलज्ञान को प्राप्त करने के बाद में अगर उन्होंने ज्ञान दिया है, तो किसने दिया? भगवान ऋषभदेव ने दिया। आज अगर आचार्य पुष्पदंत और भूतबली ने भी षट्खण्डागम ग्रंथ रचे तो किसके आधार पर? केवलज्ञान से प्राप्त ज्ञान के आधार पर और वह केवलज्ञान जो उन्हें मिला, उन्हें जो केवलज्ञान का आधार मिला, वह भगवान महावीर स्वामी की परम्परा से मिला लेकिन हम क्यों बोले कि भगवान महावीर स्वामी से हमारा केवलज्ञान शुरू होता है। **हमारे लिए तो यह श्रुत की परंपरा, शास्त्रों की परंपरा भगवान ऋषभ देव के केवलज्ञान होने के बाद शुरू होती है और गणधर वृषभसेन के माध्यम से परंपरा शुरू होती है। वहीं से ये अंग और पूर्वों का ज्ञान चला आता है और उसी में यह दृष्टिवाद नाम का 12वाँ अंग आता है, जिस अंग के अन्तर्गत यह परिकर्म सूत्र आते हैं। उस परिकर्म सूत्र में सारा का सारा गणित भरा रहता है अर्थात् 12 अंग और 14 पूर्वों का ज्ञान अगर भगवान ऋषभ देव से है, तो शून्य का ज्ञान भी भगवान ऋषभ देव से प्रारंभ होता है।** एक परिकर्म सूत्र ही हैं और उस परिकर्म का नाम गणित सूत्र होता है। आचार्य वीरसेन महाराज ने अपने धवला ग्रंथों में कई जगह पर इन परिकर्म सूत्रों का वर्णन किया और ये परिकर्म के नाम से पहले जाने जाते थे। गणित शास्त्र तो यह बाद का नाम आता है। संख्या प्ररूपणा, परिकर्म सूत्र, इनके माध्यम से पहले आचार्यों ने सूत्रों में वर्णन किया और शून्य के आविष्कारक भगवान ऋषभदेव पहले हुए।

लिपि ज्ञान व अंक ज्ञान

उन्होंने भी सबसे पहले, वह शून्य किसको सिखाया होगा? जब दो पुत्रियाँ उनकी अगल-बगल में आकर के बैठ जाती हैं... एक ब्राह्मी और एक सुंदरी तो ब्राह्मी को तो वे लिपि सिखाते हैं, लिखना सिखाते हैं...बेटा! कैसी लिपि में लिखना है? उसे लिपि सिखाते हैं और सुंदरी को अंक विद्या सिखाते हैं तो सुंदरी को दाईं side बिठालते हैं और जब वह सुंदरी left side बैठती है, बाईं side तो उस समय पर जब वह अंक लिखना सिखाते हैं तो वे अंक कहाँ से शुरू होंगे? एक, दो, तीन, चार, पाँच, छह, सात, आठ, नौ, नौ के बाद समाप्त कर देंगे क्या? दस नहीं आएगा? दस आएगा? अगर दस आएगा तो उसमें एक भी आएगा और शून्य भी आएगा और उन्होंने एक से लेकर के संख्यात, असंख्यात और अनन्त तक की संख्या का ज्ञान उस सुंदरी को दिया तो भगवान ऋषभ देव उस शून्य के आविष्कारक सिद्ध होते हैं। यह बात हमें विद्वानों के पास तक पहुँचाना चाहिए। **आज भी वह अंक विद्या पढ़ने का तरीका वही है...उल्टी side से पढ़ना, left side से पढ़ना...अंकानां वामतोगतिः**। आज भी जब हम बारह लाख पचास हजार लिखेंगे तो लिख तो लेंगे 12 के सामने 50 हजार करके, तीन बिंदी लगा देंगे लेकिन जब पढ़ना पड़ेगा तो हमें उल्टा ही पढ़ना पड़ेगा। इकाई, दहाई, सैकड़ा, हजार, दस हजार, लाख, दस लाख। हमें इसी क्रम में, उल्टे क्रम में पढ़ना पड़ेगा जैसे भगवान ऋषभदेव ने सुंदरी को पढ़ाया था। आज भी हम वैसे ही पढ़ते हैं। यह अंक विद्या है।

जैन गणित और विज्ञान को course books में add करवाना

हमारे सामने अगर इस तरह के ज्ञान को आगे बढ़ाने वाले विद्वान होंगे तो हम अपनी बात सरकारों तक पहुँचा पाएँगे और उन्हीं विद्वानों के माध्यम से बातें सरकार में पहुँचेंगी जिन्हें सरकार ने मनोनीत किया है। हम यहाँ पर सभा में बैठे ताली बजाते रहेंगे इससे कुछ नहीं होगा। क्योंकि आपकी कोई भी craze या credit सरकार के पास में नहीं है। सरकार में जो लोग मनोनीत हुए हैं, उनकी अपनी जो संस्थाएँ चल रही हैं, जो उनके organization चल रहे हैं, उसमें जिन लोगों को मनोनीत किया गया है, अगर हम उन लोगों तक यह अपनी बात पहुँचाएँ तो वह जरूर इसकी drafting करेंगे। इसके documents बनेंगे और जरूर उसका application होगा तो सरकार तक बात वहाँ तक पहुँचेगी। इसलिए केवल ताली बजाने से धर्म नहीं हो जाएगा। आज का धर्म इसी बात की जरूरत महसूस कर रहा है कि हम अपनी बात जब तक course book में नहीं लाएँगे तब तक हमारे बच्चे भी हमारी बातों को सुनेंगे नहीं। course book में जब तक हमारा science नहीं होगा, जब तक हमारा mathematics नहीं होगा, course book में जब तक हमारी कोई chemistry के तत्त्व नहीं होंगे, elements नहीं होंगे, तब तक हम अपने जैन दर्शन को केवल मन्दिरों तक ही रख पाएँगे। जन-जन तक अगर हमें जैन दर्शन को आज पहुँचाना है, तो हमें अपनी course books के माध्यम से ही ऐसे course बनाने होंगे जो उन नई, जो शिक्षा नीतियाँ बन रही हैं, उनके जो भी मनोनीत कार्यकर्ता हैं, उन तक पहुँचे और वह चीज हमारी भी सामने आए।

धर्म को सही ढंग से प्रस्तुत करना

जब अन्य दर्शनों के पास कुछ भी नहीं है तब उनका इतना बड़ा-बड़ा introduction हर चीज का उसमें रहता है लेकिन आपके पास में अनादि से सब कुछ चला आया है। लेकिन आप आज भी सोते हुए बैठे हैं

और इसी वजह से आपकी पीढ़ियों का श्रद्धान, आपके बच्चों का श्रद्धान, आज की किताबों के माध्यम से, जब उनके ज्ञान तक नहीं आता तो उन्हें लगता है कि मन्दिर का धर्म अलग है और स्कूल का धर्म अलग है। यह धर्म अलग-अलग कब तक चलेगा? इस धर्म को सही ढंग से प्रस्तुत करने के लिए अगर देश के अग्रणी विद्वान आगे आकर इसमें अपना कार्य करते हैं तो यह बहुत अच्छी बात है और जैसे आज अनुपम जैन यहाँ आए, ऐसे ही एक और विद्वान हो गए थे अभी कुछ दिनों पहले, उनका स्वर्गवास हो गया...डॉक्टर वृषभ प्रसाद जैन। एक बहुत अच्छे विद्वान थे, लखनऊ के थे वह भी और इतनी अच्छी उनकी योजना थी, वह भी इसी कमेटी में शामिल थे। नई शिक्षा नीति के वे भी सदस्य थे। लेकिन कुछ दुर्भाग्यवश उनका अचानक से heart attack हो गया। वे योजना बना रहे थे, पनागर में हमारे पास दो बार आये और उनकी वह योजना आगे बढ़ने वाली थी, वह योजना उनकी अधूरी रह गई। अब यह काम डॉक्टर अनुपम जैन के पास है कि वह अपनी, उनकी भी योजना को आगे बढ़ाते हुए इस योजना को क्रियान्वित करें और यह कार्य वास्तव में होना चाहिए। अगर हम जैन दर्शन को विज्ञान की दृष्टि से देखते हैं तो वह तभी देख सकते हैं जब हमारे अन्दर कर्म विज्ञान ज्ञान में आए, जीव विज्ञान ज्ञान में आए। यहाँ पर आपको सब कुछ वही सिखाया जा रहा है। सिद्धों की भक्ति अगर हम कर रहे हैं तो उससे हमें जीव का विज्ञान मिलता है, कर्म का विज्ञान मिलता है, आत्मा की शक्ति का विज्ञान मिलता है।

संख्यात, असंख्यात और अनन्त का विज्ञान

हम आपको बताना चाह रहे थे कि हर चीज का गणित अलग-अलग है। **जब भी हम आत्मा की विशुद्धि कहते हैं तो विशुद्धि का गणित अनन्त की संख्या में जाता है। विशुद्धि संख्यात-असंख्यात नहीं होती है। जब कर्मों की duration हमारे अन्दर एक तरीके से bonding हो जाती है, उनका स्थिति बंध हो जाता है, तो वह स्थिति संख्यात-असंख्यात की संख्या में जाती है, वह अनन्त की संख्या में नहीं जाती।** जो कर्म का रसपाक हमारे अन्दर आता है, शक्तियों का जो अनुभागी प्रतिक्षेदों के माध्यम से, जो हम शक्ति का अनुभव करते हैं वह अनन्त की संख्या में होता है। लेकिन कर्म की जो bonding होती है, वह संख्यात और असंख्यात time के लिए होती है। वह अनन्त time के लिए नहीं होती। यह संख्यात का, असंख्यात का, अनन्त का, विज्ञान हमें भगवान ऋषभ देव ने बहुत पहले दे दिया था। युग की आदि में दे दिया था इसलिए इस गणित के मुखिया, प्रमुख आविष्कारक भगवान ऋषभ देव को हमें कहना चाहिए और उन्हीं के आधार से हमें अपनी श्रमण संस्कृति को आगे बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। स्वाहा-स्वाहा तो सब हो जाता है लेकिन भीतर आहा-आहा करते हुए कुछ रह जाए, वह काम का होता है।

कर्म सिद्धान्त

हमारे जीवन में अगर हमें ज्ञान मिला है, तो उस ज्ञान का आनन्द भी हम तब ले पाएँगे जब हमारे अन्दर शक्ति होगी। शक्ति कहाँ से आती है? **आत्मा की शक्ति जब काम करती है, तो बाहर का शरीर कितना ही सूखा क्यों न हो लेकिन आत्मा भीतर से अपनी उस शक्ति से काम करता रहता है।** यह किसकी शक्ति होती है? इसी को कहते हैं- आत्म शक्ति। कभी आप श्रीमत रायचंद्र का photo देख लेना। ज्यादातर ग्रंथों के आगे लगा रहता है और आप उनके जीवन का काल देख लेना कि वह कितना जीवित रहे? शरीर

के बारे में देख लेना और उनकी आत्मा के बारे में देख लेना, आपको पता पड़ जाएगा आत्म शक्ति किसे कहते हैं? हृष्ट-पुष्ट शरीर में अगर इन्द्रियाँ काम कर रही हैं, अच्छे ढंग से काम कर रही हैं तो इन्द्रियों के लिए भी शक्ति चाहिए। इसलिए आचार्यों ने हर इन्द्रिय के क्षयोपशम के साथ में वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम भी जोड़ा है। यह सिद्धान्त की बात बता रहा हूँ। ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम भी तभी काम करेगा जब उसके साथ में वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम हो। बिना वीर्य के ज्ञान काम नहीं कर सकता। मानो! आप जानने की कोशिश कर रहे हो और आप में शक्ति नहीं है, आपका दिमाग तैयार नहीं है, उसके अन्दर आज की भाषा में कहें तो पर्याप्त oxygen नहीं पहुँच रही है। Brain में अगर पर्याप्त oxygen नहीं पहुँच रही है या brain में पर्याप्त energy नहीं पहुँच रही है और आप केवल सुन रहे हो। क्या-क्या कर पाओगे आप उससे? जब तक कि आपके अन्दर उस ज्ञान के साथ में शक्ति भी equivalent तरीके से काम न करे। इसलिए हमेशा देखने के लिए भी शक्ति चाहिए और जानने के लिए भी शक्ति चाहिए। **ज्ञान और दर्शन ये दोनों गुण तभी काम करते हैं जब हमारे अन्दर वीर्यान्तराय कर्म का क्षयोपशम होता है** और यह क्षयोपशम अगर बना रहता है, तो हम ज्ञाता-दृष्टा स्वभाव की ओर भी आते हैं और ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से अनेक तरह का शास्त्र ज्ञान भी हमारे अन्दर आने लग जाता है, यह वीर्य का काम है। इसको आत्म वीर्य कहते हैं।

शब्द का इतिहास और वास्तविक अर्थ

अगर हम कहें इतिहास की बात तो आज हम इतिहास पर एक और claim लगा सकते हैं। जब भी कभी जो हमारे सैद्धान्तिक शब्द रहे हैं, वे अगर popular बने हैं, व्यवहारिकता में आकर लोग उनको जानने लगे हैं तो वह तब बने हैं जब हमने उन शब्दों की definition को, उनकी परिभाषा को, थोड़ा सा dilute किया है। मतलब हमने उस परिभाषा को थोड़ा सा, जो उत्कृष्ट परिभाषा थी, उस शब्द की परिभाषा जो जिस भाव में होनी चाहिए थी, हमने उसको उस भाव में न रख कर, जब उसका भाव गिराया, तब वह लोगों के काम में आया। आज हम सुनते हैं...जब इस वीर्य शब्द के बारे में तो सबकी दृष्टि शरीर के वीर्य पर टिकती है जबकि शरीर की शक्ति को वीर्य नहीं कहा गया। **वीर्य किसको कहा गया? आत्मा की शक्ति को। वीर्यान्तराय कर्म किसको ढक रहा है? आत्मा के वीर्य को ढक रहा है।** इसलिए यह शब्द भी अपने आप में, इतिहास में अगर हम, शब्द का भी एक इतिहास होता है, अगर हम शाब्दिक इतिहास की ओर दृष्टि डालेंगे तो आपको ऐसे अनेक शब्द मिलेंगे, जिन शब्दों का अर्थ पहले कुछ और होता था और वर्तमान में उन शब्दों का अर्थ कुछ और होने लगा। आज इस शब्द का अर्थ शरीर विज्ञान के साथ जुड़ गया लेकिन इस शब्द का वास्तविक अर्थ जैन दर्शन के अनुसार अनादि काल से किस विज्ञान के साथ जुड़ा था? आत्मा के विज्ञान के साथ जुड़ा था, जीव विज्ञान के साथ जुड़ा था।

शक्ति के माध्यम से ही लब्धि की प्राप्ति

यह शक्ति जब हमारे अन्दर आती है तभी हमारे अन्दर के ज्ञान, दर्शन, सुख सब काम करते हैं। इसलिए यहाँ कहा जा रहा है कि जब आत्मा इन शक्तियों से ओत-प्रोत हो जाता है तब उसी शक्ति के कारण से उसे सम्यक्त्व आदि की लब्धियाँ भी उपलब्ध हो जाती हैं। **सम्यक्त्व की लब्धि के लिए भी शक्ति चाहिए,**

चारित्र की लब्धि के लिए भी शक्ति चाहिए और इन्हीं लब्धियों से वह केवलज्ञान आदि की जब लब्धियाँ हो जाती हैं, तो उनके लिए भी शक्ति चाहिए। लेकिन सम्यक्त्व की लब्धि क्षयोपशम की शक्ति के साथ चल सकती है, चारित्र की लब्धि क्षयोपशम की शक्ति के साथ चल सकती है लेकिन ज्ञान और दर्शन की लब्धि क्षायिक शक्ति के साथ ही चलती है। यानी जब कर्मों का क्षय हो जाएगा तभी आत्मा की अनन्त शक्ति प्रकट होगी। ऐसा क्षय हो जाने पर ही हम उस आत्मा को अरिहन्त आत्मा कहते हैं।

अरिहन्त भगवान का आभामण्डल

संसार में रहते हुए भी वह आत्मा हमें शरीर के रूप में दिखाई देता है, उस समय पर उनके आस-पास एक 'ज्योतिर्वातायनादि' इस शब्द का अर्थ क्या कहा जाए? अर्थात् जब अरिहन्त हो गए तो उनके चारों ओर एक ज्योतिष मण्डल, एक आभामण्डल आ जाता है। यह भी उनके लिए तब तक रहेगा जब तक वह अरिहन्त रहेंगे, शरीर की अवस्था रहेगी। वातायन का मतलब है... एक तरीके से जिससे हवा का कार्य होता है, ऐसे चामर, बीजना जिसको बोलते हैं, चंवर जिसको बोलते हैं, ऐसे भी अतिशय उनके अन्दर प्रकट हो जाते हैं और ऐसे बाहरी और भीतरी अनेक अतिशयों के साथ में वह आत्मा भासमान होने लग जाती है अर्थात् प्रकाशमान होने लग जाती है। वह अपने ही गुणों से प्रकाशमान है- आत्मा। अर्थात् जैसे-जैसे उस आत्मा के अन्दर का ज्ञान शुद्ध होता चला जाएगा, उसका आभामण्डल भी बढ़ता चला जाएगा और आप जानते हो कि अरिहन्त बनने के बाद में उन अरिहन्तों का आभामण्डल कितना lighted हो जाता है? और कितना वह सशक्त हो जाता है कि उस आभामण्डल में, जो भी व्यक्ति सामने पहुँचता है उसे उसके सात भव दिखाई देने लग जाते हैं। कितने? सात। **पिछले तीन जन्मों से पहले तुम क्या थे? तीन जन्म आगे तुम क्या होगे? वर्तमान में तुम्हारी क्या गति होने वाली है?** वह सब उसके अन्दर दिखाई दे जाता है और यह दिख जाना कोई बड़ी बात नहीं है। यह नैमित्तिकों को भी दिख जाता है, ज्योतिषियों को भी दिख जाता है।

ज्योतिष विद्या, वास्तु-विद्या व गणित-विद्या का उद्गम जैन दर्शन

क्योंकि अपने यहाँ पर अगर **ज्योतिष-विज्ञान** है, तो वह भी केवलज्ञान से निकला हुआ ही है। ज्योतिष विज्ञान भी जैन दर्शन के बाहर का ज्ञान नहीं है। यह भी जैन दर्शन से ही निकला हुआ ज्ञान है। दुनिया में कितना भी, कोई भी तरह की विद्या हो, कोई भी तरह का ज्ञान हो, जैन शास्त्रों के अलावा किसी भी ज्ञान का अलग से कोई उल्लेख नहीं हो सकता। हर ज्ञान जैन आचार्यों ने दिया है और ज्योतिष विद्या को बताने वाले भी अनेक-अनेक जैन आचार्य हो गए हैं। **वास्तु-विद्या** को बताने वाले भी अनेक-अनेक जैन आचार्य हुए हैं। **गणित-विद्या** को बताने वाले भी अनेक-अनेक जैन आचार्य हुए हैं और इन सब विद्याओं के माध्यम से जब हम आगे बढ़ते हैं तब हमें लगता है कि वास्तव में जब एक ज्योतिषि हमारे भविष्य के बारे में बता सकता है, तो केवलज्ञान अगर हमारी जन्म-जन्मांतरों की पर्याय देख ले तो इसमें आश्चर्य की बात क्या हो सकती है? एक अनुमान ज्ञान इसी के माध्यम से केवलज्ञान की पुष्टि करता है और ज्योतिषियों के माध्यम से भी ज्ञान चलता है।

राजा उपश्रेणिक की चिन्ता



राजा उपश्रेणिक को चिन्ता हो गई। क्या चिन्ता हो गई? **राजा उपश्रेणिक को चिन्ता हो गई** कि हमारे 500 पुत्र हैं और यह एक नया चिलाती और पैदा हो गया। यह एक से एक योग्य थे इनमें श्रेणिक तो कहना ही क्या? पूरे देश में इसका नाम है लेकिन चिन्ता इस बात की है कि राजा किसको बनाऊँ? अब मैं बूढ़ा हो रहा हूँ, समय व्यतीत हो गया है। सब कुछ हमने अपना राज्यभार संभाल लिया है। अब मुझे राज्य के अधिकारी की चिन्ता है और उस अधिकारी की चिन्ता करते हुए वह नैमित्तिक ज्योतिषियों से पूछते हैं...क्या करें? राजा किसको बनाया जाए? राजा की परीक्षा हमारे लिए भी एक विश्वसनीय तरीके से हो जाए कि वास्तव में यही राजा बनने योग्य है। लगता तो है कि यही राजा बनने योग्य है, श्रेणिक जिसका नाम है लेकिन एक परीक्षा कर ली जाए तो उसकी परीक्षा की विधि क्या हो सकती है? यह बात उपश्रेणिक राजा ने पूछी...किससे? एक ज्योतिषी से। ज्योतिषी ने उनको बताया कहा...राजन इसके भी तरीके हैं। आप परीक्षा करो। अपने बेटों की परीक्षा करो और उसी से हम आपको बता सकेंगे और आप भी समझ सकेंगे कि कौन राजा होने योग्य है? परीक्षा एक नहीं कई तरीके से कर लेना। हमेशा परीक्षा की जाती है।

आचार्यश्री द्वारा ली गई महाराजश्री की परीक्षा

गुरु हमेशा शिष्य की परीक्षा करते हैं। जैसे—आचार्य घरसेन ने की थी। आचार्य गुरुदेव ने हमारी परीक्षा की थी। जब उन्होंने कहा कि बेटा कोई बात नहीं। तुम्हें अगर यहाँ पर आना हो अर्थात् मेरे संघ में आना हो, अपने संघ में आना हो तो आ जाना। लेकिन पहले घर पर जाना और जब घर पर नहीं गए, आचार्य गुरुदेव के संघ में आ गए तो फिर **आचार्य श्री ने आश्वासन दिया।** अभी कुछ दिन घर पर रुको, चातुर्मास चल रहा है, दीपावली के बाद आना, माता-पिता को लेकर आना। चातुर्मास के लिए घर पर चले गए, दीपावली हो गई, माता-पिता को लेकर आए और फिर जब आकर निवेदन किया तो गुरु जी कहते हैं...अभी नहीं रख सकते हम। क्या कहते हैं? अभी नहीं रख सकते हम। अभी यह समय उचित नहीं है, अभी नहीं रख सकते हम। मतलब दो बार कहने के बाद में, फिर अन्त में, फिर कहते हैं...अभी नहीं रख सकते हम और वे मना करते रहे, मना करते रहे और इधर हम कहते रहे, निवेदन करते रहे और वे मना करते रहे और मना करते-करते विहार कर गए। उसी दिन विहार हुआ था, जिस दिन उनके सामने मैं प्रस्तुत हुआ था अन्त में, चातुर्मास का last दिन था और विहार कर गए। परीक्षा कर रहे हैं। विहार करते-करते, मना करने के बावजूद भी उनका पीछा नहीं छोड़ा और नहीं पीछा छोड़ा तो उसी के बाद, वह कहानी ढंग से तो फिर कभी बताई जाएगी लेकिन मैं जिस तरह से आगे बढ़ रहा हूँ कि उन्होंने फिर बाद में आश्वासन दिया...चलो! कोई बात नहीं, इंदौर आश्रम में अभी कुछ दिनों के लिए रुको, मेरा अभी विहार चल रहा है, जब वहाँ रुक जाओगे, उसके बाद जब मैं कहीं स्थाई हो जाऊँगा तब मैं तुमको बुला लूँगा। इतना आश्वासन देकर उन्होंने इंदौर आश्रम में पहुँचा दिया। अर्थात् परीक्षा में सफल हो गया। यह वह time था 1995 का जब उन्होंने चातुर्मास के end में विहार किया और उस समय पर हम इंदौर आश्रम में रुके थे और यही अनुपम जैन की वहाँ पर एक कुन्द-कुन्द विद्यापीठ है या ज्ञान-पीठ है। क्या है? उसमें इनकी library थी और उस library में भी हम जाया करते थे, वहाँ पर भी हम पढ़ा करते थे, ग्रंथों को देखा करते थे। उस समय पर भी वहाँ पर आर्यिका

ज्ञानमती माता जी आई थी और उनके सामने भी वहाँ पर एक और निरंजन सागर महाराज थे और वहाँ पर एक अच्छा पण्डाल लगा था और सब कुछ वहाँ के जो कार्यक्रम हुए थे, वे सब मुझे स्मरण में आ जाते हैं, जब आज अनुपम जी यहाँ आ जाते हैं तो। यह वह समय था जब हम पढ़ रहे थे, सीख रहे थे चीजों की और वहाँ पर जो पण्डित जी हैं— रतन चंद जी, उनका तो कहना ही क्या है। सिद्धान्त के अच्छे विद्वान हैं, सरल हृदय व्यक्तित्व है और उन्होंने बहुत अच्छे ढंग से हमको पढ़ाया। हम उनकी class कभी भी miss नहीं करते थे और उनकी class पढ़ते-पढ़ते ही, हमारे अन्दर बहुत कुछ क्षयोपशम ज्ञान की वृद्धि हुई। यह सब चीजें इधर चल रही हैं, मैं आपसे परीक्षा की बात कर रहा हूँ।

राजा श्रेणिक की परीक्षा

परीक्षा हर जगह होती है। **राजा उपश्रेणिक ने भी अपने पुत्रों की परीक्षा करने के लिए ज्योतिषी से कहा** तो ज्योतिषी ने उन्हें कई परीक्षा के ढंग बताए, उपाय बताए और उनमें पहला उपाय उसने कहा... आप अपने पुत्रों को आज्ञा देना। क्या करना? राजमहल के इस कोठे से लेकर राजमहल का वह जो अन्तिम gate है, वहाँ तक, अपने सिर पर एक शक्कर से भरा हुआ कलशा लेकर चले और जो यहाँ से वहाँ तक पहुँचे और रास्ते में देखना कि कौन? किस तरीके से पहुँच रहा है? जो वास्तव में राजा बनने योग्य होगा, वह कलशा अपने सिर पर रखकर नहीं चलेगा और वह दूसरे के साथ में कलशे को रख कर चलेगा, नाचते-गाते चलेगा और फिर वह जब वहाँ पहुँच जाएगा तो वह आपको information देने के लिए भी अपने उसी व्यक्ति को पहुँचाएगा। **आप परीक्षा करके देख लो और राजा ने परीक्षा कर ली।** अपने सारे लड़कों को एक दिन बुला कर एक आज्ञा दी कि बेटा! यहाँ से लेकर आप सभी को अपने सिर पर शक्कर से भरा हुआ एक कलशा लेकर के वहाँ तक जाना है। सब तैयार हो गए बोले... इसमें पिताजी कठिन बात क्या है? यह तो हम सब कर लेंगे। सब तैयार हो गए तो सारे लड़के अपने-अपने सिर पर वह कलशा लेकर जा रहे हैं और राजा श्रेणिक अपने साथ में एक आदमी ले जा रहा है। उसके सिर पर कलशा रख दिया है और उसके साथ में नाचता-गाता चला जा रहा है और जब वहाँ पहुँच गया तो उसी का कलशा उतार कर वहाँ पर रख लिया और उस राजा के पास में, उस व्यक्ति को पहुँचा दिया, कलशा आ गया है। राजा ने समझ लिया योग्य व्यक्ति कौन है? आप सोच रहे होंगे, ऐसा क्यों किया? जब राजा ने आदेश दिया है, कलशा सिर पर रख कर ले जाना है, तो सभी पुत्रों को आज्ञा माननी चाहिए थी। कलशा सिर पर ही रख ले जाना चाहिए था लेकिन जो भावी राजा बनने वाला होता है, उसके अन्दर कुछ गुण भी हुआ करते हैं।

Leadership Quality

राजा अपना कार्य खुद नहीं करता है और जिस कार्य में वह दूसरों को सक्षम देखता है, वह राजा दूसरों से वह कार्य कराता है। **यह उसके पीछे का एक बहुत बड़ा leadership की quality है। जो व्यक्ति दूसरे से जो कार्य करा सकता है और उसको वह खुद करे तो वह राजा कभी नहीं हो सकता। वह एक अच्छा leader कभी नहीं बन सकता।** अगर आप दूसरों के लिए योग्य वह कार्य देख रहे हैं और उसमें अपनी शक्ति लगा रहे हैं, उसमें अपना समय लगा रहे हैं तो आप एक अच्छे नेता कभी नहीं बन सकते। दूसरों के योग्य जो कार्य हैं, वे दूसरों से कराओ। भारवहन का कार्य राजा का कार्य नहीं है। राजा का कार्य

है...order देना, instruction देना, guide करना, यह राजा का कार्य है और अच्छा leader वही होता है, जो अपने साथ में रहने वाले लोगों को समय-समय पर सिर्फ guide करता है और वह उसकी guidance में जब चलते हैं तो उसका काम होता है और नाम leader का होता है, इसी को best leadership कहते हैं। यह सीखो राजा श्रेणिक से। सारे के सारे बेटे सिर पर कलशा रख कर चले गए लेकिन ज्योतिषी ने कहा था जो ऐसा नहीं करेगा और अपने साथ में अपना आदमी लेकर जाएगा, समझ लेना वही आपका योग्य राजा बनने वाला पुत्र है। राजा उपश्रेणिक ने देख लिया...क्या देखा? इसमें तो श्रेणिक पास हो गया।

राजा श्रेणिक की बुद्धिमत्ता

फिर ज्योतिषि ने एक और परीक्षा लेने को कहा। राजन अभी भी विश्वास नहीं हो रहा हो तो मैं आपको दूसरा तरीका और बता देता हूँ। **सब बच्चों को बुलाओ और एक दिन कहना** उनसे...एक घड़ा है, नया घड़ा, उसे ओस के पानी से भर कर लाना अर्थात् ओस से भर कर लाना। ओस समझते हो न? कोहरा के time पर जो ओस पड़ती है, उससे घड़े को भर कर लाना है। देख लेना कौन भर कर लाता है? राजा ने मौसम देख कर एक दिन सब लड़कों को बुलाकर, जब ओस हो रही थी, होती थी, एक दिन बुलाया और सब लड़कों को order दिया, आपको यह काम करना है और सब लग गए। रात के अंधेरे में जाकर, कोई रात के तीन बजे, चार बजे, सब अपने-अपने काम में लग गए क्योंकि उस समय ओस का time होता है और सब उस ओस को भरने के लिए क्या करने लगे? वह जो तृणों पर, तिनकों पर जो ओस होती है या किन्हीं पत्तों पर ओस होती है, तो उस ओस को वहाँ पत्तों से, तृणों से तोड़-तोड़ कर उसमें डालने लग गए, उसके पानी को टपकाने लग गए। नया घड़ा था, नया घड़ा समझते हो? नया घड़े का मतलब जो अभी-अभी मतलब तप कर, नया-नया बन कर आया हो। अब वह नया घड़ा तो उसमें पानी क्या भरेगा? उससे क्या भरेगा? वह तो उसी में सूखता जाता। सारे बच्चे इसी काम में लगे और किसी का घड़ा नहीं भर पाया। एक बच्चा गया और उसने जाकर क्या कर दिया? एक काम करते हैं, आज बताते नहीं हैं, तुमसे पूछते हैं क्यों? क्या उपाय है ओस से घड़ा भरने का? बताओ अच्छा? कपड़ा बिछा दिया, क्या कर दिया? एक अच्छा पतला-सा कपड़ा लिया और उसको ओस के ऊपर बिछा दिया या पहले से कपड़ा बिछा दिया उसके ऊपर ओस भर गई, गिर गई और उसी को लेकर के उसने उसको बर्तन में निचोड़ दिया और घड़ा धीरे-धीरे भरने लगा और जब घड़ा भर गया तो उसने लाकर अपने पिता को समर्पित कर दिया। ऐसे पुत्र का नाम था- राजा श्रेणिक, जिसका इतिहास में नाम आज भी अंकित है। बिंबिसार इसी को बोलते हैं- जो अभी अनुपम जी ने नाम लिया था। ऐतिहासिक पुरुषों में ये नाम आते हैं और इन ऐतिहासिक पुरुषों के भगवान महावीर स्वामी के समय की इन घटनाओं को, उनकी इस तरह की leadership की quality को अगर आज हम देखें तो दुनिया के management चल रहे हैं। दुनिया में leadership की बहुत सारी किताबें, अनेक तरह की कहानियों के साथ सिखाई जाती हैं। अगर हम इन राजा श्रेणिक की इस leadership को देखें और उनके समय पर और उनका एक आगे पुत्र आने वाला अभय कुमार, अगर हम इनकी गुणवत्ता को देखें तो बहुत बड़ी leadership, हम आज भी दुनिया को समझा सकते हैं **“Leadership according to the view of Emperor Shrenik”**

धर्म के लिए युवाओं का योगदान

यह सब कुछ हो सकता है लेकिन इस तरह की सोच वाले लोग चाहिए। आपके बेटे जब तक धर्म को नहीं पढ़ेंगे विज्ञान के साथ में, तब तक उनके अन्दर यह सोच नहीं आएगी। बेटे और बेटियों में जब तक धर्म के साथ कुछ करने का माद्दा नहीं बनेगा तब तक यह बात नहीं बनेगी। इसलिए आज हमने एक बहुत बड़ी पहल और कर रखी है...मैं आपको बता देता हूँ। जो भी घरों में बैठे हुए बेटे-बेटियाँ हैं, पढ़े-लिखे हैं, नई-नई बहुएँ हैं, उन्हें MA कराओ, अच्छे-अच्छे नए-नए subjects से। जो MBA करे हुए हैं, उन्हें MA करने में ऐसा नहीं लगना चाहिए कि हम तो MBA करके आये और घर में बैठे हैं, अब हम MA कैसे करें? नहीं MA कभी भी बुरी नहीं होती, MA करो। MA in Prakrit, MA in Sanskrit, MA in Jain-Literature, किसी में भी करो, MA in social science किसी में भी करो। आप अगर MA in education, अगर आप MA करेंगे तो उससे फायदा मिलेगा।

International catalogue में जैन धर्म की मान्यता दर्ज कराना

आपके MBA के साथ में कभी आप PhD नहीं कर पाओगे लेकिन MA के अगर, आपके साथ में master degree किसी भी subject में, ऐसे subjects में होगी तो उसके माध्यम से, उससे related जो भी जैन ग्रंथ होंगे, जैन आचार्यों के जो भी ग्रंथ होंगे, उन ग्रंथों पर आप PhD कर सकते हो और इस PhD के माध्यम से ही international catalogue में आपके जैन धर्म की एक मान्यता दर्ज होती है। यह सीखो। आपके सामने ये सब चीजें हो सकती हैं। आपके घरों में बहुएँ-बेटियाँ बैठी हैं, कुछ नहीं कर रही हैं। यूँ नहीं कह रहा कुछ नहीं कर रही अर्थात् घर का काम-काज तो कोई भी कर लेगा, होता रहेगा लेकिन घर बैठे online correspondence course के through भी MA होती है। बड़ी-बड़ी universities से हो सकती है, IGNOU से हो सकती है। इधर तुम्हारा दमोह में Eklavya है, उससे हो सकती है, आस-पास तुम्हारी रीवा की university है वहाँ से हो सकती है। वहाँ पर भी एक Jainism का department बन सकता था, वहाँ पर भी कुछ बात हुई थी। लेकिन वे सब बातें समाज की कमजोरियों के कारण से पड़ी रह जाती हैं और कुछ काम नहीं होते हैं।

समाज का कर्तव्य

समाज के लोगों को सिवाय मन्दिर में पूजा, अभिषेक और शान्ति-धारा के अलावा कुछ आता ही नहीं है। दुनिया की energy, दुनिया का पैसा, सिर्फ इसी में लग रहा है। **शिक्षा के नाम पर बिल्कुल शून्य हो रहे हैं। जब तक आपका शिक्षा के लिए graph नहीं बढ़ेगा तब तक दुनिया के सामने आप शिक्षित नहीं कहलाओगे, भले ही आप 100% शिक्षित हो, यह ध्यान रखना।** हर घर में से एक-एक बेटा-बहू को Jainism के subject के साथ में PhD करानी चाहिए और ऐसी 40 से 50 MA इस बार हमने Eklavya university से लोगों के लिए nominate करवाने का एक program बनाया है। उसमें अभी आपके यहाँ के लोगों का नाम शामिल नहीं है। वह तो हो चुका है, जो MA कर रहे हैं, वह शुरू हो गए हैं लेकिन इस line को, इस pipeline को बनाए रखना चाहिए। इससे शुरुआत हुई है, तो इसको

बनाए रखना चाहिए। आपके आस-पास अनेक universities हैं, जिनमें Jainism के department होते हैं, प्राकृत आज इसीलिए मरी जा रही है क्योंकि उसको पढ़ने वाले student नहीं होते। कई जगहों पर, कई universities में प्राकृत के, Jainism के department खुलते हैं लेकिन उसमें कोई अपना नाम register नहीं कराता कि मुझे प्राकृत पढ़ना है और उसमें कुछ भी नहीं होता है। सिर्फ नाम register कराओ, संख्या बढ़ाओ और उससे कुछ भी कठिनाई नहीं होती है। घर बैठे आपके लिए किताबें आएंगी, घर बैठे आपको सब कुछ पढ़ने को मिलेगा और केवल आपको परीक्षा के लिए जाना हो तो परीक्षा देने के लिए जाना पड़ेगा। दुनिया में घूमते हो एक बार university तक भी चले जाना।

हर जैन का कर्तव्य: Jainism में M.A. PHD करना

यह काम जब तक आपके द्वारा नहीं होगा तब तक आपकी इन पढ़ाई-लिखाइयों से, जो बच्चों के लिए लाखों-करोड़ों खर्च करते हो, इससे जैन धर्म का कोई उद्धार नहीं हो रहा है। **इससे केवल multinational companies का उद्धार हो रहा है। जैन धर्म का कुछ नहीं हो रहा है, यह ध्यान रखना।** आज आपके सामने ये चीजें हैं, आप इन चीजों के माध्यम से अपने jainism की श्रद्धा अपने बच्चों तक पहुँचा सकते हैं। बच्चा किसी भी तरीके की faculty के साथ में पढ़ा हुआ हो, stream के साथ में पड़ा हुआ हो, उसे M.A. किसी न किसी ऐसे subject में कराओ जो आगे चलकर के वह PHD करे और PHD करने से ही उसे समझ में आएगा कि जैन ग्रंथों में क्या लिखा हुआ है? यह अगर बात आगे बढ़ेगी, यह एक प्रवाह बनेगा तो जैनों का नाम शिक्षा में आगे निकलेगा और जब तक आपका नाम शिक्षा में नहीं आगे आएगा, आप शिक्षित होते हुए भी लोगों की नजरों में अशिक्षित कहलाओगे, यह ध्यान रखना। यह सीख लो और इसी तरह की बातों को क्रियान्वयन करने की योजना बनाओ। बोलो तो! नहीं आ रहा है, तो भी कहना... महाराज! नहीं भी आ रहा है तो आपसे समझ लेंगे। इतना तो बोलो और जो समझना है वह बाद में समझ लेंगे लेकिन हमें कुछ न कुछ ऐसा जरूर करना पड़ेगा। **बिना शिक्षा में आगे बढ़े हुए हमारे बेटों को ही हमारे आचार्यों पर, हमारे तीर्थकरों पर, विश्वास नहीं होता है।** हम किसको क्या सिखाने जाएँ? अजैनों की बात तो छोड़ी, तुम अपने बच्चों को ही तो भीतर से जैन बना लो। यही बहुत बड़ी बात हो जाएगी और यह तभी संभव है जब हम उसको इस तरह की शिक्षाओं के साथ में आगे बढ़ाएँ। इसलिए जब तक आपके मन में इस तरीके का विचार चले कि देखो कैसी परीक्षा ली जाती है? कैसे राजा भी बच्चे की परीक्षा लेते हैं? एक पिता कभी पुत्र की परीक्षा लेता है? कुछ नहीं लेता। सीधा-सीधा उसके कहे अनुसार, जो मन आता है, करता जाता है लेकिन परीक्षा लेकर कभी कोई पिता अपने पुत्र को आगे नहीं बढ़ाता और यह परीक्षा लेकर के ही हर कार्य करना चाहिए।

9. धर्म सनातन नहीं-अहिंसा की परम्परा सनातन है

आचार्य श्री पूज्यपाद विरचित **सिद्ध-भक्ति** का आलम्बन लेते हुए, कुछ दिनों से सिद्ध भगवान की बातों की जा रही हैं और वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते कुछ अन्य बातें भी बीच में आ जाती हैं।

सिद्ध बनने से पूर्व अरिहन्त अवस्था आवश्यक



सिद्ध भगवान बनने के लिए क्या करना चाहिए? यह भी आपको बताया है और जब सिद्ध बनते हैं तो उससे पूर्व में अरिहन्त बनना भी बहुत जरूरी होता है। **बिना अरिहन्त बने कोई भी सीधा सिद्ध नहीं बनते।** थोड़ी देर के लिए भी बने लेकिन अरिहन्त जरूर बनते हैं। जो किसी भी तरह के अन्य उपसर्ग आदि के साथ में अरिहन्त-अवस्था को प्राप्त करते हैं, उनके लिए अरिहन्त-दशा थोड़ी देर के लिए होती है। जिनका शरीर जल जाए, जिनकी आयु बहुत थोड़ी रह जाए, जिनके शरीर की स्थिति ज्यादा न रहे, उनके लिए अरिहन्त-दशा थोड़ी देर के लिए रहती है।

अरिहन्त भगवान द्वारा धर्म देशना

जो तीर्थंकर होते हैं, जो धर्म का प्रवर्तन करते हैं, उनके लिए यह धर्म हमेशा बताना जरूरी होता है और इसे बताने के लिए उन्हें इस धरती पर, धर्म को बताने के लिए, धर्म की देशना करना भी जरूरी होता है। उनके लिए वह अरिहन्त की दशा थोड़ी देर में रह कर चली जाए ऐसा नहीं हो सकता। तीर्थंकर जो होते हैं उन्हें कुछ वर्षों तक धर्म-देशना देना जरूरी होता है। वे तत्काल अरिहन्त बनकर मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकते। उन्हें कुछ समय इस धरती पर टिकना जरूरी है क्योंकि वह तीर्थंकर नाम-कर्म के साथ में अरिहन्त-दशा को प्राप्त किए हैं। वह क्या अपने अन्दर धारण करके अपनी आयु के उन क्षणों को व्यतीत करते हैं, यह बात यहाँ इस काव्य में आगे बताई जाती है...

काव्य नम्बर 4, पढ़ते हैं आगे :

जानन् पश्यन् समस्तं, सम-मनुपरतं, संप्रतृप्यन् वितन्वन्,
धुन्वन् ध्वान्तं नितान्तं, निचित-मनुसभं, प्रीणयन्नीशभावम्।
कुर्वन् सर्वप्रजानामपरमभिभवन्, ज्योति-रात्मानमात्मा,
आत्मन्येवात्मनाऽसौ, क्षणमुपजनयन्, सत्स्वयंभूः प्रवृत्तः।४।

यहाँ पर अभी अरिहन्त-दशा का वर्णन किया जा रहा है। जो सिद्ध बनते हैं, सिद्ध बनने के बाद में जब उनके अन्दर अरिहन्तपना आ जाता है, जिन्हें हम णमो अरिहंताणं के रूप में पहले स्मरण करते हैं ऐसे अरिहन्त भगवान क्या करते हैं?

जानन् पश्यन् समस्तं समं

‘जानन्’ जानते हुए, ‘पश्यन्’ अर्थात् देखते हुए, ‘समस्तं’ अर्थात् समस्त पदार्थों को, ‘समं’ अर्थात् एक साथ। इन विशेषणों के साथ मैं वे अरिहन्त भगवान अपनी अरिहन्त दशा में रहा करते हैं। उन अरिहन्त भगवान को जितने भी समय तक इस पृथ्वी पर अरिहन्त दशा में टिकना है, वे क्या करेंगे ? उनके ये कुछ कार्य रहेंगे। ये सब एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया बताई जा रही है। जानते हुए, देखते हुए, ‘जानन्’ का मतलब जानते हुए, संस्कृत के हिसाब से **शतृन् प्रत्यय** कहलाते हैं और इसका मतलब होता है जब कोई निर्बाध रूप से, निरन्तर कोई प्रक्रिया चलती है, होते रहना, तो उसमें यह प्रत्यय लगाया जाता है। उसको बताने के लिए इन शब्दों के माध्यम से अर्थ निकाला जाता है। जानना नहीं कहा जा रहा है। एक दिन आपको बताया था...ज्ञाता-दृष्टा। **ज्ञाता मतलब होता है जानना, दृष्टा मतलब देखने वाला** और ज्ञाता मतलब जानने वाला। जानने वाला, जब हम कहते हैं तो हमारी दृष्टि जाती है- उस कर्ता पर। देखने वाला जब हम कहते हैं तो देखने वाला कौन? तो हमारी दृष्टि जाएगी- उस कर्ता पर, जिसे हम अगर english form में समझना चाहे तो उसे हम subject कहते हैं, doer कहते हैं। करने वाला जो व्यक्ति होता है, वह उसका जो स्वामी होता है उसको ज्ञाता कहा जाएगा। जो जानने का स्वामी है, जानने वाला कर्ता है। वह उस क्रिया को जो करेगा, उसका जो subject है, वह ज्ञाता कहलाएगा। देखने वाला, वह भी उसका subject कहलाएगा लेकिन यहाँ अभी जो बताया जा रहा है, वह क्या कहा जा रहा है? **जानन् पश्यन्।** जानते हुए, देखते हुए, अर्थात् **जानने वाला जो क्रिया करेगा उसकी उस क्रिया का नाम जानन् क्रिया कहलाएगा। देखने वाला जो क्रिया करेगा उसकी उस क्रिया का नाम पश्यन्, यह क्रिया होगी।** यह verb है। निरन्तर चलने वाली एक प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया के माध्यम से वह अरिहन्त भगवान वर्षों तक, जब तक उनकी आयु के अन्तिम अन्तर्मुहूर्त नहीं आते तब तक वे इसी क्रिया के साथ में निरन्तर प्रवर्तते रहते हैं।

भगवान महावीर स्वामी दिव्य-देशना

आप भूलना नहीं यह सिद्ध भगवान की भक्ति हमने वीर शासन जयन्ती से शुरु की है। हमने भगवान महावीर स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त कराने के बाद में अभी उनके सिद्धपने का भाव नहीं बता रहे हैं हम, उनको अभी हमने सिद्ध नहीं बताया। जबसे भगवान महावीर स्वामी को केवलज्ञान हुआ, उन्हें इन्द्रभूति आदि गौतम गणधरों की प्राप्ति हुई और उसके बाद में जो उनकी दिव्य- देशना चल रही है, वह दिव्य- देशना निरन्तर चल रही है और उस दिव्य- देशना में वे हमें मोक्ष पुरुषार्थ बता रहे हैं, सिद्ध भगवान का ज्ञान दे रहे हैं और वे यह बता रहे हैं कि हर जीव को सिद्ध भगवान का ध्यान करना चाहिए, हर जीव को सिद्ध भगवान बनने के लिए निरन्तर भावना करनी चाहिए। यह उन्हीं का उपदेश है, भगवान महावीर स्वामी का, यह वीर शासन जयन्ती होने के बाद में निरन्तर उपदेश जिस रूप में मिला, वह उपदेश आपको दिया जा रहा है। मोक्ष जब होगा वह दीपावली का दिन होगा। तब भगवान का मोक्ष कराएँगे अर्थात् भगवान महावीर स्वामी आपके सामने अभी भी जीवित हैं, वे alive हैं, वे अरिहन्त दशा में हैं। यह ध्यान रख कर यहाँ बैठना और उन्हीं महावीर भगवान की यह बात चल रही है, जो जान रहे हैं, देख रहे हैं। भगवान को केवलज्ञान हो गया। कितनी उम्र में हुआ?

प्रश्न: कितनी उम्र में उन्होंने दीक्षा ली ?

उत्तर: 30 वर्ष की उम्र में उन्होंने दीक्षा ली।

प्रश्न: कितने वर्ष तक उन्होंने तपस्या की?

उत्तर: 12 वर्ष तक उन्होंने तपस्या की।

प्रश्न: कितना हो गया?

उत्तर: 42 वर्ष हो गया। 42 years के वह हो गए।

प्रश्न: उनकी total age कितनी है?

उत्तर: वह 72 years की है। approx उतनी है, थोड़ा बहुत कुछ दिन कम-ज्यादा हो सकते हैं, लेकिन वह 72 years माना जाता है। अभी वे 42 years के हैं।

प्रश्न: कितनी उम्र उनकी शेष बची अभी?

उत्तर: अभी 30 years शेष हैं।

प्रश्न: 30 साल तक वे क्या करेंगे?

उत्तर: यह करेंगे, जो यहाँ लिखा जा रहा है। वे अपनी आत्मा को तो जानेंगे ही, अपनी आत्मा को तो उन्होंने प्राप्त कर ही लिया, स्व-आत्मा की उपलब्धि तो उनको हो ही गई लेकिन अभी भी वह जो निरन्तर क्रिया कर रहे हैं वह क्रिया कौन सी है? निकम्मे होने के बाद भी वह कुछ कर रहे हैं। ध्यान है कि नहीं? निकम्मा होने का sense मतलब इतना ही है कि वे और कुछ नहीं करेंगे, दूसरों का काम नहीं करेंगे, दूसरों के लिए वह कुछ नहीं करेंगे लेकिन वे अपनी आत्मा में होने वाली क्रिया तो निरन्तर करेंगे। वह क्रिया क्या है? निरन्तर 'जानन् पश्यन्'। किसको? यहाँ स्वयं को नहीं कह रहे हैं... 'समस्तम्' समस्त में सब आ जाता है, स्व भी आ जाता है, पर भी आ जाता है और पर में चेतन भी आ जाता है, अचेतन भी आ जाता है, पूरा विश्व आ जाता है, दृश्य भी आ जाता है, अदृश्य भी आ जाता है, मूर्त भी आ जाता है, अमूर्त भी आ जाता है।

केवलज्ञान की शक्ति

किसी भी तरह का पदार्थ हो वह उनके ज्ञान की शक्ति से बाहर नहीं जा सकता। कोई भी दिखने वाली, अदृश्य चीज हो, जिसे आप मान लो, आकाश तत्त्व कहते हैं, आकाश द्रव्य कहते हैं, यह आकाश आपको कभी दिखाई नहीं देता लेकिन आप इसको आकाश कहते हैं। आपको real में कभी आकाश देखने में ही नहीं आता। आकाश को देखना उनका काम है, जिनके पास में केवलज्ञान हो गया हो। आप क्या आकाश देखोगे? इन आँखों से कभी भी अमूर्त चीजें नहीं देखी जा सकती हैं, मूर्त चीजें देखी जा सकती हैं। इन आँखों से हम पौद्गलिक पदार्थ देख सकते हैं, matter देख सकते हैं वह भी mortal होना चाहिए, immortal matter को हम नहीं देख सकते हैं। अमूर्त पदार्थों को हम नहीं देख सकते हैं। उसको देखने का जो कार्य

है, वह आकाश जो द्रव्य है, वह जो एक पदार्थ है, वह जिनके देखने में, जानने में आता है, उन्हें केवलज्ञानी कहा जाता है। वह देखने वाले कौन हैं? वे जो समस्त को देख रहे हैं... 'जानन् पश्यन् समस्तम्' समस्त को देख रहे हैं।

आकाश द्रव्य

आकाश भी एक द्रव्य है। वह अमूर्त द्रव्य है। वह आपको दिखाई नहीं देगा। यह बच्चों वाली बातें हैं। बेटा! देखो! Blue sky! ऊपर देखो! **आकाश कैसा है? आकाश का रंग कैसा है? बोलो बच्चों!** आकाश कैसा होता है? नीला होता है। जब आकाश नीला हो गया, वह colourful हो गया तो फिर वह अमूर्त कहाँ रहा? आकाश द्रव्य कैसा कहा गया है? अमूर्त और अमूर्त वह द्रव्य होता है, जिसमें कोई colour न हो। colour अगर आ गया तो colour तो हमेशा पुद्गल द्रव्य में होता है। हमें कहा जाता है आकाश नीला है। आकाश नीला है कि आकाश में नीलिमा छाई है। क्या कहा? आप आकाश को नीला मान लेते हो और कभी-कभी क्या कहा जाता है? आकाश में नीलिमा छाई है। जब सुबह-सुबह के बाद सूर्य उदित होता है तो आप कहते हो, आकाश में अरुणाई छाई है, अरुण आकाश दिखाई दे रहा है। अरुण सूर्य के कारण से हमें चारों तरफ लालिमा दिखाई देती है तो आप कहते हो...आकाश लाल हो गया। जब पीलिमा दिखाई देती है तो आप कहते हो...आकाश पीला हो गया। भाई! आकाश कितने colour बदलता है आपका? कोई आपके पास definition है कि नहीं किसी चीज की? Science-science कहने वालों! बताओ तो कि आकाश का रंग क्या है? नीला पदार्थ दिख रहा है इसलिए वह नीला हो गया, लाल उसके ऊपर reflection आ गया इसलिए वह लाल हो गया तो वह अपने colour बदल रहा है। उसका original colour क्या है? सुन रहे हो कि नहीं, किससे पूछें? तुमसे पूछूंगा। तुम किससे पूछोगे? तुम google से पूछना। तुम्हारे पास पूछने के लिए और कुछ तो है ही नहीं है। जब भी हम science की बात कहेंगे, आपका सीधा-सीधा net खुलता है और आपका mobile शुरू होता है। आप google में पूछने लग जाते हो... भाई बताओ what is the colour of the sky? वह बताएगा...क्या colour है? sky blue होता है।

Sky is colourless

आप जानते हो, उसको blue क्यों कहा जाता है? वह actually blue नहीं है, blue तो वह एक हमारी आँखों में reflect होने वाला colour है और अगर आपने थोड़ी-सी physics पढ़ी हो तो उसमें बताया जाता है कि blue colour की wavelength सबसे ज्यादा होती है। वह सबसे पहले हमारी आँखों पर reflect होता है। दूर रहने वाली कोई भी चीजें होती हैं, वे हमें किसी रंग में भी अगर पहले दिखाई देंगी, उनका रंग कुछ भी हो, वह पहले हमें नीला-नीला सा दिखाई देने लग जाता है। आकाश का रंग नीला नहीं है, आकाश कभी भी लाल नहीं होता, आकाश कभी भी पीला नहीं होता। भगवान महावीर स्वामी ने अपने केवलज्ञान में जो देखा और उसको जाना तो उन्होंने बताया **Sky is colourless**. आकाश कैसा है? colourless है। उसका कोई colour नहीं है। अब आप colourless चीज को कैसे देखोगे? यह बताओ। आपके पास में colourless चीज को देखने की आँखें कहाँ हैं? बोलो तो कुछ? नहीं हैं! इतना

तो बोलो कि नहीं है? अर्थात् हम colourless चीजों को नहीं देख सकते हैं। हमें जो भी colour दिखाई देगा, वह colour किसी न किसी पौद्गलिक पदार्थ का होगा, matter का होगा, वह colour उस sky का नहीं होगा। actually में जो आकाश द्रव्य, उसका तो कोई colour नहीं होता। यह कौन देखने वाला? यह कौन जानने वाला? यह जानने वाले जो सर्वज्ञ होते हैं, सर्व-ज्ञानी होते हैं, उन्हीं को यहाँ पर कहा जा रहा है— **‘जानन् पश्यन् समस्तम्’** सबको जानने वाले, सबको देखने वाले।

मूर्तिक-अमूर्तिक द्रव्य

इसलिए जब वह जानकर, देखकर हमें बताएँगे तो वह कहेंगे आकाश द्रव्य एक अमूर्तिक द्रव्य है, मूर्तिक नहीं है। **अमूर्तिक का मतलब जो colourless है, tasteless है, smell less है, touchless है, उसको कहते हैं— अमूर्तिक।** जिसमें touch आदि जो चीजें होती हैं, जिसका हम taste ले सकें, जिससे हमारी इन्द्रियों के साथ में direct हमें यह knowledge हो सके कि इस चीज का यह colour है, इस चीज का यह taste है...इन सारी की सारी चीजों को पौद्गलिक चीजें कहा जाता है, पुद्गल कहा जाता है। ये सब अजीव पदार्थ, मूर्तिक पदार्थ हैं लेकिन आकाश भी अजीव होते हुए एक अमूर्तिक पदार्थ है। उसको भी वह देखते हैं, उसको भी वह जानते हैं और पूरा जानते हैं, पूर्ण रूप में जानते हैं। आकाश कितना है? वह अनन्त रूप में है। आकाश की अनन्तता को जानना-देखना, यह सिर्फ सर्वज्ञ दशा में हो सकता है, अरिहन्त दशा में हो सकता है।

सर्वज्ञ अरिहन्त भगवान

भगवान महावीर स्वामी की तरह, जो तपस्या करने वाला होगा, जिसे केवलज्ञान प्राप्त हो जाएगा, उसी व्यक्ति के अन्दर, इस तरह की आत्मा में, यह जानने-देखने की प्रक्रिया निरन्तर होती है। अरिहन्त अवस्था में वह जान रहे हैं, देख रहे हैं, समस्त को जान रहे हैं और **‘समं’** अर्थात् एक साथ जान रहे हैं। पूरे आकाश को एक साथ देख रहे हैं। आकाश में रहने वाली जितने भी द्रव्य हैं उन सबको एक साथ देख रहे हैं। आगे क्या होने वाला है, पीछे क्या हो चुका और present में क्या चल रहा है, इसको भी वह एक साथ देखने और जानने की, उस ज्ञान की शक्ति, उनके अन्दर उजागर हो जाती है और उसी के माध्यम से, उनकी आत्मा में निरन्तर, वह जानने-देखने की क्रिया चलती रहती है।

जानना-देखना लगातार चलने वाली क्रिया

जानने-देखने की क्रिया और जानने-देखने वाला...इन दोनों में आपको अन्तर समझ में आना चाहिए। जब हम, **‘वाला’** कहते हैं, तो हमारी दृष्टि उस soul, उस आत्मा पर जाती है और जब हम **‘क्रिया’** पर कहते हैं, तो हमारी दृष्टि उस क्रिया पर जाती है, वह जान रहे हैं, वह देख रहे हैं। वह जानने-देखने की जो क्रिया है वह एक साथ सबको जान रही है, सबको देख रही है और इस क्रिया को करते-करते **‘अनुपरतम् संप्रतृ-प्यन्’ ‘अनुपरत’**; अर्थात् इस क्रिया से वो उपरत नहीं होते, हटते नहीं हैं, वह अनुपरत रहने वाली क्रिया है। अर्थात् always to be continue, हमेशा जो है, वह यह चलते रहने वाली प्रक्रिया है, रुकने वाली क्रिया नहीं है। अब यह क्रिया एक बार शुरू हो गई तो यह बनी ही रहेगी। एक बार उनके अन्दर यह light आ गई

तो अब यह जलती ही रहेगी। उनका cell कभी down नहीं होगा।

उपरत व अनुपरत में भेद

कोई भी चीज होती है...mike होता है, battery होती है, कोई भी तरीके की मशीन होती है, जब तक उसमें light दी जाती है, cell डाला जाता है तब तक तो वह चलती है। अगर कहीं आप उसको off नहीं किए और उसमें cell डला रहा और वह खुला डला रहा तो उसका cell फुँकता रहेगा, दूसरे दिन जब आप बैठकर देखोगे तो फुँका हुआ मिलेगा। उसके लिए switch on करोगे तो कोई उसमें light नहीं जलेगी, क्यों? क्योंकि उसका cell फुक गया, उसकी जो energy थी, सब चली गई। अब क्या? अब वह काम करना बन्द कर दिया, यह हो गया **उपरत, अपनी क्रिया से रुक गया और अनुपरत, जो अपनी क्रिया से कभी भी न रुके।**

ज्ञाता-दृष्टा होना आत्मा की स्वाभाविक प्रक्रिया

भगवान में अब कोई fuel डालने की जरूरत नहीं है कि कब तक जानेंगे, कब तक देखेंगे? जब तक तुम उनको नमोस्तु करते रहोगे तब तक, जब तक पंचम काल रहेगा तब तक, जब तक उनको जानने-मानने वाले लोग रहेंगे तब तक। क्या वह आप पर depend हैं? क्या वह किसी काल पर depend हैं? वे किसी पर depend नहीं हैं। वह स्वतंत्र हैं, independent हैं और उनके अन्दर जो ये चलने वाली क्रिया है, यह क्रिया भी उनकी अपनी आत्मा की स्वाभाविक क्रिया है। इसके लिए किसी fuel की, किसी other matter की कोई आवश्यकता नहीं है। कोई cell की, कोई charging की कोई आवश्यकता नहीं है। यह निरन्तर होने वाली देखने और जानने की प्रक्रिया है। अनन्त काल तक भी ऐसे ही चलती रहेगी। एक बार शुरू होने के बाद में इस मशीन में कभी कोई disturbance नहीं होता। एक बार अगर अनन्त को जानना शुरू कर दिया तो फिर अनन्त काल तक अनन्त को ही जानते रहेंगे। चीजें दुनिया में बदलती रहेंगी लेकिन उनके सामने वह सारा का सारा, एक साथ जानने में और एक साथ देखने में आता रहेगा।

अनुपरत क्रिया एक संप्रतृप्यन् प्रक्रिया

इस तरह की अनुपरत होने वाली क्रिया से वे क्या रहते हैं? **‘संप्रतृप्यन्’** एक शब्द है इसमें। संस्कृत थोड़ी कठिन सी लगती है...पढ़ने में भी, बोलने में भी। लेकिन जो पढ़ते हैं, शब्दों के अर्थ समझते हैं, उन्हें उसमें जो भाव निकलता है, उस भाव से उन्हें बड़ा आनन्द आता है। वह जानते हुए, देखते हुए भी, सबको एक साथ बिना किसी बाधा के, निरन्तर अपने अन्दर वह क्या रहते हैं? **‘संप्रतृप्यन्’** तृप्त रहते हुए। क्या रहते हुए? तृप्त।

सन्तोष से बड़ी तृप्ति

तृप्त जानते हो! **तृप्ति सन्तोष से भी एक बड़ी चीज होती है।** सन्तोष तो एक फिर भी कहना चाहिए छोटी चीज हो गई, तृप्ति एक अलग चीज होती है। जैसे मान लो आपने भोजन किया तो भोजन करने के बाद में

आपका पेट तो भर गया तो आपको सन्तोष हो गया...चलो! भूख लग रही थी भूख तो मिट गई लेकिन तृप्ति होना एक अलग चीज होती है, यह भाव है। अब इस भाव को कैसे समझाया जाए? सन्तोष हो जाना और तृप्त हो जाना...मानो जैसे गर्मी के दिन थे और गर्मी के दिनों में बहुत भीतर से प्यास लग रही थी, पानी मिल गया। तड़फ रहे थे भीतर से, बहुत वेदना हो रही थी, बहुत भीतर से कमजोरी हो रही थी। ऐसा लग रहा था, उल्टी होने ही वाली है तो क्या मिल गया? पानी मिल गया। पानी मिल गया तो क्या हो गया? सन्तोष हो गया। क्या हो गया? सन्तोष हो गया। अब उसी जगह पर किसी ने आपको पानी तो दिया लेकिन उस पानी में थोड़ी सी बर्फ डालकर दी। उस बर्फ के साथ में उसने थोड़ा उसमें मीठा भी डाला, उस मीठे के साथ में उसमें उस थोड़ा सा इलायची भी डाली, उसके साथ में उसने थोड़ा सा रूह अफजा का colour भी डाला और उसके साथ में जब ये सब चीजें मिला दी गई, फिर थोड़ा सा ऊपर से एक अच्छा गुलाब के फूल का एक essence आता है वह डाला, खस डाला, उसका essence डाला और फिर उसका पानी आपको पिलाया। that is called- तृप्ति। हाँ! अब मिला कुछ, आज तृप्ति हुई और वह भी थोड़ा नहीं दिया। ऐसा नहीं कि आपको बस थोड़ी सी, इतनी सी, एक चम्मच में या किसी एक छोटी सी किसी भी चीज में देकर, आपके बस कण्ठ तक गया और वह रह गया। ऐसा नहीं दिया, आपके सामने एक जग भरकर...पियो जब तक पीना है। क्या हो गया? एक जग में पुष्टि नहीं होगी क्या? तृप्ति नहीं होगी तो दूसरा जग भी तैयार है। जब तक कि आप यह न कहने लग जाओ कि बस! बहुत हो गया, तृप्ति हो गई, बस! हो गया, बहुत हो गया। अब कोई भी तड़पन नहीं है, अब कुछ नहीं है। ऐसी तृप्ति को यहाँ पर कहा जा रहा है- **संतृप्यन्**। तृप्त रहते हुए, तृप्ति बहुत जरूरी है। **जानने-देखने से तृप्ति होगी क्या?** हम तुम्हें जान रहे हैं, तुम हमें जान रहे हो, उससे क्या तृप्ति होनी है? जानना-देखना एक अलग चीज है और तृप्ति होना अलग चीज है। आखिर आत्मा के अन्दर भी तो कुछ ऐसा सुख की अनुभूति होनी चाहिए, जिस सुख के माध्यम से उन्हें तृप्ति महसूस हो हमेशा...मैं तृप्त हूँ। अब जब आपको दो जग किसी ने फिर पिला दिया, पी जाओगे न? बोलो तो, अब फिर पीने के बाद में, जब आपके सामने फिर और extra लाया गया तो आप कहोगे, नहीं भाई! अब बहुत हो गया, अब नहीं, अब जगह नहीं है, उसका नाम क्या है? तृप्ति। **सन्तोष** तो एक बहुत छोटी सी चीज है। जब आदमी प्यासा होता है, उसको पानी मिल जाता है, सादा भी पानी मिल जाता है, बिल्कुल सामान्य-सा तो भी उसको सन्तोष हो जाता है। चलो! कम से कम जान तो बच गई, तड़फ रहे थे, वह तड़पन तो दूर हो गई। इसका नाम है- सन्तोष। सन्तोष नहीं है वह, सन्तोष से भी बहुत ज्यादा आगे है, तृप्त है।

संतृप्यन् : स्वयं में तृप्त होना

हम लोगों को पर-द्रव्यों में तृप्त होना पड़ता है, पर-पदार्थों में तृप्त होना पड़ता है और वह किसमें तृप्त हैं? वह स्वयं में तृप्त हैं। **‘संतृप्यन्’** समीचीन रूप से जो तृप्त होते रहते हैं हर समय, जैसे जानने-देखने की क्रिया हमेशा चलती रहेगी अनन्त काल तक, ऐसे ही वह अपनी आत्मा में तृप्ति महसूस करेंगे, अनन्त काल तक। अनन्त काल तक वह अपनी आत्मा में ही और किसी चीज में उन्हें तृप्ति नहीं होगी। एक चीज में जिसको एक बार तृप्ति हो जाती है वह फिर किसी दूसरी चीज की कभी इच्छा नहीं करता, अगर वास्तव में उसे उससे तृप्ति हुई हो तो। वास्तव में नहीं होती है इसलिए दूसरी की इच्छा होती है। एक बार अगर जिसको जिस पदार्थ से तृप्ति हो जाएगी, वह उसके अलावा कभी कोई दूसरे पदार्थ की इच्छा करेगा ही नहीं।

अरिहन्त भगवान आत्मा के अनन्त सुख से तृप्त

दूसरे पदार्थ की इच्छा करने में भी एक dependency होती है लेकिन अरिहन्त भगवान किसी पर depend नहीं होते हैं। **वह अपने ही स्वभाव में तृप्त हो रहे हैं, अपने ही आत्मा के सुख में तृप्त हो रहे हैं, अपने ही आत्मा के आनन्द में तृप्त हो रहे हैं।** यूँ नहीं समझना कि वे निकम्मे हो गए, वहाँ अब उन्हें बोरियत हो रही होगी। इसको बताने के लिए बताया जा रहा है... उनके अन्दर कभी कोई बोरियत नहीं होती क्योंकि जो अपने-आप में तृप्त रहता है, वह कभी बोर नहीं होता है। उसे कहीं कोई दूसरा bore खुदाने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती। जहाँ खुद उसके अन्दर का पानी का स्रोत, खुद उसके अन्दर भरा हुआ, निकल कर उसी को तृप्त कर रहा है, वहाँ किसी दूसरे स्रोत की कोई आवश्यकता नहीं है। आत्मा के एक-एक point में भरा हुआ अनन्त सुख का वह स्रोत खुल गया है। जैसे borewell में से एकदम से पानी खुल जाता है, पानी मिल जाता है, तो उसमें से जैसे पानी का वह स्रोत फूट पड़ता है तो वहाँ पर पानी ही पानी होता है। उसी तरीके से उनकी आत्मा का अनन्त सुख, वह निकल आया, फूट गया। इसलिए वे ऐसे तृप्त हुए कि वह अपने आप में ही तृप्ति महसूस अनन्त काल तक करते रहेंगे।

सिद्ध भगवान ऐसे छोटे-मोटे नहीं हैं कि केवल णमो सिद्धाणं कर लिया और काम हो गया। उन सिद्धों का स्मरण करने के लिए हमें उनकी quality भी जानना पड़ेगी और उसी quality को जानने के लिए, इस तरह से जो आचार्यों ने हमें कुछ लिखकर दिया है, उसको समझना पड़ेगा।

स्रग्धरा छन्द में 21 अक्षर होते हैं

समझो! शब्द तो छोटा सा होता है— **‘जानन् पश्यन् समस्तं, सम-मनुपरतं, संप्रतृप्यन् वितन्वन्’** हमने एक लाइन पढ़ दी और पढ़ कर निकल गए। लिखने वाले ने क्या सोच कर लिखा होगा? कितने भावों से लिखा होगा? एक-एक शब्द में कितना भाव छुपाने के लिए उन्होंने ऐसी क्रियाओं के प्रयोग किए होंगे ढूँढ-ढूँढ कर और यह क्रियाएँ किसी छोटे-मोटे छन्द में नहीं समाएँगी, इसलिए उन्होंने बड़े छन्द का आलम्बन लिया, जिसे **स्रग्धरा छन्द** कहते हैं। 21 अक्षरों वाला यह छन्द होता है। एक line पढ़ने में तीन बार रुकना पड़ता है, सात-सात अक्षरों के बाद में, तब जाकर वह एक line पढ़ने में आती है। बड़ा छन्द कहलाता है। यह जो भक्तामर-स्तोत्र आदि के छन्द होते हैं, सब **वसन्ततिलका** वगैरह, छोटे-छोटे छन्द होते हैं ये सब। यह जो पढ़ते रहते हो **‘दर्शनम् देव देवस्य’** ये सब **‘अनुष्टुप’** वगैरह छोटे-छोटे छन्द होते हैं।

सिद्ध भगवान के ज्ञान में लोकालोक झलकते हैं

सिद्ध भगवान की यह बड़ी स्तुति, यह किसी भी सिद्धचक्र की आराधना से कम नहीं है और जब आपको ऐसे सिद्धों का ज्ञान निरन्तर होता रहेगा, तब आपके अन्दर कहीं सिद्ध भगवान बनने की इच्छा उत्पन्न होगी। **आप सही ढंग से सिद्धों को समझ पाएँगे तो अपनी आत्मा को भी सिद्ध भगवान बनाने के लिए भीतर से भावना कर पाएँगे।** यह भावना ही सबसे बड़ी चीज है। हम अपनी आत्मा को शुद्ध बनाएँ, सिद्ध बनाएँ, तो शुद्ध बना कर हमें क्या मिलता है? दुनिया एक साथ देखेंगे हम, दुनिया एक साथ जानेंगे हम। चन्द्रयान पर चन्द्रमा कभी पहुँचे या न पहुँचे लेकिन हमें दिखाई देगा कि चन्द्रमा कहाँ है? चन्द्रयान कहाँ है? इस

चन्द्रयान की कितनी ताकत है? यह कितनी दूरी तक जा सकता है? उसके बाद में यह कहाँ पर blast होगा? कहाँ इसका fuel काम करना समाप्त कर देगा? और कहाँ पर इसका सारा का सारा, पूरा का पूरा यह fuel नष्ट होकर यह अपनी गति रोक देगा? ये सब चीजें आज हमें एक-एक करके जानने-देखने में आती हैं। **लेकिन सर्वज्ञ के ज्ञान में सब चीजें एक साथ, आज क्या हो रहा है? आने वाले दिनों में क्या होगा? आने वाले वर्षों में क्या होगा?** आने वाले युगों में क्या होगा? यह सब उनके ज्ञान में, एक साथ देखने-जानने में आता है और यही सब हमारी आत्मा का भी स्वभाव है। इसलिए सिद्ध एक नहीं हुए हैं, सिद्ध अनन्त होते हैं और हम सब भी उन्हीं सिद्धों की परम्परा में शामिल हो सकते हैं।

सनातन कोई धर्म नहीं, सनातन एक परम्परा

सिद्ध भगवन्तों की यह परम्परा अनादि-अनिधन परम्परा है, इसी को सनातन परम्परा कहते हैं। क्या बोलते हैं? धर्म कभी कोई सनातन नहीं होता। ये जो हिन्दू, हिन्दू, हिन्दू-धर्म, हिन्दू-धर्म, ये कोई सनातन, सनातन कहने से, कोई सनातन नहीं हो जाता है। **जो अहिंसा का भाव है...वह भाव सनातन है। हिंसा से दूर रहने का जो भाव है...यह अहिंसा का जो धर्म है यह सनातन है।** आज कोई भी पण्डित, कोई भी बाबा, व्यक्तियों को सनातन बना रहे हैं, धर्म को सनातन बना रहे हैं लेकिन किसी भी अच्छी परम्परा को सनातन नहीं कह रहे हैं। अगर वही बाबा यह कहने लग जाएँ...अहिंसा की परम्परा सनातन है, अहिंसा धर्म सनातन है, तो यह सनातन का भाव, सभी के लिए स्वीकार करने में आ जाएगा। चाहे वह किसी भी caste का व्यक्ति हो...हाँ! भाई अहिंसा सनातन है। हिन्दू-हिन्दू कहने से तो आदमी दिखाई देता है। जो भगवा वस्त्र पहने हो या कोई इस तरीके का कोई झण्डा अपना प्रयोग करता हो, व्यक्ति-विशेष का वह धर्म कभी भी सनातन नहीं हो सकता। धर्म वह सनातन होता है जो सबका हो, सबके लिए हो, हर मजहब के व्यक्ति के लिए अहिंसा प्रिय है और हर वह व्यक्ति, जिसने किसी नए मजहब को भी जन्म दिया, नए सम्प्रदाय को भी जन्म दिया, उसने अहिंसा को माना, अहिंसा को स्वीकारा, अहिंसा पर चला है वह। अगर अहिंसा धर्म को सनातन कहा जाए **‘अहिंसा परमो धर्म’** सनातन है, अहिंसा धर्म को मानने वाला सनातन है तो यह बात पूरे राष्ट्र को स्वीकार हो सकती है लेकिन अगर किसी एक जाति के लिए सनातन कहा जाता है तो दूसरा जाति वाला उस समय पर मौन धारण कर लेता है।

श्रमण परम्परा...अहिंसा व अध्यात्म की परम्परा

हिन्दुओं को सनातन कहने से अगर उसमें जैन शामिल नहीं हैं तो जैन अपने आपको क्या समझेंगे? जैन हिन्दू तो नहीं होते हैं क्योंकि **हिन्दू धर्म की अपनी विशेषताएँ अलग हैं और जैन धर्म की विशेषताएँ अलग हैं।** भले ही हम लाख कहते रहें, लोगों के दिमाग में लाख बातें इस तरीके की पड़ी रहें कि हिन्दू धर्म से जैन धर्म निकला है, हिन्दू धर्म से बौद्ध धर्म निकला है लेकिन यह बात नितान्त गलत है। इन्हें कभी भी इतिहासकारों ने या अच्छे मनीषियों ने स्वीकार किया ही नहीं है। यहाँ तक कि अच्छे जो दार्शनिक हुए, पण्डित जवाहरलाल नेहरू जैसे लोग discovery of india में भी उन्होंने लिखा है कि नहीं! यह अपने आप में एक अलग धर्म है। एक अलग परम्परा है। एक ऐसी tradition है, जो वेदों से भी पहले चली आई हुई एक परम्परा है, जिसे आर्य-परम्परा, श्रमण-परम्परा कहा जाता है। इस श्रमण-परम्परा के माध्यम से

ही, दुनिया में हमेशा से अहिंसा धर्म रहा है और दुनिया में हमेशा से आध्यात्मिक, जो एक भाव दुनिया में देने का रहा है, वह हमेशा से रहा है, यह परम्परा को सनातन कहना।

अहिंसा की प्रतिष्ठा ही सनातन परम्परा

धर्म की परम्परा अगर सनातन बनेगी तो वही सनातन बनेगी जिससे सबका भला हो। एक मजहब को, एक सम्प्रदाय को हम, सनातन-सनातन कहते-कहते दूसरे मजहब से, दूसरे लोगों से, अगर हम द्वेष-भाव अपना रहे हैं या उनको भी हम जबरदस्ती, अपने में शामिल करने की प्रक्रिया कर रहे हैं तो यह भी एक हिंसा है। **भगवान महावीर स्वामी ने इसको भी हिंसा कहा। किसी के विचारों को जबरदस्ती परिवर्तित करने की कोशिश करना भी एक हिंसा है।** आप उसे समझाओ, आप उसे बताओ, दबाव मत दो, उसे समझने के लिए स्वतंत्र छोड़ो, जब उसकी मंशा आएगी वह समझ लेगा। इसलिए भगवान ने जानते हुए, समझते हुए, सब कुछ देखते हुए भी, किसी पर कभी दबाव नहीं डाला, कभी उन्होंने किसी चीज के लिए आंदोलन नहीं किए, कभी उन्होंने किसी चीज के लिए किसी को भड़काया नहीं, अहिंसा के लिए भी भड़काया नहीं। अहिंसा तो उनके presence से अपने आप उस जगह पर रहा करती थी, जहाँ पर वे उपस्थित हो जाते थे। जहाँ भगवान महावीर स्वामी उपस्थित हो जाते थे, जिस स्थान पर पहुँच जाते थे, उसी के घेरे में चारों ओर 100-100 योजन तक कोई हिंसा नहीं कर सकता। इसका नाम है...अहिंसा की प्रतिष्ठा। 100 योजन क्या कहलाता है? एक योजन में चार कोस और एक कोस में तीन किलोमीटर। मतलब 12 किलोमीटर, 1200 किलोमीटर के घेरे में कहीं कोई व्यक्ति, किसी को मार नहीं सकता। कोई भी साँप किसी मेंढक को नहीं पकड़ सकता और कोई भी सिंह किसी हिरण को नहीं पकड़ सकता, शान्त हो जाएगा। इसका नाम है-अहिंसा। इस अहिंसा की प्रतिष्ठा '**अहिंसा प्रतिष्ठायां सर्वहित**' यह जो पतंजलि ने भी इस अहिंसा को स्वीकार किया कि यह अहिंसा की प्रतिष्ठा होने पर सब लोग बैर-मुक्त हो जाते हैं और सब लोग एक-दूसरे के हित में तत्पर हो जाते हैं। इस परम्परा को **सनातन परम्परा** कहा जाता है।

छह महीने आठ समय में 608 सिद्ध होना एक सनातन परम्परा

अगर हिन्दू-हिन्दू-हिन्दू-हिन्दू करते रहोगे तो जैन, बौद्ध, सिख, ईसाई, सब कहाँ जाएँगे? जैन परम्परा तो अपने आप में, एक ऐसी आदर्श परम्परा है जहाँ पर एक भगवान की मान्यता है ही नहीं तो हिन्दू में से जैन निकल कैसे सकते हैं? आपके यहाँ भगवान कभी एक के अलावा दूसरा होता नहीं- '**एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति**' यह आपका formula है और हमारे यहाँ भगवान सिद्ध एक नहीं, अनन्त होते हैं, अनन्त हो चुके हैं। तब भी उन्होंने रोका नहीं है। आओ entry जारी है, आते रहो, आते रहो, हर समय होते रहते हैं। हमारे लिए तो हमारी दुनिया में, जिसे हम जानते हैं...छह महीने आठ समय में 608 निरन्तर सिद्ध हो रहे हैं। तुम्हारे दिन-महीने गुजरते जा रहे हैं, यहाँ पर भले ही सिद्ध नहीं हो रहे, दूसरी जगह सिद्ध हो रहे हैं। छह महीने में 608 सिद्ध निरन्तर हो रहे हैं, यह परम्परा कभी रुक नहीं सकती है और रुकेगी भी नहीं। इस परम्परा को अनादि कहा जाएगा, इसको सनातन कहा जाएगा और जो अपने आप को शुद्ध बनाएगा, उसे शुद्ध बनाने की जो आध्यात्मिक परम्परा है, उसे हमें सनातन कहना चाहिए लेकिन लोग किसी भी तरह की एक अभिप्राय को, एक धारणा को, जब सनातन कहने में लग जाते हैं तो वह एक group को तो आकर्षित

कर लेते हैं लेकिन अनेक लोगों के ऊपर हिंसा का भाव यानि किसी भी तरह की एक नकारात्मक भावना का भाव पैदा कर देते हैं।

आत्मा को तृप्त करने वाला ज्ञान ही सम्यक् ज्ञान

सनातन का मतलब जो भाव हमेशा से बना रहा हो और जिसके माध्यम से हमेशा से दूसरों का हित होता आया हो, आगे भी उसी भाव से जिसका हित होता रहे, उस परम्परा का नाम सनातन परम्परा है। उस परम्परा में जन्म लेने वाला कोई भी हो, चाहे वह ब्रह्मा हो, चाहे शिव हो, चाहे जिन हो, चाहे विष्णु हो, चाहे तीर्थंकर हो, सब उस सनातन परम्परा में माने जाएँगे, जिन्होंने आत्मिक सुख की बात की हो और आत्मिक सुख के लिए ही सबको रास्ता दिखाया हो। आज हम देखें...अपने आप में तृप्त कौन दिखाई देता है? बिना किसी हिंसा के, अपने आप में तृप्त होना। जब हम सिद्धों की स्तुति करेंगे तो हमारे अन्दर भी ऐसा तृप्तिपना आना चाहिए, भले ही वे सिद्ध हमारे पास आज हमारे सामने नहीं हैं लेकिन अगर हमें ऐसा ज्ञान भी मिल जाता है तो भी हमारे अन्दर एक तृप्ति आने लग जाती है। **वही तृप्ति का नाम ध्यान कहलाता है, उसी को सम्यग्ज्ञान कहते हैं।** तृप्त होना सीखो, सिद्धों का स्मरण करते ही तृप्त होना सीखो और इसलिए जब हम उन सिद्धों का स्मरण करना चाहते हैं तो हम कैसे करें?

सिद्धों का स्मरण कैसे करें?

या तो हम **णमो सिद्धाणं** कहें, **णमो अरिहंताणं** कहें या हम **ओं** कहें या **अर्हं** कहें। ये **ओं** और **अर्हं** इसी के क्या हैं? संक्षिप्त रूप हैं। अगर हमें पूरा णमोकार मंत्र पढ़ने में time लगता है और हमें बहुत जल्दी भगवान को याद करना है पंच परमेष्ठी को तो क्या बोलना? **ओं**। अगर हमें अनन्त सिद्धों को स्मरण करने में समय लगे तो हम एक अक्षर में क्या बोलें? **अर्हं**। जैसे ही आपने **अर्हं** का स्मरण किया, आपके अन्दर विचारों में शुद्धता आएगी, आपका सिद्धों से सीधा contact होगा और आपके अन्दर उन सिद्ध भगवन्तों की ऊर्जाएँ आपके अन्दर आने लग जाएँगी, आप उस सनातन परम्परा से जुड़ जाएँगे। यह अनादि-कालीन परम्परा है, यह सिद्धों की परम्परा है। इसी सिद्धों की परम्परा में यहाँ कहा जाता है...आप निरन्तर अपने आप में, अपने ज्ञान से, अपने दर्शन से तृप्त रहते हुए, इस संसार में विहार करते रहें।

स्व में ज्ञान-दर्शन प्रकट करने का भगवान् महावीर द्वारा उपदेश

भगवान् महावीर स्वामी 30 वर्ष तक क्या करते रहे? जहाँ भी जाते थे, सब कुछ देखते थे, सबको जानते थे लेकिन थोड़ा सा उपदेश देकर दूसरों के लिए भी कुछ बता देते थे और वह भी, यह बता देते थे कि जैसे हम जान रहे हैं, हम देख रहे हैं, वैसे ही आप भी जान-देख सकते हो। **आप भी स्व में तृप्त होना सीखो। जब आप स्व में तृप्त होंगे, खुद ही सब अपने अन्दर, एक ज्ञान और दर्शन की ज्योति प्रकट कर लेंगे** तो उसके सामने कभी भी अन्धकार मंडरा नहीं सकता है। यही बात आगे कही जा रही है...

‘वितन्वन्, धुन्वन् ध्यान्तं नितान्तं’

वितन्वन् अर्थात् अपने में ही विस्तरित होना

वितन्वन् एक शब्द और आया अर्थात् विस्तरित होते हुए, अपने ही स्वभाव में विस्तार को प्राप्त होते हुए, अपने ही स्वभाव में जो जानने और देखने में आ रहा है, उसी में फैलते हुए, कहना चाहिए उसी में लोटते हुए। **जब व्यक्ति तृप्त हो जाता है तो क्या करता है?** लोटता भी है न! लौटना नहीं कह रहा हूँ...लोटता! लोटता मतलब खा-पी कर क्या करते हो? वही लोटना, वही कह रहा हूँ। खा-पीकर, अब तो कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है, अब तो तृप्त हो गए, अब तो थोड़ा सा लेट जाओ, यह लोटना कहलाता है। थोड़ा सा लोट जाओ, लेट जाओ। इसी को कहते हैं...थोड़ा सा अपने में फैल जाओ, पैर फैला लो। क्या बोलते हैं इसको सामान्य भाषा में? थोड़ी देर के लिए पैर फैला लो। यहाँ भी आचार्य वही कह रहे हैं...थोड़ा सा फैल जाओ। अपने में तृप्त जो हो गया, वह अपने में ही फैल जाएगा, अपने में ही फैला रहेगा, अपने में ही विस्तृत रहेगा। वह अपने विस्तार में अपने अन्दर ही अपने आपको जितने उनके असंख्यात आत्म-प्रदेश हैं, उन्हीं में वह फैले हुए रहते हैं और कहीं नहीं फैलते हैं और कहीं फैलेंगे तो नुकसान हो जाएगा। और कहीं फैलना समझते हो कि नहीं? ऐसा लगता है तुम लोग अपनी कुछ बुंदेलखण्डी या ऐसी जो अपनी प्रादेशिक भाषाओं के जो शब्द होते हैं, थोड़ा कम समझते हो। ऐसा तो नहीं है? जैसे कोई व्यक्ति यहाँ पर आकर, जैसे एक दिन देख रहे थे आप, कुछ भी एकदम से सभा में खड़ा होकर चिल्लाने लग जाए, कुछ भी बोलने लग जाए तो क्या बोलते हैं इसको? भाई! यह फैल गया, बिफर गया तो दूसरे में फैल जाना, यह जो है नुकसानदेह है। दूसरी जगह पर फैल जाना, दूसरे के ऊपर फैल जाना, दूसरे पर बिफर जाना, यह एकदम से blast कर देना, यह दूसरे के लिए पीड़ादायक हो जाता है।

स्व विस्तरित होना ही अहिंसा का भाव

भगवान किसी दूसरे पर कभी भी, दूसरों पर कभी भी, फैलते नहीं हैं। वे किसमें फैलते हैं? अपने में फैलते हैं। सुख भी अपना है, शान्ति भी अपनी है, ज्ञान भी अपना है, दर्शन भी अपना है, सब तृप्ति भी अपनी है, तो अपने में ही फैलेंगे वे मतलब उनके फैलने से आपको कभी भी दुःख नहीं होगा, यह उनकी अहिंसा है। समझ पा रहे हो? ऐसे फैलो कि दूसरे को परेशानी न हो। अब आप मान लो, यहीं पर फैलने लग गए कहीं। भाई! हम तो तृप्त हो गए, यहीं पर लेट जाएँ हम तो सामने वाले को परेशानी होगी। यहाँ बैठने के लिए आए थे कि लेटने के लिए आए थे। उसके लिए पैर लगाओगे, वह आपको लेटा हुआ दिखेगा तो उसके लिए परेशानी होगी यानि आप उसके लिए पीड़ा पैदा कर रहे हो, आप अहिंसक नहीं हो। यहाँ क्या करना है? यहाँ पर आपको फैलना नहीं है। यहाँ पर आपको लेटना नहीं है, यहाँ पर आपको बैठना है, खड़े हो सकते हो। अगर घुटनों में दर्द ज्यादा हो जाए बैठे-बैठे तो थोड़ा बहुत ऊपर-नीचे कर सकते हो लेकिन फैलने का मतलब हो गया लेट जाना, दूसरे की जमीन को घेर लेना। दूसरा जहाँ बैठ सकता था, वहाँ पर आपने अपना स्थान घेर लिया।

सिद्धों की अवगाहन-शक्ति

यह सब नहीं होने का नाम ही क्या है? सिद्ध भगवान है। सिद्ध भगवान जहाँ बैठ जाते हैं, वहाँ पर भी वे इस तरह से फैले हुए अपने में रहते हैं कि अगर कोई दूसरे सिद्ध भगवान भी आ जाएँ तो उनको मना नहीं करते।

यूँ नहीं कहते...आप देख नहीं रहे हो, I am already present here, वे यह भी नहीं कहते। यूँ नहीं समझना, इसलिए नहीं कहते कि वे english नहीं जानते। वह दुनिया की हर language जानते हैं। मतलब जहाँ एक भगवान, एक सिद्धों की आत्मा विद्यमान/विराजमान है, वहाँ पर एक नहीं, दो नहीं, हजार नहीं, लाख नहीं, अनन्त भी आ जाएँ, आइए-आइए, welcome, welcome, welcome. सब उसी में समाहित होते चले जाएँगे क्योंकि वे दूसरे की जगह में नहीं फैले हुए हैं और दूसरा भी अब उनकी जगह में नहीं फैल सकता है। सब अपने-अपने में **‘वितन्वन्’** हैं, सब अपने-अपने में फैले हुए हैं। इसको कहा जाता है- **सिद्धों की अवगाहन-शक्ति**। सिद्धों के आठ गुणों में एक **अवगाहन** नाम का भी गुण होता है। इस अवगाहन नाम के गुण के कारण से वह अपनी ही अवगाहना जहाँ होती है, वहाँ पर अनन्तों को भी अवगाहित कर लेते हैं। कभी भी वह किसी दूसरे को अपने स्थान पर बैठने से रोकते नहीं हैं और जहाँ पर एक सिद्ध भगवान हैं, वहाँ पर अनन्त भी सिद्ध उसी स्थान पर बैठ जाते हैं और सब अपने-अपने में फैले रहते हैं। किसी को किसी से कोई disturbance नहीं होता है। इतने अच्छे सिद्ध भगवान होते हैं...ऐसे उनको जानो, ऐसे उनको देखो।

धुन्वन् ध्वान्तं नितान्तं

जब इस तरह से उनका विस्तार जानोगे, देखोगे, तब यह **‘धुन्वन् ध्वान्तं नितान्तं’** वह **नितान्त** जो **ध्वांत** अर्थात् अन्धकार है, उसको हमेशा **धुन्वन्** धुनते रहते हैं। धुनते रहना मतलब देखो! प्रकाश हो जाता है तो उस अन्धकार से लड़ना भी पड़ता है। यह लड़ाई दिखाई नहीं देती है लेकिन होती रहती है। **प्रकाश के सामने अन्धकार टिकता नहीं है।** आप कहते हो न! मतलब वह कोशिश तो कर रहा है न टिकने की लेकिन वह टिक नहीं सकता, टिक नहीं पाता क्योंकि वह प्रकाश की शक्ति है। इसी तरह से उनके अन्दर जो यह अनन्त ज्ञान ज्योति उत्पन्न हो गई है, अब इसके सामने अन्धकार बहुत है लेकिन वह अन्धकार उनके अन्दर नहीं आएगा। वह बाहर ही रहेगा और उस अन्धकार को वह हमेशा दूर करते रहेंगे। जैसे कोई बहुत बड़ा समुद्र होता है और उस समुद्र में कचड़ा कोई डाल देता है तो उस कचड़े को समुद्र क्या करता है? बाहर फेंक देता है, बाहर फेंकता रहता है, बाहर फेंकता रहता है। वह कचड़ा उसके किनारों पर रहेगा, भीतर समुद्र में नहीं जाएगा। इसी तरीके से कोई भी जब अपने existence को बना लेता है तो उसे दूसरे की सत्ता से एक तरह से लड़ना तो पड़ता ही है। एक कोई केन्द्र में आ गया है, एक किसी की पार्टी बन गई है तो दूसरी पार्टी उसके ऊपर pressure डालेगी, दूसरा उसके ऊपर आक्रमण करेगा लेकिन उस पर डटे रहना, उससे लड़ते रहना, उसको अपने में आने नहीं देना, यह भी निरन्तर प्रक्रिया चलती रहती है। तभी जाकर उनके अन्तरंग में जो अनन्त ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न हो गया है, उसमें अन्धकार का प्रवेश नहीं हो सकता है। उसको धुनते रहते हैं, दूर करते रहते हैं। किसको? ध्वांत को, ध्वांत को। जैसे पंखा चल रहा है तो पंखा निरन्तर क्या करता रहता है? आपकी गर्मी को दूर करता रहता है। गर्मी आपके पास आने नहीं देता है, निरन्तर वह घूमता हुआ पंखा आपको हवा देकर आपसे गर्मी को दूर कर रहा है, दूर कर रहा है, दूर कर रहा है, हवा दे रहा है। ऐसे ही वे निरन्तर **अन्धकार को दूर कर रहे हैं, दूर कर रहे हैं, दूर कर रहे हैं। कौन? सिद्ध भगवान। कब तक? उन्हें करना नहीं पड़ रहा है, वह अपने आप होगा।** क्योंकि उनके अन्दर वह light आ गई है कि उसके सामने अन्धकार आएगा नहीं। मानो अगर कहीं halogen जल रही है तो वहाँ पर भी अन्धकार है, उसी स्थान पर लेकिन वह अन्धकार उस halogen के सामने अपना प्रभाव नहीं दिखाएगा, टिकेगा नहीं।

उस halogen के सामने, वह अन्धकार का अस्तित्व नहीं होगा। यही उससे उसका टकराव है और यह टकराव बना रहता है और हमेशा halogen को अन्धकार को दूर करना पड़ेगा और वह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। जैसे आपको चिन्ता हो जाए कभी तो चिन्ता को दूर करने के लिए कोई न कोई समाधान आप ढूँढते हो। चिन्ता दूर हो, चिन्ता दूर हो, चिन्ता कैसे दूर हो? कोई ज्ञान की कोई बात बता दे, कोई idea दे दे।

उपश्रेणिक की चिन्ता



उपश्रेणिक की चिन्ता! उसके अन्दर चिन्ता पड़ गई, उस चिन्ता को दूर करना है। कैसे दूर करें? कैसे दूर करें? किसके पास पहुँचा? **ज्योतिषी के पास पहुँचा।** ज्योतिषी ने कहा अपने पुत्रों की परीक्षा कर लो। उसने परीक्षा करना शुरू कर दी। कितनी परीक्षा ली थी? दो परीक्षा हुई थी। ज्योतिषी ने उसको कई परीक्षाएँ बताई। बोले एक में सन्तुष्ट न हो, तृप्त न हो तो दूसरी ले लेना। सन्तोष बढ़ते-बढ़ते तृप्ति आती है और तृप्ति हो जाती है, तभी वह व्यक्ति अपने आप में समझ पाता है कि हाँ! यह सही है। एक परीक्षा से सन्तोष नहीं हुआ, दूसरी ले ली। दूसरे से सन्तोष नहीं हुआ, वह तीसरी परीक्षा लेने लगा। दो तो कल आपको बता दी थी। तीसरी कौन सी परीक्षा थी? उपश्रेणिक ने एक और परीक्षा ली।

राजा श्रेणिक की तीसरी परीक्षा

अपने सभी पुत्रों को एक दिन उन्होंने बुलाया और एक ऐसे स्थान पर बुलाया, जहाँ पर वे सब एक साथ बैठकर भोजन कर सकें। **भोजनशाला का वह दृश्य था।** सबके सामने अच्छे-अच्छे बर्तनों में अच्छे-अच्छे पकवान रखे गए। जो भी अच्छे से अच्छे पकवान होते हैं। सब अच्छे दूध के बने हुए, घी के बने हुए, मिठाइयाँ, सब अच्छे-अच्छे पकवान रखे गए और सभी पुत्रों को बिल्कुल line से बिठाया गया। जब सब खाने में थोड़ा सा मस्त होने लगे, उसी time पर उन्होंने जानबूझकर एक अपनी योजना के तहत, वहाँ पर कुछ खूँखार कुत्तों को पहुँचा दिया। जब कुत्ते अच्छा भोजन देखेंगे तो क्या करेंगे? तुम्हें खाने देंगे? सब बटे एक साथ बैठ कर भोजन कर रहे थे और सबने जैसे ही कुत्तों की खूँखार सुनी, कुत्ते सामने आकर खड़े हो गए, वे पहले खड़े हो गए और वे सब अपना भोजन करते हुए छोड़ कर भाग गए। बोले...पहले इन्हें खा लेने दो, नहीं तो ये मेरे ऊपर टूट पड़ेंगे तो मेरा ही जीवन चला जाएगा। कौन? उपश्रेणिक के सभी बच्चे और उनमें कौन शामिल है? उसमें चिलाती भी शामिल है। चिलाती को भूल गए? श्रेणिक को याद रखते हो। अरे भाई! कहानी उसी से ही तो शुरू हो रही है सब। सब चिन्ताएँ तो उसी के कारण से हैं तो वह चिलाती भी वहाँ से भाग निकला। अब बचा रह गया, कौन? श्रेणिक। उन्होंने अपने विवेक का, साहस का परिचय दिया तो उन्होंने सोचा कुत्तों को क्या चाहिए? कुत्तों को मेरी जान नहीं चाहिए, कुत्तों को तो भोजन चाहिए और ये सब भोजन छोड़ कर भागे हैं न, इन्हीं का भोजन, सबका भोजन लेकर उसने कुत्तों के सामने फेंक दिया। तब सब कुत्ते क्या करने लग गए? उस भोजन को करने लग गए, उस चीजों को खाने लग गए और वह श्रेणिक अपना भोजन जो रखा था, अपना भोजन करने लग गए। अपना भोजन मस्त कर रहे हैं, वे बैठे-बैठे। सब कुत्ते अपना-अपना कर रहे हैं। यह कहलाती है, क्या? अक्लमन्दी। अब बोलते भी तो पता नहीं कहाँ से कहाँ, उल्टा-सीधा बोलते रहते हो। अक्ल की मन्दी का नाम अक्लमन्दी बोलते हो आप। कुछ

भी सही नहीं बोलते आप। आपकी भाषा ही हमें समझ में नहीं आती। जिसमें अकल की ऊँचाइयाँ हैं, उसे आप अक्लमन्द कहते हो। कौन सी भाषा है आपकी? उसके पास में कितनी अक्ल है? कितना विवेक है? कितना साहस है? कितना धैर्य है? और कितनी उससे चतुराई है? यह उसने उस समय पर सबको दिखा दिया। सैकड़ों पुत्र वहाँ बैठे हुए भोजन कर रहे थे, एक भी नहीं बचा। सब एक को देख कर दूसरे भागे और जब सब भाग जाएँ और एक बन्दा बैठा रह जाए तो समझो वह कितना बड़ा साहसी बन्दा होगा। ऐसा नहीं कि उसे खाने की बहुत पड़ी होगी। उसे पता है कि अगर कुछ सहसा उपस्थित हो रहा है तो यह कहीं न कहीं, यह किसी की योजना के तहत हो रहा है और इस योजना में अपना विवेक लगा कर हमें अपने विवेक का परिचय देना, अपने साहस का परिचय देना, यही बुद्धिमानों का काम होता है और वह श्रेणिक उस समय पर सब कुत्तों के लिए वही छूटा हुआ भोजन दे दिए। उन्हें कुछ अपना नहीं देना पड़ा और वे सब कुत्ते शान्त होकर वहाँ भोजन करते रहे। उन्होंने अपना भोजन कर लिया, बाकी के सारे बच्चे भाग गए और जब उप-श्रेणिक को यह समाचार पता पड़ा तो उन्होंने कहा, तीसरी परीक्षा में भी यह pass हो गया। सुन रहे हो? यह भी बच गया। क्या? तीसरी परीक्षा में भी यह pass हो गया मतलब बच गया। कौन बच गया? श्रेणिक, तीसरी परीक्षा में भी बच गया। तीसरी परीक्षा में भी pass हो गया। जैसे किसी ने एक गोली मारी, दो गोली मारी, तीन गोली मारी तो तीसरी में भी वह बच गया। अब परीक्षा लेते-लेते उन्होंने तीन परीक्षा ले ली। अभी भी राजा श्रेणिक को सन्तोष नहीं हो रहा है। सन्तोष जब बहुत देर बाद होगा तो वह सन्तोष बढ़ते-बढ़ते, बढ़ते-बढ़ते ही तृप्तिकारक बनेगा।

मुश्किल समय में ही भविष्य की सही पहचान

फिर एक चौथी परीक्षा का उनका मन हुआ, वह भी ज्योतिषी ने बताई थी। फिर एक दिन उन्होंने कहा चौथी परीक्षा लेने के लिए। **अचानक से एक दृश्य सामने उपस्थित हो गया कि राजमहल में आग लग गई।** क्या हो गया? आग लग गई। आग लगी तो सब पुत्रों से कह दिया गया... अपनी-अपनी प्रिय वस्तुओं को लेकर के यहाँ से निकल जाओ। आग लग गई है, खतरा मण्डरा रहा है। जैसे आजकल दिल्ली में खतरा मण्डरा रहा है, red alert हो रहा है, यमुना का पानी अपनी line से ऊपर जा रहा है। वहाँ announce हो रहा है... अपने-अपने बच्चों को लेकर के यहाँ से निकल जाओ। अपनी-अपनी प्रिय वस्तु को लेकर के यहाँ से निकल जाओ। अब जिसकी जो प्रिय हो। अब आदमी एक बार में जाएगा तो पहले खुद निकलेगा। पहले अपनी पत्नी को लेकर गया, बोले बच्चे बाद में देखेंगे, बच्चे भी दो हैं तो उस बाढ़ में एक साथ सबको नहीं निकाल पा रहा है, पानी में से एक साथ सबको नहीं निकाल पा रहा है, तो पहले एक बच्चे को निकाल कर ले गया, तब तक किस्मत से दूसरा बच्चा भी बचा रहा, time मिला तो दूसरे बच्चे को भी निकाल कर ले गया। एक-एक करके अपनी प्रिय वस्तु को निकालते जा रहा है। आपके साथ कभी ऐसा हो तो क्या हो? आपसे अगर कभी कहा जाए, आप कहीं फँस जाओ, आपके घर में से आपको निकलना पड़ जाए और आपसे कहा जाए, अपनी प्रिय वस्तु को लेकर के यहाँ से जल्दी निकलो। किसे लेकर निकलोगे? जल्दी बोलो! हमें नहीं बोलो, चलो अपने मन में तो सोच लिया न? क्षण भर में जो आपके मन में आ गया, यह हमारी प्रिय वस्तु है, समझ लेना उसी से ही आपका सबसे ज्यादा attachment है और वही आपका भविष्य है। क्योंकि आपको चिन्ता भविष्य की तुरन्त हो जाएगी और भविष्य के लिए जो काम आने वाली चीज होगी, आप उसी को अपने साथ में लेकर जाओगे। मैं नहीं कह सकता कि वह पत्नी ही आपका भविष्य

हो। अगर आपको बच्चों में अपना भविष्य दिखाई दे रहा होगा तो आप पत्नी को छोड़ कर बच्चों को पकड़ कर ले जाओगे। आदमी ऐसी स्थिति में किसको पकड़ता है? भविष्य को पकड़ता है। भविष्य में मुझे इससे काम है, भविष्य में मैं यह हूँ, भविष्य में मेरी यह पहचान है। इसी समय पर निर्णय होता है, किसका कौन है? कौन किसका है? कर लेना परीक्षा, आग लगानी पड़ेगी घर में।

राजा श्रेणिक की चौथी परीक्षा

जब राजा उपश्रेणिक ने परीक्षा की तो सारे के सारे उसके बच्चे, कोई अपना हाथी लेकर घर से बाहर निकल गया, कोई अपना घोड़ा लेकर निकल गया, कोई अपने किसी पहनने के कपड़ों को लेकर निकल गया, कोई अपने आभूषणों को लेकर निकल गया, कोई अपने बच्चे को लेकर निकल गया, कोई अपनी पत्नी को लेकर निकल गया, अपनी-अपनी प्रिय वस्तु को लेकर सब निकल गए और ये सब कौन हैं? राजकुमार हैं। क्योंकि होने वाले राजाओं का चुनाव, राजा का चुनाव, इन्हीं में से होना है। किसको राजा बनाया जाएगा? किसको राजा बनाया जाएगा? इन्हीं में से एक राजा बनेगा।

सिंहासन से राजा की पहचान

अब जब श्रेणिक के लिए आया सुनने में, आग लग गई है, कुछ अपना जो भी अपने लिए इष्ट है, प्रिय है, उसको लेकर बाहर निकलना है, तो वह क्या बाहर लेकर निकलता है? **राजा हमेशा राजा के ही भाव में रहता है।** राजा को वही चाहिए जिससे उसके राजपने की पहचान हो और राजा को राजपने की पहचान करने के लिए क्या चाहिए? सिंहासन चाहिए। कहीं पर भी बैठ जाओ, बस सिंहासन लगा कर बैठ जाएगा तो वह राजा कहलाएगा। उसके ऊपर छत्र टुल रहे होंगे, बगल में लोग खड़ा कर देगा, आदमी तो सब जगह मिलते हैं, बोले चमर टुला, ऊपर छत्र लगा ले, मैं बैठा हूँ यहाँ सिंहासन पर। अपने आप हर कोई आएगा... हाँ! महाराज-महाराज, राजा-राजन-राजा, सब कहेगा, अपने आप salute मारेगा। राजा को क्या इष्ट है? ये चीजें इष्ट हैं। श्रेणिक अपने साथ क्या लेकर निकले? सिंहासन लेकर निकले, छत्र लेकर निकले, चमर लेकर निकले और इन चीजों को लेकर जब वे बाहर निकले तो आग-वाग तो वह सब एक तमाशा था, वह तो सब ठीक है, दूर हो गई। बाद में सब बच्चों को बुला लिया गया लेकिन दूतों से जब समाचार सुना तो पता पड़ा, जो राजत्व को बचाने वाली चीजें हैं, जिनसे एक राजा के राजत्व की पहचान होती है, वे चीजें केवल श्रेणिक लेकर अपने साथ गए। बाकी तो सब अपनी हाथी, घोड़ा, पत्नी, बच्चे लेकर के जाते रहे। चौथी परीक्षा में भी pass हो गया। श्रेणिक बच गया। अब तुम्हारा क्या होगा? जो बचे रह गए उनका क्या होगा? अभी एक परीक्षा और बाकी है। कितनी परीक्षा हो गई? चार। पंच परमेष्ठी की पाँच परीक्षाएँ उप-श्रेणिक राजा ने लीं। वह पाँचवी परीक्षा, आपको कल बताई जाएगी।

राजा का राजत्व

आप अपने मन में यह भाव रखें कि एक पिता भी अपने पुत्रों की कितनी परीक्षा लेकर कोई judgement ले पाता है, तब जाकर वह राजा के अन्दर का वह न्याय का भाव सामने आता है, **यही राजा का राजत्व कहलाता है।** ये चीजें पहले भी होती थी, आज भी होती हैं। इसलिए हर किसी को अपना मित्र बनाना,

अपना रिश्तेदार बनाना यहाँ तक कि अपना गुरु बनाना, सब चीजों के लिए आपको परीक्षा का भाव अपने अन्दर रखना चाहिए। ये सब चीजें हमारे सामने आती हैं और इन सबसे हमारा निर्णय होता है कि हमने क्या सोच रखा है? ऐसे बहुत से लोग होते हैं जो यहाँ पर भी अपना सब तरह का पूजा-पाठ करते हैं और जिस भी मन्दिर में चले जाएँ, वहाँ पर भी पूजा-पाठ करते हैं, उन्हें भगवान का भी निर्णय नहीं होता, वह भगवान की भी परीक्षा नहीं ले पाते।

भगवान का परीक्षण कर तृप्त होना

आचार्यों ने कहा कि भगवान की भी परीक्षा लेना। अरे! परीक्षा का मतलब कोई उनके ऊपर test नहीं करना, लेकिन 'परि' अर्थात् चारों ओर से, 'इच्छा' अर्थात् आँखों को खोलकर देखना कि यह है क्या? इसी का नाम क्या है? परीक्षा। चारों ओर से देख तो लो, भगवान कैसे अच्छे लगते हैं, सजे-धजे से कि बिना सजे हुए भी सजे-धजों से ज्यादा अच्छे लगने वाले भगवान कहलाते हैं। जिनके ऊपर सोना-चाँदी लगा हो तब भगवान अच्छे लगते हैं कि जिनके चारों ओर सोना-चाँदी लग जाने से वह सोना-चाँदी भी अच्छा लगने लग जाता है जिनके कारण से, वे भगवान अच्छे होते हैं। इतना ही देख लेने का नाम परीक्षा है। नहीं समझ आया? अरे! कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें कुछ कपड़े पहना दिए जाएँ तो लोग अच्छे लगने लग जाते हैं और कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें कुछ कपड़े पहनाने पर कपड़े अच्छे लगते हैं। ऐसे भी लोग होते हैं, जिन्हें कुछ भी पहना दिया जाए वह अच्छा लगने लग जाता है। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जिन्हें कुछ अच्छा भी पहनाने के बाद में वे अच्छे नहीं लगते। समझो, अच्छा कौन होता है? इतना तो सोचो। इसी का नाम क्या है? परीक्षा। भगवान की भी इसी तरह से चारों ओर आँख फैला करके, देख करके, उनको परीक्षण कर लिया जाता है। हाँ! भगवान ऐसे होते हैं। **शान्तिनाथ भगवान को देख लो कैसे होते हैं शान्तिनाथ भगवान? और नेमिनाथ भगवान को देख लो, कैसे होते हैं नेमिनाथ भगवान? ऐसे ही महावीर भगवान को देख लो, कैसे होते हैं महावीर भगवान?** बस! भगवान का यह स्वरूप देख करके, परीक्षण करके, अपनी आँखों से यह मान लेना, एक ही जगह तृप्त हो गए तो फिर आपको दूसरी जगह भटकने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जब व्यक्ति तृप्त नहीं होता है, तो उसे 10 जगहों पर जाने की जरूरत पड़ जाती है। 10 तरह की variety खोजने की जरूरत पड़ जाती है।

जैन-दर्शन में भगवान की कोई variety नहीं

जैन-दर्शन में भगवान की कोई variety नहीं है। **भगवान के नाम अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन variety, quality सबकी एक जैसी है। सबका एक जैसा ही रूप-रंग और स्वभाव है। नाम भले ही अलग-अलग ले लो।** इसलिए जैन-दर्शन की मौलिक विशेषता है कि जैन-दर्शन में भगवान अलग-अलग नाम के होते हुए भी अलग-अलग तरह के, ढंग के नहीं होते हैं। भगवान एक ही ढंग के होते हैं...नासा दृष्टि, शान्त चित्त, कायोत्सर्ग की मुद्रा। दुनिया में भगवान अलग-अलग action में मिलेंगे, अलग-अलग ढंग में मिलेंगे लेकिन जैन-दर्शन की क्या मौलिक विशेषता है? यही मौलिक विशेषता जैन-दर्शन को हिन्दू दर्शन से अलग करती है। ऐसी एक नहीं अनेक विशेषताएँ हैं। हमें इन विशेषताओं का भी ज्ञान होना चाहिए। इसलिए जब तक यह ज्ञान होता रहे तब तक भगवान अरिहन्तों का नाम और सिद्धों का नाम अपने मुख से लेते रहो।

10. अरिहन्त और सिद्ध का अन्तर



SCAN TO WATCH

आचार्य पूज्यपाद देव रचित सिद्ध-भक्ति के माध्यम से भगवान महावीर स्वामी के समवशरण में यह देशना का क्रम वीर-शासन जयन्ती से चल रहा है और यह देशना, भगवान के द्वारा बताए गए रास्ते पर चलते हुए, सिद्ध प्रभु बनने तक की यह प्रक्रिया, आपको इस सिद्ध भक्ति के माध्यम से बताई जा रही है। पहले हमने यह चौथा छंद पढ़ा था, उसकी प्रथम दो लाइन के विषय में कुछ आपको बताया था, आगे की दो लाइनें और भी जानना है। यह छंद पढ़ कर के, सिद्ध भगवान को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ते हैं...

**जानन् पश्यन् समस्तं, सम-मनुपरतं, संप्रतृप्यन् वितन्वन्,
धुन्वन् ध्यान्तं नितान्तं, निचित-मनुसभं, प्रीणयन्नीशभावम्।
कुर्वन् सर्वप्रजानामपरमभिभवन्, ज्योति-रात्मानमात्मा,
आत्मन्येवात्मनाऽसौ, क्षणमुपजनयन्, सत्स्वयंभूः प्रवृत्तः ॥4॥**

यहाँ कहा जा रहा है कि भगवान ने जानते हुए-देखते हुए, समस्त पदार्थों को, अपने आप में सन्तुष्ट रहते हुए, संतुष्ट रहते हुए, अपने आप को तृप्त करते हुए और अपने ही अन्तरंग में अपने विस्तार को प्राप्त करते हुए, जो चारों ओर अज्ञान का ध्वांत है, अंधकार है, उसको दूर करते हुए, आगे बढ़ रहे हैं। यह भगवान सिद्धों की बात है लेकिन सिद्धों को पहले अरिहन्त बनना होता है। अभी भी बहुत से लोग अरिहन्त और सिद्धों के विषय में confused रहते हैं।

भगवान महावीर स्वामी अभी अरिहन्त हैं कि सिद्ध हैं?

अभी भी इस सभा में कई लोगों से पूछा जाए कि भगवान महावीर स्वामी अरिहन्त हैं कि सिद्ध हैं? अभी भी सही ढंग से बता नहीं पाएँगे और यह confusion इसलिए आता है कि ज्यादातर लोग जब भगवान महावीर स्वामी की या किन्हीं भी तीर्थकरों की पूजा करते हैं तो वह उनकी अरिहन्त प्रतिमाओं की पूजा करते हैं। मुझे जो समझ में आया है, इस confusion का कारण वह मैं आपको बता रहा हूँ। जो भगवान जिनेन्द्र देव की पूजा करते हैं तो उन्हें लगता है कि मैं अरिहन्त भगवान की पूजा करता हूँ तो अरिहन्तों की जब पूजा कर रहा हूँ तो ये सिद्ध हैं कि नहीं? या यह कब होंगे? **अभी तो यह भी लोगों को पक्का विश्वास नहीं है कि भगवान महावीर स्वामी अभी अरिहन्त हैं कि सिद्ध हैं?** जो विद्वान हैं, पढ़े-लिखे हैं, वह तो समझते हैं लेकिन एक जन-मानस के अन्दर अभी भी यह विकल्प रहता है, यह भाव रहता है कि भगवान महावीर स्वामी, हम अगर अरिहन्त अवस्था में पूज रहे हैं तो वह अरिहन्त ही हैं कि सिद्ध हो गए? और सिद्ध हो गए तो फिर, हम उन्हें अरिहन्त अवस्था में क्यों पूजते हैं? यह विचार आता है कि नहीं आता है? सबके मन में है, तो इस तरीके के भी confusion कुछ दूर हो जाने चाहिए।

केवल ज्ञान प्राप्त कर लेना = अरिहन्त दशा

कल आपसे कहा था... भगवान महावीर स्वामी अपनी आयु 72 वर्ष की जीते हुए, उन्होंने 42 वर्ष की आयु में केवलज्ञान प्राप्त कर लिया था और 30 वर्ष की उनकी आयु शेष थी। जब उनकी आयु 30 वर्ष की शेष रही, वे 42 वर्ष के थे, जब उन्हें केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई, उनका समवशरण लगा। उस समय की दशा को अरिहन्त दशा कहा जाता है। केवल ज्ञान के साथ में, तीर्थंकर प्रकृति के उदय के साथ में, जो इस तरह से तीर्थंकर बनते हैं, उन्हें उस अरिहन्त अवस्था में तीर्थंकर की दशा को समझाया जाता है, बताया जाता है। यानि केवलज्ञान प्राप्त कर लेना अपने-आप में अरिहन्त-दशा को प्राप्त कर लेना है और केवलज्ञान प्राप्त करने के बाद में जब-तक उनका शरीर रहेगा, जब-तक उनकी आयु रहेगी, वह अपनी आयु पर्यन्त तक, जब-तक इस शरीर के साथ रहेंगे तब तक वह अरिहन्त-अवस्था में ही कहलाएँगे। यह बात अच्छे ढंग से दिमाग में रख लो।

जन-मानस में मिथ्या-धारणाएँ

जीवात्माएँ संसार में अपनी उम्र के साथ जीती हैं और हमारी धारणा में जब इस तरह की चीजें नहीं होती हैं तो हम जो अपनी मिथ्या-धारणाएँ, अनादि काल के मिथ्यात्व के उदय से बनाए रखते हैं तो उन्हीं धारणाओं के साथ में, हम अपने अरिहन्त और सिद्धों को भी देखते रहते हैं। लोगों के अन्दर का वह मिथ्या भाव तब तक नहीं दूर हो पाता, जब तक कि वह यह नहीं समझ लेते कि भगवान का स्वरूप ही अरिहन्त और सिद्धों का स्वरूप है। **अरिहन्त और सिद्धों को समझ लेना ही भगवान को समझ लेना है।** अभी तो मिथ्यात्व यहाँ तक, भीतर काम करता है कि हम यहाँ पर अरिहन्त और सिद्धों की चर्चा कर लेते हैं, अरिहन्त-सिद्ध के बारे में सुन लेते हैं लेकिन अपने, भगवान की धारणा वही बना कर के रखते हैं कि भगवान एक ही हैं। भगवान अगर दुनिया बनाने वाला है, तो भगवान ने ही, उन्हीं की कृपा से, ये अरिहन्त-सिद्ध बनते हैं। भगवान तो वास्तव में वही है जो सबकी रक्षा करने वाला है और कण-कण में फैला हुआ है। यह धारणा भी साथ-साथ चलती रहती है, इसलिए आप लोगों को समझना होगा कि अरिहन्त-सिद्ध ही परमात्मा हैं। अरिहन्त सिद्ध ही भगवान हैं।

अरिहन्त परमात्मा कब तक कहलाएँगे?

यह अरिहन्त-सिद्ध बनने की परम्परा अनादिकालीन परम्परा है। यह अरिहन्त बनकर के सिद्ध बनना, अनादि काल से जीवों के द्वारा, संसारी जीवों के द्वारा होता आया है। जब कोई जीव अरिहन्त-दशा को प्राप्त होता है, तो वह अरिहन्त तब तक ही कहलाएगा, जब तक वह अपनी आयु के साथ, अपने शरीर के साथ जी रहा है। **जितनी आयु में केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई और जितनी आयु बची रह गई, अब उतनी बची हुई आयु में वह केवलज्ञान के साथ उस शरीर में जब तक वह जीव रहेगा तब तक अरिहन्त परमात्मा कहलाएगा।** समझ में आ रहा है? जब उनकी आयु पूरी हो गई, शरीर छूटेगा और जब शरीर छूटेगा, आयु पूर्ण हो जाएगी तो उनकी आत्मा में प्रकट हुआ वह केवलज्ञान, वह कभी नहीं छूटेगा, वह हमेशा बना रहेगा और आत्मा शरीर को छोड़कर के हमेशा के लिए मुक्त-दशा को प्राप्त हो जाएगी। उसी दशा को हम सिद्ध-अवस्था कहते हैं। अच्छे ढंग से समझ लो। अभी भी सतना के लोगों को अरिहन्त और सिद्धों का सही-

सही, एक तरह से श्रद्धा या ज्ञान नहीं हुआ है। हमारे पास, इन्हीं अरिहन्त और सिद्धों के बारे में सही जानकारी लेने के लिए इतने प्रश्न आ चुके हैं। यह पन्ना भरा पड़ा है, इसीलिए।

प्रश्न

किन्हीं महोदय ने लिखा है कि महाराज! जब यह जीव को, संसार दशा में सिद्ध-अवस्था क्या प्राप्त हो जाती है? और महावीर भगवान अगर तीर्थकर बन गए तो उनके तीर्थकर होने पर, अरिहन्त होने पर, वह अभी उन्हें सिद्ध दशा कुछ प्राप्त हुई कि नहीं हुई?

इस तरह के प्रश्न ही, यहाँ पर आकर के मेरे पास रखे हुए हैं। समझ आ रहा है? यह प्रश्न किन्हीं विदेशी लोगों ने नहीं दिए हैं, यह आपकी समाज के किन्हीं महानुभाव के प्रश्न हैं। शायद उनके इन प्रश्नों से ही सभी का समाधान हो जाए। क्योंकि यह बहुत अच्छी खुली दृष्टि कहलाती है, अगर हमारे अन्दर किसी भी प्रकार का संदेह है तो उसको हम गुरु से दूर कर लें और जब हमारा संदेह दूर होगा तो उन जैसा संदेह रखने वाले, अनेक लोगों के अन्दर का भी संदेह, उसी के माध्यम से दूर हो जाएगा।

सिद्ध परमात्मा किसे कहते हैं?

भगवान महावीर स्वामी अब वर्तमान में किस अवस्था में होंगे? अब मैं आपसे पूछता हूँ, इतना सुनने के बाद में? जब वह अपनी उम्र को उसी समय पूर्ण कर गए और उसी उम्र में, उसी जन्म में उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हो गया और वह केवलज्ञान प्राप्त होने के बाद में, फिर किसी जीव का जन्म-मरण नहीं होता, वह आत्मा फिर हमेशा के लिए, उस शरीर को छोड़कर सिद्ध-दशा को प्राप्त कर लेती है और वह मुक्त हो जाती है, तो उसी को हम सिद्ध-परमात्मा कहते हैं। **वही परमात्मा अनन्त काल तक, उसी स्थिति में बने रहते हैं, उन्हीं को हम शुद्ध-आत्माएँ कहा करते हैं।** चाहे भगवान महावीर स्वामी हो, चाहे भगवान ऋषभदेव हो, चाहे उनके बीच में होने वाले करोड़ों-करोड़ों असंख्य और मुनि महाराज हो, जिन्होंने केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त कर लिया, वे सभी कहाँ हैं? सिद्ध अवस्था में।

भगवान महावीर स्वामी अभी अरिहन्त हैं या सिद्ध?

भगवान महावीर स्वामी अभी वर्तमान में अरिहन्त हैं कि सिद्ध हैं? क्या कहोगे? सिद्ध हैं। फिर हम उन्हें अरिहन्त मान करके पूजते क्यों हैं? यह एक प्रश्न आ जाता है। जब हम भगवान की पूजा करते हैं तो भगवान की पूजा करने के लिए, उनका कुछ स्वरूप तो हमारे सामने होना चाहिए। अगर हम अमूर्त आत्मा की पूजा करेंगे तो कैसे कर पाएँगे? बताओ? जो सिद्ध बन गए, वह शरीर से रहित हो गये। **जिनका कोई शरीर नहीं रहा, कोई आकृति नहीं रही, अब वे केवल शुद्ध-आत्मा बन गए तो शुद्ध-आत्मा को, हम कैसे पूजा करेंगे?** उनकी पूजा कैसे होगी? शुद्ध आत्मा को हम कैसे दिखा पाएँगे? या तो उसके दिखाने का वही तरीका होगा जैसे प्राचीन काल में कुछ ऐसे frame चला करते थे, सिद्धों के frame, नहीं समझे? आज भी कहीं-कहीं मन्दिरों में रखे होंगे। वह खड़ी अवस्था में, एक cutting हो जाती है, बीच में पूरा hole रहता है और वह आगे चारों तरफ boundary हो जाती है। ऐसे वह, सिद्ध भगवान की आकृति दिखाने के

लिए भी, कुछ frame, सिद्धों की यह cutting, कहीं न कहीं मन्दिरों में मिल जाती है।

सिद्ध प्रतिमाएँ और सिद्ध की आकृति

अब उसमें, आपको सिद्ध देखना है तो सिद्ध कहाँ दिखाई देंगे? आपको पता है? आप उसे सिद्ध की प्रतिमा कहेंगे क्या? लोग उसे सिद्ध की प्रतिमा मानते हैं। क्या वह सिद्ध भगवान की प्रतिमा है? वह तो केवल एक outer line के साथ में उनका shape cutting की गई है और जो cutting करने के बाद में, बीच में जो holleness है, जहाँ पर कुछ नहीं दिखाई दे रहा है, देखा जाए तो actually सिद्ध वे हैं। अब आप पूजा करेंगे तो उसकी करेंगे? आपको वह hole में कुछ दिखाई देगा क्या? आप जब भी पूजा करने बैठेंगे, तो आपकी दृष्टि boundary पर, उस outline पर टिकेगी और उन्हीं को देख करके आप सोचेंगे ये सिद्ध भगवान हैं। जबकि वे सिद्ध नहीं हैं। सिद्ध कौन हैं? जो अन्दर, जो cutting होने के बाद में, जो जिस shape में वह hole दिखाई दे रहा है, खाली स्थान दिखाई दे रहा है... उसका नाम है- सिद्ध। उस सिद्ध में भी वहाँ कुछ नहीं है क्योंकि वहाँ केवल खोखला आकाश है, वह खोल है, कुछ नहीं है। सिद्ध की प्रतिमा में, आप सिद्ध के दर्शन कैसे करेंगे? एक imagine कर पाएँगे। हाँ! सिद्ध ऐसे होते हैं, उनकी shape ऐसी होती है। वह बिल्कुल जो है, अमूर्त होते हैं, दिखाई नहीं देते हैं, उनकी body नहीं होती है। इसलिए उन सिद्ध भगवान की आत्मा की इस तरह की shape को imagine करके हम उन सिद्ध भगवान का थोड़ा सा ध्यान कर सकते हैं या उस तरफ अपनी बुद्धि ले जा सकते हैं। लेकिन वे सिद्ध तो है ही नहीं हैं। उन cutting वाली प्रतिमाओं की या उन shape वाली, उन metal की बनी हुई चीज की, कोई प्रतिष्ठा भी नहीं होती है। इसलिए शास्त्रों में कहीं पर भी ऐसी सिद्ध आकृतियों का, सिद्ध प्रतिमाओं के रूप में, कभी कोई वर्णन नहीं मिलता है। **यह सिद्ध प्रतिमाएँ नहीं हैं। यह सिद्ध की आकृतियाँ हैं।** समझ में आ रहा है? **आकृतियाँ पूजी नहीं जाती हैं। आकृतियाँ केवल एक ध्यान रखने योग्य चीजें होती हैं,** जिससे कि हम कुछ imagine कर सकें। पूजनीयता जो आती है, पूजने वाली जो चीजें होती हैं, वह आचार्यों ने कहा जिन बिंब प्रतिमाएँ, किसकी होगी? वह एक बिंब के रूप में होगी तो वह प्रतिमा होगी।

सिद्ध और अरिहन्त की प्रतिमा में अन्तर

प्रतिमाएँ अगर हैं तो वह प्रतिमाएँ अरिहन्त की भी हो सकती हैं, सिद्ध की भी हो सकती हैं। **आपको सिद्धों की भी अगर प्रतिमा सामने रख देंगे और आप दर्शन करेंगे तो आपको कोई अन्तर समझ में नहीं आएगा** कि ये अरिहन्त की हैं कि ये सिद्ध की प्रतिमाएँ हैं? क्योंकि बिंब तो दोनों दिखाई देंगे और फिर आपके लिए confusion आ जाएगा कि जब सिद्ध भगवान भी ऐसे ही हैं, अरिहन्त भगवान भी ऐसे ही हैं तो फिर आप एक और confusion, एक और doubt अपने अन्दर create कर लेंगे कि भाई! सिद्ध भगवान भी ऐसे ही शरीर सहित हुआ करते होंगे। उनके भी कान, नाक सब दिखाई देते होंगे तो फिर आपके अन्दर एक और doubt आ जाएगा कि भाई सिद्ध भगवान का भी यह सब कान-नाक हैं और अरिहन्त के भी है, तो फिर अरिहन्त सिद्ध में क्या अन्तर हुआ? एक और आपके अन्दर दिक्कत पैदा हो जाएगी। समझ में आ रहा है कि नहीं? क्या कहना चाह रहा हूँ।

मन्दिर में प्रतिमा अरिहन्त की या सिद्ध की?

इसलिए मन्दिरों में जब भी प्रतिमाएँ बनती हैं तो वह सिद्ध भगवान की न बन कर के, किसकी बनती है? अरिहन्त भगवान की। कहने में आता है कि यह अरिहन्त भगवान की प्रतिमाएँ हैं। अरिहन्त भगवान की हम पूजा कर रहे हैं क्योंकि अरिहन्त भगवान की ही पूजा हम कर पाएँगे। क्योंकि प्रतिमा या बिंब या शरीर की जो आकृति होगी, वह अरिहन्तों की तो बन सकती है, सिद्धों की नहीं बन सकती और जो आकृति बना दी जाती है, वह पूजा के योग्य नहीं होती है। **अब आप सिद्धों की पूजा कैसे करोगे?** इसलिए सिद्धों की पूजा आज वर्तमान में इन प्रतिमाओं के माध्यम से नहीं होती है। हम इन प्रतिमाओं में भी सिद्ध भगवान देखें और वह तब देख सकते हैं जब हमें पता हो। ये प्रतिमाएँ देखा जाए तो पंच-कल्याणकों से मंत्रित हैं। कोई भी प्रतिमाएँ होती हैं, उनके कितने कल्याणक होते हैं? पाँच कल्याणक होते हैं तो पाँच कल्याणकों में पंचम कल्याणक जो है, वह मोक्ष कल्याणक हुआ। वह भी किसमें हुआ? वह भी उन्हीं प्रतिमा में हुआ। प्रतिमा में वह मोक्ष कल्याणक भी है, प्रतिमा में सिद्धत्व भी है, वह तब आपको दिखाई देगा जब आपको जानकारी हो।

सभी तीर्थकर अभी सिद्ध दशा में हैं

Actually में हम जो रूप देख रहे हैं, वह तो एक तरह से अरिहन्त का है लेकिन वर्तमान में हम जिन्हें भगवान कह रहे हैं, वे सिद्ध बन चुके हैं। उन सिद्धों की आकृति अगर हम देखना चाहेंगे तो वह इसी रूप में है, जैसी हमें यहाँ प्रतिमा में दिखाई जा रही है। आपको उस प्रतिमा में अरिहन्त भी दिखाई देंगे। सिद्ध भी दिखाई देंगे। **आपको knowledge होनी चाहिए कि यह अरिहन्त भगवान की प्रतिमा होते हुए भी इनकी अन्तरंग का आत्म-तत्त्व अगर हम अपने मन में imagine करेंगे तो वह सिद्ध रूप में ही है।** वह प्रतिमाएँ पाँच कल्याणकों से प्रतिष्ठित कहलाती हैं। उनमें आप जो भी कल्याणक देखना चाहे, वह आपको दिखाई दे जाएगा। प्रतिमा एक है, देखने की दृष्टि आपकी अलग-अलग, अलग-अलग समय पर हो सकती है। इसलिए प्रतिमाओं की पूजा करने का मतलब हो जाता है...अरिहन्त की पूजा करना। इसका मतलब यह नहीं है कि वर्तमान में भी अभी वर्धमान भगवान अरिहन्त हैं? ऋषभ देव अरिहन्त हैं? संभवनाथ भगवान अरिहन्त हैं? **भगवान अरिहन्त अभी नहीं हैं, अरिहन्त दशा को छोड़ कर के वे सभी सिद्ध दशा को प्राप्त कर चुके हैं।** जितने भी तीर्थकरों की आत्माएँ हैं, वह सभी कैसी अवस्था में है? सिद्ध अवस्था में। पूजा हम उनकी पंच कल्याणकों के साथ करते हैं, अरिहन्त अवस्था के साथ करते हैं क्योंकि उन्हीं की पूजा सम्भव है क्योंकि सिद्ध आत्माओं की पूजा हम केवल भगवान की भक्ति करके कर सकते हैं या सिद्ध भगवान के लक्षणों को, उनके गुणों को, ध्यान में रख कर के कर सकते हैं।

अरिहन्त और सिद्धों के भीतरी आत्मिक गुणों में कोई ज्यादा अन्तर नहीं

सिद्ध चक्र विधान कर लेते हो आप, सिद्ध भगवान के गुणों का स्मरण करके ही, वह सिद्धों का स्मरण किया जा सकता है। अन्यथा आप उस विधान में भी देखेंगे कि सिद्धों के गुणगान तो कम होते हैं। उसमें भी भगवान के 1008 नाम, सहस्र नाम वगैरह सब होता है न, सबकी पूजा होती है। ये सब 1008 नाम किनके कहे जाएँ? अरिहन्तों के? कि सिद्धों के? रिद्धियों की भी, उसमें रिद्धिधारी मुनि महाराजों की पूजा हो जाती

है। उसमें गणधरों की रिद्धियों का भी वर्णन आ जाता है लेकिन विधान क्या कहलाता है? सिद्ध चक्र विधान। कोई totally आप सिद्धों की आराधना तो नहीं करते रहते। उसमें सब कुछ आपके लिए मिल जाता है लेकिन आपकी दृष्टि में यह होना चाहिए कि अरिहन्त और सिद्धों के भीतरी आत्मिक गुणों में कोई ज्यादा अन्तर नहीं है। **हम केवलज्ञान आदि अनन्त चतुष्टय से सुशोभित आत्मा का अर्चन पूजन-वन्दन कर रहे हैं। यह अगर आपके दिमाग में रहेगा तो आप कोई भी विधान करते हुए भी confuse नहीं होंगे।** नहीं तो आपको हमेशा पूजा में confusion होते रहेंगे। हम किसकी पूजा कर रहे हैं? अरिहन्त की? कि सिद्धों की? समझ आ रहा है? पूजा आप किसी की भी कर लो, उन्हीं जिन बिंबों के सामने चाहे आप अरिहन्त की पूजा कर लो, चाहे आप सिद्ध की पूजा कर लो और उन्हीं जिन बिंबों के सामने रखते हुए, आप सिद्धों की भी अपने ध्यान में ध्यालो, चाहे अरिहन्तों को ध्यालो। लेकिन यह हमेशा ध्यान रखो कि जिस आत्मा ने केवलज्ञान की प्राप्ति कर ली है, अब उस आत्मा को कभी-भी शरीर सहित दशा प्राप्त नहीं होगी।

भगवान आत्मा संसार में कभी नहीं आते

एक बार जो आत्मा, भगवान आत्मा बन गया, वह अब कभी भी संसार में पुनः शरीर अवस्था को प्राप्त नहीं करेगा। यह बात अपने दिमाग में रख कर के ही आप यह ध्यान में रख पाओगे कि जो भी आत्माएँ एक बार सिद्ध बन जाती हैं, वह पुनः फिर संसार में नहीं आती हैं। लेकिन अगर हमारे दिमाग में जन्म-जन्मांतरों का मिथ्यात्व बैठा रहता है, तो हम दिमाग से यह भी सोचते रहते हैं कि कभी न कभी वह भगवान फिर अवतार ले लेते होंगे, फिर वह अरिहन्त बन जाते होंगे, फिर कभी वह धरती पर आ जाते होंगे।

जैन दर्शन में अवतारवाद नहीं है

इसलिए सिद्ध भगवान की पूजा करते हुए यह ध्यान में रखो कि कोई भी अवतारवाद जैन दर्शन में नहीं बताया गया। अवतर, अवतर, अवतर, यह तो कहा जाता है, **जब हम भगवान को अपने हृदय में बुलाते हैं तो क्या बोलते हैं?** अवतर अवतर मतलब क्या करो? आ जाओ, आ जाओ, उतर आओ, उतर आओ। कहाँ से? ऊपर से? सिद्ध शिला से, कहाँ से उतारते हो? अपने भावों में हम उन्हें ठोने पर उतार लेते हैं, हृदय पर उतार लेते हैं लेकिन क्या वास्तव में भगवान उतर आते हैं? जब हम अपने भावों से ठोने पर अवतर-अवतर कर लेते हैं, उतार लेते हैं, हम अपने हृदय में भी उतार लेते हैं, हम अपने शरीर में भी उतार लेते हैं, हम अपनी हथेलियों पर भी उतार लेते हैं। नहीं समझ आया? जब आपको अहं योग की पंच मुद्राएँ सिखाई जाती हैं तो उसमें एक सिद्ध मुद्रा भी आती है। पंच परमेष्ठी की पंच मुद्राओं में, एक सिद्ध मुद्रा भी आती है और वह सिद्ध मुद्रा जब हम बनाते हैं तो उसमें आकृति हमारी हथेलियों की ऐसी बन जाती है, सिद्ध शिला की आकृति हो। यह जो अपनी बीच की जो हृदय रेखा होती है, दोनों हृदय रेखाएँ जब मिल जाती हैं तो आगे इस तरह से सिद्ध-शिला की आकृति बन जाती है। poster सामने लगे हैं और इस सिद्ध शिला की आकृति बनाते हुए, इसी तरह से हमें यह भाव पूजा करना है। यह एक तरह की क्या है? भाव पूजा।

भाव पूजा

जानते हो भाव पूजा कैसी होती है? इसी तरह से की जाती है- भाव पूजा। सिद्ध भगवान को स्मरण करना,

उनकी ऊर्जा हमारे हाथों पर आ रही है, हमारे हाथों में अनन्त सिद्ध भगवान बैठे हैं। हमारे हाथ ही सिद्धशि-
ला है और अर्ह का ध्यान स्मरण करते हुए चूँकि अर्ह उनका नाम हैं, अनन्त सिद्धों का नाम क्या है? अर्ह
उनका नाम है। **अर्ह नाम से हम उन्हें बुलाएँ, पुकारें, अपने हाथों में रख कर के और अपने हृदय में
उनका स्मरण करें। इसका नाम है-भाव पूजा।** यह आपको अर्ह ध्यान योग से भाव पूजा कराई जाती
है। समझ में आ रहा है? आप केवल द्रव्य पूजा ही नहीं करते हैं, द्रव्य पूजा तो आप हमेशा ही करते रहते हैं।
लेकिन भाव पूजा आप करेंगे तो कैसे करेंगे? इन्हीं प्रकार के भावों से करेंगे और ये भावों में आप कम टिकते
हो। पूजा के भाव में तो आप 512 और 1234 सब अर्घ चढ़ा लो, न जाने कितने कितने, 1156, 1256,
कितने होते हैं? सब अर्घ चढ़ा लो लेकिन ओं अर्ह के माध्यम से या अर्ह अर्ह के माध्यम से अपने मन में
सिद्धों का स्मरण 108 बार भी नहीं कर पाओगे। समझ आ रहा है? मतलब आपका मन किस में लगता
है? भीतरी भावों में नहीं लगता है, भाव पूजा में नहीं लगता है, आपका मन द्रव्य पूजा में लगता है। सुबह 6
बजे से बिठा कर के दोपहर दो बजे तक, स्वाहा करवा लो आपसे लेकिन अगर आपको कहा जाए कि केवल
आधे घंटे, सिर्फ आप अर्ह का स्मरण करो, अर्ह, अर्ह, अर्ह या ओं अर्ह नमः, ओं अर्ह नमः सिर्फ आधा घण्टा,
ओं अर्ह नमः का जाप करो। देख लेना आपका मन जाप करने का कितना बनता है? आपका मन भावों से
कम लगता है। भावों की प्रक्रिया, भावों को सुधारना, भावों से पूजा करना, भावों से हृदय में भगवान को
बुलाना, उनकी energy को अपनी energy में महसूस करना, यह सब आपके अन्दर बहुत कम हो पाता
है। द्रव्यिक सामग्री को इधर से उधर करने में तो खूब मन लग जाता है और यह जब हमारा मन इस तरह
से खुद में अपने आप, बिना किसी आलंबन के लगने लगता है, इसी को आचार्यों ने भाव पूजा कहा है। पढ़
लेना कभी आचार्य **सोमदेव सूरी का 'यशस्तिलक चंपू'** उसमें आपको मिल जाएगा भाव पूजा किसे कहते
हैं? इसी पद्य के ध्यान को, मंत्र की जाप को, वे भाव पूजा कहते हैं और यह श्रावकों के लिए करने को कहा
गया है।

पूजा का set pattern

हर चीज का एक pattern बस बन गया तो उस pattern से कोई भी हटना नहीं चाहता। कोई भी अपना
समय उस pattern से हट कर के दूसरे pattern में लगाना नहीं चाहता। बस! जो mind में set हो
गया है, बस! हमें उसी से चलना है। सबका mind set है, बस! यही पूजा-पढ़ना है, यही विनय पाठ पढ़ना
है। जैसे कि इस विनय पाठ से पहले कभी पूजा ही नहीं होती थी। वही स्वस्ति-पाठ पढ़ना है, वही विनय
पाठ पढ़ना है, वह विनय पाठ अभी देखा जाए तो पंडित नाथुराम जी का है न, उसमें वे last में बोलते हैं।
उससे पहले कौन सा विनय पाठ पढ़ा जाता था? उससे पहले कौन सी पूजा की पद्धति होती थी? अब वह
बन गया pattern तो बस वही pattern चलेगा। अगर कोई बिना विनय पाठ के पूजा करने लग जाए...
अरे! तूने विनय पाठ तो पढ़ा ही नहीं, हल्ला करने लग जाए, पण्डित जी की बिल्कुल कान पकड़ ले। बताओ
पंडित जी ऐसा होता है कि नहीं? बिना विनय पाठ के अगर आप पूजा करना शुरू कर दो तो लोग आपसे
चिल्लाने लग जाएँ। पूजा अधूरी है, स्वस्ति-पाठ पढ़ा ही नहीं, आप सीधे-सीधे भगवान की पूजा करने लग
गए। **आखिर यह pattern बनाए किसने? क्या यह आचार्यों के बने हुए pattern हैं? क्या यह
पुराने काल से चले आ रहे pattern हैं? ये कहाँ के बने हुए pattern हैं?** मैं पूजा का कोई खण्डन
नहीं कर रहा हूँ, न मैं आपके जो बने हुए pattern पर जो आप चल रहे हो, उसकी कोई मैं आलोचना कर

रहा हूँ। आप जो कर रहे हो बहुत अच्छा कर रहे हो। करना आपको यही है लेकिन आपको सुनना भी यह है, समझना भी यह है कि हम कहीं केवल द्रव्यों में ही या किसी तरह के patterns में ही उलझ कर के अपनी पूरी प्रक्रिया कर लेते हैं या हमारे अन्दर कुछ परिवर्तन लाने के लिए, हमें कोई भावों में दूसरी चीज भी करनी चाहिए। अवतर-अवतर की क्रिया तो सेकंडों में हो जाती है। अत्र अवतर-अवतर, अत्र तिष्ठ-तिष्ठ और फिर बाद में पूजा की क्रिया लंबी चलती रहती है। जबकि यह अवतर-अवतर की क्रिया ही प्रमुख है। इसके बिना आपकी कोई पूजा नहीं है, यही भाव पूजा का एक प्रारूप है और यहाँ से भाव पूजा शुरू होती है। बाद में सब द्रव्य पूजा चलने लग जाती हैं।

पदस्थ ध्यान

इसी भाव पूजा को आगे बनाए रखने के लिए आचार्य कहते हैं- जाप करो, ध्यान करो, पदस्थ ध्यान, गृहस्थ श्रावकों के लिए बहुत उपयोगी बताया गया है। मंत्रों का ध्यान, णमोकार मंत्र का ध्यान करना, श्रावकों के लिए बहुत उपयोगी बताया गया है। यह णमोकार मंत्र के अक्षरों का ध्यान करना, एक-एक अक्षर को बीजाक्षर कहा गया है...**ण, म, अ, रि, हं, ता, णं...** एक-एक अक्षर भी अपने आप में शक्तिमान है। इन्हीं अक्षरों का ये संक्षिप्त रूप ओं अहं, ह्रीं ये संक्षिप्त बीजाक्षर हैं। इनके ध्यान करने से हमारे अन्दर शक्ति उत्पन्न होती है, स्वास्थ्य उत्पन्न होता है, हमारी भावनाएँ वास्तव में, उन पंच परमेष्ठियों की शक्ति से जुड़ती हैं।

जाप शब्द की व्युत्पत्ति

यहाँ पर एक चीज आपको बताना चाहता हूँ। एक शब्द आया **‘जानन पश्यन’** क्या लिखा है? **‘जानन पश्यन’** जानन का जा निकालो और पश्यन का प निकालो, क्या बना? इसका नाम है- जाप। पहले इन दो अक्षरों से जाप बन जाता है। मतलब जाप में आपको क्या करना है? जानना है और देखना है। कुछ सोचना नहीं है। आपको एक नया चिन्तन दे रहा हूँ। विद्वान महोदय सामने बैठे हैं, शायद उन्हीं के पुण्य से यह चिन्तन आया है। आज ही आया, अभी आया है। **‘जानन पश्यन’ जानो और देखो।** जब भी आप जाप करते हो तो जाप के दो शब्द कहाँ से बने हैं? यह जाप के दो शब्द यहाँ से बने हैं- **‘जानन और पश्यन’** इनके प्रथम शब्द लेकर के जाप शब्द बनता है। एक नया भाव आज आपको दे रहा हूँ। यह सतना के शान्तिनाथ भगवान का अतिशय है, नई खोज है, अभी तक आपने जप सुना होगा। **जप किसे बोलते हैं?**

‘जकारो जन्म विच्छेदः, पकारो पाप नाशकः’ इस तरीके का एक श्लोक आ जाता है। आज मैं आपको नई चीज दे रहा हूँ। **जाप शब्द किससे बना? जानन क्रिया और पश्यन क्रिया से जाप शब्द बनता है।** जब **‘जकारो जन्म विच्छेदः’** जन्म के जा को और पाप के प को आप लेकर के जप बना सकते हो तो उसमें भी अगर देखा जाए तो पाप का आपने प ले लिया। पूरा प तो उसमें भी नहीं लिया क्योंकि पाप में प के साथ में डंडा भी लगा हुआ है। बड़ा पा है वह, वह जपा बनता लेकिन उसको भी आपने जप के रूप में स्वीकार कर लिया। चलो कोई बात नहीं! मंत्र तो ऐसे ही बनते हैं। श्लोक तो ऐसे ही बनते हैं तो मैं भी एक नया श्लोक बना सकता हूँ। अब बना कर आपको दिखाऊँगा। जप कहाँ से बना? जाप कैसे बना? अभी तक आप जप बोलते हो, अब जाप, जाप कैसे बनेगा? जाप करो जाप। जानन यह जो क्रिया है, **‘जानन इति जा शब्द, पश्यन इति पकारः’** और दोनों का मिलन कर दोगे तो बन जाएगा जाप। मतलब जाप में

आपको क्या देखना है? ध्यान भी आपका जाप में होना चाहिए और ध्येय भी आपका जाप में होना चाहिए। जाप करते हुए ध्येय आपके लिए क्या होना चाहिए? मतलब महाराज हम जाप करें तो क्या ध्यान करें? क्या सोचे? क्या विचार करें? आप कुछ नहीं सोचो... जानो और देखो। अब किसको जाने? और किसको देखें? या तो आपके आसपास जो हैं, उसको जानो देखो और अगर आपको परमात्मा को जानना-देखना है, उनका ध्यान करना, उनके लिए जाप करना है, तो उनको जानो-देखो या उनकी जानने-देखने की क्रिया पर अपनी दृष्टि ले जाओ कि वे जान रहे हैं, देख रहे हैं। कौन? **अरिहन्त भगवान, सिद्ध भगवान, सब क्या कर रहे हैं? जान रहे हैं और देख रहे हैं। हम उन्हीं का ध्यान करने बैठे हैं तो हमें भी क्या करना है? जानना है और देखना है।** हम भी जान रहे हैं, देख रहे हैं। किसको? भगवान को हम सिर्फ जान रहे हैं और देख रहे हैं और भगवान जो जान रहे हैं, देख रहे हैं, हम उसको भी जान रहे हैं, देख रहे हैं। इसके अलावा हमें कुछ करना ही नहीं है। इसका नाम है- जाप। समझ में आ रहा है?

जाप के विभिन्न प्रकार

अब यह जाप आपको कैसे कराई जाएगी? जब तक आप अर्ह ध्यान में नहीं बैठोगे, अर्ह ध्यान नहीं कराया जाएगा तब तक आपको भीतर से जाप करने का भाव नहीं आएगा। **यह जाप होती है- मानसिक जाप।** कई तरह की जाप होती हैं। एक वैखरी जाप, एक उपांशु जाप कहलाती हैं, एक मानसिक जाप कहलाती है और एक कहलाती है- सूक्ष्म जाप। ऐसी चार तरह की जाप होती है। माला नहीं कह रहा हूँ... चार तरह की एक मोती की, एक माणिक की, एक पन्ना की और एक तुम्हारे कपड़े, किसकी बनी रहती है? धागे की, सूत की। चार जाप! कौन सी जाप?

वैखरी जाप

एक जाप होती है, जिसे हम वैखरी जाप कहते हैं। जिसे हम बोल-बोल करके करते हैं, जिससे हम दूसरे को भी सुना दे, खुद भी सुन ले। हम बोल रहे हैं... णमो अरिहन्ताण, णमो सिद्धाणं यह क्या है? णमो अरि-हन्ताण, णमो सिद्धाणं, ओं अर्ह, ओं अर्ह, ओं अर्ह नमः, ओं ह्रीं श्रीं अर्ह नमः यह सब क्या है? **यह सब वैखरी जाप हैं।** जब हम बोलेंगे, हम सुनेंगे भी और हम बोलेंगे भी। हमारी जाप को कोई दूसरा भी सुन सकता है, तब तक वह कौन सी जाप है? वह वैखरी जाप है।

उपांशु जाप

दूसरे नंबर की जाप होती है- **उपांशु जाप।** उपांशु जाप में आपके होंठ नहीं हिलेंगे लेकिन भीतर से आपकी जिह्वा हिलेगी। शब्द आपके निकल सकते हैं लेकिन वे भीतर ही रहेंगे। करके बताओ? होंठ मत हिलाना... केवल बस भीतर से णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं करना, ओं अर्ह नमः करना। बस होंठ मत हिलाना। थोड़ा सा मंद ध्वनि में करना। इसको क्या बोलेंगे? यह उपांशु जाप है। यह दूसरे को सुनाई नहीं पड़ेगी, आप क्या पढ़ रहे हो? आपको पता पड़ेगा आप पढ़ रहे हो।

मानसिक जाप

तीसरी होती है- **मानसिक जाप।** यह एक सूक्ष्म स्तर पर आने से पहले की जाप है और इसी का सबसे

ज्यादा फायदा होता है। वैखरी जाप में अगर आपको 25% लाभ मिलता है, तो उपांशु जाप में आपको 50% लाभ मिलता है और मानसिक जाप में आपको 75% लाभ मिलने लग जाता है। मानसिक जाप में क्या करना? बस! अपने मन में, यहाँ पर आपके अन्दर वह क्रिया आएगी...जानने की, देखने की, यहाँ से शुरू होगी क्रिया। अब हम णमो अरिहंताणं बोलेंगे भी नहीं, खुद सुनेंगे भी नहीं, हम अपने मन से उसका प्रयास भी बोलने का नहीं करेंगे लेकिन फिर भी हमारे मन में चल रहा होगा। बिना बोले भी क्या मन में चलता है? अपने मुँह बंद कर लो, होंठ बंद कर लो, जिह्वा को हिलाना नहीं, फिर भी देखो णमो अरिहंताणं, क्या हम सोच रहे हैं? मन में आ रहा है? णमो अरिहंताणं बोलो! आ रहा है न? आता है न? इसका नाम क्या है? यह मानसिक जाप है। इसमें 75% लाभ आपको जाप का मिलने लग जाता है।

सूक्ष्म जाप

एक होती है- **सूक्ष्म जाप**। इसमें 100% आपको जाप का लाभ मिलेगा। इस सूक्ष्म जाप में क्या होगा? आपको यह भी पता नहीं होगा कि मैं णमो अरिहंताणं कर रहा हूँ, मैं अहं बोल रहा हूँ। वह अब आपके दिमाग में बिना प्रयास के चलता रहेगा। बिना आपके प्रयास के, आपकी धारणा में, जब वह बन जाएगा, बैठ जाएगा तो वह अन्तरंग से अपने आप, आपके अन्दर, वह तरंगे उत्पन्न करता रहेगा। इसी को science की भाषा में कहते हैं- subconscious mind में वह चीज बैठ जाना। फिर आप हमेशा, कभी भी, किसी भी क्षण, उनका स्मरण कर सकोगे। यह मानसिक जाप में जो व्यक्ति रमने लग जाता है, उसे हमेशा सिद्धों का ध्यान, अरिहन्तों का ध्यान, ओं अहं में, अपने आप उसकी प्रवृत्ति बनी रहती है। वह सब काम करते हुए भी, अपना ध्यान दुनिया से अलग रख लेता है।

जाप का महत्व

यह अभ्यास की चीज है। इसी को कहा जाता है कि खाते-फिरते, चलते, उठते-बैठते किसी भी समय पर भगवान का स्मरण करो। वह एक स्मरण तो with effort और एक स्मरण without effort...जब हम with effort कर रहे हैं, वह हमारी initial stage है लेकिन जब वह without effort होने लग जाता है, तो वह फिर हमारी, एक तरह की वह mature stage कहलाती है। मतलब हम वह कार्य करते-करते परिपक्व हो गए। इसका नाम है- जाप। जानो-देखो, शान्तिनाथ भगवान की मूर्ति के सामने बैठ गए, क्या करना? माथा पटकना उनके ऊपर बार-बार, क्या करना? जानो, देखो, बस! भगवान के सामने बैठ जाओ। भगवान भी क्या कर रहे हैं? जान रहे हैं और तो हमको भी क्या करना है? जानना है और बस जानना और देखना, यह सबसे बड़ी जाप है। **‘जानन-पश्यन’** इन दो शब्दों से मिलकर के यह जाप शब्द का सही महत्व सामने आता है और जब यह सूक्ष्म जाप के रूप में आप उतर जाओगे तो उस समय पर आप यही कर रहे होंगे...जानन-पश्यन, जानन-पश्यन आप सिर्फ जान रहे होंगे, देख रहे होंगे। यह जाप का आन्तरिक महत्व, वास्तविक रूप से आपको उपलब्ध हो जाएगा।

अब ‘धुन्वन् ध्वान्तं नितान्तं’ यहाँ तक बात हो गई थी। फिर इसके आगे क्या लिखा है?

‘निचित-मनुसभं, प्रीणयन्नीशभावम्’

‘निचितम् अनुसभं प्रीणयन्’ ये तीनों पदों का एक साथ सम्बन्ध है। **‘प्रीणयन्’** यह क्रिया है। **‘निचितम्’**

यह विशेषण है। ‘अनुसभम्’ यह विशेष्य है।

अरिहन्त भगवान कहाँ मिलेंगे?

‘अनुसभम्’ का मतलब है...क्योंकि वह अरिहन्त भगवान की अभी बात है, तो अभी वह सभा में हैं। अरिहन्त भगवान आपको ज्यादातर कहाँ मिलेंगे? उनका mostly time कहाँ पर spend हो रहा होगा? सभा में। कौन सी सभा में? समवशरण सभा में। अगर सभा में नहीं मिले तो कहाँ मिलेंगे? देखो! आपको बहुत अच्छी बात बता रहा हूँ। या तो वे आपको हमेशा सभा में बैठे हुए मिलेंगे, अगर by chance वे सभा में आपको नहीं मिले तो कहाँ मिलेंगे? वे कहीं चलते हुए मिलेंगे, विहार कर रहे होंगे, गमन कर रहे होंगे और वे विहार जहाँ भी करने के बाद में पहुँच जाएँगे तो तुरन्त वहीं पर फिर आपको सभा में बैठे हुए मिल जाएँगे। इसलिए अरिहन्त भगवान का काम कुछ नहीं रह जाता। बाहर के शरीर से, बस! उन्हें चलना, इतना ही काम रह जाता है, बैठना-उठना बस! लेकिन भीतरी उनकी क्रिया आत्मा की क्या चल रही है? जानना-देखना और वह अरिहन्त भगवान या तो आपको बैठी हुई स्थिति में मिलेंगे या आपको चलती हुई स्थिति में मिलेंगे।

भगवान कभी सोते नहीं

कोई तीसरा काम करते हुए नहीं मिलेंगे। बताओ कोई और तीसरा काम करते हैं क्या? कभी सोते हुए मिलेंगे क्या? भगवान सोते हैं क्या? नहीं सोते। पक्का? कौन से भगवान नहीं सोते? जो वास्तव में भगवान हैं। वह कभी भी नहीं सोते, सो ही नहीं सकते। **सो जाएँगे तो जानने-देखने की क्रिया छूट जाएगी और जब तक जान रहे हैं, देख रहे हैं, भला वे सो कैसे सकते हैं?** जागृति इसी का नाम है...जो जानता रहे और देखता रहे।

जैसे सामने चक्कर लगाने वाला, एक कोई कोतवाल होता है, आपसे कहता है...जागते रहो, फिर भी आप सोते रहते हो और सुनते रहते हो, वह क्या कह रहा है? जागते रहो। ऐसे ही भगवान जो होंगे वह हमसे क्या कह रहे हैं? जानते रहो, देखते रहो और इसके अलावा कुछ मत करो। लेकिन फिर भी हम सब कुछ करते रहते हैं। जैसे आपके द्वार का, घर का, colony का कोई gaurd आपके लिए कहता रहता है...जागते रहो। लेकिन फिर भी आप सुनते भी रहते हैं और सोते भी रहते हैं और आपको पता है...यह क्यों कहा जा रहा है? जागते रहने का मतलब है...अपनी सुरक्षा में रहो। इसी तरह से जिनवाणी हमेशा हमसे कहती रहती है...जानते रहो, देखते रहो। लेकिन फिर भी हम सब करते हैं...खाते भी रहो, पीते भी रहो, लड़ते भी रहो, झगड़ते भी रहो, सब करते रहो लेकिन हमें ध्यान रखना है, वास्तव में हमें करना क्या है?

जिनवाणी हमें बार-बार क्या कहती है?

जानते रहो, देखते रहो। जब तक जानते-देखते रहोगे तो जागते रहोगे। एक बार भगवान आत्मा जाग गया तो फिर वह हमेशा जानता-देखता रहता है। जब तक उस भगवान आत्मा में जागृति नहीं आती है तब तक उसमें जानने-देखने की क्रिया, उसका स्वभाव होते हुए भी, उसे पता नहीं रहती है। क्योंकि वह जानने-देखने के अलावा सब कुछ कर रहा है। बोल रहा है, खेल रहा है, खा रहा है, पढ़ रहा है, सीख रहा है,

सिखा रहा है, लेकिन वह नहीं कर रहा है जो उसे करना चाहिए। क्या नहीं कर रहा है? बड़े-बड़े समयसार पढ़ने वाले पंडित लोग भी ये क्रिया नहीं करते हैं और पूरे समयसार में इसके अलावा कुछ है ही नहीं। यह **पूरे समयसार का सार है- जानना-देखना...** 'णाणम् दंसणम्' ज्ञान गुण से जानो, दर्शन गुण से देखो और यह जानने-देखने की क्रिया जो कर रहा है, वह जाग रहा है। इसलिए अरिहन्त भगवान और कोई तीसरा काम करते नहीं। बाहर से अगर उनके कोई posture दिखाई देंगे, कोई उनकी दो activity दिखाई देंगी तो कौन सी? एक तो बैठ करके समवशरण में उपदेश देने की और दूसरा उनका एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए, गमन करने की। इसके अलावा वह तीसरे कभी posture में दिखाई नहीं देंगे। आपको कभी सोते हुए मिलेंगे क्या? सबके दिमाग में यह मिथ्यात्व बैठा हुआ है...भगवान सोते हैं, भगवान जागते हैं। कौन से भगवान सोते हैं? बताओ? **अरिहन्त भगवान सोते हैं कि सिद्ध भगवान सोते हैं?** कोई कह रहा है- अरिहन्त भगवान सोते हैं, सिद्ध नहीं सोते। कौन से भगवान सोते हैं? हम भगवान को भगवान तभी कहना शुरू करते हैं जब वे सोना बंद कर देते हैं। यह जैनों की विशेषता है। यह किसकी विशेषता है? यह जैनों की विशेषता है। जैनों की विशेषता यही है कि जैन जिन्हें भगवान कहते हैं, उनका भगवान कभी भी सोता नहीं है। चाहे वह अरिहन्त परमात्मा हो, चाहे वह सिद्ध परमात्मा हो। अब जब भगवान सोता नहीं है तो फिर जागने की कोई अलग से बात नहीं होगी। भगवान जागेगा कैसे?

दक्षिणायन, उत्तरायन प्राकृतिक व्यवस्था है

जाग करके ही तो भगवान बना जाता है और फिर सो गया तो फिर कब जागना? यह काम भगवान का नहीं। फिर भी हम कहते हैं...यह छः महीने सूर्य इस दक्षिणायन में चला गया, अब भगवान सो गए छः महीने के लिए। अब भगवान छः महीने बाद कुछ काम करेंगे, तभी हम कुछ काम करेंगे। यह भगवान करते हैं क्या? भगवान के सोने जागने से तुम्हारे काम चलते हैं क्या? यह तो सूर्य के अनुसार चलने वाली दिशाओं का और उन दिशाओं के माध्यम से, जो उस समय पर महीने-नक्षत्र आदि होते हैं, उनके ज्ञान के कारण से, उन दिनों में कुछ मांगलिक कार्य नहीं किए जाते हैं क्योंकि उनके प्रभाव अलग होते हैं और जब वही सूर्य आदि अपने उत्तरायन में आ जाते हैं, उस समय पर जो नक्षत्र आदि की व्यवस्था बनती है, वह एक चंद्र गति के अनुसार बनती है। वह व्यवस्था जब, सब मिलकर के सही बनने लग जाती हैं तो उस समय पर सब मंगल कार्य भी करने लग जाते हैं। इसमें भगवान का क्या लेना-देना? यह प्राकृतिक व्यवस्था है। जैसे ऋतुएँ आती हैं, जाती हैं। ऐसे ही यह प्राकृतिक व्यवस्था है, कुछ समय पर आपके घरों में विवाह शादी नहीं होते हैं। कुछ समय पर होने लग जाते हैं। भगवान कभी भी जागते-सोते नहीं हैं। **भगवान तो हमेशा जागते ही रहते हैं और एक बार अगर भगवान जाग गए तो फिर उन्हें सोने की कोई जरूरत नहीं पड़ती।** सोने के लिए भी कुछ खाना-पीना पड़ता है, तब नींद आती है। क्या खाकर सोएंगे भगवान? बोली? क्या खिलाओगे उनको? खुरचन! बड़ी famous है भाई। थोड़ी-थोड़ी खुरचन तो शहपुरा से ही शुरू हो गई थी लेकिन वहाँ जब कभी मिलती थी, जब कभी देखने में आती थी लेकिन जब से इस area में प्रवेश किया तो खुरचन रोजाना दिखाई देती। भाई खुरचन यहाँ का best dish है। क्या खिलाओगे भगवान को? रबड़ी, खोआ, खुरचन, क्या खिलाओगे। जब ऐसी चीजें खिलाओगे तभी नींद आएगी। दाल का पानी पीने से क्या नींद आएगी उनको? फिर भगवान को सुलाने के लिए, सोने के लिए भी कुछ गरिष्ठ खाना पड़ेगा। भगवान क्या खाते हैं? पीते हैं? नशा करते हैं? गाँजा पिएँगे कि चिलम पिएँगे कि दारु पिएँगे? तब भगवान को नींद

आएगी भाई! जैसे तुम्हें आती है। समझो भगवान क्या है? क्या कर रहा है? हमारे दिमाग में जिंदगी भर णमो अरिहंताणं, सिद्धाणं चलता रहता है लेकिन फिर भी भगवान के बारे में हम वही सोचते हैं जो हमारे मिथ्या-त्व भाव से हमारे अन्दर आता है। **यह जान लो कि अरिहन्त भगवान कभी भी खाते नहीं, पीते नहीं, सोते नहीं, सो कर के जागते नहीं, हमेशा उनके लिए एक ही क्रिया भीतर से चलेगी...जानने और देखने की।** जब तक अरिहन्त अवस्था है, तो दो क्रिया हमें बाहर से दिखाई देंगी, एक बोलने की और एक चलने की।

सिद्ध भगवान क्या करते हैं

शरीर छूट गया तो कौन सी क्रियाएँ छूट गईं? बोलना छूट गया, चलना छूट गया। बचा क्या? अब जानना-देखना रह गया। इसका नाम है- pure soul, सिद्ध भगवान, सिद्ध आत्मा है। समझ आ रहा है? यह सिद्ध भगवान अब क्या कर रहे हैं? अब इनको चलना भी नहीं है, इनको बोलना भी नहीं है। क्योंकि चलना-बोलना किसके आश्रित होता है? जब तक यह physical body हमारे साथ होगी, तब तक चलता है और यह छूट गई, अब only pure soul रह गई। अब उसमें कुछ भी नहीं है। अब वे क्या कर रहे हैं? only to know, only to see. बस! इसके अलावा और कोई काम नहीं अब उनका।

अरिहन्त भगवान की समवशरण सभा

अब भगवान के लिए यहाँ कहा जा रहा है...उनकी सभा कैसी है? 'निचित' मतलब खचित है, भरी पड़ी है। भरी पड़ी है होने का मतलब...कहीं पर भी कोई खाली स्थान नहीं है, कोई space नहीं है। जितने योजन की वह सभा होगी वह भरी पड़ी रहेगी। 12 कोटे हमेशा full रहेंगे। जैसे आप लोग यहाँ पर full दिखाई दे रहे हो, ऐसे ही भगवान की सभा में 12 कोटे full रहते हैं। यहाँ तो फिर भी थोड़ा बहुत बीच में कहीं हरी पट्टी दिखाई दे जाती है। अगर यह बाहर बैठने वाले लोग भीतर बैठने लग जाएँ तो बिल्कुल housefull हो जाए लेकिन उन्हें कुर्सियाँ नहीं मिलेंगी। शायद एक गणधर का कोठा अलग बना रखा है, बड़े लोगों का एक कोठा अलग बना रखा है। कोई बात नहीं? उनका काम सुनने का है, समझने का है, वह काम वहाँ पर भी रहकर के, बैठ कर के हो रहा है। **भगवान क्या कर रहे हैं? पूरी खचित सभा को प्रीणयन, प्रीणयन का मतलब होता है- प्रसन्न करना।** सभा में बैठे हुए पूरी सभा को भगवान प्रसन्न रखते हैं। प्रीणयन सुन रहे हो कि नहीं? हम भी पूछ ले आपसे, सभा में बैठे हुए प्रसन्न हो रहे हो कि नहीं? मतलब भगवान महावीर स्वामी की सभा के अनुरूप ही यह सभा चलनी चाहिए। आने वाले दिनों में अब आपको ध्यान रखना चाहिए कि वह भगवान की सभा में जिस तरह से हमेशा प्रसन्नता रहती है, ऐसे ही आने वाले दिनों में आपके चेहरों पर यहाँ बैठे हुए हमेशा प्रसन्नता दिखाई देनी चाहिए। उपदेश सुनने वाले लोगों के मन प्रसन्न रहने चाहिए। कोई उदासी नहीं होनी चाहिए। कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिए। कोई भय नहीं होना चाहिए। बिल्कुल प्रसन्न मन होकर के यहाँ पर दिखना चाहिए। भगवान क्या करते हैं सभा को बैठे-बैठे प्रसन्न रखते हैं। शान्ति से बैठे होंगे तो भी सभा देख कर के प्रसन्न होगी और बोल रहे होंगे तो भी और प्रसन्न हो जाएगी। फिर तो कहना ही क्या है? जब भगवान 66 दिन बाद बोले तब सभा कितनी प्रसन्न हुई? क्या आनन्द हुआ? उसका तो कहना ही क्या? भगवान पूरी सभा को प्रसन्न रखते हैं, यह यहाँ पर बताया गया है। मतलब प्रसन्नता होना

सभासदों का प्रमुख कार्य है और वह कार्य depend करता है उस वक्ता पर जो उन सभा का मुखिया है और उस सभा को प्रसन्न करने में माहिर है। मतलब आपको भी सभा में क्या रहना है?

प्रसन्नता-सबसे बड़ा भीतरी सुख

अध्यात्म सीखो। लेकिन अध्यात्म का मतलब यह नहीं है कि मुँह बना कर बैठ जाओ। अरे भाई! आध्यात्मिक हो रहे हैं, spiritual हो रहे हैं, थोड़ा जानने-देखने लगे हैं तो बिल्कुल उदास होकर के नहीं बैठना है। जानना देखना भी तो प्रसन्नता के साथ हो सकता है न। भगवान उदास होकर के जानते देखते हैं? प्रसन्न होकर के? हमेशा बिल्कुल cheerful मिलेंगे। भगवान चाहे वे किसी chair पर बैठे हो या न बैठे हो लेकिन always कैसे? भगवान cheerful, उनका प्रसन्न हृदय रहता है और यही बात आपको समझ में आनी चाहिए। यही आपका यहाँ पर बैठ कर के प्रसन्नता से सुनने का भाव होना चाहिए। श्रोता का सबसे बड़ा गुण क्या है? प्रसन्नमुख तो वक्ता को भी प्रसन्नता होती है कि श्रोता प्रसन्न होकर के सुन रहे हैं तो फिर वक्ता भी प्रसन्न हो करके सुनाता है। यह बड़ी चीज है देखो! **आखिर समवशरण में भी सुख मिलेगा तो कैसे मिलेगा? प्रसन्नता से ही मिलेगा और सबसे बड़ा सुख क्या है आखिर बताओ?** अपनी मन की हो गई इसका नाम सुख है क्या? अरे! मन की होने के बाद भी, फिर बेमन की होने लग जाती है, मन की होने के बाद भी फिर मन दुःखी होने लग जाता है। इसलिए सबसे बड़ा भीतरी सुख क्या है? प्रसन्न होना। भगवान अरिहन्त देव ने सभा में क्या सिखाया? सब लोग प्रसन्न रहो, बड़े-बड़े गणधर परमेष्ठी भी भगवान से यही प्रार्थना करते हैं **‘तित्थयर मे पसियंतु’** प्राकृत भाषा में 24 भगवान की स्तुति गणधर देव ने की है, जो मैं आपको बता रहा हूँ और उस स्तुति में उन्होंने भाव लिखा है... **‘तित्थयर मे पसियंतु’** अर्थात् तीर्थकर मुझे प्रसन्न करें। मतलब गणधर देव को भी प्रसन्नता चाहिए। सुन रहे हो? गढ़ के बाहर बैठे हुए लोगों। चाहे कितनी भी उम्र के हो, चाहे किसी भी तरह से कोई भी मन में, किसी भी तरह का भाव चल रहा हो, चाहे घुटनों में दर्द हो, चाहे कंठ में दर्द हो, कुछ भी हो लेकिन क्या रखना है? प्रसन्नता बनाए रखो। भगवान से क्या माँगो? तीर्थकर मुझे प्रसन्न रखें, बस! प्रसन्न करो। यहाँ सभा में तीर्थकर क्या फैला रहे हैं? क्या दे रहे हैं? प्रसन्नता दे रहे हैं...प्रसन्न रहो, खुश रहो। यह खुश रहना सबसे बड़ी जरूरत है। चिन्ता में पड़ जाना सबसे बड़ी जरूरत नहीं है।

उपश्रेणिक द्वारा पाँचवी परीक्षा



जैसे उपश्रेणिक चिन्ता में पड़ गया। अब चिन्ता में पड़ गया तो परीक्षा पर परीक्षा लिए जा रहा है। एक परीक्षा के बाद दूसरी परीक्षा, फिर तीसरी परीक्षा, फिर चौथी परीक्षा। कल तक कितनी हो गई थी? चार हो गई थी। **एक परीक्षा और बची थी...पाँचवी परीक्षा।** ज्योतिषी ने कहा...तुम सन्तुष्ट हो जाना। पाँच परीक्षाएँ ले लेना, सन्तुष्ट हो जाना अपने मन में कि तुम्हारा कौन सा बेटा योग्य है? ज्योतिषी के कहे अनुसार उसने परीक्षा ली। पाँचवी परीक्षा में वह अपने बेटों को बुला कर के कहता है...बेटा! एक यह पिटारा रखा हुआ है, पिटारा समझते हो न? कोई चीज मतलब बर्तन में कुछ बान्ध दिया, कपड़े से और उसमें कुछ सामग्री रख दी खाने की और एक जो है, कुछ ऐसा ही कलश type का रख दिया, उसका भी मुख ऊपर से बाँध दिया और उसमें पानी रख

दिया। सब बेटों को बुला कर के कहा...बेटा! यहाँ पर यह सब खाने की और पीने की सामग्री रखी है। इसको खा पी लो तो सब बेटे आए सबने ऊपर-ऊपर का वह जो ढक्कन था, कपड़ा था, सब हटाया और उसमें से सामग्री निकाली, उसमें से पानी पिया और चलते बने। बोले...पिताजी ने कहा था, इसमें से खा लो, पी लो। आप क्या करते? बताओ? हम भी यही करते, इसलिए तुम कभी राजा बन नहीं सकते। जो राजा बनने वाला है, वह यह सोचता है कि आखिर खाने-पीने के लिए इस तरह से क्यों बुलाना? यह बेटों को ही क्यों बुलाया जाता है? और किन्ही को क्यों नहीं बुलाया जाता है? साथ में यह भी एक सोचने की बात है और यह सोच किसमें पैदा होगी? जिसमें कुछ योग्यता होगी। जब वह सामने अपनी रखी हुई उस पिटारे को, उस कलशे को देखता है और सोचता है, इसमें से हमें खाना है, पीना है। फिर मुँह क्यों बंद कर रखा है इसका? अगर मुँह बंद कर रखा है, तो इसका मतलब है कि कहीं हमारी परीक्षा ली जा रही है। बिना इसका मुँह खोले हमें खाना है और बिना मुँह खोले, इसका पानी पीना है। यह भाव आ गया...किसके अन्दर? श्रेणिक के अन्दर। उसने क्या किया? उस बर्तन को हिलाया-डुलाया, थोड़ा उल्टा किया, इधर-उधर किया और उसमें से जो सामग्री गिर गई, उसने वह उसको खा लिया। समझ आ रहा है? ऐसे ही बिना मुख खोले हुए उस कलशे के पानी को उसने निकाल लिया और पी लिया। यही कहा गया था, इसमें से खा लेना, इसमें से पी लेना लेकिन उसने किस होशियारी के साथ किया कि उसने ऊपर का जो कपड़ा लगा हुआ था उसको नहीं हटाया। **जब राजा उपश्रेणिक के पास में समाचार दूतों के माध्यम से पहुँचा तो राजा उपश्रेणिक अब सोच में पड़ गए कि अब तो यह निश्चित ही हो गया है कि राजा बनने योग्य कौन है? श्रेणिक है।** लेकिन मैं यह चिलाती के लिए वचन दे चूका हूँ। अगर मैं इसको राजा नहीं बनाऊँगा तो मेरी बात की साख नहीं रह जाएगी। लोग मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे, मेरे लिए एक बहुत बड़ा कलंक लग जाएगा। जैसे रामचंद्र जी अपनी बात की साख पर, दशरथ जी अपनी बात की साख पर थे। वैसे ही राजा उपश्रेणिक के सामने आ रहा है। अब वह चिन्ता में पड़ा, अब चिन्ता में पड़ेगा तो क्या होगा? आदमी चिन्ता की शक्ति में अपने आप दिखने लग जाता है।

उपश्रेणिक की चिन्ता

एक बार उसने दो मंत्रियों को बुलाया, जो बड़े समझदार थे। उनका नाम ही था- एक का नाम था सुमति, क्या नाम था? जिसकी बहुत श्रेष्ठ मति थी। उसका नाम था सुमति और एक का नाम था- मति सागर। बुद्धि का तो वह सागर ही है। ऐसे दो मंत्रियों को बुलाया और उनके सामने बैठ गया, चिन्तातुर होकर के, बड़ी चिन्ता का मुख लेकर के और कहने लगा मुझे वैसे कोई चिन्ता नहीं है लेकिन एक चिन्ता सता रही है। वह मंत्री कहने लगे महाराज! आपको और चिन्ता? न आपका कोई शत्रु राजा है, न आपके घर में किसी चीज की कमी है, न पड़ोसी कोई राजा, आपके ऊपर आक्रमण करने वाला है, न आपके पास में कोई सेना की कमी है, न राज में खजाने की कोई कमी है, न आपके घर में पुत्र-पुत्रियों की कोई कमी है। चिन्ता कहाँ है? किस बात की चिन्ता? लेकिन जब चिन्ता दिखाई दे रही है तो पूछना तो पड़ेगा। तब मंत्रियों के पूछने पर राजा ने कहा- मेरी चिन्ता कुछ दूसरी है। **तब राजा उपश्रेणिक ने उन मंत्रियों से कहा...भाई! देखो ऐसी बात है, कि जब वह शत्रु ने, पड़ोसी राजा ने, मेरे ऊपर आक्रमण किया था और मैंने उसको जीत लिया था तो उसने मुझे गिफ्ट में कुछ चीजें दी थी और एक घोड़ा भी दिया था। यह तुमको भी पता है और वह घोड़ा लेकर के मैं जैसे ही बैठा, वह जंगल में मुझे ले गया और उसने मुझे गड्ढे में पटक दिया, यह भी तुमको पता**

है। उसके बाद की कहानी सबको पता है? मंत्री कहने लगे... नहीं पता महाराज! वहाँ क्या हुआ? हम तो बस इतना ही जानते हैं कि वहाँ से आप एक पुत्री को ले आए थे। कौन सी? नाम बोलो- तिलकावती।

उपश्रेणिक ने अपनी चिन्ता मंत्री को बताई

वह राजा उपश्रेणिक कहते हैं कि उस समय पर वह पुत्री का लाना भी बड़ा वचनबद्ध होकर के लाना हुआ था। वह चीज आपको पता नहीं है। वह मैं आपको बताना चाहता हूँ। वह पुत्री का पिता जो भीलों का सरदार था, वह विवाह करना नहीं चाह रहा था लेकिन बहुत कहने पर, बहुत मेरे आग्रह करने पर उसने अपनी पुत्री देना स्वीकार की थी और इस बात पर कि इस पुत्री का जो पुत्र होगा उसे आप राजा बनाओगे और यह चिलाती उसी का पुत्र है। अब बताओ मैं क्या करूँ? यह चिलाती में कोई योग्यता तो दिखाई देती नहीं है और योग्यता दिखाई दे रही है- श्रेणिक में। अब मैं कैसे करूँ? अगर इसको राजा नहीं बनाता हूँ तो मेरे बात की, कुल की जो साख है, जो लोगों के अन्दर विश्वास है, उस पर कलंक लग जाएगा। अगर मैं इसको राजा बना देता हूँ तो प्रजा का इससे कभी भला नहीं होगा। क्योंकि अगर राजा में चातुरी न हो, साहस न हो, विवेक न हो, बुद्धि न हो तो वह राजा कभी भी प्रजा का हित नहीं कर सकता। और मैं जीते जी प्रजा को गड्डे में डाल नहीं सकता। अब मुझे यह सब राजपाट छोड़ना भी है क्योंकि मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मुझे अब राजा बना कर के, इस राज्यभार के कार्य से अपने को मुक्त भी करना है। मैं क्या करूँ? मंत्री ने अगर राजा से कहा- आपकी चिन्ता का कारण क्या है? और राजा ने कह दिया तो मंत्री का काम है, अब उस राजा को चिन्ता से मुक्त कराना। बस! यह मंत्री का सबसे बड़ा काम होता है। राजा की चिन्ता भी मंत्रियों की चिन्ता बन जाए, तो वो मंत्री अपने आप में श्रेष्ठ मंत्री कहलाते हैं और वही हुआ। मंत्रियों ने सोचा, इस समस्या का निराकरण तो करना ही है और मंत्री वही है जो अच्छी मंत्रणा करके, बुद्धि से अच्छा काम करके, उस समस्या का निराकरण कर दे और मंत्री भी अब उस समस्या का निराकरण करने में लग गए। क्या समस्या सुलझाई जाएगी? कैसे मंत्री सोचते हैं? इसके बारे में हम कल ध्यान देंगे।

शांतिनाथ भगवान की जय।

11. हर व्यक्ति में स्वयं भगवान बनने की शक्ति है



सिद्ध भक्ति के माध्यम से, वीर शासन जयन्ती से, भगवान महावीर स्वामी की अर्चना-आराधना करते हुए, आप सभी लोग दिन-प्रतिदिन बड़े होते जा रहे हैं। दिन-प्रतिदिन जैसे उम्र से सभी लोग बड़े होते जाते हैं, ऐसे ही ज्ञान से भी सभी लोग बड़े होते जा रहे हैं और हम उन सिद्ध भगवन्तों की भक्ति करते हुए उनकी ओर बढ़ते चले जा रहे हैं। बड़े जा रहे हैं, किस ओर? सिद्ध भगवन्तों की ओर। काव्य नम्बर 4 अभी पूर्ण नहीं हो पाया है। इसी को फिर से पढ़ते हैं और जो अन्त का कुछ भाव छूट रहा है, उसको भी समझने की कोशिश करते हैं।

जानन् पश्यन् समस्तं, सम-मनुपरतं, संप्रतृप्यन् वितन्वन्,
धुन्वन् ध्यान्तं नितान्तं, निचित-मनुसभं, प्रीणयन्नीशभावम्।
कुर्वन् सर्वप्रजानामपरमभिभवन्, ज्योति-रात्मानमात्मा,
आत्मन्येवात्मनाऽसौ, क्षणमुपजनयन्, सत्स्वयंभूः प्रवृत्तः ॥4॥

यह सिद्ध भगवान की भक्ति करते हुए, मध्य में अरिहन्त दशा का वर्णन करते हुए आचार्य पूज्यपाद महाराज कह रहे हैं कि जो अपने केवलज्ञान से समस्त पदार्थों को एक साथ जानते हुए, अपने आप में तृप्त रहते हुए, स्व में ही विस्तार को प्राप्त होते हुए और अज्ञान-अन्धकार को नितान्त हर समय पर दूर रखते हुए, सारी सभा को प्रसन्न रखते हुए, ईश भाव को प्राप्त हो जाते हैं। ईश भाव मतलब ईश, जिसे आप बोलते हैं- ईश्वर, वह ईश्वर भाव को प्राप्त हो जाते हैं।

सिद्ध परम्परा अनादि है परन्तु सिद्ध तो सादि है

ईश हमेशा से रहने वाला कोई व्यक्ति नहीं होता, ईश बना जाता है। जब हमारी मान्यता में यह बात होती है कि ईश हमेशा से है, तो हम कहीं भूल में होते हैं और जब मान्यता में यह बात आती है कि ईश हमेशा नहीं होता, बनता है और बनने के बाद में फिर वह हमेशा बना रहता है। यह जब विचार अपने दिमाग में आ जाता है, तो ईश अनादि भी सिद्ध हो जाता है और सादि भी सिद्ध हो जाता है। **अनादि का अर्थ होता है- जिसका कोई प्रारम्भ न हो।** वह परम्परा तो प्रारम्भ न होने वाली अनादि से होगी लेकिन जब भी कोई ईश बनेगा तो वह ईश कभी न कभी, वह ईश बना हुआ होगा...सादि होगा, अनादि नहीं होगा। इसलिए आपको यह भी स्मरण में रखना पड़ेगा कि जितने भी सिद्ध परमात्मा हैं, हम उन्हें यूँ तो कहेंगे कि अनादि काल से सिद्ध रहते आए हैं लेकिन ध्यान यह रहे कि कोई भी सिद्ध अनादि से नहीं हैं। **सिद्ध जब भी होते हैं तो सादि ही होते हैं।** सादि मतलब आप वाली शादी नहीं, स-आदि जो आदि मतलब प्रारम्भ से सहित हो, **जिसकी Beginning होती है, उसे कहते हैं- सादि और जो Beginningless होता है, उसको कहते हैं- अनादि।** Tradition जो होती है, वह तो अनादि से चलती आती है लेकिन अगर हम Individual किसी व्यक्ति के लिए बात करते हैं तो वह हमेशा उस सिद्धपने की उपलब्धि सादि रूप में ही करता है। **अनादि**

काल से सिद्ध होते हुए भी, जो भी आत्मा सिद्ध बने हैं, वह सिद्ध बने हैं, अनादि से सिद्ध नहीं थे। यह विशेष बात आपको ध्यान में रखते हुए ही, सिद्ध भगवानों की स्थिति समझ में आ सकती है। इसलिए जब हम सिद्धों की बात करते हैं तो बीच में अरिहन्तों की बात भी आ जाती है, तो अरिहन्तों में तो ईशपना घटित किया है और वह ईशपना इस रूप में है कि वह हमारे सामने ईश्वर होकर के प्रकट रहते हैं, सिद्ध प्रकट नहीं होते।

ऐश्वर्यवान ईश्वर कौन?

प्रकट कौन होता है? अरिहन्त प्रकट होते हैं और जो प्रकट होगा, वह हमारे ऊपर उपकार करेगा। जो प्रकट नहीं होगा, वह हमारे ऊपर साक्षात् उपकार करने नहीं आ पाएगा। जो उपकार हमारा अरिहन्तों से हो सकता है, वह हमारा सिद्धों से नहीं हो सकता। इसलिए अरिहन्तों को हम ईश कहते हैं, ईश्वर कहते हैं और ऐश्वर्य के जो धारी होते हैं, उन्हीं को ईश्वर कहा जाता है। ऐश्वर्य किसका दिखाई देगा? अरिहन्तों का दिखाई देगा। **सिद्धों का ऐश्वर्य तो सिद्ध ही अनुभूत करेंगे, कोई उनको देख नहीं पाएगा लेकिन अरिहन्तों के ऐश्वर्य को हम देख सकते हैं। इसलिए हम उन्हें ईश्वर कहेंगे।** जब हम उन अरिहन्तों के ऐश्वर्य को समवशरण आदि के रूप में देखते हैं, लगी हुई सभाओं में बैठे हुए देवता और अनेक मनुष्यों और पशुओं को एक साथ बैठा हुआ देखते हैं, उनके चारों ओर अनेक तरह के प्रातिहार्य लगे हुए देखते हैं, उनके विहार काल में उनके पैरों के नीचे 225 कमलों की रचना एक-एक पग पर चलते हुए देखते हैं तो यह उनका ऐश्वर्य कहलाता है। इसलिए वे ईश्वर कहलाते हैं। **जब भी ईश्वर की बात आती है, आपको अगर ऐश्वर्यवान ईश्वर को देखना है, तो अरिहन्त भगवान को देखना। इसलिए सिद्ध भगवान को हम ईश्वर नहीं कहेंगे।** ईश जो शब्द होता है, वह ईश्वर के रूप में आता है और ईश्वर जो होता है, वह ऐश्वर्य के साथ होता है। ऐश्वर्य अर्थात् वैभव, अतिशय, कुछ ऐसी extraordinary चीजें, जो हमारे mind को कहीं न कहीं click करें, surprised करें कि भाई! क्या यह possible है? उन चीजों को कहते हैं- अतिशय युक्त ऐश्वर्यवान चीजें और वे चीजें होती हैं- अरिहन्त भगवान के पास।

ईश्वर एवं भगवान में अन्तर

हम जब भगवान की बात करेंगे तो भगवान का मतलब होता है- जिन्हें कुछ भी करना न हो। वे भगवान तो हो गए सिद्ध भगवान, जिन्हें कुछ नहीं करना है। **जब भगवान की बात की जाएगी तो सिद्ध भगवानों को कहा जाएगा। लेकिन जब ईश्वर की बात कही जाएगी तो अरिहन्त भगवान को सामने लाया जाएगा।** बहुत कम लोग इस अन्तर को जानते हैं और बहुत कम लोग इस अन्तर को समझ पाते हैं और समझा पाते हैं। आपको समझा रहा हूँ...शान्तिनाथ भगवान का यह अतिशय समझना, जो भी आपको नया-नया समझाने को मिल रहा है। ईश्वर में और भगवान में अन्तर होता है। **ईश्वर वह होता है- जिसका हमें ऐश्वर्य दिखाई दे और भगवान वह होता है- जो सिर्फ अपने निज आनन्द में, चिदानन्द में लीन रहता हो।** वह हमारे लिए न प्रकट होता हो, न हमारे लिए कुछ करता हो। उसका नाम है- भगवान। **अरिहन्त परमात्मा और सिद्ध परमात्मा। परमात्मा दोनों हैं लेकिन सिद्ध भगवान हैं और अरिहन्त ईश्वर हैं।** हम अपनी भक्ति में उन्हें भी भगवान कह देते हैं। कह सकते हैं लेकिन वस्तुतः वह ईश्वर हैं, क्योंकि वह सभा को प्रसन्न

कर रहे हैं। कुछ तो कर रहे हैं, जब तक वे सभा में बैठे हैं, सभा के जीवों के लिए वे आनन्द वर्षा करते रहते हैं। कोई आनन्द यात्रा नहीं कराते हैं लेकिन फिर भी आनन्द वर्षा अपने आप होती रहती है। कुछ भी वह आपसे personally कुछ न बोलेंगे, न कुछ आपकी ओर देखेंगे, न कुछ आपसे पूछेंगे, न आपका कोई परिचय लेंगे, न आपकी किसी भी तरह की समस्या को personally सुनेंगे लेकिन फिर भी आपको प्रसन्न कर देंगे। इसका नाम है- अरिहन्त ईश्वर। समझ पा रहे हो? **यह अरिहन्त भगवान की विशेषता है इसलिए यहाँ पर कहा जा रहा है कि जब वे अरिहन्त बन जाते हैं तो क्या करते हैं? सभा को प्रसन्न कर देते हैं। ईश भाव को प्राप्त हो जाते हैं और वह ईश भाव को प्राप्त करने के लिए कोई पुरुषार्थ उन्होंने नहीं किया कि हम तुम्हारे ईश्वर बनेंगे, इसलिए हम यह तपस्या कर रहे हैं।** हम केवल ज्ञान प्राप्त कर ले तो तुम हमको ईश्वर कहने लग जाओगे, ऐसा सोच कर के वे ईश्वर नहीं बने। यह एक सहज भाव है।

अकर्तृत्व भाव

जो भी केवल ज्ञान को प्राप्त कर लेंगे, वह उस ऐश्वर्य को प्राप्त हो जाएँगे और जो उस ऐश्वर्य को प्राप्त हो जाएँगे, वे उस समय की जनता के लिए वह ईश्वर बन जाएँगे। यह सहज भाव है और इस सहज भाव में, न करने की भावना है, न किसी पर कोई स्वामित्व बनाने की भावना है और न किसी का कोई स्वामी बनने की भावना है। जब हम ईश्वर कहते हैं तो आपके दिमाग में जो ईश्वर आता है, वह ईश्वर हमेशा कर्ता बुद्धि को लिए रहता है। जिसे आप ईश्वर के रूप में जानते हैं, जिसे आप ईश्वर का अवतार कहते हैं, वह हमेशा कोई ना कोई कर्ता बुद्धि के साथ में रहता है। मैंने ईश्वर बनकर के, अवतार लेकर के यह कार्य किया। मैं इस रूप में आया। मैं अपना कर्तव्य करके चला गया। यह सब कार्य, जो आपके दिमाग में ईश्वर के रूप में पड़े रहते हैं, ये ईश्वर के वास्तविक कार्य नहीं होते हैं। ईश्वर का कार्य इतना ही होता है, जो पहले बताया था। क्या बताया था? ध्यान है? जानना-देखना तो अरिहन्तों का भी कार्य है, तो सिद्धों का भी कार्य है लेकिन बाहर से ईश्वर के दो कार्य कल आपको और बताए थे। **सभा में बैठना और विहार करते हुए गमन करना। यह दो कार्य ईश्वर कर सकता है।** जब तक उनका शरीर है, यह दो कार्य वे कर सकते हैं और करते हैं। सभा में बैठ कर के, उपदेश देकर के, सभी जीवों को प्रसन्न करना और जब प्रसन्न हो जाएँ और लोग उनकी ओर देखें और बड़े surprise भावों के साथ में उनकी ओर देखते हुए, बिल्कुल उन्हीं के वातावरण में आनन्द विभोर होकर के मुग्ध हो जाएँ तो समझ लो कि उन्होंने आपके दिल पर अपनी सत्ता बना ली। आपके ऊपर काबिज हो गए और काबिज होने का मतलब ही है- वे आपके ईश्वर बन गए। ईश्वर कोई एक नहीं होता और ईश्वर बनकर के वह कभी हमारे ऊपर हमेशा इस रूप में कभी सत्ता अपनी नहीं बनाए रखता कि देखो! हमने ईश्वर बन कर के तुम्हारे लिए यह कर दिया था, तुमको ऐसा उपदेश दिया था। तुम्हारे लिए हमने इस तरह से संसार बना कर के दिया था। इस तरह के काम कोई भी ईश्वर के नहीं होते।

अरिहन्त भगवान का उपदेश सबके लिए होता है

ईश्वर का काम एक सहज भाव से दिव्य उपदेश प्रदान करना। ईश्वर कभी भी, किसी भी उपदेश को, किसी खास व्यक्ति के लिए नहीं देते। केवल उन्हीं को समझाने के लिए कोई उपदेश दिया जा रहा हो, ऐसा नहीं होता। ईश्वर का उपदेश सबके लिए होता है। **अरिहन्त भगवान का उपदेश सबके लिए होता है।** सभा में

बैठे हुए लोगों के लिए होता है। ईश्वर कभी और रूप में उपदेश नहीं देंगे। आप लड़ने जा रहे हो, युद्ध करने जा रहे हो, उसके बीच में ईश्वर प्रकट हो जाएँ, आपको उपदेश देने लग जाएँ। नहीं, ये ईश्वर का काम नहीं। ईश्वर कभी आपकी सभा में उपस्थित होकर के उपदेश नहीं देंगे। वह ईश्वर अपनी जगह पर बैठेंगे और वहीं पर सभा लग जाएगी और वहीं पर जब आप उनकी सभा में उपस्थित हो जाएँगे तो वह उपदेश देंगे। जहाँ बैठ जाएँगे, वहीं सभा लग जाएगी। ईश्वर को सभा लगानी नहीं पड़ती और वह किसी सभा में प्रवेश करते नहीं। वे जहाँ बैठ जाते हैं, वहीं पर सभा लग जाती है और जहाँ सभा लग जाती है, वहाँ अपने आप सहज भाव से उनका मौन मुखरित होने लग जाता है और उनके दिव्य उपदेश होने लग जाते हैं। सब के लिए होते हैं, एक समान होते हैं।

अरिहन्त भगवान का उपदेश

उनकी सभा में न कोई छोटा होता है, न बड़ा होता है। सबके लिए वे एक साथ उपदेश सुनाते हैं और उस उपदेश से सब लोअपने-अपने ज्ञान के अनुसार, उस उपदेश को ग्रहण कर लेते हैं। यह ईश्वर का काम है और वह उपदेश भी तत्त्व का उपदेश होगा। केवल आपके प्रयोजन से उपदेश नहीं होगा कि आप कहीं लड़ने जा रहे हो तो महाराज! हम जीत जाएँगे कि हार जाएँगे? बता दो। क्या करना पड़ेगा जीतने के लिए? कैसे युद्ध किया जाए? ये सब बातें ईश्वर नहीं किया करते हैं। उन्हें आपकी लड़ाई-झगड़े से कोई प्रयोजन नहीं। उन्हें आपके युद्ध से कोई प्रयोजन नहीं। **उन्हें प्रयोजन है- शान्ति से। आत्म-शान्ति के लिए, आत्म ज्ञान की प्राप्ति करने के लिए उपदेश दिए जाते हैं** और उन्हीं उपदेशों को वह सबके लिए deliver करते हैं, किसी एक व्यक्ति के लिए नहीं। यह उनके उपदेश की, जो प्रमुख बात होती है, उस उपदेश को सुनते ही, उस उपदेश की दशा में बैठे हुए भगवान का ऐश्वर्य देखते ही, लोगों के अन्दर यह लगने लग जाता है कि यही हमारे इष्ट हैं, यही हमारे ईश्वर हैं और यही हमारे इस आत्म-मार्ग पर चलाने के लिए, हमारे मोक्ष-मार्ग के नेता हैं। इसलिए अरिहन्त भगवान को मोक्ष-मार्ग का नेता कहा जाता है।

मोक्ष-मार्ग के नेता

किसका नेता? मोक्ष-मार्ग का नेता। जो मोक्ष-मार्ग का नेता होगा, वह हमेशा शान्त होकर के उपदेश देते हुए सबको मोक्ष मार्ग पर चलने की सीख देगा लेकिन प्रेरित नहीं करेगा कि तुम्हें ऐसा करना है, वैसा करना है। **प्रेरित करने का मतलब?** तुम्हें हाथ पकड़ कर के युद्ध करना नहीं सिखाएगा, तुम्हें हाथ पकड़ कर के केश लोंच करना नहीं सिखाएगा, तुम्हें हाथ पकड़ कर के मोक्ष मार्ग पर लाने के लिए, तुम्हें कहीं जंगल में बिठा कर के तुम्हारे कपड़े नहीं उतरवाएगा। ऐसा कुछ नहीं करेगा, प्रेरित कुछ नहीं करेगा। आप उनको देख कर के जो सीख ले, वह सीख ले। ईश्वर का प्रयोजन सिर्फ इतना ही है कि वह अपनी उपस्थिति मात्र से ही सबको सब कुछ दे देते हैं, सबको सब कुछ सिखा देते हैं। इसलिए वह ईश भाव को प्राप्त हो जाते हैं और ईश भाव को करते हुए, वह क्या करते हैं?

‘कुर्वन् सर्वप्रजानामपरमभिभवन्’

हमारा ईश्वर कैसा?

वह सभी प्रजाओं पर इस ईश भाव को प्राप्त करते हुए, अपनी आत्म-ज्योति से सभी दूसरों को अभिभवन कर देते हैं मतलब दूसरों को उससे अलग कर देते हैं। मतलब उनकी आत्म-ज्योति के आगे, उनके उस स्वभाव के आगे, कोई दूसरा वहाँ पर उनके बराबर का टिक नहीं सकता है। इतनी उनकी आत्म-ज्योति प्रखर रहती है। ऐसी सत्ता नहीं होती उन नेता की, कि वहाँ पर आप कहो कि इस सिंहासन से आप हट जाओ और हम किसी दूसरे नेता को यहाँ बिठालना चाहते हैं, ऐसी वे सीट पर नहीं बैठते हैं। समझ पा रहे हो? उनका जो बैठने का भी अगर भाव है, तो वह किसी सिंहासन पर नहीं बैठे। जहाँ बैठ जाते हैं, उस जगह पर सिंहासन उनके नीचे लगा दिया जाता है। क्या सुन रहे हो? एक सिंहासन लगा हुआ हो और फिर जाकर के ईश्वर उसके ऊपर बैठे, यह तो आपने सुना होगा। यह आपका ईश्वर, किन्हीं दूसरों का ईश्वर हो सकता है, लेकिन हमारा ईश्वर कौन होता है? जो बैठ जाते हैं, फिर उनके नीचे सिंहासन की रचना कर दी जाती है और फिर भी वह सिंहासन से चार अँगुल ऊपर रहते हैं, वे किसी भी तरह के सिंहासन को भी Touch नहीं करते हैं, उनको हम ईश्वर कहते हैं। वे हमारे अरिहन्त भगवान, ईश्वर हैं। ऐसे ईश्वर जब अपनी ज्योति से किसी दूसरे के लिए कुछ भी बुरा न करते हुए और दूसरे का कोई भी अपकार न करते हुए, वह फिर भी दूसरे को अपने बराबर, इस रूप में उनके सामने कोई भी नहीं आ सकता कि उन ईश्वर को हटा कर के कोई दूसरा ईश्वर तत्काल वहाँ पर स्थापित कर दिया जाए। वे जब अपनी उम्र पूर्ण करके चले जाएँगे, उसके बहुत वर्षों के बाद में कोई ऐसा आत्मा उत्पन्न होगा जो फिर से वह ईश्वर के रूप में, तीर्थकर के रूप में सामने आ पाए, उसके लिए बीच में बहुत सारा समय निकल जाएगा।

सामान्य अरिहन्त और तीर्थकर अरिहन्त

इतना जरूर है कि उन तीर्थकर को जिन्हें हम अरिहन्त कह रहे हैं, उनके सामने सामान्य अरिहन्त भी होते हैं और वह सामान्य अरिहन्त, जो सामान्य मुनि महाराज हैं, उन्होंने भी तपस्या की, उन्होंने भी केवल ज्ञान प्राप्त कर लिया और वे भी अरिहन्त बन गए, वे भी हमारे लिए ईश्वर बन गए लेकिन वह तीर्थकर जो ईश्वर-पने के भाव को प्राप्त होंगे, वह भाव उनके पास में नहीं आ पाएगा। यानि ऐश्वर्य जो है, यह एक बाहरी चीजें हैं और भीतर केवल ज्ञान की प्राप्ति हो जाना, अपनी आत्मा के अन्तर्गत ज्ञानादि को प्राप्त कर लेना, यह अन्तरंग चीजें हैं। **अन्तरंग चीजें सबकी समान हो सकती हैं लेकिन बहिरंग चीजें सबकी अलग-अलग होती हैं।** तीर्थकरों के पास में जो बहिरंग विभूति होती है, जो बाहरी दिखने वाला वैभव होता है, जो अष्ट प्रातिहार्य, सभाओं की रचना, ये जो चीजें होती हैं, वह सामान्य अरिहन्तों के पास में नहीं होती हैं। इसलिए वह सामान्य अरिहन्त भी, उन तीर्थकर अरिहन्त की सभा में विराजमान रहते हैं।

तीर्थकर और सामान्य अरिहन्त में अन्तर

सांसद सभी हैं, सदन के अन्दर सांसद सभी हैं लेकिन जो PM होता है, जो नेता होता है, वह सदन के अन्दर रहते हुए भी, उसकी एक अपनी प्रतिष्ठा रहती है, वह अपनी प्रतिष्ठा के साथ में। इसी तरह से तीर्थकर की प्रतिष्ठा अपने आप में अलग होती है। **सामान्य रूप से अरिहन्त कोई भी बन सकता है, लेकिन तीर्थकर-रपने के साथ में अरिहन्त बनना, किन्हीं - किन्ही विशिष्ट व्यक्तियों का काम होता है और इसी के**

कारण से आप देखते हो कि यह जो एक कोड़ा कोड़ी सागर का दीर्घ चतुर्थ काल निकल जाता है उसमें, मात्र गिनती की 24 ऐसी Personality होती हैं जो तीर्थकर के रूप में सामने आती हैं। इतने बड़े दीर्घ काल में, असंख्यात वर्षों के काल में, केवल तीर्थकर कितने हुए? 24 हुए। लेकिन अरिहन्त कितने हुए? अनगिनत हो गए। कोई गिनती नहीं उनकी। समझ पा रहे हो? तीर्थकर कितने हुए? 24 हुए। तीर्थकर होकर के सिद्ध कितने हुए? 24 हुए लेकिन वैसे अरिहन्त, सामान्य बनकर के सिद्ध कितने हो गए? कोई गिनती नहीं उनकी। यह अपने आप में एक बहुत बड़ी चीज है और यही चीज हमें यहाँ बताने के लिए आचार्य कहते हैं कि जब हम अरिहन्त अवस्था में होते हैं, अरिहन्त अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं तो हमारी आत्म-ज्योति इतनी प्रबल होती है कि उस आत्म-ज्योति के माध्यम से, हम अपने अन्तरंग में इतना प्रकाश अनुभव करते हैं कि उसके सामने कोई दूसरा प्रकाश टिक नहीं सकता है। वह ज्योति और उसी ज्योति के साथ में आत्मा, उस समय पर क्या बन जाता है? तो उसी को कहते हैं- स्वयंभू आत्मा। क्या बन जाता है? स्वयंभू आत्मा। नाम सुना है कभी स्वयंभू? जितने भी भगवान होते हैं, वे सभी स्वयंभू होते हैं। **स्वयंभू का मतलब स्वयं-भू मतलब होना, स्वयं होना यानि भगवान स्वयं ही उत्पन्न होते हैं, स्वयं ही अपने अन्दर कुछ उत्पन्न करते हैं, स्वयं ही वो बनते हैं, स्वयं ही होते हैं, कोई किसी को बना नहीं सकता है।** हमारे पिता भगवान थे तो वह अपने बेटे को भगवान बना के चले जाएँ। नहीं! हो सकता है कि पिता के साथ-साथ बेटा भी भगवान बन जाए लेकिन पिता ने बेटे को भगवान नहीं बनाया। भगवान ऋषभदेव थे, उनके बेटे बाहुबली, उनके बेटे भरत, क्या सभी भगवान बने कि नहीं बने?

स्वयंभू बनने की प्रक्रिया

भरत भगवान बने कि नहीं बने? बाहुबली भगवान बने कि नहीं बने? किनके पुत्र थे? भगवान ऋषभ देव के, और ऋषभदेव स्वयं भी भगवान थे। लेकिन उन्होंने किसी को भगवान बनाया नहीं। खुद बने और वह भगवान खुद बना जाता है, उन्हीं को कहते हैं हम- स्वयंभू, जो स्वयं बनते हैं, स्वयं होते हैं। **स्वयं का मतलब यह है कि वह प्रक्रिया अपने में स्वयं घटित करनी पड़ेगी।** वह प्रक्रिया कोई दूसरा आपको बता तो सकता है लेकिन वह आपको बना कर के, खुद आपको उस प्रक्रिया से स्वयंभू नहीं बना सकता है। जैसे हमने आपसे कहा, ध्यान करो। हम आपसे कह तो सकते हैं ध्यान करो लेकिन ध्यान अगर आप करोगे तो कुछ होगा और आप आँख बन्द करके बैठ गए, हमें कुछ करना ही नहीं। कौन देख रहा है? तब कुछ नहीं होगा। हमने आपसे कहा कि जब तक हम न कहें, आँख मत खोलना। अब आप सोच रहे हो कि महाराज हमें कहाँ देख रहे हैं, हम तो पीछे बैठे हैं, हम आँख खोल करके, ऐसे करके, नीचे मुण्डी करके, ऐसे करके देख रहे हैं। सब बैठे भी हैं कि हम ही को केवल बेवकूफ बना के महाराज ने बिठा दिया है, तो लोग देखते रहते हैं...कहीं ऐसा तो नहीं कि हम ही आँख बन्द करके यहाँ बैठे रह गए हो, बाकी सब लोग उठ गए हो तो 10 मिनट भी कभी आँख बन्द नहीं कर पाते। जब हम आपसे कहते हैं तो आप वैसा करोगे तो कुछ पा जाओगे और करने के बावजूद भी अगर भीतर से आप कुछ मक्कारी कर जाओगे तो कुछ नहीं पाओगे। इसे क्या बोलते हैं? आपसे जैसा कहा गया, वैसा आपने नहीं किया मतलब आपने क्या कर ली? इसी को मक्कारी कहते हैं। आप अपने मन के अन्दर अगर यह सोचते चले जाएँ कि हमें जैसा कहा गया है, हमें वैसा करना है और वह करना स्वयं को है और स्वयं को स्वयं में ही प्राप्त करके, वह हमें चीज की उपलब्धि करनी है, तो आचार्य कहते हैं...आप अपने ध्यान के फल को उपलब्ध हो जाओगे। यहाँ देखो क्या कहा जा रहा है?

‘आत्मानमात्मा आत्मन्येवात्मनाऽसौ, क्षणमुपजनयन्, सत्स्वयंभूः प्रवृत्तः’।

क्या मतलब है इसका? यह स्वयंभू बनने की प्रक्रिया है। आत्मा..अपनी आत्मा को ध्याता है। ‘आत्मानम्’ मतलब आत्मा को, ‘आत्मनि’ मतलब आत्मा में, **आत्मना** मतलब आत्मा से, आत्मा, आत्मा को, आत्मा में, आत्मा से, ध्यान करता हुआ, ध्याता हुआ स्वयंभू रूप में प्रवर्त हो जाता है और वह अपने अन्दर स्वयं-भूपने को प्रकट कर लेता है।

धर्म ध्यान के ऊपर शुक्ल ध्यान

कोई कुछ नहीं कर सकता है। स्वयं ही सबको सब कुछ करना पड़ेगा, इसलिए व्यक्ति को आप देखोगे तो व्यक्ति ध्यान भाव में कम आता है। **स्वाध्याय में भी आ जाएगा, ज्ञान भाव में आ जाएगा लेकिन ध्यान भाव में नहीं आ पाता। जानते हो क्यों? अकेला नहीं रहा जाता।** अपने आप कुछ होता नहीं है, महाराज! आप जो बता दोगे, वह हो जाएगा। आप जो करा दोगे, वह कर लेंगे। हमसे अपने आप कुछ होता नहीं है। आप यह ध्यान रखना, आपको हम थोड़ा सा धर्म-ध्यान तो करा सकते हैं लेकिन धर्म-ध्यान के ऊपर भी एक ध्यान होता है, जिसे शुक्ल ध्यान कहते हैं, वह कोई नहीं करा सकता। वह आपको खुद-ब-खुद करना पड़ेगा। यह बात ठीक है...चलो! इस पंचम काल में शुक्ल ध्यान होता नहीं है। सुन रहे हो? छुट्टी मिली। बच गए न अपन? यह जो ध्यान, यहाँ बताया जा रहा है, आत्मा में, आत्मा को, आत्मा से, आत्मा के लिए, आत्मा के द्वारा ध्याने वाला जो ध्यान है, ये actually शुक्ल ध्यान है और इस शुक्ल ध्यान से ही, वह केवलज्ञान प्रकट होता है, वह स्वयंभू आत्मा बन जाता है। ऐसा शुक्ल ध्यान की उपलब्धि कभी भी किसी के guidance से नहीं हो सकती है। बस उसकी भावना हमारे लिए, जरूर किसी की guidance से आ सकती है और वह भावना जब बनेगी तो वह भावना कहलाएगा- धर्म-ध्यान। हम आपको आँख बन्द करके, बिठा सकते हैं, आपसे कह सकते हैं, अपनी आत्मा में आत्मा को ध्याओ, आत्मा में आत्मा की भावना करो। मैं आत्मा हूँ, मैं चैतन्य आत्मा हूँ, चैतन्य स्वरूपोऽहम्, आवाज लगवाते हैं न? ये आवाज लगानी पड़ती है भीतर से, किसको सुनाने के लिए? मुझे सुनाने के लिए? स्वयं ही आवाज लगाओ, स्वयं ही सुनो, अपनी आवाज को हमें खुद सुनना होता है और इस आवाज से जो भावना उत्पन्न होती है, वह धर्म-ध्यान कहलाती है। जो ध्यान दूसरे पर depend हो सकता है, जो दूसरे के through हो सकता है, जो दूसरे के माध्यम से हो सकता है या जिसमें हम दूसरे का किसी न किसी तरह से support लेते हैं, वो सब कुछ धर्म-ध्यान कहलाता है। उससे भी बड़ा एक और Pure Deep Spiritual Meditation होता है, जिसको शुक्ल ध्यान कहते हैं।

शुक्ल ध्यान

वह शुक्ल ध्यान, अभी इस पंचम काल में करने की, किसी भी आत्मा में कोई शक्ति नहीं होती है। उसके लिए शरीर का भी बल चाहिए, शरीर में भी शक्ति चाहिए। टिके रहो, बैठे रहो, किसी भी तरह का कोई भी आपके ऊपर उपद्रव हो जाए, उठो नहीं और शरीर बिल्कुल ऐसा पत्थर की तरह जड़ होकर के बैठा रह जाए कि आत्मा शरीर से अपने आप को बिल्कुल पृथक कर जाए, उसका नाम है- **शुक्ल ध्यान**। नाम तो याद कर ही लो। कौन सा ध्यान? शुक्ल ध्यान। प्रार्थना तो कर ही सकते हैं, हे भगवन! कब हमें शुक्ल ध्यान की

प्राप्ति होगी? अभी हम क्या कर पा रहे हैं? हे भगवन्! अभी तो हम थोड़ा सा धर्म-ध्यान कर पाते हैं। शुक्ल ध्यान कब उपलब्ध होगा? हे प्रभु! **कब मैं सो मुनि बनहु?** कब मैं ऐसा मुनि बनूँगा? कब मैं ऐसा ध्यान करूँगा? कैसा ध्यान?

सुना दूँ थोड़ी चार लाइनें? ...

चार मास इक ठाण ही ठाड़े, चार मास इक ठाण ही ठाड़े।

कौन सी भाषा है यह? इसे ब्रज भाषा कहते हैं। कौन सी भाषा? अपना जहाँ जन्म हुआ है, मथुरा के आसपास की, आगरा के आसपास की ब्रज भाषा है। पुराने विद्वानों की भी यह भाषा रही है और उसी भाषा में आपके लिए चार लाइनें बता रहा हूँ। यह भावना है अपनी, जो हम सोचते हैं। हम मुनि महाराज बनकर के भी, कैसे मुनि महाराज बनना चाहिए था? ऐसे तो नहीं बनना चाहिए था जैसे हम बन गए तो क्या करें? अब जो बन गए, उसको तो छोड़ना नहीं है लेकिन भावना उससे और ऊपर की बना कर के रखना है। इसके लिए नहीं बने कि तुम रोजाना बिल्कुल ठीक 8:30 बजे यहाँ पर आकर के, घेर के बैठ जाओ कि महाराज सुनाओ। ऐसे-ऐसे मुनि महाराज होते हैं, चार महीने बोलते ही नहीं हैं। जब भगवान बनने के बाद में बोलना जरूरी नहीं होता है, सामान्य से अरिहन्त भगवान कितने ही लोग बन जाते हैं, कोई उनकी बातें सुनने वाला भी नहीं होता और सुनाते भी नहीं किसी को। एक मूक केवली होते हैं जो हमेशा मूक ही रहते हैं, बोलते ही नहीं है, तो भगवान बनने के बाद भी बोलना जरूरी नहीं होता है। तीर्थंकरों को बोलना जरूरी हो जाता है और वह भी 66-66 दिन तक मौन धारण कर सकते हैं, भगवान बनने के बाद में तो मुनि महाराज को बोलना कोई जरूरी नहीं होता है। लेकिन क्या करें? व्यवस्था, पंचम काल की ऐसी बन चुकी है कि अगर मुँह न खोला जाए, न बोला जाए तो न आपसे रहा जाए, न मुनि महाराज से रहा जाए। समझ में आ रहा है? किसी न किसी रूप में उपदेश तो देना ही होगा और वह उपदेश जब सबके लिए हो जाता है, सभा के लिए हो जाता है, तो पूरा सभा, पूरी समाज, सब कोई सन्तुष्ट हो जाता है, तो ऐसे सन्तोष के भाव को ध्यान में रख कर के उपदेश तो दे दिया जाता है लेकिन यह भी उपदेश देना, मुनि महाराज के लिए कोई जरूरी नहीं होता है। क्या करते हैं पुराने मुनि महाराज? चतुर्थ काल के मुनि महाराज जानते हो क्या करते थे? **चार मास इक ठाण ही ठाड़े**, एक ही स्थान पर क्या करते रहते थे? खड़े रहते थे, ठाड़े रहते थे।

चार मास इक, ठाण ही ठाड़े,

सहि हों धूप, मेघ औ जाड़े,

सहि हों धूप मेघ औ जाड़े।

जब चार मास खड़े रहेंगे तो सब कुछ सहन करने में आ जाएगा। धूप भी सहन करना पड़ेगी, मेघ भी बरसेंगे, बादल भी बरसेंगे, वह भी सहन करना होगा और जाड़ा पड़ेगा तो वह भी सहन करना पड़ेगा।

चार मास इक, ठाण ही ठाड़े।

बोलो! भावना तो कर ही लो, तुम तो मुनि बनने की भावना कर लो।

सहि हों धूप, मेघ औ जाड़े,

सहि हों धूप, मेघ औ जाड़े।

दया क्षमा सब, जीवन सौं धरी, दया क्षमा सब, जीवन सौं धरी।

क्या करते हैं ठाड़े-ठाड़े? गुस्सा करते हैं? कोई मुझे बुलाने नहीं आया, कोई मेरी पूजन करने नहीं आया, कोई मुझे मनाने नहीं आया, कोई मुझे कुछ निवेदन करने नहीं आया...गुस्सा करते हैं खड़े खड़े? तुम्हारे बारे में सोचते रहते हैं? क्या सोचेंगे तुम्हारे बारे में? दया सब जीवों के प्रति और क्षमा सब जीवों के प्रति। मेरा किसी से कोई भी क्रोध भाव नहीं, बैर भाव नहीं, मेरा किसी के प्रति भी, कोई भी, भीतर से, बाहर से, हिंसा का भाव नहीं। मैं सबके प्रति दया भाव और क्षमा भाव को धारण करके, सब जीवों के हित की इच्छा से ही, मैं प्रवृत्ति को छोड़ कर के एक स्थान पर खड़ा हूँ और अपना आत्म ध्यान कर रहा हूँ।

दया क्षमा सब, जीवन सौं धरी, दया क्षमा सब, जीवन सौं धरी, ध्यान अगनि तें, कर्मनि दाहू, ध्यान अगनि तें, कर्मनि दाहू।

क्या करेंगे? सब जीवों के प्रति दया, क्षमा भाव धारण करके, किसी जीव से कोई प्रयोजन न रखते हुए, न रागात्मक, न द्वेषात्मक, न घृणा, न कोई attachment, न hate, न कोई तरह का राग और फिर भी सब छोड़ करके, **ध्यान अगनि तें कर्मनि दाहू।** प्रयोजन क्या है? ऐसी ध्यान की अग्नि उत्पन्न हो जाए कि सारे कर्म उसमें जल जाएँ और वह ध्यान कौन सा? तो यह वही ध्यान है... **‘ज्योतिः आत्मा आत्मानम् आत्मनि एव आत्मनाऽसौ क्षण उपजनयन्’** क्षण भर में अगर ऐसा ध्यान लग जाए, जो यहाँ बताया जा रहा है। ज्यादा देर नहीं लगती ऐसे ध्यान में और ऐसा ध्यान ज्यादा देर तक लगता भी नहीं है, यह क्षण भर के लिए लगता है बस! और जन्म-जन्म इस क्षण को प्राप्त करने के लिए खपाने पड़ते हैं। कौन सा क्षण? यह क्षण, जो यहाँ बताया जा रहा है। **स्वयंभू होने से पहले, केवल ज्ञान ज्योति प्रकट होने से पहले, उस क्षण की प्राप्ति करने के लिए, जिस क्षण में आत्मा, आत्मा में, आत्मा के द्वारा, आत्मा को ही उपलब्ध कर ले बस और उसे आत्मा के अलावा और उसके लिए कुछ भी वहाँ पर ध्यान में न रहे और ऐसा ध्यान अगर क्षण भर के लिए लग जाता है, तो उसी में सारे कर्म जल जाते हैं और वह आत्मा, अरिहन्त परमात्मा कहलाने लग जाता है।** क्षण भर लगता है बस! स्वयंभू बन जाता है। क्या बनना है? **सिद्ध बनने से पहले हर किसी को क्या बनना है? स्वयंभू बनना होगा। इस जन्म में नहीं बना जाएगा तो क्या बात हो गई? भावना तो की जा सकती है, श्रद्धा तो किया जा सकता है, ज्ञान तो लिया जा सकता है।** प्रक्रिया आगे तक की बताई जा रही है, जन्म जन्मान्तरों की लेकिन उस प्रक्रिया को आज भी जान कर के, उस प्रक्रिया पर विश्वास तो किया जा सकता है। भगवान ऐसे बनते हैं, स्वयं ही बनते हैं, कोई बनाता नहीं है।

Process by Practice

भगवान ऋषभदेव भी स्वयं यही किए और बाहुबली भी खड़े-खड़े एक वर्ष तक क्या किए? यही करने की process में practice करते रहे। क्या करते रहे? **“आत्मानम् आत्मा आत्मनि एव आत्मनाऽसौ क्षण**

उपजनयन्”। बस! उस क्षण को प्रकट करने के लिए practice करते रहे और वह क्षण उन्हें कब उपलब्ध हुआ? इतना बड़ा संहनन वाला, इतना भारी शरीर, जिसके चारों ओर दुनिया सब कुछ सिमट गई, सब सह लिया उन्होंने...धूप, मेघ, जाड़े, पैरों के नीचे वृक्ष तक उग आए बड़े-बड़े, एक साल में कितने बड़े-बड़े पौधे हो जाते हैं, सब उग आए, बेलें भी लिपट गई, शरीर का ही खम्बा बना लिया उन्होंने, पैरों को ही खम्बा बना कर के बेलें तक भी लिपट गए, सब लिपट गई लेकिन वे कहीं भी हिले नहीं, टस से मस नहीं हुए। किस क्षण की प्राप्ति के लिए? यह वह क्षण है जो यहाँ बताया जा रहा है। लग जाए, लग जाए एक महीना, दो महीना, चार महीना, छह महीना। किसी से न कुछ बोलना, न हिलना, न डुलना, न देखना कि कौन आया, कौन गया।

हमें भावना कितनी दृढ़ बनानी पड़ेगी?

सुन रहे हो? क्या करोगे तुम लोग बताओ? जब 5 मिनट अर्ध ध्यान में बिठा दिया जाता है, तो उसमें भी घुटने ऊपर नीचे होते हैं। सोचो, हम क्या प्राप्त करेंगे और उस प्राप्ति करने के लिए हमें कितनी भावना दृढ़ बनानी पड़ेगी? कितना शरीर हमारा हमें स्थिर बनाना पड़ेगा? तब बाहुबली भगवान की जय बोलने का कोई मतलब निकलेगा। ऐसे बाहुबली भगवान की जय, वह जय बोलते ही से एकदम से रोंगटे खड़े हो जाएँ, साहस आ जाए, बल आ जाए। किसका? किसी को मारने का नहीं। ऐसे ध्यान करने की भावना उत्पन्न हो जाए। कोई कुछ भी कर जाए, हमें कुछ नहीं करना पड़े बस! **ध्यान अग्नि ते कर्मनी दहो, बस! ध्यान अग्नि से कर्म को जलाना है और वह अग्नि जलाने के लिए, उस ध्यान की अग्नि को प्राप्त करने के लिए इतना समय लग जाता है और एक क्षण आता है जब, उस क्षण में सब कुछ स्वाहा हो जाता है।** स्वाहा मतलब? जो भीतर आत्मा में लगा हुआ है वह सब कुछ जल जाएगा। आत्मा, आत्मा में ही रगड़ खाते हुए, इतनी आग उत्पन्न कर लेती है कि उसी आग से वह कर्म, सारे के सारे जल जाते हैं। समझ पा रहे हो? आग कहाँ से उत्पन्न होगी? आग लगाने के लिए भी कहीं दूसरी जगह से माचिस नहीं लगाना है आपको। वह आग भी अपने में, अपने को खुद लगानी पड़ेगी। यह जो कहा जा रहा है...**आत्मा आत्मानम् आत्मनी एव**, यह क्या कर रहे हैं? यह रगड़ दे रहे हैं। आत्मा को बार-बार आत्मा से घसीटना। अब अपने को अपने से कैसे घसीटा जाए भाई! यह जितना कठिन काम है, उतना ही कठिन काम है आत्मा का ध्यान करना। जब यह आत्मा का ध्यान होगा, उस समय पर जो आत्मा की अनुभूति होगी, वह आत्मा की अनुभूति, उसको आचार्यों ने भी एक निश्चय सम्यग्दर्शन कहा लेकिन कुछ अनजान लोग, उस सम्यग्दर्शन को अपने गृहस्थ अवस्था में घटित करने के लिए, उसको प्रयास करते रहते हैं लेकिन वह सम्यग्दर्शन कभी भी गृहस्थ अवस्था में नहीं होता है। कहाँ ध्यान है आपका? आग लग रही है कि पानी बरस रहा है? आग लगाना है, पानी तो बरसता रहेगा। अब यँ नहीं कहना कि महाराज! आप जितनी आग लगा रहे, पानी बुझा दे रहा है। वह आग आपको भीतर लगानी है और भीतर ही लगती है, इसलिए ध्यान को बहुत बड़ी अग्नि कहा गया है। ध्यान क्या है? अग्नि है।

ध्यान से लाभ

अब मैं आपको बहुत अच्छी बात बता रहा हूँ...आप यह समझते हो कि, अगर हमें अपना weight loss करना है, किसी-किसी को अपनी calorie loss करनी है, **weight loss** करना है, किसी का मोटापा ज्यादा है, किसी के लिए **diabetes** होती है, इतना भीतर **liver** पर भी जो है, fat चढ़ जाता है कि उसे

loss करने के लिए कोई ताकत नहीं होती है। तरह-तरह की औषधियाँ खाओ, तरह-तरह की exercise करो लेकिन आपको बता दूँ, ध्यान एक ऐसी औषधि है, **ध्यान एक ऐसी अग्नि है, इसके माध्यम से भी सब कुछ, जो extra Fat होता है, वह भी जल जाता है।** यह आपके विश्वास में नहीं आएगा अभी। जो बीमारियाँ, diabetes की बड़ी-बड़ी औषधियों से ठीक नहीं होती हैं, वह diabetes केवल ध्यान से ठीक होती हैं। **Blood Pressure** की जो बीमारियाँ तमाम गोलियाँ खाने से, Injection लगाने से ठीक नहीं होती, blood Pressure की वे बीमारियाँ केवल ध्यान से ठीक होती हैं। ध्यान से हमारी body का metabolism maintain होता है। ध्यान से हमारी **body के अन्दर ऐसे-ऐसे hormone Secrete होते हैं, जिसके माध्यम से हमारी body अपने आप खुद अपनी recovery करने लग जाती है** और यह सब कुछ through meditation होता है। यह विश्वास नहीं आएगा आपको। ध्यान से वह हमारी आत्मा के अन्दर बल उत्पन्न होता है, वह energy, वह power आती है, जो power हमारे अन्दर अपने आप उस रोग को नष्ट करने के काम में आ जाती है और इसलिए आज ध्यान के माध्यम से भी बड़ी-बड़ी बीमारियाँ दूर करने का इलाज बताया जाता है और आप अगर ढंग से ध्यान करने लग जाएँ तो **ध्यान से आप अपने tumor को, cancer को भी dissolve कर सकते हैं।**

अर्ह का visualisation

यह सब कुछ होता है। अग्नि लगेगी तो extra चीजें सब जलेंगी। ध्यान से आप उस समय पर सब कुछ अपने mind में, उस point पर focus करेंगे। किसी भी तरह का, कोई भी गाँठ होगी, कुछ होगा, सब कुछ extra चीजें समाप्त होंगी और ऐसे अनेक case देखने को मिलते हैं। जैसे महिलाओं के अन्दर ज्यादातर होता है, पेट में गाँठ हो जाना, पेट में सूजन पड़ जाना, गर्भाशय के आसपास गाँठें होना, यह महिलाओं की आम problem हैं और ऐसी कई महिलाएँ, जिन्होंने सिर्फ **अर्ह ध्यान** करके, अपना focus, केवल उसी स्थान पर रख कर के और वहीं पर सिर्फ **अर्ह का Visualization** करके और अपने पूरे focus को वहीं पर एकत्रित करके, उन्होंने ऐसा ध्यान किया, ऐसी practice की, तीन-चार महीने के अन्दर उन्होंने अपने शरीर के भीतर की गाँठ, सब समाप्त कर ली। यह होता है।

The best Yoga is the meditation

आपको लगता है कि Yoga करने का मतलब बस! हाथ पैर घुमाना है। आपको लगता है, yoga करने का मतलब पसीना निकालना है, exercise करना है लेकिन The best yoga is the meditation. यह meditation के through, जो हमें उपलब्धियाँ होती हैं...जैसे मान लो, आपको यह एक half सीसी की problem होती है, जो mind में आधा दर्द होता है। क्या बोलते हैं इसको? migraine. क्या इलाज है इसका? इसका इलाज सिर्फ है, दिमाग को ताकत पहुँचाना और दिमाग में ताकत पहुँचेगी तो आपको meditation के through पहुँचेगी। यह ताकतें दिमाग के अन्दर आना, शरीर के अन्दर आना, यह ध्यान से होता है और अगर आपके अन्दर इस तरह की एक Interest आने लग जाता है तो आप यह सब चीजें अपने आप से, खुद कर सकते हो। लेकिन जब आपसे yoga कहा जाता है, तो आप exercise तो आधा घण्टे कर सकते हो लेकिन ध्यान कभी आप बैठ कर के आधा घण्टे करने का मन नहीं बना सकते। ध्यान में वह अमृत टपकता है, वह अपनी body के अन्दर, अपने ही brain के माध्यम से, वह अमृत

टपकता है, जो अमृत आपको दुनिया के किसी injection से inject करके नहीं दिया जा सकता। वह दुनिया में कहीं उपलब्ध नहीं होता। वह सिर्फ आपको आपके माध्यम से मिलेगा। **‘आत्मानम् आत्मनी एव’** शरीर के अन्दर आप खुद generate करेंगे उस अमृत को और कोई दूसरा नहीं कर सकता है। उसकी खोज करने के लिए विज्ञान चाहे कितना ही प्रयास कर ले, वह किसी injection के through आपको नहीं दे सकता है।

अमृत ध्यान से मिलता है

ऐसा अमृत किससे मिलता है? ध्यान से मिलता है, इसलिए **ध्यान को अग्नि भी कहा गया है और ध्यान को अमृत भी कहा गया है।** यह अमृत का पान करते हुए एक-एक वर्ष बीत जाता है, खेद-खिन्न नहीं होते हैं, बाहुबली की तरह खड़े रहते हैं और स्वयं में स्वयं को प्रकट करके, वह स्वयंभू बन जाते हैं। जब बन गए तो फिर आत्मा के अन्दर, वह केवलज्ञान ज्योति प्रकट हो गई। उसके बाद में फिर उन्हें इन चीजों से कोई प्रयोजन नहीं रहता कि कोई हमें ईश्वर मान रहा है या नहीं मान रहा है। पहले तो अपनी ही आत्म-सत्ता का ईश्वर खुद बना जाता है। अगर पुण्य रहता है बाहरी तो वह दूसरे लोग भी आपको ईश्वर के रूप में मान लेंगे, जान लेंगे। नहीं भी मानेंगे तो आपकी feeling में उससे कोई अन्तर नहीं आएगा क्योंकि आप दुनिया से बहुत ऊपर उठ चुके हैं। जैसे चंद्रयान-3 satellite, दुनिया से बहुत ऊपर चला गया है, ऐसे ही आप ऊपर चले जाते हैं। फिर आपको नीचे होने वाली घटनाओं से कोई फर्क नहीं पड़ता है। हम कहाँ बैठे हैं? कौन हमें याद कर रहा है? कौन हमारी पूजा कर रहा है? कौन हमारा स्मरण कर रहा है? कौन हमसे विनती कर रहा है? इन सब बातों को जो जानता है, वह कभी भी भगवान होता ही नहीं है। या यूँ कहें कि जो जानते हुए भी, किसी के लिए कोई अपना intention या inclination of mind उधर नहीं करता है, तो वह भगवान होता है और जो यह जान ले कि यह हमसे प्रार्थना कर रहा है, यह हमारी विनती कर रहा है, अब तो बहुत हो गया है, इसकी विनती सुन लेनी चाहिए तो वह भगवान कभी हो ही नहीं सकता। सुन रहे हो? ऐसे भगवान को विनती सुनाना, जो अपनी विनती सुने ही न। क्या मतलब? नहीं समझ में आया? इसीलिए तो दुनिया ऐसे भगवान को बहुत जल्दी समझ नहीं पाती है। दुनिया ऐसे भगवान को बहुत जल्दी मान भी नहीं पाती है। दुनिया को तो क्या चाहिए? हमारी विनती सुनोगे तो हम विनती करेंगे तो हम तुम्हारे दर पर आएँगे और नहीं सुनोगे तो हम क्यों आएँगे? और यहाँ क्या कह रहे हैं? जो आपकी विनती सुन ले, वह भगवान होता ही नहीं। सुन कर के आपका कुछ कर दे, वह तो और भगवान से, भगवत् सत्ता से दूर हो गया और भगवानपने से दूर हो गया। अतः भगवान कैसा होना चाहिए? ऐसा भगवान, बहुत कम लोगों का भगवान, भगवान बनता है। ऐसा भगवान बहुत कम लोगों की समझ में आता है। लेकिन जो लोग ऐसे भगवान पर विश्वास कर लेते हैं, उन्हें भी भगवान बनने में ज्यादा फिर देर नहीं लगती है, यह बात भी उतनी पक्की है।

श्रेणिक का राज्य छोड़ कर जाना



समय लगता है, परीक्षा करने में समय लग सकता है आपको और जब परीक्षा हो जाती है, तो फिर उसके बाद में judgement लेने में समय नहीं लगता। **उपश्रेणिक ने परीक्षा ले ली। ले ली कि नहीं? कितनी?** एक ले ली, दो ले ली, तीन ले लीं, चार ले ली, पाँच ले ली। किसके लिए? अपने आप में यह Judgement लेने के लिए, who will be the king of my state? कौन मेरे इस राज्य का राजा होगा? श्रेणिक या और कोई, चिलाती

या और कोई, लेकिन पाँचों ही परीक्षाओं में first class first आने वाला कौन था? श्रेणिक था लेकिन उस श्रेणिक की first class merit में आने के कारण से ही, उपश्रेणिक की चिन्ता और बढ़ गई और वह चिन्ता व्यक्त की दो मंत्रियों के लिए। मंत्रियों ने अपने राजा की चिन्ता को दूर करने के लिए फिर उपाय सोचा और जब उपाय सोचा तो उन मंत्रियों ने कहा...हमें राजा से कुछ नहीं कहना लेकिन एक अच्छा मंत्री होने के नाते, मुझे राजा की चिन्ता को दूर कर देना है और राजा की चिन्ता क्या है? काँटा क्या है राजा के सामने? अपना ही बेटा है। अपना ही बेटा! अपने लिए काँटा बन गया। अपना ही बेटा! अपने लिए चिन्ता का कारण बन गया और उस बेटे को अपने सामने से कैसे अलग किया जाए? कैसे हटाया जाए? आजकल के लोगों की तरह लोग नहीं हुआ करते थे कि भाई! किसी को अपने सामने से हटाने के लिए, किसी को भी सुपारी दो और कुछ भी काम करा लो। नहीं समझे? इस तरीके से काँटे हटाने से कभी काँटे नहीं हटते।

मंत्री की बुद्धिमत्ता

बुद्धिमान लोग हमेशा बुद्धि से काम करते हैं। मंत्री ने कहा- कोई बात नहीं राजन! आपकी चिन्ता को हम लोग दूर करेंगे और मंत्री ने बड़ी सोची समझी एक तरकीब के माध्यम से, राजा श्रेणिक के पास पहुँच कर के कहा...देखो राजन! **आपको मैं एक भीतर की बात बताता हूँ। मंत्री होने के नाते,** मैं राजा के अभिप्राय को समझ रहा हूँ। राजा इस समय पर आपके पिता होते हुए भी, आपसे बहुत क्रोधित हैं। आप पर बहुत गुस्सा है और यह बात, मैं सिर्फ आपसे कह रहा हूँ। आप किसी से कहना नहीं और क्रोध होने का क्या कारण है? अगर यह पूछना चाहो तो मैं आपको बताए दे रहा हूँ। जब उन्होंने आपको भोजन के लिए बुलाया था और सब लोग भाग गए थे लेकिन आप फिर भी भोजन करते रहे, उन कुत्तों के द्वारा छुआ हुआ भी आपने भोजन कर लिया। इस बात को लेकर के राजा बहुत गुस्से में हैं। क्या करें? आपके लिए भलाई की बात, मैं यह कह रहा हूँ, जब किसी को गुस्सा ज्यादा होता है, उस समय पर उसके सामने न रहो। मैं आपसे एक निवेदन कर रहा हूँ, कुछ समय के लिए चुपचाप यहाँ से चले जाओ, इससे पहले कि राजा आपसे कुछ कहे। राजा आपसे क्रोधित होकर के कुछ आपको, कुछ देश निकाला दे या वह आपका अपमान करे, वह आपको सहन नहीं होगा और गुस्से में राजा कुछ भी कर सकते हैं। मैं एक मंत्री होने के नाते, यह बात आपसे कह रहा हूँ। आपके हित की बात कह रहा हूँ। मुझे मालूम है कि आप बहुत ही होशियार हैं। आपका पुण्य तीव्र है। आपको कहीं जाने पर कुछ भी फर्क नहीं पड़ेगा लेकिन इस समय पर राजन अभी आपसे बहुत गुस्से में हैं। आपकी भलाई का एक ही काम है, आप यहाँ से अभी निकल जाओ, इस राज्य को अभी छोड़ दो, कहीं दूर दर्रा निकल कर के जब आप चले जाओगे तो राजा का गुस्सा अपने आप शान्त हो जाएगा। तब हम आपको बुला लेंगे।

समझदार लोगों के काम

राजा श्रेणिक ने अपने मन में विचार किया...बताओ मेरा, क्या मैंने बुरा किया? क्या मेरी गलती हो गई? मेरे कौन सा ऐसा मेरे से अपराध हो गया जो राजा मुझसे गुस्सा हो गया। अब गुस्से की स्थिति में हम अपने राजा को अपनी सफाई देने जाएँ तो वह भी उचित नहीं है। **समझदार व्यक्ति के लिए हमेशा यह समझना,** घर में भी यह बात ध्यान में रखना। अगर कोई व्यक्ति गुस्से में है और उस समय पर आप उसे समझाने जाओ तो यह गलती मत करना कभी और ज्यादातर घर में लड़ाइयाँ इसलिए होती हैं। जब व्यक्ति गुस्से में होता है, तभी हम उससे कुछ न कुछ कहने जाते हैं, समझाने जाते हैं। जब तक वह व्यक्ति का anger व

temper down न हो जाए तब तक उससे कोई बात ही न करना। शान्त रहना और जब वह शान्त भाव में आ जाए तब कोई अपनी बात करना। यह समझदार लोगों का काम है।

घर में कलह से बचने का उपाय

गुस्से को बढ़ाने का एक ही कारण है कि गुस्से में आदमी से वही बात कहना, जिस बात के लिए उसे गुस्सा हो रहा है। अक्सर पति-पत्नियों के बीच में कलह का, यह बहुत बड़ा कारण यह नासमझी होती है। जब पत्नी भी नहीं समझ पाती कि पति किस mood में है या पति नहीं समझ पाता कि पत्नी किस mood में है। वह अगर गुस्से के mood में है, तो उस समय पर उसका गुस्सा ठण्डा करने के लिए, वह बात नहीं दोहराना, जो बात तुम्हें पता है कि किस कारण से गुस्से में है? तुम वही बात कहते हो। देखो! ऐसा नहीं था। उस समय सफाई देने की कोई जरूरत नहीं है। **गुस्सा ठण्डा होने दो और ठण्डा होने के लिए क्या है?** किसी पानी में, बरसात में खड़े होने की जरूरत नहीं है। बस! आप एक दो दिन थोड़ा सा शान्त हो जाओ, कुछ मत बोलो। शान्त होकर के जब देख लो कि हाँ! यह शान्त होकर के मेरी बात को सुनने वाला है, तो सुनाओ और अगर गुस्सा ज्यादा है, तो सिर्फ उसको देखो, बोलो नहीं।

राजा श्रेणिक का निर्णय

राजा श्रेणिक ने अपने पिता के इस तरह के गुस्से को समझ करके, उन्होंने यही उचित समझा कि अगर मंत्री हमें सलाह दे रहे हैं तो यह हमारे राज्य के बहुत बड़े हितकारी मंत्री हैं। यह हमसे कभी भी गलत सलाह नहीं देंगे और इसी कारण से राजा श्रेणिक ने यह निर्णय ले लिया। ठीक है! मैं राज्य छोड़ कर के जाता हूँ और राजा श्रेणिक, जो अपने उनकी सुरक्षा में भी हजारों और सिपाही लगे हुए थे, उन सबके बीच में से भी वह निकल गए और उस समय पर न उन्होंने अपनी माता को कुछ बताया और न अपने पिता से कुछ मिले और चुपचाप से वहाँ से वह निकल गए। मंत्रियों की बात का इतना विश्वास राज घरानों में हुआ करता था। राजा श्रेणिक वहाँ से निकल गए और इधर जब राजा श्रेणिक वहाँ नहीं रहे, राजमहल में नहीं मिले दूसरे दिन तो माँ को जब से यह बात सुनाई पड़ी तो माँ तो बहुत अधीर हो गई। मेरा बेटा कहाँ गया? बेटा क्यों नहीं मिल रहा है? माँ तो विलाप करने लगी। वह तो चिल्लाने लगी, रोने लगी लेकिन राजा उपश्रेणिक के लिए राहत मिल गई। अब वे सोच रहे हैं कि हमारे सामने जो चिन्ता का कारण था, वह चला गया। अच्छा हुआ और उन्हें उससे राहत मिल रही है। इधर राजा श्रेणिक अपने स्थान को छोड़ कर के निकले और निकलते-निकलते वह एक नन्दी ग्राम में पहुँचते हैं और वहाँ पर पहुँच कर के उनके साथ क्या घटित होता है? यह तो बात आपको आगे बताई जाएगी।

अभी तो आपको यह ध्यान में रखना है कि राजा श्रेणिक ने क्या निर्णय लिया? जो मंत्रियों ने कहा। वह निर्णय लेकर के अपने पुण्य के सहारे जीने वाले चतुर लोग किसी भी तरह के निर्णय में अपने आप को खेद-खिन्न नहीं करते और इस तरह के साहसी लोगों के क्या परिणाम आगे निकलते हैं? यह आपको आगे समझ में आएगा। अभी तो आपको इतना ही ध्यान में रखना है कि हम जिन भगवान की आराधना कर रहे हैं, वह भगवान स्वयंभू किस तरह के होते हैं? और उन स्वयंभू भगवान के मार्ग पर चलना कितना कठिन होता है? यह भी आपको आगे की story में समझ में आएगा।

12. सिद्ध भगवान में प्रकट अष्टगुण

वीर शासन जयन्ती के उपरान्त से भगवान सिद्ध परमात्माओं की भक्ति करने का, उनके विषय में जानने का यह उपक्रम निरन्तर चल रहा है और इसी क्रम में आचार्य पूज्यपाद विरचित इस सिद्ध भक्ति के पाँचवे काव्य को यहाँ पढ़ने का समय आ गया है-

**छिन्दन् शेषान्शेषान्, निगल-बल-कलींस्तै-रनन्त-स्वभावैः,
सूक्ष्मत्वाग्यावगाहा, गुरु-लघुक-गुणैः, क्षायिकैः शोभमानः।
अन्यैश्चान्य-व्यपोह-, प्रवण-विषय-सम्प्राप्ति-लब्धि-प्रभावै-
रुर्ध्वं व्रज्या स्वभावात्, समय-मुपगतो धाम्नि सन्तिष्ठतेऽग्रये।। 5।।**



आचार्य कहते हैं... 'छिन्दन् शेषान् अशेषान् निगल बल कलींस्' अरिहन्त बनने के बाद भी बहुत काम बाकी रह जाता है। ज्यादातर लोग सोचते हैं कि जब अरिहन्त दशा प्राप्त होती है, तो उसके बाद में फिर कुछ करना नहीं रहता, वह अपने आप सिद्ध बन जाते हैं। यह सभी पढ़े-लिखे लोगों की प्रायः धारणा रहती है। लेकिन यहाँ आचार्य कहते हैं... अभी भी उन्हें बहुत काम करना है। अरिहन्त दशा प्राप्त होने के बाद में यह सत्य है कि उन्हें अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन आदि की प्राप्ति हो गई, अनन्त शक्ति भी आ गई और उनके अन्दर मोहनीय कर्म के अभाव से एक सम्यक्त्व का परिणाम भी उत्पन्न हो गया। यही उनके लिए एक सुख का भाव होता है और इसी सुख के साथ में, इसी को एक अनन्त चतुष्टय के रूप में कहा जाता है। आप लोग पूजा में अक्सर पढ़ा करते हैं... 'अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज। मुक्ति वधू के कन्त तुम, तीन भुवन के राज।।' आप अनन्त चतुष्टय के धनी बन गए, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख, अनन्त दर्शन और अनन्त शक्ति, यह भगवान के अन्दर, अरिहन्त परमात्मा में या हम कहें उन अरिहन्त ईश्वर के अन्दर यह अनन्त शक्तियाँ माननी होती हैं और वह उनके अन्दर प्रकट हो जाती हैं। इन शक्तियों के प्रकट हो जाने के उपरान्त भी उन्हें अभी कुछ और भी करना शेष होता है। कर्मों की स्थितियों को जब हम देखते हैं, तो आचार्य कहते हैं कि आठ कर्मों में अभी अरिहन्त भगवान ने केवल चार कर्मों का विनाश किया है और जो चार कर्म हैं अभी उन्हें, विनष्ट करना शेष है। उसका नाश करने के लिए भी उन्हें पुरुषार्थ करना अभी बाकी है।

पुरुषार्थ से ध्यान, मोक्षमार्ग, केवल ज्ञान की प्राप्ति और कर्म नाश

यह ध्यान रखना मोक्ष मार्ग में कोई भी कार्य बिना पुरुषार्थ के नहीं होता है। यहाँ तक कि मुनि महाराज बनने के बाद भी केवलज्ञान प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है। ध्यान का भाव भी आता है ध्यान भी लगता है, तो ध्यान बिना पुरुषार्थ के नहीं लगता है। ध्यान करने के लिए भी पुरुषार्थ करना पड़ता है। ध्यान अपने आप सहजता में लग जाए, अपने भाग्य से लग जाए, ऐसा नहीं होता है। **ध्यान करने का भी एक पुरुषार्थ होता है।** केवलज्ञान प्राप्त हो गया तो केवलज्ञान प्राप्त करने के उपरान्त भी पुरुषार्थ जारी रहता है।

चार कर्मों के नष्ट होने के उपरान्त अभी भी चार कर्म विद्यमान रहते हैं जिन्हें हम अघाति कर्म कहते हैं। घाति कर्मों के नष्ट होने पर अरिहन्त बन जाते हैं और वह अनन्त शक्तियाँ उन आत्मा में उत्पन्न हो जाती हैं लेकिन अघाति कर्मों का अभी सद्भाव रहता है। **ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावरण कर्म, मोहनीय कर्म और अन्तराय कर्म यह चार घाति कर्म हैं।** इनका विनाश हो गया और इनके विनाश से चार अनन्त चतुष्टय प्राप्त हो गए। लेकिन अभी चार अघाति कर्म शेष हैं और उसका नाश करने के लिए भी अभी पुरुषार्थ बाकी है।

धर्म ध्यान से मोह का घात और शुक्ल ध्यान से केवलज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति

धर्म ध्यान से कुछ ज्यादा काम नहीं होता। काम होता है- शुक्ल ध्यान से। कहें अगर कि धर्म ध्यान से क्या होता है? तो आप कह सकते हो, **धर्म ध्यान से एक भूमिका बन जाती है केवलज्ञान प्राप्त करने की,** शुक्ल-ध्यान प्राप्त करने की और वह धर्म ध्यान हमारे लिए आगे बढ़ाने में काम आता है। क्योंकि इन सभी कर्मों में जो चार घाति कर्म हैं और चार अघाति कर्म हैं उन आठों ही प्रकार के कर्मों में सबसे पहले घात होता है, तो चार घाति कर्मों का ही होता है। उन चार कर्मों में भी अगर सबसे पहले घात होता है, तो मोहनीय कर्म का होता है। **अच्छी बात यह है कि धर्म ध्यान से मोह का घात सम्भव है।** धर्म ध्यान से हम मोह का शमन कर सकते हैं। धर्म ध्यान से हम मोह के उदय से अपने आप को बचा सकते हैं। यह धर्म ध्यान से इतना किया जा सकता है। केवलज्ञान प्राप्त होगा, वह शुक्ल ध्यान से प्राप्त होगा। मोक्ष प्राप्त होगा, वह भी शुक्ल ध्यान से प्राप्त होगा। लेकिन धर्म ध्यान से क्या होता है? केवलज्ञान प्राप्त करने के लिए जो शुक्ल ध्यान करना है उसकी भूमिका बन जाती है और वह भूमिका बनती है- मोह का शमन होने पर, मोह में कमी आने पर। मोह का क्षय भी हो जाता है, तो वह भी धर्म ध्यान से सम्भव होता है। इसलिए आचार्य कहते हैं...सबसे पहले अगर पुरुषार्थ करना पड़ता है, तो मोहनीय कर्म को नष्ट करने के लिए करना होता है।

मोहनीय के घात से ही सभी कर्मों का बल क्षीण होता है

आठ कर्मों में से कौन से कर्म पर पहले घात किया जाए? किस पर करोगे? चार आपके सामने **घातिया कर्म** बता दिए,

- एक ज्ञानावरणी कर्म है
- एक दर्शनावरण है
- एक मोहनीय है
- एक अन्तराय है।

चार **अघाति कर्म** हैं-

- एक वेदनीय है
- एक आयु कर्म है
- एक नाम कर्म है और
- एक गोत्र कर्म है।

यह चार अघाति कर्म हैं।

चार घाति कर्मों में भी सबसे पहले हम ज्ञान पर कोई घात कर ले, सम्भव नहीं है। दर्शनावरणी कर्म का घात करके हम पहले अनन्त दर्शन को प्राप्त कर ले, सम्भव नहीं है। अन्तराय कर्म का भी घात कर ले, सम्भव नहीं है। सम्भव क्या है? पहले मोहनीय पर घात करो। **मोहनीय के घात से ही सभी कर्मों के बल में कमी आएगी।** सबसे ज्यादा जो हर कर्म को बल दिया जा रहा है, वह बल कौन दे रहा है? यह मोहनीय जो है आठों कर्मों की सेना का मुखिया है, सेनापति है। यह इस मोहनीय कर्म के माध्यम से ही ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध होता है...ज्ञानावरण कर्मों का, दर्शनावरणीय का, अन्तराय का, जन्म-जन्मान्तरों के लिए आयु आदि का, सब यही मुखिया काम कराता है।

चारों अघाति कर्म शरीर से जुड़े हुए हैं

जो अन्य अघाति कर्म हैं, वह तो केवल देखा जाए तो हमारे शरीर से ही ज्यादा जुड़े हुए हैं। जैसे आयु कर्म है, हमारे शरीर से जुड़ा है। नाम कर्म है, हमारे शरीर से जुड़ा है। वेदनीय कर्म है, वह सुख-दुख की वेदना भी, हमें शरीर के माध्यम से, इन्द्रियों के माध्यम से होती है और क्या बचा? गोत्र कर्म है, वह भी शरीर के ही जन्म के साथ होता है। भाई! उच्च गोत्र में जन्म लिया कि नीच गोत्र में जन्म लिया। **यह चार कर्मों के फल तो हमारे लिए हर जन्म में बदल जाते हैं।** आयु अलग मिल जाएगी। नाम कर्म से शरीर की रचना अलग हो जाएगी। गोत्र कर्म से उच्च कुल, नीच कुल मिल जाएगा। वेदनीय कर्म से सुख-दुःख बदलते रहेंगे।

शास्त्र पढ़ने का प्रयोजन क्या है?

सब बदलते रहते हैं लेकिन ज्ञानावरणीय कर्म, दर्शनावरणीय कर्म का ऐसा प्रभाव आत्मा के ऊपर रहता है कि अनन्त काल में कभी भी यह आत्मा केवल ज्ञानावरण, केवल दर्शनावरण, इन कर्मों पर कुछ भी वार नहीं कर पाई। यह आत्मा इन कर्मों की शक्ति को कम नहीं कर पाई। सुन रहे हो कि नहीं? इन सब कर्मों का ब्योरा लेने के बाद में, इनकी जाँच करने के बाद भी, सबसे पहले अगर हमें कोई भी पुरुषार्थ करना है- जब आप पुरुषार्थ की बात करते हैं तो किस कर्म के लिए पुरुषार्थ करें? यह सीखना है, यह जानना है। महाराज! पुरुषार्थ करें, अच्छा पुरुषार्थ कर सकें, कोई उपाय बताइए? कैसा पुरुषार्थ करें? आप खुद निर्णय कर लो। आठ कर्म हैं और इन आठ कर्मों की सत्ता आत्मा से लगी हुई है और इन आठ कर्मों का घात आपको करने के लिए सबसे पहले पुरुषार्थ करना है। पुरुषार्थ किस कर्म का घात करने के लिए करना है? आप कहोगे, हमारे पास में ज्ञान नहीं है महाराज! आगे बढ़ने के लिए, मोक्ष मार्ग पर चलने के लिए, यही बहाना बनाओगे न! आप कहोगे महाराज! हमारे पास में शक्ति नहीं है, आगे कुछ व्रत आदि, संकल्प आदि लेने के लिए, तो आचार्य कहते हैं- तुम यह सब बहाने बनाना बंद करो। **ज्ञान नहीं है, बिना ज्ञान के काम चल जाएगा। समझ में नहीं आता है, कम आता है उससे भी काम चल जाएगा। शक्ति नहीं है, तो उससे भी काम चल जाएगा।** काम तुम्हें क्या करना है? जो करना है वह तो करते नहीं हो, इधर-उधर की बातें ज्यादा करते हो।

हर आदमी शास्त्रों को पढ़ने के बाद भी, शास्त्रों से ऐसी चीजें सीख लेता है जिससे वह अपने आप को बचा सके। इतना समझदार हो गया, आज का पढ़ा-लिखा स्वाध्यायी व्यक्ति। आज शास्त्र पढ़ने का प्रयोजन,

वह उसके लिए क्या है? अपने आप को बचा के रखा जाए। किससे? जिस पर प्रहार करना है उस पर प्रहार न हो जाए। शास्त्र स्वाध्याय का वर्तमान का जो फल है, वह मैं आपको बता रहा हूँ। प्रहार करना चाहिए मोहनीय कर्म पर तो मोहनीय पर प्रहार न हो जाए, अन्य कर्मों पर पहले प्रहार करने की सोचता है। महाराज! ऐसा आशीर्वाद दे दो, हमारा ज्ञान बढ़ जाए, हम भी आपकी तरह सब शास्त्रों को पढ़ने लग जाएँ, पढ़ाने लग जाएँ, हमारा क्षयोपशम बढ़ जाए। ऐसा आशीर्वाद दे दो कि हम बहुत व्रत-संकल्प करके बहुत बड़े-बड़े तप करने लग जाएँ। यह सोचने लग जाता है और अगर ज्ञान नहीं है, तो महाराज! हमारे पास ज्ञान नहीं है इसलिए हम मोक्ष मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सकते। शक्ति नहीं है इसलिए हम कोई व्रत-तप कर नहीं सकते। बात खत्म! सब उसने पढ़ लिया और सब पढ़ने के बाद में उसने शास्त्रों से ही एक अच्छा बहाना ढूँढ लिया।

शास्त्र स्वाध्याय से अपने स्वार्थ हेतु अर्थ का अनर्थ करना

अब वह शास्त्रों की भाषा में ही बात करता है। महाराज! कैसे ज्ञानावरणीय कर्मों का उदय है? चाहते हुए भी कुछ याद नहीं रहता है। सीखना चाहते हैं, समझना चाहते हैं बुद्धि में कुछ जाता नहीं है। सुनते-सुनते भी नींद आ जाती है इसलिए कुछ भी अच्छा करने की सोचो, कुछ नहीं हो पाता है। यह सीख लिया उसने, किससे? ज्ञानावरणीय कर्मों का हमारे लिए तीव्र उदय चल रहा है महाराज! फिर एक और थोड़ा सा पढ़ लेता है, तो फिर कहेगा महाराज! चारित्र आवरण कर्मों का ऐसा, चारित्र मोहनीय कर्मों का ऐसा तीव्र उदय चल रहा है, महाराज! **कोई चारित्र नहीं ले पाते। चारित्र कैसे ले?** आप तो जानते हो महाराज! बिना कर्म के उदय के नष्ट हुए, कभी भी चारित्र ग्रहण नहीं हो सकता। हमारे लिए तो चारित्र मोहनीय कर्म का तीव्र उदय है। अब यह दो चीजें, उसके सामने कहाँ से आ गई? यह शास्त्र स्वाध्याय से आ गई, पढ़ने से आ गई। अब पढ़ने के बाद में वह यह बातें किसको कहता है? मुनि महाराज को कहता है, साधु-सन्तों को कहता है। बड़े-बड़े आचार्यों के पास भी जाकर के निवेदन कर आता है, महाराज! जब चारित्र मोहनीय कर्म का क्षयोपशम होगा, चारित्र ले लेंगे। अभी हो नहीं रहा है। होगा कैसे? आचार्यों ने जो कहा है वह तो उसने सुना ही नहीं और अपने मतलब की चीजें शास्त्रों में से पढ़कर के गुरुओं को सुना आता है और अपने आप को बचा लेता है। यह स्वाध्याय का फल है।

मोह की शक्ति क्षीण होने पर ज्ञान और चारित्र की वृद्धि

आचार्य कहते हैं...आपके लिए यह नहीं सोचना है कि हमारे पास में ज्ञान ज्यादा है कि कम है। यह भी नहीं सोचना है कि हम व्रत संकल्प लेने की शक्ति रखते हैं कि नहीं रखते हैं। सबसे पहला काम, सबसे पहला पुरुषार्थ करना है, तो वह क्या? मोहनीय कर्म की शक्ति को कम करो। **मोहनीय कर्म की शक्ति कम होगी, अपने आप तुम्हारा ज्ञान बढ़ेगा। मोह कर्म की शक्ति कम होगी, अपने आप चारित्र की वृद्धि होगी।** मोह कम करो। इसलिए सबसे पहले कभी बच्चों के लिए पढ़ाया जाता था, आगे बढ़ाया जाता था तो उन्हें मोह को दूर करने के लिए सबसे पहले उन्हें घर से दूर रखा जाता था, गुरुओं के पास रखा जाता था। पहले के लोग अपने बच्चों को, गुरुओं के पास पहुँचा देते थे। महाराज! आपके पास में मेरा बेटा है, आप इसको दस साल तक आराम से पढ़ाओ। दस साल के बाद में जैसा जिसका मन होगा, हम देख लेंगे। अगर आपकी

लाइन पर चलने का मन होगा, तो आप रख लेना और हमारी लाइन पर चलने का मन हो, तो हम घर पर ले जाएँगे। पहले यह पद्धति हुआ करती थी।

घर त्याग कर गुरुकुल में विद्या अध्ययन की पद्धति

दस साल तक, बारह साल तक मुनि महाराज के पास में रखना-रहना, उन्हीं के निर्देशन में उसको पढ़ना-पढ़ाना, यह काम पहले हुआ करता था। इससे बच्चों के अन्दर अपने आप एक बहुत बड़ा मोह कम हो जाता था। किसका मोह? घर का मोह, मम्मी का मोह, पापा का मोह, व्यापार का मोह, चाचा-ताई-ताऊ का मोह, सबके मोह होते हैं। दादा-दादी, नाना-नानी सबके मोह होते हैं। पहले, सबसे पहले, ज्ञान देने से पहले यह कहा जाता था...ज्ञान बाद में, पहले क्या करो? मोह कम करो और मोह कम करने के लिए क्या करो? पहले घर छोड़ो, घर से दूर रहो। घर छोड़ने पर ही वह मोह कम होता है और इसलिए जिन्होंने घर त्याग करके विद्या अध्ययन किया वह तो आगे बढ़ते चले जाते हैं और जिन्होंने घर में बैठे-बैठे विद्या अध्ययन किया तो फिर वह घर में बैठ कर के पढ़ते ही रह जाते हैं, पढ़ते ही रह जाते हैं, उससे आगे नहीं बढ़ पाते हैं। ज्यादातर लोगों की बात, प्रायः-प्रायः ऐसा देखने में आता है। इसलिए यह पद्धति हुआ करती थी। पहले आपके लिए कुछ भी शिक्षा है, ज्ञान है, ये चीजें पहले नहीं दी जाती थीं। पहले क्या? पहले तो अपना मन बना लो कि हमें मोह से दूर होना है। मोह से दूर होने का मन बनेगा अपने आप, आपके लिए पुरुषार्थ अच्छा होने लग जाएगा।

मोह को तोड़ने की प्रक्रिया

जब आचार्य महाराज के पास में हमने पहली बार निवेदन किया था कि आचार्य श्री! हमें अपने चरणों में रख लो, हमें अपने पास में रख लो। तब उन्होंने जो परीक्षा ली थी, वह यही ली थी। उन्होंने यह देखने के लिए परीक्षा ली कि मैं जो कह रहा हूँ, यह मेरी बात को पूरा मानता है कि नहीं मानता है। ज्ञान अलग चीज है और मोह के कारण से निर्णय बदल देना अलग चीज है। वह निर्णय कब बदल जाते हैं? अगर हमारा मोह कहीं और होगा तो हम इसको अपने से दूर भी रखेंगे, छोड़ भी देंगे तो यह कहीं और चला जाएगा। चला जाए, अगर पक्का होगा तो मेरे ही पास आएगा। देखना क्या है? इसे मोह के ही जंजाल में, फिर से पहुँचाना है। जहाँ से आया है, वहीं पर इसे फिर पहुँचाना है मतलब मोह को तोड़ने के लिए भी, उसकी परीक्षा लेने के लिए भी, उसे मोह के वातावरण में फिर रखा जाता है। अपनी दृढ़ता से, उस मोह के बीच में रहकर के भी वापस लौट कर के आना, तब समझेंगे कि हाँ! मोह की कमी है। जब गुरुदेव से निवेदन करते हैं और उस निवेदन के बाद में उनसे कहा जाता है कि हमें अब घर पर नहीं रहना, अब घर का मोह छोड़ कर तो हम आए हैं तो **आचार्य श्री कहते हैं...नहीं! अभी एक बार फिर घर पर जाना। अब क्यों घर पर जाना है?** अभी आप सीधे हमारे पास नहीं आए हो, कहीं से घूम करके आए हो। इसलिए एक बार पहले घर पर जाना और उन्होंने यह भी कह दिया चलते-चलते, वैसे वह किसी दूसरे संघ के ब्रह्मचारी से बात नहीं करते। किसी को कोई guidance नहीं देते लेकिन उन्होंने पहले ही दर्शन के उपरान्त यह बात कह दी...अगर उस संघ को छोड़ कर के आओ तो पहले घर पर जाना, हमारे पास मत आना। उस समय पर जब वह संघ छोड़ा तो संघ छोड़ कर कहाँ जाएँ? घर पर जाने का तो कोई प्रयोजन है ही नहीं तो लौट कर के फिर गुरु जी के पास

पहुँच गए। जब फिर गुरु जी के पास पहुँच गए तो फिर गुरु जी कहने लगे क्यों आ गए? हमने तो कहा था, घर पर जाना। अब घर पर जाकर क्या करेंगे? आप ही तो कहते हो, मोह नहीं करना। घर पर रहने से मोह बढ़ता है। हम मोह छोड़ कर के आ गए। अब आप कहते हो नहीं, घर पर जाना। अभी तो तुम्हें घर पर ही जाना है। वहाँ पर जाने के बाद में, फिर वहाँ रुकने के बाद में, फिर अपने परिवार जनों को लेकर के आना, तब हम कुछ सोचेंगे। एक प्रक्रिया है यह भी, जो मोह को तोड़ना चाहता है, उससे भी कुछ दिन के लिए कहा जाता है अभी घर पर रहो। आचार्य श्री के पास में कभी कोई व्रत लेने जाता है, एकदम से पूरा व्रत नहीं दे देते। उसको अभी एक साल का दिया, दो साल का दिया क्यों? देखते हैं, उसको पक्का बनाते हैं। दो साल में कहीं इसके भाव बदल तो नहीं गए, पाँच साल में कहीं इसके भाव बदल तो नहीं गए। घर में रहना है, जो Job करना है job करना, business करना है business करना। जो कुछ भी करना है करो, माता-पिता की सेवा करो और उसके बावजूद भी भावना बनाए रखो कि हमारे पास आना है। यह **आचार्य श्री का फण्डा है।** इस फण्डे से कई लोग जब नहीं चल पाते, अपने आप से विचलित हो जाते हैं तो उनकी पकड़ से दूर हो जाते हैं। कई लोग हो जाते हैं। कई लोग कई जगहों पर चले जाते हैं, भैया! हमें तो जल्दी पड़ी थी। हम तो वहाँ चले गए, हमने वहाँ जा कर दीक्षा ले ली, हमने वहाँ कर ली, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता।

आचार्य श्री- मोह को कम करने की दौड़

तुम्हें जहाँ जाना है, जाओ। उनकी परीक्षा का जो तरीका है वह तरीका उनका अपना है। अब वह उन्होंने कहाँ से सीखा? वह भी उन्होंने खुद ब खुद अपने अन्दर जो मोह की कमी के कारण से सीखा। उसी सीख से उन्हें अनुभव मिला और उसी सीख से वह अपने शिष्यों की परीक्षा लेते हैं। उन्हें किसने सिखाया यह बताओ, अच्छा! **उनके किसी दोस्त ने सिखाया, मारुति ने सिखाया, उनके माता-पिता, किसी ने सिखाया? श्रीमती ने और किसी उनके भाइयों ने सिखाया? उन्हें कहाँ से आ गया?** कहाँ दक्षिण भारत, कहाँ कर्नाटक और कहाँ यह राजस्थान और भाग करके, वहाँ से train से चलकर के, यहाँ पर आ गए और उस यात्रा के दौरान, आपको यह भी ध्यान रहे कि उस समय पर उन्हें दो दिन, तीन दिन आने में लगे। कर्नाटक से राजस्थान आने में और उन्होंने दो दिनों तक कुछ भी भोजन नहीं किया, पानी तक नहीं पिया क्योंकि भगवान के दर्शन नहीं मिले। जब उन्हें तीसरे दिन जाकर के मन्दिर में दर्शन हुआ, तब जाकर के उन्होंने नहा-धो कर के, उसके बाद में दर्शन करने के बाद, पूजन करने के बाद में, तब पानी पिया। यह बात वह अपने मुख से भी सुनाते हैं, हम लोगों को सुना चुके कई बार। वह गर्मी का समय था, ऐसे तड़फ गए थे, दो दिन के बाद में तब जाकर के पानी मिला और फिर जाकर के दो दिन से सोए भी नहीं थे, भूखे भी थे और जाने के बाद में जब भगवान का दर्शन कर लिया, थोड़ा भोजन हो गया, उसके बाद में पहले तो हमने सोया, नींद निकाली, उसके बाद में फिर हमने देखा, अब कहाँ चलना है? अब चलो! तब वह कचौड़ीमल बाद में मिला था, जो ले गया था उन्हें ज्ञानसागर जी महाराज के पास में। यह विद्या कहाँ से आई? यह सीख कहाँ से आई? किसने सिखाया? आप कहते हो, वह पढ़ने के लिए दौड़ रहे थे, ज्ञान की दौड़ में दौड़ रहे थे। ज्ञान की दौड़ में दौड़ रहे थे कि मोह को कम करने की दौड़ में दौड़ रहे थे, बताओ? तुम समझ ही नहीं पाते। ज्ञान तो कहीं भी बैठ के मिल सकता था। ज्ञान तो वहाँ पर भी भट्टारकों के बीच में और वहाँ पर भी अनेक मुनियों के बीच में और जहाँ पर अनेक-अनेक शास्त्रों के बड़े-बड़े पण्डित हैं, सब कुछ है वहाँ पर भी, मूड-

बद्री है सब कुछ है, कहीं भी रह कर के ज्ञान ले लेते। लेकिन उन्हें ज्ञान ही नहीं चाहिए था, उन्हें मोह की कमी करना था। **मोह को छोड़े बिना, कभी ज्ञान की वृद्धि नहीं होती।** आज भी लोग आश्चर्य करते हैं कि आचार्य महाराज इतनी कम उम्र में, अपने वृद्ध गुरु के पास में रहकर के, तीन-चार साल के अन्दर इतना ज्ञान कैसे अर्जित कर लिया? जो उन्होंने इतनी संस्कृत सीख ली, हिन्दी सीख ली, कन्नड़ तो जानते ही थे और लिखना भी सीख लिया और यह सब उनके अन्दर ज्ञान का क्षयोपशम कहाँ से आ गया? घर में कुछ नहीं था क्षयोपशम। यह क्षयोपशम आया...जब मोहनीय कर्म को उन्होंने छोड़ा, मोहनीय कर्म पर उन्होंने वार किया और जब मोह को त्यागा तो मोह की पकड़ कम होने पर, ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम भी उनका बढ़ा और उसी क्षयोपशम के कारण से वह सबसे प्रबुद्ध ज्ञानी, सबसे कम समय में बनकर के सामने आए, मोह की कमी के कारण से। मोह कोई छोड़ना नहीं चाहता। शक्ति नहीं है, अभी नया-नया लड़का है, वह भी यही सोचते, अभी हम 20 साल के हैं। कैसे तप करेंगे? कैसे त्याग होगा? ऐसे सोचने वाले लोगों के लिए कभी भी मोक्ष मार्ग बन नहीं पाता और आप जिन्दगी भर यह ही सोचते रह जाते हो।

मोह त्याग करने का पुरुषार्थ

सबसे पहली चीज है- मोह को कम करना मतलब अगर किसी को मान लो व्रत लेना है, तो मोह को कम करना। ज्ञान बढ़ाना है, तो मोह को कम करना। यहाँ तक कि अन्त में समाधि लेना है, तो भी मोह को कम करना। अब आप बैठे-बैठे सोचते हो, हम घर में रह कर के व्रतों का पालन कर लेंगे, घर में रहकर के अपने ही व्रतों का पालन करते-करते समाधि मरण कर लेंगे। हो जाएगा? तब तक कुछ नहीं होगा, जब तक मोह के त्याग का भीतर से पुरुषार्थ नहीं होगा। समाधि मरण के लिए भी मोह का त्याग करना पड़ता है। समाधि मरण करने के लिए भी आपको परिवार का मोह छोड़ना पड़ेगा, बच्चों का मोह छोड़ना पड़ेगा, अपने रिश्ते-दारों का मोह छोड़ना पड़ेगा, जीवन का मोह छोड़ना पड़ेगा। यहाँ तक कि अपने शरीर का मोह भी छोड़ना पड़ेगा, तब एक अच्छी समाधि होगी। सब कुछ मोह के त्याग से होता है- मोक्ष मार्ग, इसलिए इस मोक्ष मार्ग पर पुरुषार्थ निरन्तर चलता है और इसी पुरुषार्थ के कारण से कोई जीव आगे बढ़ता है।

मोह भीतर से भी छलता और बाहर से भी

कभी-कभी निमित्त ऐसे मिल जाते हैं कि पुरुषार्थ भी बिगड़ जाता है और निमित्त अच्छे मिल जाते हैं तो एक पुरुषार्थ अच्छा भी बन जाता है। अब यह अपनी भवितव्यता है। एक ही जीवन में कई उतार-चढ़ाव आ सकते हैं। एक ही जीवन में अच्छी-बुरी राहें कई बार मिल सकती हैं और एक ही जीवन में व्यक्ति कभी मिथ्या दृष्टि भी बन सकता है, कभी सम्यग्दृष्टि भी बन सकता है। कभी सम्यग्दृष्टि बनकर भी मिथ्या दृष्टि बन सकता है और कभी मिथ्या दृष्टि बनकर भी सम्यग्दृष्टि बन सकता है। यह सब चलता रहता है। मोह हमें भीतर से भी छलता है, बाहर से भी छलता है। अगर हम बाहर से बच पाए तो भीतर से बचना भी कठिन होता है और कभी-कभी भीतर से बचे तो बाहर के निमित्त भी ऐसे मिल जाते हैं जिसके कारण से व्यक्ति उस मोह में पड़ जाता है।

मोक्ष मार्ग के अन्त में योग निरोध भी पुरुषार्थ मूलक

इतना पुरुषार्थ करना शुरू से ही प्रारम्भ होता है, तब जाकर के मोक्ष मार्ग के अन्त में भी **‘छिन्दन् शेषान् अशेषान्’** अभी भी उन्हें छेदना है। क्या छेदना है? जो शेष बचे हैं, अशेष मतलब पूरे रूप से शेष जो बचे हैं, उन सबको छेदना है। वे सब चीजें क्या है? ‘निगल-बल-कली’ यह ऐसी बेड़ियाँ हैं जो बलवान बेड़ियाँ हैं, जो हमारे अन्तरंग आत्मा में पड़ी हुई हैं और वह **अघाति कर्मों की बेड़ियाँ भी कमजोर नहीं हैं, वह भी बलवान हैं।** चाहे वह नाम कर्म हो, चाहे आयु कर्म हो, चाहे गोत्र कर्म हो, चाहे वेदनीय कर्म हो। इन कर्मों की स्थितियों को भी घटाना, इनकी अनुभाग शक्ति को भी मिटाना, इन कर्मों के घात करने के लिए भी पुरुषार्थ किया जाता है और वह पुरुषार्थ चलता रहता है केवल ज्ञानी होने के बाद भी, अरिहन्त परमात्मा बनने के बाद भी दो शुक्ल ध्यान और करने बाकी होते हैं। सुन रहे हो? **शुक्ल ध्यान कितने होते हैं? चार होते हैं। दो करके तो केवलज्ञान हो जाता है और फिर दो शुक्ल ध्यान और होंगे तब मोक्ष होगा और वह शुक्ल ध्यान अपने आप नहीं हो जाते।**

आचार्य महाराज ने अभी जब कुण्डलपुर आए थे मेले के time पर, हम सभी साधुओं को अपना एक बहुत बड़ा गहरा चिन्तन दिया था। केवल उसमें साधु-साधु रहते थे, आर्यिकाओं को भी दूर रखते थे। उन सभी साधुओं के लिए, उन्होंने उस समय पर जो चिन्तन दिया, उस अवस्था में जब वह बहुत अस्वस्थ थे। फिर भी वह एक-एक घण्टे रोजाना इस बात के लिए चिन्तन देते थे कि देखो! केवलज्ञान होने के बाद भी उन अरिहन्त भगवान के अन्दर, इतना पुरुषार्थ चलता है कि उस पुरुषार्थ के बल पर ही उन्हें वह शुक्ल ध्यान होता है और वह शुक्ल ध्यान अपने आप नहीं होता है, वह करते हैं। इस तरह से शास्त्रों में लिखा है। योग निरोध की प्रक्रिया होती है। वह योग को रोकने की प्रक्रिया वे करते हैं, अपने आप नहीं होती है। वह पुरुषार्थ मूलक है। उस समय पर, अन्तिम समय पर मोक्ष जाने से पहले कर्मों की निर्जरा होती है, वह भी पुरुषार्थ मूलक है। अपने आप सब नहीं हो जाती है। अपने आप हो जाएगी तो फिर यूँ ही कहना पड़ेगा कि बिना पुरुषार्थ के उस निर्जरा से, जिसे हम सविपाक निर्जरा कहते हैं- उससे मोक्ष हो गया। **लेकिन मोक्ष कभी सविपाक निर्जरा से नहीं होता, मोक्ष अविपाक निर्जरा से ही होता है** इसलिए उन अरिहन्त भगवान के लिए भी अभी पुरुषार्थ है, ध्यान है और ध्यान एक सबसे बड़ा पुरुषार्थ है। उसे उपचार से नहीं कहा जा सकता।

आचार्य महाराज ने सिद्ध किया मोक्ष की प्राप्ति वास्तविक है...पुरुषार्थ मूलक है

आचार्य महाराज ने उसे सिद्ध किया था, यह उपचार से नहीं है। **उपचार से कहना भी एक दृष्टि की अपेक्षा से है।** जब हम छद्मस्थों की अपेक्षा परिभाषा बनाते हैं तो उसको घटित करेंगे ऊपर के केवलज्ञानियों में तो वह उपचार से घटित होगी। लेकिन उन केवलज्ञानियों के लिए जब हम ध्यान की बात कहेंगे तो उनका ध्यान वास्तविक है क्योंकि औपचारिक ध्यान से फिर कर्मों की निर्जरा भी औपचारिक होगी, वास्तविक नहीं होगी। ध्यान वास्तविक है, कर्म की निर्जरा वास्तविक है, मोक्ष की प्राप्ति वास्तविक है और यह सब औपचारिक नहीं है...यह सब पुरुषार्थ मूलक है और वह पुरुषार्थ उनके अन्तरंग में चलता रहता है। इस बात की सिद्धि के लिए उन्हें घण्टों-घण्टों, अनेक-अनेक धवला आदि ग्रन्थों का reference देकर के, उन्होंने इस बात को सिद्ध किया था और यह बात आपके दिमाग में भी रहनी चाहिए।

सिद्ध अवस्था में प्रकट होने वाले गुण अरिहन्त दशा में नहीं होते

अरिहन्त अवस्था आने के बाद भी, आचार्य लिखते हैं- अभी भी वह **छिन्दन**, छेद कर रहे हैं, छेद रहे हैं। सब छिद नहीं गया है, अभी भी चार कर्म बाकी हैं उनमें छिन्दन की क्रिया चल रही है और उस छिन्दन क्रिया के साथ में **‘निगल-बल-कलींस्तै-रनन्त-स्वभावैः’** उसके बाद में उन्हें अपने अनन्त स्वभाव की प्राप्ति होती है। जो उनके अन्तरंग आत्मा के और भी अनन्त गुण हैं, वह सभी गुण और भी प्रकट होते हैं तो वह बाद में प्रकट होते हैं और वह बाद में प्रकट होने का मतलब ही है, जो गुण मोक्ष में प्रकट होंगे वह गुण अरिहन्त अवस्था में प्रकट नहीं होते हैं। क्या सुना? जो गुण सिद्ध अवस्था में प्रकट होंगे, वह गुण अभी अरिहन्त दशा में नहीं आते हैं। वह गुण भी अलग हैं। चार तो प्रकट हो गए लेकिन चार गुण और होते हैं जिन्हें यहाँ पर लिखा गया... **‘सूक्ष्मत्वाग्रावगाहा- , गुरु-लघुक-गुणैः, क्षायिकैः शोभमानः’** जब वह अपने इन सभी अघाति कर्मों का नाश करके, क्षायिक अनन्त गुणों के स्वभाव को प्राप्त कर लेते हैं तो उनके अन्दर और भी अनेक गुण प्रकट हो जाते हैं। जिन्हें कहा गया यहाँ पर... **सूक्ष्मत्व गुण, अवगाहन गुण, अगुरुलघुत्व गुण**, यह सभी जो गुण हैं, यह सभी गुण अरिहन्तों में नहीं हैं।

सूक्ष्मत्व गुण

अरिहन्त अभी सूक्ष्मपने को प्राप्त नहीं हुए, बादर शरीर के साथ में रह रहे हैं। इसलिए वह हमें दिखाई देते हैं हमारी आँखों से देखने में आते हैं। यह गुण किस में आएगा? सिद्धों में आएगा। **सूक्ष्मत्व- आत्मा का परिणमन सूक्ष्म होते हुए भी, अभी आत्मा अपने सूक्ष्म परिणमन के साथ में प्रकट नहीं हुई है और आत्मा के लिए जो अभी सूक्ष्मत्व गुण नहीं आया, इसी कारण से आत्मा इस संसार में हमें दिखाई देती है**, इन्द्रियों से ग्रहण करने में आती है। आज हम आपको दिखाई दे रहे हैं आप हमें दिखाई दे रहे हो, आपकी आत्मा और हमारी आत्मा, भले ही आत्मा न दिखाई दे रही हो लेकिन आत्मा अगर शरीर को धारण करके एक दूसरे के द्वारा जानने में आती है, तो उसका यह गुण कौन सा है? सूक्ष्मत्व के विपरीत गुण है, जिसे बादर गुण कहा जाएगा यानि यह वैभाविक परिणति है। आत्मा अभी कैसे सूक्ष्मत्व गुण को उपलब्ध नहीं है? अभी आत्मा बादर परिणति को उपलब्ध है। चाहे वह बादर नाम कर्म के उदय से बादर जीव बने, चाहे सूक्ष्म नाम कर्म के उदय से सूक्ष्म जीव बन जाए। लेकिन फिर भी आत्मा की परिणति तो बादर कहलाएगी क्योंकि सूक्ष्म स्वभाव अभी उसके अन्दर प्रकट संसारी दशा में नहीं हो सकता। अरिहन्त भगवान, हम सभी छद्मस्थ आत्माएँ कौन से आत्मा के स्वभाव में चल रहे हैं? यह सूक्ष्म स्वभाव में नहीं हैं। यह सब कैसे हैं? यह बादर स्वभाव के साथ चल रहे हैं और बादर स्वभाव में यह आत्मा हमेशा किसी न किसी के द्वारा ग्रहण करने में आती रहती है

अवगाहनत्व गुण

‘सूक्ष्मत्वाग्रावगाहा’ अवगाहन गुण संसारी जीवों में प्रकट नहीं होता। यह पूर्ण रूप से प्रकट होता है, तो सिद्ध भगवन्तों में होता है। अरिहन्तों में भी अवगाहन गुण प्रकट नहीं होता। क्या सुना? कौन सा गुण? यह कुछ नए-नए गुण हैं... अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन ‘अनन्त चतुष्टय के धनी’ यह तो तुम गाते ही रहते हो, अब यह नए गुण सुनो कुछ, कौन से गुण हैं? **सूक्ष्मत्व गुण, अवगाहन गुण**। यह अवगाहन गुण क्या काम

करता है? जहाँ पर एक सिद्ध भगवान विराजमान हैं वहाँ पर अनन्तों को अवगाहित करने की क्षमता, अब उस आत्मा में आ गई, इसका नाम है- अवगाहन गुण। इससे पहले वह अवगाहन गुण प्रकट नहीं होता। अरिहन्त भगवान में भी वह अवगाहन गुण नहीं है कि एक अरिहन्त के स्थान पर दूसरे अरिहन्त वहीं समा जाएँ। नहीं! तीर्थकरों के सामने तो तीर्थकर आते ही नहीं हैं। क्या सुन रहे हो? जैसे देश का एक PM होता है, एक PM के सामने दूसरा PM नहीं आता। ऐसे ही एक तीर्थकर के सामने कभी दूसरे तीर्थकर तो आते ही नहीं और दूसरे कोई अरिहन्त होंगे, केवलज्ञानी होंगे, वह उनसे दूर बैठेंगे। उनकी अवगाहना में कहीं कोई नहीं घुस सकता। यह अवगाहनत्व गुण आएगा तो किस में? सिद्ध भगवन्तों में आएगा।

इसीलिए अब तुम करो यात्रा का प्रारंभ।

पंख मंत्र अर्ह लगा, उड़खग सम बिन दंभ॥१०॥

शून्य शक्ति है गगन की, शून्य हिमालय देख।

सरिता तक भी शून्य है, शून्य प्रकृति को लेख॥११॥

13. अरिहन्त भगवान अष्टकर्मों का नाश करके ही सिद्धत्व प्राप्त करते हैं

जीवन की सबसे बड़ी सार्थकता



सिद्ध भगवन्तों की भक्ति करने का उपदेश भगवान महावीर स्वामी की देशना में हुआ क्योंकि सिद्ध बनना हर व्यक्ति का लक्ष्य है और हर भव्य का यह प्रयोजन, यही उद्देश्य होना चाहिए कि वह सिद्धत्व की प्राप्ति के लिए उत्सुक हो, तत्पर हो। **जिनशासन में जन्म लेने के बाद में सिद्ध भगवन्तों को स्मरण करके, उनकी भक्ति करके यदि हम सिद्ध भगवानों के प्रति अनुराग उत्पन्न कर लेते हैं तो यह हमारे जीवन की सबसे बड़ी सार्थकता होती है।** इसी सार्थकता को बनाए रखने के लिए अपने जीवन का जो सर्वोत्कृष्ट लक्ष्य है- सिद्ध भगवन्तों के बारे में जानना, उसे हम आचार्य पूज्यपाद विरचित सिद्ध भक्ति के माध्यम से समझने का, सीखने का प्रयास कर रहे हैं। पिछले दिनों में चार छन्द पढ़े जा चुके हैं पाँचवा छन्द कल पढ़ा था। दो लाइन ही शायद हुई थी। आज दो लाइन और पढ़ते हैं...

**छिन्दन् शेषानशेषान्, निगल-बल-कलींस्तै-रनन्त-स्वभावैः,
सूक्ष्मत्वाग्यावगाहा-, गुरु-लघुक-गुणैः, क्षायिकैः शोभमानः।
अन्यैश्चान्य-व्यपोह-, प्रवण-विषय-सम्प्राप्ति-लब्धि-प्रभावै,
रुर्ध्वं व्रज्या स्वभावात्, समय-मुपगतो धाम्नि सन्तिष्ठतेऽग्रये।। 5।।**

पहले आपसे कहा था...अरिहन्त भगवान अपने शेष बचे हुए सभी कर्म की बेड़ियों को जो यहाँ पर बलवान बेड़ियाँ कही गई हैं **‘निगल बल कलींस्तै’** निगल बोलते हैं- उस अर्गला को, उस बेड़ी को, जो हमें किसी भी तरह से बंधन में डालने के उपरान्त उसको तोड़ना कठिन हो जाता है।

अरिहन्तों भगवान ही अघातिया कर्मों का नाश करते हैं

वह **‘निगल’** ऐसी बलवान हैं कि उसको भी तोड़ने के लिए अरिहन्त भगवान की शक्ति चाहिए। अपनी शक्ति से कभी भी अघातिया कर्मों का नाश नहीं हो सकता। अघातिया कर्मों का नाश भगवान अरिहन्त देव अपने केवलज्ञान की शक्ति से करते हैं। जिन अघातिया कर्मों को हम यह सोचते हैं कि यह हमारे लिए कुछ भी घात नहीं करते हैं, वह अघातिया कर्म भी कम नहीं होते हैं। वह भी बहुत बलवान होते हैं, यह यहाँ पर बताया गया था। क्योंकि उन अरिहन्तों के द्वारा ही उन अघातिया कर्मों का विनाश होता है। हम और आप जैसे छद्मस्थ लोग कभी भी अघाति कर्मों का विनाश नहीं कर सकते।

आयु कर्म - जिसके कारण से हम अगला भव प्राप्त करते हैं

हमेशा-हमेशा के लिए आयु कर्म से मुक्ति मिल जाना, यह हो नहीं पाता। एक ऐसा कर्म जो हमें अगले भव में ले जाने के लिए इसी जन्म में व्यवस्था कर देता है। किसी भी जीव का जब मरण होता है, तो मरण होने से पहले उसके लिए अगले भव की आयु का बन्ध हो जाता है तभी वह अगले भव में जाएगा। **यह आयु कर्म है, जिसके कारण से हम अगला संसार प्राप्त करते हैं, परभव में जाते हैं और हमें किस गति में जाना है? इसका निर्धारण करने वाला एक बहुत बड़ा कर्म है...जिसका नाम आयु कर्म है।** बाकी के कर्म बाद में काम करते हैं।

अन्य कर्मों द्वारा संपादित कार्य

नाम कर्म हमारे शरीर की रचना करता है लेकिन वह रचना तब होगी जब हम जन्म ले लेंगे। जीव का किसी योनि में जन्म हो जाएगा लेकिन जन्म होने से पहले उस गति में कौन ले जाएगा? वह गति नाम कर्म से पहले भी आयु कर्म के द्वारा यह निर्धारण हो जाता है कि इस आयु को यह जीव अगले भव में भोगेगा। **गति नाम कर्म** उसे उस अगली गति में ले जाने के लिए उसी के अनुसार चलता है, जैसा आयु कर्म का बन्ध हो चुका होता है। यह गति नाम कर्म है। आयु अपने आप में एक अलग कर्म है। **गोत्र कर्म** की व्यवस्था बाद की है कि वह उच्च कुल में जन्म ले, नीच कुल में जन्म ले। यह जन्म लेने के बाद की व्यवस्थाएँ हैं और वेदनीय कर्म भी अपने आप में बाद में काम करता है। यह सुख-दुःख तो जब जीव पूर्ण विकसित हो जाता है तब उसे अनुभव में आता है कि हम अब सुःख का अनुभव कर रहे हैं, दुःख का अनुभव कर रहे हैं। लेकिन इन सभी कर्मों में देखा जाए तो एक आयु कर्म ऐसा है, जो अनादि काल से हमारे लिए कभी भी छूटा नहीं। कब से? अनादि काल से! जब भी कभी जीव का, चाहे छोटी आयु मिले, चाहे बड़ी आयु मिले। जीव का जब भी जन्म होगा तो उससे पहले-पहले आयु का बन्ध हो जाएगा। तभी वह जीव पिछले शरीर को छोड़ेगा, अगले शरीर को पाएगा। जैसे आप लोग अपने लिए कोई भी कार वगैरह से कहीं यात्रा करने जाते हैं तो कार तब चलेगी पहले उसमें petrol डालो। fuel पहले होना चाहिए तब गाड़ी आगे बढ़ेगी। इसी तरह से यह आत्मा के अन्दर एक ऐसी कर्मों की व्यवस्था है, जिसके माध्यम से यह आत्मा अपने आप गति से गत्यान्तर हो जाता है।

आयु कर्म एक बार बंध जाए, फिर छूटता नहीं

यह आयु कर्म उसे किस तरह से एक गति से दूसरी गति में ले जाने के लिए व्यवस्था कर देता है? यह व्यवस्था भी आत्मा के अपने भावों पर निर्भर करती है। आत्मा की अनेक-अनेक विशेषताओं पर निर्भर करती है। लेकिन जब यह आयु कर्म बंध जाता है, तो फिर यह छूटता नहीं है और इस आयु कर्म को भोगने के लिए वह जीव दूसरी गति में जाता है।

अकाल मरण में क्या आत्मा भटकती है? बची हुई आयु का क्या होता है?

उससे पहले भी अगर मान लो किसी जीव के लिए आयु अधिक बंधी हो और उसका अकाल में मरण हो गया हो तो कई लोग सोचते हैं, पूछते हैं...उस बची हुई आयु को वह जीव कब भोगेगा? **वह आत्मा कब**

उस आयु को भोगे? मान लो कोई 80 वर्ष की आयु लेकर के आया 20 वर्ष में उसका मरण हो गया। 60 वर्ष की आयु कहाँ गई? अगले जन्म में वह 60 वर्ष तक क्या पहले तुम्हें परेशान करेगा? पहले वह मनुष्य के रूप में रहेगा या मनुष्य के बिना उसकी आत्मा भटकती रहेगी? क्या होगा? बोलो! जैन लोग भी जब आत्मा और परमात्मा का विज्ञान नहीं जानते, जैन लोग भी जब कर्म भाषा को नहीं समझते तो यह समझ में आता है कि यह लोग भी कुछ पढ़ते-लिखते नहीं हैं, इनके भीतर कोई भी सम्यग्ज्ञान नहीं आता है। जब कोई भी जैन व्यक्ति यह बोलता है, जैन भक्त यह कहता है कि महाराज आयु अकाल में जब किसी की मिट गई तो अब बची हुई आयु को वह जीव कहाँ भोगेगा? वह आत्मा भटकती रहती है। अब 60 वर्ष तक वह आत्मा कहाँ भटकेगी? इस तरह के जब कोई प्रश्न पूछता है, तो बड़ा तरस आता है उसकी बुद्धि पर कि हमने जैन कुल में जन्म लेकर के थोड़ा भी जैन दर्शन नहीं पढ़ा। यह हमारी अज्ञानता के कारण से इस तरह की अनेक मिथ्या बुद्धियाँ हमारे भीतर पड़ी रहती हैं। **आचार्य कहते हैं...आयु कर्म की ऐसी व्यवस्था है, जब भी यह जीव अपने शरीर को छोड़ता है, तो पिछली आयु जो लेकर के आया है, उसे पूरी ही वहीं पर खपा देता है।** चाहे तो उसको ढंग से खा लो, ढंग से भोग लो और या फिर उसको फैला दो। मिटना है वह तो मिट गया। कोई भी तेल किसी stove में भरा है या किसी लालटेन में भरा है, अगर उसको बराबर जलने दिया जाएगा तो बराबर जल जाएगा। उसका tank फोड़ दिया तो वहीं जल जाएगा पूरा। इसी तरह से आचार्य कहते हैं...कोई भी आयु हो, वह आयु पूरी उसी जन्म में हो जाएगी, जिस शरीर को लेकर के उसने जन्म लिया था। अगला जन्म प्राप्त करने से पहले ही उस आयु का समापन हो जाएगा। अगले जन्म में फिर वह आयु लेकर के कहीं भटकेगा नहीं। आत्मा उतने दिनों तक, उतने वर्षों तक कहीं भूत-प्रेत बनकर के भटकेगा नहीं। यह सब हमारी मिथ्या धारणाएँ हैं। अगले ही क्षण इस जीव का जन्म होता है और वह नए शरीर को प्राप्त कर लेता है। नई योनि में जन्म ले लेता है, चाहे वह कितनी आयु बाँध करके आया हो। अकाल में उसका मरण हो जाता है सारी आयु एक साथ वहीं पर बिखर जाती है, खिर जाती है, उसी शरीर के साथ छूट जाती है और वही आत्मा फिर नए शरीर को पाने से पहले नई आयु का बन्ध भी वहीं पर कर लेता है और अगले जन्म में जाकर के उस नई आयु को फिर क्रम से भोगने लग जाता है। इन व्यवस्थाओं को समझ कर के ही हम अनेक तरह की आत्माओं की, भूत-प्रेत की जो अनेक बाधाएँ हैं, अनेक तरह की हमारे सामने मिथ्या धारणाएँ हैं, इनसे हम अपने आप को बचा पाते हैं। **यह जैन शासन में भगवान तीर्थंकर ने, जो हमें सर्वज्ञ भगवान ने ज्ञान दिया है, उस ज्ञान के अनुसार अगर हम बुद्धि चलाते हैं तो हमारा कुछ भला होगा।** नहीं तो कुछ नहीं होगा, संसार में भटकते थे, भटकते रहोगे।

आयु कर्म के बंध के बिना जीव एक समय भी नहीं रह सकता

यहाँ पर इसलिए कहा जा रहा है कि अघाति कर्मों में भी बहुत बल है। **आयु कर्म इतना बलवान है कि वह कभी भी अनादि काल से हमसे एक समय के लिए भी अलग नहीं हुआ।** कोई न कोई आयु का उदय चल रहा है। अगली आयु का उदय होगा, उससे पहले पुरानी आयु के समय पर ही अगली आयु का बन्ध हो गया। आयु कर्म के उदय के बिना यह जीव एक समय भी नहीं रह सकता। एक गति से दूसरी गति में जाने में भी वह एक समय, दो समय, तीन समय, अगर अधिक से अधिक लग भी जाते हैं तो उन समयों में भी वह आयु ही भोग रहा है। वह आयु जो उसने अगले समय जीवन की बाँधी थी, उसी का वह उपभोग कर रहा है उसी में वह कम हो रही है।

हमारे कर्मों का लेखा- जोखा कौन रखता है?

इतना एक-एक समय का हिसाब-किताब, लेखा-जोखा सिद्धान्त के माध्यम से, कर्मों के अन्दर रहता है। लेकिन कई लोग पूछते हैं...**यह लेखा-जोखा कौन रखता है? तुम्हारे मरने का लेखा-जोखा, तुम्हारे पाप-पुण्य का लेखा-जोखा, कहाँ से आए थे? कहाँ जाओगे? लेखा-जोखा कौन रखता है?** कोई भगवान रखता है? कोई ब्रह्मा रखता है? कौन रखता है? क्या भगवान ने इसलिए दुनिया बनाई कि दुनिया बनाने के बाद में फिर इसी चक्कर में पड़े रहो। इन सबके रोजाना मरेंगे-मारेंगे, कटेंगे-काटेंगे और इन्हीं के लेखे-जोखे रखते रहो, यही भगवान का काम है। तुम्हें इस नरक में भेजना है कि तुम्हें इस स्वर्ग में भेजना है भगवान ने यह ठेका ले रखा है क्या? ऐसे भगवान के ऊपर भी इस तरह के आरोप लगाने वाले यह नहीं जानते कि हम यह भगवान के ऊपर भी गलत आरोप लगा रहे हैं। भगवान हमें नरक में भेजता है, भगवान ने दुनिया बनाई है, भगवान हमारा लेखा-जोखा रखता है। इस तरह की मिथ्या बुद्धियाँ जब तक इस समाज के लोगों में पड़ी रहेंगी तब तक इस समाज के लोगों का कभी उद्धार नहीं हो सकता। कौन हमारा लेखा-जोखा रखता है? कौन तुम्हारे लिए बैठा देखता है telescope लगा कर के, किसी satellite से, कौन भगवान कहाँ देख रहा है? कितने जीव, असंख्यात जीव, अनन्त जीव हमारे सामने हैं... **‘चदु गति में हैं जीव अनन्त, पंच परावर्तन नहीं अन्त’** पंच परावर्तन करने वाले अनन्त जीवों का कोई अन्त नहीं है और हर समय, हर क्षण अनन्त जीवों का मरण हो रहा है, अनन्त जीवों का जन्म हो रहा है। भगवान किसका लेखा-जोखा रखेगा? हर जीव अपने कर्मों से खुद जीता है अपने कर्मों का बन्ध करता है। अपने कर्मों का लेखा-जोखा आपकी आत्मा में आप स्वयं कर रहे हैं। कोई भगवान करने वाला नहीं है।

हमारे जन्म-मरण की प्रक्रिया में साथी हमारे कर्म ही हैं

यह बुद्धि जब तक हमारी भगवान के प्रति, इस तरह की बुद्धि नहीं हटेगी तब तक हमारे भीतर कभी सम्य-ग्ज्ञान उतरेगा नहीं। आयु कर्म की व्यवस्था को समझ कर के यह समझ लो कि हमें कहीं कोई पहुँचाने के लिए, नरक में पहुँचाने के लिए, स्वर्ग में पहुँचाने के लिए, कोई विधाता, कोई ब्रह्मा हमारे लिए, कहीं कोई बैकुण्ठ में नहीं भेजता। हम खुद जाते हैं, खुद आते हैं, खुद जन्म लेते हैं खुद मरते हैं और उस जन्म-मरण की प्रक्रिया में अगर कोई हमारे साथ रहता है तो वह हमारे कर्म होते हैं। यह कर्म सिद्धान्त को जाने बिना... आप क्या सिद्ध भगवान की भक्ति करोगे? क्या सिद्ध भगवान के महत्व को समझ पाओगे?

अरिहन्त भी सिद्ध बनने के लिए ही पुरुषार्थ करते हैं

वह भी कर्म ही काट रहे हैं जो अरिहन्त बनकर के उन्होंने सिद्ध बनने के लिए पुरुषार्थ किया। वह कर्म की व्यवस्था को अगर नहीं समझोगे तो तुम कैसे समझोगे कि वह क्या कर रहे हैं? अरिहन्त भगवान सिद्ध बनने के लिए। हम direct कभी सिद्ध नहीं बन सकते। जब भी वह अरिहन्त दशा प्राप्त होती है, तो इस तरह की दशा प्राप्त होने पर बड़े-बड़े बलवान कर्मों को भी घात करना पड़ता है। यह पहले आपको बताया था कि किस तरह का वह पुरुषार्थ रहता है ध्यान का, जिसके माध्यम से वह अरिहन्त भगवान इस अपने आत्मा के अनन्त स्वभाव को प्राप्त करते हैं। अद्भुत आत्मा के अन्दर गुण प्रकट होते हैं।

सिद्ध बनने पर और भी अनन्त गुण प्रकट होते हैं

सूक्ष्मत्व, अवगाहनत्व, अगुरुलघुत्व एक गुण और होता है, जो यहाँ पर लिखा नहीं गया। तीसरी line में लिखा है- **‘अन्यश्च’** अन्य और भी बहुत सारे गुण होते हैं और उन गुणों को वह प्राप्त कर लेते हैं। कैसे? अन्य जो भी कर्म हैं, उनका व्यपोह करके, विनाश करके, वह अपने **‘प्रवण’** अर्थात् अपना विशुद्ध जो स्वभाव है, उसकी प्राप्ति की लब्धि के प्रभाव से। **‘प्रवण विषय संप्राप्ति लब्धि प्रभावई’ मतलब** अपने उस स्वभाव की प्राप्ति कर लेने पर उनके अन्दर और भी अन्य अनेक गुण प्रतिभासित होने लग जाते हैं। उन सब का कहना यहाँ सम्भव नहीं है। फिर भी चार गुण विशेष रूप से कहे जाते हैं...अगुरुलघु, अव्याबाध, सूक्ष्मत्व, और अवगाहनत्व, जो सिद्धों में विशेष रूप से यह चार गुण और प्रकट हो जाते हैं जो अरहन्तों में नहीं होते हैं। तीन गुण के बारे में पहले आपको बताया था, अव्याबाध गुण थोड़ा सा रह गया था। यह एक अव्याबाध गुण सिद्धों में प्रकट होता है। सिद्ध बनने से पहले नहीं होगा। वह तभी होगा जब सिद्ध बन जाएँगे। वह क्या गुण होता है? जिसके कारण से वह सिद्ध भगवान की आत्मा में अब कभी कोई किसी भी तरह की **‘व्याबाधा’** व्याबाधा मतलब वैसे देखा जाए तो शब्द है- **बाधा, वि और आ** तो यह उपसर्ग लग जाते हैं तो बन जाता है व्याबाधा और **‘अ’** उसमें और निषेधात्मक लग गया तो बन गया- वह **‘अव्याबाध’**। मतलब क्या हो गया? किसी भी विशेष तरह की बाधाओं से उन सिद्ध भगवान की आत्मा में कोई अन्तर आने वाला नहीं है। सामान्य बाधाएँ तो होती नहीं हैं लेकिन विशेष बाधाएँ भी उनके लिए कभी उत्पन्न नहीं होंगी। **तीन लोक में कितना ही उपद्रव हो जाए, कितना ही यह संसार उल्टा-पुल्टा हो जाए, कुछ भी हो जाए लेकिन सिद्धों के स्वभाव में, सिद्ध आत्मा में, कहीं से कहीं तक कोई अन्तर नहीं आएगा।** चाहे यहाँ पर कितने ही तूफान चल जाएँ, चाहे दुनिया बिल्कुल उल्टी हो जाए, चाहे जम्बूद्वीप पलट जाए, चाहे तीन लोक पलट जाएँ, चाहे कोई तीन लोक को हिला दे, सब कुछ हो जाए लेकिन सिद्धों के स्वभाव में कोई हलचल नहीं हो सकती है। बाधा से रहित हो गया उनका स्वभाव।

जीव को बाधा किससे मिलती है?

यह बाधा कब तक रहती है? जब तक आयु कर्म है तब तक शरीर है और शरीर है तब तक बाधा है। जीव को बाधा किससे मिलती है? हम किससे बाधा को प्राप्त होते हैं? शरीर से! चाहे अपना शरीर हो, चाहे दूसरे का शरीर हो, बाधा जब भी उत्पन्न होगी, किससे? शरीर से! हम चलते हुए कहीं टकरा गए, चोट लग गई, दर्द हो गया, सूज गई, सूजन आ गई। क्या हो गया? पीड़ा हो गई। **पीड़ा तो हुई अन्दर आत्मा में, असाता वेदनीय कर्म के फल से, आत्मा अब उस दुःख का अनुभव कर रहा है। लेकिन सूजन किसमें आई?** सूजन आत्मा में आई क्या? किसमें आई सूजन? सूजन आई शरीर में। क्यों आई? क्योंकि शरीर कहीं खम्भे से टकरा गया, किसी गाड़ी से टकरा गया, किसी जगह पर उसका कुछ न कुछ व्याघात हो गया, बाधा उत्पन्न हो गई। यह बाधा किसमें हुई? शरीर में हुई। जब तक शरीर है तब तक बाधा है और जब तक बाधा है तब तक आपको दुःख-सुख दोनों लगे हैं। शरीर अच्छा चल रहा है, सुख मिल रहा है। अपने आप शरीर में बीमारियाँ होने लग गई, दुःख मिलने लग गया। बाधा का कारण शरीर है। अरिहन्त भगवान के पास में उत्कृष्ट परम औदारिक शरीर हो जाता है लेकिन फिर भी वह बाधाओं से रहित नहीं हैं। कैसी बाधा? चाहे अच्छे रूप में हो, चाहे बुरे रूप में हो, बाधा तब तक रहेगी जब तक शरीर रहेगा।

तीर्थकरों से भी द्वेष रखने वाले हो सकते हैं

आप क्या समझते हो? जो तीर्थकर होते हैं उन्हें सब चाहते ही हैं। क्या समझते हो आप? तीर्थकरों के कोई द्वेषी नहीं होते हैं क्या? उनके कोई विद्वेषी नहीं होते हैं क्या? उनके सामने कोई अहंकारी बनकर के उनके लिए कोई बुरा सोचने वाले नहीं होते हैं क्या? क्या समझते हो आप? यह ठीक है कि तीन लोक के प्रमुख व्यक्ति, तीन लोक के राजा, तीन लोक में श्रेष्ठ व्यक्ति जितने भी होंगे सब उनके चरणों में होंगे लेकिन फिर भी अनेक लोग ऐसे होते हैं जो उन्हें देख कर के भी उनसे द्वेष करते हैं। यूँ नहीं कह सकते हैं कि उन्हें देख कर के करते हैं लेकिन उनका नाम सुन कर के करते हैं क्योंकि देख कर के तो उनके प्रभाव में आने के बाद द्वेष नहीं कर पाएँगे। लेकिन दूर रहकर के, जैसे बोलते हैं न! समाज में ऐसे लोग होते हैं भाई! उन्होंने हमें कभी देखा नहीं है लेकिन दूर रहकर के हमें गालियाँ दे रहे हैं। दूर रहकर के हमारे काम में बाधा डाल रहे हैं। दूर रहकर के हमारे लिए बुरा सोच रहे हैं। **ऐसे ही तीर्थकरों के समय पर भी ऐसे लोग होते हैं।** सामने तो आने पर उनका प्रभाव इतना होगा कि वह उनके प्रभाव से उनका द्वेष सब दूर हो जाएगा लेकिन सामने आएँगे ही नहीं। ऐसे लोग होते हैं न! समाज में, रिश्तेदारियों में होते हैं जो सामने नहीं आते हैं, लड़ाई करवाते रहते हैं, लड़ते रहते हैं, बुराई करवाते रहते हैं बुरा बोलते रहते हैं। रोजाना phone करेंगे, रोजाना गालियाँ देंगे, रोजाना comments करेंगे लेकिन सामने नहीं आएँगे। कहो कि सामने आकर के बात करो, सामने नहीं आएँगे। इसी तरह से तीर्थकर भी जब तक रहते हैं उनके भी अनेक-अनेक विद्वेषी हो सकते हैं। हों कोई जरूरी नहीं है। आप सोचो एक उदाहरण तो अपने सामने है ही।

मारीचि का विद्वेष

भगवान आदिनाथ के रहते हुए, ऋषभ देव के रहते हुए उनका कौन पोता या नाती? मैं हमेशा इसमें confuse रहता हूँ कि क्या बोलूँ? बताओ पोता बोलूँ कि नाती बोलूँ। बेटे का बेटा! पोता! उनका पोता मारीचि उनके ही सामने उनसे विद्वेष करने लग गया। पता है आपको? उनका बेटा भरत और भरत का बेटा वह मारीचि। उनके ही सामने उनसे विद्वेष करने लग गया। सामने का मतलब उनके रहते हुए उनके सामने नहीं आया लेकिन उनके प्रत्यक्ष रहते हुए भी, उनके उस तीर्थकर के काल में भी, उनका बेटे का बेटा, उनका पोता खुद अपने वंश का वंशज, खुद अपना खून, अपने दादा से विद्वेष करने लग गया। आप सोचो कितनी बड़ी बात है युग की आदि में, जहाँ कहा जाता है- उस समय पर बड़े सरल मना, सरल हृदय लोग रहा करते थे। ऐसा कहा जाता है- ऋजु बुद्धि वाले लोग होते थे उस समय पर। उस समय पर यह कुटिलता उस मारीचि के अन्दर आ गई। कहने लगा- होंगे आप सर्वज्ञ! होंगे आप भगवान! हमारे लिए भगवान नहीं हो! हम नहीं मानते कि कोई मोह से रहित हो सकता है। क्या मोह से रहित हो गए आप? अपने समवशरण की सभा में सबसे आगे भरत को बैठा लेते हो, बाहुबली आपके समवशरण में बैठे हैं। सबसे पहले अपने पुत्र को आपने गणधर बना दिया। **क्या मोह से रहित हो गए आप? क्या सर्वज्ञ बन गए आप?** हम नहीं मानते। नहीं माना उसने! किसकी बात कर रहा हूँ? अपने ही खून की बात कर रहा हूँ। भगवान के रहते हुए भी उसने भगवान को सर्वज्ञ नहीं माना। इतना अहंकार उसमें आ गया।

जब तक जीव शरीर में है तब तक वह किसी न किसी रूप में बाधा दे रहा है

यह भी एक बाधा है, यह मैं कहना चाह रहा हूँ। क्या है यह? बाधा है, जब तक आपका शरीर रहेगा आपसे अनुराग रखने वाले भी लोग होंगे तो आपसे द्वेष रखने वाले भी लोग होंगे। आप घर में कितने ही अच्छे क्यों न हो? आप पिता हैं, श्रेष्ठ हैं, आप घर में कितने ही बड़े क्यों न हो? लेकिन घर में भी कुछ लोग यह देखते रहते हैं कि कब यह घर से निकले, तब हम अपने घर का कोई दूसरा काम करें। तुम यहाँ बैठ गए हो आकर के इसका भी लोग फायदा उठाते रहते हैं। क्योंकि वह आपके हितु होते हुए भी, आपके पास रहते हुए भी, वह आपसे डर करके आपके सामने कोई काम नहीं कर सकते हैं तो वह सोचते हैं- जब यह मन्दिर जाएँगे, जब यह भगवान के मन्दिर में जाकर के वहाँ एक घण्टे तक उपदेश सुनेंगे, जब तक घर में कोई नहीं रहेगा तब तक वह अपना काम कर लेंगे। अब तुम पड़ गए चिन्ता में और वह लोग कोई दूसरे नहीं होंगे तुम्हारे घर के बच्चे होंगे, तुम्हारे घर के भाई होंगे, तुम्हारे घर के अपने बेटे-बेटियाँ और यहाँ तक पत्नी सब कुछ वही होंगे...जो काम वह तुम्हारे सामने नहीं करेंगे, तुम्हें बता कर नहीं करेंगे। वह इंतजार करेंगे कब तुम एक घण्टे के लिए यहाँ से निकलो और मैं यह काम करूँ। बाधा हर जीव को, हर जीव से होती है जब तक कि वह शरीर के साथ में है। राग-अनुराग अपनी जगह बना रहता है लेकिन भीतर उसके अगर अनुकूल कुछ नहीं होता है, तो वही राग-अनुराग के साथ में, वह उससे बाधा भी महसूस करने लग जाता है। जब तक जीव है, तब तक वह किसी न किसी रूप में बाधा दे रहा है।

भगवान महावीर के सामने भी उनसे द्वेष रखने वाले खड़े थे

‘अरिहन्त भगवान भी अव्याबाध गुण से युक्त नहीं हैं’ यह मैं आपसे कहना चाह रहा हूँ। यह अव्याबाध गुण की परिभाषा है, जो मैं समझा पा रहा हूँ, समझ पा रहा हूँ। भगवान महावीर स्वामी के रहते हुए भी, वर्धमान भगवान के रहते हुए भी उनके सामने कई मत वाले, इतिहास पढ़ो, मस्करी, गोशालक न जाने कौन-कौन से लोग थे जो उनके सामने द्वेषी बनकर के उनके सामने खड़े हो गए थे। बोले तुम भी सर्वज्ञ हो तो हम भी सर्वज्ञ हैं। वह भी अपने आप को आप कहते थे, जैसे इनको आप कहा जाता था। भगवान वर्धमान स्वामी को आप कहते थे, सर्वज्ञ कहते थे, वह भी स्वयं को आप कहते थे। यहाँ तक कि इनको तीर्थकर कहा जाता था, उन्होंने भी अपने आप को ‘हम भी तीर्थकर हैं’ घोषित कर लिया था। अरे! बोलना ही तो है, नाम ही तो देना है। जैसे आप लोग सिंघई, सवाई सिंघई, अपने ऊपर उपाधि कोई भी लगा लो, क्या फर्क पड़ रहा है? तुम्हीं कहाँ के सिंघई, तुम ही कैसे सिंघई, अरे हम भी सिंघई! क्या? नाम ही तो लिखना है। चार लोगों से कह देना भैया! हमारे नाम के आगे क्या लगाना? सिंघई लगाना! सवाई सिंघई लगाना! लगाने लग जाना। क्या फर्क पड़ रहा है। अपना card है, अपना ID है, अपनी जो line लिखना है सो लिखो, उसमें क्या दिक्कत है? हर व्यक्ति के लिए किसी दूसरे व्यक्ति के माध्यम से बाधा उत्पन्न होती ही है जब तक कि वह शरीर के साथ रहेगा। चाहे वह मुनि हो, चाहे उपाध्याय हो, चाहे आचार्य हो, यहाँ तक कि अरिहन्त भी बन जाएँ तो भी वह दूसरे के लिए बाधा के कारण है।

सिद्ध सब बाधाओं से रहित हो गए

सिद्ध बनने के बाद में फिर कोई किसी से बाधा नहीं होती। शरीर नहीं, कोई देखेगा नहीं, आप अपने आनन्द में रहो, आपसे कोई कुछ कहेगा नहीं और आपके आनन्द से किसी को कोई बाधा होगी नहीं क्योंकि आप अब दिखाई नहीं दे रहे हो। आपको बुरा लग सकता है कि सिद्ध भगवान हमें दिखाई क्यों नहीं देते हैं? लेकिन सिद्ध भगवान जानते हैं, सब देखने वाले भी बुरी आँखों से भी देखते हैं। इसलिए वह चले गए, सब छोड़ कर चले गए, उन्हें पता है कि कोई हमेशा अच्छी दृष्टि से नहीं देखता। आदमी की दृष्टि कब बिगड़ जाती है? कौन किस दृष्टि से देखता है? उन्हें सब अपने केवल ज्ञान में दिखाई देता है। इसलिए उन्होंने शरीर से हमेशा के लिए मुक्ति पा ली। जब शरीर से मुक्ति मिल गई, तब जाकर के उनकी आत्मा में अब 'अव्याबाध गुण' प्रकट हो गया। कोई तरह की बाधा अब उनकी आत्मा में कभी आने वाली नहीं है। न कोई सुख-दुःख की बाधाएँ, कभी सुख हो गया, कभी दुःख हो गया, कभी मौसम बिगड़ गया, कभी मौसम अच्छा हो गया, कोई बाधाएँ नहीं। हर तरह की बाधाओं से मुक्त हो गए क्योंकि सब बाधाएँ शरीर के साथ हैं, इन्द्रियों के साथ हैं। शरीर नहीं तो इन्द्रियाँ नहीं और इन्द्रियाँ नहीं तो कर्म नहीं। इस तरह से वह आत्मा कर्म से भी रहित है, इन्द्रियों से भी रहित है शरीर से भी रहित है। मात्र आत्मा, शुद्ध आत्मा रह गई, यह कहलाता है- अव्या-बाध गुण।

अव्याबाध गुण

समझ पा रहे हो? सिद्ध भगवान! अव्याबाध मतलब कोई भी तरह का disturbance नहीं उनके लिए। without any disturbance, कोई उनको disturb नहीं कर सकता है। उनके स्वभाव में, उनके सुख में कहीं कोई तक आपकी missile वहाँ तक नहीं पहुँच सकती। कोई भी satellite वहाँ तक नहीं पहुँच सकता, कोई आपकी missile की मार वहाँ तक नहीं पहुँच सकती। वहाँ पर कुछ नहीं हो सकता। उनके स्वभाव में कोई खरोंच भी नहीं लगा सकता। इसका नाम क्या है? अव्याबाध सुख। उनके लिए कोई बुरा भी नहीं सोच सकता। भाई! जो चीज दिख ही नहीं रही उनके लिए बुरा क्या सोचना।

अरिहन्तों के प्रतिद्वंदी हो सकते हैं सिद्धों के नहीं

आप कल्पना करो! जब हम अरिहन्त भगवान का वर्णन करेंगे तो प्रतिद्वन्दी तैयार हो जाएँगे। हम भी अरि-हन्त हैं! हम भी तीर्थंकर हैं! जब अरिहन्त के बारे में कहेंगे तो प्रतिद्वन्दी सामने आ जाएँगे। सिद्धों के बारे में कहेंगे, कौन प्रतिद्वन्दी है? मानना है तो मानो, नहीं मानना हो तो मत मानो। कोई बात नहीं लेकिन उनका कोई प्रतिद्वन्दी नहीं हो सकता क्योंकि अब वह बाधा से रहित हो गए। अरिहन्तों के प्रतिद्वन्दी भी हो जाते हैं। प्रतिद्वन्दी समझ रहे हो? competitor आज की भाषा में बोलें तो यह सब competitor ही थे। बड़े-बड़े competitor थे उस समय पर, जब भगवान महावीर स्वामी थे। आजीवक, मस्करी, गोशालक न जाने कौन-कौन से और भी नाम आते हैं, वह सब तरह-तरह के उनके सामने competitor थे और सब कहते थे मैं भी तीर्थंकर, मैं भी तीर्थंकर। I am also God, I am also God. सब God थे उस समय पर क्योंकि दुनिया में क्या एक ही भगवान होता है? जब अरिहन्त अवस्था में भी इस तरह की स्थिति रहती है, तो वह स्थिति भले ही उस आत्मा पर कोई प्रभाव नहीं डालती लेकिन आत्मा के अन्दर अभी

अव्याबाध गुण प्रकट नहीं हुआ इसलिए उनसे दूसरों को बाधा हो सकती है। भले ही आपको दूसरों से बाधा न हो।

आपकी presence भी दूसरों को tension दे सकती है

कभी-कभी ऐसा भी तो होता है न! हमसे दूसरों को बाधा हो सकती है। लेकिन दूसरों से हमें बाधा हो, कोई जरूरी नहीं है, तो भी कहीं न कहीं हमारे इस शरीर के कारण से बाधा तो उत्पन्न हो ही रही है न! नहीं समझ आया? **tension देने का, लेने का नहीं, बोलते ही न आप लोग।** tension आप ले भले ही नहीं रहे हो लेकिन दे रहे हो तो देने का भाव नहीं होते हुए भी आपकी presence भी दूसरे को tension दे सकती है। समझ लेना कई बार ऐसे दृश्य देखने को मिलते हैं, ऐसे कथानक, वाक्यांश सुनने को मिलते हैं। एक पत्नी ने अपने पति का murder कर दिया। पति ने अपनी पत्नी का murder कर दिया, पति ने अपने बच्चों का murder कर दिया, सबका murder करके और खुद भी suicide करके समाप्त हो गया। रोजाना घटित होने वाली घटनाएँ हैं। क्या है यह सब! बच्चा कुछ नहीं कर रहा है पिता के लिए लेकिन उसकी presence भी पिता को बाधा दे रही है। अगर वह उसका पालन करने में सक्षम नहीं है, वह यह सोच रहा है कि मेरे मरने के बाद में बच्चा तड़फेगा इसलिए वह बच्चे को ही पहले समाप्त कर देता है और फिर बाद में suicide कर लेता है। ऐसे न जाने कितने पढ़े-लिखे लोग, इतनी अज्ञानता के काम कर रहे हैं। यह सब क्या है? आपके सामने मान लो आपकी पत्नी है और अगर उसका किसी दूसरे से सम्बन्ध है और वह अगर किसी दूसरे को चाहने लगी है, तो आपकी presence ही उसके लिए बहुत बड़ी बाधा हो जाएगी। कहेगी नहीं, सोचेगी...यह कब यहाँ से हटे? कैसे यहाँ से जाए? इसीलिए जब तुम प्रवचन सुनने आओगे तो बहुत खुश होगी वह, थोड़ी देर के लिए गए तो घर से बाहर कम से कम। जब तुम अपने business के purpose से office में चले जाओगे तो वह बड़ी खुश होगी और जैसे ही तुम घर में आ जाओगे मुँह बना लेगी, रोने लगेगी, तरह-तरह की आपके लिए परेशानियाँ उत्पन्न करने लगेगी। अनेक तरह की बाधाएँ केवल आदमी के presence होने से ही उत्पन्न होने लग जाती हैं। तुम किसी को tension नहीं दे रहे हो लेकिन तुमसे tension किसी को हो सकता है। देने की बात तो और हिंसात्मक हो गई।

न tension देने का, न tension लेने का, तब भी tension हो जाता है

नहीं समझ में आया! देना नहीं है tension. यहाँ तो आचार्य कह रहे हैं...**न tension देने का, न tension लेने का, बस mention करने का।** क्या समझ में आया? न देने का, न लेने का, बस mention करने का मतलब **समझने का** कि हमसे किसी को tension तो नहीं हो रहा। अब तुम कब-कब किसके बारे में सोचते फिरोगे? हमको किसी से tension तो नहीं हो रहा। तुम्हारे रहते हुए, तुम्हारे रास्ते में चलते हुए, तुम्हारे कहीं उठते-बैठते हुए, किसको कितनी परेशानी हो सकती है? तुम किस-किस का ख्याल रखोगे। मान लो हम ही हैं रास्तों पर निकल जाते हैं। हो सकता है कोई ऐसे भी लोग हो, ऐसे भी कोई व्यक्ति हो, जो यह देख कर के, क्यों इन रास्तों पर निकल आते हैं इस तरीके के भेष के साथ में, हमें पता नहीं है वह tension ले सकता है। **हम नहीं भी दे रहे हैं, तो भी tension किसी के लिए हो सकता है। इसलिए पूर्ण अहिंसा का भाव रखते हुए भी न tension देने का, न tension लेने का,**

तब भी tension हो जाता है। क्यों हो जाता है? जब तक आपका शरीर है, आपकी presence है इस world के अन्दर, आपको कोई न कोई बाधा होती रहेगी या कोई आपसे बाधित होता रहेगा।

जब भी लगे कोई बाधा है, तो क्या करना?

यह सारी tensions दूर हो जाती है, कब? सिद्ध बनने पर, अव्याबाध गुण प्रकट हो जाने पर, ऐसे सिद्ध भगवन्तों को अगर आप याद करोगे तो आपकी tension भी दूर हो जाएगी। हे भगवन! हमें भी ऐसी tension से मुक्त करो, हमें भी इन बाधाओं से मुक्त करो। भगवान के गुणों का स्मरण करने का यह फायदा होता है। हम क्यों बाधा में पड़े हुए हैं? यह आपको सिद्ध भगवान की अगर याद आ जाएगी तो अपने आप याद आ जाएगी, हमारा शरीर, हमारे सम्बन्ध हमको बाधा दे रहे हैं। हे सिद्ध भगवान! मुझे इन बाधाओं से बचाओ क्योंकि आप इन बाधाओं से मुक्त हो गए हो, आप ही बचा पाओगे। करोगे याद? कब? जब भी लगे कोई बाधा है, तो क्या करना? सिद्ध भगवान को याद करना। हे सिद्ध परमेश्वर! मुझे बचाओ और सिद्ध भगवान को याद करने के लिए आपको **णमो सिद्धाणं** का स्मरण करना और अगर णमो सिद्धाणं याद न आए तो फिर **ओं अर्ह! ओं अर्ह! ओं अर्ह नमः** के भाव में थोड़ी देर डूबने की कोशिश करना। **थोड़ी देर आप बिल्कुल ओं अर्ह नमः में, उसके अक्षरों में, उसके प्रकाश में, उसकी energy में, अपने मन को लगा दोगे, आपकी बाधा शान्त हो जाएगी।** आप करके देखो! यह बाधाओं को दूर करने के तरीके हैं। आज भी आप **अर्ह** के ध्यान से, **अर्ह** के जाप से अपने अन्तरंग में इतनी शान्ति ला सकते हो कि बाहर बाधाएँ होते हुए भी भगवान आपको इतना आशीर्वाद दे दे...बेटा! चिन्ता नहीं कर, भीतर से शान्त रह। सब कुछ सही हो जाएगा, सब हो जाएगा।

शील के स्वभाव की प्राप्ति

ऐसे उन्होंने गुण अपने अन्दर प्रकट कर लिए और जब उन गुणों की गिनती नहीं हो सकती है तब लिखना पड़ा...अन्य-अन्य और भी, उनके अन्दर स्वभाव प्रकट हो गए हैं। कहा जाता है- शील का स्वभाव, शील के ईश, 18 हजार शील के भेद होते हैं। कितने? इनके स्वामी कौन होते हैं? अरिहन्त भगवान नहीं होते या यूँ कह लो सयोगी अवस्था में अरिहन्त भगवान नहीं होते हैं। जब वह अपने शरीर से भी अपना सम्बन्ध छोड़ देंगे तो थोड़ी देर के लिए अयोगी अवस्था में और सिद्ध भगवान होने पर **‘शीलेसिम् सम्पत्ति’** शीलेश की संपत्ति को मतलब शीलेश की प्राप्ति उनको हो गई। शीलों के स्वामी हो गए। जिन शीलों का पालन, संकल्प पूर्ण रूप से उन शीलों की प्राप्ति करने का मुनि अवस्था में हो जाता है, वह शील के स्वभाव की प्राप्ति कब होती है? सिद्ध बनने पर। बीजारोपण यहाँ होता है। 18 हजार शील का पालन करने वाले मुनि महाराज होते हैं, 84 लाख उत्तर गुणों का पालन करने वाले मुनि महाराज होते हैं। कहाँ से 84 लाख उत्तर गुणों का पालन कर लेंगे? लेकिन संकल्प होता है। इस संकल्प की पूर्ति तब होगी जब इस शरीर से भी सम्बन्ध छूट जाएगा। **84 लाख गुण भी किस में प्रकट हो जाएँगे? सिद्धों में प्रकट हो जाएँगे।** अब आपको एक-एक गुण कहाँ से गिनाएँ? यह आठ गुणों का पालन करने, आठ गुणों के धारी! आठ गुणों का वर्णन करने वाले सिद्ध भगवन्तों की व्याख्या में ही, अठारह दिन से ज्यादा हो रहे हैं तो आप समझ सकते हो कि इनके अनन्त गुणों का हम कैसे बखान कर सकते हैं?

आत्मा का स्वभाव है ऊर्ध्व गमन करने का

इसलिए आचार्य इस तीसरी लाइन में कहते हैं...उन्हें अन्य प्रवण विषय की प्राप्ति वाली लब्धियों के प्रभाव से क्या हो जाता है? **‘ऊर्ध्व ब्रज्या स्वभावात्’** ऊर्ध्व गति उनकी हो जाती है। अरिहन्त भगवान की अन्तिम क्षणों में, अयोगी केवली बनने के समय में, उस समय पर उन्हें यह सब स्वभाव आ जाते हैं और उस स्वभाव की प्राप्ति होते ही वह ऊर्ध्व गति, एक समय में प्राप्त करके, लोक के अग्र भाग पर विराजमान हो जाते हैं। **‘ऊर्ध्व ब्रज्या स्वभावात्’** अर्थात् उनके गमन करने का, ऊर्ध्व गमन करने का, उनका स्वभाव होता है। आत्मा का स्वभाव है- ऊर्ध्व गमन करने का। अगर आत्मा अपने स्वभाव से गति करेगी तो कहाँ जाएगी? ऊँची ही जाएगी, ऊपर ही जाएगी। विभाव से गति करेगी तो किसी भी गति में चली जाएगी। लेकिन स्वभाव से गति करेगी तो ऊपर ही जाएगी- स्वर्ग या मोक्षा! वह अरिहन्त भगवान अब स्वर्ग तो नहीं जाएँगे। कहाँ जाएँगे? वह मोक्ष गति को प्राप्त करेंगे और वह **‘समयम उपगतो’** एक समय में ही वह प्राप्त कर लेते हैं। बस! एक समय लगता है।

समय- is the smallest unit of time

एक समय कितना छोटा होता है? जानते हो? आप लोग time को समय बोलते हो। जैन दर्शन में समय is the smallest unit of time. जैसे हर चीज की unit होती है, आप time की unit क्या बनाते हो? second बनाते हो। अब भले ही microsecond, nanosecond आने लग गए हैं लेकिन समय जो है **जैन दर्शन के अनुसार कहीं भी लिखा मिले...एक समय, उसका मतलब क्या समझना?** वह time की smallest unit है, उससे छोटा कोई भी समय का क्षण नहीं होता। second छोटा नहीं होता, चाहे वह micro हो जाए, चाहे nano हो जाए, चाहे super nano हो जाए, कुछ भी हो जाए। वह कभी भी समय जो है, वह सबसे छोटा समय नहीं हो सकता। वह समय के बराबर nanosecond, microsecond नहीं हो सकता। समय ही वह unit है जिससे छोटा कुछ नहीं होता। जब भी कहीं आपको जैन दर्शन पढ़ने में मिले, एक समय में यह काम हो गया, दो समय में यह काम हो गया मतलब समय वह क्षण, वह moment time का जिससे छोटा और कुछ भी नहीं होता, उसको समय कहा जाता है। आप time को समय कहते हो! क्या समय हो गया? उसमें तो असंख्यात समय हो गए। जब तक तुमने पूछा न! कितना समय हो गया? तब तक असंख्यात समय हो गए। जब तक आप उस समय को जानोगे, उस समय में असंख्यात समय बीत जाएँगे। समय मतलब वह एक समय...इसको परिभाषित किया जाता है, जैसे एक अणु, दूसरे अणु का उल्लंघन करने में जितना time लेता है, उसको एक समय कहते हैं। अब वह अणु भी आपका atom नहीं है, वह हमारा atom है जैन दर्शन वाला। Jainism में जो atom बताया जाता है, वह atom, एक smallest particle, दूसरे particle को cross करने में जितना time लेगा, वह भी उतना ही smallest atom होना चाहिए, जितना वह cross करने वाला है और उस time को, वहाँ पर एक समय की व्याख्या के माध्यम से समझाया जाता है। समझ में नहीं आ रहा है या कोई बात नहीं सुन तो रहे हो न? क्या कहा जा रहा है? एक छोटा अणु, दूसरे उसी के पास रखे हुए, दूसरे छोटे अणु के cross करने में जितना time लेगा, उसका नाम एक समय है। इस एक समय में वह अयोगी भगवान, अयोगी अरहन्त केवली, सिद्ध भगवन्त **पदे** को प्राप्त हो जाते हैं और वही सिद्ध भगवान जब बन

गए तो फिर उनके लिए क्या हो गया? वह अपने उस स्वभाव में अब, हमेशा उसी स्थिति में बने रहेंगे। अब उनकी गति नहीं होगी।

स्वभाव कहाँ प्रकट हुआ?

अर्थात् स्वभाव जो प्रकट हो जाता है वह सिद्धों में वहाँ जाकर के नहीं होता, यह ध्यान रखना। स्वभाव कहाँ प्रकट हुआ? स्वभाव तो यहीं हुआ। अरिहन्तों के दो phase हैं- एक सयोग केवली और एक अयोग केवली। अयोग केवली अवस्था में वह सारा स्वभाव प्रकट हो जाएगा क्योंकि योगों से रहित हो गए मतलब शरीर से अब उनका contact हट गया और शरीर से contact हटते ही आत्मा को अपने स्वभाव की प्राप्ति हो गई।

सिद्ध कहाँ बने?

बस! वह एक समय में, वहाँ लोक के अग्रभाग में जाकर के, स्थित हो जाते हैं तो उसको हम कहने लगते हैं- अब! यह सिद्ध आत्माएँ हैं। लेकिन सिद्ध तो कहाँ बन गए? यहीं बन गए। **अरिहन्त अवस्था के उस अन्तिम क्षण में सिद्ध बनकर के ही यहाँ से गए।** सिद्ध कहाँ बने? सिद्ध यहाँ बने।

सिद्ध क्षेत्र- जहाँ से सिद्ध अवस्था प्राप्त की

इसलिए जिस क्षेत्र से सिद्ध बन जाते हैं उस क्षेत्र को सिद्ध क्षेत्र कहलाया जाता है। इसलिए सम्मेद शिखर को, गिरनार पर्वत को सिद्ध क्षेत्र कहा जाता है क्योंकि कहीं नेमीनाथ तो कहीं पारसनाथ वहाँ से मोक्ष गए हैं। ऐसे वह सिद्ध क्षेत्र, जहाँ से उन्होंने अन्तिम उस अवस्था को प्राप्त किया। यह सिद्ध भगवान बनने की प्रक्रिया 'सन्तिष्ठते अग्रये' अग्र भाग में जाकर के 'सन्तिष्ठित' अर्थात् बैठ जाते हैं, उपस्थित हो जाते हैं, स्थित हो जाते हैं। सिद्ध भगवान की वह गति है, यह प्रक्रिया है। आप कहाँ बैठे हो? आप भी उसी सिद्ध क्षेत्र के नीचे बैठे हो। जहाँ आप बैठे हो, आपके ऊपर भी अनेक सिद्ध बैठे हैं।

राजा श्रेणिक कहाँ बैठे हैं?



वह राजा श्रेणिक कहाँ बैठे हैं? बताओ? एक सरोवर के किनारे बैठे हैं और उसको वहाँ सरोवर पर बैठा छोड़ कर के, उनका मातुल, नाम क्या था उस मातुल का? जानते हो? **इन्द्रदत्त नाम था उसका। क्या था?** इन्द्रदत्त! वह इन्द्रदत्त मातुल, वहाँ छोड़ कर के उनको, अपने घर चला गया। कुछ नहीं कह गया, बता गया बाद में देखेंगे, चर्चा करके समझेंगे। आपको बताना है आपको कहाँ अगर कोई दिक्कत हो तो बता देना। नहीं तो मैं अभी तो जा रहा हूँ और वह चला गया। अपने घर में गया, बहुत दिनों के बाद में आया था, उसका अच्छा खासा घर में स्वागत हुआ और घर में उसके एक उसकी प्रिय बेटी थी। कौन थी? उसका नाम था- नन्दश्री। क्या नाम था? जब वह अपने घर में पहुँचा तो उसकी बेटी ने उससे पूछा...पिताजी आपकी यात्रा कैसी रही? रास्ते में क्या-क्या बाधाएँ आई? कौन-कौन मिले? यह रास्ते में पहुँचने के जितने भी, उसके लिए कुछ भी, अपने

संस्मरण थे, वह उसकी बेटी उनसे पूछने के लिए तत्पर हो गई तो वह इन्द्रदत्त सेठ उस बेटी को बताने लग गया। बेटी बाकी तो सब कुछ था, ठीक था, यात्रा तो अच्छी हो गई। last में जब आ रहे थे अपने नगर में तो आते-आते मुझे एक व्यक्ति मिला। देखने में तो भला चंगा अच्छा लग रहा था, बिल्कुल राजाओं जैसा हुलिया था। इतना अच्छा लग रहा था, जब पहली बार मैंने देखा तो मुझे लगा कि तेरा विवाह उसी से कर दूंगा। लेकिन जब वह रास्ते में चलता रहा और उससे बातचीत की तो मुझे लगा कि इससे बड़ा कोई मूर्ख नहीं है, तो मैं ऐसे बुद्धिहीन व्यक्ति से आपका विवाह नहीं करा सकता। लेकिन मैंने सोचा था, देखने में बहुत सुन्दर लगता है, बिल्कुल राजकुमार लेकिन उसकी बुद्धि की जब मैंने परीक्षा की तो मुझे पसन्द नहीं आया और उसे अपने साथ तक लाया। अपने घर तक इसलिए नहीं लेकर के आया क्योंकि बुद्धिहीन लोगों को, पागल लोगों को, घर में लाना ठीक नहीं लगा मुझे। मैं उसे एक सरोवर पर छोड़ आया हूँ। वह अभी भी वहीं बैठा हुआ मिल जाएगा। वहीं कहीं आसपास घूम रहा होगा। अच्छा व्यक्ति था, लेकिन उसकी जो चर्चाएँ थी, वह बड़ी ऊटपटांग थी। उस बच्ची के, बेटी के अन्दर कौतूहल पैदा होने लगा। बताओ क्या उटपटांग चर्चा थी पिताजी? उसके पिता ने उसे सारी कहानी सुना डाली। क्या सुना दी? शुरू कहाँ से किया उसने? जिद्धा रथ से! उसने शुरू किया कि देखो! पहली बार मैं उससे मिला और मिलने के बाद में उसने मुझे सम्बोधन क्या दिया? **मातुल! अब मैं उसका मामा कैसे हो गया?** मैं समझ ही नहीं पाया और वह मुझसे मामा-मामा कहने लगा। मैं यहीं से परेशानी में पड़ गया, फिर वह आगे चलकर के कहता है कि हम लोग जिद्धा रथ पर सवार हो कर के चलेंगे तो रास्ता अच्छे से कट जाएगा। भाई जिद्धा रथ कौन सा होता है? मैंने तो आज तक सुना ही नहीं था, ऐसे करके उसने सारी बातें बताईं। आगे चला तो फिर नदी पार की तो जूते पहन कर पार कर ली। फिर वह छाँव में बैठा तो छाता लगा कर बैठा। फिर गाँव में गया तो गाँव को वह देख कर के कहने लगा कि उजड़ा है कि बसा हुआ है। आगे चलकर के एक शव मिला तो शव को देख कर के कहने लगा...यह आज मरा है कि पहले का मरा है? ऐसी ऊटपटांग बातें करता रहा। आगे फिर एक और धान्य का खेत मिला तो इस धान की फसल इसने खा ली है कि अभी नहीं खाई है? ऐसा प्रश्न पूछने लग गया। फिर आगे एक हल चलाने वाला किसान मिला तो कहने लगा इस हल के स्वामी कितने हैं? इस हल के मालिक कितने हैं? फिर आगे एक बेर का पेड़ मिला तो उसमें कहने लगा इसमें काँटे कितने हैं? अब बताओ ऐसी ऊटपटांग बातें करने वाला मूर्ख के अलावा और कौन होगा?

श्रेणिक के प्रश्नों को इन्द्रदत्त की पुत्री ने समझा

जब उसकी बेटी ने यह सब बातें सुनी तो उसकी बेटी भी बड़ी चतुर थी, उसको समझ में आने लगा कि इस तरह की रहस्य भरी बातें करने वाला व्यक्ति मूर्ख नहीं है...बहुत कला प्रवीण, बहुत चतुर और बहुत बुद्धिमान व्यक्ति है। **पिताजी! आप भूल कर रहे हो। पिताजी तो थोड़े से सकते में आ गए...भाई!** यह क्या कह रही है? बेटी, मुझे समझा रही है। कैसे तुम्हें समझ में आ रही उसकी चतुरता? देखो पिताजी! जब उसने आपसे मातुल कह कर के सम्बोधन दिया तो उसका मतलब यह था, वह भी अजनबी था, आप भी अजनबी थे उसके लिए और दोनों एक साथ मिले, एक ही रास्ते पर जाने वाले थे। उसने सोचा, अगर हम इनसे मातुल कहेंगे मतलब मामा कहेंगे तो यह हमें अपना अच्छा प्रेम देंगे क्योंकि मामा का भांजे पर बहुत अच्छा प्रेम होता है। यह हमें अपना प्रिय मान लेंगे और हम अपना इस तरीके से सम्बन्ध बना कर के आगे चलेंगे तो हमारे रास्ते की यात्रा, हमारी सुखद रूप से हो जाएगी। इसलिए पिताजी उसने आपको मातुल कह कर

के सम्बोधन किया क्योंकि वह आपसे प्रेम चाहता था, आपका प्रिय बनना चाहता था, जैसे मामा के लिए भांजा प्रिय होता है। ऐसा वह भांजे का प्रेम चाह रहा था इसलिए उसने आपसे क्या कहा? मातुल! अब जब दूसरी बात- जब वह आगे बढ़ा चलते-चलते उसने कहा हम लोग जिद्धा रथ पर सवार होकर के चलते हैं। आप समझ नहीं पाए, जिद्धा रथ का मतलब होता है, रास्ता लम्बा हो और बिल्कुल बिना बोले मौन पूर्वक चला जाए तो रास्ता बहुत भारी लगने लग जाता है। वह चाह रहा था कि आप भी मुँह से कुछ बोलो, हम भी कुछ मुँह से बोलें और जब दोनों जिद्धाओं पर, दोनों रथों पर, जब सवार होकर के दोनों लोग चलेंगे तो रास्ता कब कट जाएगा? पता नहीं पड़ेगा। इसलिए उसने कहा था कि जिद्धा रथ पर सवार हो जाओ। आप समझ नहीं पाए। फिर उसकी बेटी कहती है- बताओ पिताजी! आगे क्या हुआ? कहते नदी पार की जूते पहन कर पार कर ली। पिताजी! आपको पता तो है ही है नदी में भी कांटे होते हैं, नदी में भी साँप होते हैं, नदी में भी कुछ चुभने वाली चीजें होती हैं। अगर जूता पहन कर उसने नदी पार की तो उसने गलत क्या कर लिया? उसने अपनी रक्षा करने के लिए नदी को जूता पहन कर के पार किया ताकि नदी की कोई बाधाएँ, उसके लिए बाधा न पहुँचाए। बताओ अच्छा किया कि बुरा किया? जूते महत्वपूर्ण हैं कि शरीर और पैर महत्वपूर्ण हैं? सब कुछ होता है न! नदी में जा रहे हैं, कांटा लग सकता है, पत्थर की नोक लग सकती है, कोई विषैला साँप भी काट सकता है, कुछ भी हो सकता है, तो उसने इस बाधा को प्राप्त नहीं हो इसलिए वह नदी में जूते पहन कर निकल गया।

Tips of life management

अब आप लोग भी ध्यान रखना आगे के लिए कभी पार करनी पड़ जाए। हाथ में नहीं पकड़ लेना। इन्हें कथाओं से सीखना पड़ेगा न कि हमारे लिए **कैसे life management किया जाता है?** फिर वह आगे बढ़ा... अब पेड़ के नीचे छाता लगाकर के क्यों बैठ गया? वहाँ तो वृक्ष की छाया आ ही रही थी। देखो! वृक्ष के नीचे भी बैठने पर आपको पता तो होगा ही लेकिन फिर भी मैं आपको बता रहा हूँ। वह इसलिए वृक्ष के नीचे बैठ के उस पर छाता लगा लिया क्योंकि वृक्ष के ऊपर अनेक पक्षी बैठे रहते हैं, वह बीट कर देते हैं और कभी-कभी तो वृक्ष के फल ही सिर के ऊपर आ कर के गिर पड़ते हैं तो चोट भी लग सकती है। बैठे हो कभी वृक्ष के नीचे कि नहीं? अभी रास्ते में जब विहार हो रहा था, गर्मी का समय था, अच्छे स्थान नहीं मिलते थे तो जहाँ कहीं पर भी अच्छा सा बगीचा दिखा, हम वहीं बैठ जाते थे और एक दिन तो पूरा, कौन सी जगह थी? नारायण पुरा। वहाँ पर वह बगीचे में ही पूरा दिन निकल गया और मैं देखता रहा, उस बगीचे में इतने आम गिरे, इतने आम गिरे वहाँ पर, पाँच-छह लोग खड़े थे और वह आम ही दिन भर बीनते रहे और शाम तक उन्होंने इतनी गठरियाँ बना ली आम की। हम भी पेड़ के नीचे बैठे। अब क्या करें? हमारे पास छाता तो था नहीं। सोचते रहे कि कहीं हमारे ही ऊपर टपक कर न गिर जाए लेकिन नहीं गिरा। पेड़ के नीचे बैठने से छाया तो मिलती है लेकिन अगर अपने पास में सुरक्षा के लिए कोई चीज है, तो उसने अपनी सुरक्षा के लिए उसने अपना छाता तान लिया तो बुरा क्या कर लिया? छाता रखा ही है, तान करके बैठ गया तो क्या बात हो गई उसमें? उसने अच्छा ही किया, समझदारी का काम किया।

नन्दश्री के चतुराई पूर्ण उत्तर

धर्मात्मा कौन?

कौन समझा रहा है? कौन सी बेटा? नन्दश्री। किसको समझा रही है? अपने पिता को समझा रही है। फिर क्या हुआ? अब आगे गाँव मिला, गाँव मिला तो गाँव में आकर के पूछता है कि उजड़ा गाँव है कि अच्छा गाँव है। बसा हुआ गाँव है? इसका मतलब वह यह पूछना चाह रहा था कि इस गाँव में कोई धर्म करने वाले लोग भी रहते हैं कि नहीं? अगर गाँव में कोई धर्मात्मा नहीं है, तो गाँव केवल आदमियों से गाँव नहीं कहलाता है, वह गाँव उजड़ा हुआ गाँव ही कहलाएगा, जिस गाँव में धर्म करने वाले लोग नहीं हो, गुरुओं को मानने वाले लोग नहीं हो, दान आदि कार्य करने वाले लोग नहीं हो, वह गाँव भी उजड़ा गाँव कहलाता है। इसलिए उसने पूछा...इस गाँव में कैसे लोग रहते हैं? यह गाँव उजड़ा है कि बसा हुआ है? बसा हुआ का मतलब जहाँ पर जिन मन्दिर हो, जहाँ पर जिन धर्म करने के लिए उचित साधन हो, वह गाँव तो बसा हुआ कहलाता है और जहाँ पर जिन मन्दिर न हो वह गाँव भी उजड़ा हुआ गाँव कहलाता है। इसीलिए पहले के समय में हर गाँव में एक-एक जिनालय अवश्य हुआ करता था। हर गाँव चमन रहना चाहिए, हर गाँव के लोगों के अन्दर मंगल रहना चाहिए, हर गाँव बसा हुआ रहना चाहिए इसलिए वहाँ पर जिन धर्म को मानने वाले, दया धर्म को मानने वाले लोग हमेशा रहा करते थे।

बन्धन में कौन? मुक्त कौन?

यह गाँव के बारे में पूछा, फिर क्या पूछा उसने? कौन मिला? जब एक व्यक्ति उस स्त्री को पीट रहा था तो उसने पूछा कि यह बन्धन में है कि मुक्त है? उसका मतलब क्या था? आप समझ नहीं पाए पिताजी! वह बड़े चातुर्य के साथ में आपसे बातें करना चाह रहा था। लेकिन आपने उसकी कोई बात का अच्छा उत्तर नहीं दिया। वह बुद्धि में इतना प्रवीण व्यक्ति मालूम पड़ता है कि अगर कोई स्त्री को, कोई पुरुष मार रहा है, पीट रहा है तो वह पूछना चाह रहा था, यह स्त्री इसी की है, विवाहित है या अविवाहित है? बन्धन का मतलब विवाहित हो गई तो बन्धन में है और अविवाहित है, तो दोनों तरह की स्त्रियाँ होती हैं। अब भाई! क्या पता, कौन सी स्त्री को पीट रहा है? किसकी स्त्री को पीट रहा है? यह विवाहित है कि अविवाहित है? इसलिए जानने के लिए उसने पूछा...यह बन्धन में है कि मुक्त है? आ गया समझ में? अब तुम भी ऐसे ही पूछ लेना ऐसे ही कला-चातुरी दिखा कर के घर में जाकर के कुछ पूछना। नहीं समझ में आए तो हमसे पूछ लेना। फिर बाद में स्त्री का प्रसंग हो गया, फिर उसके बाद में क्या मिला?

जिसने जीवन में धर्म श्रवण नहीं किया वह मृत समान है

फिर उसको एक शव मिला। जब उसने पूछा था...यह आज का मरा हुआ है कि पहले का मरा हुआ है? इसका मतलब पिताजी! यह पूछना चाह रहा था कि यह व्यक्ति जो आज यह शव के रूप में यहाँ दिखाई दे रहा है, यह जो शमशान में जल रहा है, इसने पहले कुछ धर्म किया कि नहीं किया? इसने पहले कभी मुनि महाराज के उपदेश सुने कि नहीं सुने? इसने पहले सिद्ध भक्ति पढ़कर के सिद्धों के बारे में कुछ जाना कि नहीं जाना? अगर जाना तो यह पहले से जीवित था, आज मर गया और अगर नहीं जाना तो यह पहले

से मरा हुआ था, आज नहीं मरा। यह पूछना चाह रहा था। पहले से इसने कोई दया का काम, दान का काम, अहिंसा का काम, धर्म का काम, धर्म के उपदेश सुनने का काम, व्रत पालन करने का काम कुछ किया कि नहीं किया था। अगर किया था तो जिन्दा था, आज मरा है और नहीं किया था तो पहले से भी मरा था आज भी जल गया।

लहलहाती फसल को खा चुका है कि खाएगा?

फिर आगे उसको एक सालि वृक्षों का, फसलों का एक उसे अच्छा लहलहाता खेत दिखाई दिया, जब उसने क्या पूछा था? इस खेत का मालिक जो है इसकी फसल को, इसके फलों को खा चुका है कि खाएगा? उसने यह पूछा था। इसका मतलब क्या होता है? वह किसान जिसका यह खेत है, उसने अपने खेत में जो यह फसल लगाई है इसके बीज, इस खेत का मालिक वह खुद है या उसने अपनी फसल लगाने के लिए पहले कोई कर्ज लिया है और तब जाकर के फसल लगाई है। फल तो आ गए, सारे फल आने के बाद भी वह कर्ज चुकाने में ही उसका सब चला जाएगा और अगर कर्ज के बिना उसकी यह खेती हुई होगी तो अब उसके फलों को वह खाएगा, नहीं तो पहले से ही खाया हुआ है। यह कर्ज के बारे में उसने पूछा।

एक हल से कितने लोगों का पोषण?

फिर आगे चलकर के उसे क्या मिला? फिर हल मिला, हल जोतते हुए एक किसान मिला, तब उसने पूछा...यह हल के मालिक कितने हैं? वह पूछना चाह रहा था पिताजी! इस एक हल चलाने से, इस एक किसान के माध्यम से कितने लोगों का पेट पलता है? उसके घर में कितने लोग हैं? और कितने लोगों को वह अपनी खेती से पाल लेगा? यह पूछना चाह रहा था। इतना उसके अन्दर बुद्धि का चातुर्य था, इसलिए उसने ऐसा प्रश्न किया। इस हल के स्वामी कितने हैं? जितने घर में लोग हैं वह सब इस हल के स्वामी हैं। यह पूछा था उसने।

कांटों की दुर्जन प्रवृत्ति से तुलना

फिर अन्त में क्या हुआ? एक बेरी का पेड़ मिला जिसमें कांटे लगे रहते हैं। पूछ रहा था...इसमें कितने कांटे हैं? वह यह पूछना चाह रहा था, जिस गाँव में हम जा रहे हैं उसमें यह जो पेड़ लगे हैं यहाँ कितने ऐसे लोग हैं जो दुष्ट प्रकृति के हैं, जो दुर्जन स्वभाव के हैं? जो कांटे का काम करते हैं। ऐसे कितने लोग हैं जो हमेशा दुष्ट वचन बोलते हैं? वह यह जानना चाह रहा था इस गाँव के बोलने वाले लोग, अच्छे वचन बोलने वाले हैं कि दुष्ट वचन बोलने वाले हैं। यह सब ब्योरा, वह आपके इस गाँव का, नगर का लेना चाहता था, जिससे होकर के गुजरा और आप उसको समझ नहीं पाए। पिताजी! वह व्यक्ति बहुत बुद्धिमान है, चतुर है, अपने कला-कौशल में प्रवीण है, आप उसको मूर्ख मत समझो। अगर आपने कुछ अच्छा सोचा है, तो मेरा मन भी उसके उस बुद्धि-चातुर्य को देख कर के, उसको देखने का हो रहा है। मतलब क्या हो रहा है? बात कुछ बनने वाली है। **लेकिन बात बनेगी! चतुर लोगों की बात भी चतुराई से ही बनेगी।** अब क्या होता है? जब उसकी बेटी ने कहा कि मैं उस व्यक्ति को देखना चाहती हूँ तो उसके पिता ने कहा बेटी! वह व्यक्ति तुम्हें अभी भी वहीं सरोवर पर मिल जाएगा। किसी भी अपनी एक दूती को भेज कर के, अपनी किसी भी दासी

को भेज कर के उसे बुला लेना। मुझे कोई उससे प्रयोजन नहीं है तुम देख लो। आगे की बात मैं बाद में समझ लूँगा। अब वह बेटी बड़ी चतुराई के साथ में एक अपनी सहेली को दूती बना कर के वहाँ भेजने के लिए और सब बता कर के कि देखो! यह चतुर पुरुष है। इसको बड़ी चतुराई के साथ में यहाँ तक लाना है और वह उसको बता कर के भेजती है और उसे एक अच्छी दूती भी मिल जाती है, जिसका नाम था- नि-पुणमति।

जैसे नाम वैसे काम, नाम भी सोच समझ कर रखना चाहिए

जैसे नाम तैसे काम। तुम लोग नाम ही नहीं रखते हो अच्छे तो कहाँ से काम अच्छे होंगे। अच्छे नामों से तुम्हें डर लगता है। आईसा, माईसा, राईसा बस! फिर वह वैसे ही, वह आयसा-आयसी बनी घूमती है। फिर बस जैसे नाम रखोगे वैसे ही उनके भाव होंगे वैसे ही काम होंगे। **निपुणमती, नन्द श्री अच्छे नाम नहीं है? आनन्द देने वाली बच्चियों के नाम के अच्छे नामों के आगे श्री लगाना चाहिए, यह भी एक परम्परा रही है।** कोई भी अच्छा नाम हो...कमलश्री, पुरुषों के नाम के पहले श्री लगता है, तो बच्चियों के नाम के आगे श्री लगता था। ये सब परम्पराएँ भुला दी। क्या इनको जीवित नहीं किया जा सकता? क्या आपके यहाँ बच्चियाँ नहीं होतीं? बच्चे नहीं होते हैं? अगर होते हैं अभी उनके नाम नहीं रखे गए हो तो अच्छे आगे श्री का मतलब होता है- लक्ष्मी सम्पन्न। अगर नाम के आगे लक्ष्मी लगा होगा तो वास्तव में लक्ष्मी सम्पन्न होगी। तुम्हारे घर के लिए भी लक्ष्मी देने वाली होगी और जहाँ जाएगी वहाँ भी लक्ष्मी की वर्षा करेगी। यह नन्दश्री नाम से ही वह है- नन्द मतलब वृद्धि करने वाली, आनन्द देने वाली, इस तरह के नाम हुआ करते थे। निपुणमती! उसकी बुद्धि बड़ी निपुण है, तो निपुणमती को उसने भेजा और वह श्रेणिक वहीं सरोवर पर उसे मिल गया। वह निपुणमती बड़ी सज-धज करके वहाँ गई और वहाँ जाकर के उसने राजा श्रेणिक को देखा। उसको अपने आप उसके रूप से, उसके हुलिए से, उसने उसको पहचान लिया कि हाँ! यह यही व्यक्ति होगा, जिसके बारे में हमारी सहेली ने मुझसे कहा था और वह जब अपना परिचय देती है, तो बात कहती है- उसी सेठ की। उस सेठ के साथ क्या आप ही आए थे? उस श्रेणिक ने कहा...हाँ! हम ही आए थे और फिर जब बात आगे बढ़ती है, तो वह कैसे बढ़ती है? आपकी तरह सीधी-सीधी नहीं बढ़ जाती है। बात भी बड़े लच्छेदार तरीके से आगे बढ़ती है। जिसको कल बताया जाएगा.....

अगुरुलघुत्व गुण

इसी तरह का एक अगुरुलघु गुण, अब उस अगुरुलघु गुण के प्राप्त होने पर उन सिद्ध भगवन्तों में यह भाव आ जाता है कि अब न कोई सिद्ध भगवान किसी से गुरु मतलब बड़े हैं और न किसी से कोई लघु मतलब छोटे रहे। सिद्ध भगवान सब क्या हो गए? बराबर हो गए। अरिहन्त भगवान में अगुरु-लघु गुण प्रकट नहीं हुआ। अपने मुँह से भी बोल लिया करो। जब तक सुनते-सुनते मुँह से नहीं बोलोगे, तुम्हारे मुँह पर यह नाम चढ़ेंगे नहीं और नाम जब तक चढ़ेंगे नहीं तब तक यह हृदय में भीतर से प्रकट होंगे नहीं, भीतर से अभी आपके हृदय में कभी पहुँचेंगे नहीं। यह सिद्धों के गुण हैं, जिन्हें याद करने में भी कठिनाई होती है, बोलने में भी आपको कठिनाई लग रही है। क्या कठिनाई लग रही है? सूक्ष्मत्व, त्व पीछे से लगा देना है सूक्ष्म में, अव-गाहनत्व, अगुरुलघुत्व यह उनके गुण हैं।

अगुरुलघुत्व में क्या हो गया? **अरिहन्त भी छोटे-बड़े होते हैं, सिद्धों में कोई छोटा-बड़ा पना नहीं।** अरिहन्त जब तक सामने हैं उनके सामने जैसे तीर्थकर भी अरिहन्त हैं और उनके सामने कई अरिहन्त बैठे रहते हैं केवलज्ञानी लेकिन बड़े कौन कहलाएँगे? तीर्थकर भगवान कहलाएँगे। चाहे वह पहले के भी केवलज्ञानी क्यों न हो? उनसे पहले भी केवलज्ञान क्यों न ले लिए हो, प्राप्त कर लिए हो। अगर जैसे तीर्थकर महावीर भगवान मानो उनसे पहले भी केवलज्ञानी थे, उनके समय पर भी केवलज्ञानी थे तो वह जो केवलज्ञानी हैं, वह कहलाएँगे पार्श्वनाथ भगवान के समय के केवलज्ञानी, अरिहन्त परमात्मा और मान लो उनकी आयु अभी शेष है और इसी बीच में महावीर भगवान को, वर्धमान स्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई और उनके केवलज्ञान होने पर उनका समवशरण लगा। वह चूँकि तीर्थकर हैं तो उन तीर्थकर के समवशरण में भी हजारों अरिहन्त परमात्मा आकर के बैठे रहेंगे। वह पार्श्वनाथ भगवान के समय के भी होंगे, उनसे पहले भी केवलज्ञान प्राप्त किए होंगे तो भी उनके समवशरण में बैठेंगे, सभासद बनकर के बैठेंगे, वह सभा उनकी नहीं कहलाएगी। उस सभा के, 12 सभा के मुखिया तो तीर्थकर वर्धमान महावीर स्वामी ही कहलाएँगे। यह नई-नई बातें हैं लेकिन अच्छी बातें हैं।

जब तक संसार है तब तक व्यवहार है

जब तक दुनिया है, संसार है व्यवस्थाएँ हैं तब तक यह छोटेपने का, बड़ेपने का यह व्यवहार चलता है। व्यवहार इसी का नाम है। आप बड़ी जल्दी कह देते हो, सब एक समान हैं फिर क्यों छोटा-बड़ा? यह छोटा-बड़ा तो अरिहन्त दशा तक चल रहा है। **जब तक आपके अन्दर अगुरुलघु नाम का गुण प्रकट नहीं होगा, तब तक यह गुरु-लघु की व्यवस्था बनी रहेगी और इसी व्यवस्था के कारण से उस जीव का सिद्धपना प्रकट नहीं होगा। यह अगुरुलघु की व्यवस्था कब छूटेगी?** कौन किससे बड़ा? कौन किससे छोटा? सिद्ध बनने के बाद में अब न कोई किसी से बड़ा और न कोई किसी से छोटा, सभी सिद्ध बराबर हैं, सभी सिद्ध समान हैं। लेकिन अरिहन्त जब तक सामने रहेंगे तब तक उन अरिहन्तों में भी छोटे-बड़े की कल्पना चलती रहती है। बड़े कौन कहलाएँगे? तीर्थकर बाबा बड़े बाबा कहलाएँगे। उनके सामने चाहे उनके दादा ने भी केवलज्ञान क्यों न प्राप्त कर लिया हो? नहीं समझ में आया? दादा ने कर लिया हो, नाना ने कर लिया हो, दादा के दादा ने कर लिया हो और बच्चे की आयु अभी थोड़ी भी क्यों न हो? लेकिन उसके लिए तीर्थकर बनना है और तीर्थकर प्रकृति का उदय होना है, तो दादा भी उसके समवशरण में आकर के बैठेंगे और वह भी उससे छोटे कहलाएँगे। अरिहन्त होने के बावजूद भी क्योंकि आप उनके समवशरण के सभासद हो। समवशरण किसका? दादा जी का समवशरण नहीं कहलाएगा, बेटे का ही कहलाएगा, जो बेटा तीर्थकर बन रहा है। यह बड़ी व्यवस्था है।

लोग IAS बनते हैं और IAS मान लो कोई direct IAS बन गया, 20-22 साल की उम्र में भी IAS direct बन जाते हैं। first attempt में ही clear कर लिया उसने, IAS बन गया और उसके पिताजी हैं या मान लो दादा जी हैं, वह किसी post पर अपना experience लेते हुए घसीटते-घसीटते 20 साल का experience, तब उनकी कुछ थोड़ी सी progress हुई। फिर उन्होंने 20 साल बाद, कोई एक post पर एक नई progress ले ली और बेटा direct IAS बन गया। वह direct बन गया क्या करोगे? अपना-अपना पुरुषार्थ, अपना-अपना भाग्य। यह सब जगह चलता है। **कितनी भी समान नागरिक**

संहिता लगाने के बावजूद भी कोई समान नहीं हो जाएगा। PM, CM किसी के घर में जाकर के पानी पिया या किसी के भी पैर छू ले, किसी के भी पैर धो ले तो बराबर के हो गए? ऐसा नहीं है। यह सब नाटक कम्पनियाँ होती हैं और इन कम्पनियों में रहकर के सब नाटक करने पड़ते हैं। जो बड़ा है, वह बड़ा ही रहेगा, जो छोटा है, वह छोटा ही रहेगा। अगर वह छोटा-बड़ा बनेगा तो अपने उस ओहदे पर आकर के, पुरुषार्थ करके, जब वह बड़ा बन जाएगा तब वह भी इसी तरीके से करेगा। दुनिया में यह व्यवहार तब तक चलता है जब तक कि इस जीव के अन्दर यह अगुरुलघु नाम का जो आत्मिक गुण है, यह प्रकट नहीं होता, तब तक यह गुरु-लघु की व्यवस्था सदैव बनी रहती है। इसलिए सिद्धों के अन्दर कोई गुरु-लघु का भेद नहीं होता है।

अव्याबाधत्व गुण

ऐसे सूक्ष्मत्व और अवगाहनत्व और बोलो! अगुरुलघुत्व, **एक और गुण होता है- अव्याबाध गुण।** इन सब गुणों के साथ में वह जीव आत्मा, सिद्धों की आत्मा सुशोभित होती है तब उन्हें कहा जाता है- यह सिद्धों के विशेष गुण हैं। चार गुण अरिहन्तों के और चार जो सिद्धों में प्रकट हुए हैं अघाति कर्मों के क्षय से, यह आठ गुण जब प्रकट हो जाते हैं, तब हम उन सिद्धों को अष्ट गुणों से सुशोभित कहते हैं। सुन रहे हो? इन सिद्धों के आठ गुणों की स्तुति करते हुए हमने कभी एक छोटी सी स्तुति में कुछ line लिखी हैं। अगर आपके पास में **‘अन्तर्गूज’** हो तो आप उन lines को पढ़ सकते हो। सिद्ध स्तुति, यहीं से शुरू होती है **‘अन्तर्गूज’**

**सिद्ध शुद्ध लोकाग्र विराजित मेरा आतम शुद्ध बने,
असंख्यात आतम देशों में गुण अनन्त हो प्रकट घने।
समकित श्रद्धामय सिद्धों सी निज आतम में हो संलीन,
सम्यक केवल ज्ञान प्रभा में लोक अलोक रहे नितलीन।
समकित दर्शन गुण में नित ही निज पर का नित दर्शन हो,
गुण अनन्त को धारण करने की शक्ति भी निजपन हो।
ऐसा ही हो सूक्ष्म परिणमन जैसा सिद्ध प्रभू का है,
बादर परिणति नित्य निरादर-आदर का घर जैसा है।
सिद्ध शुद्ध अवगाहित कर लो अपने अवगाहन गुण में,
गुरु लघु भेद मिटा के बैठे तब सम अगुरुलघु गुण में।
व्याबाधा से रहित निराकुल निराबाध का अनुभव हो,
अष्ट गुणों में गुण अनन्त का सिद्ध समान ही अनुभव हो।**

यह कुछ पंक्तियाँ सिद्धों में अपने गुणों को प्रकट करके, उन सिद्धों में ही लीन होने के लिए लिखी गई हैं। **‘बादर परिणति नित्य निरादर-आदर का घर जैसा है’** सूक्ष्मत्वपना जब तक प्रकट नहीं होता, उसका उल्टा है बादर और जब तक बादरपना रहेगा, तब तक कभी न कभी जीव का आदर और निरादर होता रहता

है। इसी तरह से भगवान से प्रार्थना की जा रही है... **‘सिद्ध शुद्ध अवगाहित कर लो अपने अवगाहन गुण में’** हम भी आपके अवगाहन गुण में ही अवगाहित हो जाएँ और **‘गुरु-लघु भेद मिटा के बैठें तब सम अगुरु लघु गुण में’** अगुरुलघु गुण में हम बैठ जाएँ यानि उसमें भी किसी भी तरह का गुरु-लघु का जब भेद न रहे। जैसे आप विराजमान हैं वैसे ही हमारी आत्मा भी आपकी आत्मा में विराजमान हो जाए। ऐसी एकाग्रता वाली, अभेद परिणति वाली भावना करने पर हमारे अन्दर सिद्धों के प्रति एक आदर का भाव उत्पन्न होता है। नहीं तो दुनिया में मिथ्या मतों की कमी नहीं है और उन्हीं मिथ्या मतों के कारण से जीव कई बार भटक भी जाता है।

राजा श्रेणिक ने बौद्ध धर्म अपनाया

सुन रहे हो? राजा उपश्रेणिक ने परीक्षा लेने के बाद में, **उन श्रेणिक राजा के लिए अपने मंत्रियों से कह कर के थोड़ी सी राहत तो ले ली** और वह श्रेणिक अभी जब मंत्रियों के कहने से अपना घर छोड़ कर के बाहर निकले तो घर छोड़ने के बाद में, अपने राज्य से दूर जाने के बाद में, उन्हें संयोगवश कुछ ऐसे लोगों की संगति मिल गई, जिसके कारण से उनका मन कुछ और दूसरा हो गया। क्या कहें? महावीर भगवान का समय था और उस समय पर एक और बड़े यशःकीर्ति को धारण करने वाले एक और व्यक्तित्व का उस समय पर उदय हो चुका था, जिनका नाम गौतम बुद्ध कहा जाता है। उनके सन्यासी, उनके भिक्षु भी जगह-जगह पहुँच कर के धर्म का प्रचार करते थे, धर्म की प्रभावना करते थे और बौद्ध मत- उस बौद्ध धर्म का प्रारम्भ भगवान महावीर स्वामी के समय पर हो चुका था। बौद्ध जिन्हें गौतम बुद्ध कहते हैं, वह भगवान महावीर स्वामी से उम्र में बड़े भी थे और उनसे पहले ही उन्हें बोधि की प्राप्ति हो गई थी। जिन्हें उनकी भाषा में कहा जाता है- बोधि की प्राप्ति होना मतलब उन्हें उस समय पर एक तरह से सर्वज्ञ कह दिया गया था। उस समय पर जब यह हुआ तो उसके बाद में जब वहाँ पर यह श्रेणिक राजा एक नगर से निकले तो उन्हें एक बौद्ध अनुयायी भिक्षुओं का एक समुदाय मिल गया और उस समुदाय के पास में पहुँचने के बाद थोड़ा उनसे परिचय हुआ और परिचय होने पर उन्होंने देखा कि उनके यहाँ पर कोई बौद्ध भिक्षु थे, जो थोड़ा ज्योतिष का ज्ञान रखते थे। उन्होंने उस राजा को देख कर के, यूँ कहें अभी वह राजा नहीं थे लेकिन राजा के जैसे लक्षणों को देख कर के उन्हें बहुत अच्छे से आदर सत्कार किया और उनसे कहा- आप कहाँ से आए हो? कहाँ जा रहे हो? इस तरह से जब उनसे बातचीत की तो उस बातचीत के दौरान ही उन्होंने, उन बौद्ध आचार्य ने, उनसे कहा तुम्हें बहुत जल्दी राज पद मिलेगा और तुम्हारे दुःखों का अन्त होगा। तुम घबराओ नहीं। मैं आशीर्वाद दे रहा हूँ तुमको, श्रेणिक ने जब उन बौद्ध आचार्य की यह बातें सुनी तो श्रेणिक थोड़ा सा उन बौद्ध आचार्य से एक तरह से जुड़ने लग गए।

एक प्रशंसा के कारण से, उनके ऊपर प्रभाव पड़ने लग गया और जब प्रभाव पड़ा तो फिर उन बौद्ध आचार्य ने उन श्रेणिक से कहा- आप अगर बौद्ध धर्म ग्रहण कर लीगे तो आपके दुःख बहुत जल्दी क्षीण हो जाएँगे। क्योंकि बौद्ध धर्म का सिद्धान्त ही है- दुःख का अस्तित्व है- **यह चार आर्य सत्य माने जाते हैं।**

- दुःख का अस्तित्व है;
- दुःख का कारण है;

- दुःख को हटाना है और
- दुःख को हटाने के लिए भी कुछ नियम हैं।

इन चार पद्धतियों के अनुसार यह जो बौद्ध सिद्धान्त चलता है, अगर तुम यह मान लोगे तो तुम्हारे दुःख बहुत जल्दी दूर हो जाएँगे और मैं आपके लिए आशीर्वाद दे रहा हूँ कि आपके दुःख जल्दी दूर हो जाएँगे तो आप जल्दी राजा भी बन जाएँगे। बौद्ध की यह बातें, अच्छी लग गई राजा श्रेणिक के लिए, **यह बातें अच्छी लग गई और उस बौद्ध भिक्षु की इन बातों को सुनकर के श्रेणिक ने उस समय पर बौद्ध धर्म अपना लिया।** जिस धर्म में अगर पूछा जाए कि शरीर और आत्मा एक ही पदार्थ हैं या अलग-अलग हैं तो इसका कोई भी उल्लेख नहीं मिलता है। जिस धर्म के अन्दर अगर चेतना की बात कही जाए तो कहा जाता है कि आत्मा या चेतना एक योनि से दूसरी योनि में जाती ही नहीं है। सब कुछ मृत्यु के उपरान्त बिखर जाता है। जीव एक स्कन्धों का पिण्ड है, तो वह पिण्ड जिस तरह से बिखर जाता है उसी तरह से मृत्यु के उपरान्त सब कुछ बिखर जाता है। फिर भी जीव अगर कुछ चारित्र का पालन कर लेता है, तो उसे कभी न कभी वह चारित्र उसके सामने फिर प्रकट हो जाता है। ऐसी अवधारणाएँ बौद्ध धर्म के अन्दर बताई जाती हैं और उस समय पर श्रेणिक ने जब देखा कि हमारे लिए कोई तो सहारा है, कोई तो हमें अच्छा आशीर्वाद देने वाले हैं, कोई हमारे भविष्य के लिए अच्छा सोचने वाले हैं, तो श्रेणिक ने उनकी बातों को स्वीकार करके उस समय पर बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया।

श्रेणिक को राह में मित्र का मिलना

यह बात श्रेणिक के साथ घटित हो गई और बौद्ध धर्म स्वीकार करने के बाद में वह आगे बढ़ने लग गए। जब आगे बढ़े तो उन्हें एक और भी व्यक्ति मिला। **एक व्यक्ति जो बहुत कहीं से समुद्री यात्रा करके आ रहा था** और उस यात्रा के उपरान्त वह अपने नगर की ओर जा रहा था और रास्ते में उससे भेंट हो गई। भेंट होने के बाद में वह व्यक्ति और श्रेणिक दोनों एक साथ चल पड़े, एक से उन्हें दूसरा मित्र मिल गया। आगे बढ़े, उस गाँव का नाम नंदी गाँव था और जब दोनों लोग आगे बढ़े तो उस नंदी गाँव में पहुँचने पर एक व्यक्ति के घर में गए, जो उस गाँव का मुखिया था और उस व्यक्ति के घर में जाकर के उन्होंने भोजन-पानी के लिए कहा, तो उस व्यक्ति ने उनका अपमान कर दिया। उन्होंने कहा कि हम राजा श्रेणिक के रूप में हैं, हमारे पिता उपश्रेणिक राजा हैं हम उनके राजदूत बन कर के आए हैं ऐसा कुछ उन्होंने परिचय दिया। लेकिन उस व्यक्ति ने उनके इस परिचय की कोई भी तवज्जो नहीं दी और उस व्यक्ति ने उनको और उल्टा फटकार करके घर से बाहर निकाल दिया। तुम्हें यहाँ कुछ खाने-पीने को नहीं मिलेगा और उसके कारण से श्रेणिक को उस समय पर गुस्सा आया और वह गुस्सा लेकर के वह आगे बढ़ गए। खाने-पीने को नहीं मिला लेकिन आगे चलकर के फिर उनके लिए जो उनका मित्र था, उस मित्र ने उनके लिए भोजन आदि की व्यवस्था बनाई और फिर वह मित्र उनके साथ में हो लिया। अब एक मित्र के साथ जब वह आगे बढ़े, अब उन दोनों की कहानी यहाँ से एक अलग रूप में शुरू होती है।

श्रेणिक और उनके मित्र की आपस में बुद्धिमत्ता की परीक्षा—जिह्वा रथ का उल्लेख

श्रेणिक सोचते हैं यह नया आदमी है यह बुद्धिमान है कि नहीं? यह देखना चाहते हैं और जो वह नया आदमी था वह यह देखना चाहता था, यह श्रेणिक बुद्धिमान हैं कि नहीं? श्रेणिक ने उस नए आदमी से कहा...देखो! हम लोग बहुत देर से पैदल चल रहे हैं। एक काम करते हैं हम **जिह्वा रथ** पर सवार होकर के चलते हैं। किस पर? जिह्वा रथ पर। वह जो नया आदमी था उसने सुना यह कौन सा भैया! जिह्वा रथ होता है? **मैंने तो आज तक बहुत तरह के रथ सुने हैं, घोड़ों का रथ होता है, हाथियों का रथ होता है, बैलों का रथ होता है यह जिह्वा रथ तो हमने कहीं सुना ही नहीं।** उस आदमी ने सुनकर के समझ लिया कि यह जो श्रेणिक है, यह कुछ जो है थोड़ा सा दिमाग से ठीक नहीं लग रहा है, कुछ विक्षिप्त सा लग रहा है। जब उसने देखा, चलो कोई बात नहीं, अब जिह्वा रथ वह समझ नहीं पाया तो श्रेणिक भी चुप हो गया और वह आदमी भी चुप हो गया। लेकिन दोनों को एक ही रास्ते पर चलना था तो दोनों एक रास्ते पर चलते-चले गए और चलते-चलते रास्ते में एक नदी मिली। समझते जाना! बुद्धिमानों की बात बता रहे हैं और बुद्धि की परीक्षा भी देखो! कैसे-कैसे एक दूसरे के माध्यम से हुआ करती है।

श्रेणिक द्वारा नदी को जूते पहन कर पार करना

रास्ते में एक नदी मिली और नदी को पार करने के लिए जो व्यक्ति था उसने तो अपने जूते जो थे, वह तो अपने हाथ में ले लिए और पानी में वह नदी में पार करते हुए आगे बढ़ गया। लेकिन जो श्रेणिक थे, उन्होंने अपने जूते-चप्पल जो भी पहने थे, वह उतारे नहीं और वह उसी के साथ में नदी में पार करके पानी में से निकल कर के आगे दूसरे किनारे पर पहुँच गए और जब दूसरे किनारे पर दोनों मिले, तब उस आदमी ने सोचा, यह आदमी तो वास्तव में पागल ही लगता है। **भला पानी में कोई जूते पहन कर के निकलता है?** बताओ? तुम लोगों को भी कभी कहीं थोड़ा सा पानी भरा हुआ मिल जाता है घुटने तक का तो क्या करते हो? अपने जूते-चप्पल अपने हाथ में ले लेते हो। किसलिए? खराब न हो जाए इसलिए, ठीक है। आप भी बुद्धिमान हो, अब देखा जाएगा कि दोनों में कौन बुद्धिमान है? इसकी भी परीक्षा आगे होगी, तो जो वह व्यक्ति था, वह व्यक्ति सोचता है यह श्रेणिक जो है यह दिमाग से कुछ ठीक नहीं लग रहा और यह अपने जूतों को उतारे बिना नदी को पार कर गया। जूते गीले हैं कपड़े गीले हैं और यह चला जा रहा है।

श्रेणिक द्वारा वृक्ष के नीचे छाता लेकर बैठना

चलते-चलते उसने सोचा, चलो कोई बात नहीं और देखते हैं इसका दिमाग क्या काम करता है? चलते-चलते और आगे रास्ते में पहुँचा और रास्ते में पहुँचने के बाद में जब वह दोनों थक गए तो थकने के बाद में एक वृक्ष के नीचे बैठ गए। सुन रहे हो? वृक्ष के नीचे बैठने के बाद भी उनके हाथ में एक छतरी थी तो जो व्यक्ति था उसने तो छतरी अपने अलग रख ली क्योंकि अब तो वृक्ष की छाँव में आ गए। लेकिन श्रेणिक वहाँ पर भी छाता लगा कर के बैठे रहे। समझ में आ रहा है? अब जब उस आदमी ने देखा कि यह श्रेणिक अब तो बिल्कुल निश्चित हुआ जा रहा है कि **यह आदमी दिमाग से ठीक नहीं लग रहा है।** लेकिन अब क्या

करें? मिल गया है रास्ते में हम भी अकेले हैं, यह भी अकेला है। थोड़ी देर रास्ता इसके साथ कट जाए तो चलो हम भी ठीक-ठाक से अपने गाँव तक पहुँच जाएँगे, नगर तक पहुँच जाएँगे और इसका भी रास्ता आगे चलकर के बदल जाएगा। इसको छोड़ कर हम चले जाएँगे लेकिन जब तक साथ में है तब तक तो चलो चलते रहो। इसकी चेष्टाएँ और देखते रहो, यह क्या-क्या करने वाला है, तो उसने देख लिया सब। पहला क्या देखा? उसका दिमाग कहाँ से सनका? जब उसने क्या बोला? जिन्हा रथ पर बैठ कर चलना है। फिर दूसरी घटना घटित हुई जब उसने अपना जूता नहीं उतारा। तीसरी घटना घटित हुई जब वह छाता लेकर के वृक्ष के नीचे बैठ गया।

श्रेणिक द्वारा गाँव को उजड़ा हुआ बताना

अब जब उस छाया में बैठने के बाद भी जब आगे बढ़े तो आगे बढ़ने के बाद में वह फिर एक नए गाँव में पहुँचे। अब गाँव तो पग-पग पर मिलते थे, अभी भी मिलते हैं। अब फिर जब उस गाँव में पहुँचे तो उस गाँव में पहुँचने के बाद में उन्हें दिखाई दे रहा था, एक गाँव है। अच्छा खासा गाँव है और उस गाँव में पहुँचने के बाद में अब श्रेणिक ने अपनी तरफ से उस आदमी से पूछा? वह आदमी तो थोड़ा सा श्रेणिक से डरने लग गया कि भाई यह अपने को समझ में नहीं आ रहा है। इसका दिमाग पता नहीं, कहाँ काम कर रहा है? लेकिन श्रेणिक ही थोड़ा सा, उनको ही अपनी थकान मिटाने के लिए या यूँ कहो जिन्हा रथ पर चलने के लिए, वही उससे कुछ न कुछ बात करने लगे। **उन्होंने उस गाँव को देख कर के कहा...देखो भाई!** बताओ मित्र! आप हमारे मित्र हैं और मित्र को भी उसने मातुल कह कर के पुकारा। मातुल जानते हो क्या होता है? मातुल मतलब होता है- मामा। क्या बोला? अब वह आदमी इस थोड़ी सी चिन्ता में पड़ गया...न जान न पहचान तो क्या कहने लगा? वह मामा जी, मातुल भाई तो वह रास्ते में उसका न नाम ले, न कुछ ले, वह कहे सुनो जी मातुल भाई! आपके लिए यह गाँव दिखाई दे रहा है, यह गाँव बताओ कैसा है? यह उजड़ा हुआ है गाँव है कि बसा हुआ गाँव है। अब उसने अपने माथे पर हाथ ठोका, सोचने लगा इस आदमी को क्या कुछ भी समझ नहीं है अच्छा भरा-पूरा गाँव दिखाई दे रहा है, आदमी दिखाई दे रहे हैं, फसलें दिखाई दे रही हैं सब अच्छा दिखाई दे रहा है। पूछ रहा है हमसे कि उजड़ा हुआ गाँव है कि बसा हुआ गाँव है? समझ में आ रहा है? अब वह आदमी कुछ कह नहीं सका श्रेणिक से और उसने उसको मामा ही कह दिया, मातुल ही कह दिया। फिर वह सोचने लगा कि अब इस बच्चे के लिए, अब उसके सामने बच्चा ही हो गया न भांजा तो अब इस बच्चे के लिए हम क्यों कहें कि मूर्ख है? कोई बात नहीं, अपनी यात्रा थोड़ी बची है और आगे चलते हैं।

श्रेणिक का पिटती हुई स्त्री को बन्धन में या मुक्त पूछना

गाँव में प्रवेश कर रहे थे, गाँव में चले आगे तो गाँव में एक किसान अपनी स्त्री को पीट रहा था। क्या कर रहा था? प्रताड़ित कर रहा था, मार रहा था। समझ आ रहा है? **श्रेणिक पूछता है बताओ यह स्त्री बन्धन में है या मुक्त है?** क्या पूछता है श्रेणिक उससे? मातुल जी बताओ यह स्त्री बन्धन में है या मुक्त है? अब वह सोचता है कि देखो! कितना बेवकूफ आदमी है यह, जब वह उसको मार रहा है, पीट रहा है तो बन्धन में ही दिखाई दे रही है लेकिन फिर भी यह पूछे जा रहा है कि यह बन्धन में है कि मुक्त है। आप होते तो क्या

बोलते? बोलो तो! आप होते तो क्या करते? जूते अपने हाथ में ले लेते। आप होते तो क्या करते? छाता पेड़ के नीचे बैठने पर अलग रख देते। आप होते तो क्या करते? गाँव को अच्छा बसा हुआ देख कर के बसाहट के साथ में कहते। आप हो तो क्या करते? स्त्री को प्रताड़ित देख कर के, क्या कहते? बन्धन में है। समझ आ रहा है?

श्रेणिक का शवयात्रा को देख कौतूहल होना

फिर आगे चले, गाँव के बाहर एक श्मशान घाट मिला वहाँ पर एक शव यात्रा चली आ रही थी। सुन रहे हो? उस सबको देख कर के, उस समय पर फिर, **श्रेणिक अपने मातुल से कहते हैं...** सुनो मातुल भाई, एक बात बताओ? यह आदमी आज का मरा हुआ है कि पहले का मरा हुआ है? हँसी आ रही है न आपको भी? अब उस आदमी का भी दिमाग, जो सुन रहा था उसके यह प्रश्न और उसकी बातें तो उसका भी दिमाग अब कुछ जो है न, हाँ! अब वह भी हिलने लग गया। बोले अरे भाई! अब कैसे इससे मुक्ति मिलेगी? थोड़ी दूर और चलना है, क्या करें? रास्ता दोनों का एक ही है, तो वह अब चलते-चलते उसने उत्तर नहीं दिया। सोचा! यह मूर्ख है। इस मूर्ख को क्या अपना उत्तर देना? क्या इससे कोई बात करना? वह सोचता है अपने लिए मौन रहना ही श्रेयस्कर है। समझ आ रहा है? वह भी अपनी जगह बुद्धिमान है, मूर्खों से क्या बात करना। अब यह मूर्खपने की बातें कर रहा है यह आदमी, आज मरा है कि पहले का मरा हुआ है। तुम होते तो क्या कहते? अरे भाई! आज जलने आ रहा है, तो आज ही तो मरा होगा। यह सब सुनने के बावजूद भी उस मातुल ने श्रेणिक से कुछ भी कहा नहीं, फिर आगे चले।

श्रेणिक का फसलदार खेत को उजाड़ कहना

फिर गाँव मिला, गाँव का बाहरी स्थान, फसलें लगी हुई थी। खूब अच्छे-अच्छे उसमें शाली के जो पौधे होते हैं, फसलें होती हैं वह लगी हुई थी और उसमें खूब अच्छे-अच्छे फलदार, जो उसके जौ होते हैं, वह सब उसमें थे। **अब उस समय पर भी वहाँ पहुँच कर के कहता है...बताओ?** यह जो खेत है, यह खेत में जो यह फसलें लग रही हैं, यह खेत कैसा है? इसमें जो फसल लग रही हैं यह फसल कैसी हैं? यह खेत उजड़ा हुआ है कि इसमें फसल लगी हुई है। वह क्या पूछता है? यह खेत उजड़ा हुआ है या इसमें फसल लगी हुई है। अब वह फिर सोच में पड़ गया कि देखो सामने-सामने अच्छा सब कुछ दिखाई दे रहा है, अब इसे यह भी पता नहीं है।

श्रेणिक का हल के स्वामी को पूछना

ऐसी चर्चा होते-होते, होते-होते, एक गाँव से दूसरे गाँव, दूसरे गाँव से तीसरे गाँव में पहुँचते-पहुँचते और आगे चलकर के देखता है, एक आदमी किसान था हल जोत रहा था और उसके हल को देख कर के कहता है...बताओ? इसका हल का स्वामी यही है या और कोई है? ऐसा भी प्रश्न उसने कर दिया। अब यह प्रश्न भी उसने सुन लिया और जब तक वह अपने नगर तक पहुँचता है, रास्ते में फिर उसे एक और वृक्ष मिलता है। एक बेरी का बेर होते हैं न, जिसमें बहुत सारे काँटे भी लगे रहते हैं। वह कहता है...बताओ? इस बेरी के पेड़ में कितने काँटे हैं? और ऐसा कहते-कहते श्रेणिक ने अपना रास्ता पार कर लिया लेकिन मातुल ने कुछ

नहीं बोला और जब उसका अपना नगर आ गया तो वह अपने नगर में एक तालाब के किनारे घूमने लगा और घूमते-घूमते उसने उस व्यक्ति से कहा- भैया! अब तुम यही रुको, हम अपने घर जा रहे हैं और घर जाने के बाद में अगर तुम्हें कहीं कोई दिक्कत होगी तो हम फिर तुम्हारे लिए समाचार भेज देंगे। अन्यथा तुम यहीं से अपना रास्ता नाप लेना। अगर हम घर जाने के बाद में, थोड़ी सा चर्चा करने के बाद में, हम उचित समझेंगे तो तुमको बुला लेंगे अपने स्थान पर, नहीं तो तुम अपना रास्ता, आगे अपना नाप लेना। समझ में आ रहा है? क्योंकि अभी वह व्यक्ति समझ नहीं पाया कि यह श्रेणिक बुद्धिमान है कि मूर्ख है। **कभी-कभी बुद्धिमान लोग भी मूर्खों जैसी बातें करते हैं तो सामने वाला बुद्धिमान को भी मूर्ख समझने लग जाता है** और इसी तरह की बातें करते-करते श्रेणिक तो अपने आनन्द में अपना रास्ता पूरा कर लिए। लेकिन उस मातुल का दिमाग उन्होंने खराब कर दिया और जब वह दिमाग खराब लेकर के अपने घर में पहुँचते हैं, **फिर क्या होता है? वह आपको कल बताया जाएगा।**

करलब करके दे रहा, खग भी जो आनन्द।

शून्य लोक में तुम बढ़ो, खग कहता मति मन्द॥१२॥

पवन शून्य में बह रहा, तरुवर भी है शून्य।

तन का कण कण शून्य है, योगी भी है शून्य॥१३॥

14. सिद्ध भगवान का स्वरूप

सिद्ध भगवन्तों की भक्ति के साथ में यह प्रक्रिया प्रतिदिन भगवान के गुणगान करने के लिए आपके सामने आती है। भगवान के स्वरूप का ज्ञान करने के लिए जो सिद्ध भगवान हमसे बहुत दूर हैं, अमूर्त हैं, उनके विषय में भी अपने श्रुतज्ञान से कुछ जानने के लिए हमें आचार्यों ने बहुत कुछ लिख करके दिया है। उसी को हम पढ़ करके उनके भावों को समझते हुए उन सिद्ध भगवन्तों की भक्ति भी कर पा रहे हैं और उनके स्वरूप का ज्ञान भी समझ पा रहे हैं। इसी प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए आज हम काव्य नम्बर छह प्रारम्भ करते हैं...

**‘अन्याकाराप्ति हेतुर् न च भवति, परो येन तेनाल्प हीनः
प्रागात्मोपात्त देह प्रति कृति रुचिराकार एव हर्मूर्तः’
क्षुत् तृष्णा श्वास कास ज्वर मरण जरा निष्ट योग प्रमोह
व्यापत्या द्युग्र दुःख प्रभव भव हतेः कोस्य सौख्यस्य माता।।**

सिद्धों की आकृति कैसी होती है?



यह आचार्य पूज्यपाद विरचित सिद्ध भक्ति का छठवें नम्बर का काव्य है। यहाँ आगे सिद्ध भगवन्तों के बारे में, उनके स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा जा रहा है... ‘अन्या कराप्ति हेतुर् न च भवति’ जब हम भगवान सिद्धों के आकार का विचार करते हैं कि उनकी आकृति कैसी होती है? उनका आकार कैसा होता है? और कैसा हो सकता है? तब यहाँ कहते हैं कि उनका आकार जैसा आप लोग अन्य-अन्य प्रकार से सोचते हैं, वैसा नहीं होता है। दुनिया में सिद्ध बनने के लिए भी, मोक्ष जाने के लिए भी, निर्वाण पाने के लिए भी, अनेक-अनेक मतावलम्बियों की अनेक-अनेक तरह की धारणाएँ हैं और निर्वाण मोक्ष भी सब लोग अक्सर मानते ही हैं। कोई भी धर्म हो, कोई भी सम्प्रदाय हो, अनेक मत-मतान्तरों में भी निर्वाण माना जाता है, मोक्ष की परिकल्पना की जाती है। जब उनसे मोक्ष के विषय में, उन आत्माओं के विषय में पूछते हैं तो उनकी अवधारणा भी अनेक-अनेक तरह से सामने आती है। बहुत से लोग ऐसा भी मानते हैं कि आत्मा का मोक्ष तो होता है किन्तु मोक्ष होने के उपरान्त उस आत्मा का जो भ्रमण होता है, गमन होता है वह निरन्तर होता ही रहता है। आत्मा आकाश में निरन्तर विचरण करती ही रहती है।

आत्मा का मोक्ष के समय आकार

कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि आत्मा का मोक्ष हो जाने के बाद में, उसका आकार बहुत बड़ा हो जाता है विशाल हो जाता है आकाश के बराबर हो जाता है। आगम के ज्ञान के अनुसार कहा जा रहा है। आचार्य कह रहे हैं कि आत्मा का मोक्ष में कोई अन्य आकार नहीं हो जाता। जैसा आकार उसके लिए पूर्व शरीर का

रहता है, उसी तरह का आकार उसका उस मोक्ष स्थान पर भी होता है। ‘अन्या कारमि हेतुर्’ अन्य आकार की प्राप्ति में कोई हेतु नहीं है **“न च भवति”** यानि अगर हम कोई कारण-कार्य की व्यवस्था से देखें, किस कारण से आत्मा का आकार पूरे लोक में फैल जाएगा? भाई! क्या कारण है? किस कारण से आत्मा छोटा-सा रह जाएगा? किस कारण से आत्मा दुनिया में गति करता रहेगा? किस कारण से आत्मा का अस्तित्व ही नहीं रहेगा या बिल्कुल वह शान्त हो गया... दीपक के निर्वाण की तरह, ऐसा हो जाएगा? इन विषयों में जब किसी से कोई logic पूछा जाता है, कोई कारण पूछा जाता है तो उनके बताए हुए कारण कभी भी विवेकवान लोगों को सन्तुष्ट नहीं कर पाते हैं। इसलिए आचार्य यहाँ कह रहे हैं कि अन्य आकार की कल्पना आप कर सकते हो लेकिन उसके विषय में कोई हेतु नहीं है, कोई कारण नहीं है, कोई logic नहीं है। क्या है फिर? आचार्य कहते हैं... **‘न च भवति, परो येन तेनाल्प हीनः’** वह थोड़ा-सा अल्पहीन हो जाता है। किससे हीन हो जाता है? **‘प्रागात्मा पात देह** पहले जो उसने देह प्राप्त कर रखी है, उस देह का जो आकार होगा, उस देह के आकार से कुछ आकार उसका कम हो जाएगा। पहले का मतलब? जब वह मोक्ष को गमन करता है तो मोक्ष जाने से just पहले, जो मनुष्य की उसकी आकृति है, मनुष्य की उसकी पर्याय है उस मनुष्य पर्याय के आकार की तरह ही उसका आकार होगा लेकिन वह आकार थोड़ा-सा हीन होगा, थोड़ा-सा कम हो जाएगा। यह सिद्ध आत्माओं का, शुद्ध आत्माओं का आकार, निर्वाण होने के उपरान्त भी इस तरह से बना रहता है। अब आप पूछेंगे... हीन कैसे हो जाएगा? कुछ कम कैसे हो जाएगा?

आत्मा के प्रदेशों में संकोच-विस्तार

जब आप देखेंगे कि हम लोगों का जो शरीर है, आत्मा जिस शरीर में रह रही है, उसमें बहुत सारी पोल है, खोल है, सब है उसमें। खोल भी है पोल भी है और जो खोल होती है वहाँ पोल तो होती है। अब आपके सबके शरीर में आत्मा तो सूक्ष्म है और उसका आकार तो हमें दिखाई देता नहीं है। जब भी आकार दिखाई देता है तो हमें अपने शरीरों का आकार दिखाई देता है और शरीरों का जो आकार है, वह बहुत कुछ पोल के साथ में रहता है। जैसे कोई cover हो, उसके अन्दर हवा भर दी जाए cover हटा दिया जाए तो हवा तो निकल गई। अब उसके बाद जो बचा रह गया, वह रह गया original उसका आकार। शरीर है आप देखते हो, शरीर के अन्दर शरीर की मोटाई है। अब इस मोटाई की आत्मा को क्या जरूरत है? यह मोटा कौन हो गया? शरीर हो गया। आत्मा मोटी हो गई क्या? आत्मा के प्रदेश तो उस शरीर में फैले हुए हैं और उस शरीर में फैले हुए, किसी का पेट बहुत सारा निकल आया। यह भी एक पोल है। शरीर की जो मोटाई है- मान लो अपनी बाँह है या जाँघ है उसकी मोटाई है, यह मोटाई तो पुद्गलों की बनी हुई है। आत्मा तो उसमें एक सूक्ष्म द्रव्य के रूप में है और जब यह मोटाई के बिना आत्मा रहेगा तो उसका आकार तो इस मोटाई से रहित हो ही जाएगा। अभी हम जितनी अवगाहना घेर रहे हैं, जितनी जगह घेर रहे हैं, शुद्ध आत्मा के लिए उतनी जगह घेरने की जरूरत नहीं रह जाएगी। उससे कम जगह में वह आत्मा समा जाएगा। जो design अभी इधर-उधर बनी हुई है, आगे पीछे निकली हुई है... यह मुँह बना हुआ है, इसमें नाक है, ये दो छेद हैं, इधर कान लटक रहे हैं। ये सब extra चीजें हैं, ये सब शरीर के साथ जुड़ी हुई हैं। जब शरीर नहीं होगा तो इनमें फैले हुए आत्मा के प्रदेश है, वे सब compressed होकर के एक बराबर level पर आ जाएँगे। यह सब जो extra मोटाई दिखाई दे रही है, यह सब उसकी कम हो जाएगी। आत्मा आकृति में तो यही रहेगी लेकिन उसकी आकृति में जो अवगाहना है उसकी, स्थान घेरना है जो उसे आकाश का, वह उसके लिए कुछ कम

हो जाएगा। लेकिन पूर्व शरीर के आकार के अनुसार ही वह उसका आकार माना जाएगा। इसके पीछे हेतु देते हैं, कारण देते हैं...क्योंकि आत्मा के प्रदेशों में जो संकोच और विस्तार होता है, वह तब तक होता है जब तक शरीर नाम कर्म का उदय चलता है। शरीर नाम कर्म का उदय हट गया, आत्मा के प्रदेश जैसे संकुचित स्थिति में आ गए, वे वैसे ही बने रहते हैं। इसलिए अयोग अवस्था में जैसा उन अरिहन्त परमात्मा के शरीर का आकार होगा वैसा ही आकार उस आत्मा का बन गया। शरीर छूट गया और वह आकार ही सिद्ध रूप में जाकर के प्रतिष्ठित हो गया। क्योंकि सिद्ध कहाँ से बन कर गया? सिद्ध यहीं से बन कर गया। वहाँ जाकर के सिद्ध नहीं बना। आकार कहाँ बना? आकार भी यहीं बना। वहाँ जाकर के कोई shape नहीं बनेगी, वहाँ कुछ change नहीं होगा। वहाँ तो वही होगा, जो यहाँ से लेकर के गया और यहाँ से लेकर के जाने में जो उसकी time लगा, वह कल आपको बताया था- **एक समय**। समय मात्र में वह वहाँ पहुँच गया।

आत्मा की अवगाहना

आकृति उस आत्मा की कहाँ से बनी? यहाँ जितनी size के अरिहन्त होंगे, उस size की वह आकृति बनेगी। 500 धनुष की अवगाहना वाले होंगे, उससे भी बढ़कर के **525 धनुष की maximum** जो है वह height होती है, अवगाहना हो सकती है जैसे **बाहुबली भगवान** की थी। यह अधिक से अधिक अवगाहना वाले जीव होंगे और कम से कम वाले भी होंगे तो कम से कम वह **अवगाहना साढ़े तीन हाथ** वाले होंगे। इस तरह की अवगाहना के साथ में भी वह भगवान की आकृति बनी रहती है और वह आकृति जैसी बन गई, वैसी की वैसी हमेशा अनन्त काल के लिए बनी रहेगी। उस आकृति में कोई भी परिवर्तन नहीं होता है और यह परिवर्तन नहीं होने के पीछे कारण क्या है? अब उनके लिए किसी कर्म का उदय नहीं होने से कोई संकोच-विस्तार उनके स्वभाव में अब नहीं होगा, यह logic है। पहले जो आत्मा छोटा-बड़ा बनता था, छोटे-बड़े शरीर को धारण करता था, उसके पीछे कारण क्या था? **‘शरीर नाम कर्म का उदय’** वह नाम कर्म उसे जिस तरह की रचना करा देता था, वह वैसा ही छोटा या बड़ा बन जाता था। योग उसमें एक बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं और उन योगों का भी अभाव होने पर, नोकर्मों का भी अभाव होने पर और शरीर नाम कर्म का भी अभाव होने पर, वह आत्मा इन सबसे रहित होकर के, जिस तरह से चरम शरीर का आकार है, बस! वैसा ही बना रहेगा। इसको बोलते हैं- **चरम शरीर के आकार के बराबर- चरम मतलब last, अन्तिम। अन्तिम जन्म का, अन्तिम शरीर जिस आकृति में होगा, वही आकृति उन सिद्ध भगवान की बन जाती है।**

भगवान कौन से आसन से मोक्ष जाते हैं?

अब कोई भगवान खड़े हुए मोक्ष जाते हैं, कोई भगवान अन्त समय में बैठे हुए मोक्ष जाते हैं। जब बैठे होंगे तो उनकी आत्मा के शरीर की आकृति इस तरह की होगी। **जब खड़े होंगे तो उनके शरीर की आकृति कायोत्सर्ग के उस posture में होगी।** जब वह सिद्ध बन जाएँगे तो सिद्ध बनने के बावजूद भी उनकी आत्मा की आकृति फिर कैसी रहेगी? अगर खड़े होकर के मोक्ष गए हैं तो खड़े होकर के ही वह मोक्ष में हमेशा दिखाई देंगे और बैठ करके मोक्ष गए हैं तो बैठे-बैठे ही वह वहाँ पर हमेशा दिखाई देंगे। शरीर अन्त में जिस तरह की अवस्था में होगा, जिस तरह के posture में होगा, उसी तरह की आकृति सिद्ध भगवान की

बन जाती है, बस! area थोड़ा सा न्यून हो जाता है, कम हो जाता है। जब भगवान की आकृति बनती है तो आप समझ सकते हो- कितने ही तीर्थकर ऐसे भी हैं, जो खड़े होकर के मोक्ष गए हैं और कितने ही तीर्थकर ऐसे भी हैं जो बैठ कर के मोक्ष गए हैं। जानते हो भगवान के बारे में? बताओ? भगवान कौन-कौन से बैठ कर के मोक्ष गए हैं? पता है आप लोगों को? रोजाना भगवान की पूजा करते हो, सिद्ध भगवान की आराधना करते हो। हम कोई-कोई तीर्थकरों को देखें तो बैठे हुए भी, वह सिद्ध शिला पर बैठे होंगे। सिद्ध लोक में वह बैठे हुए posture में होंगे? कौन-कौन से भगवान हैं वह?

कौन से भगवान किस आसन से मोक्ष गए?

सबसे पहले तीर्थकर...**आदिनाथ भगवान**, वह बैठे-बैठे ही मोक्ष गए हैं। समवशरण विघटित हो जाता है उसके बाद में भी उनकी दोनों अवस्थाएँ हो सकती है। कोई बैठे हुए भी हो सकते हैं, कोई खड़े हुए भी हो सकते हैं और अन्तिम क्षणों में आदिनाथ भगवान बैठे हुए ही मोक्ष गए और **अन्तिम तीर्थकर वर्धमान भगवान खड़े-खड़े मोक्ष गए**। केवल तीन तीर्थकर ऐसे हुए, जो बैठे-बैठे मोक्ष गए हैं। बाकी के सब तीर्थकर खड़े-खड़े कायोत्सर्ग अवस्था में ही मोक्ष को प्राप्त हुए। पहले तीर्थकर आदिनाथ भगवान, 12वें तीर्थकर **वासुपूज्य भगवान**, वह भी बैठे-बैठे मोक्ष गए हैं और 22वें तीर्थकर **नेमीनाथ भगवान...** ये तीन तीर्थकर बैठे-बैठे मोक्ष गए हैं और बाकी के सब तीर्थकर खड़े हुए मोक्ष गए हैं।

मोक्ष जाने से पहले कितनी आकृति?

अन्य जीवों के मोक्ष जाने के लिए, कोई भी तरीके का, वह इन्हीं दो में से कोई न कोई उनकी आकृति होगी क्योंकि मोक्ष जाने से पहले की आकृति दो ही बताई जाती है, तीसरी नहीं है। वह किसी न किसी तरह का, मान लो उपसर्ग भी हो जाए, किसी न किसी तरह से किसी को कुछ भी कर दिया जाए लेकिन केवलज्ञान होने के बाद में वह आकृति या तो बैठी रहेगी या खड़ी रहेगी, दो ही आकृति होंगी और वह उनको मोक्ष हो जाएगा। ऐसे-ऐसे भी जीव होते हैं जिन्हें कहीं से गिरा दिया जाता है, पटक दिया जाता है, अग्नि में डाल दिया जाता है, समुद्र में फेंक दिया जाता है और उसी अवस्था में, मान लो उल्टी अवस्था में उनको ऊपर से कहीं से गिरा दिया गया और वे इतने एकाग्रचित रहते हैं कि वे उसी अवस्था में ध्यान कर लेते हैं और उसी अवस्था में उन्हें केवल ज्ञान भी हो जाता है। अब आप कहोगे कि किसी को अगर ऊपर से पटका गया है तो उसका सिर नीचे होगा, पैर ऊपर होंगे और उसी अवस्था में उसे केवलज्ञान होकर के मोक्ष हुआ है तो फिर उसके पैर ऊपर दिखाई देंगे, सिर नीचे होना चाहिए। तर्क तो लगाया जा सकता है न! ऐसा नहीं होगा। क्यों नहीं होगा? क्योंकि केवलज्ञान जब होगा तो जैसे ही केवलज्ञान होगा, वह शरीर सीधा हो जाएगा। चाहे वह शरीर, अन्य तरीके से जो उसको नुकसान हो गया, मान लो, किसी ने उनके शरीर को जला दिया है उसकी पूर्ति भले ही न हो पाए लेकिन शरीर सीधा हो जाएगा और उसी क्षण में जब शरीर सीधा हुआ तो वही उनके लिए या तो खड़े होने का posture बनेगा या बैठे का posture बनेगा और फिर उसके बाद में ही उनके लिए मोक्ष होना होगा क्योंकि उसके बीच में भी थोड़ा समय लगता है। केवलज्ञान प्राप्त होने के मोक्ष के बीच में भी **अन्तर्मुहूर्त** का तो कम से कम समय लगता ही है। जो जीव ऐसे एक अन्तर्मुहूर्त में तुरन्त केवलज्ञान होने के बाद में मोक्ष चले जाते हैं, उन्हें कहते हैं- **अन्तःकृत केवली**। क्या बोलते हैं? **अन्तःकृत**

केवली। एक अन्तर्मुहूर्त में वह मोक्ष को प्राप्त हो गए।

ध्यान की अवस्थाएँ

जब भी कभी आपसे ध्यान करने को कहा जाता है तो आपसे कहा जाता है...ध्यान करने के लिए दो ही तरह की अवस्थाएँ हैं या तो बैठ कर के या खड़े होकर के। जब बैठ कर के करना है तो आपको किसी भी तरह का, **अर्धपद्मासन** हो सकता है, पूरा **पद्मासन** हो सकता है, **सुखासन** हो सकता है। यह कोई भी अवस्था हो सकती है। बैठ करके आपके लिए ध्यान करने का एक आसन है और खड़े होकर ध्यान करने का, अपने दोनों हाथों को लम्बा लटका करके, यह **कायोत्सर्ग आसन** है। अपने ध्यान करने के लिए दो ही तरह के तीर्थकरों की यह अवस्थाएँ अपने को प्राप्त होती हैं और **अर्ह ध्यान योग में इन्हीं दो तरह के posture का उपयोग किया जाता है।** इसलिए अर्ह ध्यान योग, पूरा जो जैन tradition है, उसी के अनुसार पूरी इसकी philosophy बनी है और उसी के अनुसार यह पूरा धर्म ध्यान चलता है। आपको दो स्थितियों में बैठना आना चाहिए तब आप ध्यान कर पाओगे। जो आधे पैर जमीन पर लटकाएँ हैं, आधी कमर किसी कुर्सी पर टिकाएँ हैं, उनके लिए ये सब चीजें कठिन हो जाती हैं। योग तो कर सकते हैं वह बैठे-बैठे, ध्यान भी करने की कोशिश करेंगे लेकिन उस ध्यान से उनके लिए वह उपलब्धियाँ नहीं होंगी जो आपको पद्मासन बैठने से और कायोत्सर्ग बैठने से होंगी या कायोत्सर्ग में खड़े होने से होंगी क्योंकि अन्य किसी स्थिति में कायोत्सर्ग नहीं बनता। मान लो आप chair पर बैठे हैं और आपके पैर लटके हुए हैं। आप उस पर बैठे भी हैं तो आप उस स्थिति में कायोत्सर्ग करने का प्रयास तो करेंगे लेकिन वह हो नहीं पाएगा। क्योंकि आपके लटके हुए जो आधे पैर हैं, उन आधे पैरों का sensation अलग होगा और जो बैठी हुई स्थिति है, उसका जो body का posture होगा, उतने में आपको अलग sensation होगा। आपकी स्थिति हिलती-डुलती रहेगी। आप स्थिर नहीं हो पाएँगे उस स्थिति में।

स्थिरता आसन को सिद्ध करने से ही आती है?

स्थिरता आती है उन आसनों से, जिनको हम सिद्ध कर लेते हैं और वह सिद्ध आसन वही होते हैं, जिनमें हम बहुत देर तक रुक सकते हैं। बहुत देर तक रुकने का, बैठने का कार्य जो होता है उसमें या तो बैठे रहना सम्भव है या खड़े रहना सम्भव है। बहुत देर तक आप कहोगे, लेटे रहना भी सम्भव है हमारे लिए। लेकिन लेटे रहते हुए भी आपके लिए वह आसन नहीं रहेगा और लेटे रहते हुए भी आपके लिए वह ऐसी स्थिति नहीं रहेगी कि आप एकदम से लेटे हैं तो बहुत देर तक लेटे ही रहे। आपके लिए उस समय पर भी कठिनाई होगी। शरीर का जैसे-जैसे आपसे सम्बन्ध छूटेगा, आपके लिए निद्रा आने लग जाएगी। लेटने वाले आसन में निद्रा आ सकती है। लेकिन बैठने और खड़े होने वाले आसन में आप निद्रा को जीत सकते हो। इसलिए निद्रा जीते बिना ध्यान नहीं होता और निद्रा को जीतने के लिए यही दो आसन बचते हैं।

केवलज्ञान की प्राप्ति पद्मासन या खड़गासन में ही होती है

भले ही वैदिक दर्शन में, हिंदुओं के यहाँ पर, 80-84 प्रकार के आसन बताए जाते हैं लेकिन ध्यान जिन आसनों में लगता है, वह दो ही आसन है या तो **पद्मासन या खड़गासन**। इन्हीं दो आसनों के माध्यम से केवलज्ञान की प्राप्ति होती है और केवलज्ञान होने के बाद में कोई भी आत्मा, किसी भी तरह के आसन में हो वह इसी आसन में आ जाएगा, इसी स्थिति में आ जाएगा। उसका मोक्ष में भी अगर रूप रहेगा, उसके प्रारूप रहेगा, उसकी कोई प्रतिकृति रहेगी, एक शब्द आया इसमें- प्रतिकृति... **‘प्रागात्मो पात देह प्रति-कृति’ लिखा है न..रुचिराकार ...उनका आकार कैसा होता है?** पहले प्राप्त हुए शरीर के आकार के अनुसार ही उसकी प्रतिकृति रहती है। प्रतिकृति तो समझते हो न! उसी की फोटो है वह। कृति होगी तो प्रतिकृति होगी। बिम्ब होगा तो प्रतिबिम्ब होगा। इसी तरह से उनकी वह प्रतिकृति मतलब जो कृति पहले उनके शरीर की बनी हुई है, उसकी प्रतिकृति, वही दिखाई देगी, हुबहू उसी आकार में वह होंगे। जो प्रतिकृति होगी वह मात्र दो ही आकारों में उपलब्ध होती है- या तो खड़गासन या पद्मासन। श्वेताम्बर परम्परा में कहा जाता है कि भगवान महावीर स्वामी को केवलज्ञान एक दूसरे आसन में हुआ। **वह गोदुहू आसन कहलाता है**, उसको। गाय दोहते हैं न ऐसे मतलब थोड़े से घुटने के बल बैठ करके गाय दोहते हैं तो ऐसे आसन में भगवान बैठे थे, ऐसा वह बताते हैं। उनके शास्त्र में ऐसा लिखा है। जो भी है, जानना तो सब चीजें चाहिए। अब वह गोदुहू आसन में केवलज्ञान उनकी हो गया। चलो मान भी लिया हो गया लेकिन गोदुहू आसन में केवलज्ञान होने के बाद में वह हमेशा उसी आसन में नहीं बैठे रहेंगे। मोक्ष जब भी होगा तो उन्हें पद्मासन में या कायोत्सर्ग आसन में ही होगा। यह मोक्ष की व्यवस्था है।

आसनसिद्धि होना आवश्यक है

आचार्य केवलज्ञान के लिए भी कहते हैं...अगर आप जाग्रत हैं, आपके ऊपर कोई उपसर्ग नहीं हो रहा है तो आपके लिए नियम से ये दो ही आसन होने चाहिए और होते हैं। जिनमें हम बहुत देर तक रुक करके जाग्रति पूर्वक ध्यान कर सकते हैं। वह दो आसन पद्मासन और खड़गासन ही है। इसलिए आसन सिद्धि होना जरूरी है। जो ध्यान की सिद्धि करना चाहते हैं, उन्हें आसन सिद्धि पहले करनी होती है। यह आसन सिद्धि के बिना ध्यान सिद्धि नहीं होती। **आचार्य महाराज के लिए आपको बताएँ, उन्हें बहुत अच्छे से आसन सिद्धि है।** अभी जब कुण्डलपुर में, जब आचार्य महाराज के दर्शन किए, उनके पास बैठते थे तो भले ही वह बहुत अस्वस्थ दिखाई देते थे और उनके लिए सेवा करते थे, वैयावृत्ति भी करवा लेते थे लेकिन वह कहते थे.. दिन भर मैं कितना ही अस्वस्थ क्यों न दिखाई दूँ, कितना ही अस्वस्थ क्यों न रहूँ लेकिन सामायिक के time पर मैं सुबह 3:00 बजे जो आसन लगा कर के बैठ जाता हूँ...सुबह 6:00 बजे तक मेरा वह आसन लगा रहता है। इतनी आसन सिद्धि है, उन्हें। **आसन सिद्धि से ही ध्यान सिद्धि होती है** और वह खुद कहते हैं आचार्य गुरुदेव कि आसन अगर सिद्ध है आपको तो उस आसन में फिर आप लम्बे समय तक बैठे रहोगे। आपको किसी भी तरह की पीड़ा नहीं होगी और आपका मन ध्यान में लग जाएगा। आचार्य गुरुदेव कितना भी अस्वस्थ क्यों न हो, वह सामायिक करते हैं और अगर उन्होंने आसन लगा लिया तो उनके उस आसन से एक घण्टे, दो घण्टे की सामायिक तो आराम से, कितनी भी अस्वस्थ अवस्था में कर जाते हैं। यह उनकी विशेषता है। किससे? कौन से आसन? जो रामदेव बाबा आसन लगवाते हैं वह आसन अलग हैं और जो

अपने आचार्य गुरुदेव लगवाते हैं, आसन, वह आसन अलग है। रामदेव भी यही कहते हैं...आसन अगर आपको समझना है तो **आसन का मतलब ही होता है- स्थिरता लाना, शरीर में स्थिरता लाना**। आपने बहुत जल्दी-जल्दी 10 तरह के आसन लगा लिए। वे आसन आपके लिए थोड़ी flexibility में, body में काम आ सकते हैं लेकिन उससे ध्यान में कोई आपको मतलब आनन्द नहीं आएगा या ध्यान के लिए वह सहायक नहीं होंगे। जैसे मान लो वह सूर्य नमस्कार आसन लगता है, जल्दी-जल्दी उन्होंने सब तरह के step कर लिए। जो 12-13 step होते हैं, वे सब उन्होंने कर लिए तो आप कर तो लोगे लेकिन आसन वही कहलाता है, जिसमें आप कुछ देर तक स्थिर रहें।

श्रासोच्छवास से मन की स्थिरता

अगर आपका शरीर स्थिर होगा तो मन स्थिर होगा। आप देख लो! आप कहते हो कि मेरा मन स्थिर नहीं रहता। बैठते ही हमारा मन कहीं भी घूम जाता है। इसका मतलब है कि आपका शरीर भी स्थिर नहीं है। जो व्यक्ति शरीर स्थिर करना जानेगा, वह व्यक्ति श्वास को स्थिर करना जानेगा और जो श्वास को स्थिर करते हुए जान लेगा, उसको स्थिर कर लेगा, उसका मन तीसरी जगह कहीं जा ही नहीं सकता है। जिसने अपनी श्वास को, **श्रासोच्छवास** को control कर लिया, उसने अपने मन को भी control कर लिया क्योंकि हमारी श्वासोच्छवास भी एक प्राण है और वह **प्राण** हमारे मन के अनुसार चलता है। मन और श्वासोच्छवास एक दूसरे के साथ चलते हैं। मन को स्थिर करने का इसलिए एक तरीका यही होता है कि आप जब का-योत्सर्ग करें तो अपने श्वासोच्छवास पर ध्यान देते हुए कायोत्सर्ग किया जाता है। एक कायोत्सर्ग का भी जो सही तरीका होता है- **27 श्रासोच्छवास को गिनना**। जो श्वास एक लेते हैं, एक छोड़ते हैं, उसे एक count किया जाता है। खींचना भी नहीं और फेंकना भी नहीं। कायोत्सर्ग करते हुए आपको कुछ नहीं करना, न कपालभाती करना, न कुछ अनुलोम-विलोम करना। कायोत्सर्ग में सहज जो श्वास चल रही है, आप सिर्फ उसको count करें, सामान्य रूप से। आपके बिल्कुल प्रयास के बिना वह श्वास चलनी चाहिए और उस श्वास को आप देखें।

श्रास और चेतना का सम्बन्ध

यह श्वास हमारी चेतना से जुड़ी हुई है क्योंकि जब तक चेतना है तभी तक श्वास है। चेतना दिखाई नहीं दे रही है क्योंकि आचार्य कहते हैं- वह अमूर्त है। भले ही संसार अवस्था में कथंचित् मूर्त है तो भी दिखाई नहीं देती। दिखाई क्या देती है? श्वास। इसलिए प्राण जब देखने होते हैं तो क्या देखना पड़ता है? भीतर चेतना बची है कि नहीं? किससे पता पड़ेगा? भाई! इसकी श्वास देखो, प्राण देखो, कहीं पर बचें हैं कि नहीं? समाधि हो जाती है, उसके बावजूद भी टटोलना पड़ता है पूरे शरीर में। पूछ लो सिद्धार्थ जी से? ok करना पड़ता है। कभी-कभी doctor को ही बुलाना पड़ता है। मतलब 'he has gone' मतलब जब doctor कह देगा तब वह confirm होता है। नहीं तो कई बार गड़बड़ हो जाती है। नाक से श्वास नहीं समझ में आती है चल रही है कि नहीं चल रही है। कई बार श्वास यहाँ अटक जाती है। कई बार श्वास पैरों में अटक जाती है। छाती में अटक जाती है। फिर थोड़ा-सा हिलाओ-डुलाओ फिर थोड़ा-सा उसको कुछ वहाँ पर तलवों पर घिसो, थोड़ी-सी गर्मी आ जाए तो फिर उसमें जान-सी आ जाती है। फिर बोलने-हिलने लग जाता है। बाबा जी

देखो .. कई बार देखने लग जाता है। ऐसा लगा था चला गया पूरा बाबा जी तो नई कोई चेतना नहीं आ गई, नया कोई जन्म नहीं हो गया। कभी-कभी वह श्वास जो अटक जाती है, लोग उसको समझ नहीं पाते। कभी-कभी इसमें doctor भी धोखा खा जाते हैं। **pulse** के माध्यम से वह देखी जाती है और वह pulse कई जगह चलती है। श्वास भी बिल्कुल मन्द हो जाए, छाती भी बिल्कुल हिलना-डुलना बन्द हो जाए, यहाँ पर भी stethoscope लगाकर कुछ समझ न आए कई बार और फिर भी उसके pulse चलेगी। कहाँ चलेगी pulse? या तो उसकी हाथ में चलती है या पैर में चलती है और कहीं पर भी अगर pulse चलती हुई मिल गई तो समझ लो अभी इसमें जान है। थोड़ा-सा उसके लिए कुछ रगड़ दो और कुछ उसको चेतना में लाने की कोशिश करो तो श्वास जैसे ही उसकी आई, चेतना आ गई। चेतना का सम्बन्ध किससे जुड़ा है? श्वास से जुड़ा है। हमें अपनी चेतना को समझने के लिए इसलिए श्वास के निकट आना पड़ता है। फिर हम अपनी उसी से चैतन्य प्राण की ओर जाते हैं और उसी के माध्यम से फिर हम अपने मन को स्थिर कर पाते हैं।

ध्यान में स्थिर रहने के लिए शरीर का स्थिर होना जरूरी

हर किसी को अगर ध्यान में अपने मन को स्थिर करने का भाव करना है तो आचार्य कहते हैं- पहले अपने शरीर को स्थिर बनाओ। **आसनसिद्धि के बिना ध्यान सिद्धि नहीं और ध्यान सिद्धि मन की स्थिरता के बिना नहीं और मन की स्थिरता, आसन की सिद्धि के बिना होती नहीं।** ऐसे ध्यान को जब केवलज्ञान के माध्यम से और-और आगे बढ़ा लिया जाता है तो वह शुक्ल ध्यान, अन्त के दो शुक्ल ध्यानों में भी वह ध्यान जाकर के मोक्ष का कारण बन जाता है और आकृति उसकी जो रहती है, वह वही रहती है जो पूर्व शरीर की आकृति होती है। लेकिन वह आकार बहुत अच्छा होता है। देखो! यहाँ पर एक शब्द लिखा हुआ है- **‘रुचिराकार’** ...कैसा? प्रतिकृति किसकी? उन्हीं अरिहन्त की प्रतिकृति- बैठी या खड़ी और उस समय पर जो आकार दिखाई देगा, उसका आकार भी बड़ा रुचिर, रुचिर मतलब रुचिकर/मनोहर, वह आकार भी उस समय पर बहुत अच्छा लगता है। ऐसा नहीं है कि सिद्ध भगवान आड़े-टेढ़े होते हैं, वह वहाँ पर रुचिर आकार में रहते हैं लेकिन वह अमूर्त रहते हैं... **‘रुचिराकार एव हर्मूर्तः’** निश्चित रूप से उनका वह आकार **‘एव’** अर्थात् इसी तरह का होता है। अन्य किसी प्रकार का नहीं होता है और वह अमूर्त हो जाता है।

आत्मा को मूर्त बनाने वाला कौन?

अमूर्त का मतलब है- अब वह मेरी आँखों से दिखाई नहीं देगा। हाथों से उसको हम कहीं touch नहीं कर पाएँगे और किसी भी तरह से हम उसको अपनी आँखों का, कानों का, इन्द्रियों का विषय नहीं बना पाएँगे। इसका नाम है- वह अमूर्त हो गया। आत्मा वास्तव में कैसा है? अमूर्त है। इस अमूर्त आत्मा को मूर्त बना दिया है। किसने? अब थोड़ा उल्टा चलते हैं। इस **अमूर्त आत्मा को मूर्त** बना दिया, किसने? शरीर ने। शरीर किसने बना दिया? शरीर कहाँ से बन गया? शरीर को भी बनाने वाला कोई है कि नहीं? पुद्गल तो पुद्गल कोई नई चीज कहाँ से हो गई। शरीर भी पुद्गल ही है। मतलब अभी भी आप बिल्कुल कुछ भी पूछ लो, ज्ञान शून्य ही बने रहते हो। आत्मा को मूर्त बनाने वाला कौन? शरीर कहाँ से मूर्त बनाने वाला हो जाएगा? शरीर से तो आत्मा जाहिर हो जाती है कि हाँ! यह आत्मा है। लेकिन जो आत्माएँ जाहिर नहीं होती हैं, दिखाई नहीं

भी देती है वे भी तो बहुत सारी आत्माएँ हैं। उसका नाम है- **कर्म...** जो आत्मा को मूर्त बना देता है मतलब आत्मा शरीर बनाता है तो तब बनाता है जब कर्म उसके साथ में होता है। कर्म के कारण से शरीर बनता है और कर्म ही आत्मा को इस तरह से दिखा देता है। आप बैठे हो, आप कहोगे... मैं आत्मा हूँ। कहाँ है आपकी आत्मा बताओ? आपकी आत्मा न आपको दिख रही, न हमको दिख रही। हमारी आत्मा न हमको दिख रही, न आपको दिख रही। फिर भी आप कहोगे, मैं आत्मा हूँ। आत्मा तो अमूर्त होती है, आप तो मूर्त दिखाई दे रहे हो तो आप आत्मा कैसे हो गए? आत्मा को तो आप छू ही नहीं सकते और हम आपको छू रहे हैं, आप हमको छू रहे हैं तो आप आत्मा कैसे हो गए? इस आत्मा को कर्म के माध्यम से जब शरीर की प्राप्ति हो जाती है तो यह आत्मा दिखने लग जाती है, जानने लग जाती है, एक दूसरे के पहचान में आने लग जाती है।

सिद्धों को ज्ञान चक्षु से देखो

आत्मा तक दृष्टि हमारी फिर भी नहीं जाती है क्योंकि दृष्टि शरीर के आकार पर ही टिक जाती है। आत्मा को कितना लोग जानते हैं? कितना लोग देखेंगे? कितना लोग आत्मा को समझेंगे? हमारी आकृति जो तरह-तरह की बन गई है वह ऐसी बन गई है कि अब हमें पता ही नहीं है कि हम कैसे थे? और कैसे हैं? और कैसे हो गए हैं? अब हम अपनी गाड़ी reverse में चलाएँगे तब समझ में आएगा हम कैसे हैं? जब हम सिद्धों को देखेंगे तब हमें पता पड़ेगा। actually तो हम, हमारा original स्वरूप क्या है? जैसा सिद्धों का है। कह तो हम बहुत जल्दी दे देते हैं कि हम कैसे हैं? हम सिद्ध समान है, हम **सिद्ध सदृश्य** है। जब सिद्ध सदृश्य है तो यह नाक-नकशा ऐसा उल्टा-सीधा क्यों बना हुआ है? उल्टे-सीधे से मतलब अब जैसा भी है उन सिद्धों की अपेक्षा अगर देखो तो हम अच्छे लग रहे हैं कि सिद्ध अच्छे लग रहे हैं, पहले यह बताओ? मोही लोगों, यह बताओ पहले? ज्ञानी लोग नहीं कह रहा हूँ, मोही लोगों से पूछ रहा हूँ। मोही लोग क्या कहेंगे? भैया, हम अच्छे लग रहे हैं। अपना नाक-नकशा अच्छा है। सिद्धों का तो कोई नाक-नकशा है ही नहीं है तो हम अच्छे लग रहे हैं। अगर सिद्धों को अच्छा लगता हुआ देखोगे, ज्ञान के चक्षुओं से देखोगे, सिद्ध अगर आपको अच्छे लगने लग जाएँगे, सिद्धों का स्वरूप आपको रुचिर आकार का लगने लग जाएगा तो लगने लग जाएगा हम सब विद्रूप हो गए।

कर्म अमरबेल के समान आत्मा के स्वरूप को विकृत करते हैं

यह सब दुनिया का मुलम्मा हमारे आकार पर, हमारे स्वरूप पर चढ़ा हुआ है। क्या है यह सब? सब waste चीजें चढ़ी हुई हैं, सब बेकार की चीजें हैं। यह सब जल जानी हैं, मिट जानी हैं, यह सब कुछ है ही नहीं और हम इसी रूप में अपने आप को समझ रहे हैं। हमारा जो original स्वभाव था, वह तो कर्मों ने चूस लिया। किसने? कर्मों ने, विद्रूप बना दिया उसको। जैसे एक **अमरबेल** होती है। क्या होती है? नाम सुना है न आपने। क्या करती है वह? वह किसी बेर के पेड़ पर लग जाए, किसी बबूल के पेड़ पर लग जाए। जिस पेड़ पर अपने आप वह बेल लग जाती है और वह बेल बढ़ती चली जाती है और उस बेल का कोई भी मूल नहीं दिखाई देता क्योंकि मूल उसका कहाँ गड़ा होता है? उस पेड़ का जो काण्ड होगा, कन्द होगा, उसमें उसका मूल गड़ जाता है और वहाँ से निकल कर के पनपती रहती है..अमर बेल और जिसके ऊपर चढ़ जाए वह

उसी का क्या कर देती है? उसी को चूस डालती है और खुद हरियाती रहती है। देखी न आपने अमरबेल। पीले रंग की होती है, अच्छी सुनहरी लगती है, पत्ते नहीं होते हैं उसमें, फूल तो आते हैं, बीज भी होते हैं उसके और उसका जो पोषण होता है वह दूसरे वृक्ष से होता है। इसलिए science की भाषा में उसको पढ़ीगे तो उसको परजीवी कहा जाता है। दूसरों से उसका जीवन चलता है। कर्मों ने भी हमारे साथ ऐसा ही कर रखा है। आत्मा की शक्तियाँ चूस-चूस करके, उसने शरीर वगैरह बना-बना कर के आत्मा को तो मिटा ही डाला है। आत्मा तो कहीं से कहीं तक दिखाई नहीं देती, समझ ही नहीं आती कि आत्मा भी कुछ है। बस! शरीर ही शरीर है जो कुछ है। मैं कैसा हूँ? मोटा हूँ, मस्त हूँ, पतला हूँ, काला हूँ, लाल हूँ, गोरा हूँ, पीला हूँ, लम्बा हूँ, छोटा हूँ, यह हूँ मैं। **कब समझ में आता है कि मैं आत्मा हूँ? आत्मा कहाँ होती है?** आत्मा के स्वरूप को तो उसने अमरबेल की तरह चूस ही डाला। कुछ नहीं बचा। आत्मा के आठ गुणों में कोई से गुण नहीं बचे, कहीं से कहीं तक। सब किसने मिटा डाले? किसने, बोलो? शरीर ने नहीं, कर्मों ने। शरीर तो उसका भी एक और सुरक्षा कवच है, उसके माध्यम से कर्म अपना काम करता रहता है और वह आत्मा के स्वरूप को बिल्कुल ही, एक तरह से, विपरीत कर देता है। आत्मा का स्वरूप तो अमूर्त था और वर्तमान में हम कैसे हैं? मूर्त बने बैठे हैं? यह मूर्त कहलाता है। यह हमारा स्वरूप कैसा हो गया? मूर्त हो गया। हम स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, इन सब के पिण्ड हो गए और सब इन्द्रियों के द्वारा ग्रहण करने योग्य हो गए जबकि हमारा आत्मा किसी भी इन्द्रिय के द्वारा कभी भी न देखा जा सकता, न सुना जा सकता, न touch किया जा सकता। कुछ नहीं हो सकता। यह अमूर्त स्वरूप तो रहा ही नहीं, कैसा हो गया मैं? मूर्त हो गया। यह अमरबेल का काम है।

अमरबेल के औषधीय गुण

अमरबेल अच्छी भी होती है, काम की भी होती है। लोग कई बार ऐसी वनस्पतियों के उपयोग नहीं जानते हैं तो इन वनस्पतियों को यूँ ही जला डालते हैं, यूँ ही नष्ट कर देते हैं जबकि हर वनस्पति एक बहुत बड़ी औषधि होती है। आज एक बहुत बड़ी problem चलती है लोगों के लिए.. **diabetes** की problem और diabetes की problem के लिए मुख्य कारण होता है- liver का कमजोर हो जाना, liver का function सही से काम नहीं करना। जो कुछ भी **insulin** आदि की आवश्यकता पड़ती है, वह liver का काम होता है और वह जब अपना काम कम करने लग जाता है तो sugar बढ़ने लग जाती है। diabetes इसी का नाम है। समझ आ रहा है? अब क्या होता है? **Liver** को मजबूत रखना। कभी-कभी liver बढ़ जाता है, कभी-कभी liver पर सूजन आ जाती है। Liver मोटा भी हो जाता है, उस पर भी fat जम जाता है। इस liver को ठीक रखने के लिए एक सबसे अच्छी औषधि है- अमरबेल। अमरबेल का अगर आप काढ़ा बना ली, क्वाथ बोलते हैं, काढ़ा बोलते हैं। वह क्वाथ बना कर के, काढ़ा बना कर के, अगर उसको पिया जाए, थोड़ा-थोड़ा सुबह-शाम तो आपका liver मजबूत रहे। उसके ऊपर की सूजन भी अगर है तो वह सूजन भी उसकी कम हो जाएगी और यह अमरबेल blood circulation के लिए भी बहुत अच्छा होता है और खून की कमी को भी दूर करता है और खून में जो भी आवश्यक तत्व होते हैं, उन सबको बराबर बना कर के देता है, यह अमरबेल का काम है। इसको पीस करके भी, अगर इसका लेप जो है, उस liver के ऊपर लगा दिया जाए तो भी फायदेमंद होता है। liver के लिए ताकत देने वाला होता है। इसका उपयोग diabetes के लिए होता है और अनेक ऐसी problems जब होने लग जाती है तो खून की शुद्धि

करने की आवश्यकता पड़ जाती है। उसके लिए भी इसका उपयोग होता है और अमरबेल के माध्यम से अगर आप इसके paste को बना लिया जाए, उसकी बेल का चूरा करके उसको paste बना करके, जो लोग बालों पर अगर लगाते हैं तो गंजापन की बीमारी भी दूर हो जाती है।

अमरबेल के नाम की सार्थकता

अमरबेल! इसका नाम क्यों अमरबेल है, जानते हो? क्योंकि यह बहुत दिनों तक जीवित रहती है। पेड़ मर जाएगा लेकिन बेल नहीं मरेगी। इसको आकाश बेल भी कहते हैं, आकाश बल्ली भी कहते हैं मतलब आकाश में लटकी रहती है। यह दिखाई नहीं देता कि इसका origin कहाँ से है? और वह बढ़ती रहती है। ऐसी इस अमरबेल का उपयोग आप अपनी इस **diabetes** की बीमारी को दूर करने के लिए कर सकते हो। Blood की कोई भी बीमारियाँ हो, उनको दूर करने के लिए कर सकते हो और सिर में जो अनेक तरह की **बालों की problem** है, गंजेपन की problem है और अगर इसके पानी को उबाल करके, इसे ठण्डा करके भी अगर सिर पर डाल करके, इससे नहाया जाए तो भी आपके बाल बढ़िया, चकाचक चिकने और मजबूत बने रहेंगे। करो उपयोग कुछ अच्छा। अब हर चीज के फायदे भी हैं और नुकसान भी हैं। अमरबेल की तरह अगर कर्मों ने हमें कुछ नया रूप दे दिया है तो हम उस रूप को भी तो सम्भाल करके रखें ताकि वह धर्म ध्यान में सहायक बने। इस तरह की प्रक्रिया के माध्यम से ही आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा। आसन लगाना सीखो, वनस्पतियों के अच्छे उपयोग करना सीखो और कायोत्सर्ग आदि के माध्यम से अपने मन को, श्वासों को स्थिर करना सीखो और इस तरह से जब आप ध्यान करना सीखोगे तो आपकी बुद्धि बढ़ेगी, आपकी बुद्धि का चातुर्य बढ़ेगा और आप भी श्रेणिक की तरह बुद्धिमान, चातुर्यमान, कला प्रवीण मनुष्य बन जाएँगे। पहले के लोग क्या करते थे? वनस्पतियों के बारे में ज्ञान रखते थे। आज कुछ ज्ञान नहीं है।

श्रेणिक की परीक्षा



अब वह श्रेणिक के पास में कौन गया? निपुणमती! पहुँच गई थी न! जब वह पहुँच गई तो उसने अपनी चतुराई से वहाँ पर श्रेणिक की परीक्षा लेने के लिए एक कार्य किया। **सब एक से एक चतुर हैं।** जैसे बोलते हैं न- doctors के पास doctor मिलते हैं, ज्ञानियों के पास ज्ञानी मिलते हैं, मूर्खों के पास मूर्ख मिलते हैं, चतुर लोगों के पास सब चतुर ही पहुँच जाते हैं। अब वह वहाँ पहुँच गई तो उसने भी श्रेणिक की परीक्षा करने का मन बना लिया और वह जब अपने घर से निकली तो श्रृंगार करके अपने नाखून में कुछ तेल भर करके ले गई थी। नाखून में तेल! मतलब बड़े नाखून पहले भी रखे जाते थे। अब वह नाखून में तेल भर करके ले गई और वहाँ जाकर के कहती है... मेरी रानी ने मतलब मेरी प्रिय सखी ने, आपसे प्रसन्न होकर के, आपके लिए, एक बहुत अच्छा तेल भेजा है और उनका कहना है कि आप इस तेल से नहा कर के हमारे पास में आना, हमारे घर में आना। श्रेणिक ने सुना...इतने से तेल से नहाने की बात कर रही है इस तेल को लगाने की बात कर रही है। इस तेल को लगा कर के, पूरे शरीर में लगा कर के तब जाकर के आप हमारे घर में आना, हमारे महल में आना। आपको आमंत्रण दिया गया है। इन्द्रदत्त के यहाँ पर आपको बुलाया गया है और उसने बता दिया कि उनकी बेटी नंदश्री ने हमें भेजा है। अब वह सोचते हैं श्रेणिक, क्या करें? अब इसका इतना-सा तेल कहाँ

रखे? कैसे पूरे शरीर में लगाएँ तो वहीं पर उन्होंने अपने हाथों से मिट्टी हटा कर के एक गड्ढा किया और उसमें पानी भरा दिया। पानी भर दिया और पानी भरने के बाद में उससे कहा- तू अपना तेल इसमें डाल दे। इसको क्या बोलते हैं? बुद्धि का चातुर्य। यह परीक्षा की जाती है।

अपने बच्चों को चतुर बनाओ

अब ये चीजें आप अपने बच्चों को, कितनी MBA और MBBS पढ़ा लेना, यह बुद्धि की चतुरता नहीं आएगी। यह अलग तरीके की एक knowledge होती है, एक अलग तरीके का **एक बुद्धि का चातुर्य, एक अलग ही तरीके का क्षयोपशम होता है** जो बच्चा हर समय पर कुछ न कुछ अपनी चतुरता से वह काम कर ले जाए, जो उसके सामने कितना भी कठिन दिखाई दे रहा हो। ऐसी बुद्धि की चतुरता कैसे आएगी? कम से कम बच्चों को ऐसे श्रेणिक के यह कथानक सुनाओगे तो कुछ थोड़ी बहुत बुद्धि की चतुरता भी आ सकती है। क्योंकि सुनोगे नहीं, सीखोगे नहीं तो उस तरह की चीजें कभी आएँगी नहीं। अपने बच्चों को चतुर बनाने के लिए चतुर लोगों की कहानियाँ सुनाओ, नहीं तो मूर्ख बने रहेंगे। उनसे कहोगे एक glass ले आओ तो वे glass ही लेकर के आ जाएँगे, पानी लेकर के नहीं आएँगे glass में। तुम ही ने तो कहा था glass ले आओ। अरे भाई! glass का मतलब क्या होता है? मैं थका हारा आया हूँ, बैठा हूँ table पर और उस समय पर, कुछ भी हमारे सामने नहीं है table पर तो इसका मतलब हम कह रहे हैं- एक glass ले आओ तो इसका मतलब क्या है? कभी-कभी तो यूँ भी नहीं कहना पड़ता है, glass लाओ। थके हारे बैठे थोड़ा-सा “हूँ” इसका मतलब क्या है? अब वह क्या ले आए? इस size की कोई वस्तु उठा कर ले आएगा। बुद्धि का चातुर्य जब तक बच्चे में नहीं होगा, वह बच्चा किसी भी काम का नहीं होगा। भले ही बड़ी-बड़ी universities उसको कितनी degree दे दें लेकिन आपकी और **common sense की university** में वह फेल हो जाएगा।

श्रेणिक का बुद्धि चातुर्य

उस श्रेणिक ने उतने से तेल से, बहुत सुगंधित तेल था, अच्छा तेल था जैसे scent होती है और उसको उस पानी में डलवा लिया और पूरा पानी तेल का हो गया। उसने अच्छे ढंग से, उसी से स्नान किया और स्नान करने के बाद में चलते बना। कहाँ? निमंत्रण हो गया है। **इन्द्रदत्त सेठ ने बुलाया है।** अब उसको याद आया, स्नान करने से पहले ही उसने पूछ लिया था, जाते-जाते .. मुझे इन्द्रदत्त सेठ ने बुलाया तो है और मैं इन्द्र-दत्त सेठ के यहाँ जाऊँगा तो अब इस नगर में कहाँ ढूँढ़ूँगा इन्द्रदत्त सेठ? वह जो निपुणमती थी, वह इतना कहकर के निमंत्रण देकर के चलती बनी और वह थोड़ी दूर आगे निकली होगी तो फिर उसने उसको बुलाया। अरे भाई! सुनो तो, यह उसका घर है कहाँ, यह तो तुमने बताया ही नहीं। बस! निमंत्रण देकर चलती बनी। अब इतने बड़े शहर में कहाँ ढूँढ़ूँगा कि इन्द्रदत्त का मकान कहाँ है? वह जो निपुणमती थी, वह इतनी निपुण थी कि उसने कुछ बोले बिना...क्या किया? कान में ताल वृक्ष के पत्ते होते हैं, उसके आभूषण पहन के आई थी वह। सुन रहे हो? पहले ऐसे आभूषण पहने जाते थे। **ताल वृक्ष के आभूषण** पहन के आई थी। सो उसने अपने कान के आभूषण उसको दिखाए और चलती बनी। उसने सोचा, श्रेणिक ने कि मैंने इससे पूछा और इसने कुछ बताया नहीं। चलो! कोई बात नहीं। अब वह चलते तो बना और वह आगे चली

गई। श्रेणिक बाद में नहा-धो करके आगे गया और नगर में प्रवेश किया और देखता रहा कि इन्द्रदत्त का घर कौन-सा है? इन्द्रदत्त का घर कौन-सा है? देखते-देखते थक गया। कहीं उसको इन्द्रदत्त का घर समझ में नहीं आया क्योंकि पहले कोई नाम nameplate घरों के आगे नहीं लगा करती थी। flat number this this...समझ आ रहा है? ऐसा कुछ नहीं होता था। अब सोच में पड़ गया। फिर सोचता है देखो, मैंने उससे पूछा तो था और कुछ बता कर नहीं गई। यह भी कैसी चतुर है लेकिन कहीं न कहीं मेरी भी परीक्षा ली जा रही है क्योंकि जब नन्दश्री ने, उसकी बेटी ने, इतना सा तेल भेजा है तो यह भी मेरी परीक्षा के लिए भेजा और मुझे बुलाया गया है तो भी कहीं न कहीं मेरी परीक्षा ली जा रही है। अब परीक्षा ली जा रही है तो मुझे सोचना तो पड़ेगा कि कहीं न कहीं, कुछ न कुछ तो है।

श्रेणिक के द्वारा नन्दश्री के संकेत समझना

वह सोचता है, जब मैंने उससे पूछा तो उसने कुछ भी नहीं बोला और कान को हिलाते हुए अपने कर्ण का आभूषण दिखाते हुए चलती बनी और उसके कान में क्या था? **तालवृक्ष के पत्ते का, उसके लिए कर्णा-भूषण बने हुए थे।** यह उसने देख लिया था। उसने सोचा, जरूर उसने ऐसा ही कुछ संकेत किया है। जानते हो ताल वृक्ष क्या होते हैं? कुछ देखा है ही नहीं, कुछ पत्ते पता ही नहीं, कहाँ गेहूँ है? कहाँ चना लगा होता है? यह भी देखने में नहीं आता आजकल बच्चों को। कुछ भी वनस्पति का ज्ञान नहीं होगा तो कभी भी आपको चातुर्य, बुद्धि का ज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता। जब उसने देखा, कुछ संकेत तो वह हमें दे गई है, इसका मतलब यह है। उसने विचार किया- किस घर के आँगन में ताल का वृक्ष लगा हुआ दिखाई दे रहा है? अब हमें यह देखना है और उसने थोड़ी ही दूर घूमा तो उसे एक घर के आँगन में ताल वृक्ष लगा हुआ दिखाई दे गया। वह उसी वृक्ष को देख कर के, दूर से ही उस वृक्ष को देख करके, उस मकान की ओर जाने की कोशिश करने लग गया क्योंकि बड़े वृक्ष होते हैं, वे दूर से दिखाई दे जाते हैं। इसलिए वह ऐसा संकेत देकर के गई थी कि कहीं और किसी के मकान में ताल वृक्ष नहीं लगा, इतना बड़ा वृक्ष नहीं लगा। वह केवल इन्द्रदत्त के ही मकान में लगा हुआ है और उसने दूर से देख लिया। यह ताल का वृक्ष तो वहाँ दिख रहा है, दूर दिख रहा है। अब वह उस ओर चलने लगा। जब वह उस ओर चलने लगा तो वास्तव में वह उसी direction में चलने लगा, जहाँ इन्द्रदत्त का घर था। अब बेटी और बेटी की सखी, दोनों देख रही हैं, समझ रही हैं कि कब वह श्रेणिक इधर आएगा? और आएगा जरूर क्योंकि अगर वह चतुर होगा तो यहाँ तक आ जाएगा। जैसे ही आने वाला हुआ तो उन्होंने क्या किया? अपने घर के दरवाजे पर बहुत सारी कीचड़ बिछा दी। कीचड़ समझते हो? मिट्टी पानी में लगी हुई, पानी के साथ में बहुत सारी मिट्टी-कीचड़। कहाँ? घर के दरवाजे पर प्रवेश करने के लिए, थोड़ी दूर के लिए। उसके बिना कोई रास्ता नहीं है और उसमें बीच-बीच में थोड़ी सी ईंट भी रख दी। अब वह ईंट भी अगर रखी है और उसके ऊपर भी मिट्टी लगी है तो आप जानते हो अगर ईंट पर पैर रखा जाएगा तो क्या होगा?

श्रेणिक ने परीक्षा अपनी बुद्धिमत्ता से उत्तीर्ण करी

श्रेणिक चलते-चलते वहाँ पहुँचे और जैसे ही घर के पास तक पहुँचे, उन्होंने सोचा- यह कीचड़ और घर के सामने न तो अभी कहीं पानी बरस रहा है, न कहीं कोई कीचड़ का कोई मौसम है और यह कीचड़ किसी

के घर के सामने नहीं दिख रही है। इसी के घर के सामने क्यों दिख रही है? समझ गया! **अभी भी मेरी परीक्षा ली जा रही है। परीक्षा ली जा रही है, तो परीक्षा में पास होना भी हमारी बुद्धि की चतुराई से होना ही चाहिए। क्या करें?** कीचड़ भी थोड़ी बहुत नहीं, घुटनों बराबर। अब घर में प्रवेश करना है और बीच-बीच में ईंटें रख दी है। सोचने लगा! ईंटें भी इसलिए रख दी है कि कहीं ईंटों पर रख करके, अगर पैर रख करके आएगा तो नियम से फिसलेगा यह। यह और ईंटों पर पैर रख करके, अगर चल करके आएगा तो इसका मतलब है कि इसके पास में बुद्धि नहीं है। यह ईंटों के ऊपर चलने का लोभ रख रहा है। लेकिन इसके लिए अगर चल कर के आना है तो फिसल जाएगा तो पूरा का पूरा उसी कीचड़ में लिप्त हो जाएगा। अब देखना यह है कि पूरा कीचड़ से लिप्त होकर के आता है या जितनी कीचड़ है, उतनी कीचड़ से ही लिप्त होकर के आता है। श्रेणिक सोचता रहा। उसने सोचा! भैया! ईंटों पर चलने की कोशिश मत करना। कहीं रपट गए तो सब काम खराब हो जाएगा। लोग हँसी उड़ाएँगे और जिस घर में पहुँचेंगे लोग कहेंगे देख कर के ही हुलिया अपना कि कौन-सा मूर्ख आ गया? इससे अच्छा तो यही है थोड़े से पैर ही खराब होंगे, घुटने से नीचे तक के ही खराब होंगे। इतने ही खराब कर लो। वह कीचड़ में ही चल-चल करके, उसके घर के अन्दर तक प्रवेश कर गया।

कुण्डली के गुण नहीं, बुद्धि की चतुराई देखो

देखो! चतुर लोग, कितनी चतुराई से दूसरों की परीक्षा करके, दूसरों की बुद्धि को देख कर के तब अपना कोई भी सम्बन्ध बनाते हैं। **आप लोग कौन-सी चतुराई से, किसकी परीक्षा करके सम्बन्ध बनाते हो? बताओ?** इतनी बुद्धि की चतुरता, स्त्री के लिए पुरुष को देखनी पड़ती है और पुरुष के लिए भी स्त्री को देखनी पड़ती है तब जाकर के वह सम्बन्ध जब बनते हैं तब वह अच्छे सम्बन्ध बनते हैं और तभी वह जीवन भर निभते हैं। आप तो कुण्डली देखते रहते हो बस! कितने गुण मिल रहे हैं बेटी के? कितने गुण मिल रहे हैं बेटे के? बुद्धि की चतुरता तो कोई देखता ही नहीं है। कुण्डली के गुण देखते रहो और पहले के लोग क्या देखते थे? बुद्धि की चतुरता देखो, कुल देखो, रूप देखो, बुद्धि देखो। जिन चीजों से काम पड़े, उन चीजों को तो देखो। उन पत्रियों को कब तक देखते रहोगे? इसलिए पहले के लोग भी जब किसी से सम्बन्ध बनाते थे तो एक तरीके से परीक्षा कर लेते थे, हर तरह से। आस-पड़ोस से पूछ करके, सब लोगों से जानकारी लेकर के, किसी के चक्कर में तो नहीं पड़ रहे हैं, नहीं तो आजकल दुनिया में ठगने वाले लोगों की कमी नहीं है। लोगों ने तो विवाह को भी एक व्यापार बना रखा है। कितनी ऐसी लड़कियाँ होती हैं जो एक विवाह करने के बाद में, कुछ न कुछ बहाना बना कर के, वहाँ से सारी सामग्री लेकर के अपने घर पहुँच जाती हैं। अपना घर भरती हैं और फिर दूसरे विवाह के लिए तैयार हो जाती हैं और घर वाले भी support करते हैं। फिर दूसरा विवाह कर लेंगी फिर उसके लिए कुछ वहाँ से सामान ले आएँगी। धन-दौलत, कुछ भी जेवर आदि और फिर अपना थोड़ा-सा घर भर लेंगी और फिर तैयार हो जाएँगी तलाक देकर के, फिर तीसरी शादी फिर तैयार। यह चल रहा है, **business** बन गया है, विवाह करना भी और घर के माता-पिता भी support करते हैं। ऐसे बुद्धिहीन लोग, संस्कारहीन लोग, धर्मविहीन लोग, जब इस धरती पर इस तरह के काम करने लग जाएँगे तो समझ लेना चाहिए कि इस धरती पर अधर्म ज्यादा होने लगा है, धर्म कम हो रहा है। यह बहुत अच्छे ढंग से चलता है, चल रहा है क्योंकि उसके चक्कर में जो लोग फँस जाते हैं, उन्हें खुद नहीं पता होता है कि कहाँ से सम्बन्ध आ रहा है? क्या आ रहा है? इतना **mobile का जमाना** होने के बावजूद भी,

लोगों से परिचय पहचान होने के बावजूद भी लोग फँसते हैं। कई लोगों ने धन्धा बना रखा है और पता नहीं होता है उनका कि उन्होंने एक शादी कर ली कि दूसरी शादी कर ली। कोई पता नहीं रहता और जब हो जाता है उसके बाद उनके तेवर देख कर के, तब समझ में आता है यह क्या हो रहा है? क्या करना चाहिए, बुद्धिमान लोगों को? बुद्धि से काम लेना चाहिए।

चातुर्य से ही योग्यता का भान कर सकते हैं

चातुर्य एक ऐसी चीज है, जिसकी परीक्षा के माध्यम से ही आप यह समझ पाओगे...यह हमारे योग्य है कि नहीं। बेटी जितनी चतुर है बेटा भी उतना ही चतुर होना चाहिए, तब बराबर की जोड़ी कहलाती है। बेटी को तो चतुर बना दिया, बेटा मूर्ख पकड़ लिया तो कैसे निभेगी भाई? बेटा चतुर है और बेटी मूर्ख आ गई तो फिर क्या करोगे? इसीलिए यह दिक्कत आ जाती है। अगर बेटी ने MBA कर लिया है तो बेटा BA वाला नहीं होना चाहिए। उसके आगे भी M लगा होना चाहिए। नहीं तो वह मनुष्य ही नहीं दिखाई देगा उसको। वह भी MBA ही होना चाहिए, तभी पटेगी, तभी आगे गाड़ी बढ़ेगी। नहीं तो बीच में गाड़ी breakdown हो जाएगी। इसलिए आज बच्चियों के विवाह में दिक्कत आती है। बड़ी-बड़ी पढ़ाईयाँ बहुत हो जाती हैं लेकिन जब उनके बराबर का अच्छा, बराबर की पढ़ाई वाला लड़का नहीं मिलता, तब भी बेटियों की उम्र बढ़ जाती है और बड़ी उम्र होने के बाद में फिर उन्हें या तो किसी अन्य जाति में विवाह करना पड़ता है या बेटियों को अपने कारणों से फिर कोई न कोई अपना friend बना कर के उन्हें विवाह कर लेना पड़ता है। यह बहुत बड़ा कारण है- बेटियों का अन्य समाज में जाने का। क्योंकि आपने अगर बेटी को IAS करा दिया, UPSC करा दी और बराबर का IAS अगर नहीं मिला तो वह दुकानदार के साथ नहीं रह पाएगी। किराने की दुकान वाले के साथ में IAS करी हुई बेटी का विवाह नहीं हो पाएगा। यह भी एक दिक्कत को सामने रखते हुए हमें आगे पढ़ाना चाहिए, बढ़ाना चाहिए और यह दिक्कत आज सबसे ज्यादा बढ़ गई है। इसीलिए बराबर की जोड़ी नहीं मिलने के कारण से, बराबर का career नहीं मिलने के कारण से, गाड़ी आगे नहीं बढ़ पाती और बीच में ही तलाक- तलाक यह आवाजें आने लग जाती है। क्या करना है? परीक्षा करो। बुद्धि का चातुर्य देखो।

श्रेणिक का चातुर्य

श्रेणिक तो उसके घर में पहुँच गया लेकिन कैसे पहुँचा? सही सलामत पहुँच गया कि नहीं? गिरा तो नहीं रास्ते में, रपटा तो नहीं कहीं? कीचड़ से सना तो लेकिन उसका ऊपर का पूरा शरीर हुलिया तो सही है। केवल पैर ही कीचड़ से लसे हैं और वह उसके घर में जब पहुँच गया तो नन्दश्री भी देख रही है और उसकी सखी भी देख रही है। उस समय पर फिर नन्दश्री, उस कीचड़ को धोने के लिए उसके पास में उसे कुछ एक चुल्लू पानी पहुँचा देती है, सखी के माध्यम से। इससे अच्छे ढंग से अपना कीचड़ साफ कर लो और फिर आपकी आवभगत की जाएगी। अब आप सोचना कि एक चुल्लू पानी से कीचड़ कैसे साफ की जाएगी? यह अपने बच्चों से जाकर के घर में पूछना और बच्चों को बताना कि बेटा एक चुल्लू पानी से कीचड़ साफ करने की कला, अगर तुमने अपनी MBA की पढ़ाई में सीख ली हो तो तुम्हारा MBA करना ठीक है नहीं तो तुम्हारा BA ही करके रहना ठीक है। कम से कम ऐसी चतुराई आ जानी चाहिए जो चतुराई महाराज जी

सिखा रहे हैं। उसको लेकर के आना और कल तक आप भी सोच करके आना कि एक चुल्लू पानी के माध्यम से कीचड़ साफ करके, वह उसके घर में कैसे और रसोई घर तक पहुँचेगा? उसकी आवभगत होगी? यह आगे की कहानी आपको कल सुनाई जाएगी

**मनुज देह में शून्य मय, नाड़ी शुद्ध प्रवाह।
ध्यान योग्य तव चित्त हो, स्वयं चले शिव राह॥१४॥**

**पवन थाम कर जब करे, योगी मन का योग।
ज्ञान केन्द्र पर शून्य हो बनता तब समययोग॥१५॥**

15. आत्मा और शरीर का स्वभाव अलग-अलग है



आज का यह मंगल अवसर, जब आप लोग पुनः सिद्ध भगवन्तों का स्मरण करते हुए, उनका गुणगान सुनने के लिए यहाँ पर विराजमान हैं। सिद्ध भगवानों की, शुद्ध आत्माओं की स्तुति इस भारतीय संस्कृति में हमेशा से होती आई है, जिसे हम **परम ब्रह्म** कहते हैं, वह परम ब्रह्म शुद्ध परमात्मा, सिद्ध परमात्मा कहलाते हैं। उन्हीं परम ब्रह्म की स्तुति करने वाले जो भी जीव हैं, हम समझते हैं जो यह परम ब्रह्म की स्तुति करता है वही मोक्ष को उपलब्ध होता है। उन्हीं भगवन्तों की स्तुति करते हुए अनेक ऋषि हुए, मुनि हुए। **आचार्य पूज्यपाद महाराज** पाँचवीं शताब्दी के एक ऐसे उत्कृष्ट श्रेष्ठ ऋषि मुनि हुए, जिन्होंने सिद्ध भक्ति के माध्यम से हमें सिद्ध भगवन्तों के गुणों की ओर आकृष्ट किया और वही स्तुति करते हुए काव्य नम्बर छह, जो कल पढ़ा था, उसी को आज पढ़ते हुए उसकी अन्तिम दो पंक्तियाँ जो अभी शेष है, कुछ कहने के लिए, उसी को पढ़ते हैं-

अन्याकाराप्ति हेतुर्न च भवति परो येन तेनाल्प हीनः,
प्रागात्मोपात्त देह प्रतिकृति रुचिराकार एव हर्मृतः।
क्षुत् तृष्णा श्वास कास जर मरण जरा निष्ट योग प्रमोह,
व्यापत्या द्युग्न दुःख प्रभव भववहतेः, कोस्य सौख्यस्य माताः।

सिद्ध शुद्ध आत्मा पुरुषाकार होता है

कल आपको ऊपर की दो पंक्तियों के बारे में बताया था कि उन सिद्धों का आकार कुछ अन्य नहीं होता है, मनुष्य के आकार की तरह ही उनका आकार होता है। उसमें एक बात और note कर लेना कि मनुष्य कहते हुए भी सिद्धों का आकार, शुद्ध आत्माओं का आकार, परम ब्रह्म का आकार पुरुषों के आकार की तरह होता है। स्त्रियों के आकार की तरह नहीं होता है। यह विशेष बात note करने योग्य है। वह जो पूर्व भव में, अपने मोक्ष जाने से पहले जिस पर्याय में, जिस मनुष्य जन्म को प्राप्त करके, जो जीव आत्मा की साधना करते हैं, वह आत्मा की साधना करने का और उस तरह से अपनी आत्मा में उस सर्वज्ञता को प्राप्त करने का जो पुरुषार्थ किया जाता है, वह पुरुषार्थ करने की ताकत पुरुषों में ही प्राप्त होती है, स्त्रियों में नहीं होती है। आज के जमाने में जब कोई ऐसी बात की जाती है, तो लोग कहते हैं- यह आप स्त्रियों के साथ partiality कर रहे हैं। लेकिन आप यह ध्यान रखें, जो सनातन सत्य होते हैं वह हमेशा सनातन ही रहते हैं।

मोक्ष केवल पुरुष पर्याय से ही होता है

जिस तरह से आत्मा सनातन सत्य के रूप में जाना जाता है, उसी तरह से यह भी सत्य माना गया है कि मोक्ष केवल पुरुष पर्याय से ही होता है, स्त्री पर्याय से मोक्ष नहीं होता है। यह कुछ स्वाभाविक चेष्टाएँ

होती हैं, कुछ स्वाभाविक व्यवहार होते हैं, कुछ स्वाभाविक हमारी प्रकृतियाँ होती हैं, जिसके कारण से आचार्यों ने बड़े अध्ययन के बाद यह बात बताई कि कितनी भी स्थिरता की बात की जाए, कितनी भी ध्यान की बात की जाए, जो स्थिरता एक पुरुष के अन्दर आ सकती है, वह स्थिरता एक स्त्री के अन्दर नहीं आ पाती क्योंकि उसकी शारीरिक रचना उसको स्थिर होने नहीं देती। यह एक बहुत ही स्वाभाविक तथ्य है और इस तथ्य को हर एक स्त्री को इसी रूप में स्वीकार करना चाहिए। मोक्ष का पुरुषार्थ करना अलग बात है और धर्म का पुरुषार्थ करना अलग बात है।

धर्म और मोक्ष पुरुषार्थ

चार प्रकार के पुरुषार्थों में भले ही मोक्ष का पुरुषार्थ करने से मोक्ष मिलता है और वह मोक्ष का पुरुषार्थ पुरुष पर्याय में ही प्राप्त होता है। लेकिन **धर्म पुरुषार्थ** करने के लिए स्त्रियाँ कहीं भी पीछे नहीं हैं। अर्थ पुरुषार्थ करने के लिए भी स्त्रियाँ पीछे नहीं हैं, काम पुरुषार्थ में भी स्त्रियाँ पीछे नहीं हैं। लेकिन मोक्ष पुरुषार्थ के लिए यह कहा गया कि साथ-साथ मोक्ष पुरुषार्थ तो किया जा सकता है लेकिन उस **मोक्ष पुरुषार्थ** से जो सफलता मिलनी है, वह सफलता मात्र पुरुषों को ही प्राप्त हो पाती है। यह भी एक स्वाभाविक प्रकृति का नियम जानना। आप धर्म करें, धर्म पुरुषार्थ करने के लिए कहीं कोई कमी नहीं है और वर्तमान में देखा जाए तो धर्म पुरुषार्थ ही आप लोगों के लिए प्रमुख है। जिस धर्म के माध्यम से हम अपनी चेतना को विकसित करते हैं, जिस धर्म के माध्यम से आज भी हम शुद्ध आत्माओं की उपासना करते हैं, आज भी हम अपने अन्दर एक ज्ञान और बुद्धि सही दिशा में ले जाते हैं और अच्छे कर्म करते हुए हम अपने जीवन को अच्छा बना पाते हैं। यह सब कुछ धर्म से ही होता है, इसी का नाम **धर्म पुरुषार्थ** कहा गया। जब हम सिद्ध पुरुषों को अपना ideal बनाते हैं, हम सिद्ध पुरुषों को ही अपना आदर्श बनाकर के उनके गुणों में अपने आप को रमण कराते हैं तो यहीं से हमारी बुद्धि सही काम करने लग जाती है और हमारा पुरुषार्थ भी सही दिशा में चलने लग जाता है। कहा जा रहा है...उन सिद्ध भगवानों के अन्दर आपको क्या देखना है? क्या-क्या उनके अन्दर होता है? और क्या-क्या नहीं होता है? यह दोनों चीजें यहाँ पर आपको बताई जा रही हैं। क्या होता है? यह आपको बताया गया।

सिद्ध शुद्ध आत्मा क्षुधा और तृष्णा से परे होते हैं

अभी आने वाली दो लाइन में यह बताया जा रहा है- उन सिद्धों के अन्दर क्या नहीं होता? **क्षुत्- तृष्णा** जिसे हम कहते हैं...क्षुधा की तृष्णा और यह एक ऐसी तृष्णा है, जिसके कारण से सभी संसारी जीव पीड़ित रहते हैं। क्षुधा और पिपासा...अभी आप सुन रहे थे, शर्मा जी कह रहे थे...तृष्णा का अन्त करने से ही मोक्ष मिलता है। भगवान जब बन गए, सिद्ध जब बन गए, मोक्ष प्राप्त हो गया तो उनके अन्दर तृष्णा तो होनी ही नहीं चाहिए। इसलिए भारतीय संस्कृति में शुद्ध परमात्मा के अन्दर किसी भी तरह की कोई तृष्णा नहीं कही गई- न शारीरिक तृष्णा है, न मानसिक तृष्णा है। यह शारीरिक तृष्णाएँ हैं...**क्षुधा, पिपासा** और इन्हीं तृष्णाओं के कारण से जीव पीड़ित रहते हैं। अगर क्षुधा की समय पर पूर्ति न हो तो दुःख होता है। अगर क्षुधा की पूर्ति हो भी गई हो और थोड़ी-सी याद आ जाए कि हमारे पास में अभी भी क्षुधा है, तो भी दुःख होने लग जाता है। आप कितना ही पानी पी के आए हो, पिपासा आपकी शान्त हो गई हो लेकिन आपको

बैठे-बैठे भी पानी की याद आ जाएगी तो आपको पानी का स्मरण होते ही पानी पीने की इच्छा हो जाएगी। **इन तृष्णाओं का कभी अन्त नहीं होता। क्यों नहीं होता?** जब तक यह तृष्णाओं की पूर्ति करते हुए यह जीव शरीर को ही आत्मा मानता है तब तक यह अपनी विपरीत बुद्धि के कारण से इन तृष्णाओं में ही सुख मानता रहता है। विपरीत बुद्धि का कारण, शरीर को ही आत्मा मान लेना। जबकि शरीर और आत्मा में एक बहुत बड़ा difference होता है।

शरीर और आत्मा का स्वभाव भिन्न है

आत्मा कभी भी अपने आपको जब तक आत्म रूप में मानने की भावना में नहीं आता...आत्मा, आत्मा को आत्मा की तरह नहीं मानता, तब तक इस शरीर से होने वाली तृष्णाओं पर विजय प्राप्त नहीं होती। क्योंकि हमने शरीर को ही सब कुछ मान रखा है। **शरीर की तृष्णा आत्मा की तृष्णा नहीं है।** आत्मा के अन्दर एक ऐसा भाव उत्पन्न हो जाना कि आत्मा का स्वभाव अलग है और शरीर का स्वभाव अलग है और शरीर हमारे अन्दर एक तृष्णा उत्पन्न करता है। उसका भोग आत्मा को करना पड़ता है, उसका फल आत्मा को भोगना पड़ता है लेकिन आत्मा वस्तुतः शरीर से सहित होने के कारण से उस तृष्णा की पीड़ा का अनुभव करता है। **वस्तुतः आत्मा में कोई तृष्णा नहीं होती है।** आत्मा कितना भी पानी में डूब जाए, तब भी आत्मा कभी भी गीला नहीं होता। आत्मा के अन्दर कितनी भी अग्नि लगा दी जाए, तब भी आत्मा कभी अग्नि में जल नहीं सकता। आत्मा को कितने ही अस्त्र-शस्त्रों से छेदा जाए लेकिन आत्मा कभी भी अस्त्र-शस्त्रों से छेदन को प्राप्त नहीं हो सकता और यह सब किसमें हो सकता है? यह सब शरीर में हो सकता है। इसलिए जो आत्मा को जानने लग जाता है, अपने शरीर में विद्यमान अपने आत्म तत्त्व को जानने लग जाता है, वह जीव शरीर को भी शरीर की तरह देखने लग जाता है, आत्मा को आत्मा की तरह देखने लग जाता है और परमात्मा को परमात्मा की तरह देखने लग जाता है।

यथार्थ ज्ञान और यथार्थ गीता

यह जो हमारी दृष्टि में एक दूसरे के प्रति overlapping होती है, वह overlapping न हो और जो चीज जैसी है यथार्थ में वह चीज वैसे ही जानी जाए तो उसी का नाम है- **यथार्थ ज्ञान** और उसी ज्ञान को कहते हैं- **यथार्थ गीता**, जो हमें यहाँ पर भेंट की गई है। गीता मतलब क्या होता है? भगवान के द्वारा कहा हुआ जो कुछ भी कथन है, वह गीता कहलाता है, गीत कहलाता है।

‘त्वया गीतं तत्त्वं, बहूनयविवक्षेत्स्वशात्’

आचार्य कहते हैं...हे भगवन्! आपने जो कहा है वही गीत है, वही गीता है। आचार्य समन्तभद्र महाराज कहते हैं भगवान की स्तुति करते हुए- **‘त्वया गीतं तत्त्वं’**। आपने जो भगवन् तत्त्व कहा है, वह तत्त्व ही गीता है। वह तत्त्व की जो भावना है, तत्त्व का जो ज्ञान है वही गीत कहलाता है। सही गीत तो वही है, जो भगवान के द्वारा कहा जाता है, गाया जाता है। वह गीता में भी इसी तरह का ब्रह्म की उपासना करने का, परम ब्रह्म का इसी तरह का उपदेश हमें मिलता है और परम ब्रह्म के अन्दर ये चीजें नहीं होती हैं जो यहाँ बताई जा रही हैं...क्षुधा नहीं, पिपासा नहीं।

धर्म आराधना करने में शरीर के रोग बाधक बनते हैं

उस क्षुधा-पिपासा के कई बार unbalance हो जाने के कारण से ही श्वास कास, ज्वर-जरा-मरण, यह तमाम तरह के जो रोग हमें शरीर के अन्दर दिखाई देते हैं, यह सब भी उन आत्माओं में नहीं होते। ‘**श्वास कास**’ की बीमारी जानते हो? श्वास थोड़ा-सा ज्यादा बोल लो, ज्यादा चढ़ लो, ज्यादा चल लो तो सांस फूलने लग जाती है। जब वही एक बीमारी का रूप ले लेती है, तो वह **दमा-अस्थमा** कहलाने लग जाती है। इस तरह की बीमारियों के कारण से व्यक्ति किसी भी तरह से फिर चैन नहीं पा पाता। उन बीमारियों के अन्दर ही उसका दिमाग लगा रह जाता है। इसलिए वह धर्म की आराधना करने में भी बीमारियाँ बाधक बन जाती हैं। **हम यह समझने की कोशिश करें, जो शुद्ध आत्मा है परम ब्रह्म है उनके अन्दर यह रोग नहीं है।** इन्हें रोग कहा गया है...चाहे वह शारीरिक हो, चाहे प्रत्येक दिन हमारी पूर्ति करने के लिए आवश्यक हो, लेकिन अगर वह प्रत्येक दिन भी हमें उनकी पूर्ति करनी पड़ती है, तो भी वह हमारे लिए रोग है। क्योंकि उसके माध्यम से हमें पीड़ा जो होती है, उस पीड़ा को हम थोड़ा-सा दूर कर लेते हैं लेकिन हमारी पीड़ा हमेशा के लिए कभी दूर हो नहीं पाती है। **इसलिए क्षुधा को रोग कहा गया, पिपासा को भी एक रोग कहा गया।** जब तक यह मनुष्य का जन्म है, जीवन है या जब तक इस संसार में किसी भी योनि में आप जन्म लेंगे, आपको शरीर मिलेगा, आपको क्षुधा-पिपासा ये हमेशा मिलेंगे। चाहे किसी भी पशु योनि में देख लो, हर किसी के अन्दर भूख और प्यास की वेदना सब किसी के अन्दर रहती है। यह वेदनाएँ हैं, यह दुःख है और यह दुःख है तो यह रोग होते हैं और इन्हीं रोगों पर विजय जिन्होंने प्राप्त कर ली है और इन रोगों से सर्वथा मुक्त हो गए हैं, उन्हीं को हम शुद्ध आत्मा कहते हैं। जब आप शुद्ध आत्मा को देखें तो क्या समझे उनके अन्दर? हे भगवन्! जैसे हमें भोजन करके अपनी वेदना को मिटाना पड़ता है ऐसे हे भगवन्! आपके अन्दर किसी तरह की कोई वेदना नहीं है। **न भगवान को भूख की वेदना है, न प्यास की वेदना है,** न उन्हें कभी कोई भी heart disease होती है, न उन्हें कभी lungs की disease होती है, न कोई उनके अन्दर asthma श्वास कास की बीमारियाँ हैं। कोई उन्हें कभी भी fever नहीं आता है, ज्वर नहीं आता है। किनको? जो भगवान बन जाते हैं उनको। कम से कम भगवान को तो इन बीमारियों से बचाओ। अगर भगवान के अन्दर भी ज्वर आने लगेगा, भगवान भी श्वास कास की बीमारी से पीड़ित हो जाएँगे तो फिर एक योगी में और एक भोगी में अन्तर क्या रह जाएगा? परम योग की दशा को उपलब्ध होकर के जिन्होंने अपने अन्तरंग की साधना से इस तरह से अपने शरीर को, अपनी आत्मा से सर्वथा मुक्त कर लिया। ऐसे उन सिद्ध आत्माओं में किसी भी तरह का कोई रोग नहीं होता, जो रोग शरीर के कारण से होते हैं। ज्वर भी नहीं और जरा भी नहीं। जरा मतलब बुढ़ापा, oldness...भगवान कभी भी पुराने नहीं होते हैं। उनके अन्दर कभी भी बुढ़ापा नहीं आता है। उन्हें हम कभी बूढ़े नहीं कह सकेंगे। वह कितने ही पुराने हो जायेंगे तो भी वह भगवान हमेशा सनातन ही कहलायेंगे, पुराने नहीं कहलायेंगे। पुराने का मतलब बुढ़ापा नहीं है। पुराने का मतलब होता है हमेशा एक जैसी अवस्था में जो बना रहे लेकिन फिर भी उसके अन्दर किसी भी तरह की कमी न आए तो हम उसे कहते हैं यह सनातन है।

सनातन परम्परा

सनातन नाम सबने सुन रखा है। सनातन परम्परा आजकल बहुत ज्यादा जोरों से प्रचार-प्रसार में भी आ

रही है। सनातन जागृति के कई उत्सव भी चल रहे हैं और कुछ बाबा ने तो संकल्प ही ले रखा है कि हमें इस सनातन परम्परा को आगे बढ़ाना है। आप समझें कि यह सनातन क्या कहा गया है? गीता के दूसरे अध्याय के 28वें नम्बर के श्लोक में किसे सनातन कहा गया है? मैं आपको यहाँ बताना चाहता हूँ। इसी गीता को, जो मुझे भेंट की गई है इसमें लिखा हुआ है- **‘अच्छेद्यो अयं अदाह्यो अक्लेद्यो अयं अशौस्य एवच नित्यः सर्वगतः स्थाणु अचलोयं सनातनः।’** यह सनातन होता है। सनातन क्या है? जो हमारा आत्मा है, जिस आत्मा को किसी के द्वारा छेदा नहीं जा सकता, **अच्छेद्य** कहा गया है उसको। शस्त्र-अस्त्र किसी भी तरह के उपकरणों से, बम से, किसी भी तरह की मिसाइलों से उसको कुछ भी नहीं किया जा सकता, उस आत्मा को **अच्छेद्य** माना गया है। यह अच्छेद्य है। आत्मा कैसा है? दूसरे अस्त्र-शस्त्रों से कभी भी छेदन-भेदन के योग्य नहीं है और कैसा है? **अदाह्यो....** दहन करने योग्य नहीं है, जलाने योग्य नहीं है जलने योग्य नहीं है। आत्मा नहीं जलता...जलता क्या है? शरीर। आत्मा नहीं छिदता...छिदता क्या है? शरीर। किसी ने बाण मार दिया, किसी ने बंदूक से गोली मार दी, किसी ने कोई चाकू मार दिया, उपकरण कोई भी तरह का चला दिया, शरीर में छेदन हो गया। आत्मा तो उससे पहले ही मुक्त हो जाता है शरीर को छोड़ देता है। वहाँ तक तो कोई वार होता ही नहीं है। जलेगा तो क्या जलता है? शरीर जलता है आत्मा कभी भी जलता नहीं है। **अक्लेद्यो अयं आत्मा** कैसा है? कभी भी **‘क्लेद’** मतलब कभी भी गोला नहीं होता। नहाने से कौन गोला होगा? किसी भी तरह के पानी में नहाओगे, कौन गोला होगा? मान लो आप गंगा के पानी में भी नहा लो, जमुना के पानी में भी नहा लो, कौन गोला होगा? क्या आत्मा गोली होगी? आत्मा कभी गोली नहीं होती। आत्मा तक कभी कोई गंगा की पवित्रता पहुँचती ही नहीं। वह पवित्रता जो कुछ भी है वह आपके शरीर को गोला करने के लिए, आत्मा में कभी कोई गोलापन नहीं आता और आत्मा **‘अशौस्य’** उसे हम कितनी भी गर्मी दे दें, कितना भी temperature दे दें, कितने भी हम उसे घाम में सुखा दें, कभी सूखेगा? कौन सूखेगा? शरीर सूखेगा।

आत्मा स्थिर और शरीर अस्थिर है

जो नश्वर है वह अलग तत्त्व है और जो अविनश्वर है वह अलग तत्त्व है। यह दो तत्त्व हमारे साथ जुड़े हुए हैं। शरीर कैसा है? नश्वर कि अविनश्वर? **शरीर नश्वर है।** आत्मा कैसा है? अविनश्वर है। बस यही सब भारतीय संस्कृति में कहा गया है। **‘नित्यः...वह आत्मा कैसा है? नित्य है। शरीर नित्य नहीं है आत्मा नित्य है। ‘सर्वगतः’...सब जगह चला जाएगा। कौन? शरीर नहीं जा पाएगा, आत्मा चला जाएगा। पूरे तीन लोक के अन्दर चार गतियों में ऐसी कोई जगह नहीं, जहाँ पर यह आत्मा न पहुँचा हो, इसने जन्म धारण न किया हो, इसने वहाँ पर अपना शरीर न बना लिया हो। हर जगह यह अनेक जन्म ले चुका है, अनेक जन्मों में मरण कर चुका है...यह सर्वगत कहा जाता है। सब जगह जाने वाला कौन है? आत्मा। शरीर सब जगह नहीं जा सकता और इसी तरह से यह ‘स्थाणु’ है। स्थाणु मतलब स्थिर रहने वाला। कौन स्थिर रहता है? आत्मा ‘स्थाणु’ है शरीर अस्थिर है। इसका कोई पता नहीं है...यह कब, कहाँ से, कब हिल जाए? कब कौन-सा disc का point हिल जाए? कब कौन-सी आपकी spinal cord में कहाँ पर hole आ जाए? कभी आपके घुटने में जगह बन जाए? कहाँ पर आपको दर्द होने लग जाए, कुछ नहीं कहा जा सकता। यह कभी भी हिल सकता है, आपका शरीर। कोई भी शरीर के अवयव कहीं पर भी स्थिर होते हुए भी स्थिर नहीं है। इसका स्वभाव अस्थिर है। इसलिए आचार्यों ने कहा...आत्मा स्थिर है।**

आत्म पुरुषार्थ ही सनातन परम्परा है

ऐसी यह आत्मा 'अचलो अयं' यह अचल है- आत्मा, चलायमान शरीर होता है आत्मा तो अपने अचल स्वभाव में रहता है। चाहे कितना ही कुछ हो जाए, आत्मा का अपना ज्ञान स्वभाव, संवेदना का स्वभाव, चेतना का स्वभाव, सुख का स्वभाव, वह उससे कभी भी छूटता नहीं है। यह अचल है। ऐसी अचल आत्मा को यहाँ पर सनातन कहा गया है... 'अचलो अयं सनातन' सनातन परम्परा के लोग यहाँ बैठे हैं। सभी सनातन हैं... चाहे जैन हो, चाहे ब्राह्मण हो, चाहे हिन्दू हो, चाहे किसी भी वैदिक धर्म को मानने वाले लोग हो, सभी सनातन कहते हैं तो सनातन कहते ही उनके दिमाग में क्या आना चाहिए? जब हम सनातन महोत्सव मनायें, सनातन परम्परा की बात करें तो हमें किसकी बात करना? यह बताना है हमें, बताओ? पहले कुछ आप बताओ तो हम बताएँगे। **जब हम सनातनपने की बात करें तो हमें आत्मतत्त्व की बात करनी चाहिए।** मतलब अगर हम आत्मा की जागृति फैला रहे हैं, हम हर एक प्राणी को यह बता पा रहे हैं शरीर के लिए मत जियो, आत्मा के लिए जियो। शरीर के लिए ही सारे व्यसन होते हैं शरीर के लिए ही सारे रोग होते हैं शरीर के लिए ही सारी हमारी कषायें उत्पन्न होती हैं। अगर हम आत्म जागृति का कोई एक formulae देकर के लोगों को आत्म जागरण की दिशा में ले जायें, तुम सभी लोग इस अस्थिर जीवन में, इस भौतिक जीवन में, केवल इस भौतिक शरीर को ही सब कुछ मत मान लो। आत्मा सनातन है, उस आत्मा की ओर दृष्टि ले जाओ और उस आत्मा को इस शरीर से मुक्त करने के लिए पुरुषार्थ करो तो मैं समझूँ यह सनातन परम्परा के द्वारा किया जाने वाला महोत्सव, असली रूप में महोत्सव हो रहा है। यह सन्देश पहुँचना चाहिए और इस सन्देश में हम भी शामिल हैं। आप आगे बढ़ो, सनातन परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए और हम भी इस सनातन परम्परा को आगे बढ़ाने लिए, हम भी इसमें शामिल हैं क्योंकि हमें भी यही सन्देश देना है। आत्म जागरण की ओर आगे बढ़ो। सिद्ध भगवानों की स्थिति यहाँ तब से चल रही है जब से मैं सतना में आया हूँ और तब से यहाँ पर इन्हीं सिद्ध भगवानों के गुणगान गाए जा रहे हैं।

परम सुख केवल सिद्ध आत्मा अनुभूत करती हैं

सिद्धों में क्या होता है? मोक्ष में क्या होता है और मोक्ष में आत्मा कौन सी परम आनन्द की स्थिति में होती है? वह परम आनन्द किससे मिलेगा? खाने से, पीने से परम आनन्द आता है? हम लोगों को तो उसी में आता है। भगवान के लिए हम भोग अगर लगाते हैं, उनके समक्ष अगर हमको बड़ी-बड़ी थालियाँ भी उनके सामने ले जाते हैं तो किस लिए? भगवान खाते हैं इसलिए? भगवान कभी नहीं खाते हैं भगवान कुछ नहीं पीते हैं। भले ही यह सब कुछ हो जाए, देखने में आ जाए जैसे कुछ दिन पहले हमने भी सुना था, आपने भी सुना था... गणेशजी पानी पी रहे हैं। समझ आ रहा है और सब लोग उन्हें पानी पिला रहे हैं। लेकिन वास्तव में क्या गणेशजी कभी पानी पी सकते हैं? क्या गणेश जी को तुम्हारे पानी की तृष्णा है? क्या गणेशजी तुम्हारे पानी से अपनी प्यास बुझाएँगे? नहीं! गणेशजी इतने छोटे नहीं हैं कि तुम्हारी एक लुटिया पानी से तृप्त हो जाए। क्या तुम्हारे एक थाल के भोग की सामग्री उन्हें अर्पित करने से उन्हें सन्तुष्टि हो जाएगी? क्या इसलिए वह गणेश जी हैं? नहीं! **गणेशजी मतलब वह व्यक्तित्व है, जिसके अन्दर किसी भी तरह की कोई क्षुधा नहीं है, तृष्णा नहीं है, पिपासा नहीं है, वेदना नहीं है।** अगर भगवान के रूप में हम उन्हें उस रूप में मानते हैं तो वह भगवान वही होते हैं, जिनके अन्दर कोई शारीरिक रोग न हो और कोई मानसिक रोग न

हो। तभी तो वह हमें कुछ उपदेश देकर के इन रोगों से बचा पाएँगे। अगर भगवान भी अपनी वेदना को हमारे भोग से शान्त करेंगे तो फिर वह भगवान नहीं रह पायेंगे। इसलिए भारतीय संस्कृति में जब भी भोग चढ़ाया जाता है कोई भी भगवान के सामने द्रव्य अर्पित किया जाता है तो किसलिए जानते हो? चाहे वह वैदिक संस्कृति में चढ़ाया जा रहा हो, चाहे जैन संस्कृति में चढ़ाया जा रहा हो, द्रव्य तो सब जगह चढ़ाई जाती है। आप पूजा करते हो, पूजा में क्या करते हो? भगवान के सामने द्रव्य समर्पित करने जाते हो। क्या मतलब होता है? यह द्रव्य समर्पण करने का तात्पर्य यह होता है कि हे भगवन्! यह द्रव्य हम जो आपके सामने लाए हैं, जब तक यह हमारे घर में रखी थी, हमें बहुमूल्य लग रही थी। जब तक यह हमारे घर में रखी थी, हमारी भोग की वस्तु बन रही थी। लेकिन जब हमने आपको देखा, आपको समझा और जब हम आपकी आराधना में तत्पर हुए तो यह वस्तु हमें बिल्कुल तुच्छ लगने लग गई और यह जो वस्तुएँ, हम बड़े-बड़े लड्डू-पेड़ा या कुछ भी चीजें हैं, जो हम बड़ी-बड़ी भोग्य वस्तुएँ भी हैं, जो सामान्य प्राणियों के लिए अच्छी तो लगती हैं लेकिन हे भगवन्! यह आपके लिए बिल्कुल तुच्छ रूप में है। इसलिए हम यह बहुमूल्य वस्तुएँ भी आपके चरणों में समर्पित करते हैं क्योंकि आपके सामने इनकी कोई कीमत नहीं है। यह चढ़ाने का उद्देश्य होता है। अतः भगवान न तो कभी भोजन करते हैं, न कभी कुछ पीते हैं, न उन्हें कभी श्वास की बीमारियाँ होती हैं, न उन्हें कभी बुखार चढ़ते हैं। नहीं तो पता पड़े कि अगर आपने कहीं भगवान की भक्ति में ज्यादा थाल चढ़ा दिए और भगवान ने कहीं ज्यादा खा लिया तो उन्हें भी कहीं पेचिश हो जाए, उन्हें भी कहीं-कहीं liver में उनके भी दर्द हो जाए, कहीं उनके भी पेट में दर्द होने लग जाए, उनको भी बुखार चढ़ जाए। ऐसा कभी होता है?

सिद्ध शुद्ध आत्मा जरा की वेदना से परे हैं

भगवान में यह सब नहीं होता। शुद्ध परमात्मा इन सब चीजों से रहित होता है और यह भी आपको ध्यान में रखना है कि **वह शुद्ध परमात्मा कितना भी पुराना हो जाए, कभी भी जरा और मरण की बीमारी से ग्रस्त नहीं होता।** जरा मतलब बुढ़ापा, old नहीं दिखाई देगा। वह पुराना होना अलग बात है लेकिन बूढ़ा हो जाना अलग बात है। समझ पा रहे हो? भगवान पुराने तो हो जाते हैं। आत्मा पुरानी है और जो चीज पुरानी है वह सनातन है। अगर वह चीज अपनी pure form में हमेशा बनी रहे तो सनातन है। उसमें अगर बुढ़ापा आ गया तो वह चीज अशुद्ध हो गई तो फिर वह सनातन नहीं रही। आत्मा के अन्दर यह ज्ञान दर्शन सुख संवेदनाएँ यह हमेशा से रहती हैं। यह उसके सनातन भाव हैं। आत्मा इसीलिए अपने सनातन स्वभाव में कही जाती है।

शुद्ध आत्मा का न तो जन्म है न मरण

बुढ़ापा आत्मा को नहीं आता, बुढ़ापा शरीर को आता है। मरण शरीर का होता है इसलिए आत्मा का मरण नहीं। शुद्ध परमात्मा का फिर कभी मरण नहीं होता। अगर वह जन्म लेंगे तो मरण भी होगा, तो इसलिए उनका न जन्म होता है न मरण होता है। सिद्ध परमात्मा के लिए यह स्थिति बन जाती है वह जन्म-मरण, जरा, अनिष्ट किसी भी तरह से उनके लिए कुछ भी अनिष्ट योग भी सामने नहीं आएँगे। अनिष्ट योग जानते हो? राहु की दशा चल रही है शनि की दशा चल रही है केतु भारी पड़ रहा है यह सब क्या योग है? काल सर्प योग चल रहा है। क्या है यह सब? यह सब अनिष्ट योग है। यह अनिष्ट योग किसके लिए है? यह सब

जब तक है जब तक आप शरीर से जुड़े हुए हैं और जो आत्माएँ शरीर से मुक्त हो गई, उनके लिए कोई भी अनिष्ट योग कोई काम नहीं करते। इसलिए **जो लोग इन योगों से रहित, अनिष्ट योगों से रहित इन आत्माओं की शरण में पहुँच जाते हैं इनकी आराधना करने लग जाते हैं, उनके अनिष्ट योग कितने ही भारी क्यों न हो, सब कट जाते हैं।** अनिष्ट योगों को काटने का क्या तरीका है? यही तरीका है कि आप उनकी आराधना करो, जिनके पास में यह अनिष्ट योग नहीं है। इसलिए जब-जब आप सिद्ध आत्माओं की उपासना करेंगे, अनिष्ट योग से रहित आत्माओं की उपासना करेंगे, आपके अनिष्ट भी दूर होने लग जायेंगे और देख लेना आप दुनिया का कोई भी ज्योतिषी हो, वह हमेशा आपके अनिष्टों को दूर करने के लिए किसी भी तरह का कोई विधान बताएगा तो उसमें यही ब्रह्म की उपासना और इन्हीं शुद्ध आत्माओं की उपासना करने का वह विधान बताएगा।

सिद्धों की आराधना से ही अनिष्ट दूर होंगे

चाहे नाम उनके अलग-अलग क्यों न हो। हम उन्हें कितने ही नामों में क्यों न कहें... **चाहे राम कहें, हनुमान कहें, चाहे हम उन्हें भगवान महावीर स्वामी कहें, चाहे सिद्ध कहें, चाहे जिन कहें, कुछ भी कहें, किसी भी नाम से कहे लेकिन आपके अनिष्ट दूर होंगे तो उन्हीं की आराधना से दूर होंगे,** जिन्होंने अपने अनिष्ट खुद दूर कर लिए। लेकिन आपकी हालत यह है कि कोई भी छोटे-छोटे बाबा आपके लिए कोई भी तरीके की भ्रामक सामग्रियाँ भी दे देते हैं तो भी आप उनसे अपने अनिष्ट दूर करने में विश्वास करने लग जाते हैं। क्या अनिष्ट दूर करने की ऐसी सामग्रियों से अनिष्ट दूर हो सकते हैं। आपसे कहा गया भाई, आपके घर के सामने कोई हलवाई की दुकान है कि नहीं? बोलो है कि नहीं? आपने कहा नहीं है। चलिए, आप जिस गली से निकलते हैं, जिस सड़क पर पहुँचते हैं जो पहली हलवाई की दुकान पड़े, उसी से आप सबसे पहले जलेबी लेकर के खा लेना, आपके अनिष्ट दूर हो जाएँगे। ऐसे भी बाबा हैं। अनिष्ट दूर करने के लिए क्या जलेबी खाने से अनिष्ट दूर हो जायेंगे? बाबा ने कह दिया कि चले जाना दुकान पर, जो भी आपके लिए उस कपड़े की दुकान पर काला रुमाल मिल जाए तो काला रुमाल ले लेना। उसको अपने जेब में रख लेना, आपके अनिष्ट दूर हो जायेंगे। इससे अनिष्ट योग दूर हो जायेंगे? लेकिन लोग इन भ्रामक बातों में भी आ जाते हैं। कब? जब वह सनातन परम्परा को भूल जाते हैं तब। **अगर व्यक्ति अपने अन्दर बैठे हुए सनातन आत्मा को स्मरण कर ले तो दुनिया का कोई अनिष्ट योग उसके ऊपर हावी नहीं हो सकता, चाहे वह राहु हो, केतु हो, शनि हो, मंगल हो, कोई भी हो।** कोई योग उसके ऊपर हावी नहीं हो सकता क्योंकि सबसे बड़ा योग क्या है? अपने उपयोग से, अपने मन से, अपने परिणामों को अपने ही आत्मा में जोड़ लेना, उसका नाम परमात्म योग कहलाता है। उसी को **अर्ह योग कहते हैं।**

अर्ह का अर्थ

अर्ह मतलब... शुद्ध आत्माएँ। अर्ह का मतलब.. अब तो समझने लगे न सभी लोग। कोई भी पूछे आपसे यह अर्ह, अर्ह क्या होता है? what is अर्ह? अर्ह means the pure souls. वह शुद्ध आत्माएँ, जिनके अन्दर यह सब कोई रोग नहीं है और वह सब आत्माओं को अगर हमें किसी एक name से बोलना है, किसी एक अक्षर में हमें उसको बोलना है तो उसी का नाम है- अर्ह। चाहे हम **ओं** कह ले, चाहे **अर्ह** कह

ले। यह ओं भी परम मन्त्र है और अर्ह भी परम मन्त्र है। जिस तरह से इस ओं को भी गीता में कहा गया है... **ओं** में सारी संस्कृति समाई हुई है, उसी तरह से यह **अर्ह** में भी हमारी आत्मा की संस्कृति समाई हुई है। यह अक्षर जो होते हैं यह सब **बीजाक्षर** होते हैं और इन बीजाक्षरों के माध्यम से हमें उन शुद्ध सिद्ध आत्माओं तक पहुँचने की गति मिलती है, इसलिए यहाँ पर कहा गया, उनके अन्दर कोई भी अनिष्ट योग नहीं होते हैं। वह सब अर्हमय शुद्ध आत्माएँ बन गई हैं और उनसे अपनी आत्मा को जोड़ोगे तो इसी का नाम अर्ह योग कहलाता है। शुद्ध आत्माओं से अपनी आत्मा को योग मतलब जोड़ना। यह सबसे बड़ा योग होता है जिसे हम **अध्यात्म योग** कहते हैं, **परमात्म योग** कहते हैं। वही हमारे लिए अर्ह योग है अर्थात् हम अर्ह योग के माध्यम से उस सनातन परम्परा से जुड़ते हैं। जो सनातन आत्मा शुद्ध अवस्था में हमेशा रहती है जब ऐसी शुद्ध आत्माओं की हमें याद आती है तो हमारी आत्मा भी शुद्ध होने लग जाती है। इसीलिए कहा जाता है... शुद्ध आत्माओं की शरण में पहुँचो। सिद्ध आत्माओं की शरण में पहुँचो।

सिद्धों की शरण में सभी आदि व्याधि दूर हो जाती हैं

जो सिद्ध पुरुष है शुद्ध पुरुष है उन आत्माओं की शरण में अगर पहुँचोगे तो यह सारे योग, अनिष्ट और प्रमोह **एक बहुत बड़ा रोग है- प्रमोह**। एक प्रमेह होता है जिसे आज की भाषा में diabetes कहा जाता है। यह रोग भी प्रमोह से ही उत्पन्न होता है। अगर आपसे पूछा जाए कि diabetes क्यों होती है? आप कहोगे, शक्कर खाने से होती है। यह बात गलत है। हमने कितने ही ऐसे लोगों को देखा है जो कितनी-कितनी शक्कर जिन्दगी भर खाते रहे और जिन्दगी के अन्तिम क्षणों तक उन्हें कभी diabetes नहीं हुई। आज आपको 10 साल में, 12 साल में, 20 साल की उम्र में क्यों diabetes हो रही है? मैं नहीं मानता कि शक्कर खाने से diabetes होती है। खाने से diabetes नहीं होती है, उस शक्कर को नहीं पचाने के कारण से diabetes होती है यूँ कहना चाहिए। आपने जो खाया है, उसे अगर आपने पचाने के लिए भी कुछ उपयोग किया है तो आप अगर उसको पचा गए तो सब पच जाएगा और पहले के लोगों में इतनी जठराग्नि होती थी, इतनी क्षमता होती थी कि रोग भी पचा जाते थे, इसलिए कभी रोग नहीं होते थे। जठराग्नि को प्रबल बनाए रखने के लिए भी हमेशा कुछ न कुछ ऐसी भोज्य वस्तुएँ हमेशा भोजन के उपरान्त देने का विधान बताया गया है कि अगर आप उनका सेवन करते रहोगे तो आपकी जठराग्नि नियमित रूप से अच्छी चलती रहेगी और आपको ऐसे रोग कभी नहीं होंगे। भोजन करने से, मीठा खाने से, ज्यादा खाने से, अगर आपके लिए रोग होते हैं, तो आप इन रोगों पर control करने के लिए इन चीजों पर भी control कर सकते हैं। लेकिन सबसे बड़ी चीज है, हमें अपनी उस पुरातन संस्कृति में होने वाली पद्धतियों में जो भोजन के बारे में बताया गया है हम उसको भी ध्यान में रखें।

सनातन में शाकाहार परम्परा

जैसे सनातन परम्परा हमें आत्मा के विषय में ज्ञान कराती है ऐसे ही सनातन परम्परा हमें शरीर को स्वस्थ बनाए रखने का भी ज्ञान कराती है और उसी परम्परा में हमें यह भी बताया जाता है, हमेशा ऐसा भोजन करो जो शरीर के लिए हितकारी हो, हल्का हो, पाचन में सहायक हो और वह कभी भी **शाकाहार** के अलावा अन्य कोई भोजन न हो। ऐसा भोजन करना भी एक सनातन परम्परा के अन्तर्गत आता है।

शाकाहार की परम्परा अगर शरीर के साथ जुड़कर के चल रहे हो तो शाकाहार करो। गन्दी चीजें न खाओ, न पियो। शराब, गन्दे से गन्दा पेय पदार्थ है। अगर आपके शरीर में यह चला गया तो आप कभी भी उस शुद्ध परमात्मा की उपासना करने की योग्यता ही नहीं रख पाओगे, योग्यता ही खो दोगे। इसलिए पहले संस्कृति के अन्दर कभी ऐसी विकृतियाँ नहीं दिखाई देती थी। आज यह विकृतियाँ दिखाई देती हैं। पहले के लोग इसलिए कभी इन बीमारियों से पीड़ित नहीं होते थे। न कभी diabetes होती थी, न cancer होता था क्योंकि वे मेहनतकश लोग हुआ करते थे। अच्छी मेहनत करते थे तो अच्छा खाते भी थे और खाना भी अच्छा क्या? जो खा लेते थे, वह सब पच जाता था और पच जाता था इसलिए वह कोई रोग का कारण नहीं बनता था और कभी-कभार अगर लगने लग जाए कि भाई! आज थोड़ा-सा ज्यादा छक के खा लिया है, तो लोग ऐसी तरकीबें भी जानते थे कि उसको पचाने की भी scheme जानते थे। क्या होता है भाई?

स्वस्थ शरीर के लिए स्वस्थ भोजन

भोजन करने के बाद एक पद्धति चला करती थी। आज भी मैं कह रहा हूँ, जिससे लोगों को diabetes नहीं हो, इसलिए अगर उन्हें बचना हो तो एक चीज का सेवन करना शुरू कर देना। भोजन करने के बाद में कहा जाता था- **तक्र** पीना चाहिए। **तक्र** जानते हो **छाछ** होती है, **मट्ठा** होता है। भोजन के बाद में आप तक्र का सेवन करो, मट्ठे का सेवन करो। आपके लिए जो भोजन किया गया है वह भोजन अच्छे से पचाने में काम आ जाएगा और वह तक्र ही आपको अनेक रोगों से बचाने में कारण बन जाएगा। अगर diabetes नहीं हुई है तो सीधे-सीधे मट्ठा पियो लेकिन कब पियो? भोजन के बाद में। अगर diabetes हो गई है तो फिर उसमें कुछ और आपको डाल कर के उसका सेवन करना पड़ेगा। diabetes होने पर liver कमजोर हो जाता है। liver कमजोर होने की कई औषधियाँ हैं। कल आपको एक अमरबेल के बारे में भी बताया था। लेकिन अगर वह उपलब्ध न हो तो घर में एक बहुत अच्छा सीधा सादा-सा भोजन आपके लिए उपलब्ध हो सकता है जिसे बोलते हैं- तक्र, छाछ। उस छाछ में हींग का बघार लगाओ और उसमें थोड़ा सा नमक मिलाओ, थोड़ी काली मिर्च मिलाओ, थोड़ा जीरा मिलाओ और उसका सेवन करो। यह यकृत को, जिगर को, liver को बल देने वाला एक बहुत बड़ा औषधि पदार्थ है- तक्र। अगर आप इसका सेवन प्रतिदिन करेंगे, नियम से आपके लिए जो diabetes हुई है, उसमें भी control आएगा और liver की जो problem है वह liver की problem भी दूर होगी। चाहे वह liver बढ़ गया हो, चाहे वह liver के ऊपर सूजन आ गई हो। यह पहले के लोग किया करते थे। भोजन के बाद में क्या करते थे? वज्रासन में बैठना, कुछ दूर पैदल चलना और भोजन करने के उपरान्त यह तक्र का सेवन करना। उसके भी उपरान्त कुछ ऐसी और मसालेदार चीजें होती हैं- जैसे सौंफ है, इलायची है, लवंग है...इनका सेवन करना। यह सब क्या होती हैं? यह सब चीजें...यह सब चीजें आपके भोजन को पचाने के लिए, भोजन में जो रस नहीं है उसके रस को बनाने में कारण बनती है और सब चीजों को छोड़कर के आप लोग bisleri का पानी पीने लग गए, cold drinks पीने लग गए इसलिए बीमारियों के शिकार बनने लग गए। मोह छोड़ना पड़ेगा तब कुछ बनेगा। प्रमोह से प्रमेह उत्पन्न होता है। **अगर आपका भोजन में ज्यादा मोह हो गया** तो फिर यह diabetes रोग उत्पन्न होगी क्योंकि आप अपने मोह के कारण से यह भी नहीं देख पा रहे हो कि हमें क्या सेवन करना चाहिए? और क्या सेवन नहीं करना चाहिए? भोजन कराने की भी एक कला होती है, भोजन करने की भी एक कला होती है और भूख भी समय पर लगना, यह स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता है। कोई अतिथि

आपके घर में आ रहा हो और उसे समय पर भोजन चाहिए और आप उसे समय पर भोजन न दे पाएँ तो यह आपकी बहुत बड़ी कमी मानी जाएगी। अतिथि आ रहा हो, आप उसकी परीक्षा किसी भी तरीके से कर ले लेकिन उसे समय पर भोजन तो उपलब्ध होना ही चाहिए।

राजा श्रेणिक और नन्दश्री द्वारा परस्पर परीक्षा



SCAN TO WATCH

राजा श्रेणिक कहाँ पहुँच गए हैं, पता है आपको? नन्दश्री के घर तक पहुँच गए और उनकी परीक्षा करने के लिए सामने दरवाजे पर कीचड़ लगा दी गई और कीचड़ घुटने तक रख दी गई और देखा गया कि यह कैसे घर के अन्दर घुस कर के आते हैं और फिर भी वह श्रेणिक घर के अन्दर तक पहुँच गए। जब पहुँच गए तो वह अपनी सखी निपुणमति से कहती है... अब इनको अपनी कीचड़ धोने के लिए यह चुल्लू भर पानी ले जाओ, दे दो इनको। इससे अपनी कीचड़ साफ कर लेंगे और फिर हमारे घर में भीतर प्रवेश करना है। तब इनका हम आतिथ्य करेंगे तब हम इनको हम भोजन कराएँगे क्योंकि भूखे तो हैं, सुबह से हैं। श्रेणिक ने देखा... वह सखी इतना-सा पानी लेकर के आई है और घुटनों तक कीचड़ लगा हुआ है। अब क्या करना? **बुद्धि-चातुर्य** से ही सभी काम होते हैं और यह बुद्धि-चातुर्य अच्छे राजाओं में होते हैं, कुशल प्रशासकों में होते हैं नेताओं में होते हैं। जो अच्छे पदों पर होने वाले लोग होते हैं, उन सब में यह बुद्धि का चातुर्य जरूर होना चाहिए। यह बुद्धि के चातुर्य के बिना कभी कोई अपनी पद की जो एक durability है, वह ज्यादा नहीं रह पाती है।

श्रेणिक का बुद्धि चातुर्य

बुद्धि चातुर्य जरूर होना चाहिए तो राजाओं के गुणों के माध्यम से सीखा जा रहा है... इतने से पानी में कैसे काम चलाया जाए? कम पानी में भी हम कीचड़ को कैसे साफ करें, यह सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हमें सिखाई गई, **राजा श्रेणिक के द्वारा**। क्या किया उन्होंने? उसी घर के कोने में कुछ जो बांस होता है, लकड़ियों की फंछियाँ रखी रहती हैं, वह रखी थी। समझ आया! उन्होंने पहले अपनी कीचड़ को उन लकड़ी की फंछियों से साफ किया। फिर क्या किया? एक कोई ऐसा ही छोटा-सा लट्ठा, जैसा घर में कपड़ा पड़ा रहता है न, फिर उस कपड़े में थोड़ा-सा पानी, जो तुमने दिया है न, उसमें भी थोड़ा-सा पानी लेकर के उसने उस कपड़े से वह कीचड़ साफ किया और उसमें भी उसने उस चुल्लू-भर पानी में भी पानी बचा दिया और कह दिया उस सखी से... जाओ, अपनी रानी के लिए दे आना, अपनी सहेली के लिए दे आना। वह उसमें भी आधा पानी उसको दे कर के चले गये। तब उसने समझा कि हाँ! यह राजा श्रेणिक वास्तव में बहुत बुद्धिमान है, चतुरता को धारण करने वाले हैं। इस तरह से राजा श्रेणिक अन्दर प्रवेश कर गए। कहा गया... आपने इन इतनी परीक्षाओं में अपनी बुद्धि की उत्तमता दिखाई। वह इन्द्रदत्त सेठ था, वह भी प्रसन्न हुआ। उसकी जो लड़की थी, बेटी थी, वह भी प्रसन्न हुई और तब उन सबने मिलकर के आग्रह किया... आप हमारे आतिथ्य को स्वीकार करें। आप यहाँ आए हैं मेरा भोजन ग्रहण करें।

श्रेणिक द्वारा नन्दश्री की भोजन से पूर्व परीक्षा

जब भोजन ग्रहण करने की बारी आई तब उस राजा श्रेणिक के मन में आया। वैसे अभी वह राजा बना नहीं है- श्रेणिक। अभी तो वह युवराज है, बनने वाला है। एक दो दिन में बनाऊंगा उसको। अब जब श्रेणिक की बारी आई तो सोचने लगा...इन्होंने हमारी परीक्षा ले ली है। मैं भी इस नन्दश्री को बिना परीक्षा लिए, इसका भोजन नहीं करूंगा। प्रेम करने का यह भी एक तरीका होता है। उसने भी सोचा कि मैं भी इसकी एक परीक्षा लूंगा तो वह कहता है...देखो! मेरे पास गिनती के 32 चावल हैं। क्या किया उसने? गिनती के कितने? 32 चावल हैं और उसने कहा इन 32 चावलों को ले जाओ और इन्हीं 32 चावलों से हमें अच्छा स्वादिष्ट व्यंजनों से भरपूर, अनेक-अनेक तरह के व्यंजनों के द्वारा बनाया गया, हमें भरपेट भोजन कराना है केवल इन 32 चावलों से। दे दे तुमको, बना लाओगे कल 32 चावल के ढेर सारे व्यंजन? जब नन्दश्री ने यह देखा और उसके मुख से सुना तो उसने भी समझ लिया अब अपनी भी बारी आ गई है। बहुत देर से हम उसकी परीक्षा कर रहे थे, अब हमारी भी परीक्षा की बारी है। उसने समझ लिया क्योंकि 32 चावल में कितना-सा भोजन बनेगा? उसने क्या किया? अपनी कुशलता से, बता दें। ये सब formulae आपको काम आ सकते हैं, राजनीति में भी काम आते हैं, गृहनीति में भी काम आते हैं और समाजनीति में भी काम आते हैं। कम में भी कैसे घर चलाया जाता है? कम में भी कैसे अपना काम निकाला जाता है? और यही चीज अगर सीख ली जाए, मुझे लगता है कि इस कहानी के माध्यम से यही सिखाया जा रहा है कम में कैसी अच्छे ढंग से घर की व्यवस्था बनाई जाए? पैसा कम भी है, तो हम कैसे घर को manage करें? लेकिन जो यहाँ विधि बताई जा रही है, वह विधि आप बहुत आसान नहीं समझना। 32 चावल थे, उसने उन 32 चावलों के छोटे-छोटे से पुए बनाए। पुए जानते हो न- पुए, उसने उनके पुए बनाए, छोटे-छोटे से 32 चावलों के और उन पुओं को उसने अपनी उस सहेली के लिए दे दिया, **निपुणमति के लिए और कहा इनको ले जाओ** और इससे कुछ पैसा कमा कर के लेकर के आओ। वह निपुणमति उन पुओं को लेकर के बाहर निकली और एक जुआरियों के झुंड के सामने खड़ी हो गई। जुआरी समझते हो न, जो पैसा लगा कर के जुआ खेलते रहते हैं। तो उनके सामने खड़ी हो गई और कहने लग गई...ये पुए बहुत ही स्वादिष्ट हैं और बहुत ही अनिष्ट योग को दूर करने वाले हैं। जो इन पुओं को खा लेगा, वह नियम से जुआरी जीतेगा। लेकिन उसके लिए इतना पैसा मुझे देना पड़ेगा। बहुत से लोग जुआरी तो आते ही हैं, हार रहे हैं! हार रहे हैं! हार रहे हैं! तो भैया! यह भी एक जुआ समझ लो। इसको भी एक लगा लो तो उनमें से एक जुआरी तैयार हो गया और उसने उसको मन चाहा पैसा दिया और पुओं को खा लिया। वह अपनी निपुणमति चली गई और तू अपने जुआ खेलते रहना। वह पैसा लेकर के निकल गई और उस पैसे से उसने बहुत सारे चावल, घी, दूध, ये सब चीजें खरीदी और फिर उसके बाद में उन पैसे से वे व्यंजन बनाए गए और उन व्यंजनों को जब श्रेणिक के सामने परोसा गया तब श्रेणिक समझा कि हाँ, हमारी परीक्षा में भी नन्दश्री पास हो गई।

बड़ी से बड़ी समस्या का हल बुद्धि चातुर्य से

तरकीबें होती हैं हर चीज की और ये तरकीबें आने का नाम ही है- बुद्धि का चातुर्य। अब ये तरकीबें हमेशा अपनी भारतीय संस्कृति में चलती रहती हैं। पहले हर घर-घर में बच्चा-बच्चा, बेटी-बेटी सब तरकीबें जानता था। आज ये सब तरकीबें भूल गए क्योंकि इन तरकीबों को बताने वाले न तो नाना-नानियों की

कहानी रह गई, न कोई राजा-रानी की कहानी रह गई। न मम्मी-पापा कभी ये कहानियाँ सुनाते हैं, तो ये तरकीबें सब भूल गए। बस सीधा-सीधा बस वह A से Apple और B से क्या बोलते हो? B से.. अरे बोलो तो english medium में पढ़ें हो। B से Ball यह सिखाया जाता है। अब जब आपको apple, ball ये सब चीजें सिखाने में समय लग गया और आपके लिए किसी भी तरह का बच्चों को कहानी, अच्छे राजाओं से परिचय, यह सब सुनाने को नहीं मिला तो यह बुद्धि का चातुर्य तो बच्चों में खो ही गया। चाहे कितना ही वह MBBS कर ले, चाहे IAS कर ले, बुद्धि का चातुर्य आएगा तो इसी तरह की कहानियाँ समझने से आएगा। जब उसके लिए भोजन परोसा गया तो उसने देखा कि किस तरह से तुमने 32 चावलों से भोजन लिया तो उसने बताया और वह भोजन जब उस ने किया तब उसके लिए प्रसन्नता हुई और तब दोनों की परीक्षाएँ समाप्त हुई।

श्रेणिक की योग्यता से नंदश्री का प्रभावित होना

श्रेणिक कहाँ पहुँच गए? नंदश्री के यहाँ पहुँच गए, आतिथ्य स्वीकार कर लिया। इन्द्रदत्त सेठ को भी समझ में आ गया। जहाँ मुझे बहुत अच्छा रूपवान राजा की तरह दिखने वाला सुन्दर पुरुष दिखाई दे रहा था, मैं इसको मूर्ख समझ रहा था, यह बहुत बुद्धिमान पुरुष निकला और मेरी बेटी भी बहुत बुद्धिमान है जो उसने इतनी परीक्षा करके उसे अपने घर तक बुला लिया। सब प्रसन्न हो गए, सभी सन्तुष्ट हो गए और वह श्रेणिक वहीं पर रहने लग गया और कुछ दिन वहीं पर रहा और रहते-रहते...सब चाह ही रहे थे। क्या चाह रहे थे? इन्द्रदत्त तो चाह ही रहा था। जब पिता चाह रहा है बेटी के लिए भी, बेटी के लिए भी परीक्षा करके चाहना था, उसने भी चाह लिया और **श्रेणिक राजा ने भी परीक्षा कर ली।** सबने एक दूसरे की परीक्षा कर ली। किसके लिए कर ली? परीक्षा करने के बाद मैं जब सब सन्तुष्ट हो गए तो श्रेणिक का विवाह उस नन्द श्री के साथ में करा दिया गया। क्यों? धीमी ताली क्यों बजाते हो? अच्छी बात नहीं है कि अच्छे योग्य वर का मिल जाना, योग्य वर वधू का मिल जाना अच्छी बात नहीं क्या? अनुमोदना कर लो ताकि तुम्हारे भी बच्चों के लिए योग्य वर-वधू मिले। जब वह योग्य वर-वधू मिल गए, दोनों के लिए इस तरह से एक साथ सुख पूर्वक रहना होने लगा, तब आगे चलकर के उनका जीवन कैसा सुख-सम्पन्नता के साथ बीतने लगा, यह आपको कल बताया जाएगा। अभी आप यह ध्यान में रखें कि सिद्ध भगवानों के पास में कोई रोग नहीं होते हैं, आत्मा सनातन होती है और परीक्षा करके ही हमें हमेशा वर-वधू का एक सुयोग्य चयन करना चाहिए। इन सब बातों को समझते हुए अगर हम अपनी सनातन संस्कृति को आगे बढ़ाएँगे तो हम हमेशा जीवन में सुखी रहेंगे।

16. श्रद्धा की सहज सरल अभिव्यक्ति ही प्रभु की आराधना



आचार्य पूज्यपाद देव विरचित सिद्ध भक्ति के माध्यम से पिछले कई दिनों से आप सभी लोग और स्वयं हम भी भगवान सिद्धों की आराधना करते हुए उन सिद्ध भगवन्तों के गुणगानों का किस रूप में हम वर्णन कर सकते हैं और किस तरह से आप उस वर्णन को सुन भी सकते हैं और समझ सकते हैं, यह एक प्रयास चल रहा है। इस तरह की यह जो एक उपदेश की प्रक्रिया है, इसे मैं भगवान सिद्धों के गुणों का वर्णन करने का एक प्रयास मात्र ही मानता हूँ क्योंकि ऐसा करना भी एक बड़े साहस का काम होता है। समाज के अन्दर जहाँ पर लोग अनेक-अनेक तरह के मनोभावों के साथ बैठते हैं और वहाँ पर सीधा-सीधा सिद्ध भगवान की बात करना और वह लगातार करना और उन सिद्ध भगवन्तों के गुणों का वर्णन करते हुए सभी जीवों के लिए यह भावना उत्पन्न करना कि हमारे अन्दर भी सिद्ध प्रभु बनने की भावना आए, यह प्रयास भगवान शान्तिनाथ के चरणों में ही सम्भव हो सकता है। **भगवान जब अपने गुणों के साथ में विराजमान होते हैं तो उन गुणों का वर्णन करते हुए कभी-कभी यह भी वर्णन करना पड़ता है कि हम यह जाने कि दोष क्या है? और गुण क्या है?** इसी हेतु पहले आपके समक्ष यह रखा गया था कि भगवान के अन्दर कौन-कौन से दोष नहीं होते हैं? कौन-कौन सी बीमारियाँ नहीं होती हैं? और बीमारी नहीं होना भी अपने आप में एक बहुत बड़ा सुख है और यह बीमारी का अभाव दिखाना भी भगवान के अन्दर सुख की सत्ता को बताना है। इसलिए आज भी हम उसी काव्य number छह को आगे पढ़ते हुए अन्तिम जो line थी, उसके बारे में थोड़ा सा और वर्णन करने का प्रयास करते हैं। पहले तीसरी line का वर्णन हो गया था, चौथी रह गई थी। आज फिर हम भगवान के उन्हीं गुणों की आराधना करने के लिए इस काव्य number छह को पढ़ते हैं।

**अन्याकारामि-हेतु-, न च भवति परो येन तेनाल्प-हीनः,
प्रागात्मोपात्त-देह-, प्रति-कृति रुचिराकार एव ह्यमूर्तः।
क्षुत्- तृष्णा- श्वास- कास-, ज्वरमरण-जरानिष्ट-योग-प्रमोह-
व्यापत्याद्युग्र-दुःख-प्रभवभवहतेः, कोऽस्य सौख्यस्य माता।६।**

अठारह दोष रहित भगवान

पहले हमने जाना था **भगवान के अन्दर क्षुधा नहीं होती, पिपासा नहीं होती, क्षुत्पिपासा, तृष्णा नहीं होती और श्वास, कास आदि रोग भी नहीं होते।** श्वास के रोग अलग होते हैं और वही श्वास के रोग कभी-कभी कास रोग में बदल जाते हैं। कास जानते हैं आप? एक तरह की खांसी को कास कहते हैं। किसको बोलते हैं? खांसी भी एक रोग होता है। होने के बाद में बड़ी मुश्किल से यह रोग थमता है और वह खांसी भी कई तरह की हो जाती है। सूखी खांसी अलग होती है, गीली खांसी अलग होती है। ऐसी ही यह खांसी भी एक रोग है। श्वास-कास इस तरह के रोग भगवान के अन्दर नहीं होते हैं। **जरा अर्थात् बुढ़ापा नहीं होता, मरण नहीं होता, अनिष्ट योग नहीं होते, प्रमोह नहीं होता, यह सब बातें पहले आपको बता दी थी।**

भगवान के सुख

व्यापत्ति आदि उग्र-दुःख- प्रभव-भव-हते, कोऽस्य सौख्यस्य माता

कहते हैं...भगवान के अन्दर जो सुख है, उस सुख का 'माता' अर्थात् जानने वाला। 'सौख्यस्य माता' माता बोलते हैं... 'मा' धातु मातृ के अर्थ में, जानने के अर्थ में आती है, तो उसका अर्थ निकलता है- जानना। यह मातृ शब्द से बनता है और मातृ मतलब माता भी होता है और मातृ मतलब जानना भी होता है। प्रमाता जिसको आप बोलते हैं... 'प्र' उपसर्ग लग कर वही माता से प्रमाता बन जाता है अर्थात् जानने वाला। 'गुणावलोकस्य जनस्य नेता' यह भगवान की स्तुति करते हुए, आचार्य समन्तभद्र महाराज कहते हैं कि हे भगवन्! 'सर्वस्य तत्त्वस्य भवान प्रमाता' सभी तत्त्वों के आप ही प्रमाता अर्थात् जानने वाले हैं। सभी गुणों को देखने वाले जो लोग होते हैं, गुणवान लोगों के आप ही नेता हैं। इस तरह से जो सभी तत्त्वों को जानने वाले होते हैं, उन्हीं को प्रमाता कहा जाता है और प्रमाता का मतलब होता है- जानने वाला। यहाँ आचार्य आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहते हैं...भगवान के सुख को जानने वाला कौन हो सकता है? 'कोऽस्य सौख्यस्य प्रमाता' भगवान के सुख को कैसे जाना जा सकता है कि भगवान कितने सुखी हैं? यह प्रश्न आप लोगों में भी उत्पन्न होता ही होगा। भगवान हैं तो उन्हें कौन सा सुख मिलता है?

दुःख का अभाव ही सुख का कारण

जब हम सुख की बात करते हैं तो सबसे पहले हमें यह दिखाना होता है कि जो दुःख हम भोग रहे हैं, वह दुःख भगवान के अन्दर नहीं होते हैं, पहले यह निश्चय कर लो। ये जो दुःख हैं, इन दुःखों का अभाव होना ही उनके अन्दर सुख के सद्भाव को बताता है और यह दुःख अनेक तरह के होते हैं। यहाँ पर लिखा है- 'व्यापत्ति-आदि' और भी अनेक दुःख होते हैं। जो विशेष प्रकार की आपत्तियाँ आ पड़ती हैं, उसके कारण से भी आदमी के ऊपर दुःख आ पड़ते हैं और वह आपत्तियाँ किसी के द्वारा बनाई नहीं होती है, वह अपने आप आ पड़ती हैं। कुछ प्राकृतिक रूप में भी होती हैं और कुछ अपने कर्म के उदय से सहसा घटित होने वाली घटनाएँ भी होती हैं।

आपत्तियाँ हर समय चलती रहती हैं

आप सोचे दुनिया के लोगों में कितनी तरह की आपत्तियाँ आती रहती हैं और उन आपत्तियों को आप newspaper और news channels के माध्यम से जान सकते हैं, देख सकते हैं, कितनी तरह की आपत्तियाँ हर समय चलती रहती हैं। आदमी सहजता में अपना जीवन जी रहा होता है और अचानक से उसकी कोई घटना घटित हो जाती है तो उसी का नाम आपत्ति कहलाती है। आप देख रहे हैं दुनिया में कितना पानी की बाढ़ आ रही है। जगह-जगह पर लोगों के लिए कितनी तरह की दिक्कतें हो रही हैं और यह बाढ़ का अचानक से आ जाना भी एक तरह की प्राकृतिक आपदा (आपत्ति) कहलाती है। अब इस आपदा को कौन चाहता है? घर में व्यक्ति अच्छा भला बैठा होता है, अपना जीवन जी रहा होता है, अपने काम से गया होता है, लौट कर के अपने घर तक आना चाहता है और उसी बीच में यह तमाशा हो जाता है।

आपत्ति व्याकुलता का कारण

पानी बरस रहा है, बरसते-बरसते इतना बरस गया, इतना बरस गया कि घर के घर बह गए। कितने ही लोग पानी में बह जाते हैं, कितने ही लोगों के घर बर्बाद हो जाते हैं, कितने ही लोगों के परिवार इधर-उधर बिखर जाते हैं, सारी की सारी घर की चीजें तहस-नहस हो जाती हैं। आप सोचो आप यहाँ पर बहुत शान्ति से बैठे हो, थोड़ा सा पानी कम गिरता है तो भीतर से व्याकुलता करने लग जाते हो। महाराज! दुनिया में पानी तो बहुत गिर रहा है, यहाँ पर बिल्कुल नहीं गिर रहा है। क्या चाहते हो? जैसे दुनिया में गिर रहा है वैसे गिरा दूँ, यहाँ पर? अगर दुनिया में पानी गिर रहा है तो वह भी देखो किसलिए गिर रहा है? कहाँ गिर रहा है? वह पानी भी हमारे सुख के लिए है कि दुःख के लिए है? **वह आपत्ति बनकर आ रहा है कि सम्पत्ति बनकर आ रहा है।** थोड़ी सी गर्मी आपके लिए बेचैन कर सकती है लेकिन यह जानकर रखो कि पानी भी अगर अनुकूलता के साथ में गिरता है, समय-समय पर गिरता है, तो ही वह हमारे लिए सुख देने वाला होता है अन्यथा थोड़ी सी गर्मी तो हमें सहन करनी पड़ती है और गर्मी तो आती भी रहती है और गर्मी के कारण से ही बहुत कुछ हमारे लिए फायदा भी रहता है लेकिन आपको लगता है कि गर्मी से बड़ी परेशानी होती है। परेशानी तब होती है जब यह महसूस करो कि पानी गिरे ही न और अगर नहीं गिरे, तब जाकर हम कहें कि भाई पानी यहाँ पर गिर नहीं रहा है। पानी नहीं गिरने का मतलब सूखा पड़ गया। कहीं सूखा तो नहीं पड़ रहा है? गिर रहा है, समय-समय पर गिर रहा है क्योंकि सावन के महीने भी दो हो गए तो पानी भी बेचारा क्या करे, प्रकृति भी क्या करे?

श्रावण मास और भगवान के कल्याणक पर्व

अब सावन के दो महीने हो गए हैं तो दूसरा महीना ही आप मान्य रखोगे। दूसरा महीना ही माना जाएगा न क्योंकि आप इस सावन के महीने में कोई कार्यक्रम कर ही नहीं रहे हो। वरना सावन के महीने में भगवान नेमिनाथ स्वामी की जन्म जयंती भी आती है, तप कल्याणक भी आता है। सावन के महीने में पार्श्वनाथ भगवान का भी मुकुट सप्तमी का वह पर्व आता है, मोक्ष कल्याणक का पर्व आता है लेकिन यह सावन का महीना यूँ ही जा रहा है। जब सूखा जा रहा है, आप कोई सावन के महीने में इस तरह से अभी धर्म आराधना करने के लिए तैयार नहीं हो क्योंकि हम ज्योतिषी शास्त्र के अनुसार अगला आने वाला जो शुक्ल पक्ष होगा, हम उसमें ही इस तरह का यह कार्य करेंगे। **इस तरह से जब आप कार्य करने के लिए मन बनाए हो तो एक महीना कहीं न कहीं आपको कुछ न कुछ जो एक imbalance हो रहा है, उसको balance करने के लिए कुछ न कुछ थोड़ा बहुत तो सहन करना ही पड़ेगा।** यह मानसिकता बना कर रखनी चाहिए। प्रकृति के नियमों को जान कर रखना चाहिए कि भले ही यह सावन का महीना चल रहा है लेकिन यह सावन का वह महीना नहीं है जो वास्तव में होना चाहिए। वह महीना सावन का जब अगला महीना आएगा तब उसमें सावन जैसा आपको लगेगा। अन्यत्र अभी जो कुछ भी हो रहा है; वह अनेक तरह की आपत्तियाँ आप देख रहे हो। वह बाढ़ के रूप में भी पानी आना अपने आप में अच्छा नहीं माना जाता वह भी एक आपत्ति मानी जाती है। आप लोग अभी किसी आपत्ति-ग्रस्त तो नहीं हो। आपत्ति नहीं है तो सुख में ही हो। न सूखा पड़ रहा है, न कोई ज्यादा बाढ़ आ रही है, दोनों से बचे बैठे हो तो सुख में हो। फिर चिल्लाने की क्या जरूरत है...महाराज! पानी नहीं, पानी नहीं, पानी नहीं, यह सुख है।

आपत्तियों के दुष्प्रभाव

आपत्तियाँ कभी भी आ जाती हैं, किसी भी समय पर आ जाती हैं। एक news आप देखो, एक व्यक्ति को current लग जाता है और एक व्यक्ति उसके लिए बचाने जाता है और ध्यान नहीं रखता कि current में आदमी को कैसे बचाना चाहिए और एक के बाद एक, एक के बाद एक, उस current की गिरफ्त में आते चले जाते हैं और सत्रह लोगों की मौत हो जाती है। यह क्या कहलाती है? यह कहलाती है- आपत्ति, अचानक से आ जाने वाली आपत्तियाँ। चल रहे हैं, रास्ते में किसी भी तरह से हम अपनी सुरक्षा के साथ चल रहे हैं लेकिन किसी car वाले ने, किसी scooter वाले ने आकर के एकदम से ठोकर दी और हम किसी तरह से गिर पड़े, तुरन्त हमारे हड्डियाँ fracture हो गई, एकदम से हमारे लिए बीमारी पड़ गई। यह क्या हो गई? यह आपत्तियाँ कहलाती है। **Sudden आ जाने वाली अनेक तरह की जो ये विपत्तियाँ होती हैं, ये आपत्तियाँ भी आदमी के लिए कभी भी दुःख का कारण बन जाती हैं, इसलिए आदमी हमेशा दुःख में घिरा रहता है।** कितना ही बच कर चलो, कितना ही देख कर चलो।

मुनि श्री समय सागर जी की दुर्घटना

शायद जहाँ तक मुझे याद आ रहा है **एक बार मुनि श्री समय सागर जी महाराज को भी शायद एक चोट लगी थी।** वे चल रहे थे और महाराज जी की आदत है, वह थोड़ा सा बिलकुल नीचे ही सिर झुका कर ज्यादा देख कर चलते हैं। शायद सामने कुछ ऐसा कुछ pipe वगैरह था, cycle खड़ी थी। किसी बच्चे का धक्का लगा और cycle उनके ऊपर गिर गई। अब देखो यह होता है...हम ईर्या समिति से चल रहे हैं, हम सावधानी से, नीचे देखकर, सामने देखकर चल रहे हैं और अचानक से कुछ भी हो जाए। यह घटना यहीं सतना की है न? यह भी मुझे याद आ गई। उस समय पर मुनि श्री के लिए इस तरह की एक अचानक से लगने वाली चोट। हमें लगा देखो! कितनी सावधानी से मुनि महाराज चलते हैं और फिर भी उनके लिए कोई न कोई बगल का व्यक्ति आकर आपत्ति पैदा कर सकता है, यह भी एक आपत्ति है। **‘पत्ति’ मतलब गिर पड़ना, प्राप्त हो जाना और ‘आ’ मतलब आकर सामने से, अगल से, बगल से, किसी भी तरह से, जो हमारे लिए दुःख की प्राप्ति हो जाए उसका नाम है- आपत्ति।**

विभिन्न प्रकार की आपत्तियाँ

अब ये आपत्तियाँ किसी के लिए भी हो जाती हैं। पैदल चलने वालों के लिए भी हो जाती हैं, गाड़ियों पर चलने वालों के लिए भी हो जाती हैं, train में चलने वालों के लिए भी हो जाती हैं। Trains के भी भयंकर से भयंकर accident हो जाते हैं। सब आप देखते रहते हो, सुनते रहते हो और plain भी crash होते रहते हैं। उनमें भी न जाने कितने-कितने लोग मर चुके होते हैं, निकल गए होते हैं। कहीं पर भी, किसी भी तरह का blast हो जाता है और **यह तरह-तरह की आपत्तियाँ जो आप देखते हो यह भी अपने आप में अचानक आ पड़ने वाले दुःख हैं।** संसार में जब तक हैं तब तक कोई न कोई आपत्तियाँ से हम घिरे ही रहते हैं। यहाँ बैठे हैं शान्ति से, अचानक से न जाने घर में क्या हो जाए? कौन से phone आ जाए? तुरन्त उठ कर जाना पड़ जाए आपत्तियों में घिर पड़ें।

भगवान कैसे हैं? सुख कर्ता या दुःख हर्ता

हम बहुत जल्दी कह देते हैं...हे भगवन्! आप तो सब प्रकार के दुःखों से मुक्त हो तो सारे दुःख हमारे ऊपर क्यों टूट पड़ रहे हैं क्योंकि हम भगवान को सुखी रूप में देख नहीं पा रहे हैं। **हम भगवान को सुख के रूप में जानते ही नहीं हैं। भगवान के सुख को स्मरण करने से भी हमारे बहुत कुछ दुःख दूर हो जाते हैं लेकिन हम भगवान को केवल एक शक्ति के रूप में ही देखते हैं।** भगवन्! हमारे दुःख दूर करो, भगवन्! हमारे दुःख दूर करो, हमारे ऊपर दुःख नहीं आना चाहिए, हमारी मानसिकता यह रहती है। लेकिन हम क्या कभी भगवान के गुणों का गान इस रूप में कर पाते हैं कि भगवन्! आप! कितनी प्रकार की आपत्तियाँ होती हैं, उन सब आपत्तियों से दूर हो गए। **जो आत्माएँ मोक्ष को प्राप्त हो गईं, जिन्हें निर्वाण हो गया, जो शुद्ध आत्माएँ हो गईं, जो सिद्ध आत्माएँ हो गईं, उन अर्हमय, उन सिद्ध आत्माओं में किसी भी तरह की कोई प्राकृतिक आपदा कभी नहीं आ सकती।** किसी भी तरह का भूचाल आ जाए, भूकम्प आ जाए, बाढ़ें आ जाएँ, लोक में कितना ही उलट-पुलट हो जाए लेकिन उन आत्मा के अन्दर किसी भी तरह की कोई भी हलचल, आपत्ति के रूप में नहीं आ सकती। हम कभी उनका इस तरह से स्मरण कर पाते हैं कि हे भगवन्! आप कितने सुखी हैं। जब हमें अपना दुःख होता है तो अपने दुःख का रोना लेकर तो हम बैठ जाते हैं कि भगवन्! मेरा दुःख दूर करो। हम आपके चरणों में आए हैं, आपसे विनती कर रहे हैं, आपसे प्रार्थना कर रहे हैं लेकिन हम कभी वास्तव में भगवान का गुणगान करते हैं क्या?

विनती और स्तुति किसे कहते हैं

अगर हम अपना दुःख दूर करने के लिए भगवान के सामने बैठ गए तो क्या वह **भगवान की स्तुति कह-लाएगी? क्या वह भगवान की प्रार्थना कहलाएगी?** वह तो अपना दुःख दूर करने की भावना के साथ में भगवान के लिए विनती कहलाएगी। **विनती अलग होती है और स्तुति अलग होती है, यह सीख लो आज।** विनती क्या होती है? **विनती में हम भगवान से बार-बार अनुनय, विनय, गिड़गिड़ाना अपने दुखों को दूर करने के लिए बार-बार हाथ जोड़कर प्रार्थना करना, मांगना, याचना करना, यह सब करते हैं।** इसका नाम क्या है? यह विनती है...दुःख हरण विनती। क्या है दुःख हरण विनती में? बस! भगवान हमारे दुःख हरण करो...संकट मोचन विनती। हे भगवन्! हमारे संकटों का मोचन करो, हमें संकटों से बचा लो। यह विनती है, स्तुति नहीं है। स्तुति कहलाती है... **‘पुण्य गुणोत्कीर्तिः’ भगवान के पुण्य गुणों का कीर्तन करना, यह स्तुति कहलाती है।** भगवान के पवित्र गुणों का स्तवन करना, उनके यश का व्याख्यान करना, उनकी वाणी का, उनके द्वारा बताए गए तत्त्वों का व्याख्यान करना और भगवान की वाणी के इस तरह से व्याख्यान करने से हमें भगवान की महिमा का अपने अन्दर भान उत्पन्न हो या दूसरे के अन्दर भान उत्पन्न हो तो उसको स्तुति कहते हैं।

स्वार्थपूर्ण भगवान की विनती का निषेध

आज दुनिया में लोग स्तुति नहीं करते हैं, विनती करते हैं। हमारे दुःख दूर करो! भगवान भी तभी याद आते हैं जब कोई दुःख आ पड़ता है। कई लोग ऐसे होते हैं जो कभी घर से मन्दिर नहीं जाते हैं, कभी मुनि महाराज के पास नहीं आते हैं लेकिन जब घर में कुछ आपत्तियाँ आ जाती हैं, तब घर के कोई बड़े लोग होते हैं, कहते

हैं... 'बेटा चल मन्दिर चल' तो फिर उसको थोड़ी देर में अपने आप समझ में आने लग जाता है, भैया! चलना चाहिए अब कोई और उपाय नहीं है, तो चलो मन्दिर ही चलो। घर के बड़े लोग कहते हैं... भैया! चल अब थोड़ा सा महाराज के पास भी चल, दर्शन कर ले, उपदेश सुन ले, वहाँ चल कर भी बहुत सारे काम बन जाते हैं। फिर सोचता है... चलो भैया! महाराज के पास भी चलते हैं। नहीं तो जिन्दगी भर हो जाता है, माँ चिल्लाती रहती है, बेटा मन्दिर ही नहीं जाता, बेटा गुरु के पास ही नहीं जाता, बेटा उपदेश ही नहीं सुनता। न जाने बेटे को क्या हो गया? जिन्दगी भर चिल्लाती रहती है माँ और जब कुछ आपत्ति आ जाती है तो चलने को तैयार हो जाता है। फिर माँ बेटे को लेकर आती है, कहती है- बेटा चल और अगर आ गया और कहीं मन्दिर में भगवान के साथ-साथ मुनि महाराज मिल गए क्योंकि महाराज मिल गए तब तो अच्छी बात है क्योंकि भगवान तो बात करते नहीं हैं और मुनि महाराज मिल गए तो बड़ी मित्रता से आकर माँ गिड़गिड़ाए-गी... महाराज! बड़ी मुश्किल से बेटा आया है। मन्दिर नहीं आता था, पहली बार आया है। आपके दर्शन करने आया है इसे कुछ ऐसा आशीर्वाद दे दो, इसे कुछ ऐसा समझा दो, जो इसके लिए मन्दिर आने में मन लगा रहे, आता रहे। आपके ही चरणों में बार-बार आता रहे तो भी मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। यह बात जब आती है माँ के अन्दर यह भावना आ गई, बेटे के अन्दर भी अगर मान लो भावना आ गई तो यह भावना भी आना, अभी क्या है? **वह अभी कोई मुनि महाराज या भगवान के गुणों के प्रति आकर्षित होकर नहीं आया। वह अभी कोई स्तुति करने के mood में नहीं है।** वह अभी क्या है? शायद कुछ surprised है, कुछ हमारे साथ में हो जाए, कुछ हमारे साथ में आश्चर्यजनक घटित हो जाए और माँ भी कुछ ऐसी ही कल्पना करती है बेटे के लिए कि बेटे के साथ में कुछ ऐसा हो जाए, जिससे कि इसका विश्वास जुड़ जाए महाराज से तो यह आता रहे। यह सब क्या है? **यह सब कहीं से कहीं तक न धर्म है, न भगवान को समझना है, न भगवान के गुणों का कीर्तन है, न भगवान के गुणों का स्मरण है।** यह सब क्या है? यह सब दुःख हरण विनती है।

विनती मे भगवान के गुणों के वर्णन का अभाव

आपको एक नया चिन्तन दे रहा हूँ। भगवान शान्तिनाथ की कृपा से ही यह नया चिन्तन आया है। **विनती में और स्तुति में अन्तर समझो।** विनती में हम अपना माथा रगड़ते हैं... हे भगवन्! आपने अन्जना के दुःख दूर कर दिए, आपने सेठ जिनेन्द्र दत्त के दुःख कर दिए, सोमा के कर दिए, मनोरमा के कर दिए, सेठ सुदर्शन के दुःख दूर कर दिए। हमारे क्यों न करो? मेरी बार देर क्यों लगी? यह विनती करना, यह भगवान की स्तुति करना नहीं है। यह मैं एक नई बात कह रहा हूँ। **स्वाध्याय करने वालों को एक थोड़ा सा इसमें चोट लग सकती है लेकिन हृदयघात नहीं होगा, चिन्ता नहीं करना।** चोट का मतलब उनकी बुद्धि पर एक थोड़ा सा आ सकता है कि अभी तक हमने ऐसी बात सुनी नहीं, अभी तक हमने ऐसा विचार किया नहीं लेकिन वास्तव में क्या यह भगवान के गुणों की स्तुति है? नहीं! हम दूसरे का भी रोना रो रहे हैं और दूसरे का रोना रोकर अपने रोने को दूर करने के लिए हम भगवान के सामने रो रहे हैं, दूसरे का reference दे दे कर के। जैसे हम किसी के पास complaint ले करके जाएँ या अपनी बात मनवाने जाएँ तो हम क्या करते हैं? दूसरे की files दिखाते हैं... आपने उनके लिए तो सब अच्छा कर दिया था, आपने उनके लिए ठीक कर दिया था, उनकी file आपने संभाल दी थी। मेरी क्यों लटक रही है फिर? यह हम क्या कर रहे हैं? यह भगवान की कोई स्तुति नहीं कर रहे हैं। यह अगर हम किसी भी तरह से, दूसरे लोगों के लिए भी उदाहरण

देकर के हम इस तरह का कोई भी भगवान के सामने स्तुति रूप में कार्य कर रहे हैं तो यह स्तुति नहीं है। यह विनती है।

स्तवन की महत्ता

स्तुति क्या होती है? सहस्रनाम स्तोत्र पढ़ो तब आपको समझ में आएगा...स्तुति क्या होती है? भगवान के एक-एक नाम कितने गुणवान हैं? एक-एक नाम में कितने गुण हैं? उन गुणों का स्मरण करो तब आपको समझ में आएगा यह भगवान के गुणों की स्तुति है। **यह जो भगवान की भक्तियाँ लिखी गई हैं, इन भक्तियों को पढ़ो। इन भक्तियों को पढ़ने से आएगा कि स्तुति क्या होती है? हम जब भगवान की स्तुति कर रहे हैं तो भगवान के गुणगान करेंगे और जब भगवान के गुणगान करेंगे तो हम भगवान के अन्दर जो गुण हैं, उनका बखान करेंगे। हम कब भगवान के सुखों का वर्णन करते हैं?** हे भगवन्! आपका सुख कितना, आपके अन्दर कोई आपत्ति ही नहीं है। हे भगवन्! आप कितने सुखी हैं, कभी हमने अपने मुँह से निकाला भगवान के लिए? हमें क्या पड़ी, आप होंगे सुखी, अपने लिए होंगे। तब तक तो भगवान अपने लिए सुखी होंगे, ऐसा लगता है और जब हमारे ऊपर कोई दुःख आ गया तो हम रोना लेकर बैठ जाते हैं, भगवान हमारे दुःख दूर करो। भगवान ने ठेका ले रखा है तुम सबका? कि भगवान के प्रति आप अपनी कर्ता बुद्धि बना कर रखते हो कि भगवान हमारे दुःख दूर करेंगे तब तो हम भगवान को मानेंगे और दुःख दूर नहीं करेंगे तो हम भगवान को नहीं मानेंगे। ऐसे मानने वाले कभी भी भगवान के भक्त नहीं होते, वह सब कम-बख्तों की श्रेणी में आते हैं। भक्त नहीं कहलाते वह।

आपत्ति की आशंका से रहित अनन्त सुखमय भगवान

भक्त क्या करता है? भक्त सिर्फ भगवान के गुणों का भजन करता है। भगवान के जो गुण हैं, उन्हें कहता है। **हे भगवन्! आपके अन्दर क्षुधा नहीं, तृष्णा नहीं, बुढ़ापा नहीं, किसी भी तरह के रोग नहीं, आपकी आत्मा कितनी सुखी होगी।** आपके लिए कभी भी कोई आपत्ति आने वाली नहीं मतलब आपका पूरा का पूरा future infinite time के लिए, अनन्त काल के लिए, **भगवान को कभी भी अपने भविष्य में किसी भी तरह की आपत्ति की कोई आशंका ही नहीं।** सोचो जहाँ कोई आशंका ही नहीं आपत्ति की, कितना बड़ा सुख होता है कि यहाँ पर कोई बिजली गिरेगी ही नहीं।

आपत्तियों की आशंका से घिरा हमारा जीवन

यहाँ बैठे हो, ऊपर पंखा चल रहा है आपके लेकिन कोई guarantee नहीं है, वह चलता हुआ पंखा भी गिर सकता है। मैं नहीं जानता कुछ भी हो सकता है। इस छत के नीचे बैठे हो छत भी गिर सकती है। अगर आपसे कोई कह दे कि भाई! यहाँ पर बैठकर आपके ऊपर पंखा भी गिर सकता है, छत भी गिर सकती है तो फिर आप यहाँ पर निश्चित होकर बैठ नहीं पाओगे। आप यहाँ कब तक निश्चित होकर बैठे हो? आपको लगता है कि नहीं ऐसा होता नहीं है, ऐसा नहीं होगा। फिर कोई आपको याद दिलाए कि देखो! वहाँ ऐसा हुआ था, वहाँ वैसी घटना घटी थी। अरे नहीं, वह उसकी गलती होगी मतलब उसमें अच्छे mechanic नहीं होंगे, अच्छे उसमें ठेकेदार नहीं होंगे, अच्छा cement का use नहीं किया होगा इसलिए वह छत गिर गई

होगी, यह छत नहीं गिरेगी। **समझो! हम कहीं पर भी सुरक्षित नहीं हैं।** अगर हम यह सोचना शुरू कर दें कि आपत्ति हमारे ऊपर कभी भी, किसी भी तरह से, कहीं से भी गिरकर आ सकती है। आपत्ति आने से पहले आपसे कहेगी नहीं, मैं आ रही हूँ।

बन्दर की आपत्ति से मिली सीख- देखते रहो, जागते रहो

पहले जब घरों में, ऐसे यहाँ पर एक बहुत बड़ा सुख यह है कि यहाँ पर बन्दर नहीं है। सतना में एक बड़ा सुख हमें एक यह भी समझ में आ रहा है यहाँ पर अभी बन्दर नहीं हैं, देखें तो नहीं हमने। नहीं! यहाँ पर कभी ऐसा परेशान होते हुए नहीं देखा, इस area में नहीं है अभी, अरे थोड़ा इसी area की बात कर रहा हूँ। जब से आया हूँ मैंने नहीं देखा अभी, कोई उत्पात किया हो, कहीं कोई उधम मचाया हो। U.P. में चले जाओ, कहीं भी बन्दर ही बन्दर, बन्दर ही बन्दर, हर जगह पर। जब छोटा था घरों में देखता था कि जैसे माँ ने कहा कि कोई भी छत पर चीजें पड़ी हुई हैं, दालें या कोई कपड़े वगैरह तो थोड़ा देखते रहना, बन्दर नहीं आ जाए। देखते रहे, बन्दर नहीं आ रहा, बन्दर नहीं आ रहा। बहुत देर से बन्दर नहीं आ रहा था तो हम अपने कमरे में चले गए, अपना काम करने लग गए और अचानक से बन्दर आ गया, कुछ भी नुकसान कर गया, कुछ भी लेकर चला गया। फिर घर के लोग कहते हैं...तुमसे कहा था न, थोड़ा सा देखना, यहीं पर बैठना डण्डा लेकर, यहीं पर खड़े रहना, कहाँ चले गए थे? कोई था ही नहीं उस समय पर और जैसे ही चले गए तो तुरन्त बन्दर आ गया। उस समय पर घर के लोग कहते हैं...बन्दर तुमसे कह कर नहीं आएगा कि मैं आ रहा हूँ। यह बताते थे उस समय। इसलिए देखते रहो, जागते रहो। इसी तरह से कोई भी आपत्ति आएगी तो तुमसे कह कर नहीं आएगी कि मैं आ रही हूँ। अचानक से वह आपत्ति आ पड़ती है और जब आ पड़ती है, तो कभी-कभी जीव का उसमें मरण भी हो जाता है और कभी-कभी जीव उसमें रोगी भी हो जाता है, अपाहिज भी हो जाता है, वह आपत्ति किसी भी तरह की हो सकती है।

दुःख का अभाव ही सुख है

आप सोचो हम और आप किसी भी लोगों का जीवन बिल्कुल आशंकाओं से रहित नहीं है लेकिन भगवान सिद्ध प्रभु का जीवन सारी आशंकाओं से रहित है, सारी आपत्तियों से रहित है। हम कभी क्या हाथ जोड़कर भगवान के सामने ऐसे उनके गुणों की स्तुति कर पाते हैं? **‘हे भगवन! आपकी आत्मा कितनी शुद्ध हो गई, कितनी सुरक्षित स्थान पर चली गई। आप कितने सुरक्षित स्थान पर हमेशा के लिए विराजमान हो गए, जहाँ पर दुनिया की कोई आपत्ति आपके लिए छू भी नहीं सकती’**। ऐसी अगर हम भगवान के सामने कोई भी अपने मुख से स्वर निकाले तो यह कहलाते हैं स्तुति के स्वर, इसे कहते हैं- स्तुति। इस तरह की स्तुति करने में आप सिर्फ भगवान की बात कर रहे हो, अपने दुःख का रोना नहीं रो रहे हो। आप भगवान के गुणों का बखान कर रहे हो। यह भगवान का गुण है, भगवान की quality है। भगवान जितना सुखी कोई भी नहीं है। आचार्य कहते हैं...उनके सुख की ओर ही देखो और वह सुख क्या है? अभी तो यह ऊपर-ऊपर के वह उग्र दुःख, जो उग्रता के साथ में हमारे सामने रहते हैं उन उग्र दुःखों का अभाव होना भी हमें एक सुख के रूप में बताया जा रहा है।

‘व्यापत्ति आदि उग्र-दुःख-प्रभव-भव-हते’

उन उग्र दुःखों से उत्पन्न होने वाला जो हमारा संसार है, उस सारे संसार को भी आपने नष्ट कर दिया क्योंकि जो आदमी दुःख के साथ में संसार में रहेगा और दुःखी होते-होते ही मरण को प्राप्त होगा, वह अन्य जन्म में भी फिर दुःख को प्राप्त होगा क्योंकि उस दुःख से बचने का उसे कोई शाश्वत उपाय मिला नहीं था। वह दुःख उसके ऊपर आते रहेंगे।

सांसारिक दुःख, उग्र दुःख

यहाँ आचार्य कहते हैं...**हे भगवन्! आप उन सारे सांसारिक दुःखों से, उग्र दुःखों से दूर हो गए जो दुःख हमें सोचकर ही डरा देते हैं, उन्हें उग्र दुःख बोलते हैं।** यह उग्र दुःख हैं कि नहीं? अगर आपसे कहा जाए कि देखो रास्ते में जा रहे थे, कहीं पर कोई ऐसा short circuit हो गया या कहीं कोई ऐसी एकदम से कोई current लग गया और वहाँ पर एक साथ पन्द्रह आदमी, सत्रह आदमी एक साथ उस current की चपेट में आ गए और कहीं हम भी वहाँ से गुजरे हुए होते, एक minute बाद वहाँ पहुँच रहे हैं, एक minute पहले वहाँ से गुजर गए हैं तो हम उस समय पर अपने लिए कितना-कितना सोचते हैं...देखो! मैं कैसे बच गया? एक second, एक minute में मैं बच गया, नहीं तो मेरे साथ भी ऐसा हो जाता। ऐसी विचारना से जो हमें पता पड़ता है कि यह दुःख है, इसी को कहते हैं- उग्र दुःख और ऐसे उग्र दुःख भगवान के पास नहीं हैं। यह अभी भगवान के भीतरी सुखों के बारे में नहीं बताया जा रहा है। **यह तो अभी आपको ऊपर-ऊपर से समझाया जा रहा है कि आप पहले यह समझ लो कि ऐसे उग्र दुःख भी भगवान के पास नहीं हैं, जो उग्र दुःख हम दुनिया में देखते रहते हैं, संसारी जीवों में देखते रहते हैं। कितनी तरह के उग्र दुःख होते हैं?** कितनी ही माताओं का, बहनों का, गर्भवती होने के बाद में गर्भ के कारण से भी उनका मरण हो जाता है। जो गर्भ में बच्चा होता है, उसके कारण से भी मरण हो जाता है। आप सोचो! जब व्यक्ति के लिए cancer हो जाता है, cancer से पीड़ित होता है। आप कभी cancer पीड़ित की वेदना देखना, कितनी वेदना होती है? पेट का cancer हो, पेट में पानी बनने लग जाता है। इतना तड़फता है, इतनी भूख लगती है, इतनी बेचैनी होती है, कि उसका कोई अन्त नहीं है लेकिन हम सब सुन सकते हैं, देख सकते हैं। ऐसे उग्र दुःखों को देख कर भी हमारे मन में विचार नहीं आता कि इन उग्र दुःखों का मुख्य कारण क्या है?

दुःख का कारण

इन उग्र दुःखों का मुख्य कारण संसार नहीं है। संसार में जन्म लेना और जन्म लेना भी एक कारण नहीं है। जन्म के पीछे भी जो कारण है- वह है इस शरीर के प्रति आसक्ति बनी रहना। **है तो आसक्ति तो होगी कि हमारा शरीर है। लेकिन यह आसक्ति ही इस संसार के दुःख का मूल कारण बन जाती है।** शरीर है तो हमेशा हमें शरीर अच्छा ही मिले, निरोग ही मिले, जरूरी नहीं है। शरीर कभी भी हमारे लिए रोगी भी मिल सकता है, वह हमारे हाथ की बात नहीं है। बीस साल की उम्र में, तीस साल की उम्र में भी, बच्चों को, बड़ों को cancer हो जाते हैं। शरीर मिला, सुन्दर रूप है, अच्छे कुल में जन्म हुआ, बुद्धि अच्छी है, सब कुछ अच्छा चल रहा था और अचानक से कोई ऐसी बीमारी आई कि दो साल के अन्दर उसका जीवन बिल्कुल सूख गया और अन्त-अन्त में उसका ऐसा पीड़ा के साथ में उसका मरण हुआ कि हम सोच भी नहीं सकते कि यह व्यक्ति इतना स्वस्थ, अच्छा दिखने वाला व्यक्ति भी इस तरह की बीमारी से ग्रस्त होकर इतनी जल्दी

समाप्त हो जाएगा। ऐसा नहीं देखते हो क्या? रिश्तेदारों में, आसपास ऐसी कोई घटनाएँ देखने को मिलती हैं कि नहीं मिलती हैं? ऐसी घटनाओं को देखने के बाद भी हम क्या सोचते हैं? वह तो उसके कर्म का उदय है। वह बीमारी तो उसके कोई अपने पुराने कर्म के फल से उसे भोगनी पड़ रही है।

दुःखों से सर्वथा रहित भगवान का स्मरण

हमारे मन में कभी विचार आता है कि उस समय पर हम यह सोचे कि इस तरह की बीमारियों से रहित सर्वथा कौन है? क्या हम इन बीमारियों से सर्वथा रहित हैं? विचार भी नहीं कर लेना, डर लगने लग जाता है क्योंकि कई मनोवैज्ञानिक कहते हैं...जैसा विचार करोगे वैसा ही शरीर में होने लग जाता है। विचार भी मत करना ऐसी बीमारी का लेकिन हम यह तो विचार कर सकते हैं? हे भगवन्! इस संसार में अगर शरीर मिलता है तो ऐसे दुःख हमारे ऊपर भी आ चुके हैं, ऐसी पीड़ाएँ हम भी कई बार भोग चुके हैं और आगे आने वाले जन्मों में भी आ सकती हैं और इस जन्म में भी आ सकती हैं, इन पीड़ाओं का कोई अन्त नहीं है, किसी के लिए भी हो सकता है। यह विचार क्षण भर के लिए नहीं आता? कुछ नहीं आता, सुन लिया और सो गए। नींद भी आ जाती है आप लोगों को। **जब तक आपके मन में ऐसा विचार नहीं आएगा कि इन उग्र दुःखों का कारण क्या है? और इन उग्र दुःखों से बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए? या इन उग्र दुःखों से बचा हुआ जीव कौन है? तब तक आपको कभी भी धर्म के प्रति भीतर से विश्वास उत्पन्न नहीं होगा। इन उग्र दुःखों से बचने का उपाय क्या है? और ये दुःख हमें क्यों मिलते हैं? इनका मूल कारण है, आचार्य कहते हैं...अपने शरीर के प्रति आसक्ति रहना और वह शरीर की आसक्ति, हर जन्म में हर शरीर के साथ रहती है; लेकिन कभी-कभी वही शरीर की आसक्ति हमारे लिए दुःख का कारण बन जाती है। जब वह रोग हमारे सामने आ जाते हैं। इन दुःखों से सर्वथा रहित कौन है? सिद्ध प्रभु, सिद्ध आत्माएँ, शुद्ध आत्माओं का स्मरण करना चाहिए।**

सिद्ध भगवान दुःख से रहित क्यों हैं?

जिनकी आत्मा में अब कोई दुःख क्यों नहीं है? क्योंकि उनके पास में कोई शरीर नहीं है। ऐसा भौतिक शरीर जो हमें मिला है, ऐसा भौतिक शरीर उनके पास में नहीं है और इस शरीर के अभाव के कारण से ही उनकी आत्मा, इस प्रकार के दुःखों से मुक्त है। जो ये बाहरी दुःख हैं, अभी इन बाहरी दुःखों से मुक्ति की बात कही जा रही है, अभी भीतरी सुखों की बात नहीं कही जा रही है लेकिन भीतरी सुख जो आगे बताए जाएँगे, उससे पहले यह जान लेना भी जरूरी है कि बाहरी दुःख भी हमारे अन्दर कैसे उत्पन्न हो जाते हैं?

हृदय रोग के कारण

मान लो हमारा शरीर, हमारे लिए मिला। अब इस शरीर के अन्दर अचानक से कोई दुःख उत्पन्न हो गया। मान लो आजकल बहुत ज्यादा heart attack की बीमारी चल रही है। Silent attack आते हैं। आप समझ पाते हो...यह attack क्यों आते हैं? हृदय एक ऐसी चीज है, जो जन्म से लेकर के मृत्यु तक हमेशा काम करता रहता है। आप सो भी जाओगे तब भी आपके सारे शरीर के अवयव काम करना बंद कर सकते हैं, कुछ क्षण के लिए विश्राम कर सकते हैं लेकिन हृदय एक ऐसी चीज है जो कभी भी विश्राम नहीं लेता

और जिस दिन उसका विश्राम हो गया तो आपका पूरा आराम हो जाएगा। जिस क्षण वह रुक गया, जिस क्षण उसने अपना काम करना बंद कर दिया, बस! उसी का नाम, एकदम से आप कहते हो यह क्या हो गया? अचानक से attack हो गया। वह attack कहाँ से आया? अब यह बाहरी attack नहीं है। यह attack कहाँ से आया? यह भीतर से आया। इस attack को हमने कैसे प्राप्त किया? हृदय रोग, आजकल जो ज्यादातर उत्पन्न हो रहे हैं, होते हैं, यह हृदय रोगों का अगर हम केवल science की अपेक्षा से कारण देखें, **शरीर विज्ञान की अपेक्षा से कारण देखें तो जो वैज्ञानिक लोग हैं वह कहते हैं कि आपके शरीर में अगर कोई प्रदूषित तत्व बन रहे हैं, आपका खानपान अनियमित है, आपका खानपान स्वास्थ्य वर्धक नहीं है तो ऐसी जो चीजें होती हैं उसके कारण से जो शरीर में प्रदूषित तत्व बनते हैं, वह हृदय को परेशान करने लग जाते हैं।** क्योंकि जो कुछ भी शरीर के अन्दर बनेगा वह हृदय की गति को प्रभावित करता है, रक्त को प्रभावित करता है और रक्त में जब इस तरीके की बाधाएँ उत्पन्न करने वाली चीजें शरीर के अन्दर बनने लग जाती हैं तो वह हृदय काम करते-करते थकने लग जाता है अन्यथा हृदय कभी थकता नहीं है। हृदय कितना भी रक्त शरीर में बहता रहे, सबका शोधन करता रहेगा लेकिन वह थकता तब है, जब आप उसके लिए कुछ गलत दे रहे हो और आपको पता नहीं हो और उसको पता हो।

अनियमित दिनचर्या, हृदय रोग का कारण

अनियमित दिनचर्या...कब सोना? कब जागना? कितना घूमना? कितना चलना? अनियमित दिनचर्या, कोई नियमित नहीं है। **अनियमित भोजन चर्या, कभी भी, कितना भोजन कर लेना? कौन सा भोजन करना? कितने time पर करना? वह भोजन हमारे पाचन शक्ति के अनुसार है कि नहीं? स्वास्थ्यवर्धक है कि नहीं?** कुछ भी पता नहीं होना और भोजन हो जाना, स्वास्थ्यवर्धक नहीं होना। अगर भोजन में प्रदूषक तत्व ज्यादा हैं, आपके शरीर में gas बनने लगी, आपके शरीर में कब्जियत होने लगी, इन सारी चीजों के कारण से जो शरीर के अन्दर प्रदूषित वायु उत्पन्न होगी, वह सारा का सारा effect सबसे पहले कहाँ पहुँचाएगी? पेट के ऊपर, आंतों के ऊपर क्या होता है? सबसे पहले हृदय होता है और उस हृदय के पास में जब यह प्रदूषण पहुँचता है तो बस हृदय की गति को बाधा उत्पन्न होने लग जाती है और यही बाधाएँ जब ज्यादा हो जाती हैं तो बस फिर हृदय थकने लग जाता है और एक दिन थक कर जब वह शान्त हो जाता है तो उसी का नाम heart attack कहलाता है। एक भीतरी कारण...बहुत दिनों से कब्जियत रहना, शरीर के अन्दर दूषित वायु उत्पन्न होना, हमारा खानपान स्वस्थ नहीं होना, गन्दी चीजें खाना, बाजारू चीजें जिनकी कोई स्वास्थ्यवर्धक, जिनके ऊपर कोई label नहीं लगा हुआ है, कहीं पर भी खड़े होकर कोई भी बाजार की कोई भी चीजें खाने लग जाना, किसी भी दुकान की कितने भी दिनों की रखी हुई मिठाइयाँ हैं या कोई भी तरीके की कोई भी ठेलों के ऊपर रखी हुई कोई भी चाट हैं, ये सब चीजें जो आपको बहुत चटपटी लगती हैं और अच्छी लगती हैं, यह सब हृदय के लिए दुःखदाई चीजें होती हैं। **आप अगर अपने हृदय की भी रक्षा नहीं कर पाएँगे तो आप कभी भी अकाल में मौत के ग्रास बन सकते हैं।** हृदय की रक्षा करने के लिए भी, एक शारीरिक प्रणाली संचालित करने के लिए भी, आपके पास में सही तरीके की चीजें शरीर में पहुँचाने का ज्ञान होना चाहिए।

मानसिक तनाव, हृदय रोग का दूसरा कारण

दूसरी चीज है- मानसिकता। हृदय पर सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ता है जब आपके सामने डर होते हैं, भय होते हैं, चिंताएँ होती हैं। हृदय अपनी गति से काम कर रहा था, अपने flow में चल रहा था और आपने उसको भावनात्मक आघात दे दिया, चिन्ता में पड़ गए, नुकसान हो गया। आग कहीं लगी थी, घर में लगी चाहे दुकान में लगी, चाहे factory में लगी लेकिन आघात किसको पहुँचा? चिन्ता किसको पड़ गई? अब आपको यह चिन्ता नहीं है कि अगर यह आग हमारे शरीर के अन्दर हमारे हृदय तक पहुँच गई तो हमारा ही heart अगर काम करना बन्द कर देगा तो यह बाहर की लगी हुई आग से जो नुकसान हुआ है इस नुकसान की हम भरपाई कर पाएँगे या इस नुकसान की भरपाई करने में समर्थ हो पाएँगे? **कौन सा नुकसान बड़ा नुकसान है? बोलो! कोई बाहरी नुकसान हो गया, business में घाटा हो गया, ग्राहकों ने उधारी नहीं दी वापस, कर्जा बढ़ गया, सब कुछ हो गया। चिन्ता पड़ गई लेकिन उस चिन्ता में आप क्या कर रहे हो? हृदय को नुकसान पहुँचा रहे हो।** हृदय के नुकसान का मतलब है आप अपने जीवन को नुकसान पहुँचा रहे हो और हृदय का अगर नुकसान हो गया तो जब आप ही नहीं होंगे तो यह दुनिया का घाटा और चिन्ता का फल और इस तरह की चिन्ताओं का फल क्या निकलेगा? हृदय को दूसरे रूप में जो आघात पहुँचता है, यह भावनात्मक तरीके से आघात पहुँचता है।

डर भी हृदय रोग का कारण

अगर आपके सामने डर है तो आप देख लेना जो डरे हुए लोग होते हैं, जो बच्चे ज्यादा डरते हैं या बड़े भी ज्यादा डरते हैं उनका हृदय बहुत ज्यादा कम्पित रहता है। हृदय की गति बहुत तीव्र रहती है। उनका हृदय भी कमजोर होगा और अगर आप science के हिसाब से देखेंगे तो उनका size भी कम होगा। हृदय संकुचित हो जाता है। कभी पढ़ लेना आप! बहुत जो जांबाज लोग होते हैं, बड़े-बड़े बहादुर लोग होते हैं, वास्तव में जो भीतर से बहादुर होते हैं, उनका हृदय भी जब post-mortem करके निकाला जाता है, देखा जाता है, तो वह हृदय का size भी बहुत बड़ा मिलता है और मजबूत मिलता है। हृदय को मजबूत बनाना किसके हाथ में है? बोलो! आपके हाथ में है, हमारे हाथ में कुछ नहीं है।

अच्छा स्वास्थ्य कैसे प्राप्त करें?

आचार्य कहते हैं...हृदय को मजबूत बनाने के लिए आप रोजाना गुरुओं के उपदेश सुनें, स्वाध्याय करें, तत्त्व चिन्तन करें, सिद्धों के गुणों का स्मरण करें, इससे आपका हृदय मजबूत बनेगा क्योंकि हृदय में अगर इस तरह की चीजें फैली रहेंगी तो हृदय में कभी भी चिन्ता नहीं आएगी, डर नहीं आएगा और हृदय हमेशा अच्छे गुणों के प्रति, उनके स्मरण के प्रति आकर्षित रहेगा। वह हृदय की गतिशीलता स्वस्थता की ओर बढ़ती रहेगी। free में आपको मैं स्वास्थ्य देता हूँ यहाँ बैठकर, हृदय का स्वास्थ्य। जो व्यक्ति उपदेश सुनेगा रोजाना, सिद्धों के गुणों का स्मरण करेगा, स्वाध्याय करेगा, तत्त्व चिन्तन करेगा, उसका हृदय सन्तुलित गति से कार्य करेगा, यह निश्चित बात है। अगर आपका स्वाध्याय में, चिन्तन में मन लग जाता है, मंत्र के ध्यान में मन लग जाता है और जब आप 'ओं अर्ह नमः' में मस्त हो जाते हैं, आपको नहीं पता होता है कि आप कितना बड़ा स्वास्थ्य हृदय को प्रदान कर रहे हैं। अगर वह 'ओं अर्ह नमः' आप

हृदय को ध्यान में रखते हुए कि देखो मैं हृदय की प्रसन्नता के लिए यह “ओं अर्हं नमः” का स्मरण कर रहा हूँ, तो आप हृदय को वह खुराक देंगे जो खुराक बढ़ा-बढ़ा doctor हृदय की मजबूती के लिए नहीं दे सकता है। यह हृदय की खुराक है, हृदय यही चाहता है।

हृदयाघात के अन्य कारण

डरावनी pictures देखना हृदय की खुराक नहीं है। हिंसात्मक चित्र देखना, pictures देखना, यह हृदय की खुराक नहीं है। यह तो आप उसे देने पहुँच जाते हो और जब आप खुद डर जाते हो, खुद आपके अन्दर हिंसा, कामुकता के भाव ज्यादा पड़ने लग जाते हैं तो आप अपने हृदय को आघात पहुँचाने लग जाते हो। अति कामुक भाव भी हृदय घात के लिए कारण हैं। psychology पढ़ लेना थोड़ी सी, बच्चों को तो पढ़ाते हो, खुद कुछ नहीं पढ़ते हो। एक psychology भी एक science है। अति मैथुन करना, अति अब्रह्म के भाव में रहना, अति कामुकता के विचार होना, हमेशा कामुकता के चित्रों को देखना, यह भी हृदयाघात के लिए कारण बनता है क्योंकि अगर आपके पास में थोड़ा सा common sense हो तो आप देख लेना जब आप इस तरह के विचारों में होते हैं, तब आपकी heart beating किस तरह की हो रही होती है? check करके देख लेना। **Heart beating normal स्वस्थ मनुष्य की तभी रहती है, जब वह स्वस्थ विचारों के साथ जीता है।** धर्म ध्यान के विचारों के साथ रहता है और जब उसके विचार, इस तरह से विकृत होने लग जाते हैं तो यह भी उसके लिए धीरे-धीरे एक attack के कारण बनते हैं लेकिन इसको कोई कारण नहीं मानता है। silent हो गया, silent क्या हो गया?

जागरूकता की कमी भी, रोगों का कारण

दुनिया में कोई भी चीज अचानक से नहीं होती है। होती तो सब पहले से ही है, यह बात अलग है कि हम उसके लिए कभी भी उसके प्रति aware होते हैं या नहीं होते हैं। **यह हमारी awareness की कमी होती है** इसीलिए पहले के लोग पूरी उम्र जिया करते थे क्योंकि स्वस्थ जीवन जीने के लिए उन्हें अच्छा शुद्ध भोजन करने का भी ज्ञान रहता था और अच्छे विचार उनके अन्दर आने के लिए भी पूरा वातावरण बना रहता था।

शराब, धूम्रपान- तीसरा मुख्य कारण

आज heart attack के लिए यह भी कारण है और इसके अलावा अब तीसरा कारण मैं आपको जो बता रहा हूँ। बाहरी ऐसे तत्व जिनके कारण से हृदय बेचारा परेशान हो-होकर अपना दम तोड़ देता है, वे चीजें क्या हैं? शराब पीना, बीड़ी cigarette घुएँ, ये किसको मिलते हैं? ये छल्ले जो आप निकालते हो, बाहर जाते हैं कि भीतर जाते हैं? chain smoker जैसे कि बहुत बड़ा award मिलने वाला हो आपको। **ये सब लोग खुद अपना आघात कर रहे होते हैं। आप अपने जीवन को खुद नष्ट कर रहे हैं** क्योंकि यह प्रदूषण, यह air pollution ये सब जो आपके भीतर create हो रहा है, यह सब आपके heart को परेशान कर रहा है, damage कर रहा है लेकिन आपको पता नहीं रहता। किसी भी cigarette पीने वाले से कहो... पता है! cigarette से फेफड़े खराब होते हैं? पता है! लिखा भी रहता है, हर packet के ऊपर...

‘injurious for health, cause for cancer’ सब कुछ लिखा रहता है। लेकिन उसके बावजूद भी जब आदमी इन चीजों से नहीं बच पाता तो इसे समझ लेना चाहिए कि आदमी अपनी आत्महत्या खुद कर रहा है। **हम उसको तो आत्महत्या कहते हैं, जब कोई फंदे पर लटक जाता है या कोई पंखे पर लटक जाता है लेकिन इसको आत्महत्या कभी नहीं कहते, जो आदमी धीरे-धीरे यह कर रहा होता है। यह एक slow suicide का process है और जो चलता रहता है।** आखिर यह heart इतना कोमल, यह अब शरीर का अवयव है, यह कब तक सही काम करेगा? अगर हम इसको बाहर से इस तरह की चीजें देंगे...गांजा, शराब, तंबाकू, cigarette इन सबके धूम्रपानों के जो भीतर थूक के माध्यम से, लार के माध्यम से जो भीतर ये गंदे तत्व पहुँचेंगे, chemical पहुँचेंगे, ये blood में जब जाएँगे और blood जब heart में आएगा, उसके पास में purified होने के लिए तो उसको कितनी दिक्कत होगी। जैसे कोई machine सही से काम कर रही हो और उस machine में जैसे मान लो गन्ने की machine हो उससे आप रस निकाल रहे हो और फिर उस रस को आप pure कर रहे हो और उसमें अगर बीच-बीच में कहीं कंकर डाल दो तो machine सही से काम कर पाएगी? और वही machine की गति में जो अवरुद्ध होने लग जाता है, वही उसकी कार्यक्षमता को धीरे-धीरे कम करने में कारण बन जाती है। यह तीसरा कारण है- हृदय आघात होने का बहुत बड़ा।

Gym, हृदयाघात का कारण

चौथा कारण आज का बता रहा हूँ। आज के नए युवाओं के लिए gym एक बहुत बड़ा कारण बन रहा है, silent attack के लिए। यह कोई नहीं समझ पा रहा है। धीरे-धीरे शोध हो रहे हैं, धीरे-धीरे doctors की reports आ रही हैं लेकिन अभी भी सबके कानों तक नहीं पहुँच रही है। Bodybuilding करना, पहले के लोग व्यायामशाला में अपनी body को मजबूत बनाते थे, स्वस्थ बनाते थे लेकिन आज के लोग gym में जाकर स्वस्थ नहीं बनाते body को, body build करते हैं, muscles build करते हैं। **शरीर के ऊपर अप्राकृतिक तरीके से किए गए किसी भी तरीके के कार्य, तौर-तरीके, आपकी जिंदगी को नुकसान पहुँचा सकते हैं।** हमें उन्हीं तौर-तरीकों से गुजरना चाहिए, जिनके कारण से शरीर अपने आप धीरे-धीरे स्वस्थता को प्राप्त हो, मजबूती को प्राप्त हो लेकिन अगर हम शरीर को भी एक खिलौने की तरह use करने लग जाते हैं तो उसकी भी चाबी कभी भी समाप्त हो सकती है और यह आज बहुत अच्छे ढंग से हो रहा है लेकिन बच्चों के ऊपर जो नशा चढ़ा हुआ है- gym का, यह अभी उतर नहीं रहा है।

शरीर की क्षमता के अनुसार काम करने की जरूरत

आज बच्चों के लिए स्वास्थ्य की जरूरत है, शरीर की मजबूती की जरूरत है लेकिन उनके सामने जब इस तरह के silent attack आते हैं तो doctor भी नहीं समझ पाते, यह क्यों आया? उसकी कोई post mortem report में कुछ भी नहीं आता। आएगा क्या? आप समझदार हैं तो समझ सकते हैं। **शरीर को उतनी ही ताकत देना चाहिए, जितनी ताकत को वह झेल पाए।** इसलिए यह कहा गया ज्यादा ऊँची जो पहाड़ियाँ होती हैं, उन पर बार-बार चढ़ना-उतरना, बहुत तेज गति से, बहुत ज्यादा लंबा दौड़ना, यह भी हृदयाघात के लिए कारण होते हैं और कई लोग champion बनने से पहले इसमें मर जाते हैं। बड़े-बड़े

champion, बहुत लंबी लंबी दौड़ दौड़ने वाले क्योंकि हृदय के लिए जो आघात पहुँचा, वह इसलिए पहुँचा आप उसकी pumping उससे ज्यादा, जरूरत से ज्यादा आप अपनी ताकत से करवा रहे हैं और जब वह उस ताकत से काम नहीं कर पाता तो अपना काम करना छोड़ देता है, उसी का नाम heart attack कहलाता है। शरीर को उतनी ही चीजों से आगे बढ़ाओ जितना वह सहन कर सके। यह ज्ञान किसी को नहीं होता इसलिए उग्र दुःखों के कारण से भी अनेक लोग मौत को प्राप्त होते हैं लेकिन भगवान इन सब उग्र दुःखों से रहित हैं।

अशरीरी सिद्ध प्रभु का सुख

हे भगवन्! आपके सुख को कौन जान सकता है। जान पा रहे हो? ये भगवान के सुख हैं। भगवान के लिए शरीर नहीं तो आप सोचते हैं...क्या है फिर उनके पास में शरीर नहीं तो? अरे! शरीर ही तो सब दुःखों का कारण है। यह कब समझ में आएगा आपको? सिद्ध भक्ति पूरी हो जाएगी, उसके बाद भी समझ आ जाएगी आपको कि नहीं आ जाएगी? इसलिए पूरी करने में थोड़ा सा देर लग रही है कि कुछ समझ में आ जाए, नहीं तो पूरी होने के बाद में तो फिर कुछ होना ही नहीं है। यह समझना पड़ेगा, **शरीर दुःखों का कारण है, तो भगवान के लिए सुख है, तो किसलिए? क्योंकि उन्हें शरीरगत कोई भी दुःख प्राप्त नहीं होता है और शरीर का सुख मिलना भी अपने आप में बड़ा सुख है।** समय पर भोजन मिल जाए, समय पर अच्छे-अच्छे व्यंजन मिल जाएँ और मनचाहे तरीके से मिल जाएँ तो सुख अपने आप उत्पन्न होने लग जाता है।

राजा श्रेणिक और नंदश्री का विवाह



श्रेणिक को भोजन मिला। भूल गए! कैसे मिला? उसने जैसे चाहा, जैसी परीक्षा की, **उसी परीक्षा के द्वारा उसे भोजन मिल गया और परीक्षा में नंदश्री भी pass हो गई।** परीक्षा होने के बाद में कितनी खुशी मिलती है जब pass हो जाते हैं और आप परीक्षाओं से डरते हो। जब दोनों की परीक्षा, दोनों ने ले ली और जब दोनों सन्तुष्ट हो गए, फिर दोनों में आपस में प्रेम होने लग गया और पिता ने भी इस बात को समझ लिया कि जोड़ी अच्छी है तो पिता ने भी उन दोनों का विवाह करा दिया। क्यों हो गया विवाह? क्या जरूरत है विवाह कराने की? और क्या जरूरी चीजें होती है विवाह करने के लिए? यह भी आपको इससे सीख लेना चाहिए। वर और वधु जो बनने वाले हैं, उनका आपस में एक दूसरे के साथ में इस तरीके का परीक्षण होना चाहिए, यह इस story से सीखना है। यह केवल मनोरंजन वाली stories नहीं होती हैं। आज तक आपने श्रेणिक पुराण कई बार पढ़ा होगा लेकिन शायद इसलिए कि इसको पढ़ने से पुण्य मिलता है और कुछ नहीं मिलता है। स्वाध्याय करना है क्योंकि महाराज ने नियम दिया है। सीखा कुछ नहीं। सीखने की चीज क्या है?

विवाह में बुद्धि चातुर्य के परीक्षण की आवश्यकता

आज अगर कोई भी लड़का-लड़की आपस में मेलजोल करके विवाह करना चाहते हैं तो उन्हें भी यह सीखना चाहिए। **आपस का मेलजोल बुरी बात नहीं है लेकिन वह मेलजोल सिर्फ मोह नहीं होना चाहिए। उस मेलजोल में सिर्फ कामुकता के भाव नहीं होने चाहिए। उस मेलजोल में भी एक बुद्धि**

का चातुर्य देखने का, एक परीक्षण का भाव होना चाहिए। अगर जीवन भर हमें इसके साथ रहना है और मुझे अपने को इसका जीवन साथी बनाना है, तो क्या मेरे लिए जो कमियाँ हैं या मेरे सामने आने वाली भविष्य में कोई भी आपत्तियाँ हैं, उनमें यह मेरे साथ देने योग्य है कि नहीं? यह कौन सा pair देखता है? या कौन सा जोड़ा पहले सोचता है और इस तरीके की कोई परीक्षा करता है? यह कोई नहीं करता। भाई, लड़के-लड़की आपस में बात कर रहे हैं, मिलते-जुलते हैं, बहुत दिनों से उनकी आपस में dating हो रही है, matching हो रही है, बहुत दिनों से वे अपने relation में हैं, इसलिए हम मजबूर हैं, उनका विवाह करा देते हैं। यह मजबूरियाँ, विवाह के लिए जरूरी नहीं हैं।

अच्छा विवाह, समाज वृद्धि का कारण

अच्छे विवाह के लिए, एक अच्छे वर-वधु का होना समाज के लिए बहुत बड़ा वरदान होता है। **जिस समाज में अच्छे युवा, वरिष्ठ, गरिष्ठ और बलवान, दिमागदार बुद्धि वाले युवा और युवतियाँ होंगे, वह समाज नियम से पनपता चला जाएगा और समाज की वृद्धि हर तरह से होगी।** थोड़ी देर का किसी भी कारणों से मिलना-जुलना हो गया, आपस में बातचीत करने लग गए और बातचीत भी कौन सी? बेवजह की chatting, बेवजह की dating और उन dating-chatting में भी कोई observation किसी का नहीं है कि हम किसी चीज के purpose से किसी को observe कर रहे हो, ऐसा कुछ नहीं है। बस! घूम रहे हैं, फिर रहे हैं, मिल रहे हैं, जुल रहे हैं, pictures देख रहे हैं, parties कर रहे हैं, मौज मस्ती कर रहे हैं। ऐसा करते-करते जब कई साल निकल गए तो भैया! अब विवाह करना जरूरी है। अब विवाह कर लेते हैं क्योंकि इनके साथ कई वर्षों से इस तरह से enjoy कर रहे हैं।

विवाह के पूर्व, परीक्षण अति आवश्यक

आप सोचो, क्या लड़के-लड़कियों के लिए, इस तरह की चेष्टाएँ ही उनके परीक्षण के लिए तैयार कर देती हैं उन्हें या विवाह के योग्य बना देते हैं? **क्या हम राजा श्रेणिक की इस कहानी से कुछ और नहीं सीख सकते?** यह सीखने की चीज है। जब तक वर-वधु दोनों आपस में एक दूसरे के लिए ढंग से जानने योग्य नहीं बनेंगे और जानने योग्य होने का मतलब है... **एक दूसरे को सही ढंग से, हर तरीके से उन्हें पहले आपस में मिला कर, बातचीत करा कर, एक दूसरे का परीक्षण अच्छे ढंग से कर लेना चाहिए।** एक दूसरे की मानसिकताएँ भी पहचान लेना चाहिए और यह समझ लेना चाहिए कि दोनों बराबर बुद्धि के हैं कि नहीं। दोनों को बराबर अवगुण है कि नहीं। गुण भी बराबर देख लेना और अवगुण भी बराबर देख लेना। नहीं तो पता पड़े विवाह हो गया...पति को महाराज! गुस्सा बहुत आता है। मुझे तो पता ही नहीं था, उसे इतना गुस्सा आता है। पहले तो मैं बहुत बार उसके साथ में रही हूँ लेकिन पहले इसका गुस्सा ऐसा नहीं देखा था। लेकिन जब से शादी हुई है, गुस्सा ही गुस्सा देख रही हूँ अब। पहले क्यों नहीं दिखाई दिया तुम्हें गुस्सा? पहले तो तुम्हें मोह में सब प्यार ही प्यार दिखाई देता था। गुस्सा नहीं दिखाई देता था। उसका परीक्षण ही नहीं किया। **यह सब परीक्षण की चीजें होती हैं, जो शादी के बाद पश्चाताप नहीं करना पड़ता है।** शादी के बाद तो सुख के साथ रहने के लिए शादी की जाती है, विवाह किया जाता है ताकि आगामी जीवन हमारा पूरा सुख से व्यतीत हो। यह पहले उस विवाह का उद्देश्य होता था लेकिन आज विवाह के

उद्देश्य इस तरह के होते ही नहीं है। इसलिए घर-घर में आपको यह देखने को मिलता है...कलह किसी न किसी रूप में बनी रहते हैं।

गुणवत्ता हो विवाह का आधार

एक दूसरे से मिलने जुलने वाले लड़के-लड़कियाँ भी जब विवाह कर लेते हैं तो बाद में complaint करते हैं। पहले तो महाराज! इसका nature ऐसा था ही नहीं। अब महाराज के पास इसलिए आते हैं क्योंकि पहले भी आते थे। अब बाद में विवाह कर लिया तो अब किसको सुनाएँगे? सुनने के लिए केवल महाराज जी बैठे रहते हैं। सुना जाओ महाराज के कान में कुछ भी। किसको अपना दुःखहरण विनती सुनाएँ, भगवान तो सुनते हैं ही नहीं तो महाराज के पास में सब दुःखहरण विनतियाँ आती हैं। महाराज! पहले तो इसका nature ऐसा था ही नहीं। अब जब से विवाह हो गया है nature ही बिल्कुल बदल गया है। अब सुनता ही नहीं किसी की। पहले तो मेरी सुनता था अब तो बिल्कुल mummy की ही सुनता है। mummy के अलावा किसी की सुनता ही नहीं। मेरी गलती नहीं भी रहती है तो भी मुझे ही डांटता रहता है। mummy की बात में इतना रहता है कि अगर mummy गलत को सही भी कह दे तो भी मान लेता है और सही को गलत कह दे तो भी मान लेता है। अब क्या complaint करने से होगा? **इसलिए कहा जाता है, ये कहानियाँ बता रही हैं, पहले परीक्षण कर लो, डरो नहीं। एक दूसरे का अच्छे से आजमाइश कर लो, किसको कितना गुस्सा आता है? गुस्सा दिला करके कर लो। किसके पास में कितनी बुद्धि है? उसके बुद्धि की चातुर्य की परीक्षा कर लो।** चाहे थोड़ी देर के लिए उसे गट्टे में क्यों न गिरना पड़े। थोड़ी देर के लिए उसे कीचड़ में क्यों न लसना पड़े, कोई दिक्कत नहीं। लेकिन बाद में जिंदगी भर की कीचड़ से तो मुक्ति मिल जाएगी। क्यों बच्चों समझ में आ रहा है कुछ? क्या समझना है? क्या देखना है? केवल अच्छे-अच्छे श्रृंगार किए हुए picture देखने से ही लड़की अच्छी मिल जाती है, ऐसा समझ लेना चाहिए? रूप केवल बाहरी ही देखा जाता है या कुछ भीतरी भी कुछ गुणवत्ता भी देखी जाती है, यह सीखना है।

राजा श्रेणिक की कहानी से सीख

यह कहानी हमें क्या सिखा रही है? श्रेणिक ने पहले परीक्षा दी और फिर **श्रेणिक ने परीक्षा ली और दोनों परीक्षा में जब pass हो गए तब दोनों सन्तुष्ट हो गए।** तब जाकर जीवन आगे का सुखी बनता है और इसी तरह की सीख अगर हमारे अन्दर रहेगी तो हम आज एक अच्छी समाज का निर्माण कर पाएँगे। वर-वधु यह कोई बात नहीं है, प्रेम विवाह भी कोई बुरी चीज नहीं है लेकिन उस प्रेम विवाह में भी प्रेम अंधा नहीं होना चाहिए। आप तो वही कहते हो, प्रेम तो अंधा ही होता है...महाराज! अगर प्रेम अंधा है, तो फिर वह प्रेम विवाह भी अच्छा नहीं हो सकता है। वह आपके लिए दुःख का कारण बन सकता है। **प्रेम करते हुए भी बुद्धि सजग होनी चाहिए, विवेक जागृत रहना चाहिए** अगर हम मोह में ज्यादा एक दूसरे से indulge हो जाते हैं और मोह के कारण से ही हम affair करके अगर हम शादी तक पहुँच जाते हैं, तो आप देख लेना, ऐसे लोगों के परिणाम बहुत दूरगामी, बहुत दूर तक, अच्छे नहीं निकलते हैं। **प्रेम बुरी चीज नहीं है। प्रेम पर तो आघात पहुँचाया जाता है। प्रेम को बदनाम किया जाता है, प्रेम तो अच्छी चीज है लेकिन प्रेम विवेक के साथ ही।** लेकिन आपका प्रेम कैसा होता है? जैसे अंधा कानून, ऐसे ही अंधा प्रेम। कुछ

नहीं दिखाई देता। कोई दुर्गुण, अवगुण कुछ नहीं दिखाई देते। कितना ही लड़का शराबी, कबाबी, कुछ भी हो अगर उसका affair हो गया तो उसे कुछ नहीं दिखाई देगा फिर लड़की को। इसको क्या कहेंगे? प्रेम कहते हैं इसको? यह प्रेम नहीं है। यह अंधा प्रेम, यह आपके लिए दुःख का कारण है और इसी कारण से आज जो युवक युवतियाँ अपना निर्णय लेते हैं, वे जीवन भर दुःखी रहते हैं। यह सीखना है, किससे? क्या बनना है बोलो? श्रेणिक का एक गुण भी तुममें आ जाए और नंदश्री का एक गुण भी इधर के बैठी हुई कुछ बेटियों में आ जाए तो अपने आप समाज एक अच्छी दिशा में चलने लग जाए। माता-पिता सब चीज में राजी हैं, उनकी राजी और नाराजी से कोई फर्क नहीं पड़ता है, फर्क इस बात से पड़ता है कि आपने विवाह करने के बाद भी सुखी जीवन जिया कि नहीं। यह चिन्ता सबकी है। **कोई आपका दुश्मन नहीं है, न गुरु आपके दुश्मन हैं, न माता-पिता आपके दुश्मन हैं, आपकी बुद्धि आपकी दुश्मन बन जाती है, आपका मोह आपका दुश्मन बन जाता है।** इसलिए आप सोचने की कोशिश करें कि हम जो भी निर्णय लें, वह निर्णय हमारे अपने होते हुए भी दूरदर्शी होने चाहिए, दूरगामी परिणाम की समझ के साथ होने चाहिए और ऐसे अनेक case हमारे पास आते हैं जो इस तरह के निर्णयों के बाद में पछतावे के अलावा फिर उनके हाथ में कुछ नहीं रहता है। अब मैं उनका नाम यहाँ बोल नहीं सकता। उनका नाम-पता मैं आपको बता नहीं सकता क्योंकि वह हमारे लिए अच्छा नहीं होगा। लेकिन इतना ही कहना चाहता हूँ कि आप अपने बेटे-बेटियों को अच्छी समझ दें और अच्छी समझ के लिए ऐसे अच्छे लोगों के चरित्र को पढ़ाएँ, सुनाएँ।

महावीर भगवान की जय।

दो द्रव्यों को जोड़ना शून्य शक्ति का काम।

अंक गणित में भी रहा शून्य शक्ति का नाम॥१६॥

17. सिद्ध भगवान का अनन्त सुख परम शान्ति देने वाला है



सिद्ध भक्ति से, सिद्ध भगवान के गुणों का स्मरण करते हुए और अपने भी अवगुणों का चिन्तन करते हुए प्रत्येक जीवात्मा, जब सिद्ध भगवान और स्वयं में एक अन्तर देखने लग जाता है, तो उसे अपने संसारी होने का और भगवान के मुक्त होने का ख्याल तो आता ही है। **साथ ही भगवान के गुणों को प्राप्त करने का एक आकर्षण भी उसके अन्दर उत्पन्न होने लग जाता है।** इसी भावना को ध्यान में रखते हुए, यहाँ पर सिद्ध भक्ति के माध्यम से कुछ छन्दों को पढ़ते हुए, उन्हीं भावों में डूबते हुए, आप लोगों के लिए, इन छन्दों का कुछ अर्थ बताया जा रहा है और भगवान के गुणों का वास्तविक क्या अर्थ हो सकता है? उसे जानने की कोशिश भी की जा रही है। **आज हम यह काव्य नम्बर सात पढ़ते हैं जिसमें भगवान के सुख का वर्णन किया गया है।**

आत्मोपादान सिद्धं, स्वय मतिशय-वद्, वीत-बाधं विशालं
वृद्धि-ह्रास-व्यपेतं, विषय-विरहितं, निःप्रतिद्वन्द्व- भावम्।
अन्य-द्रव्यानपेक्षं, निरुपमममितं, शाश्वतं सर्व-कालं
उत्कृष्टानन्त-सारं, परम-सुखमतस्तस्य सिद्धस्य जातम्। 17।

‘परम-सुखमतस्तस्य सिद्धस्य जातम्’ उन सिद्ध भगवान के लिए परम सुख उत्पन्न होता है और उस परम सुख की यहाँ पर बहुत सारी विशेषताएँ बताई जा रही हैं।

परम सुख आत्मा के उपादान से सिद्ध होता है

संसार का हर प्राणी, देखा जाए तो सुख ही अन्तिम लक्ष्य के रूप में अपने सामने रखता है। हम कोई भी कार्य करते हैं, किसी भी स्थान पर जाते हैं, किसी भी तरह का व्यापार करते हैं, इन सब क्रियाकलापों का अगर अन्तिम कोई लक्ष्य होता है, तो वह होता है- सुख की प्राप्ति करना। कहना चाहिए...**संसार का हर प्राणी सुख की खोज में लगा हुआ है कि वह सुख हमें कहाँ से मिलेगा? जब हम अपने संसार के क्रियाकलापों के सुख के ढंग देखते हैं तो वह कुछ अलग से दिखते हैं और जो सिद्ध भगवन्तों के जो हम आत्मिक सुखों की बात करते हैं, तो वह कुछ अलग-सा समझ में आता है।** यहाँ एक बहुत अच्छा विशेषण दिया जा रहा है ‘आत्मोपादान सिद्धं’ जो परम सुख होता है, वह स्वयं अपनी आत्मा के ही उपादान से सिद्ध होता है। आत्मा की ही शक्ति से, आत्मा की ही योग्यता से प्राप्त होता है यानि यह बात हमारे विश्वास में आनी चाहिए कि जो उत्कृष्ट सुख होता है, बड़ा सुख होता है, परम सुख होता है, वह स्वयं से ही उत्पन्न होता है। आत्मा का सुख है, तो आत्मा से ही उत्पन्न होगा और आत्मा का सुख अगर आत्मा से उत्पन्न होकर के हमें सुखी बनाएगा तभी उस आत्मा को सुख मिलेगा। अन्य किसी भी तरह से वह सुखी होने का प्रयास करेगा तो वह प्रयास तो होगा लेकिन सुख नहीं होगा। **परम सुख की सबसे पहली विशेषता है कि वह आत्मा की ही योग्यता से, आत्मा की ही उपादान शक्ति से, आत्मा के ही माध्यम से उत्पन्न हुआ होना चाहिए।**

आत्मा का स्मरण प्रति समय रहना चाहिए

हम सभी जीवात्माएँ हैं। हम कहते हैं न, हम सभी जीवात्मा हैं और यह आत्मा की याद हमें तब जरूर आती है जब किसी का मरण हो जाता है। जब मरण होने के बाद में उसका केवल यह पार्थिव शरीर पड़ा रह जाता है तब हम कहते हैं कि इसमें से आत्मा निकल गया। उस समय हमें शायद आत्मा की याद आती है। **उससे पहले हमें पूरे जीवन भर इस शरीर में आत्मा रहते हुए भी हमें कभी स्मरण नहीं होता।** अथवा हम कभी इसका स्मरण करते हो कि हमारे शरीर में जीवात्मा है, हमारे शरीर में आत्म तत्त्व है, यह हमारे स्मरण में नहीं आता। यह स्मरण तभी होता है जब उसका इस संसार से किसी दूसरे लोक में, किसी दूसरी योनि में गमन हो जाता है और यह शरीर छूट जाता है। तब हम क्षण भर के लिए याद करते हैं अब यह शरीर पड़ा रह गया, इसका आत्मा चला गया। लेकिन उस समय पर आत्मा याद करने का अब कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

जीवन का उद्देश्य

व्यक्ति के लिए, अपने जीवन में आगे बढ़ते हुए, वह समय जरूर आता है जब उसे लगने लग जाता है कि हम यह जीवन किसके लिए जी रहे हैं? चाहे वह cloth merchant के organisation के लोग हो या वह अन्य किसी भी संस्था में काम करने वाले लोग हों। जो सबके लिए कपड़े देते हैं कपड़े बाँटते हैं या कपड़े sale करते हैं उन्हें भी कभी-कभी यह मन में भाव तो आता होगा कि आखिर हम यह सब किसके लिए कर रहे हैं? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। आदमी की जिन्दगी में यह बात आ जाए, यह समझ आ जाए और यह प्रश्न उसके अन्दर एक उत्पन्न हो जाए कि हम कुछ भी जो job कर रहे हैं कुछ भी जो business कर रहे हैं हमारा किसी भी तरह का कोई भी कार्य है और इस कार्य में जो हमने अपने जीवन के बहुमूल्य समय को लगा रखा है **क्या हमारा मनुष्य जीवन इसीलिए था? इसी तरह से जीने के लिए था?** इसी उद्देश्य के लिए हमें मनुष्य जीवन प्राप्त हुआ था या कुछ और भी था। **यह विचार अगर क्षण भर भी आता है, तो हमारे भीतर अपने इस प्रश्न के माध्यम से ही हमारे चित्त में एक शान्ति मिलती है, एक चित्त के अन्दर समाधान भी मिलता है।** सिर्फ यह प्रश्न आपको अपने भीतर जाग्रत करना कि हम किसके लिए यह सब कर रहे हैं? किसके लिए? यह प्रश्न अपने अन्दर एक उत्पन्न करना। चाहे वह पढ़ने वाले बच्चे हों, चाहे job करने वाले बच्चे हो, चाहे वह माता-पिता जिनके बच्चे हो गए हो, वह माता-पिता हो, चाहे कितने ही वृद्ध हो, उन सभी के लिए यह प्रश्न करना वाजिब है। यह सब किसके लिए? जब आपने अपने जीवन को आगे बढ़ाया, आपने एक अच्छा घर बना लिया, आपने घर के अन्दर जो भी अच्छी वस्तुएँ बहुमूल्य हो सकती हैं आपने यथाशक्ति उनको भी रख लिया। आपके घर में एक परिवार के योग्य जो कुछ भी व्यवस्था हो सकती हो, परिवार की व्यवस्था आपने बना ली और आपका घर-परिवार सब अच्छी तरह से संचालित है।

मैं किसके लिए जी रहा हूँ?

अब आपके मन में एक प्रश्न यह आना चाहिए, यह सब जीवन किसके लिए? मैं किसके लिए जी रहा हूँ? **यह प्रश्न खुद को खुद से करना चाहिए। अगर यह प्रश्न आपके भीतर आएगा तो आपको एक सही दिशा अपने आप मिलने लग जाएगी और जब तक प्रश्न नहीं आएगा, आप कितना ही गुरुओं का**

उपदेश सुन लेंगे, आपको सही दिशा नहीं मिलेगी। गुरुओं के उपदेश सुनने का प्रयोजन यही होता है कि हमारे भीतर एक प्रश्न पैदा हो जाए और वह प्रश्न ऐसा पैदा हो जाए कि वह हमारे भीतर बना रहे। प्रवचन सुनने के बाद भी, यहाँ से उठने के बाद भी, हमारे मन में सिर्फ एक प्रश्न बना रहे। लोग यहाँ उत्तर सुनने के लिए आते हैं, समाधान पाने के लिए आते हैं। **मैं आपको उल्टा बोल रहा हूँ, आप यहाँ समाधान लेने न आए। आप यहाँ से एक प्रश्न लेकर के जाएँ और वह प्रश्न आपके भीतर बना रहना चाहिए।** जब भी कभी आपको यह प्रश्न याद आ जाए, समाधान की चिन्ता मत करना। कहाँ इसका उत्तर मिलेगा, इसकी चिन्ता मत करना। बस! आप अपने भीतर एक प्रश्न बना कर के रखना। मैं किसके लिए जी रहा हूँ? यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है।

समाधान स्वयं में खोजे

आपके मन में अपने आप कोई न कोई समाधान के स्वर उत्पन्न होने लग जाएँगे। अगर हम आपसे ही पूछें, तो आप अलग-अलग स्वर में अपने अलग-अलग समाधान देंगे। मैं किसके लिए जी रहा हूँ? तो आप कहेंगे, हम अपने परिवार के लिए जी रहे हैं हम अपने बच्चे के लिए जी रहे हैं। हमारी अभी नई-नई शादी हुई है उस पत्नी के लिए जी रहे हैं। हम अगर हमारे पास में कुछ नहीं भी होगा और किसी के लिए नहीं भी जी रहे होंगे, तो आपके लिए फिर एक अन्तिम समाधान आ जाएगा, हम अपने शरीर के लिए जी रहे हैं अपने लिए जी रहे हैं। लेकिन इसमें भी अगर हम और भीतर की ओर चलेंगे तो आपको समझ में आएगा कि जब तक आपका वह प्रश्न बना रहेगा, तब तक आपको वह समाधान की सुई अपने आप उस ओर चलती चली जाएगी, जो वास्तव में समाधान होना चाहिए। लेकिन आप प्रश्न बना कर के रखें। अगर आप कहेंगे कि हम अपने शरीर के लिए जी रहे हैं अपने शारीरिक सुख के लिए जी रहे हैं अपने मानसिक सुख के लिए जी रहे हैं, तो यह भी आपके लिए प्रश्न बनेगा। शारीरिक सुख, मानसिक सुख, यह आपके पास कब तक रहेंगे और इसके लिए भी अगर आप जी रहे हैं तो यह भी जीवन का क्या अन्तिम लक्ष्य होगा? या इसके आगे भी कुछ और लक्ष्य हो सकता है जिसके लिए हम जी सकते हैं? **सुख की प्राप्ति करने के लिए आपको केवल एक प्रश्न अपने मन में बनाए रखना है कि मैं किसके लिए जी रहा हूँ?** मुझे जो सुख मिल रहा है वह किससे मिल रहा है और मुझे जो सुख मिल रहा है यह अगर दूसरे से मिल रहा है, तो यह कब तक मिलता रहेगा? यह प्रश्न अगर आपके दिमाग में होंगे तो आपको सिद्धों की कोई बात समझ में आ पाएगी। नहीं तो होता **यह है कि हम जब अपने मोह भाव में होते हैं हम जब अपनी अज्ञानता में जीते हैं तो हमें ज्ञानियों के सुख भी रास नहीं आते हैं।** हम उनके सुख की बात को समझ भी नहीं पाते हैं और वहाँ तक नहीं पहुँच पाते हैं कि आखिर इनके पास में कोई सुख है कि नहीं? इसीलिए आप देख लेना, जब भी कभी आपको आत्मा के सुख के बारे में बताया जाएगा, आपको नींद आ जाएगी। आपके अन्दर कोई interest नहीं आएगा। आत्मा का कोई सुख होता है? क्या होता है आत्मा का सुख? क्या करते हैं सुख के लिए? वह कैसे उन्हें सुख मिलता है? तो आपके दिमाग में प्रश्न उत्पन्न होने लग जाते हैं, वह सुख उन्हें कहाँ से मिलता है? अब जब इस प्रश्न का यहाँ उत्तर दिया जाए कि वह अपनी आत्मा से वह सुख प्राप्त करते हैं। आत्मा के ही उपादान से उन्हें वह सुख की प्राप्ति होती है, तो आप कहोगे, फिर उन्हें किन्हीं दूसरे चीज की जरूरत नहीं है क्या? जब उन्हें किसी दूसरे चीज की जरूरत नहीं है उन्हें किसी दूसरे से सुख नहीं मिलता तो फिर वह सुख उन्हें अपने आत्मा से इतना कैसे मिल जाता है? यह बात हमारी समझ में नहीं आती क्योंकि हम लोगों

की आदत पड़ी हुई है कि हमने हमेशा जब भी सुख की प्राप्ति की इच्छा की है किसी दूसरे की ओर ताका है। किसी दूसरे पदार्थ की ओर हमने देखा है।

वास्तविक सुख कहाँ है?

संसार में हमने रहकर के, किसी तृष्णा को बढ़ा कर के, किसी दूसरी इच्छा के साथ में हमने वहाँ तक दौड़ लगाई है और तब हमने सुख की प्राप्ति करने की भावना से पूरी जिन्दगी उसमें खपाई है। **इसलिए हमें बात समझ में नहीं आती कि कोई भी सुख ऐसा भी हो सकता है, जो अपनी आत्मा के उपादान से, अपनी आत्मा से स्वयं में उत्पन्न हो जाता हो और वह स्वयं प्राप्त सुख ही सबसे बड़ा सुख है। यह बात हम लोगों को बिल्कुल समझ आती ही नहीं है।** हमें क्या समझ आता है? जैसे ही बच्चा बड़ा होता है हम उसे कहते हैं...बेटा! जीवन में सुखी बनना है, तो तुझे engineer बनना है। जीवन में अगर तुझे अच्छे ढंग से जीना है, तो तुझे एक अच्छा MBBS doctor बनना है, MS degree लेकर के doctor बनना है और अच्छे ढंग से जीना है, तो फिर कोई न कोई ऐसी government service की ओर देख। वह government service अगर मिलेगी तो ही सुखी रहेगा। बड़ी service देखना है, तो IAS, UPSC के exam की तरफ चला जा और अगर छोटी से छोटी service भी देखना है, तो कम से कम teaching job भी ढूँढ लेना, teacher बन जाना एक। जिन्दगी अच्छे ढंग से निकल जाएगी। चैन से बैठे तुझे सब कुछ मिलेगा, ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। सरकारी नौकरी एक बार मिलने के बाद में फिर हमेशा के लिए व्यक्ति bound हो जाता है। उसे उतनी payment तो मिलनी ही है। इसलिए यही एक निश्चितता का सुख, तेरे जीवन में सुख देगा। यह हम अपने बच्चों को बचपन से सिखाते हैं। सिखाते हैं कि नहीं? बच्चा फिर उसी दौड़ में दौड़ता है कि हाँ! सुख प्राप्त करने के लिए हमें कोई न कोई एक job ढूँढनी है। चाहे वह private हो, चाहे वह government की हो। आज तो government job के लिए इतनी मारामारी पड़ी हुई है कि अभी मुझे एक समाचार मिला, एक चपरासी की नौकरी के लिए। समझ रहे हो न, government के चपरासी की नौकरी के लिए, एक peon की नौकरी के लिए, BA किए हुए और BE किए हुए लोगों ने आवेदन दिए हैं। MBA किए हुए लोगों ने भी आवेदन भरे होंगे और इस नौकरी के लिए भी जब MBA किए हुए लोग, BE किए हुए लोग जब आवेदन भर रहे हैं तो आपको समझ में आ जाना चाहिए कि लोगों की मानसिकता में सुख कहाँ है? **हमने हमेशा सुख वहीं खोजा है, जहाँ हमारे आसपास के लोगों ने हमें बताया है और सामाजिक ढंग से जब हम जीवन जीते हैं तो समाज में लोग हमें जिधर ले जाते हैं हम उधर ही चलते चले जाते हैं।** इसलिए हर बच्चा, हर बड़ा, हर बूढ़ा, उसी दौड़ में दौड़ता है। भाई! सुख कहाँ मिलेगा? नौकरी करने में मिलेगा। आज के बच्चों का सुख कहाँ है? व्यवसाय में नहीं है। Cloth merchant वालों से पूछ लो। इनके बच्चे भी अब यह अपनी merchant में लगना नहीं चाहते हैं। सब अपना-अपना, अलग-अलग job करना चाहते हैं। सबको IT कंपनियों में job करना है और सबके लिए यही भाव आता है कि बच्चा अपना IIT करके कहीं पर BTech करके, किसी कंपनी में job करने लग जाए। यहाँ घर में, दुकान में बैठ कर के, तेरी क्या इज्जत होगी? शादी करने के लिए लाले पड़ जाएँगे। कहीं Bangalore, Pune पहुँच जाएगा तो अच्छे रिश्ते भी आ जाएँगे। सोचे, सही बात है कि नहीं।

बच्चों को सही दिशा निर्देशन दे

यह अगर आपके अन्दर आ गया है और आप अपने बच्चों को इसी तरह से पढ़ा करके, बढ़ा करके, आगे बढ़ा रहे हैं और सब अपने-अपने घरों से बच्चों को बाहर भेज रहे हैं तो आप यह ध्यान में रखना, आपने बच्चों को सुख का कोई सही रास्ता बताया ही नहीं। आप तो फिर भी यहाँ बैठ जाओगे, कभी आ जाओगे। **सामाजिक व्यक्ति होने के नाते आप यहाँ पर किसी न किसी साधु-संतों के उपदेश सुन लो। लेकिन उन बच्चों के लिए तो यह भी कभी नसीब नहीं होगा, जिनको आपने बहुत दूर-दराज इस तरह से पहुँचा दिया है।** मन्दिर भी नसीब नहीं है गुरु भी नसीब नहीं है। गुरु के उपदेश भी नसीब नहीं होंगे और उनके लिए यह सुख की परिभाषाएँ कब समझ में आएँगी? कब सुनने को मिलेगा? कब कोई उन्हें समझा पाएगा, बेटा! सुख कहाँ है? तुम यहाँ आकर के जिस flat में रह रहे हो और जिस छोटी-सी जिन्दगी में जी रहे हो, छोटी-सी जगह पर भले ही वह कहने को Bengaluru और Pune है, लेकिन तुम्हारा घर कितना है यह तो देखो तुम? कोई Bangalore और Pune के बराबर तुम्हारा घर नहीं है। बस! कहने का नाम है कि हमारा address कहाँ है? हम Bangalore और Pune में रहते हैं। लेकिन तुम रहते कहाँ हो? खुद का तुम्हारा मकान भी है कि नहीं? अभी तो तुम किराए पर ही रह रहे होंगे और उसमें भी अभी तुम्हारे लिए ऐसा लग रहा है कि हम बहुत बड़ी जगह पर आकर के रह रहे हैं। लेकिन एक छोटे से flat में रहकर के, किराए पर भी अगर अपनी जिन्दगी निकालते हुए, तुम इस बात को भूले हुए हो कि तुम किसके लिए जी रहे हो तो तुमने अपने मानव जीवन का कोई भी लक्ष्य प्राप्त करने का भाव कभी किया ही नहीं। यह बात उन बच्चों को सिखाने कौन जाएगा? यह आपकी कब मानेंगे और आपकी बात को सुनेंगे भी? भला क्यों सुनेंगे? जब आपने पूरा जीवन उसी में निकाल दिया। ऐसे बच्चों को जब गुरुओं की शरण में लाया जाएगा, तभी जाकर के वे अपने दिमाग में कुछ सोचने को मजबूर हो पाएँगे। अगर हमने अपने मानव जीवन में यह सोचा ही नहीं कि हम किसके लिए जी रहे हैं सुख हमें मिल रहा है, तो कहाँ से मिलेगा और अगर वह मिल रहा है, तो क्या वह मेरा वास्तविक सुख है और वास्तविक सुख अगर होता है, तो उसका स्रोत क्या होता है? वह स्रोत कहाँ है? उस स्रोत की अगर हम खोज करेंगे तो आप शान्ति की खोज में निकले हुए, एक लक्ष्य की खोज में निकले हुए, एक पथिक कहलाएँगे। **हर व्यक्ति को एक पथिक बनना चाहिए। किसकी खोज में निकलने के लिए? शान्ति की खोज में।** हम किसकी खोज में निकले हैं? सत्य की खोज में नहीं। किसकी खोज में? शान्ति की खोज में। सत्य की खोज में निकले हुए लोग दूसरे होते हैं जो दार्शनिकता के साथ जीते हैं। कोई सन्त-महन्त बन जाते हैं। वह सत्य की खोज में खोजने वाले लोग अलग होते हैं। लेकिन एक आम आदमी का जीवन अगर बन सकता है, तो वह शान्ति की खोज से।

शान्ति की खोज

शान्ति हर व्यक्ति को प्यारी होनी चाहिए। आपने कोई भी अपनी बड़ी दुकान डाली, कोई भी showroom बनाया, किसी भी तरह के आपने कपड़े आदि के व्यापार करना शुरू किया लेकिन उससे आपको क्या मिलना चाहिए? यह आपके purpose में पहली चीज होनी चाहिए। **यह सब किसके लिए? बोलो! किसके लिए? अशान्ति के लिए कि शान्ति के लिए? बोलो तो?** एक बार बोलोगे तो भी शान्ति मिलेगी। शायद नहीं बोल पा रहे हो। मन से नहीं निकल पा रहा है। एक बार बोलोगे तो आपकी आवाज

ही आपसे कहेगी कि देखो क्या बोल रहे हो? महाराज के पास में कुछ भी बोलना पड़ रहा है। महाराज बुलवा रहे हैं। **लेकिन क्या तुम्हारे उद्देश्य में वह चीज है?** तब आपका मन खुद अपने आप से आपसे कहेगा कि अपने उद्देश्य को इसी ओर ले जाना है इसी ओर बनाना है। **हमें किसकी खोज में निकलना है?** शान्ति की खोज में निकलना है और जब शान्ति की खोज में निकले तो हम किस पर अपना लक्ष्य करें? शरीर पर? घर पर? धन पर? परिवार पर? **अपने मानसिक विचारों पर या किसी और ऐसे स्रोत पर, जो हमेशा सुखमय है और उस स्रोत से ही वास्तविक सुख की प्राप्ति होती है। उस स्रोत की ओर हम अपना लक्ष्य करें।** यह हमारे मन के अन्दर कई तरह के प्रश्न उत्पन्न हो जाने चाहिए।

क्या धन से शान्ति?

शान्ति की खोज में चलते-चलते आप किधर चलना चाहोगे? धन की ओर? जितना-जितना धन आता जाएगा, उतनी अधिक शान्ति होती जाएगी, ऐसा formula बना दे, बताओ? जितने लोग धनवान हुए हैं, धनवान हो रहे हैं और जो धन को इकट्ठा करते चले जा रहे हैं वह सब आपकी दृष्टि में बिल्कुल शान्ति का जीवन जी रहे हैं। समझ पा रहे हैं भीतर शान्ति बढ़ती जाती है कि अशान्ति बढ़ती जाती है? अगर मान लो, आपके लिए धन से ही शान्ति मिलने वाली है और धन आपके लिए बढ़ रहा है और धन अगर बढ़ रहा है, तो **आपके लिए वह धन कहाँ रखना है? इस बात की अगर आपको चिन्ता पड़ जाती है, तो यह चिन्ता भी आपको शान्ति की ओर ले जाएगी कि अशान्ति की ओर ले जाएगी?** थोड़ा बहुत धन रखने में कहीं कोई चिन्ता नहीं है। लाख-दो लाख... पाँच लाख... पाँच करोड़... समझ आ रहा है। अब इससे ज्यादा जब भी आप धन रखने की कोशिश करोगे तो आपके ऊपर अनेक तरह के कैमरे लग जाएंगे। ID, CID सब लग जाएगी। आपके लिए तरह-तरह के taxation के charge लगने लग जाएंगे और आप यह सोचने को मजबूर हो जाओगे कि इस धन को कहाँ रखें? किसी को show करें कि नहीं करें? बैंक में पहुँचोगे तो सामने वाला आपकी शक्ल देखेगा। यह आया तो कहाँ से आया? एक नम्बर की कमाई का है कि दो नम्बर की कमाई का है? जब आप भी जानते हो कि हम इसको एक नम्बर की कमाई का show नहीं कर सकते हैं तो आप बैंक में घुसने की हिम्मत भी नहीं करोगे। उस पैसे को कहीं ढंग से रखने की कोशिश भी नहीं करोगे। **फिर आपके मन में आएगा, यह पैसा कहाँ रखा जाए? एक अच्छा-सा bedroom बनवाया जाए। कहाँ रखा जाए? घर के अन्दर, कमरे के अन्दर, एक और कमरे के अन्दर, एक और कमरे के अन्दर, एक और कमरे के अन्दर, एक ऐसा bedroom बनवाया जाए, जिसमें सिर्फ हम ही हो और कोई न हो और वह bed भी एक special quality का हो। जिस bed के ऊपर तो dunlop के गद्दे दिखाई दे लेकिन उसके नीचे यह सब दो नम्बर का माल पड़ा हुआ रहे। दो नम्बर के सारे जितने भी नोट हैं, यह सब उसमें बिछे रहें और वहाँ तक किसी की पहुँच न हो। सिर्फ हम ही पहुँचे और उस पर आप late गए।**

धन उपार्जन अशान्ति का बहुत बड़ा कारण है

वह धन आपके लिए उस समय पर शान्ति देगा कि अशान्ति देगा! या आपके भीतर जो शान्ति थी उसको भी छीन लेगा? **आप सोचो! जिस शान्ति की खोज में आप निकले थे, धन कमा कर के आप अपने मन को और शान्त करना चाहते थे, आपने मन को अशान्ति में डाला कि शान्ति की ओर ले गए?**

अगर आपके मन में चिन्ताएँ होने लग गई, आपके रात की नींद उड़ गई, आप धन की सुरक्षा में और धन की व्यवस्था में अपना पूरा का पूरा समय लगा कर के चिन्तित हो गए और ऐसा हो भी नहीं सकता है कि आप धन को, अपने पास में रखें लेकिन उसकी चिन्ता न करें, ऐसा हो ही नहीं सकता। जब धन आपके पास अधिक हो जाएगा तो उसके रखने की चिन्ता, उसकी सुरक्षा की चिन्ता, एक बहुत बड़ी चिन्ता बन जाती है और वह चिन्ता आपको सोने नहीं देती है। आपकी रातों की नींद उड़ा देती है और आपको धीरे-धीरे बीमार बनाने लग जाती है क्योंकि अशान्ति आपके मन के अन्दर आने लग जाती है। इसीलिए कहना पड़ता है, जब भी आप ऋषियों-मुनियों-फकीरों के पास पहुँचेंगे तो कहना ही पड़ेगा, जानना ही पड़ेगा। जो सुनने में आता है सबके लिए पता होता है...**ज्यादा का पुरुषार्थ कर लिया, ज्यादा मिल भी गया तो समझ लेना, भीतर की हमारी शान्ति चली गई और शान्ति अगर चली गई तो फिर हमारा जीवन भी धीरे-धीरे घुलने लगेगा।** हमारा जीवन भी धीरे-धीरे क्लेश में ढलने लगेगा। हम रोगी होते चले जाएँगे और उसी अशान्ति के कारण से हमारा जीवन पूरा का पूरा बर्बाद हो जाएगा।

आत्मा ही शान्ति का उपादान कारण है

शान्ति की खोज में अगर निकले हो तो शान्ति कहाँ मिलेगी? यह कहा नहीं जा रहा है, मना नहीं किया जा रहा है कि आप धन न कमाओ, व्यापार न करो, परिवार न बनाओ। यह सब नहीं कहा जा रहा है। लेकिन यह सब आप कर चुके हो और करने के बावजूद भी आपको यह पता होना चाहिए कि अब हमें क्या करना है? शान्ति की खोज में कहाँ जाना है? यह सूत्र वाक्य याद रखना... **‘आत्मोपादान सिद्धं’ शान्ति हमें कहाँ मिलेगी? शान्ति न हमें धन में मिलेगी, न व्यापार में मिलेगी, न स्त्री में मिलेगी, न शरीर में मिलेगी, न अपने विचारों में मिलेगी। शान्ति कहाँ मिलेगी? शान्ति हमें अपनी ही आत्मा में मिलेगी। शान्ति का स्रोत कहाँ है? आत्मा ही उसका उपादान अर्थात् मुख्य कारण है।** जैसे कोई shirt बन जाती है या किसी भी तरीके का कोई भी तन पर ओड़ने का कोई भी कपड़ा बन जाता है, तो उसका मुख्य कारण क्या है? वह धागा! जिससे वह वस्त्र बनता है, यह उसका क्या है? मुख्य कारण है। इसी को बोलते हैं- उपादान शक्ति। लोहे से वस्त्र नहीं बना सकोगे आप। लकड़ी से वस्त्र नहीं बना सकोगे। वस्त्र बनेगा तो वस्त्र के योग्य जो तंतु होता है, कपास आदि होते हैं उन्हीं से वस्त्र बनेगा और वह वस्त्र ही आपके लिए यह ठण्डी-गर्मी में काम आने वाला वस्त्र होगा। वह वस्त्र की अपनी एक उपादान शक्ति है। वस्त्र किससे बनेगा, बोलो? चाय की पत्तियों से बन जाएगा? धागे से बनेगा। अतः धागा उसका उपादान कारण हो गया। वस्त्र कैसा भी बना लो लेकिन उसकी उपादान शक्ति क्या कहलाएगी? धागा। हम चाहे कैसा भी वस्त्र बना ले छोटा, बड़ा, लम्बा, मोटा। किसी भी तरह का उसमें design बना ले लेकिन उसका मूल उपादान कारण क्या रहेगा? धागा। इसी तरह से हम अपना जीवन चाहे किसी भी ओर ढाल ले...व्यापार में, service में, घर-परिवार की वृद्धि में, किसी भी तरह से समाज की वृद्धि में, कहीं भी ढाल लें। **लेकिन हमारे भीतर सुख का उपादान कारण होगा तो कहाँ होगा? हमारा अपना आत्मा! किसी दूसरे का आत्मा भी नहीं, किसका आत्मा? स्वयं का आत्मा।** हमारी आत्मा में ही वह ताकत है, वह शक्ति छुपी हुई है, जिसके अन्दर वह सुख समाहित है और वह सुख अगर अपनी आत्मा से, अपने में ही उत्पन्न होता है। ऐसा हमारे अन्दर विश्वास आता है, तो ऐसे सिद्ध भगवन्तों को, शुद्ध आत्माओं को याद करने से आता है। इसलिए उन्हें किसी वस्त्र की जरूरत नहीं, उन्हें किसी शरीर की जरूरत नहीं। उन्हें केवल अपनी आत्मा से उत्पन्न सुख को अनुभूत करने का

आनन्द मिलता है और वही सुख उन्हें हमेशा बना रहता है।

वस्तु अपने वास्तविक रूप में अनन्त काल तक रह सकती है

जो चीज जिससे उत्पन्न हो रही है, वह चीज अगर original रूप में वैसी बनी रहेगी, उसी के पास रहेगी तो वह अपनी सत्ता को बनाए रखेगी। मान लो पानी है। पानी अपने original रूप में जैसा है वैसा अगर आप देखते रहोगे तो पानी बहुत समय तक भी बना रहेगा। लेकिन अगर आपने उसका रूप बिगाड़ दिया तो बहुत समय तक नहीं रहेगा वह। मान लो उस पानी से आपने बर्फ बना दी। बर्फ बहुत समय तक नहीं टिकेगी। उस पानी की आपने भाप बना दी। भाप बहुत देर तक नहीं टिकेगी। पानी जितनी देर तक टिक सकता है, उससे बनी हुई कोई भी चीजें उतनी देर तक नहीं टिकेंगी क्योंकि वह अपने original स्वरूप में बहुत देर तक बना रह सकता है। हर वस्तु अपने यथार्थ स्वरूप में ही अनन्त काल तक रह सकती है इसलिए जब आत्मा अपने ही आत्मिक सुख को प्राप्त कर लेती है, तो उस आत्मिक सुख में अनन्त काल तक बनी रहती है और अगर वही आत्मा कभी शरीर से, कभी मन से, कभी धन से, सुख की प्राप्ति करना चाहती है, तो उसे वह सुख हमेशा के लिए नहीं मिलता। कुछ समय के लिए वह कल्पना कर लेता है कि हमें इससे सुख की प्राप्ति हो रही है। लेकिन वास्तव में, उसे उससे सुख की प्राप्ति नहीं होती। सुख की प्राप्ति तो उसे उसी भाव से होगी। शान्ति कहाँ है? मेरी आत्मा में है। लेकिन संसार का व्यवहार देखो आप। जब आदमी मर जाता है, जब वह शरीर जल जाता है, आत्मा न जाने कहाँ, किस योनि में चली जाती है? उस समय पर हम उस आत्मा की शान्ति की बात करते हैं। उस समय पर हमारे मुख से, उस शोक सभा में, शब्द निकलेंगे...हे परमात्मा! जहाँ कहीं पर भी वह आत्मा गया हो, उस आत्मा को शान्ति मिले। हम तब बात करते हैं शान्ति की, जब वह आत्मा के लिए शान्ति अब मिल ही नहीं सकती है क्योंकि वह आत्मा जहाँ गया, उसे न परमात्मा शान्ति दे सकता है, न तुम्हारी प्रार्थनाएँ शान्ति दे सकती है। उसने जैसा कर्म किया है उस कर्म का वह फल भोग करके ही अपनी शान्ति प्राप्त कर सकेगा। उसे शान्ति देने वाली अब दुनिया में कोई भी शक्ति नहीं है। जिसने कभी अपने जीते जी शान्ति की बात न की हो, शान्ति का भाव न लिया हो, शान्ति कहाँ होती है? उस आत्मा के स्रोत की ओर न देखा हो, उसे मरने के बाद में, हम अगर प्रार्थना करें कि इसको शान्ति मिले तो उसको क्या आप शान्ति दिला पाओगे? अब क्या शान्ति मिले? अब तो सभी वह शान्त हो गया। न उसका घर-परिवार बचा, न उसका शरीर बचा। अब उसके लिए शान्ति कहाँ है? शान्ति तो उनको देना है, जो उसके जाने के बाद बिलख रहे हैं और उन्हें भी हम शान्ति कैसे दे पाएँगे? यह कह कर के भाई! जो हो गया, सो हो गया। अब थोड़ा शान्ति रखो। अब शान्ति रखो। अब शान्ति रखो। अब वह कैसे शान्ति रखे? क्योंकि उन्होंने भी क्या अपने मन में धारणा बना रखी है कि शान्ति तो तभी मिलती, जब वह हमारे सामने होते।

शान्ति हमारी आत्मा में है

यह तो हमने कभी सीखा ही नहीं, सिखाया ही नहीं कि शान्ति हमारी आत्मा में है। **कभी भी हमें शान्ति की जरूरत पड़ती है, तो हम कहाँ देखते हैं? चलो भाई! कहीं शान्ति कहाँ मिलेगी?** चलो किसी park में चलते हैं, किसी theatre में चलते हैं। चलो कहीं दूर घूमने चलते हैं। शान्ति कहाँ मिलेगी? हिमालय

पर? Darjeeling, Shimla कहाँ जाएँगे शान्ति की खोज करने के लिए? कितनी भी दूर जाने के बाद में भी आपको वहाँ पहुँचने के बाद में और अशान्ति बढ़ जाएगी क्योंकि जितनी दूर आप पहुँच गए, आपको लगेगा, अब मुझे वापस भी जाना है, return का भी टिकट हम लेकर के चलते हैं इसलिए। अब वहाँ जाकर के आपको शान्ति कितनी देर महसूस होगी? अगर आप बहुत समय लेकर के और बहुत पैसा खर्च करके, आप किसी चोटी पर पहुँच भी गए तो वहाँ क्या आप शान्ति से बैठ पाओगे? आप लोग देख लो।

तीर्थ स्थान पर जाने का आनन्द लें

किसी तीर्थ स्थान पर जाते हो, आप सब लोग जाते हैं। जैन लोग भी जाते हैं। आप सब अजैन लोग भी जाते हैं। **अपने-अपने तीर्थ स्थानों पर हर कोई जाता है। किसके लिए जाते हो? किसी का क्या उद्देश्य बताओ?** सम्मेल शिखर पर गए। आप इतनी बड़ी ऊँची चोटी पर चढ़कर के पहुँचे और वहाँ पर पहुँचने के बाद में selfi खिंचा लो भैया! एक तो selfi ले ही लो। क्या पता? याद भी रहेगी कि नहीं रहेगी? घर पर जाकर के कोई पूछ बैठेगा कि आप वहाँ गए थे कि नहीं गए थे? दिखाना क्या पड़ेगा? देखो! यह evidence है, यह दिखाना पड़ेगा। वहाँ जाने के बाद भी आप क्या करते हैं? किसी भी तीर्थ स्थान पर पहुँचने के बाद भी आप क्या करते हैं? वही करते हैं, जो आप घर पर करते हैं। किसी भी तीर्थ स्थान पर पहुँचने के बाद, बस! वहाँ पहुँच गए, देख लिया, जो देखना था। चलो! भूख लगी है, जल्दी चलो, नीचे उतरो। जल्दी से नाश्ता करना है। आ गए, फोटो खिंचा ली, selfi ले ली। यह अपना evidence हो गया, हम यहाँ पर आए थे। अब चलो, जल्दी चलो, जल्दी वापस घर पर जाना है। आप इतनी ऊँचाई पर गए, इतनी दूर तक गए, इतने बड़े तीर्थ क्षेत्र पर गए, किसके लिए गए? तीर्थ क्षेत्र किसके लिए होते हैं? **आपने एक क्षण भी वहाँ खड़े होकर के महसूस करने की कोशिश की कि हम यहाँ पर शान्ति का अनुभव कर रहे हैं। हमें यहाँ पर जो शान्ति मिल रही है, वह शान्ति नीचे संसार में जाने पर नहीं मिलेगी। ऐसी शान्ति का हम यहाँ पर थोड़ा-सा अनुभव करें, आनन्द ले और ऐसा आनन्द लेने के भाव में थोड़ी देर के लिए हम वहाँ बैठ जाएँ।** किसी के लिए फुर्सत नहीं है। वहाँ जाने के बाद भी आपा-धापी, धक्का-मुक्की, इतनी सारी चीजें वहाँ पर भी होती है कि किसी भी तीर्थ स्थान पर पहुँचने के बाद भी शान्ति मिलती नहीं है।

शान्ति आत्मा का स्वभाव है

जितनी शान्ति से आप यहाँ बैठे हो, free में बैठे हो, free की शान्ति जो मिल रही है, यह आपको बहुत बड़ा पैसा खर्च करने के बावजूद भी, आपको बड़े-बड़े स्थानों पर जाने के बाद भी, इतनी अच्छी शान्ति नहीं मिलेगी, जो आपको यहाँ मिल रही है। लेकिन आपको लगता वही है, जब तक हम पैसा खर्च नहीं करेंगे तब तक शान्ति भी पैसे से ही मिलती है। यह भी हमारी धारणा बन गई इसलिए किसी भी आदमी को कहीं free में भी अगर शान्ति देना चाहे तो उसे विश्वास नहीं होगा। भाई! शान्ति भी कीमती चीज है। वह कीमती चीज तो कभी free में मिलती नहीं है। वह कभी महसूस नहीं करेगा कि हम कभी गुरुओं के पास आते हैं, उपदेश सुनते हैं और हमें उपदेशों से भी कोई शान्ति मिल सकती है। अगर वही उपदेश सुनने के लिए कोई ticket लगा हो, कोई charge रख दिया गया हो और फिर गए हो भाई! अब चलो शान्ति दिलाई जाएगी तो थोड़ा विश्वास होता है कि हाँ! शान्ति भी आज पैसे में मिलती है। लेकिन **क्या शान्ति पैसे में मिलेगी?**

शान्ति तो हमारा अपना स्वभाव है, यह विश्वास करना है। आत्मा का अपनी एक स्वाभाविक शक्ति है- शान्ति और देखना आप, जब आप अशान्ति में होते हैं, दुःखी होते हैं, पीड़ा में होते हैं या किन्हीं चीजों से आप परेशान हो जाते हैं तो आप क्या करते हैं? जानते हो? आप आँख बंद करके बैठ जाते हैं। कभी बैठो, आँख बंद करके? किसलिए बैठना पड़ता है आँख बंद करके? अब हमें दुनिया को देखना नहीं इसलिए? किसलिए? सब देखने के बावजूद भी मैं थक गया, सब करने के बावजूद भी मैं परेशान हो गया। **अब हमें शान्ति मिलेगी तो कहाँ मिलेगी? आदमी आँख बंद करके, शान्ति से बैठ जाता है। जब आँख बंद कर लोगे, एक स्थान पर स्थिर होकर के बैठ जाओगे, धीरे-धीरे शान्ति आपके भीतर से उतर करके, निकल कर के आने लग जाएगी।** वह शान्ति वैसे ही अवतरित होगी, जैसे कभी आपने महाभारत में देखा हो। गंगा में से जैसे गंगा देवी अवतरित होती है, तो ऐसे ही आपके अन्तरंग से वह शान्ति अवतरित होगी। लेकिन पहले थोड़ी देर बैठो तो सही, शान्त भाव से। **शान्ति का इंतजार तो करो, शान्ति के लिए थोड़ी अपनी आँखें बंद तो करो।** इन्द्रियों के व्यापार रोको तो तब कोई शान्ति भीतर से आए। लेकिन हमें यह सब चीजों का ज्ञान होगा तो हम आँख बन्द करेंगे, तभी हमारे भीतर से कोई शान्ति आ सकती है।

शान्ति का स्रोत हमारे अन्तरंग में है

आज आप लोग यही ज्ञान अपने अन्दर से उत्पन्न करके जाना कि हम किसके लिए जी रहे हैं और अगर मन कहे कि हम शान्ति के लिए जी रहे हैं तो फिर मन से पूछना कि शान्ति कहाँ मिलती है? और अगर शान्ति आपको दुनिया में कहीं न मिले तो यह सूत्र स्मरण कर लेना- **'आत्मोपादान सिद्ध'** शान्ति की प्राप्ति, आत्मा की उपादान शक्ति से होती है। उसका मूलभूत जो कारण है, वह क्या है? उसकी अपनी आत्मा है। आत्मा सबके पास में अपनी-अपनी है। आत्मा, किसी की, किसी के पास में नहीं है। हमारी आत्मा हमारे पास है, आपकी आत्मा आपके पास में है। बच्चे की आत्मा बच्चे के पास में है, माता-पिता की आत्मा माता-पिता के पास में है। पत्नी की आत्मा पत्नी के पास में, पति की आत्मा पति के पास। कोई किसी की आत्मा को कभी भी शान्ति पहुँचा सकता है? कोई ऐसी चीज है भाई? कहीं से कोई pump लगाया जाए, कोई spray करके डाल दिया जाए, कोई pressure करके, कहीं पर कोई अन्दर फेंक दिया जाए..भाई! यह शान्ति पहुँच गई। पहुँच सकती है? कैसे पहुँचेगी? **हर व्यक्ति को अपनी आत्मा में खुद झाँकना पड़ेगा, अपने भीतर खुद देखना पड़ेगा, अपने आप को खुद महसूस करना पड़ेगा कि आखिर ऐसा क्या है हमारे भीतर?** जो मरने के बाद आदमी की शक्ल-सूरत सब कुछ रहती है लेकिन वह क्या उसमें से हवा निकल गई, जिसके कारण से वह body अब dead body कहलाने लग जाती है। वह कौन-सी चीज होती है? सभी ने dead bodies देखी हैं। कोई आदमी की shape में, कोई उसके colour में कुछ अन्तर नहीं आता। वह वैसा ही रहता। बस! वह body क्या हो गई? dead body हो गई और जब तक वह alive body है, live body है तब तक किसके कारण से वह body live है? किसके कारण से वह भीतर से alive है? उसी का नाम क्या है? आत्मा। उस आत्मा की ओर झाँकोगे तो आपको खुद समझ में आएगा, **शान्ति का स्रोत कहीं और नहीं है? हमारे भीतर है। हर व्यक्ति के लिए यह समय आना चाहिए और आता है। अगर व्यक्ति अपने भीतर झाँक करके यह महसूस करने लग जाता है, तो उसे अपने अन्तरंग में शान्ति के छुपे होने का विश्वास आने लग जाता है।** आप सुनते हो न, कहते हैं लोग, यह सब मोह माया है। कहने से आती है क्या मोह माया? माया के चक्कर में सुबह से शाम तक पड़े रहते हैं। महामाया

में बैठे रहते हैं और फिर भी कहते हैं- यह सब मोह माया है। दूसरों को सुनाने के लिए कहना पड़ता है सब मोह माया है। यह एक feeling है और यह feeling तभी आएगी, जब आपको अपनी आत्मा में feeling आने लगेगी कि मेरी आत्मा में शान्ति है। फिर दुनिया में क्या है? दुनिया में जो कुछ है, वह सब मोह माया है। यह भावना जब आने लग जाती है तब अपने आप आपको याद आने लग जाती है।

विवाह और सन्तानोपत्ति का सुख

जो लोग भी पहले किसी भी तरह से, दुनिया में जिए हो, आखिर उन्हें भी अन्ततः अपनी आत्मा की शान्ति ही प्राप्त हो रही है और वही उन्होंने पाई है। विवाह, शादी, बच्चे यह सब तो सांसारिक कार्य है, सबके साथ होते हैं, आपके साथ होते हैं। पहले भी **राजा श्रेणिक** जैसे लोग हुए, उनके भी साथ हुए हैं। विवाह हो गया था। किससे हो गया था? **नन्दश्री से राजा श्रेणिक का विवाह हो गया।** अच्छी धूमधाम से हुआ था कि नहीं हुआ था? क्या कह रहे हो? शादी में बुलाया नहीं? उस समय पर तुम थे, वहाँ पहुँच गए थे। सब आनन्द मना लिए थे और फिर वहाँ से भी चले गए। सब भूल गए और यहाँ आकर के उनकी कहानी सुन रहे हो। सबने आनन्द लिया है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जिसने कभी किसी के विवाह में शामिल न हुआ हो। समझ आ रहा है? हम जैसा व्यक्ति भी भले ही विवाह नहीं किया लेकिन बारातें तो बहुत सारी की है। ऐसा हो ही नहीं सकता। आदमी अनादिकाल से यह सब कार्य करते आया है और इन सब कार्यों में हमेशा शामिल रहा है और राजा श्रेणिक के विवाह में भी आप सभी शामिल थे और आज भी शामिल हैं। विवाह हो गया और विवाह होने के बाद में जीवन सुख से व्यतीत हो रहा है। महीने, दो महीने, साल, दो साल, चार साल, अच्छे आराम से सुखपूर्वक गुजर रहे हैं। जब चार-छ महीने साल भर गुजरने लग जाती है तो फिर क्या होने लग जाता है? धीरे-धीरे परिवार की वृद्धि भी होने लग जाती है। **आखिर विवाह किसलिए किया जाता है? सुख की और वृद्धि के लिए? आखिर सुख और दुःख के अलावा दुनिया में तीसरी चीज है क्या? विवाह आप सुख की वृद्धि के लिए करते हैं कि दुःख की वृद्धि के लिए करते हैं?** आप ही बता दो अब हमें। हमारी बात तो आप मानेंगे नहीं। आपकी बात हम मान लेंगे। बोलो! विवाह किसके लिए होता है? अरे! जैसे बोलना है बोलो तो। हम मान लेंगे। कुछ देर के लिए सुख मिलता है। अरे! जिन्दगी भर फिर विवाह क्यों करा जाता है? कुछ देर सुख मिलता है। जिन्दगी भर के लिए विवाह करना पड़ता है कि थोड़ी देर के लिए विवाह करना पड़ता है। यह भी तुम बुढ़ापे में अच्छी बातें कह रहे हो। पूरा बुढ़ापा आ गया और कह रहे है, थोड़ी देर के लिए सुख मिलता है। सुख कहाँ? सुख की वृद्धि के लिए है कि दुःख की वृद्धि के लिए है? अभी तो कहो- हाँ! महाराज, विवाह सुख की वृद्धि के लिए है और वह सुख की और वृद्धि हो जाती है जब विवाह होने के बाद में दो के साथ में एक तीसरी सन्तान और उत्पन्न होने की संभावनाएँ जब बढ़ जाती है, इसीलिए तो विवाह किया था। **अगर विवाह होने के बाद में पुत्र की उत्पत्ति न हो, सन्तान प्राप्ति न हो तो वह एक बहुत बड़ा दुःख बन जाता है।** एक दुःख को दूर करने के लिए एक और दुःख हमें दूर करना पड़ता है। विवाह हो गया है, तो सन्तान तो होनी ही चाहिए और वही सन्तान प्राप्ति करने के लिए ही यह विवाह होता है। अगर विवाह होने के बाद में साल भर तक, दो साल तक, किसी बहू के लिए बेटा न हो तो अगल-बगल की सबरी जितनी भी दादी अम्मा हैं सब हावी होने लग जाती हैं उस बेचारी बहू के ऊपर। सारी दादी अम्माओं ने ठेका ले रखा है, सारी पड़ोसिनों ने ठेका ले रखा है। क्या हो गया इसको? उसकी ओर देखती बड़ी कातर भरी नजरों से, जैसे सारा दोष उसी का है और किसी का कोई दोष नहीं है। सारा

दोष मढ़ा जाता है तो किसके ऊपर? बेटी के ऊपर, बहू के ऊपर। पुरुष को कभी दोष की दृष्टि से नहीं देखा जाएगा। देखा जाएगा तो स्त्री को ही।

सामाजिक नीतियाँ या कुरीतियाँ?

यह सामाजिक नीतियाँ हैं, सामाजिक कुरीतियाँ हैं और ये बड़े अच्छे ढंग से समाज में चलती हैं, हर समाज में चलती हैं। समाज का व्यक्ति इन चीजों को समझता है, जानता है और फिर उसके बाद सुख की कल्पना अरे! तेरे लिए सन्तान नहीं हुई, इतना बड़ा दुःख हो जाता है उसको, इतना दुःख हो जाता है...अगर किसी कारण से, किसी स्त्री के लिए सन्तान न होने पाए तो वह इतना दुःख हो जाता है कि वह बिल्कुल निराश, उदास, depression में जाने लग जाती है। **यह जरूरी है? किसके लिए? समाज में रहना है तो समाज की व्यवस्था के अनुसार चलना भी जरूरी है। जो कुछ भी हम कर रहे हैं सुख की प्राप्ति के लिए, वह किसके लिए? विवाह किया किसके लिए? अब सोचो, विचार करो। अगर तुम्हारा विवाह नहीं हो रहा हो, समाज में रह रहे हो तो आपको कितने लोग कितनी नजरों से देखने लग जाएंगे।** भाई! लड़का 25 साल का हो गया, 28 साल का हो रहा है धीरे-धीरे 30 साल का हो गया अभी तक इसका तो विवाह करना पड़ेगा। किसके लिए, बोलो तो? अब विवाह हो गया, बच्चा नहीं हो रहा है। बच्चा करना पड़ेगा, किसके लिए? बता ही नहीं रहे। आप लोग हँस रहे हो। हम जी तो रहे हैं, निरन्तर जी रहे हैं। किसके लिए? यह समझ नहीं आता, किसके लिए? जो व्यवस्था है उसके लिए? जो system है उसके लिए बस! यही समझ में आता है और system से अगर कुछ भी अलग होता है, तो बस वही हमारे लिए दुःख का कारण बन जाता है।

राजा श्रेणिक का कथानक: नन्दश्री का दोहला



राजा श्रेणिक, नन्दश्री के साथ में कुछ दिनों तक जब सुख से रहे तो उनके लिए भी ऐसे चिन्ह दिखाई देने लगे। **नन्दश्री के गर्भ में एक सन्तान के चिन्ह दिखाई देने लग गए।** अब जब सन्तान होती है, तो पहले या यूँ कहे अभी भी, कहीं न कहीं लोगों के लिए ऐसा होता है। जो सन्तान पुण्यवान होती है, अधिक पुण्यवान होती है या अधिक पापवान भी होती है, तो भी उस माँ को कोई न कोई स्वप्न, कोई न कोई दोहला, कुछ न कुछ दिखाई देता है। नन्दश्री के लिए एक स्वप्न दिखाई दिया। स्वप्न आया और वह स्वप्न था...सात दिन तक राज्य में अभय रहना चाहिए, अभय दान होना चाहिए, सात दिन तक। अब राज्य में अभय कैसे हो जाए? वह तो राजा के बस का काम है, हम तो एक सामान्य से सेठ हैं और जिनके लिए हम यह सोच रहे हैं कि यह पुत्र किसका है? वह श्रेणिक का है, अब यह श्रेणिक भी सात दिन तक कैसे अभय प्रदान करा पाएँगे राज्य में? गर्भवती महिला के लिए, अगर कोई चिन्ता लग जाए तो बहुत बड़ी चिन्ता समझना और उसकी अगर चिन्ता दूर नहीं होगी तो बच्चा कभी भी स्वस्थ नहीं होगा, वह कभी स्वस्थ नहीं होगी। यह दोहला एक ऐसी चीज होती है उसकी पूर्ति करनी पड़ती है। अब उसके लिए जब चिन्ता लगने लग गई, उसके चेहरे पर चिन्ता दिखाई देने लग गई तो राजा ने उससे पूछ लिया...आखिर किस चिन्ता में तू यूँ घुली जा रही है? किस चिन्ता में तेरा चेहरा पीला पड़ता चला जा रहा है? क्या हो गया? एक दिन उसे कहना ही पड़ा...मैं इसलिए नहीं कह रही

थी, कहीं वह चिन्ता आपको न लग जाए। नहीं समझ आ रहा है! **समझदार स्त्रियों की एक यह भी चिन्ता होती है कि अपनी चिन्ता अपने पति को तब बताएँ जब वह पति उसको solve कर ले। नहीं तो पता पड़े कि वह पति के लिए चिन्ता बन गई।** जब पति ने उससे बार-बार पूछा तो उसने अपनी चिन्ता बताई कि मैंने एक स्वप्न देखा है और उसी के कारण से मुझे यह चिन्ता पड़ी है और यह जब तक दूर नहीं होगी, मुझे भीतर से प्रसन्नता नहीं आ रही है और वह चिन्ता क्या है? सात दिन का राज्य में अभय होना चाहिए।

नन्दश्री की चिन्ता का समाधान

अब श्रेणिक भी चिन्ता में पड़ गए, कैसे करें? और चिन्ता में घूमते-घूमते थोड़ा-सा वह अपने घर से, महल से बाहर निकल कर के, राज्य में जहाँ कहीं एकान्त स्थान होते हैं वन की ओर थोड़ा-सा चले गए वह। कहाँ चले गए? थोड़ा जंगल की तरफ, वन की तरफ। आदमी जब अपना थोड़ी-सी किसी परेशानी में होता है, तो एकान्त स्थान पर चला जाता है। चले गए वह और वहाँ वन में बैठे थे, विचार कर रहे थे। **उसी समय पर अचानक से एक घटना दिखी। एक हाथी, जो अपना आपा खो चुका है,** एक तरीके से पागल-सा हो रहा है और वह हाथी पूरे नगर में उजाड़ मचा कर के इधर-उधर घूमते हुए उस स्थान पर आ रहा है। अब श्रेणिक ने देखा तो उस हाथी को बस में करने के लिए, उन्होंने अपनी बहादुरी से, अपने तरीकों से, उस हाथी को बस में करने के लिए अपना मन बना लिया और उस हाथी को थोड़ी देर में उससे थोड़ा लड़कर के, उससे थोड़ा-सा भिड़ कर के, उन्होंने उस हाथी को बस में कर लिया और जब हाथी बस में हो गया तो यह चर्चा पूरे नगर में फैल गई और यह चर्चा राजा के पास पहुँच गई। राजा ने इस चर्चा को सुनकर के कि भाई! एक आदमी ऐसा कौन-सा बलवान, शूरवीर आ गया, जिसने इतने बड़े पागल हाथी को बस में कर लिया, उस व्यक्ति को मेरे पास लाया जाए, वह हमारे राज्य के लिए बहुमूल्य व्यक्ति है। उसको लाया गया और लाने के बाद में राजा ने उसका हुलिया देखा तो लगा यह तो किसी राजकुमार से कम नहीं है। पूछा कि ऐसा शौर्य, ऐसा वीर्य, आपके पास कहाँ से आया? उसने अपना परिचय दिया और उसके परिचय से प्रसन्न होकर के राजा ने उससे कहा...बताओ? तुम्हें क्या चाहिए? आज हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। **तुमने आज राज्य में एक बहुत बड़े उपद्रव से इस राज्य की रक्षा कर ली।** आज बताओ, तुम्हारे लिए क्या चाहिए? और वह माँगने के लिए तत्पर हुआ तो कुछ माँग नहीं पाया क्योंकि बड़े लोगों का, जो अपने आप में अच्छे राजकुलीन पुरुष होते हैं, उन्हें कभी किसी दूसरे राजाओं से कुछ छोटी-मोटी याचना करना कभी अच्छा नहीं लगता। उसी समय पर, उनका वह इन्द्रदत्त सेठ, जो कौन हो गया उनका? श्रेणिक का ससुर, यह तो सब जानते हो। वह भी उनके पास में आ गया और जब उन्होंने देखा कि ऐसी राजा और श्रेणिक के बीच में वार्ता चल रही है और यह कुछ माँग नहीं पा रहे हैं तो इन्द्रदत्त ने उनके मन का भाव समझ करके, उसे भी पता था कि इस श्रेणिक के लिए क्या इसके मन में चल रहा है और नन्दश्री को क्या चाहिए?

अभय कुमार का जन्म

इन्द्रदत्त को भी पता था तो इन्द्रदत्त ने उस समय पर उस राजा से कहा...राजन्! यह तो कुछ आपसे माँगेंगे नहीं। लेकिन हम आपसे एक छोटी-सी बात कहते हैं और वह बात अगर प्रदान कर दी जाए तो वह हमारी बेटी के लिए भी बहुत सुख की बात होगी और हमारे दामाद के लिए बहुत सुख की बात होगी और वह बात

इतनी-सी है, इस राज्य में आप घोषणा करा दें कि सात दिन तक यहाँ इस राज्य में कोई किसी की हिंसा नहीं करेगा। **इस सात दिन तक राज्य में हमेशा अभय का वातावरण रहेगा। कोई किसी के लिए मारेगा नहीं, कोई किसी की हिंसा नहीं करेगा। राजा ने कहा...यह तो बहुत छोटी बात है,** अच्छी ही बात है। इससे हमारा क्या बिगड़ने वाला है? और राजा ने वह घोषणा करा दी और उस घोषणा के उपरान्त जब वह नन्दश्री को पता पड़ा कि सात दिन का यह जो मेरे स्वप्न में मैंने देखा था, यह मेरा कार्य पूरा हो रहा है, तो वह नन्दश्री बहुत प्रसन्न हो गई और प्रसन्नता के साथ में उसकी प्रसूति हुई और प्रसूति होने के बाद में जब एक पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई तो उस पुत्र का नाम रखा गया। किसके कारण से वह पुत्र हुआ था? क्या दोहला आया था? क्या सपना आया था? अभय हो, अभय हो, चारों तरफ अभय हो इसलिए उस पुत्र का नाम रखा गया...अभय कुमार।

राजा उपश्रेणिक का देहावसान

पुत्र हो गया और धीरे-धीरे वह पुत्र भी बड़ा हो गया। सब स्मरण में है जो पहले बताया था। आपने अभी नाम तो लिया ही नहीं। बहुत दिन हो गए, वह राजा उपश्रेणिक का क्या हुआ महाराज? यह तो राजा श्रेणिक की आप सब कहानी बता रहे हैं। राजा उपश्रेणिक भी इतने दिनों में बहुत बूढ़े हो गए, वृद्ध हो गए और इतने दिनों में वृद्ध होने के बाद में मरण से पहले जब उन्होंने देखा कि हमारे आसपास कोई योग्य पुत्र नहीं है और हमने जिसको अपना वचन दिया था, उसी को हमें, पुत्र को, राजा बनाना है, तो उन्होंने चिलाती को राजा बना कर के और उस राज्य में कुछ दिन रहकर के, उनका मरण हो गया और चिलाती वहाँ का राजा बन गया। लेकिन वह एक दुष्ट पुरुष की तरह, दुष्ट राजा था। प्रजा को परेशान करने वाला, आतताइयों के लिए सहयोग करने वाला, ऐसा वह एक दुष्ट राजा बना और दुष्ट राजा बनने के बाद में जब उसके आतंक की खबर चारों ओर पहुँचने लगी। राज्य के जो मंत्री थे, उनको भी परेशानियाँ होने लगी तो फिर मंत्रियों ने अपने मन में विचार किया...राजा श्रेणिक कहीं न कहीं हैं जरूर। गुप्तचरों से उनका पता कराया गया और जब वह पता मिल गया तो मंत्रियों ने उनके पास में एक पत्र भेजा और उस पत्र में राज्य की सारी खबर लिख दी कि आपके पिताश्री का मरण हो चुका है, **राजा चिलाती यहाँ का राजा बन चुका है। अब आपको यहाँ पर आकर के इस राज्य, इस राज्य को सम्भालना है।** यह सब खबर वहाँ पर पहुँच गई और राजा श्रेणिक के लिए जब यह खबर मिली तो उनका मन भी थोड़ा-सा व्याकुल होने लगा। मुझे अब अपने राज्य में चलना चाहिए। उन्होंने इन्द्रदत्त से कहा, नन्दश्री से कहा...थोड़े दिनों के लिए यहीं पर रुको और अब तो अभय कुमार भी बहुत बड़ा हो चुका था। उसको भी कहा, अभी पहले मैं अपने राज्य के लिए, अपने राज्यघर में जा रहा हूँ। जब मैं वहाँ पहुँच जाऊँगा तो मैं आपको आदर सहित, सबको बुलाऊँगा। मुझे अभी जाने की आज्ञा दी जाए और वह आज्ञा इन्द्रदत्त ने बड़ी सोच समझकर के, बड़े मनोभावों पर control करके, राजा के लिए आज्ञा दी और आज्ञा देने के साथ में पाँच हजार उसके साथ में सैनिक भेजे, योद्धा भेजे उनके साथ में कि एक राजा की तरह आप अपने राज्य में, मगध में प्रवेश करना।

चिलाती का पलायन और राजा श्रेणिक का राज्याभिषेक

वह प्रवेश करते हैं और प्रवेश करने के बाद, उस राज्य में जैसे ही पता पड़ता है चिलाती को कि यहाँ पर पाँच

हज़ार राजाओं के युद्धाओं के साथ में श्रेणिक आ रहे हैं तो उसका तो क्या होता है? सारे लोग श्रेणिक को चाहते हैं, श्रेणिक मिल गया है वह यहाँ वापस आ रहा है, तो उसे लगने लगा, अब तो राजा यही बनेगा और ऐसा सोच कर के वह चिलाती जहाँ से आया था वह, अपनी माँ के पिता के पास में, अपने नाना के पास में, वहाँ पर, उसी जंगल में पहुँच गया, उन्हीं भीलों के समुदाय में पहुँच गया और वहीं पर छुप कर के रहने लगा और इधर धीरे-धीरे करके, इस राज्य का, मगध का सम्राट राजा श्रेणिक घोषित कर दिया जाता है। **राजा श्रेणिक का राजसिंहासन पर आरोहण करके बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है। आज भगवान महावीर स्वामी की सभा का मुख्य श्रोता श्रेणिक, प्रथम श्रावक श्रेणिक, राजा बनकर के भगवान महावीर स्वामी की सभा में आने के लिए अब तैयारी करता है।** राजा श्रेणिक वह व्यक्ति है, जो भगवान वर्धमान महावीर स्वामी की समवशरण सभा का सबसे प्रमुख श्रावक है, प्रमुख श्रोता है। यह कथा कब से चल रही है? वीर शासन जयन्ती से चल रही है। अब श्रेणिक राजा बन चुके हैं और आज हमने श्रेणिक को राजा बना दिया है। आने वाले दिनों में, आपसे इतना कहना चाहूँगा, अगर आपको भगवान महावीर स्वामी की, इस वीरशासन जयन्ती से चली आ रही देशना में शामिल होना है तो यहाँ पर एक श्रावक, एक परिवार का, हर एक घर का एक व्यक्ति, यहाँ पर जरूर राजा श्रेणिक बनकर के, भगवान महावीर स्वामी की सभा में आकर के उपस्थित हो। यह राजा श्रेणिक की तैयारियाँ, परसों से, कल तो sunday है। परसों से जब सभा लगे तो यह राजा श्रेणिक की एक तैयारी आपके लिए, प्रतिदिन, हर घर के व्यक्ति के लिए होनी चाहिए और यह हर घर में होड़ लगनी चाहिए कि आज राजा श्रेणिक बनकर के, हम भगवान महावीर स्वामी की सभा में जाएँगे और यह भगवान महावीर स्वामी की सभा तब तक चलेगी, जब तक कि भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण नहीं हो जाता। यह भी आपके लिए ध्यान में रखना है। मेरा भाव समझ में आ रहा है सबको। राजा श्रेणिक की एक अच्छी व्यवस्था, आप सब लोगों को करना है ताकि आने वाले दिनों में, राजा श्रेणिक के माध्यम से भी कुछ प्रश्न किए जाएँ और उन प्रश्नों का समाधान भी इस सभा को सुनने को मिले।

18. सिद्ध भगवन्तों के अतिशय की महिमा

पृच्छना स्वाध्याय – एक संस्कार



SCAN TO WATCH

आज राजा श्रेणिक के द्वारा प्रश्न पूछा गया है। **सिद्ध भगवन्तों का स्वभाव कैसा होता है?** उनके बारे में हम जानना चाहते हैं। पहला प्रश्न सिद्ध भगवन्तों के बारे में आता है। जो सिद्ध पुरुष हैं उनके बारे में जानकारी रखना, जो सिद्ध पुरुष हैं उनके प्रति अपना अनुराग रखना, यह आगामी काल में सिद्ध बनने के लक्षण माने जाते हैं। **यह संस्कार होते हैं कि हम अगर अपने मुख से कोई भी शब्द निकालते हैं तो उसका संस्कार हमारे हृदय में पहुँचता है और हृदय में पहुँचा हुआ वह वचन हमारा ही हमारे भीतर एक संस्कार उत्पन्न करता है।** इसलिए जब भी कोई किसी भी तरह का निवेदन किया जाता है, जब भी कोई किसी भी तरह का मुख से वचन निकालता है तो उसका संस्कार उसके हृदय तक पहुँचता है और यह संस्कार पहुँचाने की प्रक्रिया का नाम ही है- पृच्छना नाम का एक स्वाध्याय होता है।

गुप्ति सुरक्षा का एक उपाय

आचार्य कहते हैं...मुनि महाराज हमेशा गुप्ति में रहते हैं, आचार्य परमेष्ठी हमेशा गुप्ति में रहते हैं। **गुप्ति का मतलब जानते हो? आप गुप्ति का अर्थ क्या समझते हैं?** जो अपने पास में कोई हथियार रख लेते हैं उसको गुप्ति कहा जाता था। जो अपनी सुरक्षा का item होता है, उसे गुप्ति कहते हैं, जो चाकू type का होता है। लेकिन यह गुप्ति जो मुनि महाराज के पास होती है, साधु परमेष्ठी के पास में होती है, आचार्य परमेष्ठी के पास होती है, उपाध्याय परमेष्ठी के पास होती है, यह गुप्ति भी उनकी आत्मा की सुरक्षा करने के लिए होती है।

मन, वचन व काय गुप्ति के द्वारा आत्मा की सुरक्षा

आपको यह पता होना चाहिए कि मुनि महाराज अपनी सुरक्षा करने के लिए तीन-तीन गुप्तियाँ अपने पास में रखते हैं। जिसे **मन:गुप्ति, वचन गुप्ति और काय गुप्ति** कहते हैं। जब यह गुप्ति मुनि महाराज के पास बनी रहती हैं तो इस गुप्ति को तुड़वाने का साहस एक बहुत बड़ा साहस होता है। **गुप्ति मुनि महाराज का धर्म है और गुप्ति का मतलब है- मन को रोक कर रखना, वचनों को रोक कर रखना, अपनी काय की चेष्टाओं को रोक कर रखना।** रोकने से ही आत्मा की सुरक्षा है। मन से आत्मा की सुरक्षा करना है तो मन से कुछ मत सोचो। वचनों से आत्मा की सुरक्षा करना है तो वचनों से कुछ मत बोलो और काय से अपनी आत्मा की रक्षा करना है तो काय से ज्यादा चेष्टाएँ मत करो। इसका नाम क्या है? इसका नाम गुप्ति कहलाता है।

निवेदन करने पर ही जिनेन्द्र भगवान वचन गुप्ति को छोड़कर भाषा समिति में आते हैं

इस गुप्ति को भी तोड़ना पड़ता है कभी-कभी, इस गुप्ति को छोड़ कर भी बाहर आना पड़ता है कभी-कभी। क्यों आया जाता है? कैसे आया जाता है? जब वक्ता बोलने की इच्छा न भी करता हो और श्रोता अगर कोई प्रश्न कर देता है और वक्ता उस समय पर श्रोता को देख रहा होता है और यह जान रहा होता है कि इसे भी कुछ सुनने की इच्छा है तो करुणा करके वह अपनी वचन गुप्ति को तोड़कर बोलना प्रारंभ कर देता है। **यह अपने आप में एक बहुत बड़ी प्रक्रिया होती है। मुनि महाराज से कुछ भी बुलवाना, साधु परमेष्ठी की चुप्पी तुड़वाना**, उनसे निवेदन करके उनकी वचन गुप्ति को छोड़ कर उन्हें भाषा समिति में लाना। किससे सम्भव है? यह ताकत किस में है? यह ताकत हर किसी में नहीं होती।

निवेदन करने पर बोलने में ही मुनि महाराज की सुरक्षा

भगवान जिनेन्द्र देव समवशरण सभा में विराजमान होते हैं और उन्हें अपनी इच्छा नहीं होते हुए भी उन्हें समय पर बोलना होता है तो वह समय पर बोल देते हैं लेकिन समय पर बोलने से पहले भी उनसे निवेदन किया जाता है- बोलने के लिए। बड़ी-बड़ी स्तुति की जाती है, उनसे निवेदन किया जाता है तब जाकर वह बोलना प्रारंभ करते हैं। **भगवान के मुख से कुछ बुलवाने के लिए भी निवेदन करना पड़ता है। मुनि महाराज के मुख से भी कुछ बुलवाने के लिए निवेदन करना पड़ता है। निवेदन नहीं करेंगे तो अपने आप नहीं बोलेंगे।** यह कहा गया है- जब पूछें तो बताना, जब निवेदन करें तो बोलना, इसी में मुनि महाराज की सुरक्षा है और जब महाराज के लिए इस तरह से कोई निवेदन करके उनकी गुप्ति तुड़वा देता है तो समझो वह आदमी भी कितना पुण्यवान होगा, जो नहीं बोलना चाहते हैं उनको भी बुलवा देता है।

परमेष्ठी भगवन्तों से समाधान पाना अतिशयकारी पुण्य का फल

ऐसा पुण्य होता है...जो भगवान के समवशरण में चक्रवर्ती होते हैं, श्रोता प्रमुख होते हैं, श्रेष्ठी प्रमुख होते हैं, श्रावक शिरोमणी होते हैं, यह पुण्य सिर्फ उन्हीं के पास होता है और इसका भी एक बहुत बड़ा पुण्य का लाभ उन्हें प्राप्त होता है कि उनके कारण से पूरी सभा को सुनने को मिलता है। **भगवान के समवशरण में दर्शन करना यह तो आपके पुण्य से हो सकता है लेकिन दर्शन करने के बाद में भगवान से निवेदन करना यह अपने आप में और अतिशयकारी पुण्य के माध्यम से होता है।** हर कोई नहीं निवेदन कर सकता भगवान के समवशरण में, हर कोई भगवान से direct नहीं बोल सकता है। वह बोलने की योग्यता भी एक आती है तो वह एक अतिशय पुण्य के कारण से आती है और वह अतिशय पुण्य भी कहाँ से आता है? हर चीज अपने स्वभाव से आती है।

सिद्ध आत्माओं के अतिशयवत सुख की महिमा

सिद्धों की महिमा का वर्णन चल रहा है, छंद यहाँ पर पढ़ा जा रहा था और आपके सामने यह भी बताया था कि भगवान सिद्धों की आराधना करते हुए जो सिद्ध आत्माएँ होती हैं, वह अपने सुख में रहती हैं। उनका

सुख कैसा होता है? एक विशेषण आपको बताया था...‘आत्मोपादान सिद्धम्’ दूसरा विशेषण आज समझाया जा रहा है...‘स्वयं अतिशयवत्’ यह उनके सुख का दूसरा विशेषण है। ‘आत्मोपादान सिद्धम्’ स्वयं अतिशयवत् अर्थात् स्वयं ही वह अतिशय वाले होते हैं। जो भी चीज हमारे अन्दर स्वभाव से होगी और जो भी चीज हमारे अन्दर अनन्त मात्रा में होगी, वह सब हमारे अन्दर एक अतिशय रूप से कहलाएगी।

अतिशय शब्द का अर्थ तथा उसकी व्याप्ति

अतिशय शब्द आप लोगों ने सुना है? किसको बोलते हैं अतिशय? बोलिए, आप अतिशय किसको समझते हैं? भाई! यह अतिशय क्षेत्र है ऐसे भी सुना है, यह अतिशयकारी भगवान हैं, यह भी सुना है। अतिशय का मतलब क्या हुआ आपके दिमाग में? **अतिशय मतलब कुछ आकस्मिक घटित हो जाए, कुछ चमत्कार हो जाए। आपकी भाषा में बोले तो चमत्कार हो जाए।** अतिशय का मतलब आप क्या लेकर चलते हैं? चमत्कार और चमत्कार का मतलब क्या होता है? अचानक से कुछ घटित हो जाए। उसको आप चमत्कार समझते हैं। अतिशय का मतलब क्या होता है? **अब इसकी दूसरी परिभाषा समझिए। आचार्य कहते हैं...भगवान का जो सुख है वह भी अतिशयवत् है, अतिशय वाला है और जो अतिशय होता है वह किसी दूसरे से नहीं होता है वह स्वयं से होता है, स्वयं में होता है, स्वयं अतिशयवत्।** जब अतिशयकारी कोई चीज होती है तो अतिशय का मतलब होता है, यह शब्द बनता है- ‘अतिशेते’ इस क्रिया से यानि इसके आगे कुछ नहीं हो सकता, इसको कोई तिरस्कृत नहीं कर सकता, इससे बड़ा कुछ नहीं हो सकता। उस वस्तु का, उस चीज का नाम अतिशय के साथ में जोड़ा जाता है। जिससे बढ़कर कुछ और दूसरा न हो। **चमत्कार के अर्थ में नहीं है, अतिशय शब्द।** अतिशय शब्द अपने आप में अलग है।

भगवान के अतिशयों का वर्णन

भगवान के अतिशय होते हैं। जन्म के अतिशय होते हैं। कितने? दस। केवल ज्ञान होता है तो फिर अतिशय होते हैं, कितने? दस। **तिलोयपण्णत्ति** जिन्होंने पढ़ लिया तो वे कहेंगे ग्यारह और देवकृत अतिशय होते हैं, कितने? चौदह और तिलोयपण्णत्ति पढ़ ली है तो तेरह। यह अतिशय है। **यह भगवान के जो अतिशय होते हैं, अतिशय होने का मतलब भगवान कोई चमत्कार कर रहे हैं? भगवान चमत्कार नहीं कर रहे हैं। भगवान के माध्यम से जो चीजें हमें दिखाई दे रही हैं, जो चीजें हमें उनके प्रभाव से समझ में आ रही हैं वे चीजें दुनिया में वैसी और किसी के पास में नहीं हो सकती।** उसका नाम क्या है? अतिशय। जहाँ भगवान विराजमान हो जाते हैं, वहाँ एक समवशरण सभा लग जाती है। यह समवशरण सभा का लगना, बारह गढ़ों का लगना और सारे के सारे लोग हाथ जोड़ कर बैठना, यह भी भगवान के समवशरण का, भगवान के केवलज्ञान का एक अतिशय है। किसका अतिशय है यह? केवल ज्ञान का अतिशय है, बारह सभाएँ लगेंगी। ग्यारह नहीं रहेंगी, दस भी नहीं रहेंगी, कितनी होनी चाहिए total? बारह और सब सभा में सभी लोग व्यवस्थित बैठने चाहिए। सब सभा के बीच में भगवान तीन पीठिकाओं के ऊपर, गन्धकुटी के ऊपर, सिंहासन के ऊपर अधर में विराजमान होंगे और वहाँ पर भी आठों प्रातिहार्यों से वे सुशोभित होंगे। यह सब जो अतिशय देखने को मिलेगा दुनिया में किसी भी भगवान के पास में ऐसा अतिशय देखने को नहीं मिलेगा क्योंकि जो उनके पास हो सकता है, वह किसी के पास में नहीं हो सकता। इसको कहते हैं-

अतिशय।

समवशरण सभा में बैठना भी एक अतिशय

अतिशय का मतलब होता है...जो इतना अधिक हो कि कोई दूसरा उसकी नकल भी न कर सके और कोई दूसरा उसकी बराबरी भी न कर सके। **जो सबसे बढ़कर हो उसका नाम कहलाता है- अतिशय।** यह अतिशय भगवान की सभा में होता है। कभी आपने शायद न भी पढ़ा हो लेकिन यह भी ध्यान में रखना कि केवलज्ञान का भी यह अतिशय है कि **भगवान की जो समवशरण सभा लगती है, उस समवशरण सभा में सभी लोग हाथ जोड़ कर अँजुली बना कर बैठे रहते हैं, यह भी एक अतिशय कहलाता है।** इतना alert होकर बैठते हैं कि अगर आपने हाथ जोड़ लिए हैं, अपनी अँजुली बना ली है तो आपकी कमर भी सीधी बनी रहेगी। जैसे ही आपने हाथ नीचे रख लिए, धीरे-धीरे कमर नीची हुई, फिर गर्दन नीची हुई और धीरे-धीरे आपकी position बिगड़ गई, alertness खत्म हो गई। **इसलिए सभा में बैठने का भी एक अतिशय होता है** और जितने भी सभासद होते हैं, सभा में बैठे हुए लोग होते हैं सब भगवान की सभा में बिल्कुल alert होकर बैठते हैं, सावधान रहते हैं, प्रमाद से बचे रहते हैं और भगवान की तरफ टकटकी लगाकर दृष्टि रखते हैं और भगवान अपने अतिशय को कभी भी यह नहीं कह पाते कि यह अतिशय है, लोग बस समझते हैं। यह सब कुछ क्या है? बड़ा अद्भुत है। यह जो अद्भुतपना आता है, इसी का नाम अतिशय कहलाता है।

अतिशय और चमत्कार में भेद

अब यह कोई चमत्कार नहीं है। चमत्कार जो होता है, वह क्षणिक होता है, कभी-कभी होता है, किसी-किसी के साथ होता है। आप कहते हो, हमारे भगवान शान्तिनाथ भगवान कैसे हैं? बताओ क्या बोलना है उनको? चमत्कारी बोलना है कि अतिशयकारी बोलना है? **शान्तिनाथ भगवान अतिशयकारी हैं।** अतिशयकारी कह रहे हो तो वह **अतिशय हमेशा रहेगा और चमत्कारी कह दोगे तो चमत्कार फिर कभी-कभी होगा,** किसी-किसी के लिए होगा। भगवान चमत्कारी नहीं होते हैं इसलिए जो भी दिगम्बरत्व के साथ रहने वाले वीतराग भगवान होते हैं, उनके साथ में चमत्कार नहीं जोड़े जाते हैं।

चमत्कृत होने का मतलब एकदम से आँखें चकमका जाना

वह चमत्कार अगर जुड़ गया तो फिर वह भगवान भी कभी-कभी भगवान होंगे क्योंकि जब भगवान होंगे तब चमत्कार दिखाएँगे। जब चमत्कार नहीं हो रहा है तो फिर वे भगवान नहीं रहे, चमत्कृत हो गए। चमत्कृत होने का मतलब क्या हो गया? जैसे मान लो आप कभी कहीं गए और एकदम से आपकी आँखें चकमका गईं। **जैसे दुर्योधन एक बार द्रौपदी के महल में गए और द्रौपदी के महल में जाने के बाद में उन्होंने क्या देखा?** जहाँ सूखा था वहाँ पर तो ऐसे चल रहे थे जैसे पानी पड़ा हो। वह महल ऐसे बनाया हुआ था, उसकी flooring इस तरीके की थी और जहाँ पर पानी पड़ा था वहाँ पर ऐसे चलने लगे जैसे सूखा हो, सो फिसल गए। द्रौपदी ऊपर महल पर खड़ी-खड़ी हँसने लग गई और उसने comment कर दिया। यह क्या हो गया? **यह चमत्कृत कहलाता है।** एकदम से हम चमत्कृत हो कर रह गए जैसे मान लो कोई बिजली सामने

आई और एकदम से गिरकर चली गई। हम पकड़ नहीं पाए, देख नहीं पाए और कुछ हो गया। उसका नाम क्या होता है? चमत्कृत हो जाना। यह चमत् जो शब्द होता है, बिजली से ही बनता है। जैसे बिजली होती है, एकदम से गिरती है और कहाँ गिर गई कोई पता नहीं पड़ेगा और जहाँ गिर गई वहाँ पर लोग तहस-नहस हो गए। जो नुकसान होना है वह हो जाएगा।

अतिशय की अपेक्षा चमत्कार की क्षणिकता

इसी तरह से अगर आप अपने भगवान को चमत्कारों के साथ जोड़ेंगे तो वह भगवान हमेशा भगवान नहीं कहलाएँगे और भगवान के अन्दर अगर चमत्कार की दृष्टि से आप भगवान के पास पहुँचोगे तो आपके साथ में वह चमत्कार कभी हो भी सकता है, कभी नहीं भी हो सकता है। अगर नहीं होगा तो आप कहोगे भगवान तो वैसे ही हैं, चमत्कार करते नहीं हैं, नाम था और हम आए तो हमें कोई चमत्कार दिखाई नहीं दिया। चमत्कार हमेशा नहीं होते हैं। चमत्कार कभी किसी के साथ हो गया, चमत्कार का अनुभव कभी किसी को मिल गया, किसी को दिख गया। ऐसा हो गया था वहाँ पर, हम गए देखने तो हमें कुछ नहीं दिखा। भाई! हमने तो देखा था तुमने देखा तो तुम्हारे लिए चमत्कार हो गया, हमने देखा तो हमारे लिए कुछ नहीं हुआ। इसका नाम क्या है? चमत्कार। चमत्कार एक खेल है, जो कई बार कई कलाकार भी दिखा लेते हैं और वह चमत्कार जो खेल होते हैं, वे हमेशा नहीं होते हैं। वे तभी होंगे जब आप उनकी stage पर उनके सामने बैठें होंगे, वे stage पर चमत्कार कर पाएँगे। **हर जगह नहीं होते वह चमत्कार लेकिन अतिशय सर्वत्र और सर्वथा होने वाली एक घटना है।**

अरिहन्त भगवन्तों के अतिशय की महिमा

जब तक तीर्थंकर केवल ज्ञान के साथ रहेंगे, उनके अतिशय उनके साथ-साथ चलेंगे। यह तीर्थंकर का अतिशय है, चारों ओर से कोई भी उनको कहीं से भी देखे, उन्हें वह पूरे रूप में दिखाई देंगे। **कोई भी श्रावक उन्हें कहीं से भी देखेगा, भगवान का दर्शन उन्हें पूरा होगा। यह क्या है? यह केवलज्ञान का अतिशय है।** आप भगवान को कभी भी देखेंगे, कहीं से भी देखेंगे, हमेशा वे आपको चारों ओर से एक जैसे दिखाई देंगे। जो भगवान के अतिशय होंगे वह भगवान के अतिशय जब तक वे रहेंगे तब तक उनके साथ में चलेंगे। अगर भगवान के आसपास तीन छत्र लगते हैं तो तीन छत्र लगते रहेंगे। वे जहाँ बैठेंगे, बैठने के बाद में जहाँ अतिशय होना उनके लिए समवशरण सभा के रूप में होता है तो सभा के रूप में होगा। चलेंगे तो वह दूसरा अतिशय convert हो जाएगा, वे चलेंगे तो उनके नीचे 225 कमलों की रचना होगी, एक-एक कदम पर वह होगी। यह चलने का अतिशय है, वह बैठने का अतिशय है, इसे कहते हैं- अतिशय। **अतिशय मतलब वह घटना जो हमेशा बनी रहे** और अतिशय किसी दूसरे से नहीं होते हैं, अतिशय स्वयं से होते हैं। यह अतिशय जब तक वह शरीर के साथ रहते हैं तो शरीर संबंधी अतिशय दिखाई देते हैं। भगवान बैठे हैं, भगवान चल रहे हैं, भगवान बोल रहे हैं, उनकी हर चीज में हमें अतिशय हमेशा दिखाई देगा और जब वे भगवान शरीर से रहित हो गए, अरिहन्त से सिद्ध बन गए तो शरीर के जो अतिशय थे, वे तो छूट गए लेकिन जो आत्मा के अतिशय हैं वे बने रहेंगे।

सिद्ध भगवन्तों के अतिशय की महिमा

वह अतिशय क्या है? स्वयं अतिशय वाला सुख उन्हें प्राप्त होता है। **उनका सुख कैसा होता है? स्वयं में अतिशय रूप होता है, चमत्कार रूप नहीं होता।** अतिशय रूप होने के कारण से वह हमेशा उन्हें सुख देने वाला होगा। उनके सुख से बढ़कर के किसी दूसरे का सुख नहीं होगा। किसके सुख से? सिद्धों के सुख से। कोई दूसरे भी सिद्ध बन जाएंगे तो उनका सुख भी उनके लिए अतिशयकारी होगा। उनके सुख से बढ़कर किसी दूसरे का सुख नहीं होगा लेकिन किसी भी सिद्धों का सुख किसी दूसरे सिद्ध सुख से भी अधिक नहीं होता और न किसी सिद्धों का सुख किसी दूसरे सिद्ध से कम होता है, इसलिए वह सिद्ध सुख अतिशय वाला कहलाता है।

जैन दर्शन के अनुसार चमत्कार की क्षणिकता एवं अतिशय की परिपूर्णता

एक अतिशय शब्द है और एक चमत्कृत होना शब्द है। बताओ आपको क्या पसंद आ रहा है? दुकान पर क्या अच्छा लग रहा है? अतिशय। ध्यान रखना, आपने अतिशय कह दिया तो अतिशय सबके लिए होगा और चमत्कार किसी-किसी के लिए होगा। तब आपके मन में आएगा भगवान हमारे लिए चमत्कार कर दो पड़ोसी के लिए मत करना। किसके लिए कर दो? हमारे लिए कर दो। **आदमी को चमत्कार इसलिए पसंद है क्योंकि वह यह जानता है कि हम भगवान के पास जाएंगे, हम भगवान की पूजा करेंगे तो भगवान केवल हमारे लिए ही करेंगे।** यह उसके दिमाग में बैठा हुआ है क्योंकि भगवान की पूजा हम कर रहे हैं तो भगवान हम पर ही प्रसन्न होंगे। इसलिए हर आदमी चाहता है कि हमारे भगवान चमत्कारी हो लेकिन जैन दर्शन के अनुसार अगर आप चलेंगे, अगर आप जैन philosophy को समझेंगे और आचार्यों के भाव और उन्हीं के शब्दों के अनुरूप चलेंगे तो आपको समझ में आएगा कि अगर हम इस तरह के शब्दों का प्रयोग करने लग जाते हैं तो भी हम भगवान की महिमा को कम करने लग जाते हैं।

भगवन्तों के अतिशय को चमत्कार कहना, उनकी महिमा को गौण करना

चमत्कारी बाबा, चमत्कारी भगवान, चमत्कारी पारसनाथ, यह सब चमत्कारी मतलब ये सब आँखों पर बस बिजली की तरह कुछ थोड़ी देर के लिए कुछ दिखाने वाली चीजें हैं, हमेशा रहने वाली चीजें नहीं होती हैं। इसलिए आप देख लो दुनिया में कोई चमत्कार हमेशा नहीं होते हैं लेकिन आदमी को एक बार बस लग जाए धुन, चमत्कार कहाँ पर है? चमत्कारी बाबा कहाँ मिलेंगे? तिजारा जी में मिलेंगे। पद्मप्रभु चमत्कारी बाबा कहाँ मिलेंगे? पद्मपुरी में मिलेंगे। इधर महावीर जी चले जाओ चमत्कारी भगवान कहाँ मिलेंगे? आपने सबको चमत्कारी बना दिया। **चमत्कार एक बार होता है।** मान लो अगर किसी ग्वाले के टीले से भगवान की मूर्ति निकली तो वह चमत्कार एक बार ही हुआ न। अब वह मूर्ति निकल आई अब क्या चमत्कार? वह चमत्कार किसके लिए हुआ? उस ग्वाले के लिए हुआ। एक बार उस ग्वाले के साथ हो गया, वह ग्वाला चमत्कृत हो गया। उसकी आँखों पर जैसे कोई बिजली सी आई और एकदम से उसे लगा कि भाई! कुछ अद्भुत हो गया तो वह उसके लिए हो गया, उसका फल उसको मिल गया। अब तुम्हारे लिए क्या होगा? अब तुम जिंदगी भर कहते रहो चमत्कार-चमत्कार, चमत्कारी-चमत्कारी, तुम्हारे लिए क्या चमत्कार होगा?

जिसके लिए होना था हो गया। चमत्कार एक ही बार होगा, एक ही बार होता है बार-बार नहीं होता चमत्कार लेकिन अतिशय होगा तो हमेशा बना रहेगा।

शब्दावली का ही उपयोग करने की अनिवार्यता

इसलिए कह रहा हूँ बुद्धि को दुरुस्त बना करके जो जैन धर्म की परिभाषाएँ हैं, जो शब्दावलियाँ हैं, उन्हें अपने लौकिक लोगों के साथ मिलने पर भी उनमें परिवर्तन नहीं करना चाहिए। अगर आप public को, जनता को हमेशा भगवान से जोड़े रखना चाहते हैं तो उसका यही तरीका है, आप उन्हें भगवान के अतिशयों के बारे में बताइए। सभी भगवान अतिशय संपन्न होते हैं। हमारी श्रद्धा से कोई-कोई हमें ज्यादा अतिशय संपन्न दिखाई दे सकते हैं लेकिन हम उनके सामने अतिशय की ही बात करें। **अतिशय शब्द से ही उनकी शोभा है, चमत्कृत शब्द से उनकी शोभा नहीं है।** भगवान महावीर स्वामी हो, चाहे पद्मप्रभु भगवान हो, सभी अतिशयों से सहित थे और अतिशय एक दो नहीं, कितने? बोलो! **कितने अतिशय होते हैं तीर्थकरों के? चौतीस अतिशय होते हैं (thirty-four)।** चमत्कार तो एक ही होगा लेकिन अतिशय कितने हो गए? चौतीस हो गए और वह चौतीस अतिशय हमेशा रहते हैं जब तक वे अरिहन्त दशा में रहते हैं। इसलिए अतिशयकारी भगवान, जैनों के भगवान अतिशयकारी होते हैं। अगर जैन इस अतिशय शब्द को छोड़कर के चमत्कारों में पड़ जाएँगे तो जैनत्व से दूर हो जाएँगे।

चमत्कार की अपेक्षा रखना, भगवन्तों के वास्तविक स्वरूप से दूर जाना

क्या वहहिये आपको? अब हमारे सामने कह रहे हो अतिशय चाहिए लेकिन मन क्या कहता है? कुछ चमत्कार हो जाए महाराज। ऐसा स्तोत्र बता दो, ऐसी मूर्ति के दर्शन बता दो, ऐसा कोई मंत्र बता दो जहाँ पहुँचने के बाद में बस हम नौ बार पढ़ें और जैसे रावण ने विद्या सिद्ध कर ली बस! वैसे ही हमारी विद्या एकदम से नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ने से ही या आपके द्वारा दिए गए मंत्र पढ़ने से ही बस! सामने आकर के हमसे कोई देवी कहने लग जाए, बोल पुत्र क्या चाहिए? इस भावना के साथ बैठे रहते हैं लोग। यह क्या है? यह चमत्कार की इच्छा है। **भगवान से कभी भी चमत्कारों की इच्छा नहीं करनी चाहिए।** भगवान के पास में जो सुख है, अगर उस सुख की आप quality समझना चाहते हो और सिद्धों के सुखों की ओर आकृष्ट होकर के उन सिद्धों के समान बनने की इच्छा करना चाहते हो और आपके अन्दर अगर सिद्धों का वास्तविक स्वरूप आएगा तो चमत्कारों से कभी नहीं आएगा।

सिद्ध सुख- अतिशय सुख

सिद्ध भगवान भी अतिशयकारी हैं और सिद्ध भगवन्तों में भी वह अतिशय स्वयं से उत्पन्न हुआ है और हमेशा बना रहने वाला है। उनका सुख अतिशय सुख है। कौन सा सुख है? अतिशय सुख। अब आपसे कोई पूछे...**अतिशय सुख का मतलब? जिससे बढ़कर के कुछ दूसरा न हो, बस! उसका नाम क्या है?** अतिशय।

चमत्कारों में होड़

चमत्कारों में तो तुलना होने लग जाती है। एक चमत्कार कहीं हो गया, उससे बढ़कर कहीं दूसरा चमत्कार दिखाई देने लग गया, उससे बढ़कर कहीं तीसरा चमत्कार दिखाई देने लग गया, **चमत्कारों में होड़ लग जाती है। क्या होड़ लगी?** हमने देखा कि हमारे भगवान के ऊपर एक पानी की धारा गिर रही थी। अच्छा! पानी की एक line की धारा गिर रही थी, चल मैं इससे बड़ा चमत्कार दिखाता हूँ तो क्या करा? उसने भगवान के ऊपर तीन-तीन धाराएँ दिखा दी। तुम्हारे भगवान के ऊपर एक धारा गिर रही थी एक रंग की, यहाँ देखो तीन-तीन रंग की गिर रही हैं। फिर चमत्कार आगे बढ़ा और देखो चमत्कार यह पाँच-पाँच रंग की धाराएँ गिर रही हैं। चमत्कारों का कोई अन्त नहीं है।

चमत्कृत- तात्कालिक उनकी बुद्धि बिजली गिरा देना

चमत्कृत किया जाता है जब लोगों को तो उन्हें तात्कालिक उनकी बुद्धि पर एक तरह से बिजली गिरा दी जाती है बस। जो उसमें मर गए, सो मर गए और मरने वालों से ही कई लोगों का काम बन जाता है। बहुत दूर-दूर से भी लोग बैठे हैं यहाँ पर। **सब चमत्कारों की इच्छा से ही दूर-दूर से आते हैं**, घूमते हैं। कहाँ से लोग आए हैं? बहुत सारे लोग बैठे हैं, सिरसागंज से आए हैं। यह सिरसागंज कहाँ है? पूछो इनसे सिरसा-गंज कहाँ है? वहाँ पर भी कुछ चमत्कार है कि नहीं आसपास? क्या है? तीन-तीन जिनालय हैं। अब चार हो गए क्या? एक आध बढ़ गया है। तीन-तीन जिनालय थे, खूब बड़े-बड़े भगवान, खूब अच्छे-अच्छे दर्शन, नेमिनाथ भगवान के, चंदप्रभु भगवान के, श्रेयांसनाथ भगवान के और भगवान के दर्शन करने से ही ऐसा लगने लग जाता है कि वास्तव में भगवान के अन्दर हमेशा अतिशय बना रहता है और अतिशयकारी भगवान हमेशा दिखाई देते हैं। लेकिन आदमी क्या इच्छा करने लग जाता है? **जब चमत्कारों की इच्छा करने लग जाता है, तो फिर वह इधर-उधर घूमने लग जाता है और जब उसे अतिशय दिखाई देता है तो अतिशय उसे हमेशा दिखाई देगा, वह जब भी भगवान को याद करेगा उन्हें अतिशयकारी भगवान ही दिखाई देंगे।**

अतिशय का ध्यान- आत्मा की निर्मलता का कारण

तुम भी उन्हीं भगवान के दर्शन करते थे, हम भी उन्हीं भगवान के दर्शन करते थे। तुम्हारे जीवन में कुछ घटित हुआ कि नहीं हुआ, नहीं पता लेकिन हमारे जीवन में तो उन भगवान के दर्शन करते-करते बड़ा अतिशय घटित हो गया। **वे बातें स्मरण में आती हैं, जब एक माता जी ने एक नियम दे दिया था** बेटा पूजा किया करो, कभी-कभी भगवान की पूजा किया करो, प्रक्षालन किया करो। पहले तो भगवान को दूर से धोक दे कर चला आता था, दूर से देख लेता था भगवान को। जब एक बार उनके प्रक्षालन करने के लिए, धारा करने के लिए, प्रक्षालन करने के लिए उनके पास में बैठ गया तो भगवान की वेदी से उठा कर आगे वाले step पर रख लेते हैं और भगवान का फिर प्रक्षालन करते हैं, पोंछते हैं तो उस समय पर भगवान को देखा, पोंछते हुए निकटता से, वे भगवान इतने सुन्दर लग रहे थे, इतने अच्छे लग रहे थे...ऐसा लग रहा था कि इनको पोंछते ही रहें, इनको पोंछते ही रहें, इनको पोंछते ही रहें। यह मन की भावना थी उस समय पर बता रहा हूँ और उसी पोंछने की भावना से वह भगवान इतने अच्छे लग गए कि बाद में भी उनका प्रक्षालन करने

के बाद उनकी याद आती थी, भगवान कितने सुन्दर लग रहे थे, भगवान कितने सुन्दर लग रहे थे। शायद वही अतिशय हुआ कि भगवान ने हमारे सारे वस्त्र पोंछा बना दिए, हमें ही पोंछ डाला। यह अतिशय होते हैं।

भगवान का सुन्दर रूप

अतिशय हर भगवान के अन्दर हैं अगर हम भगवान को उस भगवान की दृष्टि से देखें। कोई भी रूप में देख लो। यह अतिशय है भगवान का, अति सुन्दर रूप होना। आप भगवान को जब देखो केवल एक ही अतिशय के साथ देख लो। **चाँतीस में से किसी भी एक अतिशय के साथ भगवान को देख कर के बस मुग्ध हो जाओ, आपके जीवन में कुछ परिवर्तन आने लग जाएगा।** हम केवल इतना ही समझ पा रहे थे भगवान कितने सुन्दर हैं? अति सुन्दर होना, सुन्दर रूप का होना यह भी एक भगवान के चाँतीस अतिशयों में एक अतिशय माना जाता है। जानते हो कि नहीं? हम भी नहीं जानते थे उस समय पर लेकिन बाद में पता पड़ा कि यह भी एक अतिशय है, जिस अतिशय ने हमारे जीवन को बदल दिया। भगवान से लगन लग गई, हाँ! अच्छा लगता है भगवान के दर्शन करके प्रक्षालन करने में, अभिषेक करने में अच्छा लगता है। बस! वह अच्छा जो लगने लगा बस उसी से वह पोंछा सब लग गया फिर। आज आप वहीं के वहीं बैठे हो और अब हमारे कर्मों में भी वह अतिशय आ रहा है कि कर्मों की भी स्थितियाँ घट रही हैं। आत्मा से कर्म का मल धुल रहा है और वह पोंछा निरन्तर लगता चला जा रहा है

अतिशय का कारण, परिणाम शुद्धि

अपनी पहचान जो व्यक्ति खो देता है, वह भला फिर दूसरे को क्या पहचानेगा? पहचान तो आदमी की किससे होती है? ऐसे राजा रानी बन कर बैठो तो पहचानो। एक दिन के लिए भी सही यह संस्कार तो लाओ कि मैं अपने बहू-बेटियों को इस तरीके से राजा श्रेणिक बना कर बिठाऊँगा और उन्हें यह संस्कार दिलाऊँगा कि वे भगवान से प्रश्न कर सकते हैं। **आज अरिहन्त भगवान साक्षात् नहीं है तो कोई बात नहीं। समव-शरण की तरह आज भगवान की सभाएँ बारह नहीं लगी कोई बात नहीं, कम से कम ये दो सभाएँ लगी हैं, तीन सभाएँ लगी हैं, इन्हीं तीन सभा में हम भगवान से उस प्रश्न को करके उनके अन्दर एक संस्कार तो डाले कि ऐसे करके भगवान की सभा में प्रश्न पूछा जाता है। प्रश्न पूछने में कितनी ताकत लगती है? जब उस गद्दी पर बैठोगे तब समझ में आएगा। यह उस गद्दी का पुण्य है। उस पर बिठाना आप अपने बेटे बेटियों को, अपने रिश्तेदारों को जिन्हें आप पसन्द करते हैं, जिन्हें आप प्रेम करते हैं। उन्हें बताना इस सतना चतुर्मास में अगर कुछ आपको अपने अन्दर एक नया घटित करना है, तो एक बार इस गद्दी पर आकर बैठना तब आपके अन्दर संस्कार पड़ जाएगा कि श्रावक शिरोमणि कैसे बना जाता है? यह भी एक अतिशय है उस गद्दी का। अतिशय बन जाता है, वह तत्काल नहीं रहता है, वह हमेशा रहता है। **परिणाम एक बार अगर अच्छे बन गए, एक बार आपके अन्दर यह ऐसी भावना आ गई कि मैं भगवान की वाणी को सुन रहा हूँ और समवशरण में सुन रहा हूँ, इस भावना के साथ मैं अपने एक बार एक घन्टा भी बैठ कर यहाँ उपदेश सुन लिया आप जिन्दगी भर जो कमाएँगे उससे कई लाख गुना उसकी कीमत होगी, जो एक घन्टा यहाँ पर आपके बैठने की कीमत होगी।** कमाने को तो आप बहुत कमा लेते हैं लेकिन सही**

जगह पर उसको लगाना, सही भावों के साथ में उसको गँवाने की भावना रखना यह बुद्धिमत्ता की भावना होती है। अतिशय की बात समझोगे तो यह सब समझ में आएगा और चमत्कारों में पड़ोगे तो कुछ नहीं समझ में आएगा। इसलिए मैं चमत्कारों की बात नहीं करता, मुझे अतिशय अच्छे लगते हैं।

स्वयं अतिशयवत

भगवान के अतिशय से मैं प्रभावित हूँ, भगवान के अतिशय को मैं आज भी देखता रहता हूँ और मुझे हमेशा भगवान में अतिशय दिखाई देते हैं। शान्तिनाथ भगवान में भी अतिशय दिखाई देते हैं, नेमिनाथ भगवान में भी हमें अतिशय दिखाई देते हैं हमें सब भगवानों में अतिशय दिखाई देते हैं। भगवान के अन्दर का अतिशय का भाव हमारे अन्दर पहले प्रकट होता है और वह भक्ति के रूप में तब आता है, जब हमारे अन्दर श्रद्धा और ज्ञान मजबूत होता है। **‘स्वयं अतिशयवत’ सिद्धों का सुख स्वयं में है, अतिशय रूप में है** और जो अतिशय होता है वह स्वयं से होता है, किसी के कहने से नहीं होता है, बनाने से नहीं होता है। अगर कहीं, किसी चुम्बक के अन्दर यह गुणवत्ता आ गई कि दो चुम्बकें आपस में मिल रही हैं तो यह चुम्बक का गुण किसी ने बनाया नहीं है। चुम्बक है तो उसके अन्दर यह अतिशय स्वयं रहेगा और जब तक वह चुम्बक रहेगी तब तक वह दूसरी चुम्बक को आकृष्ट करती रहेगी।

आत्मा के अतिशय सुख को पहचानने की आवश्यकता

हर चीज की अपनी जो main original quality होती है, वह हमेशा बरकरार रहती है और उसी को बरकरार बनाए रखने को यहाँ पर आचार्य कहते हैं- वह हर चीज स्वयं में अतिशय वाली है। तुम्हारी आत्मा भी अनन्त सुख से भरी हुई है, अतिशय सुख से भरी हुई है। उस आत्मा के अन्दर झाँक करके देखो, विश्वास करना सीखो। **हमारी आत्मा में भी वही आत्मिक सुख अनन्त रूप में अतिशय रूप में है और यही सिद्ध भगवान में है।** सिद्धों के गुणों के बारे में सबसे बड़ी चीज यही है कि वह सुख कहीं बाहर से नहीं आता, स्वयं में है। जैसे पानी कहीं से फूटता है तो स्वयं फूटता है। किसी पत्थर से पानी फूट गया, किसी झिर से पानी फूट गया तो वहाँ पानी पहले भर दिया था क्या? पहले कहीं पत्थर में पानी भर दिया होगा इसलिए पत्थर तोड़ा पानी फूट गया। जब बड़े-बड़े drill करवाते हो, bore करवाते हो तो उस समय पर अचानक से पानी फूट पड़ता है न, झिर निकल आई। कहाँ से आ गई वह? पानी वहाँ पर किसी ने संचित किया था क्या? किसी ने रख दिया था क्या? अगर रखा हुआ होगा संचित किया हुआ होगा तो थोड़ी देर चलेगा उसके बाद में सूख जाएगा और जो स्वाभाविक होगा वह उसकी झिर, थोड़ी भी होगी जिंदगी भर चलती रहेगी।

आत्मा का सुख ही स्वयं अतिशयवत सुख

कभी देख लेना नर्मदा का उद्गम स्थान, गये हो? नर्मदा तो सभी जाते हैं। आजकल तो जैन-अजैन सभी अमरकंटक जाने लगे हैं और **अमरकंटक में जो आचार्य महाराज ने एक विशाल जिनालय बनवा दिया है** सारे अजैन लोग भी वहाँ पर उस जिनालय के दर्शन करने के लिए जाते हैं और वहाँ पर इतनी ऊँचाई पर, उस पहाड़ी पर जिनालय को देख कर सब लोग वहाँ पर भी उस अतिशय का लाभ लेते हैं। **चमत्कार का नहीं, अतिशय का लाभ लेते हैं।** आप लोग अभी तक जाते थे नर्मदा का उद्गम स्थान देखने के लिए

और वह भी देखने जाओ तो देख लेना एक छोटी सी झिर है। मैं गया नहीं देखने, तीन-तीन चातुर्मास आचार्य श्री के साथ में किए। कई लोग देखने भी गए होंगे लेकिन हम कभी जा नहीं पाए। जिनसे भी पूछता था- कहते थे तीन किलोमीटर दूर है, इतनी दूर जाएंगे, वहाँ पर क्या मिलेगा? एक छोटा सा जो है गड्ढा सा बना हुआ है उसमें छोटा सी झिर है, पानी निकलता रहता है। हमने कहा इतनी सी झिर देखने के लिए काहे को चार किलोमीटर जाओ, तीन किलोमीटर जाओ। लोगों ने बताया कि बस! वह इतनी है तो हमेशा बनी हुई है, सूख नहीं रही है। सूखेगी नहीं वह क्योंकि वह अगर original है, स्वयं में से स्वयं में फूटी है, तो वह हमेशा बनी रहेगी। इसको कहते हैं स्वयं अतिशयवत।

अतिशय की अपेक्षा चमत्कार की निरर्थकता

जो चीज बनाई गई होती है किसी के माध्यम से जैसे टैंकों में भरा हुआ पानी, तुम्हारी syntax की टंकियाँ ऊपर रखी हुई कब तक चलेंगी? ये सब अतिशयवत नहीं हैं यह सब क्या हैं? यह सब चमत्कार है। एकदम से पानी फूट जाता है और जब बंद पड़ जाता है तो ऐसा पड़ जाता है बिल्कुल सूखा पड़ गया है। यह चमत्कारों की स्थितियाँ हैं और अतिशय वाली स्थितियाँ हमेशा एक जैसी बनी रहना। कोई उसके पानी के pressure में कमी नहीं आना। जब नल खोलो तब एक समान pressure आना। वह आपकी टंकी में नहीं हो सकता है, जो ऊपर sintex रख रखी है। एक जैसी स्थिति स्वयं में अतिशय वाली बनी रहना यह स्वाभाविक चीजों में हुआ करती है। **आत्मा भी हमारी जब स्वाभाविक सुख में परिणमन कर जाती है तो उसके अन्दर जो सुख का अनुभवन होता है वह भी स्वयं में ही अतिशयकारी होता है।** दूसरे के लिए अतिशयकारी नहीं होता है।

सिद्धों का सुख स्वयं अतिशयवत्

सिद्धों का सुख किसके लिए अतिशयकारी है? स्वयं में अतिशयकारी है, स्वयं के लिए अतिशयकारी है। आपके लिए क्या है? आपके लिए इतना ही है कि सिद्धों का सुख ऐसा होता है, इस पर विश्वास कर लो, only to believe बस! **यह विश्वास करो कि सिद्धों का सुख ऐसा ही होता है। यह कहना भूल जाओगे कि सिद्ध बनने के बाद में क्या मिलता है? क्या करते हैं? बैठे-बैठे क्या होता है?** यह जो बेकार की बातें लोग किया करते हैं, वह सब नासमझ लोग किया करते हैं। जिन्हें सिद्धों के बारे में क्या दिख रहा है? वहाँ तो ऐसा फव्वारा फूटा है, ऐसा flow है कि वो कभी भी आनन्द का flow कभी भी एक degree भी कम नहीं होता, point one degree भी कम नहीं होता हमेशा ऐसा flow बना रहता है, **स्वयं अतिशयवत** इसको बोलते हैं। छोटी मोटी बातें नहीं हैं, जो छोटे-मोटे दिमाग में समझ में आ जाए। दिमाग बड़ा बनाओगे, उदार मन होकर के बड़े दिमाग से सोचोगे तो कुछ समझ में आएगा। नहीं तो आपको वह अनन्त शक्ति वाली चीज आपके दिमाग में छोटे से ज्ञान में कभी समा नहीं पाएगी। प्रयास किया जा रहा है, समा जाए। अगर समा जाए तो यह भी एक सभा का अतिशय समझ लेना और यह भी एक वाणी का अतिशय समझ लेना कि आपके अन्दर अनन्त सुख वाली चीज भी आपके छोटे से सुख में समा गई। **सिद्ध भगवान क्या करते हैं? उन्हें कौन सा सुख मिलता है? वहाँ अकेले बैठे रहते हैं। ये सब कैसी बातें हैं? बेकार की बातें हैं, नासमझी की बातें हैं।** जिन्हें पता ही नहीं है, जो केवल छोटा-छोटा गिलास का पानी पी-पी करके, नल

की बूंदों का पानी पी-पी करके अपने को सुखी मान रहे हैं, उन्हें उस स्रोत का क्या अन्दाजा? जहाँ से पानी अनादि काल से निकल रहा है और अनन्त काल तक निकलता रहेगा। इतनी अगर छोटी बुद्धि आप की बन गई तो फिर आपको कुछ भी समझाया नहीं जा सकता है।

पुण्य की महिमा

जब हमारे अन्दर इस तरीके की बुद्धि बनती है तभी यह भावना बनती है और यह भावना बना लेनी चाहिए क्योंकि **श्रेणिक की भी नई-नई शादी हुई थी, किससे? नंद श्री से।** राजा होते हैं शादियों की तो अब क्या कहें? कमी इसलिए नहीं होती वे करते नहीं हैं। एक बहुत बड़ी आपके सामने भ्रांति आ जाती है, राजा इतनी इतनी शादी क्यों कर लेते हैं? अरे भाई! वह राजा का इतना पुण्य होता है कि अनेक-अनेक कन्याएँ केवल उन्हीं के पुण्य के कारण से जन्म लेती हैं। पुण्यवान कन्याएँ इंतजार करती हैं। राजा श्रेणिक हैं मगध में (बिहार में) और एक राजा है केरल में (दक्षिण भारत में समझो) कितना दूर बिल्कुल end India का और वहाँ पर एक केरल का राजा उसकी एक पुत्री, राज पुत्री और उस राजा ने उस पुत्री के विवाह के लिए किसी ज्योतिषी से पूछा कि मेरी पुत्री के योग्य वर कहाँ मिलेगा? कौन मिलेगा? उन्होंने अपने ज्ञान से देख कर के बताया कि तुम्हारी पुत्री के लिए योग्य वर तो मगध का सम्राट राजा श्रेणिक होगा। इसे कहते हैं- पुण्य। वह बैठी है वहाँ पर, केरल कहाँ है? और बिहार कहाँ है? पुण्य किसी भी जगह पर होगा वह पुत्री उसी के लिए है। तुम विवाह करने के लिए विवाह सम्मेलन करवाते हो, परिचय करवाते हो, कुंडलियाँ मिलवाते हो। इन्हें कभी कोई कुंडलियाँ नहीं मिलानी पड़ती। क्यों? इनके पुण्य इतने बड़े-बड़े होते हैं कि उन्हें विवाह करने की इच्छा भी नहीं होती है तो भी वह राजा भी अपने आप को सौभाग्यशाली समझेगा जिसकी पुत्री इस तरह के राजा के साथ में विवाहित हो जाए। यह राज पुत्रियों की एक बहुत बड़े पुण्य की, सौभाग्य की सराहना करने वाली चीज होती है और **ऐसे ही राजा श्रेणिक का एक विवाह और हो गया। किससे? उस केरल के राजा की पुत्री से जिसका नाम था- विलासवती।** अब ऐसा नहीं कहना राजा कितनी शादियाँ करते हैं। अरे भाई उनका पुण्य है। यह भ्रांति दूर करो कि राजा लोग कामी होते हैं, कि राजा लोग बहुत विलासी होते हैं इसलिए इतनी शादियाँ करते हैं ऐसा नहीं है। वे नहीं भी करना चाहेंगे तो भी उनके पास में उनके पुण्य से उन पुत्रियों के पिता उन्हें समर्पित कर जाएँगे। उन्हें मांगना भी नहीं पड़ता है, कहना भी नहीं पड़ता और ऐसा हो जाता है और ऐसा ही हो गया राजा श्रेणिक के साथ में।

पुण्यहीन व पुण्यवान का भेद

पुण्यहीन लोगों को पुण्यवान लोगों की बातें भी समझ में नहीं आ पाती। कैसे समझ में आएगी? महाराज, हमें तो एक भी नहीं मिल रही है, आप दो-दो की बात कर रहे हो, चार-चार की बात कर रहे हो। **आपको समझ में नहीं आएगी पुण्य क्या कहलाता है?** यह पुण्य होता है। आपको एक नहीं मिल रही। मतलब आप यह सोचे कि हम कितने पुण्यहीन हैं। एक से नहीं पट पा रही, एक भी नहीं हमारी बन पा रही यह समझे कि हम कितने पुण्यहीन हैं? और वे बीसों रख लेते हैं तो भी कोई भी एक भी नहीं कभी नखरे दिखाती, मैं चली जाऊँगी मायके, मैं तलाक दे दूँगी, मैं छोड़ दूँगी, एक भी कभी जिंदगी में एक नखरा नहीं दिखाती। कितना प्रताप होता है, उसको कहते हैं- पुण्य। यह राजाओं का क्या होता है? यह पुण्य होता है।

राजा के राजसत्ता में आने पर कर्तव्य

राजा अपने राजगृह में बड़े आराम से रहने लगे। चिलाति तो भाग गया था उनका नाम सुनते ही। इसको भी आप समझ सकते हो जैसा खून होगा वैसा ही काम होगा। खून अर्थात् जैसा पुत्र होगा। अब वह पुत्र में इतनी योग्यता थी ही नहीं राज्य चलाने की योग्यता। वह जहाँ से जिसके उत्पन्न हुआ उसके अन्दर उसी तरीके का खून था। राजा का नाम सुनते ही उसके साथ पाँच हजार आदमी आ रहे हैं उतने में ही बौखला गया और छोड़ कर चला गया सब कुछ। **बाद में श्रेणिक का अच्छा राज सिंहासन पर आरोहण कराया गया।** अच्छा खूब उत्सव के साथ में उनका राज उत्सव मनाया गया और उसके बाद में जब वे वहाँ रहने लगे तो उन्हें अपने उस बगल के गाँव की याद आई। आपको ध्यान हो एक बार एक story में बताया था आपको कि जब वह अपने नगर से बाहर निकले थे तो पहले एक नंदी ग्राम में पहुँचे थे एक व्यक्ति के यहाँ पर और उससे भोजन पानी माँगा था तो उसने दुत्कार दिया था उनको। ध्यान है? उन्हें अब वह चीज याद आई कि देखो जब मैं यहाँ से निकला था मुझे भूख लगी थी, प्यास लगी थी, मेरे पास कुछ नहीं था और मुझे यह सेठ उस एक व्यक्ति के यहाँ पर ले गया। यह सेठ तो चलो दूसरे नगर का था लेकिन मैं जिस गाँव में गया उस गाँव के मुखिया के यहाँ गया और उसने मेरी एक नहीं सुनी। इतने घमण्डी लोग हैं इस गाँव के कि ये लोग कभी किसी के लिए पानी भी नहीं पिला सकते, किसी के लिए कुछ भोजन भी नहीं दे सकते। उस अपमान का बदला लेने का अब उसके मन में भाव आया। राजा लोग हैं, जब सत्ता हाथ में आती है तब फिर वह एक-एक करके सब बदला चुका लेते हैं। जैसे PM मोदी की सत्ता चल रही है तो जब सत्ता हाथ में आती है तब धीरे-धीरे करके सब कर लेते हैं। पहले राहुल की सुरक्षा हटाई, जो special उसके लिए security थी वह हटाई, उसको घर से निकाला धीरे-धीरे करके और सब ऐसे करेंगे तरीके से। ये राजाओं के कर्तव्य होते हैं ये कृत्य होते हैं। तरीके से करते हैं हर काम। अपने ऊपर कुछ न आ जाए। मैं क्या करूँ? court का आदेश है। मैं क्या करूँ? उनको इस सुरक्षा की ऐसी आवश्यकता ही नहीं है। ये संहिता ऐसा कहती है, ये संविधान ऐसा कहता है मैं क्या करूँ? यह राजा की सबसे बड़ी quality होती है, अपने ऊपर कुछ नहीं लेना काम सब कर देना। दूसरों के माथे मढ़ देना और काम उन्हीं के through हो जाना। कांग्रेस के यहाँ पर विधायक बैठे हैं, सांसद बैठे हैं, राजा बनने की तैयारी में हैं। राजा का सबसे बड़ा गुण यही है। क्या सीखना है? **राजा अपनी राज सत्ता में आकर अपने कर्तव्यों का निर्वाह करता है और उसे जब कोई दिखाई देता है इसने मेरे साथ दुष्टता की है तो वह उस दुष्टता का बदला भी लेता है** लेकिन इस तरीके से लेता है कि direct कोई उससे यह न कह सके कि इसने यह बदला लेने के लिए ऐसा किया है लेकिन क्रोध आ जाए तो direct भी आ जाता है।

शासक की योग्यता

श्रेणिक को क्रोध आ गया अपने उस अपमान को याद करते ही तो उसने सीधा-सीधा मंत्रियों को बुला कर के कहने लगा। इस गाँव को उजड़वा दो। जितने भी ग्रामीण लोग हैं यहाँ पर इस गाँव से कह दो गाँव खाली कर दें, राजा श्रेणिक का आदेश है। मंत्री तो थरथरा गए। कहने लगे...राजन! क्या कह रहे हो आप? अगर ऐसा करोगे ऐसा आप लोगों के साथ में अत्याचार करोगे तो उन्हीं की बददुआएँ आपके लिए भारी पड़ जाएँगी। **एक न्यायप्रिय राजा के लिए ऐसा काम करना उचित नहीं है।** भले ही आपके पास में आज

सत्ता है लेकिन मैं आपसे हाथ जोड़कर निवेदन कर रहा हूँ, ऐसा कृत्य करके आप लोगों को अपना दुश्मन न बनाएँ। अभी सब लोग आपके पक्ष में हैं, आपका शासन सुशासन कहलाता है। सब लोग यहाँ पर सु-खपूर्वक रहते हैं और चिलाती के कारण से जितना उपद्रव होता था वह सब उपद्रव दूर हो चुका है। सभी लोग आपकी प्रशंसा करते हैं, राजन! ऐसा कृत्य मत करो”। लेकिन राजा श्रेणिक को क्रोध आ रहा था और उसने बताया कि देखो! यह क्रोध मुझे इसलिए आ रहा है, यह आदेश मैंने इसलिए दिया क्योंकि वहाँ के मुखिया ने मेरा अपमान किया था। उस समय जब मैं अपने नगर को छोड़ कर बाहर निकला था अपने देश को छोड़ कर बाहर निकला था।

ज्ञानी-अज्ञानी की सोच में भेद

तब मन्त्री कहते हैं- राजन! मैं आपको एक युक्ति पूर्ण बात बताता हूँ। आप मेरी बात को सुनिए। अगर अच्छी लगे तो उसको लागू करना और अगर न अच्छी लगे तो आपके लिए जो उचित लगे वह करना क्योंकि आप राजा हैं लेकिन **मंत्री होने के नाते अच्छी सलाह देना मेरा कर्तव्य है।** वह मंत्री उस राजा के लिए कहते हैं...राजन! यह बात ठीक है कि आपका अपमान हुआ। आपको अपने अपमान का बदला लेना है आप वह बदला लेना लेकिन बदला लेने का तरीका ऐसा होना चाहिए कि लोग आपके लिए direct आपको गलत न समझें और यह न समझें कि राजा हमारे ऊपर अत्याचार करने लगा है। क्योंकि न्यायप्रिय राजा की सत्ता बहुत दिनों तक रह सकती है, अत्याचारियों की सत्ता ज्यादा दिन नहीं रहती है। राजा का यही धर्म है। इसी धर्म से राजा की राज सत्ता बढ़ती जाती है कि वह अपनी प्रजा पर किसी तरह का अत्याचार न करे। उनके लिए किसी भी तरह के धर्म सुख में बाधा न बने। उनके नैतिक कर्तव्यों में कोई बाधा न डाले। ऐसा राजा अगर प्रजा के लिए अच्छा लगने वाला राजा होगा तो वह राजा बना रहता है अन्यथा राजा का यही अत्याचार का भाव, अनैतिकता का भाव उसे राज भ्रष्ट कर देता है। यह सीखने की चीज है।

राजा को क्रोध में भी नैतिक धर्म नहीं छोड़ना चाहिए

मन्त्रियों ने सिखाया...राजन! आपके लिए यह ठीक है। बदला तो लूँगा मैं भी आपके साथ हूँ लेकिन तरीका अलग होना चाहिए। क्या करें मंत्री? बताओ तुम बताओ। राजा का गुस्सा थोड़ा ठंडा हुआ तो मंत्री ने कहा- राजन! आप बहुत चतुर हैं, आपकी बुद्धि चातुर्य का सब लोग लोहा मानते हैं तो बुद्धिमानों को तो हमेशा हर काम बुद्धि से ही करना चाहिए। एकदम से क्रोध में आकर के टूट पड़ना यह बुद्धिमानों के काम नहीं है।

ज्ञानी मारे ज्ञान से अंग अंग भिद जाए।

और मूर्ख मारे पाथड़ा(पाथड़ा मतलब पत्थर) और कुछ भी बिगड़ न पाए।

मूर्ख के लिए क्या होता है? गुस्सा आई, पत्थर उठाया मार दिया। यह मूर्खों का काम है। महाराज! आप तो बुद्धि चातुर्य में famous हैं, पूरे देश के अन्दर। आपके पास में ज्ञान है ज्ञान से काम करो। यह मूर्खता वाले काम नहीं कि direct आदेश दे दिया जाए कि अपना घर छोड़ दें, अपने सब घर छोड़कर भाग जाएँ यह अत्याचार कहलाएगा। public आपके विरोध में खड़ी हो गई तो मुश्किल हो जाएगी। चाहे भले ही कितनी छोटी क्यों न हो किसी एक छोटे से गाँव की क्यों न हो। **राजा को कभी भी अपनी नैतिकता के ऊपर चोट**

नहीं लगानी चाहिए। नैतिक धर्म यही है कि वह public का हेतु बना रहे। मंत्री ने समझाया, राजा की समझ में आया। राजा बोला-बताओ, पहले क्या करूँ? महाराज! आप खुद बुद्धिमान हैं, आप कोई ऐसी योजना बनाएँ कि उस योजना की पूर्ति ये न कर पाएँ। आप कोई अपने बुद्धि चातुर्य से कोई एक ऐसा प्रश्न खड़ा कीजिए, एक कोई ऐसी समस्या गाँव वालों के लिए दे दीजिए कि जिसका समाधान ये न कर पाएँ और फिर उनसे कह दीजिए अगर तुमने समाधान नहीं कर पाया तो तुम्हें गाँव छोड़ना पड़ेगा। यह बात तो चल जाएगी लेकिन अगर आप direct आदेश दोगे और बल का प्रयोग करोगे तो गलत हो जाएगा। महाराज! सोचने की कोशिश कीजिए।

प्रवचन का प्रचार-प्रसार, एक धर्म प्रभावना का माध्यम

अच्छा सोचने के बाद में कुछ सोच हो रही है कि नहीं? इस गद्दी पर बैठ कर सब अच्छा सोचने में आएगा। चतुरता बढ़ेगी तो इस गद्दी पर बैठने से ही बढ़ेगी। जिन्हें अपने बच्चों की चतुरता बढ़ाना हो, number लगाए रखना ध्यान रखना, कोई भी बहू बेटी कोई भी नया pair बचना नहीं चाहिए सतना में, जो इस गद्दी पर न बैठे।

नयी पीढ़ी में बदलाव Transformation की आवश्यकता

चतुरता बढ़ाना हो तो, बुद्धि का चातुर्य बढ़ाना हो तो, हर समस्या का समाधान निकालना हो तो ऐसे निकलता है। **समस्या के समाधान के लिए भी आदमी को थोड़ा सा शान्ति से बैठना पड़ता है।** आप लोग चाहते हो कि आपके बेटों में बदलाव हो। आप लोग चाहते हो कि आपके बेटे कुछ भीतर से change हो। बेटे हो, बेटियाँ हो, बहू हो, सासू माँ की बात नहीं कर रहे, उनको change नहीं करना है, ससुरों को change नहीं करना है। change किसको करना है? जो नई पीढ़ी है उसको change करना है और उसको change करने के लिए एक बहुत बड़ी युक्ति मैंने पढ़ी थी। किसी भी आदमी को अकेला छोड़ दो वह अपने आप में बदलाव ले आएगा। क्या सुना? **किसी भी आदमी को अकेला छोड़ दो, वह अपने आप में बदलाव ले आएगा और आप उसे अकेला छोड़ते नहीं हैं, इसलिए उसमें कभी बदलाव आता नहीं है।** आदमी के अन्दर बदलाव लाने के लिए, उसे थोड़ा अकेला रहने के लिए, हमने एक योजना बनाई है। आने वाले दिनों में इसी सतना में सत्रह अगस्त से पाँच दिनों के लिए एक स्वात्म साधना शिविर लग रहा है। वह किसलिए लग रहा है? वह totally transformation of your thoughts, your life. आपके जीवन में जो change नहीं आते हैं, वे इसलिए नहीं आते हैं क्योंकि आप अपने आप को कभी अकेला नहीं रख पाते हैं और आपके घर वाले आपको अकेला रहने नहीं देते हैं। वे आपके सबसे बड़े दुश्मन होते हैं। कहते रहेंगे कि बच्चे में change आ जाए लेकिन अगर हम कहें बच्चे को एक दिन के लिए मेरे पास छोड़ जाओ तो नहीं छोड़ेंगे और doctor के पास पागल खाने में दस दिन कह दें छोड़ दो तो छोड़ देंगे। यह मोही लोगों की बात होती है, इसलिए मैं आपसे कह रहा हूँ अगर आपको अपने अन्दर, अपने बच्चों के अन्दर, अपनी बहुओं के अन्दर एक नई energy लाना हो, उन्हें कुछ अपने career में अच्छी energy से भरने के लिए उनके अन्दर confidence लाना हो तो उन्हें ऐसे स्वात्म साधना शिविर में भेजने की कोशिश करो। यह उन लड़कों के लिए, उन लड़कियों के लिए जिनका अभी career बना नहीं है और जो

अपने कोई decision ले नहीं पा रहे हैं, किसी भी तरह से अपने आप में किसी रूप में depressed हो रहे हैं या उनके सामने कोई decision making thoughts नहीं आ रहे हैं, उनके लिए यह बहुत सुनहरा अवसर होता है, जिसके माध्यम से वह अपने अन्दर की क्षमताओं को पहचानने लग जाते हैं और उन्हें अपना भविष्य दिखाई देने लग जाता है। पाँच दिन के बाद में उन्हें खुद intuition होने लग जाता है कि मुझे अब किस line पर जाना है? और उनके सामने जितने भी obstacles होते हैं, बाधक कारण होते हैं वो सब उनके सामने से हट जाते हैं और उनका रास्ता बिल्कुल सही हो जाता है।

स्वात्म साधना

Total detoxification की जो क्रिया है- यह पाँच दिन का **स्वात्म साधना शिविर**, आपके सामने एक वरदान बन कर आ रहा है। एक अवसर आ रहा है, chance आ रहा है। बूढ़े बड़े मत आ जाना बस। जो पूजा करते- करते थक गए। बोले, “अब कहाँ? चलो पाँच दिन आराम करेंगे, वहाँ बैठ के खाएँगे, छुट्टी free की”। वे लोग नहीं चाहिए अपने को। परिवर्तन जिन में संभव हो उनको भेजना। बुढ़ापे में अब कोई परिवर्तन संभव, सासूजी में अब कोई परिवर्तन संभव, परिवर्तन बहु में संभव है। बहू विवेकवान बन सकती है। बहू अपने आप को change कर सकती है, सासू कभी change, बुरा मत मानना। कोई change होने की भी एक age होती है तो जब तक आप अकेले रहने का भाव नहीं बनाएँगे, जब तक आप थोड़ी देर के लिए अपने आप को दुनिया से disconnect नहीं करेंगे तब तक आपके भीतर का जो अतिशय है, भीतर का जो आपके अन्दर सुख है, वह आपको कभी feel नहीं होगा। क्योंकि आप हमेशा उसी इन्द्रिय सुख में पड़े रहेंगे इसलिए पाँच दिन no mobile, no wife no house, no business, no friends. Totally I'm alone, only I'm feeling of myself and nothing. इसका नाम है स्वात्म साधना शिविर। इतनी हिम्मत जो करेगा उसे कुछ मिलेगा क्योंकि बिना हिम्मत किए कुछ भी मिलता नहीं है। हिम्मत करो सब मिलेगा। अगर आपके जीवन में risk लेने की आपके अन्दर हिम्मत आएगी तो इसी तरह की चीजों को attend करने से आएगी। आप पाँच दिन के लिए अपने आप को बिल्कुल एकाकी छोड़ दो फिर आप देखो आपके अन्दर क्या change आते हैं? आप अपने बच्चों को depression से दूर करने के लिए या tension से दूर करने के लिए बड़े-बड़े doctors की दवाई तो खिलाएँगे लेकिन कभी आप उन्हें भीतर से energy देने के लिए, power देने के लिए जो meditation होते हैं, योगा होते हैं, अच्छे motivation speech होती है उन्हें कभी नहीं सुनवाएँगे। जबकि सबसे ज्यादा इन सब चीजों से जो लाभ होता है। **वह लाभ किसी दुनिया की दवाइयों से नहीं होता है। इसलिए आज के समय में इन चीजों की बहुत जरूरत है और जो लोग इन चीजों को अपने अन्दर अपनाते हैं, उनके आप फिर experience सुनना।** कैसे-कैसे लोग पिछली साल आए थे, वह दस दिन का था लेकिन अभी थोड़ी सी कुछ उसमें रियायत करके इसे केवल पाँच दिन का रखा गया है। पहले वह दस दिन का हुआ था, वह दसलक्षण के दिनों में हुआ था क्योंकि उस समय पर हमें फिर दो-दो duty देनी पड़ती हैं, दो-दो जगह attend करना पड़ता है, मेहनत ज्यादा होती है इसलिए हमने उसको पहले करने का सोचा है। जो लोग दस दिन के इंतजार में बैठे हैं, दसलक्षण के दिनों में। वह पहले से अपनी seat यहाँ पर reserve करा ले। पाँच दिन के उनके लिए मौके हैं। यहाँ पर seats भी थोड़ी है क्योंकि जगह भी यहाँ पर थोड़ी है। लेकिन है बढ़िया। पहले की तरह आपको परेशान नहीं होना पड़ेगा। AC मिलेगी आपको, बढ़िया जगह मिलेगी

लेकिन अच्छे लोगों के लिए अच्छी जगह थोड़ी भी अच्छी होती है। समझ पा रहे हो? क्या करना है? राजा श्रेणिक की तरह चतुराई से काम लेना है। जब हमारे सामने अवसर आए, मौके आए तो हमें उन मौकों को भुनाना है। यह चतुराई की सबसे बड़ी पहचान होती है। मौका जो मिले उस पर काम करो।

राजा श्रेणिक का राज्य संचालन में चातुर्य



राजा श्रेणिक को समझ में बात आ गई। अब वह अपनी बुद्धि चातुर्य से सोचता है। ठीक है! मंत्री तुमने जो कहा है बिल्कुल सही कहा है। मैं एक आदेश देता हूँ। राजा श्रेणिक के लिए दिमाग में एक प्रश्न पैदा हो गया और राजा श्रेणिक ने विचार कर लिया कि गाँव वालों से कह देना है मंत्री से कह दिया कि गाँव में ऐलान करा दो। क्या ऐलान करा दो? राजा ने कहा- एक बकरा लेकर के जाओ और गाँव वालों से कहना इस बकरे को रोजाना खूब खिलाना पिलाना है लेकिन बकरे का जितना वजन है, जितना वह स्थूल है, वह उतना ही रहना चाहिए। न कम हो जाना चाहिए, न ज्यादा हो जाना चाहिए और खिलाना पिलाना बराबर है। अगर गाँव वालों ने एक महीने के अन्दर हमें उसी स्थिति में बकरा वापस लौटा दिया तो तुम्हें गाँव में रहने दिया जाएगा, नहीं तो तुम्हें गाँव छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया जाएगा। यह प्रश्न हो गया और यह बात मंत्रियों ने उस गाँव के लोगों तक पहुँचा दी। बात पहुँचाने का भी काम करते हो कि नहीं करते हो? जो बात यहाँ बोली जा रही है उसे दूसरों तक पहुँचाना भी अच्छे मंत्रियों का काम होता है। कुछ नहीं आता है तो इतना ही कर लिया करो। आज यहाँ महाराज ने क्या बोला? क्या बताया? किस चीज पर focus किया? इसको दूसरों तक पहुँचाने का नाम भी धर्म घर बैठे mobile से धर्म कमाना है। घर बैठे-बैठे धर्म कमाना है। ऐसा वह भाव मंत्रियों ने गाँव वालों तक पहुँचा दिया और फिर उसके बाद में गाँव वालों की जो हालत होती है, वह आपको कल बताई जाएगी।

शून्य रहे कुछ पेट तो, स्वस्थ रहे इन्सान।

जठर अग्नि जिन्दा रहे, तो खाने में शान॥१७॥

19. सांसारिक सुख : सुखानुभूति अथवा दुःख का प्रतिकार

तीर्थंकर भगवान के समवशरण में भव्य आत्माओं के भाव



SCAN TO WATCH

धर्म प्रेमी भव्य आत्माओं...आज आप सभी लोग भगवान ऋषभदेव से चली आई परम्परा के अन्तर्गत भगवान महावीर स्वामी तक की तीर्थंकर परम्परा में जितने भी प्रश्न होते हैं, चाहे वह भगवान महावीर स्वामी के पहले के ही क्यों न हो...वह सारे के सारे प्रश्न, भगवान महावीर स्वामी की सभा में, गणधर परमेष्ठी को, राजा श्रेणिक के माध्यम से पूछे जाते हैं और उन प्रश्नों में अगर सबसे बहुमूल्य प्रश्न होता है, तो **भगवान की सभा में बैठकर के भगवान को देखकर के, हर किसी के मुख से यही निकलता है कि भगवन् मुक्ति का मार्ग क्या है?** चाहे वह श्रावक श्रेष्ठि हो, चाहे श्राविका श्रेष्ठि हो, चाहे कोई भी भगवान के समवशरण में चक्रवर्ती बैठे हो, भगवान को देखकर के सभी के अन्दर यह भाव आ जाता है कि हमें और कुछ नहीं पूछना। यह नहीं पूछना कि हमारा विवाह सम्बन्ध अभी हुआ है, तो वह कब तक अच्छे से चलेगा? कब हमें पुत्ररत्न की प्राप्ति होगी? कब हमारे वंश की वृद्धि होगी? ये सब चीजें पूछने के भाव से अगर कभी कोई राजा, सेठ घर से निकला भी हो तो भी भगवान को समक्ष देखकर के सब भूल जाता है और वह अपने संसार को, अपने परिवार को, अपने व्यापार को, किसी भी तरह की अपनी सांसारिक चीजों को तुच्छ समझकर के सोचता है कि हम छोटी सी बातें इतने बड़े तीर्थंकर भगवान के समवशरण में आकर के कैसे करें? इसलिए अपने आप सहसा उसके मुख से निकल पड़ता है...**भगवन् मुक्ति का मार्ग क्या है? यह बताइए? यह आज राजा श्रेणिक ने पूछा है।**

मुक्ति का मार्ग क्या है?

क्या पूछा है? मुक्ति का मार्ग क्या है? अगर हम मुक्ति का मार्ग देखें तो मुक्ति का मतलब है सिद्ध भगवन्तों तक पहुँचना। **सिद्ध भगवन्तों तक पहुँचने का मतलब है कि अपनी आत्मा को भी सिद्धों से जोड़ना, अपने मन-वचन-काय को भी सिद्धों से जोड़ना।** जब हम सिद्धों की आराधना करते हैं तो हम अपने मन-वचन-काय को सिद्धों के गुणों से जोड़कर के, उनके बहुमूल्य अनन्त गुणों से जोड़कर के, अपने अन्दर एक भाव लेकर के आते हैं कि ऐसे गुणों की प्राप्ति हमारी आत्मा को भी हो। जब इस तरह का भाव हमारे अन्दर एक आकर्षण के साथ में पैदा होता है, तो उसी का नाम भक्ति कहलाता है। भक्ति ही मुक्ति का मार्ग बन जाती है। इसलिए मुक्ति का मार्ग क्या है? **सिद्ध भगवन्तों की भक्ति करना ही मुक्ति का मार्ग है।**

बाधा रहित सुख

यह बात आपको ध्यान में रखकर के ही आज का यह भाव समझना है कि हम यहाँ पर जो भक्ति कर रहे हैं, वह भक्ति किसकी कर रहे हैं? सिद्धों की कर रहे हैं और सिद्धों की इस तरह की जो भक्ति कर रहे हैं, उसमें हम सिद्धों के गुणों की ओर आकर्षित भी हो रहे हैं और सिद्धों के जो वास्तविक गुण हैं, उनके सुख हैं, उसको भी हम समझ रहे हैं। आचार्य पूज्यपाद महाराज अपनी सिद्ध भक्ति में लिखते हैं... **‘आत्मोपादान-सिद्ध’**

वह सुख जो होता है, वह आत्मा के उपादान से सिद्ध है। **‘स्वय-मतिशय-वद्’** यह कल आपको बताया था कि वह सुख स्वयं अतिशय सम्पन्न होता है। फिर एक और उस सुख की बात आगे कही जाती है... **‘वीत-बाध’** और फिर आगे कहते हैं... **‘विशाल’**। उन सिद्धों का सुख कैसा होता है? **‘वीत-बाध’** बाधाओं से रहित होता है। सुख हो और उस सुख के साथ में कोई बाधा न हो तो ही वह सुख हमें सुख देता है। अगर सुख के साथ में किसी भी तरह की कोई बाधा आने की सम्भावना हो तो वह सुख भी हमारे लिए दुःखकर लगने लग जाता है क्योंकि हमें चिन्ता यह हो जाती है कि इसमें कोई बाधा उत्पन्न न हो जाये। इसलिए जब सुख की बात आये तो आप समझ लेना कि सुख ऐसा होना चाहिए, **जिस सुख में किसी भी तरह की कोई बाधा उत्पन्न न हो। ऐसा सुख कहाँ मिलता है?** संसार दशा में ऐसा सुख खोजना बहुत मुश्किल होता है। पंचम काल के मनुष्यों के लिए तो ऐसा सुख खोजना असम्भव सा ही लगता है। **कोई भी सुख बिना दुःख के, बिना बाधा के मिल जाए ऐसा लगता नहीं है और मिल भी नहीं सकता।** अनुभव में भी यही आता है, प्रतीति में भी यही आता है क्योंकि इस काल का नाम क्या है? दुःखमा काल है। इसे हम पंचम काल कहते हैं। इस काल का नाम ही दुःखमा काल है और इस काल में दुःख होता है। सुख तो केवल एक प्रतीति के रूप में, एक आभास के रूप में रहता है। लेकिन वास्तव में तो हम हर दौर में दुःख से ही गुजर रहे होते हैं। **सुख प्राप्ति की इच्छा में भी दुःख होता है। सुख की प्राप्ति के लिए जो प्रयत्न किए जाते हैं, उस प्रयत्न के दौरान भी दुःख होता है और प्रयत्न पूरे होने के बावजूद भी जो feeling होती है, उसमें भी दुःख होता है।** लेकिन फिर भी हमारे मन में कल्पना लगी रहती है कि हमने सुख प्राप्त कर लिया..सुख प्राप्त कर लिया..सुख प्राप्त कर लिया और वह सुख भी निराबाध हो जाये, यह उसमें बहुत बड़ी बात है। इसलिए ऐसा सुख कहाँ मिलता है जो निराबाध हो, बिना किसी बाधा के हो, उसमें किसी भी तरह का कभी भी कोई भी बाधक तत्त्व उसके सामने आये ही न? ऐसा सुख होता है, तो वह सिद्धों का सुख होता है।

सुख, दुःख का प्रतिकार मात्र है

आप लोगों को सुख की अनुभूतियाँ तरह-तरह से होती हैं। अपनी संज्ञाओं की पूर्ति करने में सुख की अनुभूतियाँ होती हैं और उन संज्ञाओं की पूर्ति करने में भी कई बार जब किसी भी संज्ञा की पूर्ति की जाती है, तो हम भूल जाते हैं कि हम जो सुख समझ रहे हैं, वह सुख नहीं है, वह दुःख का प्रतिकार मात्र होता है। आपके लिए ऐसा लगता है कि हम सुख की कल्पना के साथ चल रहे हैं तो हमें सुख मिल रहा है, सुख मिलेगा। कोई भी तरह की इच्छा हो, अगर आपने वह इच्छा कर ली है, तो उस इच्छा के माध्यम से उस इच्छा की पूर्ति जैसे-जैसे होती जाएगी, आपको लगेगा कि सुख मिल रहा है लेकिन उस पूर्ति में भी आपको दुःख साथ में चल रहा होता है।

उदाहरण: आहार संज्ञा

आप भोजन करते हैं? बोलो तो? महाराज! तभी तो बैठे हैं। **भोजन करना भी एक इच्छा है, एक संज्ञा है और इसको भी आचार्यों ने एक आहार संज्ञा के रूप में कहा गया।** यह आहार संज्ञा जब हमारे अन्दर उत्पन्न होती है, तो यहीं से हम समझ सकते हैं, शुरुआत यहीं से हम कर सकते हैं। आहार की इच्छा का होना, फिर उस आहार की पूर्ति हो जाना और फिर पूर्ति होने के बाद में यह महसूस करना कि हम सुखी हैं।

आप इसके बीच में देखें कि सुख कहाँ है? भूख सभी को लगती है, सभी के अनुभव में आता है। भूख आपको लगती है, भोजन आप नहीं बनाते हो। भोजन बनाने वाले दूसरे लोग होते हैं। आप यहाँ इत्मीनान से बैठे हो और भोजन घर में बन रहा है। आप जब घर पर पहुँचोगे तो भोजन आपको तैयार मिलेगा। वह भोजन बना रहे हैं, उन्हें भोजन बनाने का भी दुःख है क्योंकि बनाने में भी कष्ट होता है। अग्नि के सामने बैठना पड़ता है। गर्मी का समय चल रहा है। वैसे ही आप देख रहे हो...सावन का महीना भले ही हो लेकिन आषाढ़ जैसी सड़ी गर्मी का असल मौसम चल रहा है। जो उस रसोई घर में बैठता है, वह पसीना-पसीना होता है। उसका भी एक कष्ट होता है लेकिन वह भी एक सुख के भाव में बैठा रहता है कि चलो कोई बात नहीं जो भी हमारे अतिथि हैं, जो भी हमारे घर के लोग हैं, परिवार के लोग हैं, जब घर पर आएँगे और वे सुकून से भोजन कर लेंगे तो उसी में मेरा सुख है। घर के अन्दर का कोई भी प्राणी अगर आपकी किसी भी तरह की आहार आदि की तैयारी कर रहा है और आप सुकून से बैठे हैं तो **उसके लिए भी वह सुकून सिर्फ एक कल्पना में है।** वह क्या है? वे आएँगे, वे भोजन कर लेंगे, यही मेरा सुख है। यह उसका सुख हो गया, उसकी कल्पना का सुख हो गया। **आपका सुख क्या है?** आप पहुँचे और आप पहुँच करके जब भोजन करने के लिए बैठे तो आपके अन्दर एक दुःख है और वह दुःख क्या है? कि मेरी जो भूख है, वह जल्दी-जल्दी मिट जाये। बताओ ऐसे ही होता है कि नहीं होता? मेरी जो भूख है, वह जल्दी-जल्दी मिट जाए। आप का बस नहीं चलता, अगर आपका बस चले तो पूरी की पूरी जो भगोनी है या थाली है, वह सारी की सारी एक बार आप अपने पेट में लुढ़का लो लेकिन आपका बस नहीं चलता क्योंकि ऐसा हो नहीं सकता। मुँह भगवान ने बहुत थोड़ा सा, छोटा सा दिया है लेकिन जब हमारे सामने व्यंजन होते हैं, हमारे सामने भूख का प्रतिकार करने के लिए साधन होते हैं, तो मन भीतर से यही कहता है, क्या करना है? वह तो हमारे लिये एक मजबूरी है। हमारी सभ्यता है कि हम कौर-कौर करके खाते हैं, थोड़ा-थोड़ा करके खाते हैं लेकिन **भीतर से अगर मन की बात पूछोगे तो मन कहेगा...इतनी देर क्यों लगानी? जल्दी से सारा का सारा भूख को शान्त कर लिया जाये।** कभी मन से पूछा है आपने? मन में कभी यह दुःख होता है कि नहीं होता है? जब कोई आपके सामने चीजें रखी हो और आप सोचते हो, इन चीजों का सेवन करना है लेकिन थोड़ा-थोड़ा, थोड़ा-थोड़ा, थोड़ा-थोड़ा कर पा रहे हैं। भीतर एक मन का भाव चलता है कि नहीं!...यह थोड़ा-थोड़ा करने में तो बहुत time लगेगा, जल्दी से कर लेना चाहिए। लेकिन system ऐसा है? नहीं है। बहुत जल्दी पानी पी लो तो ठसका लग सकता है। बहुत जल्दी खा लो तो गले में अटक सकता है। बिना चबाकर के खा लो तो परेशानी आंतों में पैदा हो सकती है। इसलिए सभ्यता के तौर पर धीरे-धीरे चम्मच से थोड़ा-थोड़ा लेकर के खाया जाता है, पिया जाता है। इसको यह मजबूरी समझना क्योंकि हम इसके अलावा कुछ कर नहीं सकते हैं। जब हमारे लिए भोजन हो रहा होता है तब हमको क्या लगता है? अब देखो! हमको भोजन मिल गया न? हमारे मन की चीजें मिल गईं, चलो हमने जैसा स्वादिष्ट चाहा था, वैसा मिल गया। सुख हो रहा है, उसी सुख के साथ-साथ क्या हो रहा है? आपके लिए गरम-गरम भोजन आ रहा है या कैसा भी भोजन आपके पेट में पहुँच रहा है। उसी समय पर उस पेट के अन्दर भोजन पहुँचने से आपको गर्मी भी लगेगी। सुन रहे हो? इसलिए आपका भोजन कहाँ होता है? अच्छे बढ़िया, ऐसे cool, cool स्थान पर बैठ कर के होता है कि जहाँ पर पसीने की एक बूँद भी न आये। **क्यों राजा श्रेणिक! सही बात है कि नहीं? इसलिए भोजन करते समय क्या होना चाहिए? tv भी सामने होनी चाहिए, cooler भी बगल में होना चाहिए। इस बगल में भी होना चाहिए, उस बगल में भी होना चाहिए और उससे भी काम न चले**

तो पूरा AC room होना चाहिए। तब जाकर के शान्ति से कहीं कुछ भोजन हो पाता है। सुन रहे हो? भोजन करते-करते भी दुःख होता है कभी कि नहीं होता है? वह दुःख कभी आप अनुभव कर पाते हो? वह दुःख क्या होता है? हम अगर एक ग्रास के बाद दूसरा ग्रास भी मुँह में डाल रहे हैं तो उसके लिए भी आपको कभी feeling नहीं आती कि यह भी हम अपने दुःख का ही प्रतिकार कर रहे हैं। मतलब हम अपने अन्दर जो दुःख हैं, उससे अपने आप को बचाने के लिए..जैसे किसी रोग की पूर्ति करने के लिए, रोग की recovery करने के लिए या रोग से बचने के लिए, हम बार-बार औषधि लेते हैं, उसी तरीके से अपने लिए एक-एक ग्रास खाना, यह इस क्षुधा रोग को दूर करने की एक ली जाने वाली औषधि है। लेकिन हम इसे कभी दुःख के रूप में महसूस नहीं करते हैं। खाते-खाते भी कष्ट होता है कि नहीं होता है? बोलो तो! कभी खाते हुए कष्ट नहीं होता? क्या मुँह चबाते-चबाते कभी थकता नहीं है कभी? कहीं थोड़ी सी ज्यादा मिर्च लग गई तो फिर क्या होता है? सी-सी सी-सी की आवाज आने लग जाती है। थोड़ी-थोड़ी नाक में पानी भी आने लग जाता है। लेकिन फिर भी अगर पकौड़ी गरम-गरम है, तो खाना छूटता नहीं है। आपको लगता नहीं? कभी पकौड़ी खाने में भी दुःख होता है। मिर्ची लगती है, तो जलन होती है। कभी-कभी सी-सी की आवाज भी निकलती है, तो भी जलन होती है तो भी हमें दुःख होता है लेकिन वह कुछ हम दुःख, दुःख जैसा समझते नहीं। दुःख नहीं होता। तुरन्त हमारे अन्दर एक आशा रहती है कि नहीं! अब थोड़ा सा मिर्ची ज्यादा हो गई है, तो चलो अब कुछ मीठा हो जाये। जो मुँह में चरपरापन लग रहा है, तो चलो उसको भी शान्त करने के लिए कुछ अच्छी मिठाई ले ली जाये। कुछ ठण्डा पानी पी लिया जाये। यह सब हम क्या कर रहे हैं? सुख प्राप्त कर रहे हैं। बोलो क्या कर रहे हैं? सुख प्राप्त कर रहे हैं लेकिन **जब हम इसे अध्यात्म की दृष्टि से देखेंगे, सिद्धान्त की दृष्टि से देखेंगे तो यह क्या है? सुख प्राप्त होना अलग चीज है और दुःख से बचना अलग चीज है। दुःख का बचाव करना अलग चीज है।** हम देखें कि इस प्रक्रिया में सुख से हम अपने अन्दर सुख की अनुभूति कर रहे हैं कि दुःख से बचने की प्रक्रिया बना रहे हैं? यह बताओ...

सुख की अनुभूति और दुःख के प्रतिकार के बीच का अन्तर

यह अगर आपकी समझ में आ जाये तो आपको समझ में आयेगा कि सिद्धों का सुख कैसा होता है? हमारा सुख कैसा है? इसको समझने के लिए हमें अपना भी सुख देखना है और सिद्धों का सुख कैसा है? इसको समझने के लिए हमें उनका भी सुख समझना है लेकिन वह सुख और दुःख के बीच की यह जो line है, यह जब तक हमारे समझ में इस तरह से नहीं आएगी कि **दुःख से प्रतिकार करना, दुःख से बचना एक अलग चीज है और सुख की अनुभूति होना एक अलग चीज है।**

एक और उदाहरण: बुखार

अगर आपको इससे भी समझ में न आये तो आपके लिए एक और उदाहरण बता रहा हूँ। बुखार आता है कभी आपको? बुखार, ज्वर, मलेरिया, viral चल रहा है न सब अभी? क्या होता है? जब आपको बुखार आ गया तो आप क्या कर रहे होते हैं? बुखार को दूर करने में आप लग जाते हैं। जब आप बुखार को दूर करने के कोई भी औषधियाँ ले रहे हैं, काढ़ा पी रहे हैं, दवाईयाँ खा रहे हैं, किसी भी तरीके से आपके मन में, यह लग रहा है बुखार दूर हो जाये, बुखार दूर हो जाये, बुखार दूर हो जाये और उस समय पर कष्ट भी होता है। **दवाई खाने में भी कष्ट होता है। पसीना निकालने में भी कष्ट होता है।** पसीना निकालना, उस

समय पर जरूरी होता है। कभी पसीना न निकले, कोई बात नहीं। लेकिन ज्वर आया है तो पसीना निकल जाये, तब वैद्य कहता है...बहुत अच्छी बात है, पसीना निकल गया, अब ज्वर आपका हल्का हो जायेगा। पसीना न आए तो वह एक बहुत बड़े चिन्ता का कारण बन जाता है कि बुखार है और पसीना क्यों नहीं आ रहा है? इतना गरम-गरम काढा पिला रहे हैं, इतनी गरम-गरम दवाई दे रहे हैं लेकिन पसीना क्यों नहीं आ रहा? वैद्यों के लिए एक चिन्ता का विषय बन जाता है, तुम्हारे लिए नहीं। तुम तो बस अच्छे आराम से पड़े हो। अब उस समय पर जब यह चिन्ता हो रही है कि यह बुखार कम हो जाये, बुखार दूर हो जाये तो उस समय पर पसीना आना भी अच्छा है। लेकिन जिस समय पर आप स्वस्थ हो गए, आपको भूख लग रही है, आप भोजन कर रहे हैं और उस समय पर पसीना आये तो वह पसीना आपको बुरा लगता है। रोग को दूर करना है, तो रोग दूर करने की जो feeling है, वह अलग है। अगर स्वस्थ हो जायें, स्वस्थ होने की जो feeling है, वह अलग है। रोग को दूर करना, एक सुख की कल्पना के साथ चलता है। सुख हो रहा है, सुख हो रहा है, सुख आ रहा है लेकिन अभी सुख आया नहीं है। अब समझ पा रहे हो? **यही रोग का उदाहरण, अपनी उस क्षुधा के रोग पर लगाना।** जब हम भूख के प्रतिकार करने के लिए भोजन कर रहे होते हैं तो हम क्या कर रहे हैं? ज्वर अपने अन्दर चढ़ा है, उसको हम दूर कर रहे हैं। वह भी एक तरीके का बुखार होता है, स्वस्थता नहीं है। **स्वस्थता में और रोग की कमी करने में एक अन्तर होता है।** वह अन्तर अगर आपको समझ में आ जायेगा तो संसारी जीवों का सुख और सिद्ध जीवों के सुख का अन्तर आपको समझ में आ जायेगा। क्या कह रहा हूँ? अगर नहीं समझ में आया तो फिर भी कोई एक उदाहरण और दिया जाये। बुखार की कमी होना, ज्वर कम होना और स्वस्थ हो जाना इन दोनों में अन्तर है कि नहीं? जब हमें बुखार चढ़ा होता है, बुखार धीरे-धीरे कम हो रहा होता है, तो हम स्वस्थता की ओर महसूस करते हैं लेकिन हम अभी स्वस्थ नहीं होते हैं। बुखार उतरने के बावजूद भी स्वस्थता नहीं लगती, उसके बावजूद भी एक दिन, दो दिन मुँह में कड़वापन रहता है, कमजोरी रहती है, स्वस्थता तो बहुत देर बाद आती है...जब पहले जैसे खाने के, पीने के लायक हो जायें। मारवाड़ी लोग बैठे हैं, पूछना कभी अगर एक बार बुखार आ जाये और दोबारा अगर हमें स्वस्थता का अनुभव करना पड़े तो कब होगा? जब पहले जैसी बाटी खाते थे, वह बाटी फिर खाने की इच्छा बन जाये और वह बाटी हमारे लिए पचने लग जाये तब समझना कि हाँ! हम स्वस्थ हो गये। बाटी खाते हो न? मारवाड़ी लोग ज्यादा खाते हैं। यह स्वस्थता की पहचान हमारे अन्दर बहुत देर से आती है।

सिद्ध भगवन्तों का सुख, वास्तविक सुख है

कहने का मतलब आपको समझ में इस ढंग से आना चाहिए कि **भगवान सिद्धों का जो सुख होता है... वह वास्तविक सुख होता है। वह दुःख का प्रतिकार नहीं है और हम लोगों का जो सुख होता है...वह दुःख का प्रतिकार होता है।** कोई भी सुख हो, संसार का कोई भी सुख हो, किसी भी संज्ञा से उत्पन्न होने वाला सुख हो, वह सुख हमेशा वास्तविक रूप में होता ही नहीं है। हम उसको सुख का नाम देते हैं लेकिन वह वस्तुतः क्या होता है? वह दुःख का हम प्रतिकार कर रहे होते हैं। ठीक उसी तरह जैसे हम अपने रोग को दूर करने के लिए औषधि पान कर रहे होते हैं। अतः रोग को दूर करने का नाम हमने सुख समझ लिया है। यह हमारी गलती बन बैठी है। इसलिए कहा जा रहा है...सिद्धों का सुख कैसा है? **‘वीत-बाध’ उनके सुख में कोई बाधा नहीं होती और हम जो सुख प्राप्त करते हैं, उसमें हम बाधा को दूर कर रहे होते हैं।** बाधा

से बच जायें, बाधा से बच जायें। गर्मी न लग जाये तो cooler चल जाये, AC चल जाये, बाधा से बच जायें। गर्मी के दिन हैं, तो ठण्डा-ठण्डा मिल जाये। कहीं गरम-गरम पानी न आ जाये। गरम-गरम कोई चीज न आ जाये, वह भी ठण्डी आ जाये, यह बाधा से बचते हैं। ठण्डी के दिन हैं तो कहीं ठण्डा-ठण्डा न आ जाये, गले में न चिपक जाये, कहीं ठण्डा सा पानी आ गया, ठण्डे दाल-चावल आ गए तो आपके दाँतो में ही वह कटकट-कटकट करने लग जायेंगे। वैसे ही ठण्ड में दाँत कटकट कर रहे थे तो हम बाधा से बचते हैं। बाधा से बचने के लिए हमने क्या किया? भोजन कैसा होना चाहिए? ठण्ड के दिनों में गरम-गरम होना चाहिए और गर्मी के दिनों में ठण्डा-ठण्डा होना चाहिए। हम बाधाओं से बचकर के अपना पूरा इन्तजाम करके चलते हैं लेकिन इसको हम सुख कहेंगे? बोलो! हम इसे सुख कैसे कहें? सुख अगर यह है, तो फिर सिद्धों का सुख आपको कभी समझ नहीं आयेगा। यह संसार में मनुष्य के अन्दर की प्रवृत्तियों में जो सुख उत्पन्न होने की भावना है, वह कहीं से कहीं तक सुख है ही नहीं। वह सिर्फ दुःख का प्रतिकार है।

क्या अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर लेना ही सच्चा सुख है?

आपने इच्छा कर ली...मेरे बेटे का selection, IIT में हो जाना चाहिए या IAS की परीक्षा में हो जाना चाहिए। आपने इच्छा कर ली और इच्छा की पूर्ति हो गई। आप उछल पड़े! मेरा बेटा IIT पास हो गया, उसका नम्बर लग गया, merit में नाम आ गया। IAS उसने attempt, वह भी clear कर लिया। Pre हो गया, mains हो गया, interview हो गया। अरे! मेरा बेटा तो अब collector बन गया। यह क्या हो गया? सुख मिल गया न? बोलो! मिल गया, मिल गया? किस बात को लेकर के तुम उछल गए? कि मेरा बेटा IAS पास हो गया। अब जिस पिता ने कभी अपने बेटे से जो उम्मीद ही न की हो कि इसको IAS पास होना है और उसने सिर्फ यही उम्मीद की हो मानो कि यह कुछ भी कमाने लग जाये, कुछ भी कहीं पर थोड़ा-सा भी काम करने लग जाये। सुन रहे हो न? **एक पिता ने क्या उम्मीद की?** कि कुछ भी इसको काम मिल जाये। यह कहीं पर भी किसी दुकान पर भी, कहीं पर नौकरी कर लेगा तो भी यह हमारे लिए बड़ी सुख की बात हो जायेगी। एक ने यह उम्मीद कर ली और उसके बेटे को भी काम मिल गया, उसके बेटे को भी नौकरी मिल गई तो वह भी उसी तरह से उछल पड़ा, जैसे तुम उछले थे। **अब बताओ सुख में क्या अन्तर है?** आपने बड़ा सपना संजोया, आपने बड़ी इच्छाएँ जाहिर कर ली, आपकी बड़ी इच्छा की पूर्ति हो गई तो आप कहेंगे, हमें बड़ा सुख मिल गया। उस आदमी की इच्छा उतनी ही थी, उसको उतनी सी इच्छा में सुख मिल गया। **अगर इच्छा की पूर्ति में ही सुख मिलता है, तो फिर सुख काम करने वाले को भी मिलता है** और जो boss बन कर काम करवा रहा है, उसको भी मिल रहा है। वह सुख है कि वस्तुतः अपनी-अपनी जो इच्छा थी, उस इच्छा की पूर्ति मात्र है। यह सोचने की बात है। **जितनी बड़ी हमने इच्छा कर ली उतनी बड़ी हमारी इच्छा की पूर्ति हो गई।** हम ने समझ लिए कि हमारा उतना बड़ा सुख हो गया लेकिन वह क्या वास्तव में सुख है? वह क्या है? सिर्फ इच्छा की पूर्ति हो जाना और इच्छा की पूर्ति कोई छोटा भी कर रहा है, उसकी छोटी इच्छा है। उसका छोटा सा दिल, छोटी सी आशा। तुम्हारा बड़ा सा दिल, बड़ी सी आशा और आशा की पूर्ति न हो तो बड़ी सी निराशा। उसकी आशा की पूर्ति न हो तो छोटी सी निराशा। बताओ कौन सी अच्छी बात है? क्या चाहिए? छोटा सा दिल, छोटी सी आशा और छोटी सी निराशा? या बड़ा सा दिल, बड़ी सी आशा, बड़ी सी निराशा। क्या चाहिए? बताओ! बोलते नहीं हो।

क्या अति महत्वाकांक्षी होना अच्छा है?

दिल तो छोटा ही होता है। जब उसकी shape और उसकी size से भी बड़ी-बड़ी हमारी इच्छाएँ होने लग जाती हैं तो वह दिल भी जो है, घबड़ाने लग जाता है। लेकिन हम कभी-कभी इतने बड़े हो जाते हैं कि हम छोटी इच्छाओं के साथ जीना ही नहीं चाहते। दिल तो हमारा छोटा ही होता है लेकिन हम उसमें कई बार इतनी बड़ी इच्छाएँ डाल देते हैं और जब उन इच्छाओं की पूर्ति होता हुआ नहीं दिखता है, तो फिर कौन कंपता है? किसकी धड़कन बढ़ती है? किसको ठण्डी लगती है? पसीना किसको दिखता है? वह सब कुछ उसी दिल की घबड़ाहट में होता है और यह घबड़ाहट किसने दी? यह घबड़ाहट आपने दे दी, अपनी अज्ञानता से दे दी या समझ से दे दी, आपके ऊपर है लेकिन परेशान किसको होना पड़ता है? उस छोटे से दिल को परेशान होना पड़ता है। लेकिन आपको उस पर कुछ भी रहम नहीं होता है। **अरे! कम से कम किसी पर रहम करो न करो, अपने छोटे से दिल पर तो रहम करो।** अगर आशा की पूर्ति न हो पाये, हमारी कोई भी desire fulfill न हो पाये तो हम उस समय पर अपने अन्दर इतना उसको safety के साथ रख पायेंगे कि नहीं? लौट कर के जो return में हमको झटका लगेगा, वह उसको न लगे। **हम अपनी सुरक्षा कर लें। इतना भी नहीं कर पाओगे? उस सुख की कल्पना कर रहे हो, सुख मिलेगा, सुख मिलेगा, सुख मिलेगा और सुख मिलते-मिलते नहीं मिला तो क्या होगा?** जितनी ऊँची उछाल ले रहे थे, उतना ही back में आकर के, Newton's के third law के according, उतना ही जबरदस्त झटके के साथ में, आपको दुःख हाथ में आएगा और फिर उस दुःख की feeling किसको होगी? स्वयं आपको होगी। **दिल किसका घबड़ायेगा? भय किसको लगेगा? चिन्ता किसको होगी? पसीना सीने में कहाँ से आयेगा?** कभी-कभी ठण्डा-ठण्डा पसीना आता है? घबड़ाहट का पसीना अलग होता है। वह पसीना कैसा होता है? वह दिल की घबड़ाहट का पसीना है। भय लग गया, इतना तीन वर्ष लगाने के बाद बड़ी-बड़ी JIITO जैसी Institute में पढ़ाने के बाद, बेटे का selection नहीं हो पाया। लाखों रुपए खर्च कर दिए, लाखों रुपए की coaching करवा दी और फिर भी उसका selection नहीं हो पाया तो उसको भी झटका लगता है और माता-पिता को भी झटका लगता है। इसलिए दिल की सुरक्षा किसमें है? छोटा सा दिल, बोलो! सब हमसे ही बुलवाओगे? **आशा कितनी होनी चाहिए? छोटी सी होनी चाहिए। बड़ी आशाओं की पूर्ति हो जाए, अलग बात है लेकिन हमारी आशा छोटी होनी चाहिए, दिल की सुरक्षा उसी में है।** अगर आप यह चाहते हो कि हमारा दिल कभी-भी अचानक से रुक न जाये, उसकी धड़कनें कभी इतनी न बढ़ जाएँ कि हमारे जीने के लाले पड़ जाएँ कि हमें कहीं ले जाना पड़ जाये तो आप अपने दिल को सुरक्षित रखने के लिए उसके अन्दर यह बताकर के रखो कि सुख नाम की कोई चीज दुनिया में है ही नहीं। छोटे दुःख का प्रतिकार कर लो, चाहे बड़े दुःख का प्रतिकार कर लो। जब आप बड़े दुःख का प्रतिकार करोगे तो आप बड़े आदमी कहलाओगे और छोटे दुःख का प्रतिकार करोगे तो छोटे आदमी कहलाओगे। बस! अब आप समझ लो कि छोटा आदमी तुमसे ज्यादा सुखी हो सकता है कि बड़ा आदमी तुमसे ज्यादा सुखी हो सकता है। मन नहीं कह रहा महाराज! बात practically समझ में नहीं आ रही है।

नगर सेठ-सेठानी की विशेषता!

राजा श्रेणिक समझ में आ रहा है कि नहीं? राजा भी बैठे हैं और यहाँ पर देश के नगर सेठ भी बैठे हैं, सेठानी

भी बैठी है। कभी-कभी क्या होता है? ऐसे पुराणों में बहुत से व्याख्यान मिलते हैं, कथानक मिलते हैं। राजा जो होता है, उस राजा से ज्यादा समृद्ध सेठ होते हैं...नगर सेठ। आज वैसे ही संयोग बन गया है। जैसे आपने सुकुमाल का चरित्र सुना होगा न? वह सुकुमाल सेठ था, सेठ का बेटा था वह सुकुमाल और राजा था वह दूसरा था। राजा के पास में भी वह मखमल की जूती बनाने का और मखमल खरीदने के लिए पैसा नहीं था जितना वह सुकुमाल सेठ की सेठानी के पास में था। उसकी माँ के पास में था। कभी-कभी ऐसा भी होता है और अक्सर होता है। इसलिए पहले के समय में बड़े-बड़े जो राजा भी हुआ करते थे, वे नगर सेठों पर पूरा ध्यान रखा करते थे। कौन नगर सेठ हैं? उनकी एक पहचान अलग रहा करती थी और उन सेठ को अलग value दी जाती थी। उन सेठों की बात भी अलग सुनी जाती थी। अगर वह राज-दरबार में कभी भी उपस्थित हो जाएँ तो राजा उन्हें सम्मान के साथ में राज दरबार में बिठाते थे। यह नगर सेठ है, नगर सेठानी है। सबको पता होता था और हर नगर में एक सेठ जरूर ऐसे हुआ करते थे। राजा उनके बारे में पूरी की पूरी जानकारी रखता था।

राजा श्रेणिक की कथा गताँक से आगे

नंदी ग्राम में भेजा बकरा



लेकिन अगर किसी भी तरह की बाधाएँ आती हैं तो उन बाधाओं को दूर करने का काम किसका है? पहले सेठ जी का नहीं है। पहले किसका है? **पहले राजा का कर्तव्य है। राज्य के ऊपर कोई बाधा आ रही है, तो वह कौन दूर करेगा? राजा करेगा।** राजा ही अगर बाधा देने लग जाये तो फिर कौन दूर करेगा? राजा श्रेणिक ही जब नंदी ग्राम के लोगों को बाधा देने लग गया और जब यह कहने लग गया कि जाओ अपने दूत को भेज करके उन नंदी ग्राम के लोगों को यह आदेश देना। क्या आदेश दिया था? कल बताया था। क्या भेजा था उसने? एक बकरा भेजा था और उससे कहा था कि उन गाँव के लोगों से कहना, इस बकरे को एक महीने तक अपने पास में रखना। कभी भी भूखा न रह जाये। अच्छा खिलाना-पिलाना लेकिन यह जितनी मोटाई वाला है, जितना स्थूल है, उतना ही स्थूल रहना चाहिए। इसका वजन पहले नाप लेना और बाद में जब मिले तो मुझे उतने ही वजन का मिलना चाहिए। कमजोर भी न हो जाए, मोटा भी न हो जाये। यह किसका प्रश्न था? **यह राजा श्रेणिक का प्रश्न था।** यह उसकी बुद्धि का चातुर्य था कि नंदी गाँव के लोगों को परेशान करने के लिए, उनसे अपने अपमान का बदला लेने के लिए उसने इस तरह से अपना एक दूत भेज करके, वहाँ पर अपना एक कार्य करने के लिए कहा। अब जब उस गाँव के लोग परेशान हो गए, कहने लगे...भाई! यह अपनी कैसी परीक्षा हो रही है? ऐसा कैसे हो सकता है? सामने राजा के दूत खड़े हैं। खिलाना तो पड़ेगा, अच्छा-अच्छा खिलाना है, यह भी कहा गया है। खिलाएँगे-पिलाएँगे तो पट्टा मोटा तो होगा ही और जब मोटा हो गया तो अपने लिए फिर आफत हो जाएगी। राजा फिर अपने को गाँव से बाहर निकाल देगा। अपनी परेशानी सामने खड़ी है। कैसे करें? **अब जब वह नंदी गाँव के लोग परेशानी में पड़े थे।** संयोग से उसी समय पर काफी दिन हो चुके थे। आप भूल गये कि श्रेणिक अकेले अपने राजमहल में आये थे। राज्य-तिलक उनका अकेला हो गया था। लेकिन उनका विवाह किससे हो गया था? नंदश्री से हो चुका था और वह नंदश्री किसकी पुत्री थी? सेठ इंद्रदत्त की पुत्री थी और वहाँ पुत्री से विवाह होने के बावजूद भी राजा

श्रेणिक, वहाँ इतने दिनों तक रहे थे कि उनके एक पुत्र का जन्म हो गया था और पुत्र भी बड़ा हो गया था जिसका नाम अभय कुमार रखा गया था। वह इंद्रदत्त अपनी बेटी, अपने बेटी के पुत्र के साथ में बहुत दिनों के बाद में, सोच करके निकला कि देखो! श्रेणिक अपने राज्यभार को सम्भालने लग गये हैं। लेकिन इन्होंने बहुत दिनों से हमें याद नहीं किया है। चलो! हम ही इनके राज्य की ओर चलते हैं। तब वे चले और रास्ते में वह नंदी गाँव पड़ा और उस नंदी गाँव में आ करके, **उसी समय पर वह अभय कुमार, जो उनके ही पुत्र हैं, वे वहाँ पर रुके हुए हैं।** गाँव के लोगों को उन्होंने देखा, हर गाँव के आदमी के ऊपर एक चिन्ता सवार है। बोले, क्या चिन्ता है? क्या हो गया? इस गाँव का हर आदमी परेशान क्यों दिखाई दे रहा है? जब दो चार लोगों से पूछा तो उन्होंने बताया कि एक अपने राजा ने, मगध के सम्राट ने अपने गाँव के पड़ोसी गाँव के लोगों के लिए बड़ा उपद्रव सा खड़ा कर रखा है और एक ऐसा उन्होंने समाचार भेज रखा है कि उसकी पूर्ति हम अगर नहीं कर पाते हैं तो हमारे लिए यह गाँव छोड़ना पड़ जायेगा। अब न जाने वे किस बात का बदला ले रहे हैं? मेरे ऊपर क्यों अप्रसन्न हैं? इस गाँव के लोगों को क्यों वह दुःखी बनाकर के सुखी होना चाहते हैं? लेकिन यह सब बातें होते हुए भी, राजा के सामने कोई कुछ बोल नहीं सकता। राजा के सामने कोई यूँ नहीं कह सकता, यह हमसे आप ऐसा व्यवहार क्यों कर रहे हैं? राजा की आज्ञा है और इसी चिन्ता के कारण से इस गाँव के लोग सब परेशान हैं और यह परेशानी जब अभय कुमार को पता पड़ी तो अभय कुमार ने गाँव के लोगों को एक दिलासा दी। दिलासा जानते हो न? दिल की छोटी सी आशा, छोटी दिलासा। दिलासा क्या? एक उनके अन्दर, एक सांत्वना दी, आप चिन्ता नहीं करो। अगर आप इस कारण से पूरे गाँव के लोग घबड़ाये हुए हो तो मैं आपको एक युक्ति बताता हूँ। गाँव के लोग, सब उनको बड़े आदर से देखने लग गये कि यह अगर मेरी समस्या को सुलझा दे तो मैं इसको बहुत आदर के साथ में, पूरे गाँव के सम्मान के साथ में, यहाँ पर सारे गाँव के लोग इनका पूजा करें, इनकी सम्मान करेंगे। इनको गाँव का मुखिया बना देंगे। लेकिन यह हमारी समस्या पहले सुलझ जाये। तब अभय कुमार ने कहा...आप परेशान न हो, कोई बहुत बड़ी बात नहीं। जो यह सामने बकरा बांधा हुआ है, इसको आप खिलाओ पिलाओ। खिला-ने-पिलाने के बाद में, इसको जितना जैसे मान लो अगर आपने दिन भर इसको बांध रखा है, तो थोड़ी देर के लिए इसको ऐसी जगह पर ले जाना, जहाँ इसके थोड़ी दूर दो व्याघ्र खड़े हो...व्याघ्र, बाघ लेकिन इसके ऊपर झपट न पाएँ। **इसको उन दोनों बाघों के बीच में बांध देना।** उनको भी बांध देना और इसको भी बांध देना। क्या करेगा? जब उन दो बाघों के बीच में रहेगा तो क्या होगा? उसका दिल अगर थोड़ा भी जलेबी खा-खा करके बड़ा हो गया होगा तो उन बाघों को अपने सामने देख-देख करके अपने आप जो है, उसका दिल फिर वहीं पर हो जायेगा। दिल छोटा हो जायेगा तो उसका शरीर भी अपने आप, पसीना उसका इतना निकल जाएगा डर के कारण से, वह अपनी सारी energy, यह सोच करके छोड़ बैठेगा कि इनसे कैसे बचा जाये? **क्योंकि आदमी जो खाता है, उससे उसका शरीर नहीं बनता। अगर आदमी को चिन्ता खाने लग जाती है, तो फिर उसको किसी भी तरह के भोजन से उसका शरीर नहीं बन सकता।** आपने इधर अच्छा खा भी लिया और अच्छे उधर चिन्ता में भी पड़ गये तो आपका खाना-पीना सब बराबर है। इधर उसको अच्छा खिलाया-पिलाया और खिलाने-पिलाने के बाद में उसको ले जाकर के बाघ के सामने खड़ा कर दिया। क्या हो गया? जहाँ जीने मरने की चिन्ता पड़ जाती है, वहाँ पर सब कुछ पच जाता है। अपने आप खून सूखने लग जाता है, तो बस! यही रोज होने लग गया। इधर खिलाये पिलाये और इधर उसको बाघ के सामने खड़ा कर दिये। फिर खिलाये पिलाये, फिर बाघ के सामने खड़ा कर दिये और ऐसा करते-

करते उसका weight बराबर नापते रहे और weight न तो, एक किलो तो बहुत बड़ा होता है, एक ग्राम भी बढ़ा नहीं। उसकी काया का किसी भी तरीके से shape भी एक inch भी बढ़ा नहीं और न कुछ कम हुआ। ऐसा करते-करते एक महीने के उपरान्त उस बकरे को श्रेणिक के राजमहल में पहुँचा दिया गया और कहा गया कि तुम्हारा बकरा जैसा था, ले लो वैसा ही है।

आत्मिक सुख की परिभाषा

इसलिए सांसारिक सुख की यह परिभाषा है कि जब तक आप बाधाएँ मिटाते रहोगे तब तक ही आपके लिए दुःख से दूर होने का काम होगा और बस! वही आपका सुख है। लेकिन उसका नाम सुख नहीं है। सुख! किसका नाम है? जहाँ बाधाएँ मिट चुकी हो, जहाँ बाधाएँ सामने हो ही नहीं। **बिना बाधा का जो भाव होगा वह आत्मा का आत्मिक सुख कहलायेगा।** कुछ समझ पा रहे हो कि नहीं? इतनी देर से सिखा रहा हूँ। सिद्धों का सुख कैसा? जहाँ कोई तरह का बाधा नहीं, disturbance नहीं, कोई blockage नहीं, किसी की किसी भी तरीके का कोई hindrance नहीं। इस तरीके की जो सुख की परिणति होती है, उसी का नाम कहलाता है... **‘वीत-बाध’** बाधा से रहित सुख। **हम लोगों का सुख कैसा है? बाधा मिटाते रहो, बाधा मिटाते रहो, बाधा मिटाते रहो। वह मिटाते-मिटाने ही हम मिट जाते हैं, सुख कभी मिलता नहीं है।** यह हम लोगों की हालत है। समझ पा रहे हो कि नहीं? इसलिए अपने सुख की तुलना जब सिद्धों के सुख से करो तो यह बहुत बड़ा difference दिमाग में ही रखना। किसी को समझ नहीं आता इसलिए लोग कहते रहते हैं- भाई! उनको क्या सुख? उनको क्या सुख? वहाँ कुछ खाने को ही नहीं मिलेगा। बच्चों से कहो तो maggie नहीं मिलेगी, कुरकुरे नहीं मिलेंगे, वहाँ बिस्कुट नहीं मिलेगा, वहाँ चाय नहीं मिलेगी तो काहे का का सुख? बच्चों को क्या समझ में आएगा कि सुख किसे कहते हैं? उनका तो जीवन बस क्या जा रहा है? माता-पिता के लाड़-प्यार में जा रहा है, खेलाने-पिलाने में पालन-पोषण में जा रहा है। इसलिए उन्हें उसी में सुख लगता है। तुम तो बड़े हो गये हो न? तुम तो समझ सकते हो न? जिनके बच्चे हो गये, बच्चों के बच्चे हो गये, अब तो समझ सकते हो कि सुख किसका नाम है? हम क्या कर रहे हैं? **सुख वस्तुतः किसे कहते हैं?** ऐसे सुख पर श्रद्धान कर लेना ही मुक्ति का मार्ग है। **केवल श्रद्धा कर लो, आस्था बैठा लो, सुख किसे कहते हैं? जिसे हम सुख कहते हैं...वह सुख किस चिड़िया का नाम है?** ऐसे सुख का नाम जहाँ कोई बाधा हो ही न, आने की तो कोई सम्भावना है ही न और प्रतिकार तो वहाँ पर किसी चीज का है ही नहीं, **वहाँ सिर्फ सुख की अनुभूति है। इसलिए उसको कहा जाता है...सुखानुभूति।** सिद्धों को जो अनुभूति होती है, उसको बोलते हैं...सुखानुभूति, वह सुख की अनुभूति है। **हम लोगों की अनुभूति क्या है? दुःख प्रतिकार अनुभूति।** हम लोगों की अनुभूति क्या होती है? दुःख का प्रतिकार करते रहो, प्रतिकार करते रहो। बस यह हटाओ, यह हटाओ, यह हटाओ, इसमें दुःख न आ जाये, यह बाधा न आ जाये। हम लोग जिन्दगी भर यही करते रहते हैं। समझ पा रहे हो कि नहीं? भगवान के सुख को, सिद्ध सुख को, अनुभूति में क्या आयेगा? वह सुख ही अनुभूति में आयेगा और हम लोगों की अनुभूति में क्या आयेगा? दुःख का प्रतिकार, दुःख से बचना, दुःख से बचना। दुःख प्रतिकार अनुभूति यह हमारे लिए सुख नाम पाता है लेकिन सुख नाम का भी उसमें नहीं होता है क्योंकि सुख के point तक तो हम पहुँच ही नहीं पाते हैं। हम इसी तरीके के प्रतिकार में जिन्दगी निकाल देते हैं। अब आ गया समझ में... **‘वीत-बाध’?**

बच्चे कैसे समझेंगे कि सुख क्या है?

यह भगवान सिद्धों का विशेषण है इसलिए अगर छोटे बच्चों को यह भगवान सिद्धों की बातें समझ में नहीं आती हैं तो कम से कम आप बड़े बच्चों को आ जाना चाहिए और जब बड़े बच्चे कोई इस तरीके से मजाक उड़ाएँ, सिद्ध भगवान की बातों का तो आप उन्हें भले ही न समझा पाएँ लेकिन आप उन्हें पुचकार करके कहें...बेटा! अभी तुम छोटे हो। तुम्हारी समझ में अभी नहीं आयेगा, थोड़े से बड़े हो जाओ तब समझायेंगे तुम्हें कि सुख क्या कहलाता है? अभी तो तुम सुख में पल रहे हो, अभी तुम्हें क्या समझ में आयेगा, **सुख क्या होता है? दुःख क्या होता है?** अभी तुम्हें पता ही नहीं है। ऐसा जब आप बच्चों के लिए भी कभी यह प्रवचन भी सुना पाये, उनके कान में लगाकर के उन्हें कभी समझा पाये तब शायद किसी बड़े बच्चे की समझ में भी आ सकता है कि सुख क्या होता है? हम दुःख में क्या कर रहे हैं? आपके बच्चे बहुत अच्छे भी हैं और इसलिए भी अच्छे हैं कि उन्हें भी आपकी तरह लगन लगी रहती है। जैसे आप लोग प्रतिदिन आकर के यहाँ पर सुनने की लगन के साथ में सुनते हो। बच्चे आपके रोजाना स्कूल जाते हैं, कॉलेज जाते हैं, रोजाना नहीं सुन पाते हैं लेकिन जब एक बार पिछले sunday, जब मैं बच्चों के साथ में बैठा और बच्चे हमारे सामने बैठे तो उन सब बच्चों के अन्दर इतनी खुशी उत्पन्न हुई कि उन सब बच्चों के अन्दर, यह लगने लगा कि महाराज! यह class हमारी और अभी आगे चलना चाहिए। उन्हीं की इस भावना को देखते हुए, अगले sunday भी उनके लिए नियुक्त किया गया है। शायद यह बातें हम अगर उन बड़े बच्चों को भी समझायेंगे तो समझ में आ जाएगी। ऐसी बात नहीं कि आप ही की समझ में आएगा। आपकी समझ में भले ही कम आये लेकिन उनकी समझ में बहुत अच्छे से आ जाएगी क्योंकि logic जितना अच्छे से वह समझते हैं, उतना आप नहीं समझते हो। इसलिए उनके लिए भी class की जरूरत है और अगर आप उन्हीं बच्चों के और अच्छे ढंग से, उनके भीतर उनकी chemistry को बदलने के लिए, उनके भीतर एक अच्छी शान्ति और समझ का भाव लाने के लिए, अगर आप एक और programing, अपने सामने देखना चाहते हो तो वह भी एक 17 अगस्त से होने वाली programing है। उसमें भी आप लाख कहते रहो, बच्चा हमारा बहुत शैतान है, बहुत नटखट है। अगर वह पाँच दिन शान्ति से रह गया तो आने वाले 50 दिनों में वह कभी भी आपको परेशान नहीं करेगा। आगे 5 साल तक भी उसकी अगर charging हो गई तो कोई बड़ी बात मत समझना। अगर 5 साल के लिए charging न हो पाये तो हर साल में ऐसा कार्यक्रम होता रहेगा, फिर charge करा लेना। **अगर दवाई लग रही है, तो हम बार-बार भी तो डॉक्टर के पास जा सकते हैं न?** हमारे लिए तो यही खुशी की बात हो जानी चाहिए कि हाँ! दवाई लग रही है, लग रही है। चलो एक बार लग गई महाराज! दोबारा कब फिर इस तरीके का शिविर लगेगा? दोबारा फिर दवाई दिलवा देंगे। यह दवाई दिलाते रहो ताकि उन डॉक्टरों की कीमती दवाईयाँ न देना पड़ें, यहाँ सब दवाईयाँ free में मिल रही हैं। सब free में हैं लेकिन इन दवाईयों की आप कीमत समझो और इसी से आपका ज्वर उतरेगा। इसी से आपको स्वस्थता मिलेगी तभी आपको सुख की भी कुछ थोड़ी बहुत परिभाषा समझ में आयेगी। इन्हीं भावनाओं के साथ कि अब राजा श्रेणिक भी उस बकरे को देखकर के यह समझने लग गया कि वहाँ पर भी रहने वाले गाँव के लोग चतुर हैं तो उसकी चिन्ता फिर और बढ़ गई, कम नहीं हुई। अब जब चिन्ता बढ़ गई तो फिर वह एक दूसरा पासा और फेंकता है। वह क्या फेंकेगा? वह कल बताया जायेगा।

20. सच्चा सुख तो सिद्ध अवस्था में ही है

सिद्ध भगवान के गुण



SCAN TO WATCH

सिद्ध भक्ति के माध्यम से सिद्धों के गुणों का वर्णन निरन्तर करते हुए आप लोगों को प्रसन्नता हो रही है या नहीं हो रही है, यह तो मुझे नहीं पता लेकिन **मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है कि हम सिद्ध भगवान के गुणों का भी कुछ समय तक वर्णन कर सकते हैं।** जो चीज वचनों के अगोचर है, चिन्तन के अगोचर है, उसे भी कह पाना बहुत कठिन होता है, समझा पाना और कठिन होता है। समझ पाना फिर भी सरल होता है लेकिन समझा पाना कठिन होता है, कोशिश की जाती है। आचार्यों के अभिप्राय के अनुसार उन्हीं बातों को, उन्हीं सूत्रों को, उन्हीं बीज मंत्रों को थोड़ा सा हम अपनी शक्ति से उद्धाटित करें।

भगवान के सुख को जानने वाला कौन?

भगवान के सुखों का कोई भी ज्ञाता नहीं, प्रमाता नहीं। वह स्वयं अपने ही सुख का स्वयं में अनुभव करने की क्षमता रखते हैं। इसलिए यह प्रश्न तो पहले ही खड़ा कर दिया था... **'कोऽस्य सौख्यस्य माता'** इन भगवान के सुख को जानने वाला कौन हो सकता है? कोई नहीं हो सकता। यह आचार्य पूज्यपाद महाराज ने पहले ही अपने श्लोक में यह कह दिया, छह नम्बर के उस काव्य में कि भगवान के सुख का कोई भी प्रमाता नहीं है, उनके सुख को कोई भी जानने वाला नहीं है। लेकिन ऐसा कहने के बाद भी उनके मन में आया कि हम भले ही भगवान के सुख को नहीं जान सकते लेकिन जो कुछ भी मोटा-मोटा कुछ विशेषणों के साथ में कहा जा सकता है, उसे जरूर कहना चाहिए। क्योंकि **कोई भी कार्य अगर हम कटिबद्ध होकर के करते हैं और भले ही उस कार्य को करने में हमें दिखाई दे रहा हो कि यह कार्य हमसे नहीं हो सकता है लेकिन फिर भी शक्ति अनुसार तो वह कार्य करना ही चाहिए, ऐसा हमेशा आचार्यों का कहना रहा है।** अगर यह नहीं होता तो फिर कभी भी हम भगवान की स्तुति कर ही नहीं सकते। हम भगवान के गुणों का वर्णन कर ही नहीं सकते क्योंकि अगर हम यही सोच ले कि भगवान के गुणों का कभी वर्णन हो ही नहीं सकता तो फिर हम कभी स्तुति कर ही नहीं सकते। इसलिए ऐसा सोच करके भी हमें कुछ न कुछ करना पड़ता है। जैसे आप लोग कभी-कभी कहते हैं...महाराज! यह काम हमसे नहीं हो सकता, बहुत बड़ा काम है। हमारे बस का नहीं है, फिर भी आपका मन कहता है...नहीं! करते हैं, आप आशीर्वाद दीजिए..हो जाएगा।

सुख का वर्णन

इसी तरीके से भगवान के सुख का वर्णन करने वाला कौन हो सकता है? यह आचार्य कहने के बावजूद भी उन्होंने आगे सुख का ही वर्णन किया। पहली लाइन में वह 'आत्मोपादान-सिद्धं, स्वय-मतिशय-वद्' यह दूसरा विशेषण, 'वीत-बाधं' यह तीसरा विशेषण और चौथा विशेषण था 'विशालं'। कौन सा? 'विशालं', फिर दूसरी लाइन में आता है... 'वृद्धि-ह्रास-व्यपेतं' वह भगवान का सुख इस पाँचवे विशेषण के साथ जब

आता है, तो उसमें कहा जाता है...वह वृद्धि और ह्रास से रहित होता है।

सुख कैसा होता है?

चौथे विशेषण में वे कहते हैं...यह सुख कैसा होता है? विशाल होता है। विशाल का मतलब क्या बोला जाए? बहुत-बड़ा, बहुत-बड़ा। कितना बड़ा? आप अपने हाथ उठा करके बता दे, उतना बड़ा। कितना बड़ा? जितना बड़ा हो सकता है, उतना बड़ा। **भगवान का सुख कितना है? बहुत बड़ा है, बहुत विशाल है और विशाल का मतलब क्या हो जाता है?** अगर हम विशाल को जानना चाहते हैं, तो फिर हम आकाश को देखना शुरू करें। जैसे आकाश का कोई भी अता-पता नहीं होता, अनन्त होता है, ऐसे ही भगवान का सुख भी मापने योग्य नहीं होता है, विशाल होता है। **विशाल होने का यह भाव यह बताता है कि भगवान के सुख की कोई सीमा नहीं है।** अगर हम यूँ भी कह दे कि हमने यह सुख अनुभव कर लिया तो यह कहना भी गलत हो जाएगा। अगर भगवान ने यह भी कह दिया कि इस सुख का अन्त तक हमने अनुभव कर लिया है, तो यह कहना भी गलत हो जाएगा। भगवान ने सुख का अनुभव किया लेकिन वह सुख का अनुभव उसी रूप में किया। किस रूप में? जिस रूप में वह है। वह विशाल रूप में है, तो विशाल रूप में किया, वह अनन्त रूप में है, अनन्त रूप में किया। अगर यूँ कह दिया जाएगा कि भगवान ने अपने सुख का अनुभव last तक, अन्तिम छोर तक कर लिया तो फिर वह अन्त हो जाएगा। फिर वह अनन्त नहीं रह जाएगा। समझ पा रहे हो? अनन्त की ओर दिमाग चलता नहीं है, आकाश में दिमाग उड़ता नहीं है, वह तो उड़ना पड़ता है। गर्मी का समय होते हुए भी भले ही ठण्डाई पी कर नहीं आए हो तो भी दिमाग अगर चलेगा तो चल सकता है। वैसे लगता है...थोड़ा-थोड़ा तो सब खा-पी कर आते होंगे। सीधा पूजा करने के बाद यहीं बैठ जाते हो कि पहले घर पर हो आते हो फिर यहाँ पर आते हो? थोड़ा सा जब तक शरीर में कुछ ठण्डापन न पहुँचे तब तक भी दिमाग में कुछ ठण्डापन आता नहीं है, ऐसी कुछ लोगों की धारणा है। १० तो महाराज बहुत देर से बजते हैं। १० बजे तक तो जो है, क्या है? दिमाग में चक्कर आने की भी सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिए बहुत से लोग तो थोड़ा-थोड़ा कुछ न कुछ breakfast, कुछ थोड़ा दूध-पानी, कुछ न कुछ ले करके, अब इत्मीनान से सुनेंगे। सही बात है? कोई बात नहीं अभी भोजन नहीं किया है, थोड़ा सा जल-पान ही किया। कुछ खास नहीं किया महाराज! थोड़ा सा जिसको हल्का सा चाय-पानी कहते हैं, यह अगर होने के बावजूद भी आपकी बुद्धि में कोई बात घुस रही है, घुस जाए तो भी हम समझते हैं कि कोई बात नहीं, अच्छी बात है लेकिन बात बुद्धि में प्रविष्ट होनी चाहिए। भगवान का सुख कैसा है? विशाल है और जब हम विशाल की कल्पना करते हैं, तो फिर हमारे सामने कोई बीच में शाला नहीं आती है। विशाल का मतलब शाला, शाल से रहित।

शाला क्या होती है?

शाला क्या होती है, जानते हो? बीच में जब हम कहीं पर प्रवेश कर रहे हों, जैसे हम भगवान के समवशरण में प्रवेश करते हैं तो समवशरण में प्रवेश करते हुए हमारे सामने बहुत सारे गोल-गोल दो-तीन बार परकोटे आते हैं, उन्हें शाल कहा जाता है। वह कुछ भी, किसी भी तरह की बीच में बाधाएँ न हो, boundary न हो, किसी भी तरीके के उसमें कोई gate न हो, उसका नाम है- विशाल। आकाश में कभी कोई boundary होती है? जमीन की boundary हो सकती है लेकिन आकाश की कोई boundary बना सकते हो? बना तो लेते हैं महाराज! जब हमने अपना area cover कर लिया, भाई! हमारा ६० x ६० का हमारा area है,

तो उसके ऊपर का भी आकाश जितना है, वह सब हमारा हो गया। ऐसे ही मानते हो न? बड़े-बड़े शहरों में यह आकाश भी बिकता है। अगर आपने कोई property खरीदी है, तो आपके ६० x ६० का जो area है, बस वह area आपका first floor तक ही आपका है। second floor पर आपका अधिकार नहीं है, third floor पर आपका अधिकार नहीं है, top floor पर आपका अधिकार नहीं है, वह किसी और की हो सकती है। वहाँ आकाश भी बिकता है। जब हम boundary बना देते हैं तो उस boundary में जो आकाश रह जाता है, उसे हम अपना कह लेते हैं। बाकी के आकाश को हम कह देते हैं- भाई! यह अपना नहीं है। ऐसा भी कर लेते हैं न? जब हमने किसी की plotting कर ली और एक boundary बना ली, तो उस boundary के अन्दर जो आकाश है, वह अपना है। अब आकाश की भी हमने boundary बना ली। क्या वह boundary सही है? क्या वह आकाश में boundary बन गई? क्या वह आकाश में कोई line खिंच गई? आकाश में कोई line नहीं खींची, यह हमने अपने मन से एक line खींच दी। आकाश में line खींचना कभी possible नहीं है।

विशाल और विशालता का भाव

आकाश अनन्त है, विशाल है और उसकी कोई भी सीमा रेखा नहीं बन सकती, उसकी कोई भी boundary नहीं बन सकती। **जिसकी boundary बन गई फिर वह विशाल नहीं रह जाता, वह सीमित हो गया। जिसमें किसी भी तरीके का कोई भी अवरोध नहीं है, जिसमें किसी भी तरीके की कोई भी सीमांकन नहीं है, उसका नाम है- विशाल।** आप बोलते हैं...आकाश बहुत विशाल है, हमारा हृदय बहुत विशाल है। हृदय भी विशाल होता है? कल तो बताया था, हृदय बहुत छोटा सा होता है। विशाल क्या होता है? हमारे भाव जो हैं, हमारे परिणाम जो हैं, वे विशाल हो सकते हैं। जिन परिणामों के माध्यम से हम पूरे आकाश को जान लें, आकाश में रहने वाले सभी जीव आदि, अजीव द्रव्यों को भी हम पहचान लें और सब द्रव्यों के प्रति, सभी जीव आदि तत्वों के प्रति हम अपने अन्दर एक भाव ले आएँ सबके प्रति, ये सब जीव हमारे ही मित्र हैं, हमारी किसी से कोई भी दुश्मनी नहीं है, ये सब जीव हमारे हित में हैं, ऐसा विचार करके जब हम अपने मन में एक भाव लाते हैं तो इसी को कहते हैं- विशालता का भाव, हृदय विशाल हो जाएगा। भाव विशाल होगा तो हृदय भी विशाल हो जाएगा।

भाव की सीमा नहीं होती

हृदय अगर हम एक वस्तु की ओर देखते हैं तो वस्तु अपने आप में संकुचित हो सकती है लेकिन उसका भाव जो भीतर है, वह बहुत विशाल हो सकता है। **इसी तरीके से जब हम किसी भी द्रव्य की कल्पना करते हैं तो वह द्रव्य सीमित हो सकता है लेकिन उसके भीतर का भाव अनगिनत होता है, विशाल होता है। आत्मा एक हो सकती है लेकिन उसके भाव, उसके गुण, उसकी विशुद्धियाँ, वे सब अनगिनत होती हैं।** इसलिए वस्तु सीमित हो सकती है, लेकिन वस्तु के भीतर का जो भाव है, वह असीम होता है, वह विशाल होता है। भगवान सिद्ध, उनकी संख्या हो सकती है। एक सिद्ध की अगर हम परिकल्पना करें तो एक सिद्ध भी हमारे सामने रहें तो सिद्ध एक हमें दिख सकते हैं लेकिन उनके भीतर का जो भाव होगा, वह हमें कभी भी ओर-छोर तक दिखाई नहीं देगा। जिसका ओर-छोर दिख गया, वह विशाल नहीं होता। संख्या में जब हम किसी वस्तु को देखेंगे तो उसका ओर-छोर दिख सकता है। यह १ है, ये २ है, ये ४ है, ये १० है,

हमारे ओर-छोर दिख रहा है। यह १ व्यक्ति है, १० व्यक्ति हैं, ५० व्यक्ति हैं, इनकी संख्या दिख रही है लेकिन अगर भीतर भाव दिखेंगे तो भाव का कोई भी ओर-छोर नहीं होता, भाव हमेशा सीमातीत होता है। भाव की अनन्तता के कारण से उसे विशाल कहा जाता है और **जब भावों में ही ज्ञान का भाव आ जाता है, भाव में ही सुख का भाव आ जाता है, तो वह ज्ञान भी विशाल हो जाता है और सुख भी विशाल हो जाता है।** यहाँ हम सुख की बात कर रहे हैं। भगवान का सुख कैसा है? सुख बहुत विशाल है। जब विशाल कहें तो केवल तीन अक्षर न दिखाई दे, उसे तीन लोक से भी हमें वह बड़ा दिखाई दे, तो उसका नाम विशाल है।

आकाश एक अखण्ड द्रव्य है

क्योंकि लोक के अन्दर भी आकाश है और लोक के परे भी आकाश है, आकाश को हम कभी भी घेर नहीं सकते। आकाश अपने आप में एक अखण्ड द्रव्य है। आकाश के कभी टुकड़े नहीं होते हैं। वह तो हमारी अपनी ज्ञान की एक क्षमता है, हमारे अपने व्यवहार का एक तरीका है, जो हम समझ लेते हैं...भाई! इतना area हमारा है, बाकी के area से हमें कोई प्रयोजन नहीं है, आप जानो आपका काम जाने। लेकिन क्या उतना भी area हमारा हो जाता है? वह भी हमारा नहीं होता। आकाश कभी भी किसी का नहीं होता क्योंकि जो विशाल होता है, वह कभी किसी का नहीं हो सकता। **जो अनन्त के रूप में छा रहा है, वह कभी सीमाओं में बंध नहीं सकता और इसलिए जब हम कहते हैं...यह लोकाकाश है, यह अलोकाकाश है।** यह भी हमारी बुद्धि से होने वाला विभाजन है। वस्तुतः आकाश का वह विभाजन नहीं होता, आकाश तो एक अखण्ड द्रव्य होता है। आकाश कैसा द्रव्य है? एक है कि अनेक है? आकाश कितना द्रव्य है? एक द्रव्य है। जीव तो बहुत सारे हो सकते हैं लेकिन आकाश एक है। एक होते हुए भी वह कैसा है? अगर उसके part हो जाएँ, divination हो जाए तो वह खण्ड कहलाए और जिसका divination न हो सके तो वह अखण्ड द्रव्य है। **आकाश एक अखण्ड है और उस अखण्ड आकाश में भी जब हम यह कहते हैं...यह लोकाकाश है, यह अलोकाकाश है, यह हमारी अपनी एक विभाजन करने की एक विवक्षा होती है। सर्वथा वह विभाजन योग्य नहीं है, वह हमारे अपनी एक विवक्षा के कारण से है।** जैसे हमने बना लिया, बता दिया कि भाई जितनी जगह में यह मन्दिर बना हुआ है, उतना मन्दिर जो है, यह जैन मन्दिर है। यह भगवान का परिसर है, उसके अलावा हम नहीं जानते। यह हमारी विवक्षा हो गई। जितनी जगह में हमने अपना कमरा ले लिया, वह कमरा हमारा हो गया। यह हमारी विवक्षा हो गई लेकिन आकाश कभी भी आपके कमरों से खण्डित नहीं हो सकता, दीवारें उठाने से आकाश कभी भी टूट नहीं सकता, उसके कभी part नहीं हो सकते हैं। **आकाश तो हमेशा एक रहता है, अखण्ड रहता है और उस एक अखण्ड आकाश के कारण से ही उसकी विशालता बनी रहती है। ठीक इसी तरह से भगवान का सुख भी कैसा होता है? विशाल कहने का मतलब भगवान का सुख, जिसका कोई ओर-छोर नहीं है।** भगवान का सुख कैसा? अनन्त रूप में है और जब वह अनन्त रूप में है, उसका ओर-छोर नहीं है, तो उसी के कारण से यह जो आगे वाला विशेषण है, उससे connect होता है।

वृद्धि और हास से रहित सुख

‘वृद्धि-हास-व्यपेतं’ वृद्धि और हास से रहित है। **जो विशाल होगा वह एक रूप में होगा और जो एक रूप में होगा उसकी वृद्धि भी नहीं होगी, उसका हास भी नहीं होगा।** आकाश को आप बढ़ा सकते हो?

खींच सकते हो? उसकी वृद्धि कर सकते हो? नहीं कर सकते। आकाश को आप छोटा बना सकते हो? उसको संकुचित कर सकते हो? उसके खण्ड करके उसे टुकड़ों-टुकड़ों में बहुत बारीक कर सकते हो? नहीं कर सकते। आकाश कभी न वृद्धि को प्राप्त होता है और न ह्रास को प्राप्त होता है, आकाश जितना है उतना ही रहता है। इसी तरह से भगवान सिद्धों का सुख जैसा एक बार उपलब्ध हो जाता है, वह वैसा ही बना रहता है। न बढ़ता है, न कम होता है।

सुख का लक्षण

अब आप समझो... सुख जो हो वह न बढ़े, न घटे, एक समान बना रहे तो वह सुख है। जिसमें घटता-बढ़तापन दिखाई दे, जो कमती-ज्यादा हो जाए... समझना वह सुख, सुख नहीं है। कल भी आपसे बहुत कुछ कहा था। आप सुख नहीं प्राप्त कर रहे हो। कल पूरा का पूरा भाव क्या था? आप दुःख की कमी कर रहे हो, दुःख से बच रहे हो। बस! इतना कर रहे हो, सुख प्राप्त नहीं कर रहे हो क्योंकि सुख का अगर कोई भी लक्षण है, तो क्या है? सुख तो एक समान रहता है, हमेशा equal रहेगा। न उसमें किसी भी तरीके से increment होगा, न decrement होगा। वह हमेशा एक समान रहने वाला होगा तो सुख होगा। लेकिन हमारे कोई भी सुख एक समान क्या कभी रहते हैं? अगर वह सुख एक समान नहीं रहते हैं, तो समझ लेना चाहिए कि वह दुःख हैं, जो कभी कम हो जाते हैं या कभी बढ़ जाते हैं। जब बढ़ जाते हैं, तो वह हमें थोड़ा दुःख से लगने लग जाते हैं और जब कम हो जाते हैं, तो हमें थोड़ी राहत मिल जाती है लेकिन सुख हमें प्राप्त शायद हो नहीं पाता। यह अपने आप में अपने को एक धारणा बना लेनी पड़ेगी। जो हम बोलते हैं...जीवन में सुख और दुःख दोनों आते हैं, जीवन कभी धूप, कभी छाँव। क्या बोलते हो आप लोग?

**‘सुख-दुःख दोनों रहते जिसमें, जीवन है वह गाँव,
कभी धूप कभी छाँव, ऊपर वाला पासा फेंके’**

अब मुझे अभी ज्यादा मत छेड़ो, अभी इतना ही ठीक है। सुख और दुःख दोनों अगर हमारे सामने आते हैं तो यह भी हमने एक गलत कल्पना कर रखी है कि हमने सुख प्राप्त कर लिया या सुख हमारे सामने आ गया। अगर सुख तुम्हारे सामने आ गया तो यह definition बिल्कुल गलत हो जायेगी, जो यहाँ लिखी हुई है। सुख किसको कहा गया? जिसमें कभी हानि-वृद्धि न हो, कमती-ज्यादापन न हो, उसका नाम है- सुख। अगर वह सुख घट-बढ़ रहा है, तो वह सुख नहीं है। वह दुःख के कुछ कारण हैं, जो घट रहे हैं, दुःख के कुछ कारण हैं, जो बढ़ रहे हैं।

एक ही चीज कभी सुख तो कभी दुःख का कारण

वही एक चीज आपके सामने होते हुए कभी थोड़ी सी दुःख के लिए हो जाती है, कभी थोड़ी सी सुख के लिए हो जाती है। मान लो आप रात्रि में गर्मी में सोते हैं। अब तो आप सब लोग AC में सोने लगे। AC में भी तो थोड़ा सा वह regulator होता है कि नहीं होता? पहले पंखे चलते थे, पंखों में regulator होता था। आपने मान लो उसको full कर दिया, सो गए। आप उसको पाँच पर करके पूरा full करके सो गए। क्या हुआ? थोड़ी देर आप सो गए, आपको जो है कहीं ज्यादा एकदम से ठण्डी लगने लग गई...अरे भाई! यह तो बहुत तेज हो गया, यह हवा भी नुकसान कर रही है, ठण्डी लगने लग गई तो फिर क्या किया आपने? फिर

उठे, फिर आपने उसको कम किया। चार पर कर दिया, तीन पर कर दिया। मौसम देख कर के कभी दो पर कर दिया। यह क्या हो गया? आपने जिस सुख के लिए इच्छा की वह आपने समझा कि हमें पाँच पर उस regulate करने से वह सुख मिल गया, वह सुख नहीं मिल गया। आपने थोड़ा सा दुःख की कमी ज्यादा हो जाए, इसलिए उसकी गति बढ़ा दी। जब वही चीज फिर आपको दुःख देने लगी तो फिर आपने उसकी कमी को फिर कर दिया, फिर उसको आपने पाँच से तीन पर ला दिया, पाँच से दो पर ला दिया। **आप क्या कर रहे हो? बोलो क्या कर रहे हो? आप सुख की प्राप्ति कर रहे हो या अपने दुःख को manage कर रहे हो?** समझ नहीं पाते और इसी में रात हो जाती है, सुबह हो जाती है।

Only Pursuit of Happiness

मात्र सुखी होने की दौड़

एक बहुत अच्छी चीज अमेरिका के एक संविधान में लिखी हुई है- जिसका नाम है... **Declaration of Independence**. उसमें एक बहुत अच्छी चीज लिखी हुई है कि आदमी केवल सुख के पीछे दौड़ता है। Pursuit of Happiness केवल सुख की एक दौड़ है... **'Pursuit of Happiness' Happiness never lies in human mind** मतलब Happiness कभी भी उस मानव के मस्तिष्क में आती ही नहीं है। फिर क्या है? 'Only Pursuit of Happiness' वह उस सुख के पीछे दौड़ता है। सुख उसमें कभी होता ही नहीं है और happiness कोई ऐसी चीज है ही नहीं जो कभी आपको मिल जाए। यह लिखा हुआ है... **अमेरिका के स्वतंत्रता पत्र के उद्धोषणा पत्र में लिखा हुआ है।** लोग समझ रहे हैं, कहाँ क्या होता है? हम सिर्फ एक दौड़ लगा रहे हैं। दौड़ते हैं, दौड़ते हैं, सिर्फ दौड़ते हैं, जिन्दगी भर दौड़ते हैं। लेकिन किसकी दौड़ में? सुख पाने की दौड़ में। सुख पाने की दौड़ में और सुख कभी भी नहीं मिलता है। सुख कोई ऐसी चीज है ही नहीं जो दौड़ से प्राप्त की जाए। आदमी दौड़ते-दौड़ते जिन्दगी छोड़ देता है।

**दौड़ते ही दौड़ते दम तोड़ता है आदमी,
सुबह से शाम तक दौड़ता है आदमी।**

यही चलता रहता है। आदमी के लिए यह पता ही नहीं होता कि वह सुख कहाँ है? सुख अगर हमारी केवल इन मानसिक इच्छाओं में है, तो मानसिक इच्छाएँ सिर्फ इतना ही कर रही हैं... कभी हमारे दुःख के level को कम कर देती हैं, कभी हमारे दुःख के level को बढ़ा देती हैं। जब बढ़ जाता है, तो हमें दुःख दिखता है और जब normal हो जाता है, तो हमें सुख दिखता है लेकिन सुख तक हम पहुँचते नहीं हैं।

उदाहरण

जैसे आपके शरीर में ज्वर आता है तो आप कहते हो भाई! temperature बढ़ गया। temperature बढ़ा तो कितना बढ़ गया? अगर मान लो, आपका normal temperature 98 है, मान कर चलते हैं। किसी का 97 भी normal हो सकता है। अगर 98 आपका normal temperature है और वह 98.5 हो गया तो क्या हो गया? fever आ गया, ज्वर आ गया। जैसे ही वह कम हो गया तो क्या हो गया? भाई! मैं स्वस्थ हो गया, सुखी हो गया। क्या वह temperature नहीं है? 98 भी तो एक temperature है, अभी आप स्वस्थ कहाँ हैं? आपने उस temperature को सिर्फ manage करना सीखा है। ज्यादा हो

जाएगा तो दुःख हो जाएगा, इसलिए उसको कम कर दो। पंखा ज्यादा तेज चल जाएगा, cooler ज्यादा तेज चल जाएगा, AC ज्यादा तेज चल जाएगा तो वह सुख भी दुःख में बदल जाएगा। **इसलिए उसको manage करो तो हम सिर्फ manage करते हैं। उस सुख की सम्पदा तक तो हम पहुँचते ही नहीं हैं, जिस सुख की सम्पदा में न कोई हानि होती है, न कोई वृद्धि होती है।**

Practical कर के देखो

आप कभी सोच करके देखो कि आपको कौन से सुख में कभी ऐसा लगा है कि यह सुख बिल्कुल एक समान बना हुआ है। एक मिनट भी कोई सुख एक समान बना रह जाता हो तो बता देना कभी। अगर थोड़ी सी भी सोचने की या कोई भी अपने आप को observe करने की कोई feeling आपके अन्दर होती हो कोई awareness के साथ में तो आप कर पाओगे, नहीं तो कभी आपको ये चीजें समझ नहीं आयेंगी। **एक मिनट भी कोई भी सुख हमारे साथ एक जैसा नहीं रहता। चाहे हम कितना ही अच्छा खा ले, चाहे कितना ही अच्छा पी ले, मनचाहा कितना ही अच्छा पहन ले, कितने ही अच्छे मन चाहे भोग कर ले लेकिन एक मिनट भी हमारे लिए एक समानता किसी भी सुख में दिखाई नहीं देती, मिलती नहीं है।** आप सोचो अगर हमें एक मिनट भी एक समानता नहीं आ रही है, किसी भी सुख में वृद्धि और ह्रास से रहित हमारे अन्दर कोई सुख का भाव नहीं आ रहा है, तो हम सिद्धों के सुख को कैसे समझ पायेंगे?

सिद्धों का सुख कैसा होता है?

जो कुछ भी हमारे पास हो रहा है, जो कुछ भी हमारे अन्दर घटित हो रहा है, **सिद्धों का सुख उससे just opposite है।** हमारे सुख में कभी स्थिरता नहीं है और सिद्धों का सुख हमेशा स्थिर है। हमारे सुख में कभी भी वृद्धि-हानि हुए बिना रह नहीं सकती है, यह नियम है। बच्चे की तरह क्षण भर में हम सुखी होते हैं, क्षण भर में हम दुःखी होते हैं। बिल्कुल जैसे बच्चा आ रहा हो न कभी, छोटा सा बच्चा हँसता-खेलता आ रहा हो, माँ की गोद में बैठा है, पापा के पास में बैठा है, हँसता-खेलता है और एकदम से जो है, उसको जैसे ही छोड़ दिया गया, थोड़ा सा वह आगे बढ़ा और वह बस कहीं नहीं पहुँच पाया और वहीं बैठ गया और अपने आप एकदम से रोने लग गया। रोया तो इतनी जोर से रोया कि माता-पिता भी सोचने लग गए...भाई! क्या हो गया? एकदम से चिल्लाने-चिल्लाने लग गया, रोने लग गया और फिर जैसे ही उसको हाथ में ले लिया, गोदी में ले लिया, एकदम से फिर शान्त हो गया। **यह क्या हो गया? हम लोगों का ऐसे ही होता है, हम बिल्कुल बच्चे की तरह ही हैं। कोई भी सुख हो, कोई भी दुःख हो, बस! ऐसे ही होता है। थोड़ी ही देर में हम रोने लग जाते हैं, थोड़ी ही देर में हम खेलने लग जाते हैं।** बच्चों की तरह ही हमारी जिन्दगी निकलती चली जाती है।

**‘सांसें की चाबी से तेरा चलता देह खिलौना,
बच्चों सा यह खेल सदा ही तुझको लगा सलोना’**

यह क्या है? यह सिर्फ बच्चों का खेल है और कुछ नहीं होता। जैसे बच्चे को कोई छोटी सी toffee पकड़ा दी जाती है, उसकी कोई favourite चीज उसको दे दी जाती है, तो तुरन्त हँस जाता है, तुरन्त शान्त हो जाता है। जैसे ही उससे वह चीज छीन ली जाती है, तुरन्त रोने लग जाता है, अशान्त हो जाता है। आप

उससे ज्यादा क्या करते हो? बताओ? बच्चा तो चलो फिर भी ठीक है...**वह रोएगा तो भी उसके heart की exercise हो जाएगी। वह हँसेगा तो भी उसके heart की exercise हो जाएगी और इसलिए वह स्वस्थ बना रहता है।** वह उतना रो भी लेता है, उतना हँस भी लेता है इसलिए वह खुश रहता है। तुम खुश क्यों नहीं रह पाते? न तुम उतना अच्छे से रो पाते, न तुम उतना अच्छे से हँस पाते। सोच कर देखना कि जीवन में कितना time हो गया, हम अच्छे से हँसे भी हैं कभी कि नहीं? और कभी अच्छे से रोए भी हैं कभी कि नहीं? बच्चा अच्छे से रो भी लेगा। क्षण भर में रो लेगा और क्षण भर में हँसने लग जाएगा।

स्वस्थता का सबसे बड़ा राज

यह उसकी स्वस्थता का सबसे बड़ा राज है। इसलिए बच्चे कम अस्वस्थ होते हैं। जैसे-जैसे बड़ा होने लगेगा, अस्वस्थता बढ़ने लगेगी। बड़े जितने ज्यादा अस्वस्थ होते हैं, बच्चे बहुत कम अस्वस्थ होते हैं। लेकिन बच्चे के अन्दर का वह स्वास्थ्य उसके ही अपने भावों से चलना चाहिए और जब बच्चा स्वस्थ होकर के इस तरह की प्रक्रिया से गुजरता है, तो उसकी कोई भी क्रिया होती है, वह उसके स्वास्थ्य के लिए वरदान सिद्ध होती है। उसका हँसना भी स्वास्थ्यवर्धक है, उसका रोना भी स्वास्थ्यवर्धक है। आपका हँसना भी दिखावटी है और रोना भी दूसरों के सिर का दर्द बन जाता है। सोचो! हम कब से नहीं रोए? **रोने का कभी मन भी करता है कि नहीं करता है? पूछो अपने मन से! नहीं महाराज! ऐसी कोई बात ही नहीं है। क्यों रोया जाए? जीवन में खुशी ही खुशी है, जीवन में सुख ही सुख हैं। अगर आप अच्छे से रो नहीं पाए, रोए नहीं तो भी आप भीतर से बीमार हो, यह मान कर चलना।** अच्छे से अगर आप खुलकर के बच्चे की तरह हँस भी नहीं पाए तो भी आप मानसिक रूप से बीमार हो, यह मान कर चलना। जितना हँसना जरूरी है, उतना रोना भी जरूरी है, balance तभी रहेगा। लोग कहते हैं...हँसो-हँसो-हँसो, हँसना तो आज खूब सिखाया जा रहा है लेकिन वह हँसना भी एक कैसा? वह जबरदस्ती का हँसना हो जाता है। जो भीतर से उत्पन्न होने वाली खुशी होती है, वह उस बच्चे की तरह होगी जिस आप बच्चे को हँसते हुए देखोगे और अगर आपको कोई बच्चा हँसता हुआ नहीं दिख रहा है तो आपके लिए देखने की कोशिश करना है कि बच्चा कब हँसता है? कैसे हँसता है दिखाई देता है? आप भी बच्चे थे लेकिन आप अब भूल गए कि हम पहले कैसे हँसते थे? और कैसे रोते थे? किसी को याद आ जाए तो उसी को देख करके हँस लेना। कोई बचपन की photo दिख जाए तो उसी को देख कर के हँस लेना, रो लेना, ये दोनों जरूरी है। क्योंकि हमारे जीवन में एक तरह से एक स्थिरता से uniformity से कोई काम हो ही नहीं सकता है। हम जी नहीं सकते हैं, हमारी आदत ही ऐसी पड़ चुकी है।

क्या भगवान bore नहीं होते हैं?

मन के संस्कार ही ऐसे पड़ चुके हैं, कोई भी चीज अगर बिल्कुल एक समान तरीके की हो तो हमें अच्छा लगना बन्द हो जाता है। हमारे सामने जो चीजें हैं, वे बदल-बदल के आनी चाहिए महाराज! यह हमारी आदत में है और **भगवान का जो सामने चीजें हैं, भगवान की जो feeling है, उनके जो अपने सुख के अनुभव हैं, वे सब कैसे हैं? बोलो! एक समान हैं, वृद्धि और ह्रास से रहित हैं। फिर भला क्यों चाहोगे, हम सिद्ध बनें? क्यों चाहोगे, हमें सिद्धों का सुख प्राप्त हो?** क्योंकि हमारी मानसिकता क्या कहती है? कुछ महाराज! change तो होना चाहिए। एक समान चीजों में तो महाराज! bore हो जाएंगे। क्या

भगवान bore नहीं होते हैं? एक जैसे सुख में अनन्त काल तक, ऐसे ही एक समान भाव में, एक जैसी feeling में। इसलिए आपको आज तक कभी सिद्धों के सुख का विश्वास नहीं हुआ। जय बोल लोगे, नमो सिद्धाणं पढ़ लोगे, सिद्धचक्र के बड़े-बड़े पाठ हो जाएंगे लेकिन उन पाठों से, भीतर कोई पाठ सीखने को मिलता हो, हमें तो नहीं लगता।

भव्य और अभव्य की एक पहचान

सिद्धों के सुख के ऊपर विश्वास करना एक बहुत बड़ी चीज है और आचार्य कुन्द-कुन्द देव कहते हैं...**प्रवचनसार जी** जैसे महान ग्रंथराज में कि **जो सिद्धों के सुख के ऊपर विश्वास कर लेता है, वही भव्य जीव है। जो सिद्धों के सुख पर विश्वास नहीं करता है, वह अभव्य जीव है।** उन्होंने भव्य और अभव्य की एक पहचान बताई। सुन रहे हो कि नहीं? कभी आप लोग पूछने लग जाते हो, महाराज! हम भव्य हैं कि नहीं? अभव्य हैं कि नहीं? यह पहचान है। सिद्धों के सुख पर विश्वास करो, ऐसा ही विश्वास करो, अपने मनचाहा विश्वास नहीं। बहुत अच्छा होता है, बहुत आनन्द आता है, यह नहीं। वह कैसा होता है? उसमें कोई भी न वृद्धि होती है, न कोई भी, न कभी वह बढ़ता है, न कभी वह, वह जैसा है वैसा ही रहता है, एक समान रहता है, विशाल होता है। **यह हमें सिद्धों के सुख का विश्वास जब आएगा तब हमारे अन्दर का भव्यत्व-भाव, भव्यत्व-गुण विकसित होगा।** यह भव्यत्व की पहचान बताई है। हमें अपने सुखों को भी दुःख मान लेना पड़ेगा। अगर हम भगवान के, सिद्धों के सुखों को सुख समझने लग गए तो सुख नाम की तो कोई चीज है ही नहीं है। **जैसे अमेरिका के संविधान में लिखा हुआ है...‘happiness is not a thing’ happiness नाम की कोई चीज ही नहीं है।** वह बिल्कुल सही लिखा हुआ है क्योंकि वह केवल आपकी एक दौड़ है, जिसे आप सुख कह रहे हो और वह सुख की दौड़ में आपको कभी सुख मिलेगा ही नहीं, मिला ही नहीं। एक के बाद एक, एक के बाद एक, एक के बाद एक Pursuit of Happiness, बस आप दौड़ लगाओ। वह दौड़ किसी भी तरीके की हो सकती है। आपके अपने व्यापार में नई-नई दौड़ हो सकती है, आपके अपने job में नई-नई दौड़ होती है, कुछ लोग तो यही करते रहते हैं। एक company में छः महीने job की, दूसरी company में फिर जो है job करने लग गए, फिर तीसरी company में job करने लग गए। वे यही करते रहते हैं, कुछ लोग दौड़ते ही रहते हैं।

कौन सी सभ्यता में हमें जीना है?

बहुत दिनों तक एक company भी अच्छी नहीं लगती। सुन रहे हो कि नहीं? इसीलिए विदेशी लोगों को एक जैसा कुछ भी अच्छा नहीं लगता। यहाँ तक कि उन्हें एक पत्नी भी अच्छी नहीं लगती और एक पत्नी को भी एक पति अच्छा नहीं लगता। समझ आ रहा है? कौन सी सभ्यता में हमें जीना है? **अगर भारतीय सभ्यता में जिओगे तो थोड़ा बहुत तो हमें सिखाया जाता है, एक में रहना है। कम से कम हमें इतना तो सिखाया जाता है, जब हम इस तरह की सभ्यता में रहेंगे तभी हम सीख पाएँगे कि जब हम एक में रह पाते हैं तो हम सिद्धों के भी एक भाव में रहने का श्रद्धान बना पाएँगे।** जो गृहस्थ एक में रहते हुए, एक से सन्तुष्ट होते हुए सिद्धों के एक समान स्वभाव में, एक समान भाव में अपना श्रद्धान बना लेता है, उस गृहस्थ की भी आचार्य प्रशंसा करते हुए कहते हैं...यह सद् गृहस्थ, यह भी प्रशंसनीय है। उसे अविरत सम्यग्दृष्टि श्रावक का दर्जा मिलेगा। लेकिन जो कभी एक में सन्तुष्ट नहीं होते, उन्हें कभी एक भगवान में,

एक भगवान के एक समान सुख में कभी भी उन्हें सन्तोष श्रद्धा के रूप में आता ही नहीं है। एक के बाद एक, एक के बाद एक, यह दौड़ में दौड़ते रहने के कारण से ही हमें कभी सिद्धों की सुखानुभूति नहीं हुई और सिद्धों के सुख पर हमें कभी कोई विश्वास की भावना, श्रद्धा की परिणति नहीं आई। समय ही कहाँ है?

**‘सांसें की चाबी से चलता तेरा देह खिलौना’
और बच्चों सा यह खेल सदा ही तुझको लगा सलोना,
समय मिला न आत्मध्यान का, अब मृत्यु आई’**

जीवन में तो आत्मध्यान करने का समय मिलता ही कहाँ है? आत्मध्यान करने के लिए अगर हम जीवन में समय निकाले...यह तो बहुत बड़ी चीज हो जाएगी महाराज! यह अभी time की चीज नहीं है, इस age में यह नहीं किया जाता है। यह तो जब अपने सब घर-गृहस्थी के काम हो जायेंगे, सब बच्चे हो जायेंगे, सब बच्चों के सब अच्छे से व्यापार set हो जायेंगे, उसके बाद में सोचेंगे महाराज! आत्मध्यान तब करेंगे। कर लोगे? तब तक क्या होगा? **‘रोग बुढ़ापा मरणत रोय फिर भी सुख का बीज ना बोय’** कहाँ की है, यह पंक्ति? **नई छहडाला!** छहडाला नहीं! नई छहडाला! **‘रोग बुढ़ापा, मरणत रोय’** रोग आ जायेंगे, बुढ़ापा आ जायेगा, मरने की तरफ आ जायेगा, फिर कोई आत्मा का ध्यान नहीं होता। फिर तो बस इतना ही लगता है...किससे मुझे सुख मिल जाये? किससे मेरे लिए थोड़ी सी जो पीड़ाएँ हो रही हैं, वह कम हो जाएँ? फिर आत्मध्यान करने की परिणति बनती नहीं है।

आत्मध्यान की परिणति

‘समय मिला न आत्मध्यान का’ अभी तो समय मिल ही नहीं सकता है क्योंकि अभी तो महाराज! बहुत busy हैं। पाँच दिन एकान्त में? never! पाँच दिन without mobile? impossible! पाँच दिन without wife? I can never assume it! यह तो हो ही नहीं सकता महाराज! पाँच दिन हम बाहर देखें ही नहीं। केवल एक जगह पर, एक ही स्थान पर, नहीं महाराज! कभी नहीं हो सकता है। कभी नहीं हो सकता तो आपको कभी भी सिद्धों के सुख पर विश्वास हो ही नहीं सकता। आपको कभी भी अपनी आत्मा पर विश्वास हो ही नहीं सकता। अगर यह नहीं हो सकता तो आप कभी भी अपने को पहचानने के लिए एक कदम भी आगे कभी बढ़ ही नहीं सकते। अभी नहीं तो कभी नहीं। आपके सामने वह कभी आएगा ही नहीं। अगर आप आज उत्साहित होंगे तो आपको आगे भी उत्साह मिलेगा। नहीं! हमें ऐसा लगता है, जो वर्ष के 365 दिन होते हैं, उनमें अगर हमें कहीं कोई अपनी पहचान, अपनी आत्मा का ध्यान, अपनी आनन्द में, अगर हम आने का कोई मौका मिलता है, तो वह सिर्फ जब हम दुनिया से disconnect होते हैं, अकेले होते हैं, तब मिलता है और उसी तरह की अनुभूति करने का हमें जब यह मौका मिलता है, तो हमें याद रहता है भाई! वह पाँच दिन बड़े आनन्द के दिन थे। यह आपके अन्दर तभी आ सकता है, जब आप अपने अन्दर कोई हिम्मत जुटाएँ कि हिम्मत करने वालों के काम हैं। नहीं तो क्या? **‘समय मिला न आत्मध्यान का अब मृत्यु आई’**।

नंदीग्राम वासियों की परीक्षा (गताँक से आगे)

दौड़ तो चलती रहती है। हर दौड़ में कोई न कोई दौड़ रहा है। चाहे राजा हो, चाहे रंक हो और श्रेणिक भी अपनी दौड़ में दौड़ रहे हैं। **पहले परीक्षा होती रही विवाह करने के लिए**, विवाह हो गया तो अब परीक्षा कर रहे हैं, उन नंदी ग्राम के लोगों को परेशान करने की क्योंकि अपने क्रोध का, अपने अपमान का जो है, बदला लेना है। सुन रहे हो कि नहीं? राजा श्रेणिक कहाँ हैं आज? absent हैं? आपके mind में तो present रहने ही चाहिए। वह राजा श्रेणिक जब एक परीक्षा ले लिए नंदी गाँव के लोगों की तो उससे सन्तुष्टि नहीं हुई तो फिर उन्होंने दूसरी परीक्षा लेने का मन बनाया। **फिर दूसरी परीक्षा में** उन्होंने एक दूत भेज दिया। क्या कहकर? नंदी गाँव के लोगों से कह देना, जो उस गाँव में बावड़ी है, उस बावड़ी को हमारे नगर में लेकर के आएँ। क्या सुना? बावड़ी जानते हो? पानी रहता है। वह पानी आपकी syntex टंकी का पानी नहीं होता है। पानी तो syntex में भी रहता है। वह बावड़ी जो एक छोटी, कुएँ का ही रूप होती है, एक बहुत बड़ी तालाब का रूप होती है और उस बावड़ी को, हमारे नगर में लेकर के आना है, उन गाँव के लोगों से कह देना। यह गाँव के लोगों की परीक्षा ली जा रही है और जब यह परीक्षा ली गई तो फिर वही सब गाँव के लोगों में परेशानियाँ, वही चिन्ताएँ, वही बेचैनियाँ कि भाई! यह फिर एक दूसरा उपद्रव आगे खड़ा हो गया। आखिर राजा हमें इतना परेशान क्यों कर रहे हैं? **क्या चाहते हैं? क्या हमने इनका बिगाड़ दिया? जो यह बिना वजह की नई रोजाना बातें खड़ी कर देते हैं।** समझ पा रहे हो? लेकिन उनके सामने एक बुद्धिमान व्यक्ति था। जब वह अपने संकट से निकल गए, जब उन्होंने उस बकरे को एक महीने के बाद अपने स्थान पर पहुँचा दिया और वह अभय कुमार अपनी यात्रा करने के लिए आगे बढ़ने लगे तो गाँव के लोगों ने उनको रोक लिया। बोले...आप ही हमारे अन्नदाता हो, आप ही हमारे भगवान हो। अभी यहाँ पर कुछ दिन और रुक जाओ, जब तक कि इस राजा के सारे उपद्रव दूर न हो जाएँ। आपका बहुत एहसान मानेंगे, आपको कहीं नहीं जाना, आप यहीं रुको। आपको जो भी सुविधाएँ चाहिए पढ़ेंगी, सब यहीं मिलेंगी। सब कोई आपकी सेवा में उपलब्ध रहेगा। पूरा गाँव आपका एहसान मानेगा। यहीं रुक जाओ और उस अभय कुमार को रोक लिया। कुछ दिनों बाद फिर दूसरा उपद्रव खड़ा हो गया और यह शर्त आ गई, बावड़ी को लेकर के आओ। घबड़ा गए लोग...भाई! बावड़ी कोई बक्सा तो है नहीं या कोई सन्दूकची हो, कोई उठा लो और लेकर के चले जाओ। कोई लकड़ी हो, लोहा हो, कोई हाथ में उठाने की चीज हो तो उसे लेकर के चल दो। बावड़ी को कैसे लेकर चला जाएगा?

समस्या है तो उसका समाधान भी है

परेशान होने के बाद में फिर सबको वही याद आई। भाई! अपने को बचाने वाला अभी एक ही है। कौन है? अभय कुमार। वह कौन है अभय कुमार? अभी किसी को पता नहीं है। वह अभय कुमार के पास में सब लोग पहुँचते हैं और फिर निवेदन करते हैं और निवेदन करने के बाद में जब अभय कुमार उनकी बात सुनते हैं तो कहते हैं...भाई! बात तो थोड़ी कठिन है लेकिन चिन्ता मत करो। अगर समस्या है तो उसका समाधान भी है। **दुनिया का ऐसा कोई प्रश्न नहीं है, जिसका कोई उत्तर न हो। यह ज्ञान अपने अन्दर विश्वास के साथ में रहना चाहिए। कोई भी ऐसा प्रश्न नहीं होता, जिसका कोई उत्तर न हो। इसलिए कोई समस्या, समस्या नहीं होती। बस! उसको अपनी बुद्धि से आपको solve करना है और थोड़े सा relax होकर के आपको सोचना है।** कोई बात नहीं, मुझे थोड़ा सा समय दो, मैं थोड़ी देर बाद आपको बताऊँगा। अभय

कुमार सोच में पड़ गए। उन्होंने सोचा, विचार किया और विचार करने के बाद में उन्हें एक युक्ति समझ में आई। उनसे गाँव वालों से कहा...आप चिन्ता नहीं करो। कल रात में सब गाँव के लोगों से कहना, सब एक साथ मिलकर के गाँव की बावड़ी को उठा कर के चलेंगे। बोले...कैसे चलेंगे? बोले...**आप उसकी चिन्ता मत करना। बस! गाँव में जितने भी बैल हैं, जितने भी भैंसे हैं, जितने भी जो हैं, कहना चाहिए हाथी हैं,** इन सबको इकट्ठा कर लेना और इन सबको एक के बाद एक, एक के बाद एक और एक जो उसके जुए होते हैं न? जुआ जिसको बोलते हैं- एक बैल के ऊपर जो रखा रहता है, बस! वह सब जो है, उनके ऊपर रख कर के सबको लेकर के चलना है, शान्ति के साथ चलना है। हम रात में निकलेंगे बावड़ी लेकर के, इन सब पशुओं के साथ में लेकर के चलेंगे और सब इकट्ठे हो गए। जितने भी बैल, घोड़े, हाथी, गाय, भैंस जितने भी थे, सब इकट्ठे हो गए। सब एक साथ जुत गए। **राजा के दरबार में रात के 12 बजे पहुँचे,** जब राजा निद्रा में था। उस समय पर राज दरबार में पहुँच कर के कहा कि मुझे राजा को अभी-अभी समाचार देना है। वहाँ के जो प्रहरी होते हैं, द्वारपाल होते हैं, उन्होंने जैसे-तैसे वहाँ के चार आदमियों को अन्दर पहुँचाया। राजा सो रहे थे। राजा के कान में डाल दिया...राजन! बावड़ी चलकर के आई है। बताओ कहाँ रखवा दे? राजा सो रहा था, उसे अपनी नींद खराब नहीं करनी थी। उसने कहा...‘अभी तुम ले जाओ बाद में देखेंगे’। उसने नींद में क्या बोल दिया? अभी जहाँ से लाए थे, वहीं ले जाओ बाद में देखेंगे। **वह चारों, जो मुख्य व्यक्ति अन्दर गए थे,** वह राजा की बात सुनकर के वापस आ गए और उनके साथ में एक-दो राजा के लोग थे, उन्होंने भी सुन लिया, राजन ने क्या कहा है? और वे सब वापस अपने गाँव चले गए। रात में ही सब अपने गाय, बैल, भैंस, लेकर के वापस अपने गाँव में लौट गए। फिर दूसरे दिन राज दरबार में लोग उपस्थित हुए। राजा ने पूछा कि भाई! यह बावड़ी लेकर के रात में आए थे, कहाँ है बावड़ी? लेकर के आना। उन राजा ने लोगों को बुलाया, लोग आए तो उन लोगों ने कहा कि राजन! आपने ही तो कहा था कि बावड़ी जहाँ से लाये, वहीं ले जाओ, वहीं ले जाओ। अभी नहीं बाद में देखेंगे, ले गए वापिस। क्या समझ में आया? हो गया न काम। नींद में भी कभी-कभी कुछ अच्छे प्रश्नों के समाधान मिल जाते हैं। नींद भी आपके लिए एक समाधान का कारण बन सकती है बशर्ते कि वह नींद भी सही हो। आपकी चिन्ता दूर हो जाएगी, दूसरे की भी चिन्ता दूर हो जाएगी बस आप ढंग से सोते रहो। लेकिन न तुम ढंग से सोते हो, न तुम ढंग से जागते हो। जब बीच की स्थिति होती है, अधकचरी स्थिति होती है, तो फिर परेशानी का कारण बन जाती है। राजा न नींद में था और न जाग रहा था। राजा की कैसी नींद थी? अधकचरी नींद इसी को बोलते हैं। कुछ का कुछ कह गया और दूसरों का काम उससे बन गया। जब काम बन गया तो राजा को अपने ऊपर ही पश्चाताप का भाव आया, अपने ऊपर ही ग्लानि का भाव आया। अरे! मैंने क्या कर लिया? ये लोग तो बड़े चतुर निकले। अब उसकी समझ में आया कि ये गाँव के लोग हमसे भी ज्यादा कहीं न कहीं चतुर हैं और इनकी यह चतुराई इनके बचाव का कारण बन रही है लेकिन मैं इनको अभी भी छोड़ूँगा नहीं। भले ही इन्होंने मेरी निद्रा का फायदा लेकर के अभी अपने आप का बचाव कर लिया है लेकिन मैं इनको छोड़ूँगा नहीं। क्रोध अभी भी राजा का शान्त नहीं है। वह दो परीक्षा ले चुका और उस परीक्षा के बाद में फिर वह मन में विचार करता है कि इन लोगों ने देखो! मेरी नींद का कैसा फायदा उठा लिया? लेकिन क्या करूँ? सोना तो पड़ता है।

अच्छी नींद सोने का तरीका

अब सोने का भी एक तरीका होता है। या तो अच्छी गहरी नींद में सो जाओ तो अच्छी गहरी नींद अच्छे काम

की है या फिर जाग रहे हो तो फिर जागते रहो जैसे कोतवाल जागता रहता है। लेकिन न हम जब जाग रहे हो, न सो रहे हो तो वह स्थिति बड़ी बीच की होती है और वह स्थिति बहुत खराब होती है और उसमें आदमी कुछ का कुछ बोल जाता है। कई बार होता है कि आदमी नींद में भी बोलता रहता है, बड़बड़ाता रहता है मतलब उसे अच्छी नींद नहीं आ रही, उसका दिमाग अभी भी चल रहा है। **अच्छी नींद का मतलब है... कोई भी मुँह से कुछ न निकले, बड़बड़ाहट न निकले। बिल्कुल शान्त भाव से पड़ा रहे। तब वह अच्छी नींद आती है और वह अच्छी नींद मानी जाती है कि आपको पता ही न पड़े कि कब आप सोए? और कब आप उठ कर बैठ गए?** सोए थे तो दस बजे और उठे तो सीधे तीन बजे, चार बजे। उसको कहते हैं—अच्छी नींद, गहरी नींद। गहरी नींद अगर थोड़ी भी हो जाती है, तो अच्छा काम हो जाता है। पूरे शरीर को, body को relax मिल जाता है।

अच्छी नींद लेने की नियम

नींद भी अच्छी लेना सीख लो। क्या सुन रहे हो? अच्छी नींद लेने के लिए भी तरीके होते हैं। किसी भी दिशा में सिर पटककर के सो जाओगे तो अच्छी नींद नहीं आएगी। अच्छी दिशा में सिर रखने का विधान है। या तो पूर्व दिशा में सिर रखकर के सोओ तो दुनिया की चिन्ताएँ सिर में नहीं आयेंगी। **‘प्राक्शिशा शयने विद्या’** पूर्व दिशा में सिर करके सोओगे तो विद्या आएगी, बुद्धि का चातुर्य बढ़ेगा। श्रेणिक कौन सी दिशा में सिर करके सोते हैं? अभय कुमार कौन सी दिशा में सिर करके सोते हैं? **पूर्व दिशा में। समझ आ रहा है? उससे बुद्धि बढ़ती है। पश्चिम दिशा में सिर करके सोओगे तो चिन्ता बढ़ेगी। उत्तर दिशा में सिर करके सोओगे तो जल्दी मरण को प्राप्त हो जाओगे, आयु घटेगी।** किधर? उत्तर दिशा में सिर करके सोने से और दक्षिण दिशा में सिर करके सोओगे तो body अच्छी charge हो जाएगी, जब सुबह उठोगे तो। इसलिए दो दिशाएँ अच्छी हैं। या तो पूर्व दिशा में सिर करके सोना या दक्षिण दिशा में सिर करके सोना क्योंकि दक्षिण दिशा में जब सिर करके सोओगे तो उत्तर दिशा में आपके पैर होंगे तो दक्षिण-उत्तर pole में आपकी body के अन्दर, जो भी यह negative और positive जो charge करने वाले जो भी हमारी body के अन्दर, blood के अन्दर, जो elements होते हैं, वे सब बिल्कुल flow में आ जाते हैं और हमारी body को बिल्कुल relax देने के काम में आ जाते हैं।

यह उत्तर-दक्षिण दिशा का एक नियम है। आपने देखा होगा कोई भी चुम्बक है, जैसे ही कहीं भी घूमती है तो तुरन्त वह उत्तर-दक्षिण दिशा में आ जाती है। ऐसे ही हमारी body के अन्दर भी magnets होते हैं और वे सभी particle, सब एक समान दिशा में आकर के आपको बिल्कुल स्वस्थता देने लग जाते हैं। कभी भी आप देखना, जब व्यक्तियों की मृत्यु निकट होती है, तो उसको दक्षिण की ओर पैर करके लेटने को कहा जाता है। जब दक्षिण की ओर पैर होंगे तो सिर कहाँ होगा? उत्तर की ओर होगा, यह होना चाहिए। मृत्यु के समय पर होता है क्योंकि उससे उसके प्राण आसानी से निकलते हैं। जब आपको जीना है तो फिर दक्षिण की ओर सिर होना चाहिए, उत्तर की ओर पैर होना चाहिए, यह सोने का भी एक नियम होता है। नींद न आती हो, तो सोने से पहले अपने हाथ और पैरों को अच्छे से थोड़ा सा पानी से धो करके सोना चाहिए। पैर मतलब? घुटने से नीचे के पैर। पगतलियाँ थोड़ी सी आपके पानी से धुली हुई होंगी, हाथ भी आपके बांह तक आधी बांह तक, इतना-इतना यह हाथ कहलाता है, यह भी धुले हुए हो। फिर आप जो है fresh होकर के सोयें तो आपको अच्छी नींद आएगी।

21. प्राचीन जैन ग्रन्थों में मिलेंगे आज के सभी वैज्ञानिक सिद्धान्त

सिद्ध भगवान के स्वरूप का वर्णन



प्रतिदिन की तरह आज भी आप लोग एक नई सुबह के साथ में अपने इष्ट का स्मरण करते हुए, सिद्ध भगवन्तों के सुख का ज्ञान करने के लिए यहाँ उपस्थित हुए हैं। पिछले दिनों से सिद्ध भगवान के सुख की उनके विशेषणों के साथ में व्याख्या की जा रही है और वह व्याख्या अभी भी निरन्तर जारी है। जब हम सिद्ध भगवन्तों की बात करते हैं तो जन सामान्य को भी यह समझ में आना चाहिए कि सिद्ध भगवान किसी के भगवान नहीं हैं। **सिद्ध भगवान उनको कहा जाता है, जिन्होंने अपनी आत्मा को इस संसार के चक्र से मुक्त कर लिया।** ऐसी आत्माएँ जो संसार में जन्म-मरण नहीं लेती और जिन आत्माओं को अपने पुरुषार्थ के माध्यम से अपने ही स्वभाव में रहने का, अपने ही आनन्द में रहने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है, उन सभी आत्माओं को हम सिद्ध आत्मा कहते हैं। ज्यादातर लोग भगवान के नाम पर या तो किसी रूप विशेष की, आकृति विशेष की कल्पना करते हैं या फिर हम आत्मा की बात करते हैं तो फिर भूत-प्रेत की ओर चले जाते हैं, ज्यादातर लोगों की बात कर रहा हूँ। जब हम किसी भगवान की बात करते हैं तो भगवान के नाम पर वह किसी अवतार के बारे में सोचते हैं... भगवान ऐसे हैं, भगवान वैसे हैं, उनका रूप ऐसा है, उनका रूप वैसा है जैसा उन्होंने TV serial में देख रखा है या photos में देख रखा है, उन्हें वैसे भगवान ध्यान आते हैं। आप विचार करें कि क्या TV serial में देखे हुए वे चेहरे हमारे भगवान के चेहरे हो सकते हैं? क्या जो photo आज हमें दिखाए जाते हैं, क्या वह real भगवान की photo हो सकते हैं? जब भगवान थे, तब उनके कोई photo नहीं थे और जब photo बने तो वे सिर्फ एक imagination है। वह कोई उनके real photo नहीं हैं लेकिन हमारे दिमाग में वह चीजें ऐसी बैठ जाती हैं कि वह हटती नहीं हैं।

सिद्ध भगवान अरूपी होते हैं

जब भी हम भगवान की बात करते हैं तो हमारे दिमाग में कोई न कोई चेहरा आ जाता है। चाहे शिव भगवान की बात करेंगे तो शिव का चेहरा आ जाएगा, जिन भगवान की बात करेंगे तो जिन का चेहरा आ जाएगा। कोई न कोई चेहरा सामने आ जाएगा। अगर राम भगवान की बात करेंगे तो वह रामायण के राम ध्यान में आ जाएँगे, जो रामायण serial चला करता था, उसमें वे राम कौन थे? अरुण गोविल, वही राम बन गए, वही ध्यान में आ जाते हैं। मैं आपको उस ओर ले जाना चाहता हूँ कि वास्तव में भगवान का, **जो वास्तव में पूर्ण भगवान बन जाते हैं, जो पूर्ण हो जाते हैं; उनका कोई चेहरा नहीं होता है, उनका कोई अवतार नहीं होता है, उनकी कोई आकृति नहीं होती है। वह पूर्ण सत्ता को उपलब्ध, पूर्णता को प्राप्त उन भगवान की जब हम बात करते हैं तो उन्हीं को हम सिद्ध भगवान कहते हैं।** वे सिद्ध हो गए और जो सिद्ध हो गए, वे हमसे अरूपी हो गए। उनका रूप हमारे ज्ञान में नहीं आ सकता, हमारी आँखों में नहीं आ सकता, वह अरूपी हो गए और ऐसे अरूपी जब हम भगवान की बात करते हैं तो वह सिर्फ एक आत्मा होते हैं। वे भूत-प्रेत की आत्मा नहीं होते हैं। वे शुद्ध आत्मा होते हैं, सुख से भरपूर आत्मा होते हैं। उन आत्मा की बात यहाँ

पर की जाती है, तो आचार्य पूज्यपाद महाराज अनेक विशेषणों के माध्यम से उनके सुख का वर्णन करने लग जाते हैं।

**आत्मोपादान-सिद्धम्, स्वय-मतिशय-वद्-वीत-बाधं विशालं,
वृद्धि-हास-व्यपेतं, विषय-विरहितं,**

इतना सब आप लोग सुन चुके हो कि नहीं? कुछ नाम सुनकर कुछ याद आता है? आगे एक और विशेषण आ रहा है... **‘विषय-विरहितम्’** क्या विशेषण है? **‘विषय-विरहितम्’**

जैन दर्शन में विषय शब्द से क्या आशय है?

भगवान का जो सुख है, वह सुख किसी भी तरह के विषय से सहित नहीं होता है। वह विषयों से रहित होता है। यह भी एक अजीबोगरीब शब्द है जो जैन दर्शन में मिलता है- **‘विषय’** ज्यादातर लोग जो जैन दर्शन को नहीं पढ़े होते हैं, उन्हें यह **विषय** समझ में नहीं आता है। यह **विषय** क्या होता है? ज्यादातर लोगों ने वह समझा होता है कि भाई! भौतिकी का विषय है, कि रसायन का विषय है, कि गणित का विषय है। यह होता है। कई बार अगर कोई व्यक्तियों के हाथ में कोई जैन धर्म की पुस्तक लग जाए और उसमें लिखा हो कि विषय विष के समान है, तो उन्हें कुछ समझ नहीं आएगा कि यह क्या विषय और क्या विष? यह विषय एक ऐसा शब्द है, जो आपको सिर्फ जैन दर्शन में मिलेगा। जैन संस्कृति की अपनी पहचान है। जैन दर्शन के अपने ऐसे बहुत से अनूठे शब्द हैं, जो सिर्फ जैन दर्शन में मिलते हैं; जिनके अर्थ जैन दर्शन के अनुसार ही अभिव्यक्त होते हैं। यह वह विषय नहीं है, जिन्हें आप समझते हैं। कौन-कौन से विषय कक्षा आठ में पढ़ाए जाते हैं? ये वह विषय नहीं हैं। **ये विषय क्या हैं? कौन-कौन से विषय हमारे इन्द्रियों के लिए होते हैं?** जैसे बच्चे के लिए कहा जाता है, कौन से विषय कक्षा आठ में पढ़ाए जाते हैं? कौन से विषय कक्षा नौ में पढ़ते हैं? ऐसे ही कौन से विषय हैं, जिनमें हम जीवन भर रमते हैं...उनको विषय कहते हैं। **कौन से ऐसे पदार्थ हैं, objects हैं; जिनके कारण से हम अपना जीवन सुखमय बनाने की कोशिश में लगे रहते हैं, उन्हें हम विषय कहते हैं। मतलब जो इन्द्रियों के objects होते हैं, उन्हें हम विषय कहते हैं।**

जैन दर्शन के शब्दों को गुरुओं के उपदेशों से ही समझा जा सकता है

बच्चों के समझाने के लिए हम कहते हैं...जो पढ़ाई के object होते हैं- object of study, उनको हम विषय कहते हैं और जब हम इधर अध्यात्म की बात करते हैं या अपने जीवन की बात करते हैं तो- **object of senses...जो अपनी five senses हैं, उनके जो objects हैं, वे विषय कहलाते हैं**, यह समझाना पड़ता है। आप लोग भी हर किसी को जैन धर्म की किताब मत पकड़ा दिया करो। जिनको कोई भी तरह के ऐसे technical शब्द जैन धर्म के पता नहीं होते हैं तो वह पढ़ कर के भी कुछ समझ नहीं पाते हैं। इसलिए आज के समय में ये चीजें भी बहुत अच्छे ढंग से समझाना जरूरी होता है। जो लोग अपने पास में कोई न कोई तरह से अन्य लोगों से friendship रखते हैं, वे भी इन लोगों को इस तरह की चीजें बताते रहा करें ताकि उनके दिमाग में रहे कि विषय या अन्य ऐसे बहुत से शब्द हैं- जैसे आस्रव, संवर; इन शब्दों की definition केवल जैन धर्म में वास्तविक रूप में मिलती है। अन्य संस्कृति में, अन्य संस्कृति के या

धर्म के किसी भी प्रकार के जो धर्म-ग्रन्थ होते हैं, उनमें यह शब्द उपलब्ध नहीं होते हैं। इसलिए जो भी आपके सामने नए-नए मेहमान आते हैं, कौन से group के लोग बैठे हैं? Computer Association के लोग बैठे हैं; अब computer की language अपनी अलग होती है। Computer की language के शब्द तो हम अपने पढ़ लेते हैं, समझ लेते हैं, रटा दिए जाते हैं, रट लेते हैं लेकिन आपको जैन terminology भी पढ़ने के लिए इसी तरह से समवशरण में आना पड़ेगा। इसी तरह से यहाँ पर उपदेश सुनने पड़ेंगे तब आपको जैन दर्शन के शब्द समझ में आएँगे। आज एक शब्द समझ कर जाना...**विषय।** पहले कभी सुना है? नहीं सुना? **विषय का मतलब कि पढ़ाई का विषय नहीं, जीवन जीने के लिए जो हमें चाहिए पड़ता है, वह सब हमारा विषय है।**

इन्द्रियों के विषयों की व्याख्या

हमारे पास कितनी इन्द्रियाँ हैं? पाँच इन्द्रियाँ हैं और उन पाँच इन्द्रियों को अपने-अपने object हमेशा चाहिए पड़ते हैं। अगर आपके पास आँखें हैं और सामने कुछ देखने के लिए न हो, क्या करोगे बताओ? परेशान हो जाओगे। **ऐसा हो सकता है कि आँखें हो और कुछ देखने को न हो? कभी ऐसा सम्भव है? कुछ न कुछ तो आपके सामने होगा।** क्या होगा? हो सकता है कि आपके सामने लोग न हो। मान लो आप कहीं किसी एकान्त स्थान पर पहुँच गए, आपके सामने कोई लोग नहीं दिखाई दे रहे हैं, मनुष्य नहीं दिखाई दे रहे हैं। कहीं ऐसा भी स्थान हो सकता है कि वहाँ पर न पशु दिखाई दे रहे हो, न पक्षी दिखाई दे रहे हो। फिर भी कुछ तो दिखाई देगा? कोई पहाड़ी दिखाई देगी, कोई भूमि दिखाई देगी, आकाश दिखाई देगा, कहीं कुछ दूर में वृक्ष दिखाई देंगे, इतना तो दिखाई देगा। यह जो कुछ भी हमें दिखाई देगा, यह सब भी हमारी आँखों के लिए विषय हैं। **ये सभी क्या हैं? हमारी आँख जिसे हम नेत्र इन्द्रिय कहते हैं, इस इन्द्रिय के ये सभी विषय होते हैं और विषय को हम अपने मन से, उनको choose करते हैं कि विषय कौन से हमारी आँखों के सामने होने चाहिए?** हर व्यक्ति अपनी इन्द्रियों के विषयों को चुनता है और उसी के विषयों के चुनने से उसके अन्दर यह भावना आती है कि अगर हमारे अनुकूल विषय हमारे सामने हैं तो सुख है और प्रतिकूल विषय हमारे सामने हैं तो दुःख है। इस विचारधारा के साथ में हमारा जीवन चलता है।

जीव को सुख इन्द्रियों के अनुकूल विषय मिलने पर ही प्राप्त होता है

अच्छे लोग हो, अच्छा माहौल हो, अच्छी प्रकृति दिखाई दे, अच्छा वातावरण दिखाई दे तो हमको अच्छा लगता है। हम हमेशा क्या ढूँढते हैं? अच्छा वातावरण ढूँढते हैं और बुरा वातावरण क्या होता है? जो हमारे मन में पहले से बैठा होता है कि भाई! ऐसी चीजें हमें नहीं देखनी चाहिए थी, वह हमारे सामने आ गई; वे बुरी चीजें हो गई। **हम अच्छी और बुरी चीजों का चयन अपनी बुद्धि से करके ही हमेशा अच्छी चीजों को अपनी इन्द्रियों के सामने रखना चाहते हैं जो हमारे मन को अच्छा लगे, वह अच्छा है।** अच्छा-बुरा दुनिया में कुछ होता नहीं है वैसे। जो हमारे मन को अच्छा लगे, वह अच्छा है; सिर्फ अच्छे की इतनी ही परिभाषा है। जो हमारे लिए मन को अच्छा न लगे, वह बुरा है तो अच्छे और बुरे का चयन हम जिन पदार्थों को सामने रख कर के करते हैं, वे पदार्थ ही हमारे विषय कहलाते हैं और वे विषय किसके हैं? किसके लिए होते हैं? हर इन्द्रियों के अपने-अपने विषय होते हैं। हमारी जो ये eyes sense हैं, इसके अपने विषय हैं। जो हमारी ये कर्ण इन्द्रिय हैं- ears sense हैं, इसके अपने अलग विषय हैं। आँखों से हमें देखना है, कानों

से हमें सुनना है, जीभ से हमें चखना है, शरीर से हमें, हाथों से हमें स्पर्श करना है, घ्राण से हमें सूँघना है। हो गए सब विषय? कुछ और बचा रह गया? पाँच इन्द्रियाँ हैं और पाँच इन्द्रियों के पाँच विषय हैं। अगर आप कभी बैठकर के इत्मिनान से सोचो कि इस दुनिया में हमें सुख देने वाली चीजें कौन सी हैं? तब आपको समझ में आएगा कि ये पाँच इन्द्रियों के विषयों के अलावा, कोई आपको छठवीं चीज नहीं दिखाई देगी। क्या चाहोगे आप? या तो अच्छी-अच्छी चीजें खाकर के अच्छा स्वाद लेना चाहोगे या किसी अच्छे स्पर्श की इच्छा करोगे या किसी अच्छी चीजों को देखने की इच्छा करोगे। अच्छी का मतलब जो आपके मनोनुकूल हो या कोई अच्छी-अच्छी चीजें सुनने की इच्छा करोगे। इसके अलावा आपको कुछ नहीं आएगा या कोई अच्छी सुगन्धी की इच्छा करोगे। बस पाँच इन्द्रियों को तृप्त करने के लिए आपको अपने पास में पाँच objects सामने रखना है और इसी के माध्यम से आपके लिए मिलेगा कि हाँ! थोड़ा सा हमें सुख मिल रहा है।

विषय सुख

यह सुख आपको शरीर के माध्यम से मिलता है। इन पाँच इन्द्रियों के माध्यम से मिलता है और मन की अनुकूलताओं के माध्यम से मिलता है। जीवन में हम जो सुख प्राप्त करते हैं, वह सब सुख कैसे होते हैं? वे कहलाते हैं- **विषय सुख**। क्या बोलते हैं? आपके सामने एक नया शब्द आ रहा है। इसको क्या बोलते हैं? **विषय सुख**। गर्मी लग रही है, ठण्डा पानी पी लिया। कौन सा सुख? विषय सुख। कौन से विषय का सुख? **रसना इन्द्रिय के विषय का सुख**। बहुत दिनों से कोई अच्छी picture नहीं देखी, कुछ नहीं देखा theater में चले गए सुख मिल गया। तीन घण्टे बैठकर आ गए, मनचाही picture देख ली। कौन सा सुख? **चक्षु इन्द्रिय के विषय का सुख**। बहुत दिन हो गए भाई! वे पुराने गाने नहीं सुने, बहुत दिन हो गए कुछ नए-नए गाने नहीं सुने। बहुत नई फिल्में आती रहती हैं, नए-नए गाने आते रहते हैं। चलो! आज क्या करेंगे? आज सिर्फ गाने सुनेंगे। कौन सी इन्द्रिय का सुख? **कर्ण इन्द्रिय का विषय सुख**। सुना है कि बहुत अच्छी-अच्छी सुगन्धें आती हैं, बहुत अच्छे-अच्छे scent आते हैं, बहुत अच्छे-अच्छे perfume आते हैं, चलो! हम भी लगा करके देखते हैं। बड़ा अच्छा लगता है, हम भी महकेंगे, वस्त्र भी महकेंगे, माहौल भी महकेगा, सब कुछ महकने लग जाएगा। अच्छे-अच्छे perfume खरीद के लाये। कौन सी इन्द्रिय का सुख? **घ्राण इन्द्रिय का सुख**। कहाँ है घ्राण इन्द्रिय? ये जो दो छिद्र दिख रहे हैं, जो सुड़-सुड़, सुड़-सुड़ करते रहते हैं, इसके सुख के लिए। और क्या बचा? कुछ अच्छी चीजें दिखाई दी भाई! उसको छू कर के देखने की इच्छा हुई। यह छू कर के सुख प्राप्त करने की इच्छा, यह क्या है? यह **स्पर्शन इन्द्रिय का सुख**। बस! यह पाँच इन्द्रियों के जो विषय हैं, इन्हीं के माध्यम से सुख प्राप्त करने की इच्छा हर प्राणी मात्र में होती है। इसलिए उसके सुख को विषय सुख कहा जाता है। **वैषयिक सुख कह लो या विषय सुख कह लो तो हम सभी लोग जो होते हैं; वे कौन से सुख की इच्छा में होते हैं?** कौन से सुख की इच्छा करते हैं? दिन भर किस सुख में डूबे रहते हैं? विषय सुख। मान लो आप यहाँ बैठे हो। हो सकता है कि थोड़ा आपके ऊपर जो पंखा चल रहा है, उसकी हवा आप तक न पहुँच रही हो। अब ध्यान पहुँच गया तो और नहीं हवा पहुँचेगी, वैसे तो फिर भी ध्यान नहीं था महाराज! आपको लगने लग जाए कि भाई! यहाँ पर cooler नहीं है, यहाँ पर AC नहीं है, यहाँ पर पंखा भी बहुत दूर टंगा हुआ है, हवा नहीं आ रही है, गर्मी लग रही है, पसीना आ रहा है। आप कौन सा, क्या सुख चाह रहे हो? यह कौन सी इन्द्रिय का सुख है?

इन्द्रियों के विषयों में धर्म और अधर्म

जीवन की परिभाषाएँ, जीवन में प्राप्त किया जाने वाला धर्म, जीवन में प्राप्त होने वाले सुख-दुःख, इन सबकी परिभाषाएँ simple होती हैं। धर्म भी simple होता है, अधर्म भी simple होता है। बस! हमें समझना होता है कि किस क्षण धर्म होता है और किस क्षण अधर्म होता है? **अधर्म का मतलब पाप होता है और धर्म का मतलब पुण्य होता है। जब हम अपनी इन्द्रियों के विषयों की ओर ही केवल अपने मन को लगाए रखते हैं तो हमारे लिए अधर्म होने लग जाता है।** यह भीतर का बहुत बड़ा अधर्म है। यह धर्म-अधर्म किसी व्यक्ति से, समुदाय से, सम्प्रदाय से सम्बन्ध नहीं रखता। यह अधर्म हमेशा चलता रहता है। आप यहाँ बैठे हैं, आपको बैठे हुए अगर थोड़ा सा भी कहीं कष्ट हो जाए बैठने के लिए तो भी आपके मन में यह भाव आ जाए, चलो कोई बात नहीं; बैठे तो हम धर्म सभा में हैं। कुछ अच्छे उपदेशों को सुनने हेतु बैठे हैं। अगर उसमें भी थोड़ा सा हमारे लिए कष्ट हो रहा है, तो हमें उसकी ओर ध्यान नहीं देना है तो यह क्या हो गया? **यह धर्म हो गया क्योंकि आपने किस पर ध्यान नहीं दिया? आप इन्द्रियों के विषयों पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। जो आपको सुख देने वाली चीजें हैं, उस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं।** अभी आप किसको ध्यान से सुन रहे हैं? हमें कुछ भीतरी बातें सुनने को मिले, हमें कुछ अपनी अन्तरात्मा की बातें सुनने को मिले, हमें कुछ धर्म की सही बातें सुनने को मिले। अगर आपका मन इस ओर है, तो फिर आपको बाहरी कोई भी तरह की हवाओं से, किसी भी तरह के बैठने के फर्श के स्पर्श से होने वाले किसी भी तरह के, जो कुछ आपको दुःख होंगे या कुछ भी जो आपके लिए uneasy लग रहा होगा; वह सब आपके लिए धर्म में बदल जाएगा। आपके लिए यही धर्म कहलाएगा। आप अभी यहाँ बैठ करके धर्म करेंगे कि अधर्म करेंगे?

आध्यात्मिक धर्म क्या?

अब आप पूछो, धर्म कैसे कर रहे हैं? न तो हम कोई जाप कर रहे हैं, न कोई हम होम कर रहे हैं, न कोई हम यज्ञ कर रहे हैं, न कोई हम विधान कर रहे हैं। फिर भी हम क्या कर रहे हैं? धर्म कर रहे हैं। यह कौन सा धर्म है? यह **आध्यात्मिक धर्म** है, जो सबके लिए होता है। कोई सी पूजा, यज्ञ, विधान किसी को अच्छा लग सकता है, नहीं लग सकता है। कोई उसमें बैठ सकता, नहीं बैठ सकता लेकिन यह धर्म सबके लिए होता है। इसलिए **समवशरण में बैठ करके तीर्थकरों के उपदेश सुनने में सबसे बड़ा धर्म होता है।** जिस समय भगवान के उपदेश चल रहे होते हैं, उस समय पर चाहे भले ही सामायिक का समय हो गया हो, दोपहर के 12 बज रहे हो, कोई यूँ नहीं कहेगा...भगवन्! अब हम आपकी वाणी नहीं सुन सकते, अब हम सामायिक करने के लिए समवशरण से बाहर जा रहे हैं। यहाँ बैठे रहेंगे तो आप सुनाते रहोगे, हमें अभी सामायिक का time हो रहा है। पता है कि नहीं? आप कहोगे हमारे ध्यान का समय हो रहा है, हमारी पूजा का समय हो रहा है। हमने तो सुबह-सुबह सात बजे पूजा करने का नियम ले रखा है, अभिषेक करने का नियम ले रखा है और हम आपके सामने बैठे हैं। जब पूजा नहीं होगी तो हमारा धर्म नहीं होगा। बताओ ऐसा ही होता है क्या समवशरण में? **समवशरण में भगवान को छोड़ करके कोई पूजा करने जाएगा? सम-वशरण में भगवान को छोड़ कर के कोई सामायिक करने जाएगा? क्या करेगा? कभी ऐसा होता है? विचार तो किया करो!**

सबसे बड़ा धर्म क्या है?

भगवान की दिव्य ध्वनि ढाई-ढाई घण्टे तीनों संध्याओं में खिरती है और संध्या जब होगी तो 12 बजेंगे कि नहीं बजेंगे? सुबह के 6 बजेंगे कि नहीं बजेंगे? ढाई घण्टे में सब, 12 से एक बजे तक का, साढ़े ग्यारह से लेकर डेढ़ बजे तक का, 2 बजे तक का, सारा time आ जाएगा। संध्या के समय पर फिर वही, जो संध्या वन्दना का समय होगा, वही भगवान की दिव्य ध्वनि खिरने का समय होगा। अब आप आरती उतारोगे कि भगवान की दिव्य ध्वनि सुनोगे? बताओ? बोलो? **लकीर के फकीर! मशीन की तरह चलने वालों! थोड़ा सोचो!** हम जब जिस समय पर, जो काम करने में लगे होते हैं, हम उसी समय पर, उस काम को करने का नाम ही धर्म समझते हैं। अब आपके दिमाग में यह बैठ जाना चाहिए कि **भगवान की वाणी को सुनना, सब कामों को छोड़ कर के सबसे पहला धर्म होता है।** यदि आप भगवान की वाणी को सुनना छोड़कर के चले गए तो उससे बड़ा निरादर का और कोई काम नहीं है। फिर तुम भगवान की क्या पूजा करोगे? जो तुमने साक्षात बैठे भगवान का अनादर कर दिया। इसी तरह से जब भगवान सिद्धों की बात हो रही हो, भगवान की दिव्य ध्वनि के अनुसार बताए हुए ज्ञान को बताया जा रहा हो और वह उपदेश आपके सामने चल रहा हो; उस समय पर आप उदक चंदन तंदुल पुष्पकैः, चोरी छुपे ऐसे ही करने में लगे हो। क्यों महिलाओं! कहीं चल तो नहीं रहा? अरे चलती रहती है! सामग्री रख लेंगे, इधर स्वाहा स्वाहा करती रहेंगी, इधर महाराज की बातें भी सुनती रहेंगी। हम बैठे थे, अब क्या करें? चार पूजा का नियम है। यहीं पर बैठ जाएंगे तो यहीं पर 10 बज जाते हैं, फिर कब जाकर पूजा करेंगे? चार पूजा पूरी करनी हैं तो यूँ स्वाहा-स्वाहा चलता रहता है। उन्हें यह पता नहीं है कि सबसे बड़ा धर्म क्या है?

इन्द्रियों के विषयों से दूर हटना सबसे बड़ा धर्म है

जब तक हमारे ज्ञान में यह बात नहीं आएगी, सबसे बड़ा धर्म क्या है? हम अगर साधु परमेष्ठी के मुख से उपदेश सुन रहे हैं, साधु परमेष्ठी को देख रहे हैं तो हमारे लिए इससे बड़ा धर्म और क्या हो सकता है? **पंच परमेष्ठी में एक परमेष्ठी हमारे सामने हैं, वे हमें अरिहन्त परमेष्ठी, सिद्ध परमेष्ठी के बारे में बता रहे हैं। इससे बड़ी पूजा और क्या? इससे बड़ा स्वाध्याय और क्या? इससे बड़ा विधान और क्या? इससे बड़ी सामायिक और क्या? बताओ!** आप सामायिक का समय पूरा करने के लिए छोड़ करके जाओगे क्या भगवान का समवशरण? क्या करोगे? जब भगवान की दिव्यध्वनि चल रही होगी, फिर सामायिक कैसे होगी? सामायिक का नियम ले रखा है, महाराज! यह सीखो! लकीर के फकीर बने रहने से कुछ नहीं होता है। **धर्म क्या होता है? उसे समझने के लिए थोड़ा ज्ञान का विस्तार करना पड़ता है।** हम यहाँ बैठ करके भी बहुत बड़ा धर्म कर रहे हैं। क्या धर्म कर रहे हैं? **सबसे बड़ा धर्म आचार्यों ने कहा, इन्द्रिय के विषयों से दूर हटना, यह सबसे बड़ा धर्म है।** सबसे बड़ा योग क्या है? **इन्द्रिय के विषयों से अपने मन का प्रत्याहार करना, यह सबसे बड़ा धर्म,** जो हमें हमारी आत्मा की ओर लेकर के आए, विषय सुख से हमको हटाए, उसका नाम धर्म है। अब अगर आपको यहाँ पर बैठकर के किञ्चित मात्र भी कहीं आपकी स्पर्शन इन्द्रिय कहने लगे, भाई! यह जो mat बिछी हुई है, यह बड़ी गड़ रही है। हमें चाहिए कोई अच्छी गद्दी वाली कुर्सी, क्या करोगे? उस समय पर आपने अपनी इच्छा को रोक लिया और उधर मन जाने से आपने अपने मन को हटा लिया...अभी नहीं! अभी नहीं! अभी उठना नहीं! महाराज सामने बैठे हैं, तो यह क्या कर लिया आपने?

यह धर्म कर लिया। इसका नाम क्या है? धर्म। **इन्द्रिय के विषयों की इच्छा से हट जाना, अपने आप को उस विषय सुख से हटाना, इसका नाम क्या है? धर्म है।** यह धर्म की एक नई परिभाषा सीख लो, चलते-फिरते हमेशा काम आएगी। गर्मी लग रही है, तो भी कोई बात नहीं लेकिन उपदेश चल रहे हैं तो अभी पसीना नहीं टपकाना है, अभी ज्यादा अपने को परेशान नहीं होना है। अभी हमारा धर्म क्या है? हम यहाँ बैठे-बैठे भी धर्म कर रहे हैं, थोड़ी सी गर्मी को सहन कर लेना भी हमारा धर्म है। **आखिर तुम्हें सिद्धों की बातें कब समझ में आयेंगी? जब खुद थोड़ा सा practical नहीं करोगे और सिद्धों के गुणों को सुनकर के भी जब हमारे मन में विषयों से रहित होने की बात नहीं आएगी तो हम कभी भी सिद्ध सुख की ओर अपने मन को उन्मुख कर ही नहीं पाएँगे। इसलिए सिद्धों का सुख कैसा है? 'विषय-विरहितम्' विरहित मतलब? without sensual objects.**

सिद्धों का आत्मिक सुख होता

उनके सामने न senses होती हैं और न sensual objects होते हैं, उन्हें सिद्ध कहते हैं। जो सिर्फ अपने आत्मिक सुख में लीन होते हैं। उन्हें कभी भी संसार के भौतिक पदार्थजन्य सुख की कोई भी अपेक्षाएँ नहीं हुआ करती हैं। इसलिए उन सिद्ध भगवन्तों की आत्मा में न कोई इन्द्रियाँ होती हैं, न शरीर होता है, न उनके पास में नाक, कान, आँख यह होते हैं। इसलिए उन्हें किसी भी चीजों को न देखने की, न सूँघने की, न सुनने की कोई आवश्यकता रह जाती है। **सिद्ध भगवान कैसे होते हैं? शरीर रहित, इन्द्रिय रहित और इन्द्रियों के विषयों से रहित।** इन सबसे रहित होने पर जो उन्हें सुख की अनुभूति होती है, वह सुख उनका वास्तविक सुख कहलाता है। उसे कहते हैं- **आत्मिक सुख।** कौन सा सुख? **आत्मा से जो उत्पन्न होगा, वह कहलाएगा...**आत्मिक सुख और विषयों से जो उत्पन्न होगा, वह कहलाएगा...विषय सुख। हम लोग कौन से सुख के आदी हो गए? विषय सुख के और स्तुति किसकी करते हैं? **जो आत्मिक सुखों में लीन हैं, हम उनकी स्तुति करते हैं।** हमें पता तो रहे कि कम से कम आत्मिक सुख भी कोई सुख होता है। जब हम किसी भी तरह की कोई भी नई चीज सीखते हैं तो उसे सीखने के लिए भी हमें उसकी शब्दावली सीखनी पड़ती है। अगर आप कभी भी computer सीखने जाएँगे तो computer की भाषा अपने आप में बिल्कुल अलग होती है, उसकी शब्दावली बिल्कुल अलग होती है। आपको भाषा सीखनी पड़ती है और जब आप सीख लेते हो फिर आप इशारों में काम करते हो। सीखने के बाद आपको सब इशारे समझ में आएँगे और जब तक सीखोगे नहीं, आपको कोई इशारा समझ में नहीं आएगा और इशारे इसलिए समझाए जाते हैं। पहले तो शब्दों से समझाया जाता है और शब्दों से समझने के बाद में जब हमारी समझ में आने लग जाता है, वे चीजें हमें बैठ जाती हैं तो फिर केवल इशारों से काम हो जाता है, केवल इशारों से समझना।

सुख क्या होता है?

एक आदमी दौड़ा-दौड़ा एक किसी सन्त महात्मा के पास में आया और आकर के उनके चरणों में बोला... **भगवन्! मुझे बहुत जल्दी कोई सुख की परिभाषा बताओ। सुख क्या होता है?** मुझे बहुत जल्दी बताओ? मैं बहुत जल्दी में हूँ। क्या पूछने आया? भगवन्! मैं बहुत जल्दी में हूँ। बहुत जल्दी से मुझे सुख की परिभाषा बताओ? वे सन्त महात्मा थे, सामने देखा यह आदमी जितनी जल्दी में है। वह सन्त महात्मा का

नाम ही होता है कि जो सामने वाले को देख करके बिल्कुल उससे उल्टा काम करे, उसी का नाम सन्त महात्मा समझना। उन्होंने सोचा यह बहुत जल्दी में है। इसे मैं कुछ भी जल्दी में उत्तर दूँगा, ठीक नहीं पड़ेगा तो वह मौन रह गए, कुछ बोले नहीं। जब वह मौन रह गए, कुछ बोले नहीं तो वह आदमी जल्दी-जल्दी में चला तो गया और जाने के बाद में फिर **दूसरे दिन आया और फिर दूसरे दिन आकर के कहता है...आपने मुझे कल जो सुख की परिभाषा बता दी, वह मेरे दिमाग में बैठ गई।** मैं इसलिए आपके चरणों में नत-मस्तक होने के लिए दोबारा आपके लिए नमोस्तु करने आया हूँ। अब वहाँ जो बैठे हुए लोग थे, जिस समय वह व्यक्ति आया था, खड़े हुए लोग थे, उन्होंने पूछा...ऐसी कौन सी परिभाषा इसे मिल गई? हम तो इन महात्मा के पास में कई बार बैठे रहते हैं, कई बार इनके पास में खड़े रहते हैं, हमें तो कोई सुख की परिभाषा इन्होंने बताई नहीं और इसको कौन सी परिभाषा बता दी?

मौन रहकर भी सुख प्राप्त होता है

जो ये नए लोग सामने बैठे हैं, Computer Association के लोग, दूसरे लोग तो दुनिया के हमेशा सामने खड़े रहते हैं लेकिन यह लोग भी अगर सामने आए हैं, तो इन्हें भी कोई नई परिभाषा समझ में आनी चाहिए। वह परिभाषा क्या होती है? बोलने से बताई जाए कोई जरूरी नहीं है। वह परिभाषा अगर उन्हें सीखना होगी तो वे केवल इस शरीर को देख कर के, इस मुद्रा को देख कर के ही समझ लेंगे कि सुख की परिभाषा क्या है? सन्त मौन इसलिए रह गया क्योंकि कुछ कहेंगे तो परिभाषा अधूरी रह जाएगी और कुछ नहीं कहेंगे तो परिभाषा पूरी हो जाएगी। यह भी एक भाषा होती है। कौन सी भाषा? **मौन की भाषा।** अगर कभी हम जल्दी में हो और हमें कुछ जल्दी से कुछ बोलना हो तो हम पूरा बोल नहीं पाएँगे, वह पूरा सुन नहीं पाएगा, बात अधूरी रह जायेगी। न उसको सन्तुष्टि होगी, न हमको सन्तुष्टि होगी। इसलिए बहुत से लोग रास्ते में मिल जाते हैं, बहुत से लोग रास्ते में कुछ प्रश्न कर लेते हैं लेकिन उनके उत्तर इत्मीनान से कभी रास्ते में नहीं दिए जाते। रास्ते में तो क्या है? सब लोगों ने दर्शन तो किए ही होंगे रास्ते में कभी न कभी, कर ही लेते हैं लेकिन जब कुछ सीखना होता है तो फिर time निकाल कर के आना होता है। जब वह दूसरे दिन आया और कहने लगा...भगवन्! अब हम आपके पास में एक घण्टा बैठेंगे और आप जो सुनाओगे वह सुनेंगे। अब हम आपके चरणों में बैठ करके सुख की अनुभूति करेंगे। वे कोई और लोग नहीं थे, ऐसे ही लोग थे जो सामने बैठे हैं। जब जल्दी में रहते हैं तो सन्त सिर्फ आशीर्वाद देते हैं। कुछ बता दो महाराज! कुछ हमारा जीवन अच्छा चले, कुछ हित की बात बता दो। ठीक है! आशीर्वाद! **ओं अर्हं नमः!** इससे ज्यादा क्या कहा जाएगा? लेकिन उस व्यक्ति ने भी जब महात्मा के पास पहुँचा तो उसने जल्दी में भी यह सीख लिया, समझ लिया कि महात्मा उस समय क्या रह गए थे? मौन रह गए थे और जब वह जल्दी में अपना काम करने के बाद में, सुख की अनुभूति करने बैठा तो वह मौन होकर के वैसे ही बैठ गया जैसे महात्मा बैठे थे और उस मौन में उसको सुख मिल गया। फिर इसलिए वह दूसरे दिन आया कि भगवन्! आपने मुझे जो सुख की बात थी, वह सुख की बात आपने बिना कहे भी बता दी और आसपास जो घूमने वाले लोग थे, उन्हें समझ ही में नहीं आया कि इन्होंने कब सुख की परिभाषा बता दी, कब सुख की बात बता दी? ध्यान में रखना जो लोग आसपास घूमते रहते हैं, आसपास रहते हैं, जरूरी नहीं है कि वे सब कुछ चीजें महाराज से सीख ले।

सीखने वाला चुपचाप बैठता है

महाराज से कुछ सीखना होता है, तो वह तब होता है जब कोई व्यक्ति जिज्ञासा के साथ आए और जो जितनी जिज्ञासा से भरा होगा, वह उतनी जल्दी चुपचाप सीख कर चला जाएगा। सीखने वाला चुपचाप बैठता है और आप कभी चुपचाप बैठते नहीं हो। आप देखना जो भी नए लोग आते हैं, नई-नई association, नए-नए लोग आप बुला करके लाते हो, नए कोई भी group बुला करके लाते हो, जो भी नए group आते हैं, वे पहली बार आएंगे तो सिर्फ चुपचाप बैठेंगे। क्यों बैठेंगे? उन्हें डर लगता है इसलिए? **वह पहली बार में कुछ सीखने की इच्छा में रहते हैं और जब वह बार-बार आने लग जाते हैं तब फिर उनके अन्दर वह सीखने की जो जिज्ञासा है, वह धीरे-धीरे कम हो जाती है और जो पहली बार में सीख लिया जाता है, वह अद्भुत होता है।** पहली बार का जो दर्शन होता है, पहली बार का जो सुख होता है, वह हमेशा उनको याद रहता है। इसलिए वह हमेशा मौन भी अगर पहली बार उन्होंने किसी को देखा है तो मौन भी उनके दिमाग में बना रहता है और मौन भी सुख का सन्देश दे जाता है। आपके लिए इस तरह की चीजें अगर सीखने में आ गईं तो आप समझदार कहलाएंगे। जब दूसरे दिन उन सन्तजी के पास में, महात्मा के पास में लोग आए और वह व्यक्ति भी आया और उन अनेक लोगों ने उनके सामने कहा कि हमने तो सुख की कोई परिभाषा सुनी नहीं थी, कल आपने क्या कहा था? और यह कह रहा है कि आपने सुख की परिभाषा बहुत अच्छी बताई। तब उस समय पर वह महात्मा कहते हैं...मैंने इसकी हड़बड़ी को देख करके, इसके जल्दीपन को देख करके कुछ बोला नहीं था और मैं मौन हो गया था। मेरा मौन होना भी इसे रास आ गया और उसने जाकर के जब सुख की अनुभूति की तो उसे समझ में आया कि मौन रहने में भी सुख मिलता है। इसलिए यह आज फिर आया और अपनी कल की अनुभूति को बताने के लिए आया। इशारे में यह समझ गया कि महात्मा क्या कहना चाहते हैं? **उन महात्मा का सन्देश यही था...बेटा! इस हड़बड़ी में तुझे कभी सुख मिलने वाला नहीं है। तू मेरी तरह शान्त हो जा, मौन हो जा, तुझे अपने आप सुख की प्राप्ति हो जाएगी। यह इशारा वह समझ गया, जो नया था।** जो नई association सामने बैठी है, यह इशारा समझ गई लेकिन जो रोज आते हैं, वे इशारा नहीं समझ पाते। इसलिए **नए लोग समझदार होते हैं और पुराने लोग मझधार में पड़े रह जाते हैं।** इशारे किसके लिए होते हैं? इशारे किसके लिए होते हैं? नए लोगों के लिए होते हैं।

सुख तो आत्मा की चीज है, आत्मा में मिलेगा

वह राजा श्रेणिक हैं, वे नए हैं। बाकी तुम जितने भी सामने बैठे हो, सब क्या हो? पुराने हो। हमारे इशारों को जितना ये राजा श्रेणिक समझ पाएंगे, जितना ये आगे के बैठे लोग समझ पाएंगे, उतना ये रोजाना आने वाले लोग नहीं समझेंगे। यह भी अपने दिमाग में रख लेना है कि अगर हमारी समझदारी है, तो हमें यह समझना होगा कि आखिर सुख जब भी मिलता है, तो वह हमें कैसे मिलेगा? हड़बड़ी में मिलेगा कि शान्ति में मिलेगा? बोलने में मिलेगा कि मौन में मिलेगा? बाहर के विषयों में मिलेगा कि अपनी अन्तरात्मा में डूबने से मिलेगा? किस में मिलेगा? सुख तो आत्मा की चीज है, आत्मा में मिलेगा। एक गिलास पानी में सुख नहीं है, वह तृष्णा है। सुख जो होता है, वह आत्मा की चीज होती है, जो विषयों के बिना होती है। पानी के बिना, सूँघने वाली चीजों के बिना, देखने-सुनने वाली चीजों के बिना जब हम अपनी इन्द्रियों को शान्त करके बैठ जाते हैं, तब हमें कुछ सुख मिलता है।

आप बताओ 24 घण्टे में आप कब सुखी होते हो? एक प्रश्न मैं आपसे पूछता हूँ? सबसे अच्छा सुख का समय क्या होता है आप लोगों के लिए? जब आप sleeping position में होते हैं, जब आप सो रहे होते हैं। उस समय क्या होता है? बताओ? कौन सी इन्द्रियाँ आपकी काम कर रही होती हैं? बताओ? उस समय आपको मधुर-मधुर संगीत सुनाया जाए...अच्छा लगेगा? उस समय आपको अच्छे-अच्छे चित्र दिखाए जाएँ...अच्छा लगेगा? उस समय आपकी नाक में कोई अच्छी-अच्छी, कौन-सी वे जलेबियाँ और उसकी सुगन्धी डाली जाये जो कुम्भकरण के लिए डाली जाती थी...अच्छी लगेगी? घेवर की सुगन्धी आपके नाक में डाली जाए...अच्छी लगेगी? आपको क्या अच्छा लगेगा? आपने कभी सोचा हम कभी विषयों से रहित होते हैं तो किस time पर होते हैं? सोने के time पर होते हैं जब हमारी सारी इन्द्रियाँ सो रही होती हैं। यहाँ तक कि आप जिस cooler, पंखे को लगा कर के सो गए हैं, कभी-कभी वह भी बन्द हो जाए तो भी नींद अपनी पूरी हो जाती है। एक वह समय होता है, उस समय पर आपको लगता है...सोने के बाद में जब आप उठे तब सुख मिला कि जब आप सो रहे थे तब सुख मिला? अब मैं यह पूछ रहा हूँ? प्रश्न भी पूछना नहीं जानते तुम लोग? प्रश्न पूछने की भी एक बुद्धि होती है। प्रश्न भी पूछने के लिए आपको समय तब मिलता है, जब आप ढंग से सुन रहे होते हैं, आपकी बुद्धि जागृत होती है। मैं आपसे पूछ रहा हूँ...सुख आपको सोने के बाद मिलता है कि जब आप सो रहे होते हैं, तब मिलता है? क्या समझ आ रहा है? सोने के बाद तो सुख नहीं है लेकिन जब आप सो रहे होते हैं तब सुख है लेकिन वह सुख जो होता है, आपके अन्दर वह अनुभव में नहीं आता है कि मैं इस समय पर सुखी हूँ। समझ पा रहे हो? ठीक इसी तरह से इस उदाहरण से सिद्धों का सुख समझना।

सिद्ध भगवान के पास तो शरीर भी नहीं, नींद भी नहीं, इन्द्रियाँ भी नहीं, कुछ भी नहीं फिर भी वह सुखी हैं। क्यों हैं? जब हम थोड़ी देर के लिए विषयों से रहित हो जाते हैं, हमें सुख की अनुभूति होती है। वह हमेशा के लिए, अनन्त काल के लिए विषयों से रहित हो गये तो वे कितने सुखी होंगे? यह गणित यहाँ पर लगा लेना। आपको समझ में आ जाएगा कि सिद्धों का सुख कितना होता है। हमेशा अपने अन्दर, अपने में ही, अपने अन्तरंग में ही रहना और बाहर के किसी भी तरह की विषय की कोई भी इच्छा नहीं, विचार नहीं, ऐसी स्थिति में ढल जाना। ऐसी स्थिति में पहुँच जाने का नाम ही भगवान का सुख, सिद्धों का सुख कहलाता है। यह सुख हमारी आत्मा का सुख होने के कारण से आत्मिक सुख कहलाता है। इस आत्मिक सुख में जब हम रमने लग जाते हैं तब हमारी बुद्धि भी बढ़ने लग जाती है, हमारे सुख भी बढ़ने लग जाते हैं और बाहर के विषयों में जो हमारी dependency है, वह भी कम होने लग जाती है। हम इस सुख के प्रति थोड़ी सी अपनी ललक तो बनाएँ। इस सुख की इच्छा करोगे, अपने आप आपके अन्दर बुद्धि का चातुर्य बढ़ने लगेगा, आपकी बुद्धि भी बढ़ने लगेगी। बुद्धि बढ़ाना है कि नहीं? कैसे बढ़ेगी? **जिनकी बुद्धि बड़ी हुई है उनकी बातें कहो, उनकी बातें सुनो, उनकी बातें ही ध्यान में रखो तो बुद्धि बढ़ेगी।** बुद्धिमान के बुद्धिमान ही बेटे होते हैं। सुनते आए हो न? किससे स्पष्ट हो रहा है? यह राजा श्रेणिक से स्पष्ट हो रहा है।

नंदीग्राम वासियों की परीक्षा



श्रेणिक की बुद्धि की चातुर्यता की बातें तो आपने सुन ली। अब श्रेणिक जो परीक्षा ले रहे हैं, उस परीक्षा से भी आगे जो परीक्षा दे रहा है, वह कौन दे रहा है? उनका ही बेटा। पता नहीं है श्रेणिक को भी, कौन दे रहा है? एक सन्देश भेजा नंदीग्राम में, दूसरा भेजा, फिर दूसरा भेजा और ये सन्देश एक के बाद एक जा रहे हैं और हर समस्या का समाधान होकर के आ रहा है। कल आपको क्या सुनाया था? कल बावड़ी लेकर के आये थे- नंदी गाँव के लोग। बावड़ी पहुँच गई और वे समय पर जग नहीं पाये। समय पर उनके लिए वह बावड़ी देखने को नहीं मिली। उन्होंने समझ लिया कि इन लोगों ने मुझे बेवकूफ बना दिया और मेरी बात तो इन्होंने पूरी कर दी। अब मैं उनसे वह प्रश्न करने के लिए तो तैयार हो ही नहीं सकता तो उन्होंने फिर एक दूसरा प्रश्न भेजा।

प्राचीन जैन ग्रन्थों में सभी वैज्ञानिक सिद्धान्तों की खोज का रहस्य समाहित है

नंदी गाँव के लोगों से जाकर के कह देना, हमें हाथी को तौल करके उसका वजन नाप के बताएँ कि हाथी कितना वजन वाला होता है? सुन रहे हो? यह वह समय की बात हो रही है, जब कोई ऐसे, जैसे truck load होते थे, ऐसी मशीनें नहीं हुआ करती थी। हाँ! बड़े कांटे, धर्म-कांटे बोलते हो बड़े-बड़े, ऐसे उस समय पर कांटे नहीं हुआ करते थे तो **उस समय पर श्रेणिक राजा ने कहा...** हाथी का वजन तौल करके मुझे बताओ कि हाथी कितना भारी है? और यह हाथी हमारे नगर से ले जाओ। नगर से हाथी पहुँचा और नंदी गाँव में हाथी घूमने लग गया। अब लोग सोचने लग गए, इसको किस से तौले? कैसे तौले? कौन सी तखरी पर बिठाएँ इसको? किसी की दुकान में इतनी भारी तखरी, कोई उस समय पर नापने-तौलने का इतना बड़ा भारी कोई system था नहीं। सब लोग परेशान हो गए और परेशान हो गए तो सबको फिर वही याद आए...कौन? अपने गाँव में एक राजकुमार आए हैं, वह कहीं दूर जाने वाले हैं लेकिन कुछ समय के लिए अपने गाँव में रुक गए हैं, अपने ऊपर उपकार कर रहे हैं। इन राजा के प्रश्नों से, इसके इस तरीके की परेशानियों से हमें बचाने का अगर कोई भी एक व्यक्ति हमारे लिए आज भगवान के समान ऊपर से उतर के आया है, तो वह कौन है? यह अभय कुमार हैं। कौन हैं? अभय कुमार। श्रेणिक के पुत्र का नाम क्या? और श्रेणिक को ही पता नहीं?

समस्या है तो समाधान भी है

अब वह फिर उन्हीं अभय कुमार के पास पहुँचे...भगवन्! स्वामिन्! जितना अच्छा कुछ उनकी स्थिति होती हो, सब कह डाली और कहा कि अब मेरे सामने फिर राजा ने एक समस्या भेज दी है। आप ही इस समस्या से पार लगाओगे और इस हाथी का वजन तौलना है, तो अभय कुमार फिर सोच में पड़े। समस्या है तो समाधान भी है, यह बात अपने दिमाग में बैठा लेना। **अगर आपको कभी समस्या-समस्या ही दिखाई दे और समाधान दिखाई न दे तो समझ लेना कि हमारे पास में बुद्धि काम नहीं कर रही है लेकिन समस्या का समाधान तो है। कोई भी ऐसी समस्या नहीं होती, जिसका कोई समाधान न हो।** बस! आपकी बुद्धि काम करनी चाहिए। Idea इसी को बोलते हैं। एकदम से जो आपको अपनी समस्या का समाधान मिल जाये, Idea click कर गया, वह Idea ही बुद्धि का चातुर्य कहलाता है और इस Idea से ही दुनिया

चल रही है। Idea से ही दुनिया का सबसे बड़ा corporation चल रहा है। क्या समझ में आ रहा है? उसका नाम भी क्या है? यह जो तुम्हारे mobile चलते हैं, यह mobile company, एक Idea company भी तो है। Idea company है कि नहीं? ये mobile की companies आप सबके ऊपर राज कर रही हैं और यह सब राज करके आपका पैसा ले रही हैं और सबसे बड़े-बड़े अमीरों की lists में वे खुद लगे हुए हैं। किसके माध्यम से? Idea. अतः दुनिया में सबसे बड़ी चीज क्या? Idea और यह Idea जिसके पास में होता है, वही सब पर राज करता है।

राज वह करेगा...जिसके पास Idea होगा

तुम्हारे बच्चों को पढ़ाने से, लिखाने से कुछ नहीं होने जाने का। तुम अपने बच्चों को कितनी बड़ी IIT करा करके उसे IITian बना लेना, कुछ भी पढ़ा लेना लेकिन उस पर राज करने वाला जो होगा, **वह कौन होगा? जिसके पास Idea होगा।** तुम्हारा बच्चा उसके सामने नौकर बनेगा। राजा कौन बनता है? जिसके पास में Idea होता है। PM मोदी से पूछ लेना, कौन सी IIT में पढ़े हैं? कौन सी MBBS किए हुए हैं? कौन सी politics पढ़े हैं? Political science पढ़े हैं? क्या पढ़े हैं? पूछ लेना। लेकिन दिमाग में क्या होना चाहिए? Idea.

अभय कुमार का Idea

जब अभय कुमार के लिए समझ में आया कि इन लोगों को भी मुझे बचाना है और इनको भी कुछ न कुछ इस आपत्ति से बचाने का कोई अपने अन्दर विचार लाना है, तो विचारमग्न हुए। उनके दिमाग में एक Idea आ गया और उन्होंने अगले दिन अपने उन ग्रामवासियों से कहा...भाई! आप लोग चिन्ता नहीं करो। चलो हम एक तालाब पर चलते हैं। किस पर? तालाब पर। उस तालाब पर उन्होंने एक बड़ी-सी नाव लगा दी और उस नाव में लगाने के बाद में उन्होंने नाव लगाने से पहले उसका पानी देखा। देख लो! यह पानी कहाँ पर लग रहा है, यहाँ पर निशान लगा दिया और फिर नाव में उस हाथी को बिठा दिया। उस नाव पर हाथी को उतार दिया और हाथी को उतारने के बाद में वह नाव जितनी अन्दर चली गई, पानी जितना ऊपर आ गया, उस पर निशान लगा दिया कि पानी कितना ऊपर आ गया। समझ आ रहा है? फिर उस हाथी को उतार लिया और फिर उसी नाव में उतने ही वजन के उस पर फिर पत्थर डाल दिए और जब वे पत्थर भी उस नाव पर उस निशान तक बराबर आ गए तो उतने ही पत्थरों को ले जाकर के राजा श्रेणिक के पास में पहुँचा दिया। बोले...इन पत्थरों का जितना वजन है, उतना ही तुम्हारे हाथी का वजन है।

Archimedes का सिद्धान्त- अभय सिद्धान्त

ये किसके सिद्धान्त थे? ये अभय कुमार के सिद्धान्त हैं और आज आप इन्हीं सिद्धान्तों को एक वैज्ञानिक के नाम पर पढ़ते हैं...**Archimedes के सिद्धान्त। क्या सुन रहे हो? वैज्ञानिकों के नाम तो तुम्हें ध्यान रहते हैं।** उनके principle तो पढ़ाए जाते हैं। Archimedes का principle है लेकिन आपको यह पता नहीं है कि इस तरह के सिद्धान्तों की खोज करने वाले उससे भी पहले लोग हो गए हैं। **अगर शास्त्रों की दृष्टि से देखा जाए तो यह जो पानी में डूबी हुई वस्तु का भार कितना है? और वह भार उतना ही होता**

है जितना वह डूबी वस्तु जो है, उस पानी को replace कर देती है। उसके ऊपर उतना pressure आ जाता है, इस बात का सिद्धान्त बताने वाले Archimedes को आज हम लोग मानते हैं कि Archimedes का सिद्धान्त है। अगर शास्त्रों के आधार पर देखा जाए तो यह अभय कुमार ने सबसे पहले इस सिद्धान्त की खोज कर ली थी। यह अभय सिद्धान्त कहलाना चाहिए था लेकिन जैनियों को ही नहीं पता, दूसरों को क्या पता होगा? दूसरे लोगों ने इन शास्त्रों से पढ़-पढ़ करके ही, इसीलिए इन शास्त्रों से पढ़ कर के ऐसे वैज्ञानिक सूत्र बना लिए और खोज लिया और उन सूत्रों के माध्यम से आज आपके सामने science आ जाती है, तो आप Archimedes को जानते हो। लेकिन उन्होंने उस समय पर कोई ऐसे सूत्र बना कर के नहीं दिए थे। वे सूत्र क्या हैं? चाहे वह $e = mg$ हो या कोई और दूसरे सूत्र हो। ये सूत्र बना कर के जो सामने दे दिए तो वैज्ञानिक हो गए। लेकिन theory और practical तो वही है जो Archimedes ने किया था और वह इसी theory के base पर किया था, जो theory हमें अभय कुमार ने उस समय पर राजा श्रेणिक के समय पर बना कर के दे दी थी।

वैज्ञानिकों का वंश

आप दुनिया के सबसे बड़े गणितज्ञों के वंश में उत्पन्न हुए हो, सबसे बड़े वैज्ञानिकों के वंश में उत्पन्न हुए हो लेकिन फिर भी आपको अपने इतिहास की जानकारी नहीं होने के कारण से जो Italy के लोग हैं, Greece के लोग हैं, उनको तो आप वैज्ञानिक की तरह मानते हो। लेकिन जो अपने भारत में ही जन्मे मगध राज्य के राजा थे और राजगृही बिहार में जिनकी राजधानी थी, उस मगध राज्य के साम्राज्य में वहाँ के राजा श्रेणिक के पुत्र अभय कुमार ने उस सिद्धान्त की खोज की, यह दावा करने का साहस आपके पास में है ही नहीं और यह सब B.C. की बात है। B.C. समझते हो न? **Before Christ**, ये सब ईसा से पहले की बातें हैं। Archimedes ईसा से 200 वर्ष पहले हुआ लेकिन यह जो बात है, वह ईसा से 500 वर्ष पहले की है। यह जब हम समझें कि इससे पहले ये खोजें हो चुकी थीं लेकिन जो व्यक्ति जिस चीज का presentation, जिस formula के साथ दे देता है, उसका नाम तो हम किताबों में वैज्ञानिक की तरह दर्ज करा देते हैं। लेकिन हम भूल जाते हैं कि सारे सिद्धान्त हमें अपने शास्त्रों में उपलब्ध मिलते हैं। हम अपने शास्त्रों को पढ़ते तो हैं लेकिन कभी इस दृष्टि से नहीं पढ़ते कि इनमें कितनी वैज्ञानिकता भी भरी पड़ी है? यह एक-एक art, एक-एक skill जो आपको सिखाई जा रही है, इसके माध्यम से आप अपने जीवन की कई समस्याओं को सुलझा सकते हैं। इसके माध्यम से आप अपने विज्ञान को भी समझ सकते हैं। यह विज्ञान आपके सामने आ रहा है और Archimedes ने क्या किया? यही तो किया था, यही तो था और उसी के माध्यम से उसने खोज कर ली थी कि हाँ! मुझे मिल गया कि पानी में डूबी हुई वस्तु का भार क्या होता है? पानी में वस्तु आधी या पूरी क्यों डूबती है? इसी base पर उसने सिद्धान्त बना लिया था और यह सिद्धान्त आज भी जारी है। आप ध्यान रखें कोई भी सिद्धान्त है, उन्हें present करने का तरीका अलग हो सकता है लेकिन हर सिद्धान्त हमें जैन दर्शन की किताबों में उपलब्ध मिलता है और पहले के लोग इस समृद्ध संस्कृति को हमेशा पढ़ा करते थे। इन शास्त्रों को ले जाकर के अध्ययन किया करते थे, तब जाकर के इन सिद्धान्तों की वह प्राप्ति कर लिया करते थे। आपको यह सीखना चाहिए, आपको यह समझ में आना चाहिए, इस तरह के सिद्धान्तों के माध्यम से ही हम समझ पाएँगे कि इन्द्रियों के सुख में और आत्मा के सुख में कितना बड़ा अन्तर है? ज्ञान का सुख इन्द्रिय के सुख से भी अलग होता है। यह जो

राजा श्रेणिक और अभय कुमार का चातुर्य आपको सीखने को मिल रहा है। यह क्या है? यह ज्ञान का सुख है।

ज्ञान का सुख

कौन सा सुख? यह ज्ञान का सुख है। यह इन्द्रिय का सुख नहीं है। इसमें भी सुख मिल रहा है कि नहीं? यह क्या है? **यह ज्ञान का सुख है, तो ज्ञान में भी एक सुख होता है। जब हम इन्द्रिय सुख से हटेंगे तो ज्ञान सुख की ओर आएँगे और जब हम ज्ञान में इस तरह के आत्मिक सुख की अवधारणा बना लेंगे तो फिर हम आत्मिक सुख की ओर भी जाएँगे।** ऐसे आत्मिक सुख में डूबे हुए भगवन्तों को ही सिद्ध भगवान कहा जाता है- **‘विषय विरहितम्’** सिद्धों के पास में कोई विषय होते हैं क्या? वे किसी भी तरह से अपने संसार में रहते हुए भी, अपने आप को ही देखते हुए भी, हमें कभी भी अगर देखते हैं तो वह देखने की इच्छा से नहीं देखते हैं, वह तो हम उनके ज्ञान में दिख जाते हैं। इन्द्रियों के बिना भी सब कुछ देखना-जानना होता है। उसी को कहते हैं- आत्मा का सुख। **ऐसे आत्मिक सुख की ओर आप अगर अपनी आस्था बना लेते हैं, अपना एक विश्वास बना लेते हैं तो आपको भी कभी न कभी वह आत्मिक सुख की उपलब्धि हो सकती है।** बस! आपको विश्वास बनाना है। जैसे आपको कोई भी तरीके का कार्य करना होता है, कोई भी तरीके की आपको graphing करनी होती है, कोई भी तरीके का आपको data create करना होता है, आप तुरन्त कहाँ पहुँचते हो? computer system के पास। समझ आ रहा है? इसमें सब चीजें feed हैं। हर समस्या का समाधान, हर चीज आपको computer के अन्दर net के through मिलने लग जाती है। इसी तरीके से जब भी आपके लिए लगे, हमारी आत्मा का सुख कहाँ है? तब अपनी आँखें बन्द करना और **इन सिद्ध भगवानों की याद करना। जो बिना इन्द्रियों के, बिना शरीर के, आत्मा के सुख का आनन्द ले रहे हैं।** आपको अपने आप वह चीजें दिखाई देने लग जाएँगी, जिन पर हम विश्वास आपको कराना चाहते हैं। सुन रहे हो? आँखें बन्द करना आता है आपको? आता है? नहीं आता? ऐसा लगता है महाराज अन्धकार छा जाएगा।

22. पर्यावरण प्रदूषण का कारण - प्रतिद्वंद्विता

भव्य प्राणी की विशेषता



सिद्ध भगवन्तों की स्तुति का यह क्रम पिछले कई दिनों से चल रहा है, अभी भी जारी है। भगवान के गुणों का स्तवन करते हुए, जो सिद्ध भगवान की स्तुति आचार्य पूज्यपाद महाराज ने की, हम उसी को पढ़ रहे हैं, सुन रहे हैं और समझ रहे हैं। भगवान के सुख कई प्रकार की विशेषताओं को लिए हुए हैं और भगवान के सुख की विशेषता अगर हमें कदाचित भी कभी याद आ जाती है, तो वह भी हमारे लिए बहुत बड़ा संबल देने का कारण बन जाती है। जिस चीज पर हमारा विश्वास होता है, हमारा mind उसी चीज की ओर inclined होता है। **हम जिस चीज को अपने विश्वास में रखते हैं, हमारा विचार उसी ओर झुक जाता है। इसलिए यह स्तुति बार-बार आपसे बताई जा रही है, इसलिए कही जा रही है कि आपके लिए यह स्तुति कहीं फीकी न लगती हो।** कहीं आप इस स्तुति को सुनते-सुनते ऊब न जाएँ और अगर आप इस स्तुति को सुनकर ऊबने की बजाय डूब रहे हैं तो यह एक बहुत अच्छी आपके अन्दर की पहचान होगी कि आप भगवान की स्तुति में ऊब नहीं रहे हैं, डूब रहे हैं। इसीलिए आप भव्य प्राणी कहलाते हैं। यह भव्य प्राणी की एक विशेषता है।

सिद्ध भगवान की भक्ति का फल

जो भव्य प्राणी होता है, वह भगवान की स्तुति से ऊबता नहीं है। आपको ऐसा तो नहीं लग रहा, कितने दिन हो गए? वही सिद्ध भगवान, वही सुख, ऐसा नहीं, वैसा नहीं, घुमा-घुमा कर वही-वही बातें बार-बार की जा रही हैं। ऊब आने लगी महाराज! ऐसा हो रहा है? नहीं हो रहा है? क्या हो रहा है? अच्छा लग रहा है? डूबते हो उसमें? जब हम डूबते हैं, तो इसका मतलब है कि हमारा विश्वास भी सिद्धों की ओर बढ़ता है और यही डूबना एक तरह से कहा जाता है कि सिद्ध भगवान भले ही ऊँची ऊँचाई पर पहुँच गए हैं लेकिन जो सिद्ध भगवान की भक्ति में डूबता है, सिद्ध भगवान उसे भी अपने पास में उतनी ही ऊँचाई पर उठा लेते हैं, बुला लेते हैं, यह ध्यान रखना है। इसलिए सिद्ध भगवान के गुणों का स्तवन करना हम सभी के लिए बहुत ही आनन्ददायक होना चाहिए। भगवान की स्तुति करते हुए कई विशेषण आपके सामने रखे गए... **‘वृद्धि-ह्रास-व्यपेतं, विषय-विरहितं’** यह सब हो चुका। आगे एक और विशेषण आ रहा है... **‘निःप्रतिद्वंद्व-भाव-म्’** क्या है आज का topic? **‘निःप्रतिद्वंद्व-भावम्’** प्रतिद्वन्द्व के भाव से रहित हो गए हो।

प्रतिद्वन्द्वी कौन

‘प्रतिद्वन्द्व’ वैसे द्वन्द्व ही अपने आप में दो के बीच में छिड़ जाता है, तो वही अपने आप में ‘कलह’ कहलाता है लेकिन फिर उस द्वन्द्व के साथ में कोई दूसरा और जुड़ जाता है, तो ‘प्रतिद्वन्द्वी’ कहलाने लग जाता है। जहाँ पर एक ही चीज की प्राप्ति करने के लिए एक से अधिक लोग तैयार हो जाते हैं तो वहाँ पर प्रतिद्वन्द्व अपने आप होने लग जाता है और उन्हीं participants को **‘प्रतिद्वन्द्वी’** कहा जाता है। दुनिया की ऐसी

कौन सी जगह है? कौन सी ऐसी Branch है? कौन सा ऐसा chamber है, जहाँ पर कोई प्रतिद्वन्द्वी न हो? कौन-सा ऐसा व्यापार है, जहाँ पर कोई प्रतिद्वन्द्वी न हो? प्रतिद्वन्द्वी तो हर जगह मिलेंगे। अगर आपका कपड़े का व्यापार है, तो उसके भी बहुत सारे लोग मिलेंगे। ग्राहक तो बहुत सारे होते ही हैं लेकिन दुकानदार भी बहुत सारे होते हैं। उस व्यापार को बढ़ाने वाले लोग भी बहुत सारे होते हैं और वह सभी लोग जो हमारे बराबर में दुकान खोल कर बैठ जाते हैं, वह सब हमारे लिए एक तरह से प्रतिद्वन्द्वी हो जाते हैं। यह प्रतिद्वन्द्वता जब तक संसार में है, कभी छूटती नहीं है।

बच्चों में प्रतिद्वन्द्वता (competition) की भावना

बच्चों को देखो! बचपन से ही उनके competition शुरू हो जाते हैं। Class में रहते हैं तो class में सबसे बढ़कर marks आना चाहिए, यह क्या है? यह प्रतिद्वन्द्व की भावना है। Class में अगर 40 बच्चे हैं, 50 बच्चे हैं तो मेरा बच्चा उन सब में ऊपर है। एक class के कई बहुत सारे और subclasses होती हैं, उन सबको मिलाकर भी पूरी स्कूल में भी अगर बच्चे के सबसे अच्छे marks आते हैं तो बच्चा हम सब में बहुत ऊपर है। यह प्रतिद्वन्द्वता का भाव बच्चे के अन्दर भी बढ़ता चला जाता है। **बच्चा जब और आगे बढ़ता है, तो उसे किसी भी तरीके के competition देने पड़ते हैं।** ये जितने भी competitive exams होते हैं, ये सब क्या हैं? ये सब हमें प्रतिद्वन्द्वता सिखाते हैं। आगे बढ़ो, भीड़ में रहकर भी सबसे आगे निकलो और भीड़ में रहकर जो इस तरह से आगे निकलने की हिम्मत रखता है, वही आगे बढ़ता है, वही आगे पहुँचता है, वही वीर कहलाता है और इस तरह से हमें आगे बढ़ने के लिए मजबूर किया जाता है।

Comparison में सदा प्रतिद्वन्द्वता का भाव

हम हमेशा प्रतिद्वन्द्वता के भाव में जीते हैं। हमारे आसपास जितने भी लोग होते हैं, उन सबके प्रति हम अपने अन्दर एक प्रतिद्वन्द्वता का भाव रख ही लेते हैं। व्यापारी, व्यापारी के प्रति; एक office में काम करने वाले अनेक लोग होते हैं, उनके बीच में भी कौन ज्यादा है? कौन ऊपर है? कौन नीचे है? यह प्रतिद्वन्द्वता का भाव हमेशा बना ही रहता है। जिसे हम कहें एक दूसरे को compete करना या एक दूसरे से comparison करना। **यह दोनों तरीके के भाव हमारे अन्दर एक प्रतिद्वन्द्वता का भाव लाते हैं और हम जीवन में, जीवन के अन्त तक भी शायद इस प्रतिद्वन्द्वता से बच नहीं पाते।** सब कुछ प्राप्त करने के बाद कहीं न कहीं यह जीवन में, किसी न किसी से अपने आप को श्रेष्ठ या अपने आपको हीन मानने का भाव आदमी के अन्दर बना ही रहता है। अपने आपको श्रेष्ठ मान लेता है, किसी से better मान लेता है या अपने आपको किसी से कमतर मान लेता है और इस तरह की यह दोनों ही प्रकार की भावनाएँ उसके अन्दर एक बहुत बड़ा भीतर से प्रतिद्वन्द्वता का भाव create कर देती हैं और यह भाव अपने आप बनता है। घर के लोगों में भी अगर चार लोग हैं, उनमें भी बन जाता है। एक पिता के चार बेटे हैं, चार बहुएँ भी हैं, उनमें भी बन जाता है। कभी व्यक्त हो जाता है, कभी नहीं भी व्यक्त होता है लेकिन भीतर आता है। किसी भी व्यक्ति के लिए, चाहे वह बेटे के रूप में हो, चाहे वह बहू के रूप में हो, चाहे वह बेटे का भी बेटा क्यों न हो; हर किसी के अन्दर उस व्यक्ति को देखकर या अपने आसपास के परिवेश को देखकर एक प्रतिद्वन्द्वता का भाव आ जाता है।

पुण्यवान व योग्य व्यक्ति देश की उन्नति में सहायक

अगर घर में चार बेटे हैं और उन चार बेटों के और चार-चार बेटे हो जाएँ, हम तो यही भावना करते हैं। जितना ज्यादा जैन कुल में जन्म लेने वाले जीवों की संख्या होगी, उनके कल्याण की सम्भावनाएँ उतनी ज्यादा खुल जाएँगी, हम तो यही भावना रखते हैं। यूँ नहीं सोचते कि जनसंख्या बढ़ जाएगी। जनसंख्या तो बेवजह के लोगों से जो बढ़ती है, उसका नाम 'जनसंख्या बढ़ना' कहलाता है। जो लोग पुण्यवान हैं, जो लोग योग्य होते हैं, जो लोग व्यापार में बहुत अच्छी ऊँचाइयों पर उठते हैं और जो लोग बहुत अच्छा tax भी pay करते हैं और बहुत ज्यादा literate होते हैं, अगर इन लोगों की संख्या देश में बढ़ेगी तो देश का भला होगा, देश का कभी बुरा नहीं होगा। इसलिए अच्छे वर्ग के लोगों की संख्या बढ़नी चाहिए। चाहे वह जैन हो, चाहे ब्राह्मण हो, चाहे ये वैश्य वर्ग के लोग हो, जो अनेक तरह के व्यापारों में लगे रहते हैं; इनकी संख्या बढ़ेगी तो ही भारत की उन्नति होगी, अन्य के लिए नहीं कह सकते हम। इसलिए अच्छे लोगों को अपनी संख्या बढ़ा कर अपना बल बढ़ाना चाहिए और हमेशा देश के लिए, समाज के लिए अच्छा करने के लिए, हमेशा अपने अन्दर भाव रखना चाहिए। अच्छे लोगों की संख्या के बल पर यह सम्भव है। इसलिए आपसे कह रहा हूँ कि अगर एक घर में चार बेटे हैं और उन चारों के भी चार-चार हो जाते हैं तो यह बहुत बड़ा बल हो जाता है। यह बात अलग है, थोड़ी बहुत प्रतिद्वन्द्वता रह सकती है। वह अपने मानसिक भावों में रहती है लेकिन उसका कोई ज्यादा फर्क नहीं पड़ता। यह भाव तो अपने अन्दर तब भी आ जाता है जब...जैसे देवरानी है, जेठानी है, देवरानी का भी बेटा है, जेठानी का भी बेटा है मान लो और दादा जी एक हैं। अब दादा जी कौन से बेटे को ज्यादा खिला लेते हैं? देवरानी वाले को? जेठानी वाले को? किसको ज्यादा बाहर लेकर जाते हैं? किसको ज्यादा toffee खिलाते हैं? किसके लिए ज्यादा घोड़ा बन जाते हैं? बहुएँ देखती रहती हैं और वह देखकर भी अगर किसी के लिए कम हो जाता है, किसी के लिए ज्यादा हो जाता है, तो भाव आ ही जाता है...इनको ज्यादा चाहते हैं, इनको कम चाहते हैं। बस! जहाँ यह 'ज्यादा और कम' का भाव आया, वहीं प्रतिद्वन्द्वता का भाव हो गया।

सिद्ध भगवान 'निःप्रतिद्वन्द्व'

हम कैसे बच पाएँगे? बड़ा परिवार भी जरूरी है और परिवार बड़ा न हो तो हमारी समाज तो बहुत बड़ी है ही। हम समाज के बीच में रहते हैं, समाज के लोग जानते हैं तो समाज के बीच में भी हमारे अन्दर वह प्रतिद्वन्द्वता आ ही जाती है। हर व्यक्ति हमेशा एक ओहदे पर नहीं रह पाता। कभी अध्यक्ष बनते हैं, मन्त्री बनते हैं, कभी कमेटियाँ बदल जाती हैं तो कभी जो बदल गए तो नए आ गए तो नए current में अध्यक्ष हो गए और वह ex. अध्यक्ष हो गए तो **यह भी एक प्रतिद्वन्द्वता का भाव बन जाता है।** इस तरह के भावों में जीने से आपके अन्दर कभी-कभार थोड़ी सी मानसिकता बिगड़ जाती हो या कभी-कभार आपके अन्दर यह भाव आ जाता हो तो चल जाएगा लेकिन यह भाव ज्यादा बिगड़ना नहीं चाहिए, ज्यादा बढ़ना नहीं चाहिए। कौन-सा भाव? 'प्रतिद्वन्द्वता का भाव।' हम पहले अध्यक्ष थे, अब हम अध्यक्ष नहीं हैं। हम पहले मंत्री थे, अब हम मंत्री नहीं हैं। पहले हम पद में थे, अब हम पद पर नहीं हैं। पहले हम trust में थे, अब हम trust में नहीं हैं। पहले हम committee में थे, अब हम committee में नहीं हैं। यह भाव भी कभी आपको परेशान करता तो होगा? अगर यह करता है, तो समझना चाहिए कि यह भाव हमारे लिए प्रतिद्वन्द्वता के भाव के रूप

में कभी भी उभर कर न आए। इसलिए एक बहुत अच्छी युक्ति आपको बता रहा हूँ अगर आपको इन भावों से ऊपर उठना है, इन भावों से बचना है...सिद्ध भगवान तो पूरी तरह से प्रतिद्वन्द्वता से रहित हो गए, उनके लिए तो प्रतिद्वन्द्वता नाम की कोई चीज है ही नहीं। कितने ही उनके बाद, उनके पहले कोई भी सिद्ध बन जाएँ, वह सब आपस में एक समान हैं। किसी के अन्दर कोई भी भाव में न कभी कमी आएगी, न कभी कमी भविष्य में आएगी और न कभी कमी आयी है। सबके भाव बिल्कुल एक समान हो जाते हैं। सिद्ध भगवान को इसलिए 'निःप्रतिद्वन्द्व' कहा गया है।

सभी से निःप्रतिद्वन्द्वता (प्रेम भाव) रखने की युक्ति

अब हमारे भाव एक समान नहीं हो रहे हैं तो हम क्या करें? एक बहुत अच्छी युक्ति आपको बता रहा हूँ। दुनिया में भाव और विचार से ही सब कुछ सम्भव होता है। आपके सामने समाज है, आपके सामने बहुत लोग हैं लेकिन **आप एक विचार अपने दिमाग में जरूर रखें, सबके प्रति प्रेम रखें।** आदमी को सबके प्रति प्रेम रखना चाहिए, विश्वास कम लोगों के प्रति रखना चाहिए। **प्रेम सबके प्रति रखो, विश्वास कुछ लोगों के प्रति रखो और बुराई किसी की भी न करो** तो आपका जीवन बहुत अच्छा निकलेगा। संसार में रहते हुए भी, समाज में रहते हुए भी, बड़े घर-परिवार में रहते हुए भी प्रतिद्वन्द्वता से बच कर रहने का यह सूत्र आपको बता रहा हूँ, प्रेम सबसे रखो। घर में जितने भी बेटे हैं, जितने भी रिश्तेदार हैं, आस पड़ोस के लोग हैं, समाज के लोग हैं, सबसे हमारा प्रेम भाव। विश्वास की बात- जिनसे हम अपनी आपस की समझ की बातें करते हैं, जिनसे हम अपने कभी खराब समय में, अपना विश्वास के साथ में, उनसे हम मंत्रणा करते हैं, अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, वे विश्वास के लोग कम होते हैं लेकिन प्रेम सबसे होता है। फिर उसके बाद में जो बच जाएँ, उनको देखो। उनके प्रति भी कुछ रख सको या न रख सको लेकिन उनकी कभी बुराई न करो तो अपने आप में आपके अन्दर एक भलाई का भाव आ जाएगा। **आप एक अच्छे इंसान बने रह जाओगे और इस प्रतिद्वन्द्वता के भाव से ऊपर रहोगे।** इससे परेशान नहीं होंगे। यह निःप्रतिद्वन्द्वता का भाव अपने आप में बहुत बड़ा भाव है। यह तब तक नहीं छूटता, जब तक देह रहती है, शरीर रहता है क्योंकि जब तक शरीर है तब तक प्रतिद्वन्द्वता लगी हुई है। हर जीव एक दूसरे का प्रतिद्वन्द्वी बना रहता है।

Universe में सभी जीव परजीवी

पूरे universe के अन्दर देखेंगे आप, तरह-तरह के जीव होते हैं, वह सब परजीवी जीव होते हैं। सबसे ज्यादा परजीवी मिलेंगे। परजीवी का मतलब- जिनका जीवन दूसरों से चलता है। जैसे एक दिन अमरबेल का उदाहरण दिया था? **यह कैसे जीव हैं? परजीवी!** हम देखते हैं कि सभी परजीवी होते हैं, आखिर हम और आप भी क्या हैं? परजीवी नहीं हैं क्या? लेकिन विज्ञान इस बात को नहीं मानता होगा शायद। क्या हमारा जीवन दूसरे के बिना चल सकता है? हम अगर कोई भी वस्तुओं का सेवन कर रहे हैं, हम किसी भी तरह की पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वातावरण का हम अपने अन्दर ग्रहण कर रहे हैं, आदान-प्रदान कर रहे हैं तो क्या हम परजीवी नहीं हैं? क्या हमने यहाँ यह जो भवन बनाया है, इससे पहले यहाँ पर घास होगी, यहाँ पर भी कोई भी वनस्पति लगी होगी, सब हमने हटाया होगा तब हमने अपने लिए भवन बनाया होगा। क्या हम परजीवी नहीं हुए? दूसरों का जीवन लेकर ही सबका काम बनता है लेकिन उसमें भी दूसरों के जीवन

के साथ में उद्देश्य यह रहता है कि हम दूसरों के लिए वह दुःख नहीं दे रहे हैं, जो दुःख दूसरों के द्वारा उन्हें मिलता है। हम तो केवल अपने अति आवश्यक कार्य के लिए उसका उपभोग कर पाते हैं तो वही हमारे लिए परजीवीपना भी आ जाता है। श्वास लेते हैं तो श्वास में भी जीवन होता है किसी का। जल पीते हैं तो उसमें भी जीवन होता है किसी का। वृक्ष होते हैं तो वृक्ष भी आपस में भी परजीवी होते हैं। जैसे...अमरबेल है, वह परजीवी है और कोई भी वृक्ष हो, वह भी परजीवी है क्योंकि कोई न कोई वृक्ष कहीं न कहीं से अपने पोषण की जो भी सामग्री खींचेगा, वह धरती से ही खींचेगा। अगर वृक्ष परजीवी न होते तो कुछ ऐसे भी वृक्ष होते हैं, जिन्हें जहाँ लगा दिया जाए, वहाँ पर पानी की कमी हो जाती है। वे कौन से वृक्ष हैं? जैसे- eucalyptus के वृक्ष हैं, आखिर यह भी तो एक परजीवीपना है। वह भी तो कहीं न कहीं से जीवन निकाल रहे हैं। किसी का जीवन लेकर के ही अपना जीवन बढ़ा रहे हैं।

प्रतिद्वन्द्वता सर्वत्र विद्यमान

आपके व्यापार चलते हैं, आप भी किसी पर आश्रित हैं लेकिन आश्रित होने का मतलब यह नहीं कि वह एक-दूसरे को मिटाना चाहता है या एक दूसरे के लिए कष्ट पहुँचाना चाहता है लेकिन एक दूसरे पर आश्रित रहकर के उसका जीवन जरूर चलता है। अगर हम यहाँ पर भी देखें तो यहाँ पर भी हमें दो भाव हमेशा दिखाई देंगे। **प्रतिद्वन्द्वता सर्वत्र विद्यमान है। वातावरण में भी है, पर्यावरण में भी है।**

प्रतिद्वन्द्वता से पर्यावरण प्रदूषित

अगर आज पर्यावरण में हमारे सामने दिखाई देता है कि पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है, तो किसके कारण से? प्रतिद्वन्द्वता के कारण से। कभी भारत के अन्दर वृक्षों की कमी नहीं रही। जल की, पृथ्वी की, पृथ्वी के अन्दर निकलने वाले खनिज पदार्थों की, कभी भी भारत के अन्दर कमी नहीं रही। लेकिन जब कमी होती है, तो क्यों हो रही है? कमी का मतलब, इसलिए कमी हो रही है कि हम जिन संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं, उनकी हम बर्बादी ज्यादा कर रहे हैं, उपयोग कम करते हैं। जो चीजें हमारे लिए आवश्यक नहीं भी होती है, हम उन्हें आवश्यक बनाने के लिए प्रकृति को जब बहुत सारा नुकसान पहुँचाने लग जाते हैं और जब इस **प्रतिद्वन्द्वता में जब हम ज्यादा आगे बढ़ जाते हैं तो यह unbalance ही हमारे पर्यावरण को प्रदूषित करने का कारण बन जाता है।** आज हम में होड़ लगी हुई है, भारत को अमेरिका बनाने की! अमेरिका की सड़कें देख कर आते हैं लोग, new york और england की सड़कें देख कर आते हैं और यहाँ पर आकर कल्पना करते हैं...ऐसी four line हैं, ऐसी चमकती हुई, ऐसी फरफटदार गति वाली, वाहन वाली सड़कें, यहाँ पर होनी चाहिए। बनाओ और उन सड़कों को बनाने के कारण से ही बहुत बड़ा पर्यावरण हानि को प्राप्त हुआ है।

उपयोगिता और उपभोगिता में अन्तर से पर्यावरण की रक्षा

चारों तरफ पहले छोटी छोटी पगडंडियाँ होती थी, छोटी छोटी सड़कें होती थी, वह उपयोगी थी। बैलगाड़ियाँ पहले चलती थी, सड़कों पर ही चलती थी लेकिन उतनी उपयोगी होती थी और उस उपयोगिता से कभी भी पर्यावरण पर प्रहार नहीं हुआ। यही वह चीजें हैं, जिसको हम समझ सकते हैं...**उपयोगिता क्या और**

उपभोगिता क्या? उपयोगिता से कभी भी पर्यावरण दूषित नहीं होता। आप कितनी भी श्वासें ले लो, कभी भी दुनिया में वायु की कमी नहीं होगी। आप कितना भी जल पी लो, जल का उपयोग कर लो, कभी भी आपके लिए जल की कमी नहीं होगी। कितनी भी पृथ्वी की वनस्पति का आप सेवन कर लो, आपके लिए कभी वनस्पति की कमी नहीं होगी। उपयोग करो लेकिन जब हम उपयोग की बजाय उपभोग करने में, हम उसकी बर्बादी ज्यादा करने लग जाते हैं, तो फिर हमारे वही शौक जो उपभोग करने के काम में आते हैं, वह हमारी चीजों को बर्बाद करके पर्यावरण का balance बिगाड़ देते हैं।

विकास की होड़ में प्राकृतिक साधन नष्ट

सड़कें जब तक सड़कों के रूप में थी, उनमें बैलगाड़ी भी चलती थी, साइकिलें भी चलती थी, धीरे-धीरे मोटर गाड़ी आ गई, वह भी चलने लगी, सब कुछ चलता था। बसें भी चलती थी, स्कूटर भी चलते हैं, कारें भी चलती थी, अभी भी चलती हैं लेकिन उन सड़कों को ही चौड़ा करने के लिए हर line four way होना चाहिए, six way होना चाहिए, इस होड़ में जब से हम पड़ गए हैं तब से हमने पर्यावरण को दूषित कर दिया है। यह अकाट्य सत्य है, किसी भी पर्यावरणविद् से पूछ लेना। जब से हमने सड़कों का यह विशालीकरण करना शुरू किया, तब से इन four लाइनों के कारण से दुनिया का लम्बा-लम्बा, किलो-किलो-मीटरों तक का वह जंगल नष्ट हो गया। चारों ओर वृक्ष लगे रहते थे, वह सारे के सारे वृक्षों का विनाश अब हम सड़कों पर देखते हैं तो अब इतनी धूप! इतना! कभी धूप के समय पर धूप, पानी के समय पर पानी, बचने के लिए कोई साधन नहीं होता है। जब तक कि वहाँ पर आपको किसी का कोई होटल न मिल जाए, कहीं कोई किसी की बनी हुई कोई दुकान न मिल जाए, तब तक आप अपने आप को बचा नहीं सकते और पहले यह सब प्राकृतिक साधन होते थे, आदमी अपने आप को बचा लेता था।

पर्यावरण की सुरक्षा के उपाय

धूप से बचने के लिए क्या करता था? छाया में खड़े होने के लिए वृक्ष के नीचे बैठ जाता था। पानी भी ज्यादा गिर रहा है, उसे कहीं कुछ बचने की जरूरत है, वृक्ष के नीचे खड़ा हो जाता था। ऐसे घनेदार वृक्ष होते हैं, खूब पानी गिरता रहे, उसके नीचे पानी थोड़ा-थोड़ा भी आएगा, ज्यादा नहीं आता है। यह सब हमारे लिए बचाव के साधन थे। हमने इन सब सड़कों के चौड़ीकरण करने के लिए इन पर्यावरणों को इतना प्रदूषित कर दिया कि उन वृक्षों की भरपाई करने के लिए अब हमें अलग से संकल्प लेने पड़ रहे हैं। हम भी एक वृक्ष लगाएँ, हम भी एक वृक्ष लगाएँ। यह association यह जो सामने बैठी हुई है यह वृक्षों के संकल्प के माध्यम से आगे बढ़ रही हैं। व्यापार को आगे बढ़ाने के साथ-साथ, यह पर्यावरण की सुरक्षा में इस तरह के लोग जब आगे बढ़ते हैं तो **इसका मतलब है कि हम कहीं न कहीं यह जो पर्यावरण unbalance हो गया है, उसको balance करने की कोशिश में लगे हुए हैं।** लेकिन ये कोशिशें हमारे लिए कारगर हो सकती हैं, होंगी, इनमें समय लगेगा क्योंकि हमने जो बर्बादी कर रखी है, उसका percentage बहुत ज्यादा हो चुका है। यह कोशिशें हमारा बहुत थोड़ा सा काम करेंगी लेकिन कोशिशें अगर थोड़ी भी काम करती हैं तो भी हमें करना तो चाहिए। बर्बादी एक साथ जिस तरह के नियमों के कारण से होती है, अगर उस तरह के नियमों के तहत इसी तरीके के plantation के कार्यक्रम, पर्यावरण को सुरक्षित रखने के

कार्यक्रम अगर किए जाएँ, तब उनकी भरपाई हो पाएगी लेकिन वह भरपाई होने में बहुत समय लग जाएगा।

वृक्ष जीवन जीने की कला सिखाते हैं

आपने सड़कों के किनारों पर खड़े हुए उन वृक्षों को, जो 20-20 साल से खड़े थे, कितने बड़े पर्यावरण सुरक्षा के वे स्रोत थे, 25-25 साल, 50-50 साल के भी वृक्ष हो जाते हैं तो भी खड़े रहते हैं। सबको जीवन देते हैं और स्वयं भी अपना जीवन जीते हैं, यह कहलाता है- एक भाव! जिसके कारण से आदमी सबके काम में आता है। **थोड़ा सा जीवन जीने के लिए दूसरी सामग्रियों का उपयोग तो किसी को करना पड़ जाता है लेकिन वह किसी का जीवन लेता नहीं है, सबको जीवन देता है। वृक्ष हमेशा जीवन दूसरों को देते हैं।** ऐसे जीवन जीने की कला हम जिन चीजों से सीखते हैं, हमने उन्हीं को नष्ट कर दिया और किस कारण से? सिर्फ एक प्रतिद्वन्द्विता के भाव के कारण से। हमें बढ़ना है, भारत को India बनाना है। क्या बनाना है? यही तो संकल्प है देश का और वह India ऐसा होना चाहिए कि दुनिया के किसी भी देशों से वह कमतर न रहे, किसी भी चीज में और उसी की दौड़ में हम चल रहे हैं। प्रतिद्वन्द्विता में हम आगे बढ़ रहे हैं, हम अपनी मूलभूत चीजों को खो रहे हैं और दुनिया में जिस कारण से विनाश हो रहा है, उसी का हम practical करके जब देख लेते हैं कि इन कारणों से विनाश हो रहा है, तब हम पीछे लौटने की बातें करते हैं। बातें तो हो रही हैं पीछे लौटने की लेकिन हम वे बातें थोड़ी देर से करते हैं।

बीमारी अनेक, इलाज एक...मोटे अनाज का सेवन

आज एक बहुत अच्छा चलन चल रहा है। जो लोगों के लिए बीमारियाँ घर कर रही हैं और जिन लोगों के लिए बहुत जल्दी बीमारियाँ आती हैं, उसके लिए भी एक बहुत बड़ा कार्यक्रम देश के अन्दर चल रहा है और वह क्या है? जानते हो? मोटे अनाज का सेवन करना। जिसे पहले कहते थे... **‘मोटा खाओ, मोटा पहनो’**। आज क्या हो गया? **‘बिल्कुल चिकना खाओ और पतलून पहनो।’** बिल्कुल पतला-पतला, झिल्ली वाला पहनो बिल्कुल। बस! हमने अपनी संस्कृति को जहाँ मिटाना शुरू किया, जहाँ हम दूसरे देशों की प्रतिद्वन्द्विता की होड़ में पड़े, बस वहीं से अपना विनाश शुरू हो गया। आज फिर से एक नई राह बाहर आ रही है। नई एक तरह की नीतियों के माध्यम से देश में एक चल रहा है... **‘मोटा खाना शुरू करो’**। जो लोग समय से पहले ज्यादा fatty हो जाते हैं, उसके भी कुछ कारण आजकल डॉक्टरों ने बताए हैं। अब fatty होना बुरा नहीं मानना, हर कोई fatty है यहाँ पर, obesity होती है, किसी भी तरह की कोई चीजें हैं, आज सबके लिए हैं। यह कोई बुरी मानने की बात नहीं है लेकिन यह जो चीजें सामने आ रही हैं और हमारे छोटे-छोटे बच्चे भी अपने उम्र के अनुसार जो वजन होना चाहिए, उससे भी ज्यादा उनका विकास हो रहा है या उनका fat बढ़ रहा है, उसके पीछे भी कुछ खानपान ऐसे हैं हमारे, जो हमारे लिए परेशान करने के कारण बन चुके हैं। अगर आपको लम्बे समय तक पूरी उम्र जीना है, diabetes से बचना है, तो मोटापे से बचो, यह तो आप समझ ही रहे हैं। मोटापे से बचने का और कोई उपाय नहीं है, सिर्फ यह उपाय है कि आप जो भोजन करते हैं, वह भोजन मोटा खाना होना चाहिए। जितना **आप पतला खाएँगे, जितना आप चिकना खाएँगे, मैदा जितनी ज्यादा आप खाएँगे, उतनी ज्यादा आँतों की बीमारियाँ होंगी, पेट की बीमारियाँ होंगी,**

कब्जियत होगी और जो आपके पेट में बीमारी शुरू हुई तो वह आपके हृदय तक आएगी और यही बीमारियाँ फिर आपके brain तक जाएँगी और इन्हीं बीमारियों का सिलसिला जब चलना शुरू हो जाता है और वह सिलसिला शरीर जब संभाल नहीं पाता है, अन्तहीन हो जाता है, तो वही फिर cancer और tumour का कारण बन जाता है।

आचार्य श्री व वैज्ञानिकों ने कहा... 'गेहूँ मत खाओ'

अनेक वैज्ञानिकों ने इस बात को खोजकर निकाला है कि हम जो भोजन कर रहे हैं, उस भोजन में जो हम अन्न लेते हैं, वह अन्न हमारा थोड़ा मोटा अन्न होना चाहिए। आचार्य महाराज ने भी इस बात को बहुत promote किया है। उन्होंने भी यहाँ तक कह रखा है, संघ के लोगों से भी कह रखा है कि गेहूँ मत खाओ। वे चाहते हैं कि गेहूँ का सेवन बहुत कम हो और यह बात आज सत्य साबित हो रही है कि गेहूँ को खाने के कारण से ही यह तोंद बढ़ती है, पेट बढ़ता है। **जो हम भोजन कर रहे हैं, वह भोजन हमारा पचना चाहिए, इकट्ठा नहीं होना चाहिए** और जो extra fat इकट्ठा होता है, यह पतले भोजन के कारण से, चिकने भोजन के कारण से होता है और यही भोजन हमारे लिए बीमारी का कारण बनता है। इसलिए आज अनेक खा-द्यान्न के बारे में जानने वाले, पर्यावरण को जानने वाले अनेक वैज्ञानिक लोग इस बात को कह रहे हैं कि आप मोटा भोजन करना शुरू कीजिए। मोटे भोजन में क्या आता है? ज्वार, बाजरा, रागी, इसको कहीं नाचनी भी बोलते हैं और एक कंगनी, समा का चावल, कोदो, कुटकी, ऐसे जो पदार्थ होते हैं, इनका आप सेवन करें। अगर आप चाहते हैं, हमें जीवन में कभी भी कब्जियत की शिकायत न हो, हमारे पेट भारी होने से हमें कभी diabetes न हो, हमारे liver proper काम करते रहें, तो आप अब अपने जीवनचर्या में इस प्रकार के अन्न को शामिल करें।

PM मोदी ने वर्ष 2023 को Millets क्रान्ति के लिए उद्घोषित किया

इसे 'Millets' कहा जाता है और इसके लिए भी आजकल क्रान्ति चल रही है। सुना है कि यह **2023 का वर्ष PM मोदी ने इसी Millets क्रान्ति के लिए उद्घोषित कर रखा है कि** आपको इस तरह के मोटे अन्नों का सेवन करना है। यह आप करना शुरू करेंगे, अपने आप आपके शरीर में जो कुछ भी गलत हो रहा है, वह अपने आप balance होने लग जाएगा। लम्बे समय तक स्वस्थ रहने के लिए, एक-एक बीमारी का आप कब तक हमसे एक-एक इलाज पूछते रहेंगे? सब बीमारियों का एक इलाज...लम्बे समय तक जीने का राज...Millets का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करें। उसमें ऋतु के अनुसार आप उपयोग कर सकते हैं। मान लो, अभी गर्मी चल रही है, बरसात का मौसम है, इस मौसम में आपको बाजरा नहीं खाना है। इस मौसम में आप ज्वार का उपयोग कर सकते हैं। रागी होती है, जौ होता है, ये सब भी उपयोगी चीजें होती हैं और यह रागी भी आजकल चलने लगी है। महाराष्ट्र में तो चला ही करती थी, कर्नाटक में चला करती थी, अब यह इधर भी आने लगी है। लेकिन इसकी रोटी बनाना तो यहाँ की महिलाएँ अभी जानती ही नहीं हैं। ज्वार की रोटी बनाना महिलाएँ अभी जानती नहीं हैं, उन्हें तो वह पतली-पतली सी करके और वह पतली-पतली सी रोटी बनाना आता है। इनकी रोटी बना भी देंगी तो कच्ची-कच्ची बना कर रख देती हैं। वह खाने योग्य नहीं होती है और खा ली जाए तो फिर वह वायु-गैस का कारण बन जाती हैं, यह चीजें भी सीखना

चाहिए, आजकल के बच्चों को भी यह कलाएँ सिखाना चाहिए।

Diabetes का उपचार मोटा अनाज व गर्म पानी

आपसे कह रहा हूँ...**diabetes के लिए सबसे अच्छी जो चीज होती है, वह होती है...** 'गर्म पानी और मोटा भोजन' और आपसे कह रहा हूँ...लम्बे समय तक अगर आपको दवाइयों से बचना है और diabetes पर control करना है, तो आप दवाइयाँ न खाएँ, अपनी खाने पीने की style बदलें। 'चोकर' जिसको बोलते हैं, जो गेहूँ का मोटा गेहूँ रह जाता है, पिसने के बाद में जो चोकर होती है, उसकी रोटी खाना। यह खाना आप शुरू करें। किसी doctor से पूछने की जरूरत नहीं है। कितनी बार खाना है? कितनी खाना है? जितनी आपकी भूख हो उतनी खाइए, कोई नुकसान नहीं होगा। चोकर की रोटी खाएँ, गर्म पानी पिएँ और हो सकता हो, तो एक और अच्छी दवाई आपको बता रहा हूँ, जो भूसा आप गाय, भैंस को खिलाते हैं, उस भूसे का पानी पिएँ आप। किसका? इसलिए गाय, भैंसों को कभी भी diabetes नहीं होती है। तुम लोग ज्यादा यह इडली, डोसा खा-खा कर बेकार हो रहे हो, इसी कारण से बीमारियाँ हो रही है। वह भोजन करो, जो मोटा-मोटा भोजन है।

Diabetes का Permanent इलाज

गाय, भैंसों के लिए जो भूसा डाला जाता है, उसी भूसे को आप अपने एक किसी गिलास में, लोटे में रख कर के उसको डाल लो। बाद में उसका पानी छह घंटे बाद, उसका जब तैयार हो जाए तो उसको छान लो, पानी पी लो। यह permanent इलाज है, रोजाना insulin लगाने वाले इलाजों से कोई काम नहीं होगा। यह permanent इलाज है और यह आपकी जब lifestyle में आ जाएँगे। यह तो खाने पीने के लिए हो गया। दूसरा- समय पर सोना, समय पर जागना। इस तरीके के अपनी body का system बनाना चाहिए। time का channel इस तरीके का set होना चाहिए कि हम समय पर सोएँ, समय पर उठें, यद्वा-तद्वा नहीं। कभी 2 बजे सो रहे हैं, कभी 8 बजे उठ रहे हैं, कभी 12 बजे सो रहे हैं, कभी 7 बजे उठ रहे हैं, यह तरीका नहीं। समय पर सोना, समय पर जागना। फिर तीसरा तरीका उस diabetes को control करने का होता है कि हम थोड़ी सी ऐसी exercise करें जो हमारे पेट के आसपास के organs को मजबूत और उसको शक्तिशाली बनाने में काम आए। लोग सोचते हैं...केवल pancreas का काम ही है diabetes को control करने का। मैंने एक दिन भी आपसे कहा था...सबसे पहले आपके liver पर effect आता है। liver, spleen और pancreas, ये तीनों चीजें connected होती हैं और उन तीनों की दवाई भी लगभग-लगभग एक सी होती है- आयुर्वेद के अन्दर। अगर कोई भी चीज खराब होती है, तो आपको सबसे पहले liver पर ध्यान देना होता है। Liver जरूर आपका कमजोर हो जाएगा, अगर आपको diabetes होगी। liver की मजबूती के लिए भी आपको चीजें बताई थी और यह भी आपको बताया था कि अगर आपके लिए इस तरह की चीजें बनी रहेंगी तो आप अपने लिए यह ध्यान दें कि हम जो exercise भी हमारे द्वारा थोड़ी सी होनी चाहिए। कुछ आसन ऐसे होते हैं...जो liver, pancreas, spleen सबके लिए कारगर होते हैं।

अर्ह योग द्वारा liver व diabetes का उपचार

अगर आपको कुछ नहीं आता है, तो पाँचवी मुद्रा लगाइए, अर्ह ध्यान योग की पाँचवी मुद्रा, दोनों हाथों को ऊपर ले जाकर, फिर नीचे लाकर, अपनी कमर झुका कर, सिर को जमीन से लगा कर, हाथों को नीचे प्रार्थना मुद्रा के साथ में टिकाए रखिए। **यह पाँचवी मुद्रा** आप जितना अच्छे से करना सीख जाएँगे और अगर आपकी कमर इतनी झुकने लग जाए कि आप पीछे का portion उठाए बिना, पीछे का portion समझ रहे हो न? धोक देते हो, पीछे का portion उठा लेते हो। पीछे के नितम्ब उठाए बिना, आपका पूरा का पूरा कमर झुक जाए और आपका सिर जमीन से टिक जाए, समझ लेना आपका balance पेट का बराबर है। आपके लिए liver को ताकत अपने आप इस क्रिया से मिलने लग जाएगी और अगर आपको इस क्रिया को करने में दिक्कत शुरुआत में होती है, तो आप वज्रासन में बैठ कर के इस पाँचवी मुद्रा को अधिक से अधिक लगाने की चेष्टा करें। दूसरा इसका एक variant है कि अगर हम इसको हाथों को बाहर न निकाल कर, अगर हम इन हाथों को एक मुट्ठी बनाकर, केवल अपनी नाभि के पास रख कर और फिर झुकने की कोशिश करें तो एक मण्डूकासन का रूप बन जाता है। आप इस **मण्डूकासन** को लगाइए। एक मिनट, दो मिनट, जितना आपसे लग सके, इसकी क्षमता बढ़ाइए। अगर आपको लम्बे समय तक अपने liver और आसपास की चीजों को मजबूत बनाना है, तो इस आसन की आप practice कीजिए, यह diabetes के लिए बहुत ही perfect चीज है। यह आसन की बात हो गई, खान-पीन की बात हो गई, life style की बात हो गई, इन तीनों चीजों का अगर आप combination बना कर के रखेंगे तो ही आप diabetes जैसी चीजों पर control कर पाएँगे अन्यथा दवाइयों के साधन से आप कितना अपने आप को चलाएँगे?

Natural sources स्वस्थ जीवन का आधार

आयुर्वेद की दवाइयाँ फिर भी हमारे शरीर के अँगों को मजबूती देती हैं लेकिन अगर आप allopathy दवाइयाँ खाने के चक्कर में पड़ गए तो फिर आप कभी भी इन बीमारियों से मुक्त नहीं हो पाएँगे। क्योंकि वहाँ कोई permanent इलाज है ही नहीं। इसलिए अपना जीवन ऐसा बनाओ कि हमें किसी का प्रति-द्वन्द्वी न बनना पड़े, हम खुद से ही अपनी प्रतिद्वंद्विता करें, हम खुद में ही अच्छे बनने की कोशिश करें और वह सब ही natural sources के माध्यम से हो सकता है। **खाने-पीने की चीजें जितनी सही सलामत होंगी, आपका शरीर उतना ही अच्छा रहेगा**, इसलिए कोशिश करने लगे। MP में बहुत मोटे अनाज को खाने का चलन बहुत कम है, इसको अपनाने लगे। यह नाचनी, कूदनी खाने सीखने लग जाओ, नाचने-कूदने लग जाओगे। नाचना, कूदना वही तो कर पाएगा, जो अच्छा fit होगा, दुबला-पतला होगा, ज्यादा भारी हो जाओगे तो नाच, कूद नहीं पाओगे। इसलिए नाचना-कूदना शुरू कर दो...नाचनी, कड़नी यह खाना शुरू कर दो। ये सब चीजें आपके शरीर को फुर्तीला बनाएँगी और आपको लम्बे समय तक बीमारियों से बचा कर रखेंगी। इन चीजों पर ध्यान देने की जरूरत है और यही चीजें आज आपके लिए बहुत उपयोगी हैं।

भगवान का सुख निःप्रतिद्वन्द्व है

भगवान का सुख निःप्रतिद्वन्द्व है, इसलिए है कि वह किसी दूसरी चीजों पर depend नहीं है। उनके सामने उनका शरीर भी नहीं है, इसलिए वह प्रतिद्वन्द्विता से रहित हैं। उन्हें किसी से भी कोई भी अपने सामने एक के अलावा दूसरा भाव लाना ही नहीं है, इसलिए वे क्या हैं? एक स्वभाव वाले हैं, एक रूप हैं, अखण्ड रूप हैं और वह एक भाव में ही रहते हैं, इसलिए duality का भाव उनके अन्दर आता ही नहीं, इसलिए द्वन्द्विता आती ही नहीं। वे कभी अपने अन्दर यह भी महसूस नहीं करते कि मैं एक हूँ कि अकेला हूँ और मेरे पास में भी कोई दूसरा है कि नहीं है। इस भाव से भी वे ऊपर उठ गए। इसलिए वह कैसे हैं? निःप्रतिद्वन्द्व हैं।

प्रतिद्वन्द्विता न होने से निश्चिन्तता ही सबसे बड़ी निरोगिता

अपने आदर्शों को अगर अपने सामने रखोगे तो कुछ आपके अन्दर भी reflect हो सकता है। **अपने आदर्शों को ऐसा बनाओ जो प्रतिद्वन्द्विता से रहित हो, कोई competition में नहीं पड़े हुए हो, अपने आप में perfect हैं, पूर्ण हैं।** उनको अगर हम आदर्श के रूप में ध्यान में रख कर थोड़ा सा आत्मचिन्तन करेंगे तो हमारे अन्दर की दौड़ भी कम होगी और हमें भी एक सही रास्ता मिलेगा, शान्ति का रास्ता मिलेगा, सुख का रास्ता मिलेगा। हमारे पास भी जीने के लिए सब कुछ है लेकिन हम प्रतिद्वन्द्विता के कारण से इतनी चिन्ताएँ बढ़ा लेते हैं कि हम खुद बीमार पड़ने लग जाते हैं। आप पूछ कर देख लो अपने लोगों से, अपने आप से। आपको जब भी चिन्ता उत्पन्न होती है, किससे होती है? अकेले से होती है? खुद से होती है कभी? जब तक आपके सामने दूसरा प्रतिद्वन्द्वी नहीं होगा, आपको कोई चिन्ता हो ही नहीं सकती। उसने कुछ कह दिया, चिन्ता उत्पन्न हो गई। आपको कोई चिन्ता नहीं थी, उसने कह दिया कुछ तो सामने वाला आपके सामने जैसे ही दूसरा आया, प्रतिद्वन्द्विता आपके अन्दर शुरू हो गई। **जैसे ही आपके सामने कोई प्रतिद्वन्द्वी आया, आपके लिए चिन्ता होना स्वाभाविक है** और चिन्ता आपके लिए अगर इस तरह से बढ़ती जाती है, तो वह आपके अनेक रोगों का कारण भी बन जाती है। इसलिए निश्चिन्त रहना ही सबसे बड़ी निरोगिता है और निश्चिन्तता आती है निःप्रतिद्वन्द्विता की भावना से। कौन रहेगा निश्चिन्त? जिसका कोई प्रतिद्वन्द्वी न हो। पण्डित जी हाथ उठा रहे हैं, महेश पण्डित जी हाथ उठा रहे हैं। वे इसलिए हाथ उठा रहे हैं क्योंकि सतना में अभी कोई उनके बराबर दूसरे पण्डित जी नहीं हैं और जो दूसरे पण्डित जी हैं, वे थोड़ा सा उनकी आयु में अधिक हैं, उनका सम्मान करते हैं। उनकी प्रतिद्वन्द्विता उनके साथ में इसलिए नहीं है क्योंकि वे विदेश जाते नहीं हैं, वे विदेश चले जाते हैं, इसलिए प्रतिद्वन्द्विता नहीं होने से निश्चिन्तता बनी रहती है। क्यों पंडित जी! सही बोला कि नहीं?

Comparison से ही tension और blood pressure

जब आपके सामने कोई प्रतिद्वन्द्वी होकर भी आप में प्रतिद्वन्द्विता का भाव नहीं आए तो आप निश्चिन्तता को धारण कर पाएँगे, तभी आप निरोग रह पाएँगे, अच्छे हृष्ट-पुष्ट रहकर फुर्तीले रह पाएँगे। आप देख लो बच्चों के अन्दर, किस बात की कमी है? सब कुछ होता है घर में लेकिन फिर भी चिन्ता, भय, निराशा क्यों उत्पन्न होती है? क्या माता-पिता के पास अपने बच्चों को खिलाने-पिलाने का या उनका जीवन पूरा जीने का

उनके पास में साधन नहीं होते? सब कुछ होता है फिर भी हम बेवजह के tension दूसरों को देखकर इतना ले लेते हैं, दूसरों के साथ में compare करके अपनी प्रतिद्वन्द्विता इतनी बढ़ा लेते हैं कि हमारे पास में निश्चिन्तता थी लेकिन हम चिन्ता के बिना आगे बढ़ ही नहीं पाते हैं। समाज में रहना है तो महाराज! सब कुछ आजू-बाजू देखना पड़ेगा। देखो! अब देख लो! अब इतना मत देखो कि फिर लोग तुम्हारे घर में देखने पहुँचे तुम्हें कि भाई क्या हो गया? उतना ही देखो जिससे कि हमारी निश्चिन्तता बिगड़ न जाए। ज्यादा देखने लगोगे, आजू-बाजू देखकर ही आगे बढ़ने की कोशिश करोगे तो फिर एक दिन लोग घर में आकर पड़ोसी तुम्हारे घर में देखने लगेंगे और जिस पड़ोसी को तुम देख रहे थे, वही अब तुम्हें देखने आ गया घर में, भाई! क्या हो गया? अचानक से बीमार क्यों पड़ गए? अचानक से blood pressure की बीमारी तुम्हें कहाँ से आ गई? अभी तक तो तुम बिल्कुल अच्छे दिखते थे, स्वस्थ दिखते थे, अब यह कौन सा blood pressure बढ़ने लग गया? यह heart beat क्यों बढ़ने लग गई? अब वह उससे कह भी नहीं सकता कि तुम ही को देखकर बढ़ रही है। जब से तुमने बगल में अपनी building बना दी और मेरी building छोटी रह गई और तुमने छह मंजिला खड़ा कर दिया और मैं दो मंजिल पर खड़ा-खड़ा देखता हूँ, मुझे तब से ही tension होने लग गई और वह इतनी हो गई, इतनी हो गई कि हम खुद भी बीमार पड़ गए।

प्रतिद्वन्द्विता और परीक्षा में अन्तर

आज हमारे सामने जो भी बीमारियाँ हैं, वे निश्चिन्तता नहीं होने के कारण से हैं और निश्चिन्तता क्यों नहीं है? क्योंकि हम अपने सामने किसी न किसी को अपना एक प्रतिद्वन्द्वी बना ही लेते हैं। उसके बिना हमारा जीवन आगे बढ़ता नहीं है, तो सिद्ध भगवान से आज हम यही सीख ले...हे भगवन्! जैसे आप निःप्रतिद्वन्द्व हो गए, ऐसे ही हमारा जीवन भी प्रतिद्वन्द्विता से रहित हो जाए। हे भगवन्! आपकी भक्ति से हमारे अन्दर शक्ति आ जाए। इतनी प्रार्थना करना है भगवान से तो आपको सिद्ध भगवान भी समझ में आएँगे और उनकी प्रार्थना से आपको शक्ति भी मिलेगी। पहले के लोग प्रतिद्वन्द्विता नहीं करते थे, पहले के लोग एक दूसरे की परीक्षा किया करते थे। श्रेणिक क्या करते थे? अगर नन्दी गाँव के लोगों को भी परेशान करना है, उन्हें भी अपने गाँव से बाहर निकालना है, तो मारना काटना नहीं है। क्या करना है? उनसे प्रतिद्वन्द्विता नहीं करना है। क्या करना है? परीक्षा लेना है, परीक्षा में पास हो जाओ, ठीक! नहीं हो जाओ तो फिर ठीक है। परीक्षा लेना अलग चीज हो गई और प्रतिद्वन्द्विता करना अलग चीज हो गई।

श्रेणिक द्वारा नन्दी ग्रामवासियों की परीक्षा



SCAN TO WATCH

श्रेणिक ने परीक्षा ली, कल क्या परीक्षा ली थी? हाथी का वजन तुलवाया था। फिर वह वजन तुल गया, फिर उसके मन में आया...अरे! इन्होंने तो यह भी परीक्षा पास कर ली। क्या करें? फिर एक परीक्षा लेने का उसका फिर एक मन हो गया तो उसने क्या किया? एक खैर की लकड़ी होती है, कभी देख लेना, आपने नहीं देखी हो तो। वह खैर की लकड़ी उसने लेकर उन गाँव वालों को दी और कहा कि वह लकड़ी बिल्कुल एक जैसी ही लगती है, उसका आगे-पीछे का हिस्सा कुछ नहीं दिखाई देता है कि यह कौन आगे? कौन पीछे है? उन्होंने यह पूछवाया गाँव वालों से...देखकर बताओ कि आगे का हिस्सा कौन सा है? और पीछे का हिस्सा कौन सा

है इसका? अब लकड़ी कहीं से भी बीच में से कटी हुई हो और वह अपनी एक shape में हो और उसका आगे-पीछे का हिस्सा बताना हो तो कैसे बताया जाएगा? गाँव वाले फिर परेशान हो गए, बार-बार श्रेणिक की कोई न कोई फरमाइश आ जाती है। परीक्षा हो जाती है और बार-बार वही ऐलान होता है। अगर परीक्षा में pass हो गए तो ठीक है, नहीं pass हुए तो गाँव छोड़ कर जाना पड़ेगा। बार-बार यही शिकायत! लेकिन उन गाँव वालों के पास में, उनके पुण्य योग से अभय कुमार को उन्होंने अपने पास में रख रखा है और वे तब तक रखेंगे, जब तक कि निश्चित न हो जाएँ कि अब राजा श्रेणिक ने परीक्षा लेना बन्द कर दिया है। वह निश्चितता तब तक नहीं आ रही, जब तक की परीक्षाएँ बन्द नहीं हो रही और परीक्षा अब आई तो फिर पुरे गाँव के लिए वही चिन्ता पड़ गई। फिर वह इस चिन्ता के समाधान करने के लिए सब गाँव के लोग पहुँचे। कहाँ? अभय कुमार के पास में...आप ही सुलझाओ इस समस्या को। अब यह लकड़ी में कहाँ दिख रहा है कुछ आगे? कहाँ दिख रहा है पीछे? कैसे decide करें कि यह आगे का हिस्सा, यह पीछे का हिस्सा है?

समस्या है तो समाधान भी है

अभय कुमार कहते हैं...आप चिन्ता नहीं करो **‘हर समस्या का दुनिया में, समस्या है तो समाधान भी है’**। इसे दस बार बोला करो, अपने बच्चों से बुलवाया करो ताकि उन्हें जब भी समस्या सामने आए तो उन्हें यह बात याद आ जाए...**‘समस्या है, तो समाधान भी है’** यह कहानी इसलिए चल रही है आपके सामने, आपको motivation देने के लिए। यह बात हम रोजाना इसलिए दोहरा रहे हैं क्योंकि एक बार कहने से आपके मोटे दिमाग में कुछ घुसता नहीं है। जब से हमने खाना-पीना मोटा की जगह पतला कर लिया, तब से बुद्धि तो मोटी हो गई, जबकि होना क्या चाहिए था? बुद्धि सूक्ष्म होनी चाहिए थी, बुद्धि में चातुर्य होना चाहिए था, बुद्धि में पतलापन होना चाहिए था और पेट का खाने-पीने की चीजों का, वह मोटापन होना चाहिए था। जब खाने-पीने की चीजें मोटी हो, पहनने की चीजें मोटी हो तो बुद्धि अपने आप पतली हो जाती है। आज उल्टा हो गया....खाने-पीने और पहनने की चीजें पतली हो गई और बुद्धि मोटी हो गई। इसलिए कहना पड़ता है...मोटी बुद्धि वालो! सुन रहे हो कि नहीं? क्या हुआ? **अभय कुमार ने कहा समस्या है, तो समाधान भी है।** यह पतली बुद्धि वालों का काम है। क्या समाधान है? उन्होंने अपने दिमाग से विचार किया और फिर अगले दिन जाकर कहा...देखो! ऐसा करते हैं, हम इस लकड़ी को किसी भी नदी में, तालाब में, पानी में डाल कर देखते हैं। हम इसको अलग-अलग angle से पानी में डालते हैं और उसको अलग-अलग angle से पानी में डाला गया। अलग-अलग तरीके से कभी ऐसे फेंक कर, कभी ऐसे घुमा कर और वह लकड़ी जब भी आगे तैरने को होती है, तो अपना मुँह आगे करके उसी दिशा में, मुँह आगे करके तैरने को होती है; जिस दिशा में उसका आगे का मुँह है। जिस दिशा में वह आगे तैर रही है, वही आगे का मुँह है। बाकी का पिछला हिस्सा है, यह decide कर लो। यह अभय कुमार ने युक्ति करके दिखा दिया और वही आगे का हिस्सा चिह्नित करके और उसको ले गए श्रेणिक के पास में...‘यह इसके आगे का हिस्सा, यह इसके पीछे का हिस्सा’ श्रेणिक फिर अवाक् रह गए। भाई नन्दी ग्राम के लोग तो बहुत ज्यादा विद्वान हो गए हैं, इन्हें कौन से महाराज ने पढ़ा दिया है? क्या सिखा दिया है? यह इतने चतुर क्यों हो गए हैं? ऐसा विचार करके उन्होंने मन में सोचा और मन में सोचने के बाद भी, फिर भी उनके मन में एक भाव आ रहा है कि अभी भी इनकी परीक्षा में कमी नहीं रखना चाहिए और परीक्षा करके देखते हैं।

एक और परीक्षा - तिल का तेल

उनके मन का भाव है, अभी कम नहीं हो रहा है। फिर एक परीक्षा करने के लिए, फिर एक और अपने दिमाग की बात सोचकर, फिर एक गाँव में फिर पहुँचा देते उसी गाँव में। क्या कहते हैं अबकी बार? कहते हैं...ये कुछ तिल हैं, तिल जानते हो तिल? वही तिलहन वाले तिल। इनका तेल निकालकर, जितने तिल हैं, उनका उतना तेल निकाल कर मेरे पास में लाओ। मतलब ऐसा नहीं है कि तिल बहुत सारे हैं तो कहीं से भी तुम तिल पीस दो और तेल ले आओ। उतना जितने तिल हैं, उतना ही तेल निकाल कर लाओ। उनकी गाँव वालों की बुद्धि का तो तेल निकल गया। बोले...यह कैसे सम्भव है? जब हम तेल निकालने चलेंगे तो इतने तिल तो कहीं भी पिस जाएँगे, इनका तेल हम निकाल ही नहीं पाएँगे। **इतने से तिलों का तेल कैसे निकलेगा?** और कैसे लेकर जाएँगे उनके पास तक? फिर वह सोच में पड़ गए और फिर अभय कुमार जी के पास पहुँच गए और अभय कुमार जी ने क्या किया? एक शीशा बुलाया और उस शीशे पर उन तिलों के तेल को निकाल कर के जितनी भी बूँदें थी, वे उस बूँदों को, उन एक शीशे पर तिल की तेल की बूँदों को निकाल कर रख दिया और वह शीशा सहित वह तेल जो है, श्रेणिक के पास पहुँचा दिया...लो! आपका जितना तिल थे उतना ही तेल आपके लिए है, न कम है, न ज्यादा है। यह देखकर फिर राजा श्रेणिक अवाक् रह गए। उन्होंने देखा कि यह वास्तव में किसी बुद्धिमान व्यक्ति के द्वारा किए जाने वाले कार्य हैं और यह हर परीक्षा में सफल हो रहे हैं। ऐसा सोच कर उन्हें याद आने लगा कि जरूर कहीं न कहीं, कोई न कोई अर्ह कीर्तन के माध्यम से इनकी बुद्धि को बढ़ा रहा होगा और इसी कारण से इनकी बुद्धि का चातुर्य बढ़ रहा होगा तो फिर राजा श्रेणिक भी करने लग गए। क्या? अर्ह कीर्तन।

शून्य नाक के छिद्र है, शून्य नेत्र है गोल।

शून्य तत्व की शक्ति है, दिखती जहाँ खगोल॥१८॥

23. जहाँ अपेक्षाएँ नहीं, वहाँ दुःख नहीं

सिद्धों का सुख, सर्वोत्कृष्ट सुख



भगवान सिद्ध प्रभु की आराधना, वर्धमान महावीर भगवान का समवशरण, राजा श्रेणिक और उनकी रानियों का वहाँ पर उपस्थित होना, मुनि महाराज के भी कोठे में बैठकर के मुनि महाराज के दर्शन होना, यह सब कुछ जो राजगृही में होता है, वह आपको यहाँ सतना में भी दिखाई दे रहा है। अनेक-अनेक श्रावक जैसे अलग-अलग राज्यों से, भगवान के समवशरण सभा में अनेक-अनेक लोग आते हैं, ऐसे ही प्रतिदिन यहाँ पर दूर-दूर से अलग-अलग समाज के लोग भी यहाँ उपस्थित होते हैं। यहाँ पर आज एक और व्यापारी संगठन उपस्थित हुआ है, जो होमिया लहोई वैश्य पंचायत सभा इन लोगों की कहलाती है। सभी के अन्दर जिज्ञासाएँ होती हैं और जिज्ञासाओं का समाधान हमेशा भगवान के चरणों में बैठकर, गुरु के चरणों में बैठकर अवश्य हुआ करता है। **जब हम उत्कृष्टता की बात करते हैं, भगवान सिद्ध प्रभु की बात करते हैं तो उनके गुणों की ओर अपना ध्यान जाना स्वाभाविक होता है।** दुनिया में व्यक्ति हमेशा, अगर देखा जाए तो किसी चीज की तुलना किसी से करे या न करे लेकिन सुख-दुःख की तुलना अपने आप अपने मन से दूसरों के अन्दर, दूसरों के द्वारा जरूर किया करता है। यह एक ऐसा भाव होता है हर व्यक्ति के अन्दर जो वह सहज अपने आप उसके अन्दर उत्पन्न हो जाता है। वह आस-पड़ोस के लोगों को देखता है, समाज के लोगों को देखता है, अन्य-अन्य समाज के लोगों के बीच में भी बैठकर यही देखता है कि कौन कितना सुखी है? सुख की इच्छा में हर व्यक्ति रहता है और वह व्यक्ति जब दूसरों के सुख को देखकर अपनी तुलना करता है कि मैं इनसे कम सुखी हूँ या मैं इनसे ज्यादा सुखी हूँ तो यह तुलना उसके अन्दर हमेशा एक आदत के रूप में बन जाती है।

परमात्मा के सुख का विश्लेषण

हम सभी की तुलना इस तरीके से अपने अन्दर होती रहती है और हम हमेशा सोचते रहते हैं कि कौन ज्यादा सुखी है और जो ज्यादा सुखी है, हमें वैसे ही काम करना चाहिए। जब भी हम कोई बड़ा काम करने की सोचते हैं तो शायद इसीलिए कि बड़ा काम करेंगे, बड़ा पैसा आएगा, बड़े सुखी बनेंगे। हम सब कुछ सुखी बनने के लिए ही करते हैं। जब इस तरह से हमारे अन्दर सुख की तुलना करने का एक भाव गहरा पड़ा रहता है, तो फिर मन में विचार करना चाहिए कि क्यों न हम ऐसे सुखी व्यक्तित्व की तुलना अपने सामने लाएँ जो सर्वोत्कृष्ट सुखी हो। जिनसे बढ़कर कोई और फिर सुख की बात रह न जाए। **ऐसे परम आत्मतत्त्व को जो उपलब्ध होते हैं, जिन्हें हम परमात्मा कहते हैं, उन परमात्मा के सुख की हम तुलना अगर करने बैठे, उन परमात्मा के सुख की हम चर्चा करने बैठे तो हो सकता है कि हमारे मन में धीरे-धीरे एक संस्कार पड़ जाए कि हम अपने सुख से उन परमात्मा के सुख को भी देखने लग जाएँ।** यही विचार करते हुए यह सुख को समझने का जो एक काव्य था, इस काव्य की चर्चा कई दिनों से चल रही है। यह काव्य जो सातवें नम्बर का काव्य है, कई विशेषणों के साथ में सुख की बात आपके सामने रखी गई। आपके सामने **आत्मोपादान सिद्धम्**, यह सुख भी बताया गया। फिर उसके बाद में **‘विषय विरहितम्’** यह भी बताया

गया। वह सुख कैसा होता है? 'वीत बाधं' यह भी बताया गया। विशाल होता है यह भी बताया गया। वृद्धि हास से रहित होता है, यह भी बताया गया। विषयों से रहित होता है, यह भी बताया गया और 'निःप्रति-द्वन्द्व' होता है, यह भी बताया गया। शायद पूरा सप्ताह आपने इस सुख को सुनते-सुनते ही निकाल दिया है और यह सुख के विशेषण अभी भी कुछ और बाकी हैं।

परद्रव्यों की अपेक्षा से रहित सुख

आचार्य आज कहते हैं...वह सुख कैसा होता है, जो सुख निःप्रतिद्वन्द्व भाव को प्राप्त है? वह परद्रव्यों की अपेक्षा से भी रहित होता है। क्या कहा गया? परद्रव्यों की अपेक्षा से रहित होना, अन्य द्रव्य की अपेक्षा से रहित होना 'अन्य-द्रव्यानपेक्षं' ऐसा वह सुख होता है। तीसरी पंक्ति में वह लिखा है उस सुख के बारे में...

**अन्य- द्रव्यानपेक्षं, निरुपमममितं, शाश्वतं सर्व- कालम्,
उत्कृष्टानन्त-सारं, परम सुखमतस्तस्य सिद्धस्य जातम्।**

वह परम सुख जो सिद्ध भगवान को उत्पन्न हुआ है, वह अन्य द्रव्यों की अपेक्षा नहीं रखता। अपेक्षा समझते हो आप लोग? अन्य द्रव्यों की किसी न किसी तरीके से अपेक्षा होना यह हमारी आदत में रहता है और इसके बिना हमें कभी सुख की प्राप्ति होती नहीं है। लेकिन सिद्ध भगवान का जो सुख है, वह किसी द्रव्य की अपेक्षा के बिना रहता है। अपेक्षा के बिना रहना बड़ा कठिन काम है। सुख की प्राप्ति के लिए भी अपेक्षा रहती है और शायद वह अपेक्षा ही होती है, जो हमें बड़े-बड़े दुःखों को भी भुला देने के लिए मजबूर कर देती है लेकिन हम उस सुख की अपेक्षा में सब कुछ करने को तैयार हो जाते हैं।

अधिक अपेक्षाएँ, दुःख का कारण

आप कल्पना करो...किसी के घर में एक ऐसे पुत्र की प्राप्ति हुई, जो जन्म से ही अपाहिज हो या अपंग हो या जिसको लकवा लग गया हो या जो विकलांग हो। कभी देखा आपने ऐसा भी होता है? होता है न? सबके यहाँ होता है। यह सब चर्चायें हमें सुनने को मिलती हैं। अब आप विचार करो कि अगर हम उस सन्तान को देख कर जिसके लिए हमने सपने संजोए, जिसके लिए हमने बहुत कुछ प्रयास किए, पुरुषार्थ किए और ऐसी सन्तान की अगर घर में प्राप्ति हुई तो सुख तो इतना मिला कि चलो सन्तान की प्राप्ति हुई लेकिन कुछ दिनों के बाद में जब यह समझ में आया कि यह सन्तान शारीरिक रूप से वृद्धि को प्राप्त नहीं हो सकती, मानसिक रूप से वृद्धि को प्राप्त नहीं हो सकती तो अब आप विचार करो कि आपके ऊपर अब क्या बीतेगी? एक अपेक्षा थी! किसकी? सन्तान की। **सन्तान तो हो गई लेकिन जो अपेक्षा और थी, वे अपेक्षाएँ सारी की सारी पूरी नहीं हो पा रही हैं।** लेकिन फिर भी माता पिता बच्चे के लिए सभी doctors से दिखाते हैं, सभी वैद्यों से दिखाते हैं और उस बच्चे के लिए जितना अच्छा उपचार हो सकता है, सब करवाते हैं। अब आप विचार करो, एक माता-पिता की सारी अपेक्षाएँ किससे जुड़ी होती हैं? उसके अपनी सन्तान से। अब वह सन्तान से जब अपेक्षा जुड़ी है और सब तरह से वह माता-पिता उस बच्चे को सब जगह दिखा रहे हैं, सब तरह के उसके लिए उपचार कराए जा रहे हैं और सब तरह से उसे ठीक करने के लिए अनेक-अनेक तरह की जो विधियाँ होती हैं, विधाएँ होती हैं, उन सबको भी ध्यान में रखते हुए वहाँ पहुँचा जा रहा है कि

जहाँ पर इसका उपचार हो सके। **अब आप सोचो कि उपचार जहाँ पर भी होता है, कोई भी सन्तोषजनक उससे हमें समाधान नहीं मिल पा रहा है।** कई जगहों पर गए, कुछ भी अच्छा नहीं हो पाया। अपेक्षा क्या थी? एक पुत्ररत्न की प्राप्ति हो जाए। एक अपेक्षा तो पूरी हुई लेकिन उसके साथ में और जो अपेक्षाएँ जुड़ी थी, वे अपेक्षाएँ पूरी नहीं हो पाईं। करना क्या पड़ेगा?

एक अपेक्षा से जुड़ी विभिन्न अपेक्षाएँ

माता-पिता की अपेक्षा देखो आप! उस सन्तान का हर तरह से पालन करने को तत्पर होते हैं। कैसा भी हो, उसकी उपचार की व्यवस्था की जाती है। घर में पूरा समय माता-पिता लगाते हैं और हर तरह से उस सन्तान को बड़ा करने की, उसे हर तरह से विकसित करने की पूरी चेष्टा की जाती है। लेकिन वह सन्तान अपनी योग्यता की कमी के कारण से वह उन अपेक्षाओं को पूर्ण नहीं कर पाती, जो माता-पिता रखते हैं। समझ पा रहे हो आप लोग? क्या होगा उन माता-पिता का? दुःखी होंगे कि सुखी होंगे? पुत्र को देखेंगे तो सुख मिलता है लेकिन जब पुत्र की दशा देखते हैं तो दुःख मिलता है। विचार करते हैं...यह पुत्र तो मिला लेकिन इसके साथ में जो हमारी अपेक्षाएँ थीं, वह अपेक्षाएँ तो अब पूरी नहीं हो रही हैं लेकिन वह पुत्र भी सारा का सारा समय माता-पिता का ले लेता है। बहुत सारा धन उसमें व्यय हो गया, बहुत शक्ति लग गई और बहुत तरह से उपचार आदि की विधियाँ कराई गईं लेकिन वह पुत्र अपनी, जिस तरह की योग्यता होनी चाहिए, उस योग्य स्थिति में नहीं आ पाया। एक अपेक्षा हमें अगर बनी रहती है कि यह मेरा पुत्र है तो वह अपेक्षा कितने ही तरह के दुःख हो, वह सब दुख माता-पिता सहन कर जाते हैं। आप देखो! माता-पिता कितने तरीके से दुःखों को प्राप्त करके भी और इस भावना के साथ में कि देखो! यह मेरा पुत्र है, पुत्र तो है, ठीक हो जाएगा, जल्दी सही हो जाएगा, ऐसा विचार करके उसकी खूब परवरिश करते हैं। लेकिन उस पुत्र से जो सुख मिलना चाहिए, वह सुख उन्हें नहीं मिल पाता और फिर भी एक अपेक्षा रहती है कि कम से कम यह मेरे लिए मेरा पुत्र है, मेरा पुत्र है और इस अपेक्षा के कारण से वह तमाम दुःखों को भी सहन कर जाते हैं।

अपेक्षा कितनी बड़ी चीज होती है? सिर्फ कितनी सी अपेक्षा है? कि यह मेरा पुत्र है। अभी तो यह भी अपेक्षा थी कि जब यह बड़ा होगा, हमारे लिए कुछ बुढ़ापे का सहारा बनेगा, हमारे वंश का कुछ नाम रोशन करेगा, कुछ अच्छा बनकर मेरे नाम को आगे बढ़ाएगा लेकिन जब उसकी स्थिति ऐसी देखी तो अब धीरे-धीरे वह अपेक्षाएँ तो समाप्त हो गईं। लेकिन क्या एक अपेक्षा फिर भी है कि इसके कारण से मैं माता-पिता का नाम पाता हूँ। वह सन्तान कैसी भी हो लेकिन उसके कारण से उन पति-पत्नी को इतना तो लगता है कि यह इसके कारण से हम माता-पिता का दर्जा पाए, हम माता-पिता कहलाए। अगर वह सन्तान नहीं होती तो माता-पिता का भाव नहीं आता। कम से कम उस सन्तान ने इतना तो कर दिया कि माता-पिता के रूप में आपके अन्दर एक भावना आई और माता-पिता के रूप में आपके मन में विचार आया, आपने माता-पिता की तरह उस बच्चे का पालन किया।

अपेक्षा से ही मेरेपन का भाव आता है

देखो अपेक्षाएँ! कहाँ से शुरू हो जाती हैं? जब से हमारा जन्म होता है तब से अपेक्षाएँ शुरू हो जाती हैं और

यह अपेक्षाएँ बढ़ती चली जाती हैं। एक माता-पिता अपने बच्चे का पालन पोषण करते हैं, उसके पीछे भी उनकी कुछ अपेक्षाएँ रहती हैं और उस अपेक्षा के रहने के कारण से ही वह सब कुछ सहन कर जाते हैं। बच्चा बड़ा हो जाए, किसी अच्छी institute में पढ़ने लग जाए, माता-पिता के पास में अच्छा खासा पैसा न भी हो तो भी उसे पढ़ाने के लिए पूरा का पूरा वे प्रयास करते हैं। **किस कारण से? बच्चा, बेटा मेरा है। यह जो मेरेपन का भाव आता है, यह अपेक्षा से आता है। यह अपेक्षा जो उत्पन्न होती है, उसके पीछे एक मेरेपन का भाव उसमें शामिल हो जाता है।** आप देखो! आपके लिए अगर किसी दूसरे से अपेक्षा कभी कहीं उत्पन्न होती है, तो वह तभी होगी जब उसके पीछे कहीं न कहीं, दूर भी होगा तो वह एक मेरेपन का भाव होगा उसमें। **जिससे आपको मेरेपन का भाव नहीं, उससे आपको कभी कोई अपेक्षा नहीं होगी।** कितने सारे लोग होते हैं, आते हैं, जाते हैं, आपको किसी से कोई अपेक्षा नहीं रहती लेकिन जिससे आपको मेरेपन का भाव आएगा, उससे आपको कुछ अपेक्षा होगी। यानि हम कह सकते हैं कि **अपेक्षा होने पर मेरेपन का भाव आता है और मेरेपन का भाव आने पर अपेक्षा हो जाती है।** मान लो आज आपके सामने कोई लोग आते हैं, कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें आप बुलाते हो, कुछ लोग ऐसे होते हैं जो बिना बुलाए भी आते हैं। जिन्हें हमने बुलाया है उनसे हमारी ज्यादा अपेक्षा होती है कि जिन्हें हमने नहीं बुलाया उनसे हमारी ज्यादा अपेक्षा होती है? बोलो? जिन्हें बुलाया है उनसे अपेक्षा रहती है क्योंकि बुलाया क्यों? उन्हें हम जानते थे, वह मेरे थे, वे अपने थे...अपने थे इसलिए बुलाया गया। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिन्हें बुलाया तो नहीं गया लेकिन वह आए और आकर उन्होंने इस तरीके का अपना अच्छा व्यवहार दिखाया कि वह आपको अपने से लगने लगे, वह आपके मेरे से हो गए और फिर आपको उनसे भी अपेक्षाएँ हो गईं। दोनों तरह के लोग यहाँ बैठे हैं कि नहीं बैठे हैं? एक यह वैश्य समुदाय बैठा है और एक ये दूर-दूर से आए हुए लोग बैठे हैं। चाहे वे दिल्ली के हो, चाहे दमोह के हो, चाहे कहीं के हो, रेवाड़ी के हो, ये दो तरह के लोग हैं। अब आप देखो! कि आपके अन्दर अगर कोई अपेक्षा उत्पन्न होगी तो उस अपेक्षा में थोड़ा सा यह भाव आएगा। **कौन सा भाव? मेरेपन का। वह मेरेपन का भाव कैसा भी हो सकता है।** अगर आपको सतना मेरा लगता है, तो आपको यह मेरेपन का भाव उनसे अपेक्षित वृत्ति में लगा देगा कि देखो! मेरे सतना में ये लोग आए हैं। यह भी एक मेरा है, मेरी सभा में ये लोग आए, जब मैं राजा श्रेणिक बन कर बैठा था, उस दिन ये लोग आए, यह भी एक मेरापन हो सकता है। अपेक्षाएँ किसी भी तरह से जुड़ सकती हैं और उस अपेक्षा के पीछे मेरेपन का भाव उसमें जुड़ जाता है। मेरी बेटी, मेरा बेटा यह तभी बनता है, जब उसके पीछे हमारी अपेक्षा जुड़ी हो, अन्यथा एक बेटे का पालन-पोषण एक माता-पिता कितने कष्ट से करते हैं, कितनी मेहनत से करते हैं, कितनी तरीके की अपनी ग्लानियों को जीत कर करते हैं लेकिन प्रसन्नता के साथ में उसे जब बड़ा बना देते हैं तो उन्हें सारे जितने भी दुःख होते हैं, कष्ट होते हैं, जितनी उसके साथ मेहनत की गई है, वह सारी उनकी सुख के रूप में परिवर्तित हो जाती है क्योंकि उनकी अपेक्षाएँ पूरी होती चली जाती हैं।

अपेक्षाओं का इच्छाओं में बदलना हानिकारक हो सकता है

अपेक्षाएँ अगर पूरी होती जाती हैं तो हमारे अन्दर एक सुख बढ़ता जाता है। अब हम उस अस्वस्थ बेटे की बात नहीं करते, अब हम स्वस्थ बेटे की बात करते हैं, जो normal आपके घरों में उत्पन्न होते हैं। बेटा बड़ा हुआ, मानसिक रूप से भी बड़ा हो रहा है, शारीरिक रूप से भी बड़ा हो रहा है और बड़ा होकर वह बेटा जैसा आप चाह रहे हो वैसा बुद्धिमान बन रहा है, पढ़ रहा है, आगे बढ़ रहा है, सब कर रहा है। आपकी अपेक्षाएँ

बढ़ रही हैं कि घट रही हैं? बढ़ रही हैं। अगर वह बढ़ रहा है, तो आपकी अपेक्षाएँ भी बढ़ रही हैं। मेरापन तो वही है कि यह मेरा बेटा है लेकिन उस मेरेपन के साथ में जैसे-जैसे वह बच्चा बढ़ रहा है, **आपकी अपेक्षाएँ भी बढ़ती चली जा रही हैं।** अचानक से जिस दिन आप देखते हो, मेरा बेटा ninth class में top कर लिया, मेरा बेटा tenth class में merit list में आ गया तो आपकी अपेक्षाएँ अब बेटे से सामान्य नहीं रही। अब क्या हो गई? और बढ़ गई। बढ़ कौन रहा था? बेटा बढ़ रहा था। हर बच्चे को ninth, tenth, eleventh, twelfth के दौर से गुजरना है। हर बच्चे को अपनी उम्र में 12 साल का, 15 साल का होना है। हर बच्चे को एक समान height से बढ़ना है। हर बच्चे को उसी तरीके से आगे बढ़ना है लेकिन माता-पिताओं को भी कभी-कभी पता नहीं रहता और उनकी अपनी अपेक्षाएँ भी उस बेटे या बेटी से बढ़ जाती हैं तो क्यों? उस बेटे के अन्दर कुछ अलग गुणों को देख कर अपेक्षाएँ भी बढ़ जाती हैं। कई लोग होते हैं, आजकल बड़े-बड़े olympiad खेल चलते हैं और उसमें बच्चा जब खेलने लग जाता है, आगे बढ़ने लग जाता है, तो पहले अपने city level पर खेलता है। फिर बाद में थोड़ा सा और बढ़कर district level पर पहुँच जाता है। फिर **माता-पिता की अपेक्षाएँ बढ़ जाती हैं**, अब यह district level पर पहुँच गया, अब यह देश के level तक पहुँच जाए, state level पर पहुँचने के बाद देश तक पहुँच जाए और देश में भी पहुँचने के बाद में international हो जाए। ये अपेक्षाएँ बढ़ना किससे हो रहा है? वह अपनी गति से बढ़ रहा है, वह अपनी योग्यता से बढ़ रहा है लेकिन हम उससे अपनी अपेक्षाएँ जोड़ कर, हम अपने अन्दर उन अपेक्षाओं को बढ़ा रहे हैं। यह हम सही कर रहे हैं या गलत कर रहे हैं? यहाँ पर थोड़ा सा मैं question mark लगाता हूँ। बच्चे को बढ़ाना, बच्चे को पढ़ाना, बच्चे को आगे के level तक पहुँचाना, यह आपका कार्य है और आपको लगता है कि अगर मैंने उसको state level पर खिला दिया, वहाँ तक पहुँचा दिया, district level पर खिला दिया, वहाँ तक पहुँचा दिया तो अभी India level पर भी पहुँचे, वहाँ तक भी खेले। वह खेल रहा है कि आप खेल रहे हो? क्यों? हमें लगता है कभी-कभी कि शायद उसको इतनी खेल के माध्यम से प्रसन्नता नहीं उत्पन्न होती होगी कि वह कोई बहुत बड़ा अगर मान लो कोई medal भी जीत कर ले आया...जितनी प्रसन्नता उसके माता-पिता को होती है कि मेरा बेटा district level का यह medal जीत कर लाया। बच्चे को जब देखता हूँ, उसके सामने जब उसका चेहरा पड़ता हूँ तो वह तो सामान्य रहता है लेकिन जब माता-पिता को देखता हूँ तो वह बड़े proud महसूस करते हैं अपने आपको, गर्व से भरे हुए होते हैं। **तब मुझे लगता है कि वास्तव में माता-पिता की अपेक्षाएँ बच्चों के प्रति कुछ ज्यादा ही रहा करती हैं।** बच्चा पढ़ रहा है, बच्चा बढ़ रहा है, उसे पता है मेरी योग्यता कितनी है? और उसे यह भी अन्दाजा रहता है कि मैं कितने level तक पहुँच जाऊँगा लेकिन कभी-कभी हम उसे जो पीछे से एक बल देते हैं, उसे एक अत्यधिक प्रशंसा का उसके भीतर एक भाव डालकर हम उसे आगे बढ़ाने की कोशिश करते हैं तो यह कहीं न कहीं हमारी अपेक्षाओं को और बढ़ाता चला जाता है और शायद हमारी फिर वही अपेक्षाएँ, अपेक्षा के रूप में नहीं रह जाती हैं, वे इच्छाओं के रूप में बलवती होने लग जाती हैं।

जरूरत से ज्यादा अपेक्षाएँ, depression का कारण

अपेक्षा तो सिर्फ इतनी होती है कि मेरा बेटा है, तो बेटा का होना और बेटे की अपेक्षा से माता-पिता का होना और माता-पिता की अपेक्षा से बेटे का होना, सिर्फ अपेक्षा तो यहीं से शुरू हुई थी। **अब यह अपेक्षा धीरे-धीरे किसमें बदल गई? इच्छा में बदल गई। इच्छा भी कैसी? बहुत बड़ी जिसे हम कह सकते**

हैं...लोकेषणा, लोक में ख्याति की इच्छा, बच्चे का नाम होने की इच्छा। नाम बच्चे का हो या न हो लेकिन उसके पीछे नाम किसका होगा? मेरा नाम होगा। यह इच्छा माता-पिता के अन्दर बहुत बलवती रहती है। माता-पिता एक छोटे से शिशु को जन्म देते हैं, जब उन्हें पता नहीं होता है कि मेरी इच्छाएँ इसके साथ कितनी जुड़ी हुई हैं लेकिन जैसे-जैसे वह शिशु बड़ा होता चला जाता है, माता-पिता की इच्छाएँ भी बढ़ती चली जाती हैं और अपेक्षाएँ भी बढ़ती चली जाती हैं। बुरा तो नहीं मान रहे हो आप लोग? कभी-कभी सत्य सामने आ जाता है, तो थोड़ा सा ऐसा लगता है कि महाराज हमारे लिए कह रहे हैं। महाराज हमारे लिए कह रहे हैं, सबके लिए कह रहे हैं। माता-पिता तो सभी हैं और सभी जो यहाँ बैठे हैं, माता-पिता नहीं भी होंगे तो पुत्र तो सभी हैं। क्योंकि जो भी यहाँ बैठे हैं पुत्र हैं तो पुत्र के लिए भी माता-पिता होते हैं और माता-पिता के लिए भी पुत्र होते हैं। **अपेक्षाएँ हर किसी की एक दूसरे से हुआ करती हैं लेकिन अपेक्षाओं के बीच में जब इच्छा ज्यादा बढ़ जाती है, तो कभी-कभी उससे नुकसान भी हो जाता है।** कभी-कभी हो जाता है! कुछ दिनों पहले हमने एक खबर पढ़ी। आप लोग तो पढ़ते ही रहते हो। कभी-कभी हमारे कान में भी कोई खबर आ जाती है। पिता engineer है, माता doctor है और बेटे ने बड़े होने के बाद में suicide कर ली। उसकी तहकीकात की गई। साल भर के बाद में उसका जो एक परिणाम सामने आया, उसके पीछे की जो भावना समझ में आई, वह सिर्फ इतनी थी और माता-पिता को बाद में एक साल बाद यह बात realise हुई खुद उनको कि मेरा जो status, symbol था, वह इस बच्चे को अपनी जिन्दगी खोने को मजबूर कर गया। मेरा जो status था! वह क्या था? पिता engineer है, माँ doctor है तो आप समझ सकते हो, बेटे को क्या होना चाहिए? कम से कम तो एक engineer तो होना ही चाहिए। माँ की अपेक्षा रखी जाए तो बेटा और अच्छा हमसे भी बड़ा doctor होना चाहिए और अगर बेटे के अन्दर यह भाव आ रहा है कि न मैं engineer बन सकता हूँ, न मैं doctor बन सकता हूँ और माता-पिता का pressure उसके ऊपर आ रहा है, तो यह अपेक्षा कहीं न कहीं बेटे के लिए भी दुःख का कारण बन, उसकी जिन्दगी को समाप्त करने का भी कारण बन जाती है। यह मैं आपको काल्पनिक कहानियाँ नहीं बता रहा हूँ, आप लोग भी news पढ़ते हैं, देखते हैं। कुछ दिनों पहले एक ऐसी news आई थी और वह news उसी Delhi NCR की तरफ की थी, जहाँ पर लोग इस तरह से अपने बच्चों को आगे बढ़ा रहे हैं, पढ़ा रहे हैं। बड़ी-बड़ी, छोटी सी भी अगर स्कूलों में पढ़ करके बच्चे, बड़ी स्कूलों में पढ़कर थोड़ा सा भी बड़े होने की भावना रखते हैं तो उन्हें एकदम से उन जगहों पर पहुँचा दिया जाता है, जहाँ पर competition जरूरत से ज्यादा होता है। कोटा एक ऐसा hub है, education hub, Allen institute, जिसमें मैं खुद गया। उस institute के अन्दर भी बच्चों को हमने एक दिन जाकर वहाँ पर उनके लिए motivation दिया। उनको अर्ह योग कराया। लेकिन **एक दिन के motivation से और अर्ह योग से क्या होगा? रोजाना का काम है।** हजारों नहीं, लाखों की तादाद में बच्चे वहाँ एक साथ, सिर्फ बच्चे ही बच्चे दिखते हैं और कुछ नहीं और उस भीड़ में अगर कोई बच्चा थोड़ा सा भी अपने को कमतर पाता है, तो वह भीड़ ही उसके लिए depression का कारण बन जाती है। यह मैंने वहाँ रहकर realise किया।

प्रतिद्वंद्विता कषाय से आती है

उन teachers से समझा कि बहुत से बच्चे इस दबाव में आकर ही अपने आप को depression में ले जाते हैं, कि मैं इन बच्चों की भीड़ में, जो एक से एक अच्छे घरानों के, एक से एक अच्छे तबके के लोग हैं

और अच्छे पढ़े लिखे लोग हैं और इनके बीच में बैठ कर अगर हम यहाँ पर बैठे हैं तो वह भी एक बहुत बड़ा उनके लिए competition वहीं से शुरू हो जाता है। **प्रतिद्वंद्विता वहीं से शुरू हो जाती है।** पूछा गया है राजा रानी ने आज, राजा श्रेणिक ने नहीं पूछा आज नन्दश्री ने पूछा है... यह प्रतिद्वंद्विता कैसे जाए महाराज? यह तो कषाय से उत्पन्न होती है और जब कषाय आती है तो प्रतिद्वंद्विता तो आएगी। जाए कैसे? इसीलिए शायद यह विशेषण और आया... **‘अन्य-द्रव्यानपेक्षं’** अगर आपको प्रतिद्वंद्विता से बचना है तो **दूसरे द्रव्यों से अपनी अपेक्षाएँ कम करना सीखो।** अगर आपको प्रतिद्वंद्विता से बचना है, तो दूसरे लोगों से अपने बच्चों के अन्दर अपेक्षाएँ कम डालना सीखो। दूसरों को देख कर अपेक्षाओं की वृद्धि नहीं करना। अपने लिए तो सुख की अपेक्षा इतनी होनी चाहिए, कम से कम यह मेरा बेटा है, यह मेरी बेटी है, जितना पढ़ रही है, पढ़ लेगी। जितना पढ़ जाएगा, पढ़ जाएगा, बड़ा बन जाएगा। यही मेरे लिए सुख है कि मैं इसका माता-पिता हूँ। क्या इतनी अपेक्षा पर्याप्त नहीं होती है? बोलो माता-पिताओ! सब तो बैठे हो लेकिन नहीं महाराज! यह तो बहुत ही सामान्य सी अपेक्षा हो गई, इससे कैसे काम चलेगा? चलिए कोई बात नहीं, थोड़ी सी अपेक्षा और बढ़ा लेना लेकिन वह अपेक्षा इतनी ज्यादा मत बढ़ा लेना, जैसे वह case हुआ कि माता doctor है, पिता engineer है और बेटे ने suicide कर ली और उसके पीछे कोई कारण नहीं था। उसके suicide नोट में यह बात लिखी हुई थी और पिताजी ने भी बाद में realise किया कि केवल मेरे status ने इस बच्चे को अपनी जिन्दगी से हरा दिया और मैं आज अकेला रह गया। आप समझो अगर माता-पिता भी इस बात को समझ पाते हैं तो कितनी देर हो चुकी होती है। अब उनकी अपेक्षा किससे रह गई? क्या रह गई?

सुख के मार्ग पर चलने की सीख

इसलिए धर्म हमें सुख के मार्ग पर चलने की सीख देता है। **धर्म हमेशा हमें ऐसे आदर्शों की ओर बढ़ाने की बात करता है कि हम अपने आदर्श उनको बनाएँ जिन्हें किसी द्रव्य से कोई अपेक्षा नहीं है।** सिद्ध भगवान सारे द्रव्यों को एक साथ देखते हैं, जानते हैं। सबका परिणामन उनके ज्ञान में आता है लेकिन उन्हें किसी भी द्रव्य से कोई अपेक्षा नहीं है। expectation यह एक ऐसा शब्द है, इसी के अनुसार सब कुछ चलता है। हमारा दुःख-सुख हमारा नहीं होता है। जिससे हम जो expect करते हैं वह वैसा नहीं होता है, तो दुःख-सुख हमारा वैसा बन जाता है। आप विचार करो अगर आपने अपने बच्चे के लिए यह सोचा है, कि अगर यह tenth का board का exam दे रहा है, तो इसके 90% आने चाहिए। अगर आपने उससे यह expectation लगा रखी है और अगर वह भूल से 80% रह गई या 90 में भी 89% भी रह गई तो भी आपके लिए कहीं न कहीं कचोटती रह जाएगी। वह दुःख कुछ और नहीं है, वह क्या है? सिर्फ एक expectation का level, जो हम अपने दिमाग में पहले से set कर लेते हैं और वहीं पर अगर हमने कोई expectation नहीं रखी, बेटा! तू सिर्फ पढ़, अच्छा पढ़, तेरा मन में जितना आए उतना अच्छा खेल, अच्छा पढ़, जो तुझे अच्छी किताबें चाहिए, अच्छी tuition चाहिए, अच्छी school चाहिए, सब तेरे लिए available है। पढ़ तू कर, आगे बढ़ और अचानक से पता पड़ा, उसके 89% आ गए, बताओ आपकी खुशी का कुछ ठिकाना रहेगा? यह सुख और दुःख जो हमारे अन्दर आते हैं, यह सिर्फ अपेक्षाओं के कारण से हैं।

सिद्धों और निर्ग्रन्थ गुरुओं का परम सुख अपेक्षाओं से रहित होता है

जो सिद्ध परमात्मा बन गए, उन्होंने सब द्रव्यों से अपनी अपेक्षा हटा दी। उन्हें किसी द्रव्य से कोई अपेक्षा नहीं, ऐसे परमात्मा के अन्दर का सुख कितना बढ़ा-चढ़ा होगा, जिन्हें किसी द्रव्य से कोई अपेक्षा नहीं है। क्या इतना प्रवचन सुनने के बाद में हम यह formula बना सकते हैं? **More expectation is proportional to more sorrow.** क्या समझ में आया? formulas गणित के ऐसे ही बनते हैं। **जितनी अपेक्षाएँ उतना ही दुःख और अगर हम इसी formula को और ज्यादा derive करें, no expectation no sorrow, जहाँ कोई अपेक्षा नहीं है, वहाँ कोई दुःख नहीं है।** ऐसे व्यक्ति कौन होते हैं? इन्हीं को हम अपना आदर्श बनाते हैं और इन्हीं व्यक्तियों को हम परमात्मा कहते हैं और **उन परमात्मा के आदर्श पर चलने वाले आचार्य परमेष्ठी, साधु परमेष्ठी, जैसे गुरुदेव हमारे, ये ऐसी अपेक्षाओं से रहित होते हैं।** आज देख लो गुरुदेव को, आचार्य श्री को। तुम कहीं भी रहो, उन्हें कहाँ बैठना है जाकर? उन दूरदराज इलाकों में, जहाँ कोई आता जाता भी नहीं होता। कहाँ बैठे हैं गुरुजी? चन्द्रगिरी की पहाड़ियों पर बैठे हैं। अब आप समझो कि जहाँ कोई नहीं जाता-आता, वहाँ पहुँच जाते हैं। किसलिए? उन्हें कभी किसी से कोई अपेक्षा रहती ही नहीं। जो स्वयं मोक्ष-पथ पर बढ़े जा रहे और भव्यों को भी साथ ले जा रहे। भव्यों को साथ ले जाते-ले जाते, ले जाते-ले जाते भी अब वे इस अवस्था में हैं, उन्होंने सब जितने भी साथी थे, शिष्य थे, सब छोड़ दिए। सब दूर रहो, किसी की जरूरत नहीं है। नाम मात्र के लिए दो तीन लोग हैं बस, दो तीन साधु साथ में हैं, कोई नहीं। क्या समय था जब 40-40, 50-50 साधु साथ में रहा करते थे। ऐसा भी समय देखा, जब 48-48, 50-50 साधु साथ में रहे और समाधि हुई एक एक मुनि महाराज की। अभी कुंडलपुर में देखो तो साधुओं की संख्या क्या थी? 200-200 साधु, 200-200 आर्यिकाएँ, इतनी संख्या होने के बावजूद भी आचार्य श्री अपना चुपचाप से अकेले चले जाते हैं। कोई अपेक्षा नहीं। यह कहाँ से सीखते हैं? यह इन्हीं विशेषणों से सीखते हैं। जिन्हें सिद्ध पथ पर चलना है, जिन्हें सिद्धानुगामी बनना है, जिन्हें सिद्ध भगवन्तों की राह पर चलना है, उन्हें कभी किसी से कोई अपेक्षाएँ नहीं रहा करती हैं लेकिन जब वे आपके बीच में आ जाते हैं तब आपको कैसा लगता है? इन्हें हमारी कितनी अपेक्षा होगी? जब ये हमारे सतना में आए, इन्हें कितनी अपेक्षा होगी? जब ये हमारे जबलपुर में आए और जब वे आ जाते हैं, तो फिर कितना अपनापन लगता है, कितना मेरापन लगता है और वे एक झटके में जब सब छोड़ कर चले जाते हैं, तब फिर आप ठिठल कर रह जाते हो...अरे! पता ही नहीं पड़ा कब चले गए? कब निकल गए? उस समय पर आपको यह ज्ञान में आना चाहिए जैसे **सिद्ध भगवन्तों को संसार के किसी प्राणी की कोई इच्छा नहीं होती, ऐसे ही उन सिद्धों के मार्ग पर चलने वाले साधकों को भी संसार के किसी प्राणी से कोई इच्छा नहीं होती।** अपेक्षा नहीं है लेकिन जब आपके बीच में होते हैं, जितने time तक आपके बीच में होते हैं, उतने time तक लगता है, इन्हें कितना हमसे अपनापन है और हमको भी इनसे कितना अपनापन है। लेकिन यह अपनापन भी किसी भी तरह की अपेक्षा के बिना भी चलता रहता है और यह अपेक्षा के बिना चलने वाला अपनापन ही वास्तव में सुख देता है। **ऐसे सुख में अगर आप आगे बढ़ना चाहते हैं, ऐसे सुख की ओर आगे चलना चाहते हैं तो आपके अन्दर यह भाव आना चाहिए कि हम भले ही ऐसे द्रव्यों की अपेक्षा के बिना नहीं रह सकते हैं लेकिन जो इन द्रव्यों की अपेक्षा के बिना रहते हैं, उनके अन्दर कितना सुख होता है।** इसलिए कहा जाता है, एक सामान्य व्यक्ति से एक अविरत सम्यग्दृष्टि श्रावक का सुख कई गुना हो जाता है, **जिसे श्रद्धा आ जाती है...सिर्फ वीतराग निर्ग्र-**

व्य गुरुओं पर, सिद्ध भगवन्तों पर, जिसे केवल श्रद्धा उत्पन्न हो जाए, उसके अन्दर सामान्य लोगों से भी बड़ा सुख उत्पन्न हो जाता है। भले ही व्यक्ति जैन हो न हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन अगर उसने श्रद्धा कर ली, दिगम्बर गुरु, दिगम्बर साधु, निर्ग्रन्थ साधु हमारे लिए बड़े आदर के, सम्मान के, आस्था के विषय हैं, अगर उसने इतनी श्रद्धा कर ली, उसके सुख में वृद्धि हो जाएगी। अन्य जो लाखों लोग हैं, करोड़ों लोग हैं, उससे ज्यादा व्यक्ति भीतर अपने आप सुखी होने लगेगा सिर्फ श्रद्धा मात्र से। करके देख लेना आप और जो लोग किए होते हैं, उनसे पूछ लेना आप। **कितने ही लोग हैं जो आचार्य श्री के प्रति इस तरह की श्रद्धा बनाए रखते हैं और इस तरह की श्रद्धा से उन्हें कितना सुख मिलता है।** कभी भी कोई भी सन्देश आचार्य श्री का किसी भी रूप में मिलता है, वह अपने आप को उनसे जोड़ लेते हैं। हाँ! यह बात आचार्य श्री ने हमारे लिए भी कही है, यह उपदेश हमारे लिए भी है और उनके सुख-दुःख में उस श्रावक का भी सुख-दुःख शामिल हो जाता है। यह श्रद्धा सबसे पहले हमें सुख देने लग जाती है, इसलिए हर व्यक्ति के अन्दर सबसे पहले इस बात की श्रद्धा होनी चाहिए कि सिद्ध भगवान कितने सुखी हैं? **ये निर्ग्रन्थ गुरु सुख के रास्ते पर चल रहे हैं, ये सुखी हैं क्योंकि इन्होंने सब लोगों से अपनी अपेक्षाएँ छोड़ दी हैं।** माता-पिता से भी अपेक्षा छोड़ दी, समाज के लोगों से भी अपेक्षाएँ छोड़ दीं और ये अपेक्षाओं से रहित हैं इसीलिए ये सुखी हैं।

जहाँ कोई अपेक्षा नहीं, वहाँ कोई दुःख नहीं

हम भी अगर प्रतिद्वंद्विता से ऊपर उठना चाहते हैं तो हमारे अन्दर अपेक्षाओं की कमी होना जरूरी है। चीजें रहें, कोई दिक्कत नहीं। आपके बेटे हैं, बेटियाँ हैं, बहुत अच्छे हैं, बहुत पढ़ रहे हैं, बहुत आगे बढ़ रहे हैं, सबको बढ़ाओ, सबको पढ़ाओ, कोई दिक्कत नहीं लेकिन expectation जरूरत से ज्यादा उनसे मत रखना। उतनी ही रखना जितना उनका level हो और उस level के अनुसार उन्हें उतना ही आशीर्वाद देकर आगे बढ़ाना। बेटा! ठीक है, तुम जितना पढ़ सकते हो पढ़ो, जब तुम्हें लगने लग जाए कि हमें इससे आगे नहीं पढ़ना है, बिल्कुल भी चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। तुम्हारे लिए, सब कुछ हमारे पास में है। इतना अगर उन्हें पीछे से बल मिलेगा तो वह बच्चा कभी भी दुःखी नहीं होगा और कभी भी suicide जैसे कृत्य करने के लिए तत्पर नहीं रहेगा, यह माता-पिताओं को अच्छे ढंग से उस घटना से सीख लेना चाहिए। ऐसी घटनाएँ एक नहीं, सैकड़ों रोजाना होती हैं। कोटा में चले जाओ, जब मैं उस राजस्थान में था, हर रोज suicide होती थी बच्चों की और आज भी होती होगी। यह दुनिया का इतना बड़ा एक मेला बन चुका है कि इसके बीच में थोड़ी सी भी कम हिम्मत वाला होगा तो पिस जाएगा, मर जाएगा, दम तोड़ देगा वह। इसलिए इस बात की आज बहुत जरूरत है कि हम प्रतिद्वंद्वी बना तो रहे हैं बच्चों को, थोड़ा सा भी बच्चे के twelfth में अच्छे नम्बर आ गए, अब बेटे को क्या करना है? IIT से नीचे कुछ दिखता ही नहीं है, MBBS से नीचे कुछ दिखता ही नहीं है, IAS से नीचे कुछ दिखता ही नहीं है, सीधे बस यही डिग्रियाँ दिखती हैं और कुछ नहीं दिखता। चाहे वह उसके योग्य हो या न हो। **अगर आपके अन्दर expectation ज्यादा रहेगी तो वह आपके लिए दुःख का कारण भी बन सकती है और अगर बच्चे को पता रहता है कि माता-पिता मुझसे बहुत ज्यादा expect करते हैं तो उसके लिए भी वह एक pressure का कारण बन जाता है।** ये बच्चे आपको नहीं बताएँगे, यह बच्चे हमको बताते हैं। हमारे लिए tension क्यों हो रही है? तीन साल हो गए, IAS का exam दे रहे थे, UPSC का exam दे रहे थे, एक बार pre pass हो गए, एक

बार mains pass हो गया, interview रह गया। दूसरी बार में mains pass हुआ, तीसरी बार में तो pre भी नहीं हुआ महाराज! अब यह क्या हो गया? यह तो downward हो गया सब कुछ। क्या करोगे? आप देखो! उन बच्चों के लिए डाढस देने का काम, उन बच्चों को मार्ग पर लगाए रखने का काम, इस तरह के competition में जाने के बावजूद भी अपेक्षा से रहित होने का भाव, अगर आपके माध्यम से दिया जाएगा तो वे बच्चे सुखपूर्वक आगे का जीवन जी सकेंगे। यहाँ पर जो ये दिल्ली के लोग बैठे हैं...योगेश भाई, उनकी धर्मपत्नी, इन लोगों ने अपने घर में कई IAS, UPSC के exam देने वाले लोग जो आपके यहाँ से जाते थे, उनको अपने घर में रखकर, वहाँ पर सुविधा देकर पढ़ाया है और कई IAS वहाँ से बना कर उन्होंने निकाले हैं। कई लोग जो वहाँ से इस तरीके की शिक्षा नहीं प्राप्त करके सफल नहीं हो पाए तो भी उनके लिए बल देना, उन्हें support देना, उन्हें सही राह पर आगे बढ़ाने के लिए guideline देना, यह भी आज के जीवन में, आज के समय में बहुत जरूरी चीज हो गई है। ऐसी व्यवस्थाएँ जहाँ रहेंगी, वहाँ के लोग हमेशा अपने अन्दर यह महसूस करेंगे कि हमने चलो किसी के लिए कुछ किया हो, न किया हो लेकिन हमने कुछ बच्चों को अगर आगे बढ़ाया है, उन्हें आगे पढ़ाया है और किसी भी तरीके से हमने उनका सहयोग किया है तो यह भी एक बहुत बड़ा सुख का कारण होता है, जब हम किसी की इस तरह से बिना अपेक्षा के भी मदद करते हैं। **आप लोग तो अपेक्षा रख कर किसी की help करते हैं लेकिन जब अपेक्षा के बिना मदद की जाए, समझो उसमें कितना सुख मिलेगा?** मिलेगा? नहीं महाराज! बिना अपेक्षा के तो फिर मेरे-तेरे का भाव कैसे आएगा और जहाँ मेरे-तेरे का भाव नहीं है, वहाँ पर कोई सुख हो ही नहीं सकता। इसलिए मेरेपन में सुख है। कभी आप यह कोशिश कर सकते हो कि हम उन बेटों को भी पढ़ायें, उन बेटियों को भी आगे बढ़ायें, जो मेरी नहीं हैं लेकिन हम उन्हें सहयोग दे और सहयोग देने के बाद में वे आगे बढ़ जाएँ, आगे पढ़ जाएँ, कोई अपेक्षा नहीं है। वे हमको जानें या नहीं जानें और आप उनको आगे पढ़ा दें, आगे बढ़ा दें। अगर आपकी बिना अपेक्षा के इस तरह का भी कार्य चलता है, तो यह कितना बड़ा आपके लिए सुख का कारण हो सकता है। चाहे सामने पड़ा हुआ व्यक्ति आपको कुछ माने, न माने, कृतज्ञ हो या न हो लेकिन अगर आपने कुछ किया है, तो आपके लिए भी वह सुख का कारण बन सकता है क्योंकि आप अपेक्षा के बिना वह कार्य कर रहे हैं।

No expectation is equal to No sorrow.

आप सोचो! आप अपने बेटे से कितनी अपेक्षा रखते हैं और जो अपने बेटे नहीं हैं, उनके लिए सब कुछ करने के बावजूद भी कोई अपेक्षा नहीं रखना, यह कितना बड़ा धर्म का कार्य है। क्या ऐसे कार्यों की हम कोई योजना बना सकते हैं? क्या इस तरीके के कोई कार्य अगर मान लो आचार्य गुरुदेव कर रहे हैं, तो क्या हम उन कार्यों को भी आगे बढ़ाने के लिए कोई अपना मनोबल बना सकते हैं? एक भावना मन में अगर रहे कि आचार्य गुरुदेव कितने बड़े-बड़े कार्य जनहित में कर रहे हैं और कोई अपेक्षा नहीं रखते हैं, अगर हम उन्हीं के कार्यों को आगे बढ़ाने की कोई मानसिकता बना लेते हैं और उसी का कोई छोटा रूप भी अपने शहर में किसी भी तरीके से कोई प्रकल्प के रूप में डाल लेते हैं, तो यह भी आपका एक बहुत बड़ा बिना अपेक्षा के मिलने वाले सुख का कार्य होगा और इस प्रकार के कार्य से जो आपको आचार्य गुरुदेव का आशीर्वाद मिलेगा, वह अन्य लोगों से कहीं ज्यादा आपको सुखी बनाएगा। **ऐसे भी कुछ कार्य हो सकते हैं कि नहीं हो सकते हैं? बोलो!** committee, ex-committee, pre-committee! जब कोई इस तरह की

बातें सामने हो और वे बातें आपके सामने आएँ तो आपके मन में सिर्फ एक ही विचार होना चाहिए, एक ही भाव होना चाहिए...क्या? जिन आचार्य महाराज की इस स्थान पर इतनी कृपा है, इतनी अनुकम्पा है अगर उन आचार्य महाराज के लिए, उनके द्वारा बनाए गए किसी भी प्रकल्प को आगे बढ़ाने के लिए हमारा कोई मनोभाव बनता है, तो इससे बड़ा हमारा सौभाग्य और कुछ भी नहीं हो सकता है। इसमें कोई committee और pre-committee, ex-committee, कोई मतलब नहीं रखना चाहिए। हर व्यक्ति का सम्बन्ध किससे? गुरु महाराज से। हर व्यक्ति का सम्बन्ध किससे? आचार्य महाराज से। आचार्य महाराज इस committee के हैं, उस committee के हैं क्या? बोलो तो! तुम partiality करते हो कि गुरु महाराज partiality करते हैं? बताओ! गुरु महाराज तो कभी नहीं करते न? उनके लिए तो हमेशा हर व्यक्ति अगर मान लो, कोई भी उनका शिष्य किसी स्थान पर चातुर्मास कर रहा है और यहाँ से कोई भी व्यक्ति जाता है, तो वह व्यक्ति अगर उन्हें कोई अच्छा समाचार देता है या अच्छी कोई खबर देता है या किसी भी तरह की कोई आज्ञा माँगता है, तो वे यह नहीं पूछेंगे, ये pre committee का है कि ex-committee का है कि वर्तमान committee का है। उन्हें मतलब किससे होता है? कोई भी अच्छा कार्य करने वाला व्यक्ति है और वह अच्छे कार्य करने का अपने अन्दर माद्दा रखता है, तो आशीर्वाद देने के लिए उनका हाथ अपने आप उठ जाता है, यही उनके लिए सबसे बड़ी चीज होती है और यही आप सबके लिए बड़ी चीज होती है। **ऐसी भावना अगर आप अपने मन के अन्दर रखोगे तो आपको समझ में आएगा कि धर्म करते हुए भी हम बिना अपेक्षा के भी हम कर्तव्य करते हुए, आगे बढ़ते हुए हम सुख प्राप्त कर सकते हैं।** क्योंकि जो सुख के रास्ते हमें हमारे प्रभु ने, गुरु ने बताए हैं, हम केवल उन रास्तों पर चलते भी हैं, तो भी हमें अपने आप सुख की प्राप्ति होने लग जाती है। इसलिए यहाँ कहा जा रहा है कि भगवान सिद्धों का जो सुख है, वह किसी भी द्रव्य की कभी कोई अपेक्षा नहीं रखता है और बिना अपेक्षा के उनके अन्दर सुख क्यों है? क्योंकि वहाँ पर कोई दुःख नहीं है और सुख क्यों नहीं है? क्योंकि वहाँ पर कोई अपेक्षा नहीं है। इसलिए यह formula बिल्कुल fit बैठता है...no expectation is equal to no sorrow. क्या समझ में आ रहा है आपको? **कुछ अपने expectation का level हमें down करना पड़ेगा।** वह पिता-पुत्र में ही नहीं होता, भाई-भाई में भी हो सकता है। किसी से किसी का भी हो सकता है लेकिन हमें उसमें कुछ न कुछ level down करना पड़ेगा। यही हमारे लिए सुख की परिभाषा समझ में आती है और इसी सुख की परिभाषा को बताने वाले सिद्ध भगवान आज भी आनन्द में बैठे हैं, कोई दुःख नहीं है क्योंकि उन्हें किसी द्रव्य से कोई अपेक्षा...जहाँ अपेक्षा हो जाएगी, वहाँ दुःख हो जाएगा। चाहे वह परीक्षा की अपेक्षा होगी, तो भी दुःख हो जाएगा।

श्रेणिक कथा: गतांक से आगे

श्रद्धा से हर समस्या का समाधान हो सकता है



श्रेणिक को किसकी अपेक्षा है? **परीक्षा ले रहा हूँ, परीक्षा ले रहा हूँ**, मेरी परीक्षा में इन्हें fail होना चाहिए था। देखो! ऐसे भी लोग होते हैं, जो परीक्षा लेने के बाद क्या सोचते हैं? इन्हें fail होना चाहिए था और वो pass होते जा रहे हैं, तो श्रेणिक का दुःख क्या हो रहा है? बढ़ रहा है। एक परीक्षा ले ली, दो परीक्षा ले ली, कल कौन सी परीक्षा ली थी? बोलो!

तिल के बराबर तेल निकालना, खैर की लकड़ी सीधी है कि उल्टी है, उसकी पूँछ देखना, head देखना और हर परीक्षा में वे pass हो गए। अब क्या करें? फिर भी अभी पूरी नहीं हुई परीक्षाएँ। अपेक्षाएँ हैं तो परीक्षाएँ भी हैं और इसी तरीके की परीक्षाएँ चलते-चलते, वह परीक्षाएँ और आगे बढ़ जाती हैं। उनके मन में एक और परीक्षा लेने का भाव आ गया। इन नंदी ग्राम के लोगों से कहो, यह हमारे सामने एक मुर्गा लेकर आएँ और उसको लड़ाएँ। क्या बोला? एक मुर्गा लेकर आएँ और उसको लड़ाएँ। अब भाई! एक मुर्गा कैसे लड़ेगा किसी से? तुमसे तो लड़ने बैठेगा नहीं। अब उन्होंने test ले लिया और चिन्ता में पड़ गए। अगर नहीं लड़ा पाओगे, नहीं लाओगे, हमारी बात नहीं मानोगे तो फिर गाँव से बाहर निकलो, गाँव छोड़ कर जाना पड़ेगा। तो फिर नंदी गाँव के लोग परेशान हुए और फिर परेशान होकर अभय कुमार के पास में पहुँचे तो अभय कुमार फिर कहते हैं...आप लोग किसी भी तरह की कोई चिन्ता नहीं करो। समस्या है तो समाधान भी है। **कोई भी समस्या ऐसी नहीं है जिसका समाधान न हो। यह सीख लो अभय कुमार से।** कितनी समस्याएँ? एक के बाद एक, एक के बाद एक, महाराज! हम तो समस्याओं में घिरते चले जा रहे हैं। अरे भाई! घिर क्यों रहे हो? तुम घिर रहे हो तो यह कमजोरी है, समस्या की बात नहीं है। समस्या बड़ी नहीं है, समस्या को बड़ी तुमने बना लिया है क्योंकि तुमने सोच लिया, यह समस्या बड़ी है। जहाँ समस्या बड़ी हो गई, वहीं समस्या खड़ी हो गई और जहाँ समस्या कुछ है ही नहीं, वहाँ समस्या के नाम पर कोई चिन्ता खड़ी होनी नहीं है। अभय कुमार के पास में वह समस्या पहुँची तो अभय कुमार कहते हैं, हो जाएगा, सब हो जाएगा। कोई भी ऐसी समस्या नहीं जिसका समाधान न हो। बस कोई भी समस्या आये, आपको क्या करना है? **‘ओं अर्ह नमः’** क्या करना है आपको? बस! आपको सब समाधान मिलेंगे। थोड़ी देर बस उन अर्ह में मतलब सिद्धों में डूब जाओ, सुख देंगे तो वही देंगे। ओं अर्थात् पंच परमेष्ठी में अपने मन को लगा दो। सुख देंगे तो वही देंगे। समस्या का निराकरण करेंगे तो idea आएगा तो कहाँ से आएगा? कौन देगा? Idea यहाँ से नहीं आता, यहाँ से आता है। पूछो क्यों? यहाँ पर श्रद्धा होती है, यहाँ पर हमारे अन्दर दिल में जिसके प्रति श्रद्धा होगी, interest होगा, वही हमारे अन्दर एक तरंग पैदा करेगा, जो यहाँ पर पहुँचेगी और फिर हमारे अन्दर वह idea आ जाएगा। अगर यहाँ कुछ नहीं है, तो यहाँ कुछ नहीं होगा, यह ध्यान रखना। अगर आपके दिल में कोई भगवान नहीं हैं, गुरु नहीं हैं, यहाँ कुछ नहीं हैं, आपका connection यहाँ से कुछ नहीं है, तो यहाँ कुछ नहीं आएगा और यहाँ कुछ है, तो यहाँ भी कुछ आ जाएगा। इसलिए ओं अर्ह नमः जपो, कोई चिन्ता की बात नहीं है, idea अपने आप आ जाएगा।

चातुर्य से हर समस्या का समाधान

अभय कुमार को idea आ गया। बोले...कोई चिन्ता की बात नहीं है। तुम लोग **जब उन राजा श्रेणिक के पास जाओ** तो एक मुर्गा लेते जाना साथ में और उस मुर्गे के साथ में एक शीशा लेकर जाना और शीशा ले जाकर उनके राज दरबार में उस मुर्गे के सामने रख देना और जैसे ही मुर्गा शीशे में देखेगा, एक और मुर्गा है तो मुर्गे का काम यही है, दूसरे मुर्गे को देख कर अपनी चोंच उसके लिए मारना। यह मुर्गे की पहचान है और जैसे ही वह चोंच मारेगा तो वह भी उसके लिए चोंच मारेगा और जब दोनों एक दूसरे में चोंच मारेंगे और नहीं लग पाएगी तो वे आपस में लड़ने लग जाएंगे और जितनी ताकत से वह लड़ेगा, उतनी ही ताकत से वह लड़ेगा। जैसा मुँह वह बनाएगा, जैसी ताकत वह दिखाएगा, वैसी ताकत वह दिखाएगा और जब दोनों की आपस में लड़ाई होने लग जाएगी तो समझ लेना कि एक ही मुर्गा है लेकिन देख रहे हो? एक मुर्गा को

भी आपस में लड़ाने की क्षमता होती है। यह क्षमताएँ बुद्धि के चातुर्य से आती हैं लेकिन समस्या तब हो जाती है कि मुर्गा तो चलो एक अकेला लड़ लेता है, यहाँ दो मुर्गे आपस में लड़ने लग जाते हैं और उन्हें पता ही नहीं होता कि हम लड़ रहे हैं। जब दो मुर्गे आपस में लड़ रहे हो और उन्हें पता ही न हो कि हम क्यों लड़ रहे हैं तो यह कितनी बड़ी समस्या है? ऐसी लड़ाई से बचने के लिए बीच में किसको आना पड़ेगा? शीशे को? किसको आना पड़ेगा? किसी न किसी को तो आना पड़ेगा और मैं समझता हूँ, **इन सब लड़ाइयों का समाधान केवल आपको उपदेश सुनने से ही हो जाता है और हो जाना चाहिए।** आपस में लड़ने वाले लोग ही मुर्गा कहलाते हैं, ध्यान रखना। अगर आपस में लड़ोगे तो क्या कहलाओगे? मुर्गा। नहीं लड़ोगे तो क्या कहलाओगे? आदमी कहलाओगे, इंसान कहलाओगे, श्रावक कहलाओगे। क्या बनना है? बोलो! मुर्गा बनना है? श्रावक बनना है। इसलिए आपस में कोई लड़ने की बात तो कभी होनी ही नहीं चाहिए। एक अच्छा श्रावक बनने के लिए हमें कभी किसी से लड़ने की कोई बात नहीं है क्योंकि अगर लड़ने की आदत पड़ी हुई है, तो आदमी दो में नहीं लड़ाता, अकेले में भी लड़ा देगा। क्योंकि मुर्गे की आदत लड़ने की है, अकेले से ही भिड़ जाएगा वह। कोई न कोई आपके सामने लाकर खड़ा कर देगा और इस तरह की आदत से नुकसान किसका होगा? लड़ने वाले का ही होता है। अकेले लड़े, चाहे किसी के साथ लड़े, लड़ने वाले को कभी कोई फायदा नहीं होता है। इसलिए किसी को लड़ने की कभी कोई जरूरत होनी ही नहीं चाहिए और सिद्ध भगवान को स्मरण करते हुए उनके सुख में ही रमण करने की भावना होनी चाहिए।

अंतरिक्ष भी शून्य है, रवि शशि सम सब गोल।

गोल शून्य में जीव का भ्रमण होय नित गोल॥१९॥

24. श्रावक भी सुख की अनुभूति कर सकता है

सिद्धों के सुख की विशेषताएँ



विगत कई दिनों से सिद्ध प्रभु की आराधना में सिद्ध भगवन्तों के गुणों का गान करते हुए णमो सिद्धाणं, इस पद में आए हुए सिद्ध भगवन्तों का हम स्मरण भी कर रहे हैं और उनके गुणों की ओर आकृष्ट होने के लिए उन गुणों को समझने की कोशिश भी कर रहे हैं। आचार्य पूज्यपाद देव विरचित सिद्ध भक्ति के माध्यम से यह जो सातवें नम्बर का काव्य है, यह बहुत दिनों से भगवान के सुख का वर्णन कर रहा है। **आप सभी लोगों ने सिद्धों के सुख की कई विशेषताएँ सुनी हैं, चाहे वह 'आत्मोपादान-सिद्ध' वाली विशेषता हो, चाहे वह विषयों से रहित होने वाली विशेषता हो, चाहे वह भगवान सिद्धों का सुख वृद्धि और ह्रास से रहित होता है, विशाल होता है, निःप्रतिद्वन्द्व होता है, इस तरह की अनेक-अनेक विशेषताओं को सुनने के बाद में अभी भी आपके अन्दर जिज्ञासा बनी हुई है।**

सिद्ध भगवन्तों का सुख उपमा रहित है

राजा श्रेणिक ने आज पूछा है...भगवन्! सिद्धों का सुख और भी कुछ होता है? और एक विशेषण उन सिद्धों के सुख में लगता है- **'निरूपमम्'** क्या बोलते हैं? निरूपम। **भगवान का सुख निरूपम होता है, वह अन्य द्रव्यों की अपेक्षा के बिना होता है इसलिए ही शायद वह निरूपम होता है।** निरूपम का अर्थ होता है... जिसके लिए हम किसी से कोई उपमा न दे सकें। उपमा रहित सुख को निरूपम सुख कहा जाता है। उपमा तब दी जाती है जब उस सदृश कोई चीज हमें दिखाई दे और अगर हम सुख के परिप्रेक्ष्य में ही उपमा देना चाह रहे हैं तो फिर हमें सुख के रूप में वह चीज दिखाई देनी चाहिए।

उपमा परिप्रेक्ष्य पर निर्भर

जब भी कभी किसी चीज की कोई उपमा दी जाती है, तो उसका एक परिप्रेक्ष्य देखा जाता है कि वह उपमा किस परिप्रेक्ष्य में है? कभी-कभी आपसे कहा जाता है...आपका मुख चन्द्रमा की तरह है। क्या बोलते हैं? अब आपके मुख को चन्द्रमा की उपमा कैसे दी जाये? क्या आप चन्द्रमा की तरह रोशनी फैक रहे हैं? क्या आप चन्द्रमा की तरह बिल्कुल झक्कास सफेद हैं? कैसे हैं? शास्त्रों में, साहित्य में आपको यह सुनने को, पढ़ने को मिलेगा। किसी भी स्त्री के मुख की उपमा अगर दी जाती हो तो सबसे पहले किससे? चन्द्रमा से। पूछो राजा श्रेणिक से कि चन्द्रमा की उपमा क्यों दी जाती है? चन्द्रमा की तरह उसमें कौन सा गुण है? क्या चन्द्रमा की तरह, हम यूँ मान लें कि जैसे बिल्कुल चन्द्रमा सफेद-सफेद दिखाई देता है, ऐसा सफेद-सफेद किसी स्त्री का मुख होता है? हमने तो कभी नहीं देखा ऐसा मुख। चन्द्रमा की उपमा किसलिए? चन्द्रमा दिन में दिखाई नहीं देता, रात में दिखाई देता है। स्त्री क्या रात में ही दिखाई देती है, दिन में दिखाई नहीं देती? उसका मुख चन्द्रमा की तरह कैसे कहा जाये? किस अपेक्षा से उसको चन्द्रमा की तरह कहा

गया? क्या समझना पड़ेगा? हो सकता है, चन्द्रमा जैसे गोल होता है, ऐसे किसी का मुख बिल्कुल अच्छा गोल हो तो कहा जा सकता है कि हाँ! यह चन्द्रमा की तरह गोल है। लेकिन इतना भी गोल बिल्कुल नहीं दिखाई देता किसी का मुख, जैसे चन्द्रमा का दिखाई देता है। फिर क्या कहा जाये? चन्द्रमा की तरह, यूँ कह सकते हैं- सुन्दरता है। सुन्दरता का मतलब यह है कि जैसे चन्द्रमा देखने में अच्छा लगता है, वैसे ही जिस स्त्री का मुख देखने में अच्छा लगे उसे हम कह सकते हैं...चन्द्रमा की तरह है। चन्द्रमा में बहुत सारे गुण हैं लेकिन उन गुणों की अपेक्षा से किसी भी मुख को उपमा नहीं दी जा सकती है। न उसकी सफेदी की अपेक्षा से दी जा सकती है, न उसकी गोलाई की अपेक्षा से कहा जा सकता है, न रात्रि की अपेक्षा से कहा जा सकता है। अगर कहा जा सकता है तो सिर्फ इसलिए कि जैसे चन्द्रमा को देखने पर अच्छा लगता है, आँखों को अच्छा लगता है, आँखों के लिए चुभन नहीं होती है...ऐसे ही स्त्री का मुख देखने पर अगर अच्छा लगे, आँखों में चुभे न, तो समझ लेना वह चन्द्रमा के समान है। हमें तो इतना ही समझ में आता है। इससे ज्यादा कुछ समझ में आता हो तो बता देना। आखिर क्यों?

उपमेय में सादृश्यता आवश्यक

उपमा जब भी कभी दी जाती है तो किसी न किसी एक गुण को ध्यान में रख कर दी जाती है। यूँ कह सकते हैं जैसे चन्द्रमा हमें सुख देता है...वैसे ही स्त्री भी हमें सुख दे रही है। उसका मुख देखने पर सुख मिलता है। जिनको उसका मुख देखने पर सुख मिले तो वह कह सकते हैं- चन्द्रमा की तरह है। कईयों को उसका मुख देखने पर क्या होता है? बताओ? सुख जो होता है, वह भी शायद पलायन कर जाता है। ऐसा व्यक्ति कभी भी नहीं कह सकेगा कि मेरी स्त्री का मुख चन्द्रमा के समान है। जब आपके लिए इतना कहने में आए कि हाँ! मुझे मेरी स्त्री को देखने पर सुख मिलता है, तब आप कह सकोगे...हाँ! मेरी स्त्री का मुख चन्द्रमा के समान है। चन्द्रमा के समान जब स्त्री की उपमा दी जा रही है, तो सिर्फ उसमें उपमा की एक ही quality है कि जैसे चन्द्रमा देखने में अच्छा लगता है, निर्मल होता है, उसको देख कर मन प्रसन्न होता है, ऐसे ही जब स्त्री का मुख देखकर मन में प्रसन्नता आए तो कहना पड़ेगा यह स्त्री चन्द्रमा के समान है। न वह चन्द्रमा की तरह गोल है, न चन्द्रमा की तरह सफेद है, न रात्रिचर है और न ही वह कोई आकाश में आसमान में कोई टंगी हुई है चन्द्रमा की तरह। फिर कैसे चन्द्रमा की तरह? **चन्द्रमा में तो इतने सारे गुण होते हैं। उपमा हमेशा कोई भी एक गुण को लेकर दी जाती है, यह हमेशा ध्यान रखना।** जब इस तरह की उपमाएँ सामने आती हैं तो हमें कोई न कोई उपमेय पदार्थ की भी आवश्यकता पड़ती है, हम जिससे उसकी उपमा देते हैं। किसकी उपमा दी जाये? जब हम सुख की बात करते हैं, स्त्री के सौन्दर्य की बात करते हैं तो हम शशि मुख, चन्द्रमा के मुख की तरह, इस तरह की उपमा देकर साहित्य में उसका वर्णन किया जाता है। जब हम पुरुष के क्रोध की बात करते हैं, किसकी? पुरुष के क्रोध की बात करते हैं क्योंकि गुस्सा ज्यादा किसमें है? स्त्री में होता है कि पुरुष में होता है? बोलो-बोलो, गुस्सा ज्यादा किसमें होता है? स्त्री में होता है कि पुरुष में होता है? स्त्रियाँ कह रही हैं...पुरुष में होता है और पुरुष चुपचाप सुन रहे हैं क्योंकि उन्हें पता है, वे सही कह रही हैं। **गुस्सा ज्यादा किसमें होता है? पुरुष में होता है, यह बात यथार्थ है।** आपके अन्दर जितना गुस्सा हो सकता है, स्त्रियों में उतना गुस्सा नहीं होता, उतना क्रोध नहीं होता, उतनी कषाय नहीं होती। इसलिए जब भी कभी पुरुष कोई क्रोध करता है, तो उसे कहना पड़ता है कि यह कैसा दिखाई दे रहा है? यह शेर की तरह क्रोधित है। किसकी तरह? शेर की तरह क्रोधित है, उपमा देनी पड़ती है। शेर की तरह

कहने से वह शेर तो नहीं हो गया। लेकिन शेर की तरह जैसे सिंह को गुस्सा आता है, क्रोधित होता है, ऐसे ही पुरुष को भी जब क्रोध आता है, तो उसके लिए उपमा दी जाती है, तो वह सिंह नहीं हो गया। पूरा सिंह की तरह उसको नहीं समझा जायेगा, सिर्फ क्रोध की अपेक्षा से, गुस्से की अपेक्षा से उसको हम सिंह भी कह सकते हैं। जब आप अपने बच्चे को किसी भी तरीके से डाँटते हैं, उसे किसी भी तरीके से कुछ जब उसकी गलतियाँ देखते हैं तो आप उस बच्चे के लिए भी कुछ उपमा देकर कह देते हैं। क्या बोलते हो? यह तो गधा है, क्या बोलते हो? नहीं बोल देते? जब आपने उसको गधा बोल दिया तो क्या वह गधा हो गया? अगर आप किसी भी उपमा की तह में जाओगे तो वह उपमा उसमें घटित हो ही नहीं सकेगी। गधा कहने का मतलब क्या? जैसे गधे से बार-बार कुछ भी कहो वह सुनता नहीं है, उसकी दिशा जिधर रहती है, उधर ही वह चलता है चाहे उसे कितना ही पुच-पुच करो, चाहे किच-किच करो, वह सुनता नहीं है। ऐसे ही जब घर का बेटा कभी-कभी बिगड़ जाये और वह आपकी बात न सुने तो फिर आपको कहना पड़ता है...यह गधा है लेकिन गधा का मतलब, वह गधा तो नहीं हो गया?

सिद्धों के सुख की संयोजना उपमातीत

किसी एक गुण को देखकर भी हम किसी उपमान में उसकी संयोजना कर सकते हैं लेकिन सिद्धों के सुख की संयोजना हम किसमें करें? **दुनिया में ऐसा कौन सा पदार्थ दिखाई देता है, जिससे उनकी उपमा देकर, उनका example देकर, उन सिद्धों के बारे में कहा जाये? बताओ, कोई ऐसा पदार्थ है?** आपके लिए कोई उपमा मिल सकती है, बच्चों के लिए कोई उपमा मिल सकती है, आपकी पत्नी के लिए कोई उपमा मिल सकती है लेकिन सिद्धों के सुख के लिए क्या उपमा दी जाये? जब हम उनके सुख की बात करते हैं तो वह सुख क्या है? आचार्यों को कहना पड़ता है...वह सुख उपमा से रहित है। उपमा से रहित होने का मतलब यह हो गया कि वह सुख में कोई उपमा नहीं है। या कह लें कि बिल्कुल फीका सुख है, उसकी उपमा जगत के किसी पदार्थ जैसी है ही नहीं, कोई उपमा नहीं है उसकी। एक तो यह भी अर्थ निकलता है और एक दूसरा अर्थ यह भी निकलता है कि उसके जैसा जगत में कोई दूसरा पदार्थ नहीं है इसलिए उसकी कोई उपमा नहीं है। जब हम यह देखते हैं कि जिसकी हमें उपमा देनी है, वैसा कोई पदार्थ अपने किसी भी गुण के साथ में वहाँ दिखाई नहीं दे रहा है, तो वह सुख कहलाएग निरूपम सुख।

सिद्धों का सुख : निरूपम सुख

आपके पास में कोई भी ऐसी चीजें नहीं होतीं, जिन्हें देखकर कोई ऐसी उपमा दी जा सके कि यह उपमा किसी के पास में न हो। **हम संसार के किसी न किसी प्राकृतिक पदार्थ से किसी भी चीज की तुलना कर सकते हैं लेकिन सिद्धों के सुख की तुलना संसार के किसी भी पदार्थ से नहीं की जा सकती।** इसलिए उनके सुख को अनुपम कहा जाता है, निरूपम कहा जाता है, उपमातीत कहा जाता है। उनका सुख किसी भी तरह के किसी भी व्यक्ति से या पदार्थ से किसी भी रूप में compare नहीं किया जा सकता। अब जब उनका सुख निरूपम हो गया तो वह निरूपम होने के साथ-साथ अपने आप में किसी की उपमा नहीं रखता तो फिर यही कहना पड़ेगा कि सिद्धों का सुख सिद्धों जैसा ही है। क्या कहना पड़ेगा? सिद्धों का सुख, सिद्धों जैसा ही है।

इन्द्रियों के कार्य

अब आप इसकी, इस तरह से व्याख्या समझ सकते हो जैसे कोई गूंगा व्यक्ति हो, गूंगा समझते हो? जो बोल नहीं पाता और आपने उसको कोई बहुमूल्य अच्छी वस्तु खिला दी, मिठाई खिला दी, कोई उसके मुँह में अच्छा मीठा पदार्थ दे दिया और उससे पूछा...बताओ भाई! इसका स्वाद कैसा है? उसको स्वाद आया कि नहीं आया? स्वाद तो आया। **जिह्वा के दो काम हैं- एक चखना और एक बकना।** जिह्वा इन्द्रिय के, रसना इन्द्रिय के, कितने काम हैं? हर इन्द्रिय का एक ही एक काम है। स्पर्शन इन्द्रिय के कितने काम? सिर्फ एक काम। पण्डित जी सुन रहे हो कि नहीं? आपने खूब इन्द्रियाँ पढ़ाई होंगी, बच्चों को बालबोध में पढ़ाया होगा। लेकिन इन्द्रियों की विशेषताएँ, आप सुनिए, रसना इन्द्रिय की एक ही विशेषता है सिर्फ, वह रसना लेती है, रस का स्वाद लेती है। ऐसा है क्या? **हर इन्द्रिय की एक-एक विशेषता है।** कर्ण इन्द्रिय से केवल सुना जायेगा, चक्षु इन्द्रिय से केवल देखा जायेगा, घ्राण इन्द्रिय से केवल सूँघा जायेगा, स्पर्शन इन्द्रिय से केवल स्पर्श किया जायेगा और **रसना इन्द्रिय से दो काम किए जाते हैं- एक चखना और एक बकना...**

Taste और Talk. ये दो तरह के जो काम हैं, यह मात्र अपने शरीर में एक ही इन्द्रिय है, जो करती है। अब किसी भी व्यक्ति के लिए, अगर मान लो बोलने की क्षमता कहीं बिगड़ गई हो, उसके पास में कोई talking करने के लिए कुछ न हो, कण्ठ में कोई बीमारी हो गई हो, अवरुद्ध हो गया हो किसी भी तरीके से उसके लिए तो वह क्या करेगा? बोल तो नहीं पाएगा लेकिन अनुभव तो कर पाएगा। जिह्वा का उपयोग कर रहा है, जिह्वा चल भी रही है लेकिन उससे शब्द नहीं निकल पा रहा है। खाने-पीने की चीजें खिलाई जायेंगी, उनका रस चख रही है लेकिन बोल नहीं पा रही है, तो उसी व्यक्ति को हम कहते हैं...भाई! इसकी बोलने की शक्ति चली गई है। इसको हम गूंगा कहते हैं और अगर उस ऐसे व्यक्ति को कुछ भी खिला दिया जाये- अच्छा मीठा और फिर उससे पूछा जाये...बताओ यह कितना tasty है? इसका क्या स्वाद है? क्या बतायेगा वह? इसको ही मुहावरे के रूप में कहा जाता है- गूंगे का स्वाद। जब कभी आपके लिए, कोई भी किसी भी तरह से सुख मिलता है, आनन्द मिलता है तो आपको अपने अन्दर जो अनुभूति होती है, वह आप दूसरे को कह नहीं सकोगे, बता नहीं सकोगे, यह स्वाद कहलाता है। किसका? गूंगे का स्वाद।

सिद्ध भगवन्तों के सच्चे सुख की अनुभूति करने का उपाय

आचार्य कुन्द-कुन्द देव कहते हैं...आप अगर सिद्धों के सुख का अनुभव करना चाहते हैं तो आप पहले अपनी आत्मा का अनुभव करें। किसका? अपनी आत्मा का। **आप अगर अपनी आत्मा के अनुभव में अपने चित्त को लगायेंगे, अपनी आत्मा की ओर अपने उपयोग को ले जायेंगे,** उससे जो आपको किञ्चित, जो भी थोड़ी सी भी सुख की अनुभूति होगी, वही सुख की अनुभूति, एक थोड़ा सा आपके लिए अंश हो सकती है...**उन सिद्ध भगवान के सुख को नापने का, अनुभव करने का और कोई दूसरा तरीका है ही नहीं।**

आत्मोपादान-सिद्धं

अगर आपको सिद्ध भगवान के सुख का अनुभव करना है, तो आचार्य कहते हैं...**आत्मा का अनुभव करो।** क्योंकि सिद्ध भगवान किसका अनुभव कर रहे हैं? आत्मा का ही कर रहे हैं। सिद्धों को सुख कहाँ से मिला?

‘आत्मोपादान-सिद्ध’ कहाँ से मिला? आत्मा से। उनका सुख कहाँ से उत्पन्न हुआ? आत्मा से। आप भी अपनी दृष्टि को आत्मा की ओर ले जाओ, आप भी अपने मन को बाहरी पदार्थों से हटा करके आत्मा में लगाओ, आपको भी सिद्ध सुख की अगर किञ्चित भी अनुभूति होगी तो वह आत्मा के अनुभव से ही होगी।

ज्ञाता-दृष्टा भाव

ज्ञाता-दृष्टा यह किसका स्वभाव है? आत्मा का। इस ज्ञाता-दृष्टा भाव में भी आपको सुख की अनुभूति होगी, **शान्ति की अनुभूति होगी और वह सुख शान्ति की अनुभूति ही आपके अन्दर एक अनुमान लगाने का कारण बनेगी।** हाँ! जब हम थोड़ी देर के लिए इतना शान्त बैठते हैं, थोड़ी देर के लिए हम जब अपने ज्ञाता-दृष्टा भाव में, चिन्तन के रूप में भी आने की कोशिश करते हैं, तब हमें इतना अच्छा लगता है, तो सिद्धों को कितना अच्छा लगता होगा? यह सिर्फ एक गणित लगाया जाता है।

सुख का गणित

इसीलिए कई जगह पर आचार्यों ने लिखा है कि जो सुख इन्द्रों को, चक्रवर्तियों को काम भोगों से उत्पन्न होता है, उस सुख का अनन्तवाँ भाग भी अगर देखा जाये, उस सुख का अनन्तवाँ भाग भी वह अपने अनुभव में लाकर बोल नहीं सकते और वह सुख, उस सुख का भी अनन्तवाँ भाग नहीं है, जो सुख वीतरागियों को होता है। क्या कहा गया? किसको होता है? **आपको लगता है वीतरागियों को सुख होता है? वीतराग दशा में जो सुख की उत्पत्ति है, वीतराग दशा में जो सुख की अवभासना है...वह सुख की अवभासना कभी-भी श्रावक को गृहस्थ अवस्था में, उसके अनन्तवें भाग के बराबर भी नहीं हो सकती।** जो सुख वीतरागी को मिलता है, उससे भी अनन्त गुणा सुख सिद्ध भगवन्तों को मिलता है। अर्थात् सिद्ध भगवन्तों को जिस सुख की अनुभूति होती है, उसका अनन्तवाँ भाग अगर हम अनुभव में ला पाते हैं तो वीतराग दशा में, मुनि महाराज के लिए निर्विकल्प ज्ञान की दशा में, मुनि महाराज के लिए निर्विकल्प ध्यान की अवस्था में उस सुख की अनुभूति होती है। **जो सुख मुनि महाराज अनुभव कर लेते हैं, उसका अनन्तवाँ भाग भी वह सुख, कभी भी न चक्रवर्तियों को, न इन्द्रों को अनुभव करने में आता है।** चाहे उनके पास में कितनी भी इन्द्रियों के वैसे ही सुख क्यों न हो? वैसे देखा जाये तो कभी आत्मिक सुख की तुलना इन्द्रिय सुख से की ही नहीं जानी चाहिए क्योंकि दोनों की quality अलग-अलग है। होती भी नहीं है।

सिद्ध सुख अतुलनीय सुख

सिद्धों के सुख की तुलना वीतरागियों से कदाचित की जा सकती है लेकिन वीतरागियों के सुख की तुलना कभी भी भोगों के सुख से नहीं की जा सकती। कहीं-कहीं लिखा जरूर है कि वीतरागियों को जो सुख मिलता है, वह इन्द्र और चक्रवर्तियों के सुख से भी अनन्त गुणा होता है। उस सुख की जब तुलना अनन्त गुणा रूप में की गई है तो वह सुख की quality के अनुसार नहीं की गई, वह सुख की amount के अनुसार समझना चाहिए, quantity के अनुसार समझना चाहिए क्योंकि दोनों ही सुख अपने आप में विपरीत हैं। इन्द्रिय के भोगों में मिलने वाला सुख, उस वीतरागी के आत्मिक सुख से कहीं से कहीं तक compare नहीं किया जा सकता क्योंकि दोनों सुखों का स्वभाव बिल्कुल अलग-अलग है।

- इन्द्रिय सुखों का स्वभाव पराश्रित है और वीतरागता के सुख का स्वभाव स्वाश्रित है।
- इन्द्रिय सुखों का स्वभाव क्षणिक है, वीतरागता के सुख का स्वभाव शाश्वत है।

आप जिस भी भोग इन्द्रिय के माध्यम से भोगों के सुख का अनुभव करेंगे, वह सब आपके लिए थोड़ी देर स्मृति में रहेगा, थोड़ी देर आपके लिए अनुभूति में रहेगा, उसके बाद में वह चला जायेगा। लेकिन एक बार अगर आपने कभी आत्मा का आनन्द ले लिया, एक बार कभी आपने आत्मा के सुख के लिए, शान्ति की खोज के लिए, अगर आपने कभी भीतर से अपनी कोई भी शान्ति की अनुभूति कर ली तो वह आपको जीवनपर्यन्त तक शाश्वत बनी रह सकती है।

भीतर से तृप्त करने वाले सुख की अनुभूति

वह कैसे होगी? उसी के लिए अर्ह ध्यान होता है। **अर्ह ध्यान के माध्यम से वह अनुभूति करने के लिए ही आपको प्रेरित किया जाता है।** शाश्वत सुख की अनुभूति करने के लिए आपको किञ्चित थोड़ा सा निर्विकल्प दशा में आने की भावना करनी होगी। **वह निर्विकल्प दशा, थोड़ी सी निर्विचार दशा, वह दशा जब उत्पन्न होती है, तब आपको जो भीतर से आत्मिक शान्ति मिलती है, वह शान्ति दुनिया में किसी भी तरह के इन्द्रियों के सुख से नहीं मिलती, जो सिर्फ आँख बन्द करने से और इन्द्रियों के विषयों से रहित होने से मिलती है।** कभी ऐसी शान्ति का अनुभव किया है? ऐसे सुख का अनुभव किया है? नहीं किया? यह सुख कहाँ अनुभव में आएगा? यह उन्हीं को अनुभव में आएगा, जो कभी सामायिक करते हैं, कभी ध्यान करते हैं, कभी आँख बन्द करके बिल्कुल शान्ति से बैठे रहते हैं, बैठ जाते हैं तो बैठे ही रह जाते हैं। यह जब तक आपके अन्दर प्रवृत्ति नहीं आएगी, तब तक आपको इस सुख की अवभासना का किञ्चित मात्र भी एहसास नहीं होगा और यह सुख ही वास्तव में आपको भीतर से तृप्त करने वाला होता है, शान्ति देने वाला होता है। इस सुख की खोज में जो लग जाता है, उसी का जीवन आध्यात्मिक बन जाता है। यह सुख इन्द्रिय सुखों से बिल्कुल विपरीत है।

निराकुल सुख ही आत्म सुख

*इन्द्रिय सुखों में आपको आकुलित होना पड़ेगा लेकिन आत्मिक सुख के लिए आपको निराकुलित होना पड़ेगा।

आकुलता समझते हो? व्याकुलता-आकुलता। कोई भी तरह का इन्द्रिय सुख होगा, उसके लिए आपको व्याकुल होना पड़ेगा। सुख को पाने से पहले भी व्याकुल होना पड़ेगा, सुख पाते हुए भी आपके सामने जब वस्तु होगी तब भी आपको व्याकुल रहना पड़ेगा। लेकिन आत्मिक सुख हमेशा निराकुलता के साथ चलता है। **‘निराकुलत्वैक सौख्यं हि आत्म सुखं’** निराकुलता के सुख का नाम ही आत्म-सुख कहलाता है, इसलिए **हमेशा जब आप निराकुल हो, जब आप बिल्कुल शान्त हो, उस समय पर आप अपने अन्तर्मन में जो अनुभूति करेंगे, वह आपका अपना आत्मिक सुख होगा।** उस सुख की तुलना दुनिया के किसी इन्द्रिय सुख से, भोग वैभव से नहीं की जा सकती है। वीतरागता का सुख इसी तरह का निराकुल सुख होता है और कोई सुख नहीं है। इन्द्रियों का सुख नहीं है वीतरागियों के पास में, लेकिन वीतरागियों के पास में

जो सुख है, वह कौन सा है? वह निराकुलता का सुख है, आत्मिक सुख है और उस आत्मिक सुख की वह जितनी ज्यादा अपने अन्दर इच्छा, लालसा बढ़ाते हैं, उतने ही सिद्धों के निकट होते चले जाते हैं।

सिद्धों का सुख निरुपम कैसे?

निरुपम इसीलिए कहा गया है...उसकी उपमा और किसी से नहीं दी जा सकती है। अगर सिद्धों के सुख की उपमा देने की बात आएगी तो वीतरागियों से उसकी तुलना कर सकते हैं। लेकिन दुनिया के अन्य किसी पदार्थ से उसकी तुलना नहीं कर सकते। जो मुनि महाराज ध्यान में बैठकर एकान्त स्थान में अपने आत्म-स्वभाव में निरत होते हुए, अपनी आत्मा के स्वभाव में लीन रहते हुए, उस आत्मिक सुख का थोड़ा सा भी अगर पान अपनी अप्रमत्त दशा में कर पाते हैं तो वही उनका आत्मिक सुख उन सिद्धों से तुलना करने में आएगा। बाकी **सिद्धों से तुलना करने के लिए दुनिया में कोई पदार्थ नहीं है।** आपके सुखों से तुलना नहीं की जा सकती। आपका सुख रसना इन्द्रिय का सुख है, भोग इन्द्रियों का सुख है। इस सुख से कभी भी उस आत्मिक सुख की बात, उसकी तुलना नहीं की जा सकती क्योंकि सारा सुख आपका शरीर आश्रित होता है और शरीर और आत्मा, दोनों अपने आप में अलग-अलग वस्तुएँ हैं। **जो सुख शरीर आश्रित है, वह आत्माश्रित नहीं हो सकता और जो आत्माश्रित सुख है, वह शरीर आश्रित नहीं हो सकता।** इसलिए जो सुख वीतरागता में आता है, वह सुख राग की quality के साथ में आ ही नहीं सकता है।

सिद्ध सुख- अमित (असीम) सुख

ऐसे सुख की उपमा जब नहीं दी जा सकती, तभी आचार्य कहते हैं...यह सुख अपने आप में अनुपम है, निरुपम है और वह निरुपम होने के साथ-साथ कैसा है? अमित है। अमित का मतलब? जिसकी कोई माप-तौल नहीं है। मित नहीं है, परिमित नहीं है, सीमित नहीं है, अमित है क्योंकि सीमित होगा तो एक बार में वह भोग लिया जायेगा, एक बार में उसको अनुभव कर लिया जायेगा, फिर बाद में कुछ बचेगा नहीं। **जो सुख होता है, वह सीमित नहीं होता है। सुख जो होता है, वास्तव में सुख उसे ही कहते हैं, जो असीम हो।** दुःख सीमित हो सकता है लेकिन सुख हमेशा असीमित ही होता है। संसार का कोई भी दुःख होगा, वह दुःख सीमित होगा। जितने समय के लिए आपको मिल रहा है, उतने ही समय के लिए मिलेगा लेकिन सुख, अगर आपको एक बार आत्म सुख की प्राप्ति हो गई तो वह हमेशा आपके पास रहेगा। वह असीमित रूप में रहेगा। बताओ दुःख की सीमा होती है कि सुख की सीमा होती है? सीमा किसकी? आप समझते हो कि दुःख हमारे ऊपर ज्यादा आते हैं। **दुःख असीम लगता है लेकिन दुःख कभी असीम नहीं होता है। सुख असीम हो सकता है, दुःख कभी असीम नहीं हो सकता है।** दुःख छूटता है, कितना भी बड़ा कष्ट हो, वह आपसे छूटेगा। अगर वह कष्ट, वह आपकी मृत्यु का भी कारण बन रहा है और मृत्यु भी अगर हो गई है, तो भी वह दुःख उस समय पर छूट गया। भले ही वह अगले जन्म में किसी और रूप में मिलेगा लेकिन उससे पहले उस दुःख की जो सीमा थी, वह वहीं पर छूट गई और उस दुःख की सीमा कहाँ तक है? बस! जहाँ तक आपके शरीर में प्राण हैं, बस वहीं तक उस दुःख की संवेदना आपको होगी और प्राण निकले... आपका दुःख छूट गया। **दुःख की सीमा होती है, सुख की कोई सीमा नहीं है। जो सुख है, वास्तव में जिसे इतने दिनों से हम सुख कहते आ रहे हैं, उस सुख को अगर समझोगे तो उस सुख की कोई सीमा**

नहीं। वह अमित होता है, अपरिमित होता है। सुख अगर एक बार प्राप्त हो जाता है, तो वह फिर कभी भी छूटता नहीं है और कुछ समय के लिए अगर छूट भी जाये तो वह उस सुख की प्राप्ति के लिए फिर से लालायित हो जाता है।

वीतरागी और आत्मध्यानी ही सर्वार्थसिद्धि के देव

इसलिए यह नियम बनाए जाते हैं कि जो एक बार सर्वार्थसिद्धि में पहुँच जाता है, सर्वार्थसिद्धि जानते हो? स्वर्गों का सबसे उत्कृष्ट विमान, सबसे बड़ा वैमानिक देवों का स्थान और उन विमानों में रहने वाले जो वैमानिक देव होते हैं, उनका जो सुख है, वह सुख अगर देखा जाये तो उन्हीं को मिलेगा, जिनका एक भव ही शेष रह गया हो। **सबसे उत्कृष्ट अगर संसार का भी कोई सुख देखा जायेगा तो देव पर्याय का सुख है, वैमानिक देवों का सुख है और वैमानिक देवों में भी सर्वार्थसिद्धि के देवों का सुख है।** वह सर्वार्थसिद्धि के देवों का सुख एक बार अगर जिसे प्राप्त हो जाता है, तो फिर वह अगले जन्म में नियम से मोक्ष-सुख को प्राप्त करता है। यह नियम इसीलिए बन जाता है क्योंकि वह सुख एक बार जिसने प्राप्त कर लिया है, वह नियम से आत्म-ध्यानी रहा होगा, उस सुख को प्राप्त करने से पहले। **वीतरागता की उपासना किए बिना, वीतरागता का आनन्द लिए बिना, वीतरागता का सुख प्राप्त किए बिना, कभी भी सर्वार्थसिद्धि के वैमानिक देवों के सुख की भी प्राप्ति नहीं हो सकती है।** यद्यपि वह सुख आत्मिक सुख नहीं है, मानसिक सुख है। **वैमानिक देवों का, अहिमिन्द्रों का जो सुख है, वह कैसा है?** मानसिक सुख है। लेकिन वह मानसिक सुख भी उत्कृष्ट रूप से तब प्राप्त होता है, जब पहले हमने उस आत्मिक सुख को उत्कृष्ट रूप से पाने के लिए अप्रमत्त दशा का अनुभव किया हो। बिना मुनि महाराज बने, बिना आत्म-ध्यान में पारंगत बने कभी भी सर्वार्थसिद्धि के देवों में उत्पत्ति नहीं हो सकती है, यह नियम है। कपड़े वाले कभी भी सर्वार्थसिद्धि के देव नहीं बनते हैं, पक्की बात है यह। एक लंगोटी भी अगर शरीर पर लगी रहेगी तो भी सर्वार्थसिद्धि के देवों में उत्पत्ति नहीं हो सकेगी। सर्वार्थसिद्धि के सुख अगर एक बार प्राप्त हो गए तो ही यह नियमित रूप से हो जाता है, निश्चित रूप से यह सिद्ध हो जाता है, अगले भव में यह जीव जरूर आत्मिक सुख से सम्पन्न होगा। क्योंकि उससे पहले भी वह आत्मिक सुख की अभिलाषा कर चुका है, आत्मिक सुख को भोग चुका है। **अप्रमत्त दशा को प्राप्त करके वह निर्विकल्प ध्यान में रहकर उस आत्मिक सुख का अनुभव कर चुका है। यह नियम है, सर्वार्थसिद्धि में जो उत्पन्न होगा, उससे पहले भी वह मुनि बन चुका होगा और उसके बाद में उसका अगला भव जहाँ पर भी होगा, उसके बाद में भी वह नियम से मुनि बनेगा, नियम से केवल ज्ञान प्राप्त करेगा और नियम से मोक्ष सुख की उसे प्राप्ति होगी, वह सिद्ध अवस्था को प्राप्त होगा। यह नियम है।**

सर्वार्थसिद्धि के देवों का सुख

अब बीच में इतने दिनों के लिए वह सर्वार्थसिद्धि का सुख क्यों है? एक बार जिसने आनन्द ले लिया है, तो वह वहाँ पर भी इन्द्रिय सुखों में रमण नहीं करता। जैसे अन्य नीचे के देव होते हैं... **सौधर्म इन्द्र है, ईशान इन्द्र है, ये तमाम अपनी देवियों के साथ में इन्द्रिय सुखों में रमे रहते हैं, वैसे सर्वार्थसिद्धि के देव नहीं रमते हैं क्योंकि वहाँ पर देवियाँ नहीं होती हैं।** देवियाँ नहीं होती हैं तो इसका मतलब क्या है? वहाँ पर ऐसा

भाव नहीं होता कि भाई! जैसे तुम्हारे यहाँ होता है कि भाई! इसकी शादी नहीं हुई। वहाँ पर भाव और परिवेश दोनों एकमेक होकर चलते हैं। देवियाँ नहीं हैं, इसका मतलब यह है कि वहाँ पर देवियों की भावना ही नहीं है, देवियों का विचार ही नहीं है, देवियों की इच्छा ही नहीं है। उन देवों के अन्दर देवी का कभी भी नाम स्मरण भी नहीं होगा। देवी का कभी भी उन्हें अपने पूरे जीवन काल में किसी भी स्त्री का, देवी का उन्हें चेहरा तक याद नहीं आएगा। सुन रहे हो, किसकी बात कर रहा हूँ? सर्वार्थसिद्धि के देवों की बात कर रहा हूँ। जिनकी उत्कृष्ट आयु 33 सागर होती है और वहाँ पर किसी भी तरीके के इन्द्रिय सुख में वह लालायित नहीं रहते हैं। कोई भी तरीके का पर द्रव्य से मिलने वाला सुख, उनके लिए कोई भी लालसा उत्पन्न नहीं करता और वह केवल सिर्फ इसी तरह के ज्ञान-ध्यान की चर्चा में ही उनका जीवन निकलता है। क्षणिक उनके लिए कभी कोई भुख इत्यादि की बाधा होती है, तो वह अमृत से उनकी तृप्ति हो जाती है और कोई उनके लिए दुःख का वहाँ नाम निशान नहीं है। किसी भी तरीके का कोई दुःख का वहाँ पर सद्भाव नहीं है।

देवों के सुख आत्मिक सुख नहीं मानसिक सुख

आप सोचो! देवों में भी इस तरीके के सुख होते हैं और फिर भी वह देवों के ही सुख कहलाएँगे, मानसिक सुख कहलाएँगे। **वे आत्मिक सुख नहीं हैं क्योंकि वहाँ पर वे आत्मा का ध्यान नहीं कर पाते हैं। आत्मा की चर्चा कर लेते हैं, चिन्तन कर लेते हैं लेकिन वह आत्मा का ध्यान नहीं कर पाते।** आचार्य कहते हैं... इसी लालसा के कारण से उन्हें ऐसी पर्याय मिली कि जिस पर्याय में उन्हें किसी भी तरह से जो पहले उन्होंने आत्मिक सुख प्राप्त किया था, उसमें बाधा न आए और अगले जन्म में फिर वे उसी आत्मिक सुख की प्राप्ति करने लग जायें। इसी कारण से जब ऐसा व्यक्ति कोई बड़ा राजा बन जाता है, सम्राट बन जाता है, तो फिर उसके लिए सम्राटपने का सुख तो मिल जाता है लेकिन बाद में उसको तुरन्त स्मरण हो आता है और वह उस सुख को भी क्षणिक समझकर छोड़ने में देर नहीं लगाता है। क्योंकि उसे एक बार आदत पड़ गई है। किसकी? अपने लिए जीने की।

अपने लिए जीने की आदत

किसकी? बोलो! अपने लिए जीने की। मुनि महाराज बन गए, किसके लिए जी रहे हैं? बोलो तुम्हारे लिए? सतना वासियों के लिए? **मुनि महाराज किसके लिए जी रहे हैं?** अपने लिए जी रहे हैं। मुनि महाराज बनने के बाद में जब वह इस तरह के उत्कृष्ट देवपने आदि को प्राप्त हो जाते हैं, जहाँ पर उनके पास में कुछ नहीं होता है...कोई व्यापार, चिन्ता, भय कुछ नहीं होता है, उस समय पर भी वह किसके लिए जी रहे हैं? ऐसे सर्वार्थसिद्धि के देव किसके लिए जी रहे हैं? अपने लिए जी रहे हैं। फिर बाद में ऐसा जीव अगर मान लो कभी राजा बन जाता है, राजपुत्र बन जाता है, कोई राज-भार का कार्यभार सम्भालने लग जाता है, तो थोड़ी देर के लिए करने तो लग जाता है लेकिन बहुत देर तक उसमें लिप्त नहीं रहता है क्योंकि उसके ऊपर संस्कार पड़े हैं, किसके? अपने लिए जीने के। **एक हाइकू बना हुआ है- इसी भाव को लेकर...**

‘क्षणभंगुर,
जीवन जी रहा मैं,
अपने लिए।

समझ आया? क्षणभंगुर जीवन, जीवन कैसा है? जीवन तो क्षणभंगुर ही होता है, कोई पता नहीं है, मृत्यु का कोई ठिकाना नहीं है। कब कौन सी घटना घटित हो जाये? कब क्या हो जाये? कोई पता नहीं है और **हर व्यक्ति के लिए जीवन क्षणभंगुर ही होता है**। मुनि महाराज भी जीवन को हमेशा क्षणभंगुर देखते हुए जीते हैं लेकिन उस क्षणभंगुर जीवन में भी ऐसे क्षण ढूँढ़ते हैं, जिन क्षणों में वे अपने लिए जी ले। क्षणभंगुर जीवन में भी ऐसे क्षण ढूँढो, जो अपने लिए जीने को मिल जाये।

आत्मध्यान की भावना के साथ जीना ही अपने लिए जीना

अपने लिए जीने को नहीं मिलेगा तो फिर हम जी तो लेंगे लेकिन अपने लिए नहीं जिये। किसके लिए जिये? किसके लिए जी पाते हैं हम? जब हमने अपने मन में यह संकल्प कर ही लिया कि तुम हमारे लिए, हम तुम्हारे लिए तो फिर अब तुम किसके लिए जिओगे। बताओ? शादी होने से पहले संकल्प हो जाता है? पहले का मतलब फेरा डालते समय पर ही संकल्प हो जाता है न, अब किसके लिए जीना है? तुम हमारे लिए जीना, हम तुम्हारे लिए जिएँगे। इसके अलावा कोई दूसरी बात मत करना, नहीं तो बात बिगड़ जाएगी। बस तुम हमारे लिए, हम तुम्हारे लिए, जब यह जीवन का संकल्प बन गया है, **सम्बन्धों का जब यह संकल्प बन गया है, तो अब आप अपने लिए कैसे जी सकोगे?** जैसे ही आप अपने लिए जीने के लिए बैठोगे, दूसरा आपके अन्दर जरूर बाधा उत्पन्न करेगा क्योंकि उसे डर लगता है कि मेरा यह सम्बन्ध का जो बन्ध है, यह टूट न जाये। जो हमने संकल्प लिया था, यह टूट न जाये। कोई भी, आप देख लेना कभी भी। **अपने लिए जीने का मतलब- आप अगर आत्म-ध्यान करने की भावना करने के लिए बैठ जाते हो, आप आत्म-शान्ति की भावना करने के लिए आप निश्चित होकर कहीं बैठ जाते हो तो आपको चिन्ता उत्पन्न करा दी जायेगी।** श्रीमान् जी! ज्यादा ध्यान-ध्यान मत किया कीजिये, ज्यादा आत्मा-आत्मा मत रटा कीजिये, जहाँ हो वहीं रहिये, थोड़ा घर-गृहस्थी देखिए। बच्चे बड़े-बड़े हो रहे हैं, इनके बारे में सोचिये। ज्यादा यह सब करने लगोगे तो व्यापार घट जायेगा। वैसे ही घाटे का समय चल रहा है। आजकल लोगों के व्यापार वैसे ही नहीं चल रहे हैं और यह आत्म-चिन्तन, आत्म-ध्यान, इसमें बैठ जाओगे तो जो भी है थोड़ा बहुत, वह भी चला जायेगा। यह कहने के लिए किसी को सिखाना नहीं पड़ेगा, अपने आप कह बैठेगा जो भी आपका सम्बन्धी होगा, जिसके लिए आप जी रहे होंगे, वह आपको तुरन्त कहने लग जायेगा। यह गलती जब एक बार हो जाती है कि हम तुम्हारे लिए, तुम हमारे लिए तो फिर आपको अपने जीवन में ऐसा क्षण निकालना मुश्किल हो जाता है कि अब हम कब अपने लिए जियें?

मुनि महाराज अपने लिये जीते हैं- क्षणभंगुर जीवन

इसलिए जीवन तो क्षणभंगुर है, चाहे श्रावक का हो, चाहे मुनि महाराज का हो लेकिन मुनि महाराज को समय मिल जाता है। वह जी रहे हैं, किसके लिए? अपने लिए। यह प्रवचन भी कर रहे हैं तो यह मत समझना किसके लिए? समाज के लिए नहीं हो रहे हैं, यह प्रवचन भी अपने लिए हो रहे हैं। इसलिए जब भी प्रवचन होंगे तो उन प्रवचनों में कहीं न कहीं वही बात आएगी, जिसको हम चाहते हैं, जो हमारी इच्छा में होता है। मोक्ष मार्ग की बात होगी, सिद्धों की बात होगी, पंच परमेष्ठी की बात होगी, जिनवाणी की बात होगी, आचार्यों के द्वारा लिखे हुए शास्त्रों की बात होगी तो ये सब जो बातें हैं, वह हम किसके लिए? **तुम**

लोग तो एक सामान्य से निमित्त हो क्योंकि मुझे इतनी देर उन बातों को remind करने के लिए ध्यान में बैठना पड़ेगा तो उतने ध्यान की अपेक्षा से इतनी देर हम आपके सामने बोलते जायेंगे तो हमारा वह चिन्तन चलता रहेगा तो यह भी हमारा एक धर्म-ध्यान ही चलता रहता है, यह भी धर्म-ध्यान चल रहा है। किसके लिए? धर्म-ध्यान होता है अपने लिए, आर्त-ध्यान होता है दूसरों के लिए। मुनि महाराज कभी आर्त-ध्यान नहीं करते। क्या करते हैं? धर्म-ध्यान। धर्म-ध्यान है तो अपने लिए चल रहा है।

समवशरण में बैठकर उपदेश सुनने का आनन्द

तुम्हारे लिए क्या है? तुम भी ध्यान करना सीखो, तुम भी चिन्तन करना सीखो, तुम भी सुनना सीखो, तुम भी थोड़ा-सा समवशरण में बैठना सीखो, तुम्हारे अन्दर भी थोड़ा सी भावना आये कि अगर हम भगवान के दर्शन करने आए हैं, समवशरण में आये हैं, उपदेश सुनने आये हैं तो हम भी ऐसी जगह बैठे, जहाँ बैठने पर उपदेश ज्यादा अच्छे ढंग से सुनाई पड़ते हो। कहाँ बैठ कर अच्छे ढंग से सुनाई पड़ते हैं? वहाँ बैठ कर नहीं सुनाई पड़ते हैं, यहाँ बैठ कर अच्छे ढंग से सुनाई पड़ते हैं। एक दिन इस कुर्सी का भी तो आनन्द लो, तब समझ में आयेगा कि यहाँ बैठने में और वहाँ बैठने में कितना अन्तर है, कितना अलग है। बताओ क्यों? राजा श्रेणिक रोजाना वहाँ बैठ कर सुनते थे, आज यहाँ बैठ कर सुन रहे हो, कुछ अलग लग रहा है कि नहीं लग रहा है? ऐसी अनुभूतियाँ अपने आप में अलग-अलग स्थितियों में अलग-अलग तरीके से होती हैं और श्रावक के लिए यही वह उपाय होते हैं जब वह अपनी अनुभूतियाँ कुछ अलग बनाने के लिए करता है।

श्रावक के लिए सुख

आप होटल में जाते हो भोजन करने के लिए या किसी भी तरीके के कभी भी कुछ खाने-पीने के लिए तो होटल में गये। आपको किससे मतलब रहता है? चलो मैं आपसे पूछता हूँ, होटल के भोजन से? बोलो! आप किसी भी होटल में गए, आपको पता है यहाँ होटल में बहुत अच्छी चाय मिलती है। आप उस होटल में गये और आपने चाय ले ली और चाय लेकर आप होटल के बाहर आकर खड़े होकर पीने लग गये। यह होटल की चाय का मजा है? होटल का मजा कब आएगा? कब आता है? बाहर, door पर खड़े होकर चाय पीने पर? वह चाय का मजा है? बोलो किसका है? जो होटल के अन्दर special seat होती है, जो होटल के अन्दर special जगह होती है, उस जगह पर बैठकर जो चाय पीने का मजा है, पैसा उसी का लगता है। चाय का पैसा कुछ नहीं होता है और उसके लिए तो 5-star होटल में चले जाओगे, वही दस हजार में, वही 2 हजार में, 5 हजार में चाय पियोगे, जो घर में दो रुपए की चाय है। घर में तो चलो फिर भी थोड़ी सी मीठी मिल जायेगी, वहाँ तो बिल्कुल फीकी मिलेगी। फिर भी कहोगे five star होटल की चाय पी कर आया हूँ और taste क्या है? Taste नाम की उसमें कोई चीज नहीं होती लेकिन फिर भी कहोगे... बहुत tasty थी क्योंकि पाँच हजार लगे हैं। अभी किसी से कहेंगे तो कहेगा बुद्धू थे क्या? यह हाल हैं दुनिया के, यह हाल हैं आपके भोगों की लालसाओं के। हम अपने standard को बनाने के लिये होटल में बैठकर, five star होटल में जाने के लिये हम पाँच हजार रुपए की चाय पी सकते हैं लेकिन हमारे मन में इस तरह की चाय पीने के उपरान्त अगर भाव आता है, हमें क्या सुख मिला? भीतर से तो आदमी कहता है... भैया! चाय में तो कुछ स्वाद ही नहीं था। न रंग था, न taste था और फिर भी हमें कहना पड़ता है- भाई! हम five star

होटल की चाय पी कर आए। ऐसी मजबूरियों में जीने वालों, तुम्हें कैसे समझाऊँ? कि **राजा श्रेणिक बनकर भगवान का उपदेश सुनने में जो आनन्द आता है, वह सामान्य श्रावक बनकर सुनने में नहीं आता।** लेकिन तुम्हारी समझ में नहीं आ सकता क्योंकि तुम्हारे दिमाग उसी तरीके के चढ़े हुए हैं। यह समझने की कोशिश करो कि आदमी किसके लिए जीता है? अगर आपको चाय का आनन्द आया है, तो आपके दिमाग में वह एक चाय जिन्दगी भर रहेगी। मैं five star होटल में गया था, मैंने चाय पी थी और जिन्दगी भर घर में चाय पीते रहे, वह पिलाती रही, एक भी बार तुमने उसका नाम नहीं लिया कि उसने मुझे एक दिन अच्छी चाय पिलाई। ऐसा सच में होता है कि नहीं होता है? यह बात सच है कि नहीं है? सच है? फिर आपके दिमाग में आना चाहिए, चीज की जो कीमत होती है, वह किस चीज की कीमत होती है? कीमत चाय की है या उस जगह की है, जहाँ वह चाय पी जा रही है? कीमत उस cup के अन्दर उस पानी की और उस चाय की पत्ती की है या उस seat की है, जिस seat पर बैठ कर चाय पी जा रही है? समझ आ रहा है? अगर समझ में आ जाये तो एक चाय रोजाना यहाँ पीने के लिए हर व्यक्ति उपस्थित रहे और आपको यह समझना है कि आने वाले समय में और भी अनेक यहाँ पर कार्य होने वाले हैं। कार्यक्रम होते हैं, उनमें हमें हर तरीके से बढ़-चढ़कर भाग लेने की भावना होनी चाहिए। यह चातुर्मास के अन्दर किए जाने वाले कार्यक्रम उसी तरह से special कहलाते हैं, जैसे five-star होटल में बैठ कर चाय पीने का कार्यक्रम special होता है, यह five-star है। आपके मन के भाव इस तरीके के बनने चाहिए कि **हम अगर भगवान के समवशरण में पहुँचते हैं, उपदेश सुनते हैं तो हमारे भावों में और परिवर्तन कैसे आए?** जो भी हमारे लिए special दिया जाये, वह हम सबसे पहले लेने को तत्पर हो।

उत्कृष्ट श्रावक के सुख के लिए अनुभूति करने के उपाय

क्या करना है? सिद्धों के सुख की अनुभूति तो बाद में होगी, पहले **एक उत्कृष्ट श्रावक के सुख की भी अनुभूति करने के लिए हमें जो chance मिलते हैं, उन chances को ग्रहण करना है।** अच्छे श्रावक के लिए भी जो हमें chance दिए जाते हैं कि ऐसा श्रावक बनकर अगर आप तैयारी करके इस तरीके से अपनी मानसिकता बनाओगे तो आपको उत्तम सुख की अनुभूति होगी, पहले वह करने की अपनी तैयारी बनाओ। इसलिए वह सुख जो आपके सामने आता है, वह सुख हमेशा दुःख के रूप में इसलिए आपको दिखाई देता है क्योंकि दुःख सीमित होता है, सुख की कोई सीमा नहीं होती है। आपको एक चाय याद रहती है, five-star होटल की जिन्दगी-भर, वह आपके लिए सुख था...इसलिए याद रहता है और जो भी आप अपने जीवन में पीते रहे, करते रहे, वह आपके लिए कभी सुखकारक नहीं था, इसलिए वह कभी आपको याद नहीं रहा। याद कौन सी चीज रहती है? एक बार आप कोई अच्छा कार्य कर जाओगे, एक बार आपके अन्दर भावों में उठान आने पर कोई भी अच्छी योग्यता, पात्रता बनने के लिए काबिलियत आ जायेगी, वह आपको जीवन भर याद रहती है। इसलिए सुख की सीमा नहीं है। **सीमा किसकी होती है? दुःख की होती है।** यहाँ जितनी भी चीजें आप ग्रहण करोगे, जितनी भी चीजें आप पाओगे, वे सब छूट जायेंगी लेकिन जो चीजें आप इस सभा में बैठकर पा जाओगे, वे चीजें आपको जन्म-जन्मान्तर तक भी आपके संस्कार में बसी रह जायेंगी क्योंकि उसकी कोई सीमा नहीं है।

शाश्वत सुख

यहाँ आपको जिस सुख की बात कही जा रही है, वह अमित सुख है, countless है, timeless है, उस सुख की कोई सीमा न तो माप की अपेक्षा से है और न काल की अपेक्षा से है, न द्रव्य की अपेक्षा से है कि यह कितना है? 1 किलो, 10 किलो और न ही उसके time की अपेक्षा से कितने time तक रहेगा? इसलिए उसको अनन्त कहा गया। **‘निरुपमममितं, शाश्वतं सर्व-कालम्’** शाश्वत है वह सुख, शाश्वत मतलब हमेशा बना रहने वाला। **एक बार जो सुख की उत्पत्ति सिद्धों में हो जाती है, वह सुख हमेशा सिद्धों के अनुभव में आता ही रहता है।** एक बार आपको यदि किसी भी परीक्षा में pass होने के बाद में उत्तीर्ण होने का जो सुख मिलता है, तो वह सुख आपको जीवन भर याद रहता है। बच्चे से पूछ लेना, बड़ों से पूछ लेना, जिन्होंने कोई अच्छी परीक्षा दी हो, उनसे पूछ लेना। इसी तरीके की यह परीक्षाओं का सुख कई बार आपके सामने रखा जाता है, देखते हैं कि इन परीक्षाओं में कौन पास होते हैं? यह भी आपके सामने एक परीक्षा है। कौन सी? ऐसी यह भी एक परीक्षा है कि यहाँ राजा श्रेणिक बनकर कौन इस seat पर बैठेगा? यह भी तुम्हारी एक परीक्षा है। परीक्षाओं में पास होने का मादा होना चाहिए, तब आप श्रेणिक और अभयकुमार जैसी चतुरता आपके अन्दर आएगी।

नन्दी गाँव के लोगों को श्रेणिक राजा की नई चुनौतियाँ



SCAN TO WATCH

क्या हुआ? श्रेणिक राजा ने फिर नन्दी गाँव पर, एक उपद्रव फिर कर दिया। क्या कर दिया? कितनी परीक्षाएँ होंगी? दो-तीन परीक्षा हो चुकी थीं। चार हो गई। **अभी भी श्रेणिक राजा परीक्षा लिए जा रहा है** और फिर उसने परीक्षा लेने के लिए एक आदेश दे दिया। बोले... नन्दी ग्राम के लोगों से जाकर कहना, एक अच्छी मात्रा में हमारे राजगृह में दूध लेकर आयें। क्या लेकर आयें? दूध और वह दूध अच्छी मात्रा में होना चाहिए, पौष्टिक होना चाहिए लेकिन वह किसी भी जानवर का नहीं होना चाहिए, किसी भी मनुष्य का नहीं होना चाहिए और कोई भी ऐसे पदार्थ जैसे नारियल वगैरह के जो दूध अपने आप निकल आते हैं, वह भी नहीं होना चाहिए और दूध लाना है। क्या करें अब? नन्दी गाँव के लोग आज्ञा सुनते ही परेशान हो जाते हैं, जैसे सतना के लोग हो जाते हैं। वह जब परेशान हो गए तो कहाँ गए? अभय कुमार के पास। अभय कुमार के पास गए तो अभय कुमार ने कहा... **राजा की बात को ध्यान से सुनो और यह ध्यान रखो अगर समस्या है, तो उसका समाधान भी है।** ऐसी कोई समस्या नहीं, जिसका कोई समाधान न हो। बस अभय कुमार का एक ही कथन रहता है... चिन्ता नहीं करो, सब हो जायेगा। राजा ने क्या कहा? चलो ठीक है! किसी पशु का दूध नहीं होना चाहिए, किसी भी व्यक्ति का नहीं होना चाहिए और नारियल आदि जैसे पदार्थों का नहीं होना चाहिए। भाई! कुछ ऐसे भी पदार्थ हैं, जिनमें दूध होता है लेकिन तुम्हें पता नहीं रहता है? ऐसे कौन से पदार्थ हैं, जिनका दूध आपके लिए उपयोग में नहीं आता और वह जब तक दूध रहता है, तब तक तो आप उनको खेतों में ही बनाए रखते हो और जब वह सूख जाते हैं, तब आप उनका उपयोग करने लग जाते हो, ऐसे भी पदार्थ हैं। **वह अभयकुमार कहते हैं...** धान होते हैं, उनकी हरी-हरी बालियाँ होती हैं, बाली समझ रहे हो? और उसको अगर आप देखोगे तो उनमें खूब रस होता है, खूब दूध होता है। आप उस कच्चे धान की हरी बालियों के दूध को इकट्ठा करो, खूब मात्रा में हो जायेगा और वह दूध जब खूब मात्रा में इकट्ठा हो जाये, तब

ले जाकर के राजा से कह देना, यह दूध पौष्टिक भी है और अच्छी मात्रा में भी है। पीकर देख लो, बहुत tasty भी है और यह दूध किसी से नहीं निकला...न नारियल जैसे पदार्थों से निकला, न किसी गाय, बैल, भैंस का है, किसी का नहीं है। मेरी बातों पर नहीं पड़ना कि बैल और भैंस के कहाँ दूध होते हैं? मतलब किसी भी पशु का नहीं है लेकिन यह दूध जिन चीजों से निकाल कर दिया गया है, वह चीजें लोगों को पता नहीं हैं और यह उन हरी धान का दूध है, जो आपके सामने है और यही दूध वह श्रेणिक चाह रहा था। मिल गया तो श्रेणिक को लगा, इन लोगों के अन्दर बुद्धि बहुत है। इन्हें कितने भी प्रश्न दे दो, किसी भी तरीके से परीक्षा करने के लिए दे दो, यह हर समस्या का समाधान लेकर आ जाते हैं। हर परीक्षा में ये उत्तीर्ण हो रहे हैं लेकिन राजा श्रेणिक के अन्दर की जो विचार-धारा थी, भावना थी, वह अभी भी यही थी कि नहीं! इनकी हम अभी और भी परीक्षा लेंगे, हम और भी इनको प्रताड़ित करने की कोशिश करेंगे। क्योंकि अभी मेरे अपमान की शान्ति नहीं हुई है। मुझे बार-बार याद आ जाता है कि इस नन्दी गाँव के लोगों ने मेरा कितना बड़ा अपमान किया था। **वह याद कर-करके वह बार-बार कोई न कोई तरीके से उस गाँव के लोगों के लिए वह प्रश्न फेंकता है। यह प्रश्न का उत्तर दो, नहीं तो गाँव छोड़ो।** इस तरीके के यह प्रश्न जब सामने आए तो एक-एक करके सबके उत्तर देते चले जा रहे हैं। क्योंकि उन गाँव वालों को उनके पुण्य से एक अभय कुमार मिल गए हैं और वह अभय कुमार कौन हैं? वह श्रेणिक के पुत्र हैं। अगर किसी श्रेणिक की रानी न आ रही हो, किसी श्रेणिक के साथ में रानी न हो तो वह अभय कुमार के साथ में भी आकर बैठ सकता है। पिता पुत्र भी साथ में बैठ सकते हैं। किसी के भी साथ में, बेटा भी अपने पिता के साथ बैठ सकता है, पिता भी अपने बेटे के साथ बैठ सकता है। नहीं है तो दो भाई हैं, भाई-भाई भी साथ में बैठ सकते हैं। किसी भी तरीके से अपने अन्दर यह भावना आनी चाहिए कि हम भी ऐसा ही बुद्धि का चातुर्य हासिल करें और इसी तरीके की भावना के साथ में, भगवान के समवशरण में उपदेश सुनने की इच्छा करें और यह इच्छा जिस तरह से अभी जारी है, वैसी इच्छा निरन्तर भगवान की दिव्य ध्वनि में कारण बनती चली जा रही है। इसलिए आप लोगों को यह ध्यान रखना है कि हम हमेशा भगवान के समवशरण में उपस्थित होने की जो योग्यता है, उसको बनाए रखें और भगवान का जो सुख है, उसको इसी ढंग से समझते रहें। अभी भी कुछ काव्य बाकी हैं, जिसके माध्यम से भगवान सिद्धों की भक्ति करना शेष है

महावीर भगवान की जय।

25. क्षण-भंगुर जीवन जी रहा अपने लिए



धर्म प्रेमी भव्य आत्माओं, भगवान सिद्धों की आराधना करते हुए, सिद्ध गति को प्राप्त करने की इच्छा से, सिद्धों के गुणों में आकृष्ट होते हुए, आचार्य पूज्यपाद भगवान ने सिद्ध भक्ति करते हुए, जो सिद्धों के सुखों का वर्णन किया है, उसी वर्णन को हम पिछले कई दिनों से पढ़ रहे हैं, सुन रहे हैं और गुनगुना भी रहे हैं। पढ़ने सुनने के साथ-साथ एक गुनगुनाना भी बहुत अच्छी चीज होती है। **गुनगुनाना समझते हो?** गुनगुनाना उस चीज को होता है, जो चीज हमारे हृदय में बसने लगती है। कभी-कभी जब आप लोगों को कुछ गाना नहीं भी आता है, कुछ बोलना नहीं भी आता है, तो भी आप कभी-कभी गुनगुनाते होंगे। गुनगुनाना जानते हो? यह भी एक बहुत अच्छी चीज है। **गुनगुनाने का मतलब होता है कि हम अब उन भावों में बह रहे हैं। गुनगुनाने का मतलब होता है कि वे भाव हमें अच्छे लग रहे हैं।** इसी तरह से जिस व्यक्ति को सिद्ध भगवान के गुणों में आनन्द आने लग जाता है, **सिद्ध भगवान के गुणों को जो सुनकर, पढ़कर, उनके बारे में विचारकर के, अपने अन्दर उन सिद्ध भगवान का ध्यान करते हुए, उनके वर्णन को सुनकर, भीतर-भीतर कुछ गुनगुनाने लग जाता है, उसे सिद्ध भगवान के प्रति एक लगाव उत्पन्न होता है और उसी गुनगुनाने से वह भक्ति का भाव आगे बढ़ता है।** जब वह भीतर-भीतर, कुछ न कुछ यह गुनगुनाने लग जाए कि सिद्धों के सुख कैसे हैं? तो उसे अपने आप याद आने लग जाए।

सिद्ध सुख की विशेषताएँ

- सिद्धों के सुख उपमा रहित हैं।
- सिद्धों का सुख किसी भी प्रकार की प्रतिद्वंदिता से रहित है।
- सिद्धों का सुख अपनी आत्मा से स्वयं उत्पन्न हुआ है।
- सिद्धों का सुख बाधाओं से रहित है।
- सिद्धों का सुख अन्य द्रव्यों की अपेक्षाओं से रहित है।
- सिद्धों का सुख अमित है, विशाल है, अनन्त है।

ऐसा भीतर-भीतर जब मन में गुनगुनाने का भाव होने लग जाए कि मुझे भी ऐसे ही सिद्ध सुख की प्राप्ति करना है, तो यह भक्ति का प्रतिफल कहा जाता है कि आप अब भक्ति में लीन होने लगे हैं, ऐसा होना चाहिए।

अपना जीवन जीने में ही परम आनन्द

सुनने और समझने के बाद में गुनगुनाने की अपने आप में एक बहुत बड़ी महत्ता है और वह गुनगुनाना तभी होता है, जब आप किसी गीत को सुनते हैं और वह गीत आपको अच्छा लगता है। भले ही आपको वह गीत पूरा बोलने में नहीं आता है लेकिन फिर भी आप कुछ न कुछ गुनगुनाते हैं। इसी तरह से जब आप कुछ सुनते हैं, समझते हैं तो आपके भीतर एक गुनगुनाहट पैदा होनी चाहिए। जब वह गुनगुनाहट पैदा होगी, तब आपको लगेगा, जो यहाँ प्रश्न पूछा गया है राजा श्रेणिक के माध्यम से कि **‘मैं क्षण-भंगुर जीवन जी रहा हूँ अपने लिए’** इसका मतलब क्या है? इसका मतलब यही है कि हम अपना जीवन अपने लिए जिएँ, अपनी आत्मा के लिए जिएँ और अपनी आत्मा का जीवन समझने के लिए, उस जीवन को जीने के लिए भी, हम **सिद्ध भगवानों का भी स्मरण करें क्योंकि जिन्होंने अपना जीवन जी लिया है और जो अपना जीवन ही जी रहे हैं, ऐसे सिद्ध भगवन्तों को याद करते हुए हम उनसे यह सीखें कि अपना जीवन जीने में ही परम आनन्द है** और यह आनन्द आपको उपलब्ध होगा तो आप उन अरिहन्तों को, उन सिद्धों को याद करेंगे और उनको याद करके ही आपके अन्दर इस आनन्द की बरसात होगी और यह बरसात तभी होती है, जब हम भीतर से कुछ गुनगुनाने लग जाएँ।

ओं अर्ह नमः के नाद से सिद्ध भगवान के प्रति लगन

अगर आपको कुछ भी नहीं आता है, तो **ओं अर्ह नमः, ओं अर्ह नमः, ओं अर्ह नमः**, इतना भी गुनगुनाते रहोगे, तो भी सिद्ध भगवान से आपकी लगन लगी रहेगी। यह भक्ति का एक तरीका है। **यहाँ जो भक्ति कही गई है, वह स्पष्ट शब्दों में कही गई है और उसी भक्ति को करते हुए, जब हम इन भक्ति के भावों को समझ कर, भीतर कुछ स्पष्टता नहीं भी होती है और फिर भी हमारा भगवान के प्रति लगाव हो जाता है, तो वह एक गुनगुनाने के माध्यम से हमारे अन्दर प्रकट होने लग जाता है**। जब हम आपसे पूछे, आप सिद्धों के बारे में कुछ जानते हैं? आप इतना सुन कर भी कहें कि महाराज जानते तो हैं मगर आप यह मत पूछ लेना कि क्या जानते हैं? समझते तो हैं, पर यह मत कह देना कि बताओ, समझाओ कि क्या जानते हैं? तब मुश्किल हो जाएगी। जब आप ऐसा भी कहने लग जाएँ, ऐसा भी समझने लग जाएँ तो भी वह आपके लिए अपना जीवन जीने के लिए पर्याप्त हो जाता है। हाँ! आप अपना जीवन जीने की तैयारी में लग गए हैं क्योंकि आप समझने लगे हैं, आप गुनगुनाने लगे हैं और आप अपने भीतर, अपने अन्दर उस अर्ह के नाद से, अपने अन्दर उन सिद्ध भगवन्तों से जुड़ने के लिए आपका मन लालायित होने लगा है।

गुनगुनाने से सिद्ध भगवान के गुणों के प्रति आकर्षण उत्पन्न होता है

यह गुनगुनाना अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। आप देखो! जब कोई लाइन लिखी होती है और हम उन्हें एक बार में ज्यों का त्यों पढ़ दे तो उसमें बहुत ज्यादा रस नहीं आता। कभी आपने गीत तो सुने ही होंगे, गीत तो सुनते ही होंगे? नए हो, पुराने हो, भजन हो, एक लाइन को जब हमें दो बार, चार बार, कभी-कभी तो ऐसे-ऐसे भी देखे हमने लोग, दस-दस बार भी उसी एक लाइन को गाते रहते हैं, गाते रहते हैं। **एक लाइन को भी गाने से आनन्द आता है। यह नहीं है कि बहुत सारी चीजें पढ़ने से, बहुत लम्बा-लम्बा पढ़ने से, हमारे अन्दर भक्ति का रस पैदा होता है।** भक्ति का रस एक शब्द से भी पैदा होता है। एक-एक शब्द

जो आचार्यों के लिखे हुए हैं, हम यहाँ पर उनको पढ़ रहे हैं, देख रहे हैं, हम उनको गुनगुना रहे हैं, उनको ध्यान कर रहे हैं। आपकी पता नहीं कि आप क्या कर रहे हो? **लेकिन इतने दिनों से हम आचार्य पूज्यपाद महाराज के द्वारा लिखी हुई इन सिद्ध भक्ति को जब पढ़ रहे हैं, सुन रहे हैं, गुनगुना रहे हैं तो हमारे अन्दर एक-एक विशेषण, भीतर से उन गुणों के प्रति एक आकर्षण उत्पन्न करने लग जाता है।** आपको लग रहा है कि भगवान सिद्धों का हमने वर्णन बहुत सुन लिया। लग रहा है न आपको? एक महीना हो गया आपको सुनते-सुनते सिद्ध भगवान की कथा और यह सातवाँ श्लोक भी बहुत दिनों से चल रहा है, अभी तक पूरा होने का नाम नहीं ले रहा है।

सच्चे सुख का स्वरूप

कल क्या सुना था आपने? **‘निरुपमम् अमितं, शाश्वतं सर्व-कालम्’** सुख कैसा होता है? जो शाश्वत हो, सर्व काल रहने वाला हो और ऐसा ही सुख जब आगे और बढ़ता है, तो आचार्य कहते हैं कि वह सुख कैसा होता है? **‘उत्कृष्टानन्त-सारं’** वह सुख कैसा होता है? उत्कृष्ट होता है, अनन्त सार रूप होता है। **उत्कृष्ट अलग है और अनन्त सार रूप अलग है।** जब हमें कोई भी सुख प्राप्त करने की लालसा होती है, तो हम उस सुखी व्यक्ति को, उस सुखी आत्मा को देखने की कोशिश भी करते हैं और जब हम उस सुख को प्राप्त करने के लिए ऐसे विशेषण ढूँढते हैं तो वह विशेषण हमें एक लाइन में पढ़ने को तो मिल जाते हैं और हम, अगर इन चारों लाइनों को पढ़ें तो हमें कितना सा सुख मिलेगा और कितना सुख हमें मिल जाता?

क्षण-भंगुर जीवन मैं जी रहा अपने लिए

शायद हम कई बार सिद्ध भक्ति पढ़ते होंगे लेकिन हमें इन चार लाइनों को पढ़ने से इतना सुख नहीं मिला, जितना इन दिनों में इन सिद्ध भगवान का वर्णन करते हुए, हमें सिद्धों का स्तुति करते हुए सुख की प्राप्ति हुई। क्योंकि हम यहाँ केवल पढ़ नहीं रहे हैं, समझ नहीं रहे हैं, हम क्या कर रहे हैं? अब हम गुनगुना रहे हैं।

सिद्ध भक्ति भीतरी आनन्द का कारण

हमें इससे फर्क नहीं पड़ता कि आप bore होंगे या आप इस चीज को बार-बार सुनेंगे या नहीं सुनेंगे, लेकिन **जब हम अपने आनन्द में होते हैं तो हमें आपकी कोई चिन्ता नहीं होती।** इसी का मतलब होता है...**क्षण-भंगुर जीवन मैं जी रहा अपने लिए।** जब हम अपने लिए जीते हैं तो अपने लिए जो अच्छा है, उसको ग्रहण करते हैं। जब हम अपने लिए जीते हैं तो अपने लिए जो हितकारी है, उसको प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। जब हम अपने लिए जीते हैं तो फिर हमें दूसरों को देखने की जरूरत नहीं पड़ती है कि दूसरे क्या सोचेंगे, क्या समझेंगे? हमें अपनी समझ से चलना है। **हमें अपने आनन्द में रहना है, हमें अपना गुणगान करना है।** आपको हमारे साथ शामिल होना हो तो हो जाओ, नहीं होना हो, हम तो अपनी यात्रा कर ही रहे हैं, हम अपना जीवन जी रहे हैं। अपने लिए जब हम जीने लग जाते हैं तो फिर हमें एक अलग आनन्द आता है और उस आनन्द में हमें किसी दूसरे की कोई चिन्ता नहीं होती है। **हम भगवान के गुणों का स्मरण करते हुए, जब एक-एक शब्द को देखते हैं तो उस शब्द में मुझे गहरा, गहरा, गहरा, गहरा भाव दिखाई देता है। क्या हो सकता है वह भाव?** हम अगर कहने में सक्षम नहीं भी हो तो भी हम कहने

लग जाते हैं, बिना डरे हुए। हमें पता नहीं होता है कि हम इसके बारे में आज क्या कहेंगे? आपको क्या समझाएँगे? लेकिन हमें यह भी नहीं पता होता है कि हम क्या समझाएँगे? लेकिन फिर भी हम समझाते रहते हैं। क्योंकि हम जीवन जी रहे हैं। किसके लिए? अपने लिए। हम बोल रहे हैं, किसके लिए? बोलो! तुमसे बुलवा रहा हूँ लेकिन किसके लिए बोल रहा हूँ? अपने लिए। मैं सुना रहा हूँ, किसके लिए? अपने लिए। मैं स्वयं ही सुना रहा हूँ, मैं खुद ही सुन रहा हूँ। बीच-बीच में आप दिख जाते हो तो पूछ लेता हूँ... आप भी सुन रहे हो कि नहीं सुन रहे हो। यह जीवन जब अपने लिए होने लग जाता है, तो फिर पर से अपेक्षाएँ हटने लग जाती हैं। **‘अन्य-द्रव्यानपेक्षं’** अन्य द्रव्यों की अपेक्षा किए बिना, आप अपने लिए जियो और जब आप अपने लिए जियोगे तब आपको पता पड़ेगा कि हम अपने लिए क्या प्राप्त करने योग्य हैं? क्या हमें अपने लिए प्राप्त करना है? एक-एक विशेषण आपके लिए भीतर से बहुत आनन्द देने वाला होगा।

उत्कृष्ट सुख : परम सुख

देखो! आज क्या लिखा है? आज चौथी लाइन पढ़ रहा हूँ, इस सातवें काव्य की,

‘उत्कृष्टानन्त-सारं, परम-सुखमतस्तस्य सिद्धस्य जातम्’

उन सिद्ध भगवान के लिए जो सुख उत्पन्न हुआ है, वह कैसा है? उत्कृष्ट है। कैसा है? बोलो! एक बार बोल लिया करो, ताकि याद रह जाएगा। बिना बोले केवल सुनोगे तो याद नहीं रहेगा। **सिद्ध भगवान का सुख कैसा है? उत्कृष्ट है, उत्कृष्ट! अब यह शब्द हमारे लिए क्या कहेगा? उत्कृष्ट का मतलब क्या होता है? सर्वश्रेष्ठ अर्थात् जिससे बढ़कर, जिससे श्रेष्ठता में बढ़कर कोई दूसरी चीज न हो। जिसे आपकी भाषा में कहा जाए...बिल्कुल excellent.** ऐसा सर्वश्रेष्ठ सुख, अगर प्राप्त है सिद्ध भगवान को और वहाँ उन्हें उसकी अनुभूति हो रही है और हम अगर उस सुख को प्राप्त करने के लिए यह विशेषण उनके सामने लाते हैं कि हे भगवन्! आपका सुख उत्कृष्ट है, सर्वश्रेष्ठ है, excellent है, आपके सुख के आगे दुनिया का कोई सुख कहीं भी नहीं लगता है। ऐसे उत्कृष्ट सुख को हम और कैसे समझें? **उत्कृष्ट का मतलब ही होता है... जिसके आगे फिर कुछ भी न हो।** जहाँ पहुँचने के बाद में वह अन्तिम सीमा प्राप्त हो जाए, उसी को उत्कृष्ट कहते हैं, उसी को परम सुख कहते हैं। एक दूसरा विशेषण और क्या लिखा है? परम सुख। जो उत्कृष्ट होगा, वह परम होगा। परम का मतलब? उससे बढ़कर के कुछ भी नहीं है, वह भी परम है। जैसे आपकी भाषा में बोले...supreme. सर्वोत्कृष्ट क्या है? जो supreme है।

उत्कृष्ट सुख की लालसा

ऐसी सुख की अनुभूतियाँ, जिसके प्राप्त होने पर हर व्यक्ति के लिए उससे बढ़कर के कुछ भी समझ न आए। अब आपको यह सुख ध्यान में रखना है तो केवल एक शब्द गुनगुनाना है...**हे भगवन्! आपका सुख कैसा है? उत्कृष्ट, उत्कृष्ट, उत्कृष्ट।** अगर आप भावना करोगे उत्कृष्ट की तो आपके अन्दर भी एक लालसा पैदा होगी। सुख कैसा होना चाहिए? उत्कृष्ट होना चाहिए और जो उत्कृष्ट होगा, वह जन-सामान्य के लिए उपलब्ध नहीं होगा। **जो भी उत्कृष्ट चीज होती है वह उत्कृष्ट लोगों के पास होती है। वह सामान्य नहीं है। हमारे पास में, आपके पास में जो है, वह सामान्य है, निकृष्ट है और भगवान के पास में जो है, वह उत्कृष्ट है।** जब वह उत्कृष्ट के लिए अनुभव कर रहे हैं तो हमारे मन में भी एक भाव आना चाहिए कि भगवन्!

अब हमें कोई छोटा-मोटा सुख नहीं चाहिए। क्या चाहिए? उत्कृष्ट सुख चाहिए। जब भी आप अपने अन्तर्मान से भगवान से प्रार्थना करो तो आपके सामने कोई भी भगवान हो, आप किसी भी भगवान को मानते हो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। बस! आपको यह लगना चाहिए कि भगवान के पास में जैसा उत्कृष्ट सुख होता है, हे भगवन्! हमें भी वैसा ही उत्कृष्ट सुख चाहिए, छोटा सुख नहीं चाहिए। हमें थोड़े में अब सन्तुष्ट नहीं होना है। भिखारी बनते-बनते हमने कई जन्म जी लिए हैं, थोड़ा-थोड़ा सा माँग कर, थोड़े-थोड़े में सन्तुष्ट होकर, अब हमें थोड़े में सन्तुष्ट नहीं होना है। क्या चाहिए? उत्कृष्ट चाहिए। जो उत्कृष्ट होगा, उसी से ही जगत का भला होगा।

सिद्ध का स्वरूप

जब हम सिद्ध भगवान कहते हैं तो सिद्ध किसी भगवान का नाम नहीं होता। जब आप राम कहते हैं, कृष्ण कहते हैं, हनुमान कहते हैं तो यह नाम हो जाता है भगवान का लेकिन जब हम सिद्ध कहते हैं तो यह भगवान का नाम नहीं होता, यह सार होता है। जिसे कहते हैं- **‘उत्कृष्टान्त-सार’** यह जो शब्द आया न, उनके अन्दर जो सार्वभूत अनन्त भावना है, भाव है, **उस अनन्त भाव को, उस अनन्त सार को, जिन्होंने प्राप्त कर लिया है, उन्हें हम सिद्ध-आत्मा कहते हैं।** सिद्ध-आत्मा किसी का नाम नहीं है। वह आत्मा, जो परम सुख को उपलब्ध है, उसका नाम सिद्धात्मा है।

सिद्धात्मा अर्थात् अनन्त शुद्ध आत्माएँ जो अपने अनन्त आनन्द में समाई हुई हैं

जैन दर्शन में हमेशा गुणों का, व्यक्तित्व के भीतर समाए हुए उसके भावों का वर्णन किया जाता है। व्यक्ति के नाम की ज्यादा चर्चाएँ नहीं होती हैं। लेकिन जैन दर्शन के अलावा, अन्य दर्शनों में आप देखोगे, व्यक्ति के नाम की ज्यादा चर्चाएँ होती हैं। यहाँ पर भी कुछ electric merchant association के लोग बैठे हैं। आप समझें कि अगर हम व्यक्ति के नाम की चर्चा करते हैं तो सिर्फ हम व्यक्ति तक सीमित रहते हैं। लेकिन **अगर हम व्यक्ति के भीतर के भावों की चर्चा करते हैं तो वह भाव जिस किसी भी लोगों के पास में होंगे, हम उन सबके पास तक पहुँच सकते हैं।** जब आपने कहा राम तो आपके सामने केवल एक ही व्यक्ति आएगा...**राम।** जब आपने कहा कृष्ण तो आपके सामने एक ही व्यक्ति आएगा...**कृष्ण।** जब आपने कहा हनुमान तो आपके सामने एक ही व्यक्ति आएगा...**हनुमान।** लेकिन जब आप कहोगे सिद्ध भगवान तो आपके सामने **अनन्त शुद्ध आत्माएँ** आ जाएँगी, वे सभी भगवान आ जाएँगे, जो अपने अनन्त आनन्द में समाए हुए हैं।

जैन दर्शन, गुणों की विशेषताओं के साथ जीने वाला दर्शन

यह सीखो! जैन दर्शन आपको बहुत कुछ सिखाता है, आप सीखने की कोशिश करो। जैन दर्शन की जो विशेषताएँ हैं, वह अगर आप नहीं सीखोगे तो आप अपने जीवन में अधूरे रहोगे, मैं आपके साथ guarantee से कह रहा हूँ। आप हमेशा अपने अन्दर आग्रहों को लेकर के जीते हैं, नाम को लेकर के जीते हैं। **जैन दर्शन, गुणों की विशेषताओं के साथ जीने वाला दर्शन है। जो हमेशा कहता है...गुणों के विकास पर ध्यान दो।** व्यक्ति की नहीं उसके व्यक्तित्व की प्रशंसा करो। व्यक्ति के नाम की नहीं, उसके गुणों की प्रशंसा करो

और हमेशा यह दर्शन, गुणों की प्रशंसा करना सिखाता है। अब जब हम ऐसे अनेक लोग हो, चाहे वे राम हो, भगवान महावीर हो, चाहे कृष्ण हो, चाहे वे भगवान हनुमान हो, कोई भी हो, ऐसे अनेक लोग होंगे और उन अनेक लोगों को अगर हम किसी एक नाम से कहेंगे तो वह नाम क्या है? सिद्ध भगवान। वे सभी क्या हो गए? सिद्ध हो गए। जब आप सिद्ध बोलोगे तो उसमें सब समा जाएंगे। **अर्ह बोलोगे तो उसमें सब समा जाएंगे** लेकिन अगर आप कोई एक नाम लोगे तो उसमें एक ही व्यक्ति आपके सामने खड़ा दिखाई देगा, एक की ही सूरत नजर आएगी। लेकिन जब आप सिद्ध बोलोगे तो अनन्त शुद्ध आत्माएँ आपको समझ में आएंगी।

उत्कृष्ट ही अनन्त सार को उपलब्ध

अनन्त काल में इस धरा पर अनन्त जीवों ने इस तरह की शुद्धता प्राप्त की है और अनन्त जीव अपने इस उत्कृष्ट सुख को प्राप्त कर चुके हैं। जब हम उस उत्कृष्टता की ओर जाते हैं तो हमारे अन्दर यह भान हो जाना चाहिए कि जो उत्कृष्ट है, वही अनन्त सार वाला पदार्थ होता है। सार समझते हो? सार के साथ में यहाँ पर अनन्त विशेषण लगाया है। सार कैसा होना चाहिए? अनन्त रूप में होना चाहिए। सार का मतलब समझना। जैसे किसी चीज का essence निकाला जाता है, scent उसकी जो बनती है, कभी आपने देखा? गुलाब के फूलों की essence होती है, वह जो सुगन्धी होती है, वह अनेक-अनेक फूलों को बड़े-बड़े कढ़ाहों में उबालने के बाद में, vaporization का process करने के बाद में, वह scent बनती है, वह process चलता है। कभी आप कन्नौज वगैरह जाओ तो आप देखना, UP में, वहाँ बड़े-बड़े ऐसे कढ़ाहे हैं, जिनमें बड़े-बड़े फूलों की सुगन्धें निकाली जाती हैं। **वह सारभूत, जो चीज बन कर आएगी, उसके पीछे अनन्त द्रव्य शामिल होगा लेकिन जो वह सारभूत एक बून्द भी होगी तो वह एक बून्द आपके लिए किलो-किलो, टनों-टनों, उस पानी को या दूध को या उस पदार्थ को महकाने में कारण बन जाएगी।** उसको कहते हैं- अनन्त सार। जो उत्कृष्टता को उपलब्ध हो जाता है, वह अनन्त सार को उपलब्ध हो जाता है। उसमें सार, अनन्तता के साथ में आ जाता है, फिर आप उसकी गणना नहीं कर सकते हैं।

उत्कृष्ट आत्माओं को ज्ञान से समझा जा सकता है

यहाँ electric merchant के लोग बैठे हैं। ये electric के बारे में जानते हो या न जानते हो, हमें नहीं पता क्योंकि merchant वालों का काम सिर्फ व्यापार करना होता है, किसी चीज की quality को जानना नहीं होता है। लेकिन अगर वे गहराई से सोचे तो electricity जहाँ बनती है, वहाँ आप जाकर देखना। छत्तीसगढ़ का वह कौन सा कोरवा है? क्या है? वहाँ जाकर देखना। उस last stage पर मैंने उस electric को generate होने वाली वह भट्टी, जहाँ पर कि वह अपने high temperature पर होती है उस स्थान को देखा, जब हम आचार्य श्री के साथ में विहार करते हुए वहाँ कोरवा तक पहुँचे थे। वहाँ लोगों ने वह electricity जहाँ बनती है, वह last stage, बिल्कुल ऐसा कि न वह लाल दिखाई देता है, जो वह पदार्थ है, कोयला कह लो, कुछ भी कह लो, इतना गर्म हो जाता है, इतनी last stage पर होता है कि वहाँ पर सिर्फ लाल, पीली, सफेद सी बस लाइनें दिखाई देती हैं। वह अग्नि वहाँ पर इतनी तीव्र हो जाती है और उसके just बाद, बस! वह current बनना शुरू हो जाती है। वह last temperature तक पहुँ-

चते-पहुँचते, heated होते-होते, वह जब आपके सामने, वह केवल अग्नि दिखाई देती है, तो उस अग्नि के बाद जब current बनती है, वही उसका सार होती है। उत्कृष्ट temperature होने के बाद में वह अनन्त सार सामने आता है। थोड़े temperature पर काम नहीं होगा। Current जब भी बनेगी, temperature कितना होना चाहिए? उत्कृष्ट होना चाहिए। जितना उत्कृष्ट हो सकता है science की भाषा में, उतना उत्कृष्ट होना चाहिए। 200°, 400°, कितना भी उत्कृष्ट हो सकता है। वह जब इतना उत्कृष्ट हो जाएगा, तब जाकर वह electricity उससे create होगी। उससे पहले वह आग रहेगी, बिजली नहीं कहलाएगी। उत्कृष्ट प्राप्त होने पर ही अनन्त सारभूत चीज सामने आती है और जब वह अनन्त सार उसमें से निकलता है, तो फिर उस सार को तुम पकड़ नहीं सकोगे। उसमें एक flow होता है। उस सार को बस! तुम अनुभव कर सकोगे। current को फिर तुम देख नहीं सकोगे। उस heat को तो देख सकोगे, जो उससे just पहले है, अनन्त उससे सार बनने वाला है, उत्कृष्ट temperature पर है, वह तो तुम देख लोगे। लेकिन उसके बाद में जैसे ही बिजली बनेगी, जैसे ही वह current उससे generate होगी, वह आपको current देखने में नहीं आएगी। बता दो, किसी ने current देखी हो तो? Electricity merchant के लोगों से ही पूछ रहा हूँ मैं...किसी ने current देखी है? छुआ है? बिना देखे ही छू लेते हो? अगर बिना देखे छू लिया होता तो यहाँ नहीं होते अभी। न आप current को छू सकते हो, न current को देख सकते हो। Current को छूने की भी कोशिश करोगे तो उसमें आपको कोई भी छूने का एहसास नहीं होगा। वह current आपको ऐसे पकड़ेगी, ऐसे पकड़ेगी कि फिर आप बताने लायक ही न रहोगे कि current कैसी थी? क्या कर सकते हो आप? Current को भी छू नहीं सकते हो। जो वास्तव में current है, वह छूने में नहीं आती। वह तो उसका temperature का एक झटका होता है, जो आपकी body के लिए घातक सिद्ध हो जाता है। लेकिन वास्तव में न current को हम छू सकते हैं, न current को हम देख सकते हैं। ऐसे ही जो उत्कृष्ट आत्माएँ हो जाती हैं, सिद्ध भगवान हो जाते हैं, उनको न हम छू सकते हैं, न हम आँखों से देख सकते हैं। लेकिन हम अपने ज्ञान से समझ सकते हैं कि ये उत्कृष्ट अनन्त सार को प्राप्त कर चुके हैं।

आत्मा अनन्त सुख का स्रोत

यह सिद्ध भगवान का ज्ञान अगर आपके दिमाग में घूमेगा तो आपके दिमाग की current, आपके जीवन को सही ढंग से चलाने में काम आएगी। जीवन तो चल रहा है लेकिन अभी current लगी नहीं आपको। कौन सी current? **जो current हम लगाना चाह रहे हैं। वह current अगर लग जाए, हमारे शरीर के भीतर बैठा हुआ आत्मा, ऐसा ही अनन्त सुख का स्रोत है, ऐसा ही अनन्त सुख को प्राप्त करने वाला परम आत्मा है, यह current आपको जिस दिन लग जाएगी, उस दिन आपको अपने आप भगवान के गुण गाने के लिए गुनगुनाना शुरू हो जाएगा और आप गाने लग जाओगे...ओं अर्हं नमः, ओं अर्हं नमः, ओं अर्हं नमः** सब भूल जाओगे। यह अर्हं के नाम से भगवान को याद करना, सिद्धों के नाम से भगवान को याद करना, यह इसलिए है कि कोई भी भव्य जीव, अगर अपने आप को बार-बार सिद्धों के स्मरण से जोड़ता है, तो वह या तो **अर्हं, अर्हं, अर्हं** पढ़ेगा या फिर **णमो सिद्धाणं, णमो सिद्धाणं, णमो सिद्धाणं** पढ़ेगा, **ओं नमः सिद्धेभ्यः** बोलेगा, **ओं सिद्धम् नमः**, ऐसा भी एक बहुत प्राचीन सूत्र मिलता है, यह बोलेगा, सिद्धों को याद करेगा। यह सिद्धों को प्राप्त करने के लिए एक बार अगर हमारे अन्दर current जागृत हो जाए तो फिर इसका flow बन जाता है। यह current लग नहीं रही है। यह भीतर से current

जब लगेगी तो आपके अन्दर अपने आप भावना आने लगेगी कि सिद्धों का सुख ही उत्कृष्ट है और किसी का दुनिया में उत्कृष्ट सुख नहीं होता है। हमें ऐसे उत्कृष्ट सुख की प्राप्ति करने के लिए जीना है। बस! उसी जीने का नाम है...अपने लिए जीना।

जीवन का उद्देश्य

समझ आ रहा है, श्रेणिक महाराज? किसके लिए जीना? अभी तो हम अपनी पत्नी के लिए जीते हैं, बच्चों के लिए जीते हैं, माता-पिता के लिए जीते हैं, भाई-बहनों के लिए जीते हैं। हम अपने लिए जी कहाँ पाते हैं? किसके लिए जीना? **सिद्ध भगवान किसके लिए जी रहे हैं?** जो हमारे आदर्श हैं, वे किसके लिए जी रहे हैं? **वे अपने लिए जी रहे हैं, अपने में जी रहे हैं और हमें भी यही संदेश दे रहे हैं, अगर आपको हमारे जैसा सुख प्राप्त करना है, तो आप भी थोड़ा सा अपने लिए जीने की कोशिश करो। अपने लिए भी जियो।** इसे स्वार्थी जीवन नहीं कहते हैं, इसे परमार्थी जीवन कहते हैं। स्वार्थ में तो हम दूसरों के लिए कोई नुकसान पहुँचाकर जीने की कोशिश करते हैं। लेकिन जब हम किसी दूसरे को नुकसान पहुँचाए बिना, पत्नी, पत्नी रहे, माता-पिता भी बने रहें, हम उनको भी देखते रहें, उनके लिए भी सब कुछ व्यापार आदि करते भी रहें, लेकिन फिर भी हम अपने लिए जीवन जीने का एक उद्देश्य बना ले तो वह कहलाता है...अपने लिए जीना। वह तब होगा, जब आप एक उद्देश्य पहले बना लेंगे। **जीने की कला बाद में आएगी। पहले आपको एक उद्देश्य बनाना पड़ेगा कि हाँ! मुझे अपने लिए भी जीना है।** बोलो! electricity! जो electric होती है, वह किसके लिए जीती है, बताओ? electric किसके लिए जीती है? electric सिर्फ अपने में रहती है, अपने लिए जीती है। आप उसका जब use कर लो, bulb के रूप में, light के रूप में, cooler के रूप में तो वह आपने उसका use कर लिया। वह दूसरों के लिए use हो गया लेकिन वह जी किसके लिए रही है? उसका जीवन किसके लिए है? अपने लिए है। use किसी भी रूप में हो सकता है लेकिन **वास्तव में जीवन जब अपने लिए होता है, तो अनेक रूपों में वह काम आती है, अनेक रूप उसके सामने आ जाते हैं।** लेकिन जीवन पहले होना चाहिए। किसके लिए? अपने लिए। वह अपने लिए जो जीने लगेगा, वह फिर उत्कृष्टता को ध्यान में रखेगा और जिसके सामने उत्कृष्टता आ जाती है, वह फिर क्षुद्र बातों में पड़ता नहीं है। उत्कृष्टता, बस! समझ में आनी चाहिए, हमारा सुख किसमें है?

दृष्टान्त-राग, द्वेष से रहित सन्तों का सुख

दो सन्त थे। सन्त-महात्मा आप समझते हो न? सामान्य से सन्त-महात्मा की जैसी चर्चा होती है। **निर्ग्रन्थ गुरु अलग कहते हैं हम, सन्त-महात्मा अलग चीज है।** जो कुछ साधना कर रहे होते हैं। दो सन्त थे। अब वे एकान्त स्थान पर बैठकर कुछ अपनी साधना कर रहे थे, कहने का मतलब अपने लिए जी रहे थे। क्या कर रहे थे? अपने लिए जी रहे थे। दूर, उन्होंने शहर के बाहर एक अपनी छोटी सी कुटिया बनाई। वहाँ पर बड़े शान्ति से जीते थे और उनके उस जीवन की जो शैली थी, जो ढंग था, उससे प्रभावित होकर लोगों में चर्चाएँ होती थी। देखो! **जीना हो तो ऐसे सीखना चाहिए, कैसे जिया जाता है? अपने लिए जीना कैसे होता है? जाओ, उन सन्तों के पास जाओ, सीखो, तब पता पड़ेगा कि अपने लिए कैसे जीना होता है? किसी से कोई मतलब नहीं। जो भी अपने जीवन के लिए थोड़ा बहुत उपयोगी है, वह खा-पी लिया,**

पहन-ओढ़ लिया, कुछ भी किसी से न राग है, न द्वेष है, कहीं दूर बैठ कर दो सन्त-महात्मा अपना जीवन जी रहे हैं। वह जीवन देखते हुए, चर्चा होते हुए, नगरवासियों के माध्यम से, वह चर्चा राजा के पास पहुँच जाती है। किसके पास पहुँच गई? राजा के पास। जब राजा के पास चर्चा पहुँच गई और राजा को लगा कि ये लोग हमसे ज्यादा सुखी हैं, ऐसा नगरवासी चर्चा कर रहे हैं। भैया! राजा से बढ़कर सुखी कौन हो सकता है! राजा के मन में आया कि चलो! हम भी देखने के लिए चलते हैं। किसे देखने चलते हैं? जिन सन्तों की चर्चा चल रही है ये बड़े सुखी हैं, उनको देखने के लिए चलते हैं। अब जब राजा चलेगा तो क्या होगा? उसके आगे-पीछे बहुत सारा लश्कर होगा। लश्कर समझते हो न? राजा आ रहा है, राजा आ रहा है, राजा आ रहा है। कब आ रहा है? भैया चार दिन बाद आएगा। अरे! उन सन्तों के कान में ये बातें पहुँचने लग गई कि राजा आ रहा है, राजा आ रहा है, चार दिन बाद आएगा। ये तैयारियाँ, वह तैयारियाँ, ये लोग, वह लोग।

सन्तों के सुख में बाधा

उनका तो दिमाग ही खराब होने लग गया। बोले...हम यहाँ पर शान्ति की साधना कर रहे थे, हम यहाँ पर शान्ति से बैठे थे, हम यहाँ पर अपने लिए जी रहे थे, यह राजा ने क्या तूफान खड़ा कर रखा है? हमें क्या लेना देना राजा से? उन दोनों के मन में विचार आया, राजा यहाँ देखने आ रहा है, लोग बता रहे हैं, राजा अपनी शान्ति देखने आ रहा है। अपना सुख देखने आ रहा है। राजा यहाँ अपने को देखने आ रहा है और अगर उसको देखने के बाद में कहीं अच्छा लग गया तो क्या करेगा? या तो राजा कहेगा, तुम मेरे राज्य में चलो या फिर वो बार-बार यहीं पर आकर अपने को परेशान करेगा और फिर एक बार राजा के आने के बाद में, अगर वह राजा ने कहीं प्रशंसा कर दी और लोगों के लिए कह दिया कि ये वास्तव में बहुत अच्छी शान्ति और सुख देने वाले लोग हैं तो यहाँ पर अपनी शान्ति तो चली जाएगी। सन्त दोनों क्या सोच रहे हैं? राजा आ रहा है, यह ठीक बात है, दुनिया के लिए राजा होगा, हमें क्या लेना-देना राजा से? राजा यहाँ आकर के हमें क्या देगा? और हमें उससे क्या लेना? और एक बार अगर राजा यहाँ लग गया और बार-बार अगर कहीं वह आने लग गया तो हमारे लिए तो और अशान्ति हो जाएगी। **जिसने एक बार भी अपने अन्दर उत्कृष्टता का भाव कर लिया, वह फिर नीचे गिरने की इच्छा नहीं करता।** कोई भी उसके पीछे हो, कोई भी उसके आगे हो, उसे उससे कोई मतलब नहीं होता और वह सोचता है...मेरी शान्ति, मेरा सुख, उसमें किसी तरह का व्यवधान नहीं पड़ना चाहिए। अब उन दोनों सन्तों ने सोचा, क्या करें? राजा आएगा, देखेगा, बहुत नाम सुन रखा है और अपना नाम सुन रखा है और अपनी अगर प्रशंसा करेगा बाद में जाकर तो फिर यहाँ पर लोगों का आने का ताँता लग जाएगा। हम जिस उद्देश्य से यहाँ बैठे थे, वह तो सब खत्म हो जाएगा। क्या करें अब? राजा से मना भी नहीं कर सकते..राजन! यहाँ मत आना। यहाँ भीड़ मत लगाओ। यहाँ हमें disturb मत करो, ऐसा भी नहीं कह सकते। क्या किया जाए?

सन्तों ने किया अनन्त सुख में बाधा का निराकरण

दोनों ने विचार किया, बोले...चिन्ता नहीं करो। राजा आ रहा है, उसे आने दो और राजा के सामने हम ऐसा presentation देंगे, जो राजा को भी फिर लगेगा कि वास्तव में अब यहाँ पर दोबारा नहीं आना चाहिए। क्या करें? हम राजा से तो बुरा-भला बोल नहीं सकते, राजा से तो कुछ गलत कह नहीं सकते हैं। जब राजा

उनके सामने पहुँचा, राजा उन दोनों सन्तों के सामने आया तो दोनों सन्त आपस में लड़ने लग गए। क्या करने लग गए? लड़ने लग गए। जैसे ही राजा के सामने आए या राजा उनके सामने आया तो वे सन्त एक दूसरे को लड़ने लग गए, बुरा-भला कहने लग गए। तू बड़ा ज्ञानी बनता है, इतने दिनों से मैं तेरे साथ रह रहा हूँ। देख लिया मैंने तेरा ज्ञान कितना है? दूसरा भी कहता है...मुझे भी पता है तेरा ज्ञान कितना है? तू अपने आप को बहुत ज्ञानी समझता है, तुझसे ज्यादा ज्ञान तो मेरे चेलों के पास में है। इस तरह की भाषाएँ वे उस समय पर बोलने लग गए। थोड़ा आप तो और अच्छा बोल सकते हो, हम वैसा नहीं बोल पाएँगे। जब आपस में लड़ना होता है तो फिर आपकी भाषा क्या होती है? वही भाषा, जो एक दूसरे को जलील करे। वही एक दूसरे को जलील करने वाली भाषा, एक दूसरे को नीचा दिखाने वाली भाषा, लड़ने वाली भाषा, वे वहाँ पर बोलने लग गए और राजा वहाँ खड़ा-खड़ा देखने लग गया। बोले...यह क्या हो रहा है? हमने तो बहुत नाम सुना था। ये दोनों सन्त बड़े सुखी रहते हैं, शान्ति से रहते हैं। इस जैसा स्थान स्वर्ग में भी नहीं मिलेगा, जैसे स्थान में ये रह रहे हैं और यहाँ आकर देख रहे हैं, यह तो क्या है? ये तो ऐसे लड़-झगड़ रहे हैं, जैसे हम कभी राजा बनकर भी, हमें कभी ऐसा नहीं लड़ना-झगड़ना पड़ता। राजा ने वहाँ से, दूर से ही हाथ जोड़े और चलता बना, अपनी सवारी नापी और चला गया।

उत्कृष्ट आत्माएँ लोक ख्याति से परे

फिर दोनों सन्तों ने हाथ मिलाए, बोले...अपना काम हो गया। छुट्टी मिली राजा से। अरे! क्या लेना-देना है राजा से? क्या होना जाना है अपने को? **जिसे उत्कृष्ट अपने ध्यान में है, जिसे उत्कृष्ट अपनी आत्मा दिखाई दे रही है, जिसे परमात्मा के ध्यान में उत्कृष्ट सार नजर आ रहा है, उसे किसी राजा और किसी मंत्री से मिलने में कोई सार समझ में नहीं आता।** इसलिए कभी भी आप देखना, कोई भी निर्ग्रन्थ दिगम्बर सन्त होता है, तो वह कभी किसी राजा और मंत्री से मिलने के लिए कभी आतुर नहीं होता है। जरूरत नहीं है। तुम्हें अगर आना होता है, आ जाते हो तो वह भी अपने लिए एक व्यवधान होता है। जो वास्तव में, अपनी आराधना करने वाला होता है, उसे कभी किसी की आराधना की कोई जरूरत नहीं होती। किसी की प्रशंसा की कोई जरूरत नहीं होती है। कोई लोक-ख्याति की भी जरूरत नहीं होती है और वही व्यक्ति उस उत्कृष्ट को पाने की इच्छा करता है। **जब हमारे पास में उत्कृष्ट है, तो अब हमसे बढ़कर उत्कृष्ट भाव हम किसको देंगे? हमारा आत्मा उत्कृष्ट है, हम जिस परमात्मा का ध्यान कर रहे हैं, वह उत्कृष्ट है, तो अब बीच में तीसरी चीज उत्कृष्ट क्या होगी बताओ?** इसलिए आचार्य कहते हैं...उत्कृष्ट को ध्यान में रखो। जब उत्कृष्ट आपके ध्यान में होगा तो बाकी सब चीजें आपको यँ ही दिखाई देंगी, निकृष्ट सी दिखाई देंगी, तुच्छ दिखाई देंगी और उन चीजों के बीच में रहते हुए भी आप अगर उत्कृष्ट का ध्यान करने लग जाओगे तो आपके ध्यान में कभी भी बाधा उत्पन्न करने वाली कोई शक्ति सामने आएगी ही नहीं। क्योंकि आपका लगाव किससे है? उत्कृष्ट से है। सार किसमें है? उत्कृष्ट में है। वह सार कितना होता है? गिनने लायक नहीं होता है, अनन्त होता है। उसी को हम परम सुख कहते हैं और वह परम सुख, जिस आत्मा में उत्पन्न होता है, उसी को हम सिद्ध आत्मा कहते हैं। ऐसे सिद्ध भगवन्तों का ध्यान करने का नाम ही सिद्धों की आराधना कहलाती है।

परम सुख की प्राप्ति का उपाय

हम उन सिद्धों को इस तरह के गुणों से जब जानने लग जाते हैं तो हमें संसार की सब बातें क्षुद्र समझ में आने लग जाती हैं और हमारी current, अगर इस तरह से बहने लग जाए कि हम अपनी current का use किस-किस ओर करें? उस ओर करें, जिससे बढ़कर दुनिया में कुछ भी नहीं है। अपनी आत्मा को परम आत्म-तत्त्व से जोड़ो और वह परम आत्म-तत्त्व भी हमारे भीतर छिपा हुआ है। **जिन्होंने उस परम आत्म-तत्त्व को प्राप्त कर लिया है, उनका ध्यान करो, उनसे जुड़ो और अपने अन्दर भावना करो कि मुझे भी उसी परम आत्म-तत्त्व की उपलब्धि हो।** यही परम सुख की प्राप्ति का उपाय है। ऐसे परम सुख को प्राप्त करने के लिए किन्हीं राजाओं के, किसी भी तरीके के व्यवहार की, किसी दूसरे को कोई जरूरत नहीं होती है और वह राजा होते हैं तो राजा हमेशा दूसरों के लिए ही सोचते रहते हैं।

राजा श्रेणिक द्वारा अपने अभिमान की सन्तुष्टि के लिए नन्दी गाँव वालों की परीक्षा



राजाओं के पास कितना सा सुख होता है? वह श्रेणिक राजा को देख लो! एक अपमान का दंश सहन नहीं कर पा रहे हैं। बुराई नहीं कर रहा हूँ, वास्तविकता बता रहा हूँ। अगर आप श्रेणिक बनकर आए हो और आपको कोई तवज्जो न दे तो आप बाहर जाकर क्या कहोगे? बोलो क्या कहोगे? कहोगे...आज हमारा आना सार्थक हुआ? नहीं कहोगे न? **राजा के अन्दर यह अभिमान होता ही है और उस अभिमान को कोई भी थोड़ा सा ठेस पहुँचाता है, तो राजा उससे अपनी दुश्मनी बना लेता है। यह राजा के लक्षण होते हैं।** जो अपने अभिमान में दूसरे को न देखें और अगर दूसरा कभी उसके लिए थोड़ी सी insult कर दे और फिर वह सोचे, समय आने पर इससे बदला लूँगा, यह राजा के लक्षण होते हैं। अब वह राजा किस बात का बदला ले रहा है? केवल एक बार उसे उस गाँव के मुखिया ने भोजन-पानी नहीं कराया। इतने में वह राजा बिगड़ गया और तब से कितनी परीक्षा ले चुका है। कितने दिन हो गए, आप लोग भी तंग आ गए होंगे अब तो? नहीं आए? बहुत सारी परीक्षाएँ हो गई और एक के बाद एक, एक के बाद एक परीक्षा होने के बाद भी वह राजा श्रेणिक अभी भी उन नन्दी गाँव के लोगों की परीक्षा कर रहे हैं, परीक्षा ले रहे हैं।

बालू की रस्सी बनाने का आदेश

अब एक बार परीक्षा लेने के लिए उन्होंने एक आदेश पहुँचा दिया। जाओ!, नन्दी गाँव के लोगों से कह देना, एक रस्सी बना कर लाओ और वह रस्सी बालू की होनी चाहिए। किसकी? बालुशाही की नहीं। किसकी रस्सी होनी चाहिए? बालू की। अब भाई! बालू की रस्सी कैसे बनेगी? बालू कहाँ ठहरती है? यही जो बालू, धूल की, कणों की, बालू, जो sand होती है, इसी बालू की रस्सी बना कर लाओ। अब गाँव के लोग परेशान हो गए। नहीं बना कर लाओगे तो गाँव छोड़ो। फिर परेशान होकर पहुँचे...कहाँ? अभय कुमार के पास। आप ही हमारे अन्न देवता हो, आप ही हमारे स्वामी हो, आप ही मेरे प्राण रक्षक हो, आप ही इस गाँव को उजाड़ने से बचा पाओगे। आपके सामने फिर एक प्रार्थना लेकर आया हूँ। उस समय पर अभय कुमार

ने भी सोचा, यह कितनी बार? कितनी बार इनकी परीक्षा में इनके लिए युक्ति बताई जाएगी।

अभिमान को वश में करने का उपाय नम्रता

उस समय पर अभय कुमार ने उनसे कहा कि देखो! **अब की बार तुम राजा के पास जाओ तो एक बार थोड़ी सी नम्रता से निवेदन करके आना। क्योंकि जो अभिमानी होते हैं, वह नम्रता से ही बस में किए जा सकते हैं।** जो जितने बड़े पद पर होगा, वह उतना अभिमानी भी होता है। राजा अभिमान के कारण से तुम्हें परेशान कर रहा है और उसके अभिमान से अगर तुम्हें बचना है, तो उसकी थोड़ी प्रशंसा करना। नम्रता से उसके सामने पेश आना और कहना...राजन! अब हमारे लिए जो कष्ट बार-बार आते हैं, इनसे अब बचाओ, इनको अब रोको, बहुत हो गया है। गाँव के लोग परेशान हो गए हैं। वह अभय कुमार ने कहा कि देखो! अबकी बार जाओ तो राजा से कहना, बालू की रस्सी तो हम बना लेंगे और आपके सामने पेश कर देंगे। राजन! आप क्रोधित नहीं होना। मुझे अपने नगर में एक ऐसी रस्सी नमूना के लिए दे दो और उसी को देख कर, मैं दूसरी रस्सी बना कर आपके पास में ले आऊँगा। जब राजा ने देखा कि इन्होंने हमारे लिए ही प्रति-प्रश्न कर दिया और हम उसका उत्तर नहीं दे पाएँगे तो राजा को क्रोध आना स्वाभाविक था लेकिन उसी समय पर वहाँ के लोगों ने हाथ जोड़ लिए। राजन! अपराध क्षमा हो! अपराध क्षमा हो! आप हमारी कितनी परीक्षा लेंगे? ऐसा हमने कौन सा अपराध कर दिया? जिसके कारण से आप बार-बार हमारी परीक्षा ले रहे हैं। हम लोग तो इतने योग्य नहीं हैं, नितान्त मूर्ख हैं। आप के चरणों में नम्रता से आज निवेदन कर रहे हैं... राजन! अब इसके बाद में इन परीक्षाओं पर रोक लग जानी चाहिए। सब लोग आपके सामने विनम्रता से निवेदन कर रहे हैं और यह निवेदन हो गया।

राजा श्रेणिक द्वारा ली गई परीक्षा

राजा के सामने निवेदन होने के बाद भी सब लोग चले गए और सब लोगों ने सोचा कि चलो अब राजा हमारी बात को नम्रता से, हमारी नम्रता को स्वीकार कर लिया। राजा अब हमारे लिए कोई भी कष्ट अब दोबारा नहीं देगा। अब कोई परीक्षा हमारे लिए नहीं होगी और इस तरह से वे निश्चिन्त होकर दो, चार, पाँच दिन रुक पाए, जी पाए और फिर राजा की एक आज्ञा आ गई। किसकी? **फिर एक दूत भेज दिया उन्होंने, जाओ! नन्दी गाँव के लोगों से कह देना** कि वह बहुत अपने आप को ज्ञानी समझते हैं, बुद्धिमान समझते हैं और हमारे सामने आकर भी, बहुत नम्रता से पेश आकर हमें अपने बस में करने की कोशिश करने में लगे थे लेकिन यह श्रेणिक, इस तरह से बस में नहीं होगा। क्या करना है? उन गाँव के लोगों से कह देना, एक घड़े में हमें बिल्कुल घड़े के बराबर ही जितना कट्टू होता है, जिसे कुष्माण्ड बोलते हैं, वह कट्टू हमें उस घड़े के बराबर ऐसा कट्टू लाकर देना, जो उस घड़े में रखा हुआ हो। न पहले से उसमें उत्पन्न हुआ हो, न उसको उसके अन्दर डाला गया हो। वह घड़े के बराबर होना चाहिए। फिर एक परेशानी में पड़ गए। अगर नहीं लाकर दोगे तो क्या होगा? गाँव छोड़ कर जाना पड़ेगा।

अभय कुमार की बुद्धिमानी से चकित राजा श्रेणिक के सेनापति

अब जब यह प्रश्न फिर उनके सामने आ गया, गाँव के लोग फिर भागे-भागे पहुँचे। कहाँ? अभय कुमार के पास। **बस एक ही सहारा...सबका मालिक, एक। कौन? अभय कुमार।** फिर पहुँच गए अभय कुमार के पास में। अभय कुमार अपनी मस्ती में खेल रहे थे, एक वृक्ष के ऊपर चढ़े हुए थे। जामुन का वृक्ष था और भी उनके कुछ गाँव के संगी-साथी थे, उनके साथ में खेल रहे थे। उसी समय पर, कुछ सैनिक लोग उस समय पर वहाँ से घूमते हुए आ गए और वह सैनिक लोग भी वहाँ पर आकर थोड़े से खड़े हो गए। वे कहीं से थोड़ा सा, बहुत दूर दराज से चल कर आ रहे थे और वह आकर जब वृक्ष के नीचे बैठ गए तो उन्होंने देखा कि यहाँ पर कुछ लोग खेल रहे हैं। कुछ लोग ऊपर वृक्ष पर चढ़े हुए हैं तो उन्होंने कहा कि मुझे इस वृक्ष के फल दे दो। हमारे लोग, यहाँ नीचे जो बैठे हुए लोग हैं, जो आदमी हैं हमारे, इन्हें बहुत देर से भूख लगी हुई है। कुछ खाने को मिला नहीं है। इस वृक्ष के फल दे दो। वे सब लोग श्रेणिक की सेना के लोग थे। सेनापति था और ऊपर कौन बैठे थे? अभय कुमार जी बैठे थे। उन्होंने सोचा, यह सेनापति आज सामने आए हैं, इन्हें थोड़ा सा छकाना चाहिए। बहुत इन्होंने परेशान कर लिया गाँव के लोगों को तो उन्होंने कहा कि भाई फल तो दे दे, कैसा फल चाहिए तुम्हें? गर्म चाहिए, ठण्डा चाहिए? अब वह सेनापति सोचने लग गया कि भाई! फल तो फल होता है, फल भला कैसे गर्म होने लग गया? और कैसे ठण्डा होने लग गया? अगर हम कोई भी एक दे देंगे तो क्या एक शाखा में गर्म और ठण्डे दोनों फल होते हैं क्या? एक ही पेड़ की एक ही शाखा में ठण्डे और गर्म फल कहाँ से हो जाएँगे? सोचते-सोचते उसने, जब कुछ रहा नहीं गया तो उसने पूछ लिया, कह दिया...श्रीमान! कोई बात नहीं, आप हमें गरम गरम फल दे दे। कैसे फल दे दे? गरम गरम फल दे दे। अभय कुमार ने वहाँ से जो फल थे, उन फलों को तोड़ कर, पहले तो उन्हें अच्छी तरह से हाथों में घिसा और फिर वहाँ पर बगल में तपती हुई गर्म बालू पड़ी हुई थी और उस बालू में उनको फेंक दिया और कह दिया जाओ, वहाँ से उठा लो। वे फल खाकर देख लो। वे फल उठाए और वे सब बिल्कुल तप रहे थे, बिल्कुल गरम-गरम हो गए थे, वह सब गरम-गरम फल उन्होंने हाथ में लिए तो वे उनसे खाए नहीं गए। बोले... इतने गरम फल हो गए, इतनी बालू वहाँ पर तप रही थी। तब उन्हें समझ में आया, जिस व्यक्ति से मैं बात कर रहा हूँ, वह व्यक्ति कोई विशिष्ट समझ में आ रहा है और उन्होंने पूछा आसपास के लोगों से कि भाई! इस व्यक्ति का नाम क्या है? उन्हें पता पड़ा...इसका नाम अभय कुमार है और उन सब सेनापति, सब लोगों को पता था कि श्रेणिक के पुत्र हैं और उस श्रेणिक के पुत्र का नाम अभय कुमार है। सब लोग उस अभय कुमार के चरणों में गिर कर प्रणाम करने लग गए और फिर सब लोगों ने जाकर, सेनापति लोगों ने जाकर तब जाकर राजा श्रेणिक को यह समाचार सुनाया। ये नन्दी गाँव के लोग इतने बुद्धिमान नहीं हैं, वहाँ पर आपके पुत्र अभय कुमार रह रहे हैं। उसके कारण से ये लोग आपकी परीक्षा में सफल हो रहे हैं। यह जाकर उन्होंने वह राजा को सुना दिया।

उत्कृष्ट सुख के लक्ष्य से ही सिद्ध सुख की उपलब्धि

राजा ने जब अपने पुत्र के बारे में सुना तो स्नेह उत्पन्न होना स्वाभाविक है और वह स्वाभाविक स्नेह उन्हें क्या कराता है आगे? किस ओर ले जाता है? यह तो आपको आगे बाद में बताएँगे लेकिन आपके अन्दर यह भावना बलवती रहनी चाहिए। यह भावना आपके अन्दर उत्कृष्टता के साथ में रहनी चाहिए कि हमें अपने

जीवन में सुख की प्राप्ति का एक उत्कृष्ट लक्ष्य देखना चाहिए और जो कोई भी लक्ष्य हमारे सामने हो, उसमें उत्कृष्ट सुख की खोज करके, उससे हमें अपना संबन्ध, भक्ति-भावना से जोड़ना चाहिए। आप किसी भी तरह के परमात्मा को माने, इससे कोई प्रयोजन नहीं है। बस! आपको उस परम आत्मा में क्या दिखना चाहिए? उत्कृष्ट सुख दिखाई देना चाहिए और उसी उत्कृष्ट सुख की अपने अन्दर इच्छा करनी चाहिए। ऐसा भाव अगर आप रखेंगे तो आपको कभी न कभी सिद्धों के सुख की भी उपलब्धि होगी।

महावीर भगवान की जय।

**जीवन बनता शून्य में, जीव गर्भ में शून्य।
मरण बाद भी छोड़ तन, जीव करे गति शून्य॥२०॥**

**जोड़ घटाओ शून्य में, रहे एक सा मान।
गुणा करो जिस मान का, शून्य गुणन फल जान॥२१॥**

26. सिद्ध भगवान क्षुधा-तृषा से मुक्त हैं

सिद्धों के सुख



SCAN TO WATCH

अनन्त-अनन्त सिद्धों की आराधना करते हुए आचार्य पूज्यपाद महाराज विरचित सिद्ध भक्ति के माध्यम से आज हम काव्य नंबर सात से आठ की ओर आ रहे हैं। भगवान के सुख की विवेचना सुनने के बाद भगवान के विषय में और भी अधिक जानकारीयाँ लेना, यह हमारे लिए सुखद होता है क्योंकि परम आत्म तत्त्व की जितनी जानकारीयाँ सूक्ष्मता से हमारे लिए उपलब्ध होंगी, हम इस संसार में रहते हुए संसार से ऊपर उठने की उतनी अच्छी कोशिश कर पाएँगे। व्यक्ति के लिए जब जीवन मिलता है, तो उस जीवन में बहुत कुछ कार्य तो उसे वही करने होते हैं, जो सांसारिक रूप में चले आ रहे होते हैं और सभी लोग किया करते हैं। लेकिन अगर उसे अपने इस मनुष्य जीवन में उन सांसारिक कार्यों को करते हुए भी कहीं कोई ऐसी अवधारणा मिल जाती है, कोई ऐसा ज्ञान मिल जाता है जिसके माध्यम से वह व्यक्ति अपने जीवन में अपनी आत्मा को, अपने शरीर को, परम आत्म तत्त्व को समझने की कोशिश कर सके तो वह सबसे बड़े सौभाग्य के क्षण होते हैं। **उन्हीं क्षणों में यह समय आपके लिए प्रस्तुत होता है जब हम, जो संसार में चल रहा है उसके अलावा भी कोई दूसरा संसार है उसकी भी कुछ बातें सुन सकें।** जैसे संसारी जीवों का संसार है ऐसे ही मुक्त जीवों का भी एक संसार है और संसार का मतलब होता है- जहाँ पर लोग बहुतायत में रहते हो। एक-दो लोगों से संसार नहीं चलता। संसार अनेक-अनेक जीवों के माध्यम से चलता है। लेकिन उन मुक्त जीवों का जो संसार है उसमें सबका अपना-अपना संसार है और वह संख्या में अधिक होने के कारण से हम उन्हें संसार कहते हैं। लेकिन उनका अपना एक जीवन है, अपना एक जीने का तरीका है।

सिद्ध भगवान को क्षुधा-तृषा से कोई प्रयोजन नहीं

आचार्य कहते हैं...

‘नार्थः क्षुत्-तृड्- विनाशाद, विविध- रसयुतै-रन्न- पानै-रशुच्या’

उन सिद्ध भगवानों की अगर हम गवेषणा करें, उन सिद्ध भगवानों को देखें, उन परम तत्त्व में लीन ब्रह्म आत्माओं को देखें तो उन आत्माओं के अन्दर न तो किसी भी प्रकार की उन्हें क्षुधा है और न ही उनके लिए किसी तरह की तृषा है। जब क्षुधा-तृषा नहीं है तो फिर कहा जाता है... **‘विविध रसयुतैअन्न पानै न अर्थ’** अर्थात् अनेक प्रकार के रसों से युक्त अन्न-पान से अब उन्हें कोई प्रयोजन नहीं रहा। **खाने-पीने वाले लोग यही पूछा करते हैं कि अगर हम मुक्त बन भी गए और संसारी से अगर हम सिद्ध हो भी गए तो वहाँ पर हमें क्या-क्या मिलेगा?** जिन्हें खाने-पीने में interest आता है, तो उन्हें चिन्ता वही रहती है कि हम अगर कहीं भी पहुँच जाएँगे तो हमें कौन-कौन से रस मिलेंगे? कौन-कौन से व्यंजन मिलेंगे? भगवान बनने के बाद भी खाने-पीने की चिन्ता अगर लगी रहती है तो न तो वह भगवान हो पाते हैं और न ही हम भगवान के बारे में समझ पाते हैं। जब कोई सामान्य व्यक्ति भी भगवान बनने की कोशिश करता है और भगवान बनने

के बाद भी अगर यह कल्पना करता है कि उन्हें भी खाने-पीने को मिलता है, तो यह हमारे लिए बहुत बड़ी एक भ्रम की स्थिति होती है। आचार्य कहते हैं...**उन परम तत्त्व में स्थित जो परमात्मा है, जो सिद्ध भगवान हैं, उनके लिए किन्हीं भी प्रकार के रसों से, व्यंजनों से कोई प्रयोजन नहीं रह जाता है। उनको प्रयोजन नहीं रह जाता है।** यह विश्वास हमारे दिमाग में आ जाए कि जो शुद्ध आत्माएँ हैं, उन्हें किसी भी तरह के भोजन-पानी की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती और भोजन-पानी नहीं मिलता है फिर भी वह प्रसन्न रहते हैं और उसकी आवश्यकता भी नहीं पड़ती क्योंकि भोजन पानी करने के लिए भी भीतर से क्षुधा और तृषा की वेदना होना आवश्यक है।

क्षुधा और तृषा भी एक वेदना

अगर इसे हम धर्म शास्त्र के अनुसार समझें तो यह वेदना कही जाती है और अगर हम इसे आयुर्वेद शास्त्र के अनुसार समझें तो क्षुधा और तृषा का होना शरीर चलाने के लिए आवश्यक होता है। **धर्मशास्त्र के अनुसार यह क्षुधा को वेदना कहा गया क्योंकि धर्म थोड़ा-सा इसी जन्म के बारे में हमें ध्यान में रखने की बात नहीं करता। धर्म हमेशा हमें वह बातें भी सिखाता है जो जन्म-जन्मान्तरों से चली आई हैं।** वह भी बातें हमें धर्म के माध्यम से सीखने को मिलती हैं कि हम अगर जन्म-जन्मान्तरों से इसी तरह से जीते आए हैं तो हम अपने जीने के ढंग को क्या बदल सकते हैं? क्या हम कोई नया जीवन भी जी सकते हैं? ये बातें हमें लौकिक शास्त्रों से नहीं मिलती, यह बातें हमें धर्म शास्त्रों से मिलती हैं। धर्म शास्त्र हमें यह बताता है कि जब भी हमारे लिए शरीर मिलता है हमें क्षुधा और तृषा जरूर उत्पन्न होती है। **भूख और प्यास जरूर उत्पन्न होती है और धर्म के माध्यम से यह पता पड़ता है कि यह भी एक वेदना है, यह भी एक दुःख है** और इस दुःख को दूर करने का हम उपाय करते हैं।

शरीर- गाड़ी या driver?

कभी-कभी तो लोगों को यही पता नहीं रहता है कि यह उपाय कौन करता है और यह किसके लिए किया जाता है? अगर हम आपसे पूछें तो आप लोगों में कितने लोग हैं, जो यह मानते हैं कि हम एक शरीर के रूप में हैं और इस शरीर के साथ-साथ हमारे भीतर भी कोई शरीर को चालित करने वाला, संचालित करने वाला भी कोई एक अलग तत्त्व विराजमान है। यह कितने लोग मानते हैं? **शरीर को संचालित करने वाला भी कोई एक तत्त्व है जिसको हम भीतरी प्राण कहते हैं, जिसे हम चेतना कहते हैं, जिसे हम आत्मा कहते हैं। जिसके होने पर ही यह शरीर संचालित है और जिसके नहीं होने पर यह शरीर संचालित नहीं हो पाता।** जैसे किसी भी तरह की bus है, train है उसको चलाने वाला एक driver भी होता है। Driver bus नहीं होता, bus driver नहीं होती। Driver, driver होता है और bus, bus होती है। उसी तरीके से इस शरीर को चलाने के लिए, यह शरीर भी एक मोटर गाड़ी है, यह भी एक bus है, यह भी एक यंत्र है और इसको चलाने वाला जो होता है, वह अलग होता है ज्ञानवान होता है वह चैतन्य होता है। जैसे गाड़ी चलाने के लिए एक driver के अन्दर एक चैतन्यता होना आवश्यक है, वह ज्ञानवान होना आवश्यक है, सजग होना आवश्यक है। गाड़ी लोहे की हो सकती है किसी और भी धातु की हो सकती है वह निर्जीव हो सकती है लेकिन उसको चलाने वाला जो चालक है उसे सजीव होना जरूरी है। उसी तरीके

से हम सब लोगों का यह शरीर भी एक गाड़ी की तरह होता है और इसको चलाने वाला जो driver होता है वह हमारा केवल मस्तिष्क ही नहीं होता, मन ही नहीं होता, उसके भी परे और एक सूक्ष्म तत्त्व होता है जिसे हम चेतना कहते हैं, आत्मा कहते हैं। उसी को हम जीव तत्त्व कहते हैं।

भोजन विज्ञान

भोजन कौन करता है, कब करता है, किसके हिस्से में जाता है?

अगर हम अपने मन में विचार करने लग जाएं कि हम जी रहे हैं, हम इस शरीर को चला रहे हैं और इस शरीर को चलाने के लिए हमें भोजन भी करना पड़ता है, पानी भी पीना पड़ता है तो हम यह विचार कर सकते हैं कि भोजन पानी कब किया जाता है? कौन करता है? और किसके हिस्से में जाता है? क्या पूछा? **भोजन-पानी कब किया जाता है? कौन करता है? और वह किया हुआ भोजन पानी किसके हिस्से में जाता है? इन तीन चीजों पर विचार करना जरूरी है।** हम आपसे पूछें कि आप भोजन-पान कब करते हैं? क्या बोलेंगे? हम तो महाराज करते ही रहते हैं। जब मिल जाए तब कर लेंगे। अभी दे दो अभी कर लेंगे, शाम को दे दो शाम को कर लेंगे, रात को दे दो रात में कर लेंगे। जब दे दो तब कर लेंगे। बस! अगर नहीं होगा तो कब नहीं होगा? जब हम सो जाते हैं तब नहीं कर पाएंगे। बाकी तो जब तक हम जाग्रत हैं तब तक भी कर सकते हैं।

भोजन-पान कब होना चाहिए?

आपने कभी महसूस किया कि भोजन-पान करने के लिए भी उससे पहले क्या चीज़ हमारे भीतर होना चाहिए? जब भोजन दिख जाए तभी भोजन-पान हो जाता है या भीतर भी कुछ चीज़ होनी चाहिए तब भोजन-पान होना चाहिए? भूख होनी चाहिए। अब बोलो! भोजन-पान होने से हम भोजन करने लग जाएं यह अच्छी बात नहीं और ऐसा होता भी नहीं और ऐसा करने वाले लोग रोगी हो जाते हैं। भोजन-पान हो सामने लेकिन अगर भीतर भूख हो तो वह भोजन पान हमारे लिए प्रयोजनीय है। **भोजन-पान कब किया जाता है? जब भीतर भूख हो।** अभी हम दिन और रात की बात नहीं कर रहे हैं। अभी हम सिर्फ इसकी बात कर रहे हैं कि हमारे अन्दर भूख होना जरूरी है। बिना भूख के अगर आपने भोजन-पान किया तो वह आपके लिए कष्टकर हो जाएगा। एक रोग होता है- कब्जियत का रोग, constipation जिसको कहते हैं। उस दौर से, उस रोग से भी कई लोग गुजरते होंगे। कहने में कई लोगों को शर्म भी आती है लेकिन कई लोग उसके आदी हो जाते हैं। जानते हो क्यों? जिन लोगों के शरीर में हलन-चलन कम होती है और जिन्हें खाने का तो शौक होता है...अच्छा-अच्छा, भारी-भारी भोजन करना, गरिष्ठ भोजन करना, तला हुआ भोजन करना और जिनकी आँतों में ऐसा भोजन करने से पचने की क्षमता कम हो जाती है, तो फिर वह भोजन जो पचता नहीं है, वह आँतों में जब बैठने लग जाता है, चिपकने लग जाता है, तो वही शरीर के अन्दर एक कब्जियत का रूप पैदा कर देता है। फिर उसी के कारण से gas trouble होता है। उसी के कारण से पेट सम्बन्धी रोग होने के बाद में अनेक रोग शुरू हो जाते हैं और इसका मूल कारण जानते हो क्या है? यह उन लोगों के लिए कि जिन्हें जो भी मिल जाए, जब भी मिल जाए बस! खाना है क्योंकि आदत पड़ी

हुई है। कोई भी अच्छी चीज दिखे, बस खाना है। यह भी नहीं देखना है कि हमें उसके लिए भूख लग रही है कि नहीं लग रही है। उसके लिए जो time है, वह appropriate है कि नहीं है। दिन है कि रात है...कि अभी हम कुछ खा कर के आए थे, उसके बाद में हमें क्या खाना है? क्या नहीं खाना है? आजकल लोगों को ऐसा कोई ज्ञान नहीं होता और उसी के कारण से इस तरह के रोग होते हैं।

भोजन बिना भूख के करना अप्रयोजनीय है

सबसे पहली जरूरी चीज क्या है? यह जानना कि भोजन कब करना चाहिए? ज्यादातर लोग यही कहेंगे, जब भोजन सामने हो तो भोजन कर लेना चाहिए। ऐसे लोगों से तो बचना चाहिए। भोजन कब करना चाहिए? आपका समझदारी का उत्तर होना चाहिए कि जब हमें भूख लगे तब भोजन करना चाहिए। भोजन करने के लिए किसकी जरूरत है? भूख की जरूरत है। समझ रहे हो न? थोड़ा-सा हम science अपने भीतर की समझने की कोशिश करें। अब यह भूख लगी और भूख लगने के कारण से हमने भोजन किया तो इसका मतलब यह हुआ कि भोजन करने का कारण भूख है और भूख लगने पर जो कार्य किया जाता है, वह भोजन है। **यह कारण-कार्य की व्यवस्था कहलाती है।** अगर भूख लगेगी, प्यास लगेगी तो आपको भोजन लेना है, पानी पीना है। प्यास नहीं लग रही है तब भी पानी पीना। डॉक्टरों ने कहा है- सुबह से शाम तक 6 litre पानी जरूर पीना चाहिए। अब प्यास लगे या न लगे, इतना पानी बरस रहा है तो भी हमें पानी पीना है, तो आपके लिए वह पानी भी नुकसान कर जाएगा। प्यास लगने पर पानी पीना, भूख लगने पर भोजन करना; अगर यह भी सही ढंग से होगा तो आपके लिए किया गया भोजन आपके शरीर को ताकत देगा, आपके लिए helpful होगा और useful भी होगा। अगर आपने उस भोजन को किया और भूख नहीं लगी और वह कर लिया तो फिर वह कब्जियत का कारण बन गया। कब्जियत का सबसे बड़ा कारण यह है। आपके लिए भूख नहीं है फिर भी आप भोजन कर रहे हो, इसलिए अगर भूख नहीं है तो क्या करें महाराज? यह भी बता दो।

भोजन करने का सही समय

समय पर भूख लगना अपने आप में एक शरीर का व्याधि रहित होने का लक्षण है। समय पर भूख लगना। समय क्या होता है? **जब आपके भोजन का सही समय होता है, वह सही समय वही होता है जब मुनि महाराज भोजन करने निकलते हैं।** भोजन का सही समय क्या होता है? दस बजे से लेकर के ग्यारह बजे तक का समय या नौ से लेकर के ग्यारह बजे तक का समय, बहुत-बहुत बारह बजे तक का समय। बारह बजे से पहले-पहले भोजन कर लेना, भोजन का सही समय होता है। अब आपने भोजन को करने के लिए अपने अन्दर भूख देखी और भूख आपकी समय पर तो लग रही थी लेकिन उस समय पर आपने भोजन नहीं किया तो क्या होगा? कई लोगों की आदत है, दोपहर में दो बजे भोजन करते हैं तीन बजे भोजन करते हैं। यह भोजन करने का सही समय नहीं होता। दो बजे, तीन बजे अगर आप भोजन करते हैं तो इसका मतलब है कि आप अपनी भूख को मार करके फिर बाद में भोजन करते हैं तो वह भोजन आपके लिए सही ढंग से digest नहीं होगा। भोजन उस समय पर, जो हमारी जठरागनी तीव्र होती है और शरीर का जो system है, एक science है, उसके अनुसार जो appropriate time है भोजन करने का, वह दोपहर

होने से पहले का समय होता है। उसके बाद तो थोड़ा आराम का समय होता है फिर थोड़ा सा हल्का कुछ काम करने का समय होता है। फिर कुछ हल्की चीजें खाने का समय होता है पेय पदार्थ लेने का समय होता है। उसके बाद में फिर शाम का समय अलग आता है। अगर आपने दोपहर में दो बजे, तीन बजे भोजन किया तो आप शाम का भोजन कभी time पर नहीं करेंगे। आप रात्रि में भोजन करेंगे तो सारा schedule आपका बिगड़ जाएगा और आपको समय पर जो भूख लगनी चाहिए, वह नहीं लगेगी। time बे time भी अगर लगेगी तो वह भी आपके लिए रोग का कारण बनेगी। यह भोजन का भी एक विज्ञान होता है। हर चीज का एक विज्ञान है। फिर हमें भोजन कब करना चाहिए? जब हमें भूख लगे।

रात्रि भोजन का निषेध क्यों

अब भूख कभी भी लग जाए तो क्या करेंगे? फिर कहा जाता है कि नहीं! भूख लगने के बाद भी देखना कि दिन है कि रात है। **रात में इसलिए भोजन नहीं करना क्योंकि रात में सब कुछ अस्त हो जाता है। सब कुछ सोने की स्थिति में होता है। हमारे शरीर के भीतर जो inner organs होते हैं, वह भी सब rest करने की position में होते हैं।** लेकिन हम उस समय पर उसमें भोजन डाल कर के उन्हें जबरदस्ती काम करने के लिए मजबूर करते हैं तो हम एक तरह से nature के against काम करते हैं। इसलिए जब भूख लगे तो सोचना पड़ता है कि भूख तो लग रही है। लेकिन कब खाना? दिन है तो लेना, रात है तो सोचना। जैसे फूल रात्रि में अपने आप को संकुचित कर लेता है, वनस्पति अपने आप को संकुचित कर लेती है, प्रकृति अपने आप को संकुचित कर लेती है, सूर्य के अभाव में धरती का विकास भी रुक जाता है, प्रकृति का पर्यावरण का हर कार्य रुक जाता है। इसी तरह से हमारे शरीर का कार्य भी सूर्य के चले जाने पर थमने लग जाता है, रुक जाता है। लेकिन हम उस व्यवस्था को भी नहीं स्वीकारते हुए, हम अपने लिए जबरदस्ती भोजन देते हैं या भूख जबरदस्ती रात्रि में भी लगाकर के हम भोजन करने की कोशिश करते हैं तो यह प्रकृति विरुद्ध कार्य हमारे साथ होने लग जाता है। यही सबसे ज्यादा रोगों का कारण बन जाता है। इसलिए यह जानना जरूरी है कि भोजन कब करना? क्या निष्कर्ष निकल कर के आया? **भोजन कब करना? पहली शर्त-** जब भूख लगे तब करना और **दूसरी शर्त-** भूख लगने के बाद भी देखना दिन है कि रात है। **दिन है तो भोजन करना, रात है तो भोजन नहीं करना।** बिना भोजन किए हुए भी अगर रात्रि में सो जाओगे तो ऐसा नहीं समझना कि नींद नहीं आएगी। नींद आ जाएगी, अगले दिन के लिए बहुत अच्छी भूख तैयार हो जाएगी और वह अगले दिन से आपका system सही हो जाएगा। अगले दिन वह भूख आपकी सही ढंग से काम करेगी तो आपके लिए व्यवस्थित ढंग से भोजन पचने लगेगा, आपका शरीर निरोगता की ओर चलेगा।

प्रतिदिन हल्के फुल्के व्यायाम शरीर को निरोगी रखते हैं

प्रकृति के विरुद्ध जो लोग चलते हैं वे लोग जीवन से खिलवाड़ करते हैं। **जीवन में खेलना तो सीखो, खेल खेलो लेकिन जीवन से खिलवाड़ मत करो। आज लोग जीवन से खिलवाड़ कर रहे हैं। खेल खेलना जरूरी है, चाहे वह कोई सा खेल हो।** यहाँ पर tennis, table tennis खेलने वाले लोग बैठे हैं। चाहे वह football का game हो, चाहे cricket का हो, चाहे table tennis का game हो। यह जितने भी

game होते हैं, game खेलना बहुत जरूरी है। पूछो क्यों? यह इसलिए जरूरी है क्योंकि tennis खेलने से, चाहे football खेलने से, आपके शरीर का एक हल्का-फुल्का व्यायाम जो होता है वह अपने आप हो जाता है। जब आप कूदोगे, अपने शरीर से किसी भी तरह की मेहनत करोगे, blood circulation बढ़ेगा, आँतों को बल मिलेगा। जब आप उछलोगे, आँतों में गति मिलेगी और वह जो कब्ज जमा है वह जमी हुई कब्ज भी हिलेगी। कब? जब आप खेलोगे। mobile देखोगे तो कब्ज और ज्यादा जमा होती चली जाएगी क्योंकि आप जहाँ जमे थे, वहीं पर जम कर के बैठ गए और घण्टों आपने वहीं जम कर के निकाल दिए। आपको पता ही नहीं है कि आपने उस खेल से कितना अपना नुकसान कर लिया। जब भी आपके लिए कोई खेल सामने आता है, तो वह खेल भी आपके शरीर को स्वस्थता देने वाला होता है, वह एक हल्का-फुल्का व्यायाम होता है। **जिन लोगों को इस तरीके की पेट सम्बन्धी बीमारियाँ होती हैं उन्हें हल्का-फुल्का व्यायाम करना चाहिए और थोड़ा खेलना भी चाहिए।** वह खेल होने चाहिए इसी तरीके के खेल, mobile के खेल नहीं। Tennis के game हैं, cricket के game हैं, football game हैं, basketball है। ये सब game आपको चलाते हैं, दौड़ाते हैं, हल्की आपके शरीर की exercise कराते हैं। कब्जियत नहीं होगी तो भूख समय पर लगेगी। भूख समय पर लगेगी, भोजन आप समय पर करोगे तो भोजन आपके लिए digest होगा और आपको ताकत देगा। वही ताकत आपके जीवन में बल देकर के आपको आगे बढ़ाएगी और आपके लिए काम आएगी। इसलिए **यह जानना जरूरी है कि भोजन कब करना? भोजन कब करना? क्या सीखा आपने?** भोजन भूख लगने पर करना और दूसरा जब दिन का समय हो सूर्य खिला हुआ हो तब करना।

भोजन कौन करता है?

अब दूसरा प्रश्न आता है कि भोजन कौन करता है? आपसे पूछ रहा हूँ... भोजन कौन करता है? आप कहोगे 'मैं' करता हूँ। अब यह 'मैं' कौन है? जब हमने आपसे बताया है कि आप शरीर भी हैं और शरीर के अन्दर आप भी हैं तो आप किसको 'मैं' कह रहे हैं? भोजन कौन कर रहा है? शरीर भोजन कर रहा है। यह सबके मुँह से निकल रहा है- शरीर भोजन करता है। आपको विचार करना है शरीर भी आपका है और जो 'मैं' कह रहे हो, वह 'मैं' भी आपका है। वह 'मैं' कौन है जानते हो? जिसके कारण से वह शरीर drive कर रहा है जिसके कारण से शरीर में कुछ response आता है शरीर active रहता है वह 'मैं' कौन है? **आत्मा। अब यह बताओ यह भूख किसको लगती है?** हमने यह तो समझ लिया कि भूख लगने पर भोजन करना, लेकिन अब यह समझना है कि भूख किसको लगती है और भोजन कौन करता है? भूख किसको लगती है? बोलो आप बोलो। भूख भी शरीर को लगती है, भोजन भी शरीर करता है। फिर आप क्या करते हो? जो अपना जीव है, वह आत्मा है वह क्या करता है? अगर शरीर ही भोजन करता है तो फिर शरीर तो हमेशा भोजन कर सकता है। उसके लिए फिर भूख लगना, नहीं लगना, यह किसको भूख लगती है?

संवेदना चेतन को ही होती है

पहले यह बताओ कि शरीर चेतन है कि अचेतन है? शरीर चेतन है? शरीर कैसा है? बड़े confuse हो आप

लोग। शरीर चेतन है कि अचेतन है? Table tennis वालों से पूछ रहा हूँ। तुम लोग सुन-सुन कर ज्यादा ज्ञानी हो गए न। **शरीर चेतन है कि अचेतन है?** अगर हमने अपने जीवन में कभी इस तरह की knowledge नहीं ली और ऐसा कुछ decide नहीं किया तो यह भी हमारी एक बहुत बड़ी भूल होती है। धर्म और कोई चीज नहीं है। धर्म का मतलब ही है- **‘to know the real nature of our body and of our soul.’** **Real nature का मतलब?** शरीर का nature कैसा है? चेतन या अचेतन? हमारी आत्मा का nature कैसा है? चेतन या अचेतन? शरीर कैसा है? आपको अभी गाड़ी का उदाहरण दिया था। गाड़ी कैसी होती है और उसको चलाने वाला driver? फिर शरीर कैसा है? शरीर अचेतन है। उसको चलाने वाला जो मैं हूँ, जो मेरा driver है जो मेरी आत्मा है वह चेतन है। अब आप विचार करो कि यह भूख किसको लगती है? अचेतन को भूख लगेगी कि चेतन को लगेगी। बताओ? अब थोड़ा-थोड़ा-सा लोग कम से कम दिमाग तो चला रहे हैं। गाड़ी चल तो रही है कम से कम। गाड़ी में जैसे fuel डाला जाता है, engine काम करने लग जाता है। उसी तरीके से हमारे शरीर में भी fuel डाला जाता है लेकिन उस fuel की आवश्यकता कब किसको पड़ती है? अब बोलो fuel की आवश्यकता driver को है कि गाड़ी को है? fuel की आवश्यकता गाड़ी को है। डालता उसमें कौन है? गाड़ी अपने आप से डाल लेती है? उसमें कौन डालता है? डालने वाला, उसमें fuel डालने वाला वह कौन हुआ? वह चेतन हुआ। जिसमें डाला जा रहा है वह? वह fuel है। वह चेतन है कि अचेतन है? गाड़ी तो अचेतन हो गई। गाड़ी में जो हम petrol डाल रहे हैं वह petrol चेतन है कि अचेतन है? कैसी है? वह भी अचेतन है और गाड़ी को चलाने वाला चेतन है। अगर आपने इतना science समझ लिया न, **हमें कुछ कहने की जरूरत नहीं है कि भारतीय संस्कृति क्या है? जैन धर्म क्या है? वैदिक धर्म क्या है?** बस यह science समझ लो। अगर आपको यह समझ में आ जाए कि चेतन अपने आप में संवेदना रखता है, चेतन में ज्ञान होता है और उसी के कारण से भूख का संवेदन कौन करेगा? शरीर करेगा कि शरीर में रहने वाला जीव तत्त्व करेगा? बोलो! जीव तत्त्व करेगा। अब यह decide हो रहा है न कि चेतन को ही संवेदना होती है। **अचेतन को संवेदना? अगर शरीर हमारा अचेतन है, तो शरीर को संवेदना नहीं होती है। संवेदना किसको होती है?** बोलो! किसी का कोई प्रश्न हो रहा हो तो बीच में पूछ सकते हो। अगर आप कहोगे शरीर को संवेदना नहीं होती है तो फिर शरीर में जब हम सुई लगा देते हैं, काँटा लगा देते हैं तो फिर हमें दर्द क्यों होता है? आप फिर ढंग से सोचने की कोशिश करो। शरीर में सुई चुबोने से, काँटा चुबोने से, शरीर को दर्द होता है कि शरीर में बैठे हुए उस जीव को दर्द होता है। अगर ऐसा नहीं होता तो आपके कभी भी बड़े-बड़े operation नहीं हो सकते थे। Anesthesia देकर के शरीर को कहीं किसी स्थान पर शून्य कर दिया जाता है। वहाँ पर होने वाले sensation से आपका connection disconnect कर दिया जाता है और फिर वहाँ उस जगह पर बड़े-बड़े operation करके आपकी surgery कर दी जाती है। कब हो पाती है? क्योंकि वह अचेतन था, उस अचेतन से जो हमारा contact बन रहा था, उस contact को हमने disconnect किया तो हम अब उस जगह पर कुछ भी कर देंगे तो उस शरीर को कुछ भी नहीं पता पड़ेगा क्योंकि हमारी चेतना उससे अब जुड़ी हुई नहीं है। यह बहुत बड़ी science है लेकिन हम अपने जीवन में इसको समझने का समय ही नहीं निकालते। वह तो आज किस्मत की बात है कि आप लोग सामने आकर के बैठ गए।

शरीर और आत्मा का सम्बन्ध

आज आप जो खेल खेल रहे हैं उस खेल में समझना है कि हम जीवन से कहीं खिलवाड़ तो नहीं कर रहे हैं? जीवन को खेल रहे हैं या शरीर को खिला रहे हैं और यह खेल खेलने वाला भी कौन है? शरीर खेलता है कि मेरा जीव आत्मा खेलता है? बोलो! जीवात्मा खेलता है। किसके साथ खेलता है? शरीर के साथ खेलता है। भोजन कौन करता है अब बोलो? अभी तो कह रहे थे, शरीर करता है। अब कौन करता है? **भोजन कौन करता है? जीवात्मा करता है।** जो भोजन करता है, उस भोजन को करने के लिए जो भूख लगती है, वह भूख किसको लगती है? **जीवात्मा को लगती है। लेकिन भूख किसमें लगती है? भूख शरीर में लगती है।** दोनों चीजें एक-दूसरे से इतनी जुड़ी हुई हैं कि उसको हम ढंग से समझ पाएँ कि भूख किसको लग रही है? किसके कारण से लग रही है? हम उस भूख का जब इलाज करते हैं तो हम किसको दे रहे हैं? यह ज्ञान अगर हमारे दिमाग में सही ढंग से बैठ जाए तो हमारे सारे भ्रम टूट जाएँ। इसी का नाम है- **सम्यग्ज्ञान, right knowledge इसी को बोलते हैं।** यह आपको कभी किसी biology में, किसी zoology में पढ़ने को नहीं मिलेगी। यह आपको इसी तरीके के उपदेश सुनने से, इसी तरीके की science सुनने से आपको समझ में आएगी और आपने पूरी human body के हर part को ढंग से देख भी लिया होगा, आपने अपनी biology में सब चीजें समझ भी ली होंगी लेकिन आज तक आपको इस biology के माध्यम से भी कभी यह पाठ नहीं पढ़ाया जाता कि भूख किसको लगती? भूख किस में लगती? भोजन कौन करता? और भोजन किसमें होता? अब बोलो! भूख किसको लगती है? आत्मा को। किसके कारण से लगती? शरीर के कारण से लगती। भोजन कौन करता? बोलो! जीवात्मा। भोजन किस में जाता? शरीर में जाता।

भोजन कैसा हो? प्रकृति के अनुकूल।

अब मैं आपसे पूछता हूँ, अगर आप समझदार लोग हो। जैसे एक गाड़ी को चलाने के लिए एक driver की जरूरत है, driver का चेतन होना जरूरी है, गाड़ी का अचेतन होना जरूरी है और उस गाड़ी में अगर fuel डाला जाता है तो वह fuel भी अचेतन होना जरूरी है। fuel कैसा होना चाहिए? अचेतन होना चाहिए। लेकिन अगर आपने उस गाड़ी में fuel ऐसा डाल दिया कि उसमें कोई जीव mix है, तो वह गाड़ी फिर चलने में disturb हो जाएगी। इसलिए यह कहा जाता है, जब भी आप भोजन करो तो ऐसा भोजन करो, जिसमें किसी प्राणी की, जीवों की उत्पत्ति न हो रही हो। **वह भोजन आपका अचेतन होना चाहिए, निर्जीव होना चाहिए।** जो गेहूँ हैं, बाले हैं, अन्न हैं सब्जियाँ हैं, ये सब क्या है? यह सब प्रकृति के द्वारा दिया गया, यह अचेतन भोजन है। जब यह प्रकृति से आपके हाथ में आता है, इसके अन्दर कोई चेतना नहीं रहती है। भोजन आपके हाथ में आने तक सब अचेतन हो जाता है। लेकिन अगर आप किसी चैतन्य प्राणी को काटते हैं, मारते हैं, उसका खून बहाते हैं और फिर उसके शरीर का माँस इत्यादि निकालते हैं तो फिर आप उस भोजन को क्या समझेंगे? यह चेतन है या अचेतन है? शरीर अचेतन होते हुए भी उसमें जीव उत्पत्ति हमेशा होती रहती है। माँस में हमेशा जीव उत्पत्ति होती रहती है और वह माँस इतने बड़े-बड़े जीव का, जिसके लिए पाँच इन्द्रियों वाला शरीर, इतना बड़ा-बड़ा शरीर मिलता है और उसके शरीर से उसको हटा करके, कष्टपूर्वक उसे उसके शरीर से दूर करके, जब आप किसी का माँस आदि खाते हैं तो बहुत बड़ा दु-

ष्कृत्य कहलाता है, बहुत बड़ा अपराध कहलाता है।

मांसाहार प्रकृति के विरुद्ध भोजन है

क्यों कहलाता है? क्योंकि यह प्रकृति के विरुद्ध है। अपराध और कोई चीज नहीं है। **प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर चलो तो कोई अपराध नहीं है और प्रकृति के विरुद्ध चले तो वही अपराध हो जाता है।** धर्मशास्त्र बस उस अपराध को रोकने के लिए होते हैं और जब वह अपराध धर्मशास्त्रों से नहीं रुकता, बढ़ता चला जाता है, तो फिर देश के संविधान, राजनीतिक शास्त्र, संविधान शास्त्र बनाए जाते हैं। विधि न्याय-पालिका के शास्त्र बनाए जाते हैं, जिसके माध्यम से इन चीजों को रोकने के प्रावधान बनाए जाते हैं। इसलिए किसी भी सहृदय व्यक्ति को, जिसके अन्दर थोड़ी-सी भी चेतना है कभी भी किसी भी पशु का, व्यक्ति का, पक्षी का कटा हुआ उसका शरीर का मांस आदि कभी नहीं खाना चाहिए क्योंकि उस मांस को प्राप्त करने से पहले उस जीव ने बड़े कष्ट से उसको छोड़ा है। जब आपने किसी मुर्गी को, मुर्गे को, उसके बच्चे को दबाया है उसकी गर्दन दबोची है या किसी भी तरीके से उसको उसे शरीर से छुड़ाया है, तो उसे बहुत कष्ट हुआ है और उसके वह विषाक्त enzymes उसके मांस के अन्दर घुस गए हैं। वह विषाक्त हो जाता है। उसकी पीड़ा उसके अन्दर छुपी हुई रहती है और ऐसे उस पदार्थ को छूना या खाना, यह धर्म शास्त्रों में वर्जित है। क्यों? वह इसलिए क्योंकि **धर्म तुम्हें प्रकृति के अनुकूल जीना, चलना सिखाता है** इसलिए कभी भी जो समझदार लोग हैं, जो अपने आप को यह समझते हैं कि शरीर अचेतन है मैं चेतन हूँ तो मैं किसी दूसरे शरीर को मार कर के, उसकी चेतना को कष्ट देकर के, उससे प्राप्त शरीर से अपने शरीर को मैं क्यों बढ़ाऊँ? अपने शरीर की भूख को क्यों मिटाऊँ? यह तो वह वाला काम हो गया, जैसे कब्रिस्तान के अन्दर उन शरीरों को गाढ़ा जाता है, हम उन शरीरों को अपने पेट के अन्दर गाढ़ रहे हैं। मतलब हम अपने पेट को ही कब्रिस्तान बना लेते हैं। मांसाहार इसलिए प्रकृति विरुद्ध आहार कहलाता है।

अचेतन शरीर का भोजन भी अचेतन होना चाहिए

यह science है। **धर्म को science से अलग मत समझो।** अगर धर्म को science की तरह देखने लग जाओगे तो तुम्हारे दिमाग, तुम्हारे सारे प्रकार के ज्ञान के तन्तु, अपने आप खुलते चले जाएँगे। इसलिए यह **समझना जरूरी है कि हम जो खा रहे हैं, वह खाने वाला fuel भी, इस body के अन्दर डालने वाला fuel भी कैसा होना चाहिए? वह अचेतन ही होना चाहिए।** लेकिन वह अचेतन किसी चेतन को मारकर, कष्ट देकर, उसके शरीर से उसको छुड़ाकर नहीं होना चाहिए। जो हमें प्रकृति से मिल रहा है, सहज है, हमें उसे उपलब्ध करके अपनी भूख को मिटाने का प्रयास करना चाहिए। जो सहज होता है, प्रकृति के द्वारा मिल रहा होता है, जिसमें किसी जीव को कष्ट नहीं होता है, हमें इस तरीके की वनस्पतियाँ, शाक-सब्जियाँ, अन्न-पान आदि लेकर के जब हम अपने भोजन को चलाते हैं तो उस समय पर हमारा धर्म भी चलता है और हमारा शरीर भी उसके साथ में चलता है। **अतः भोजन कौन करता है?** अभी तक आप कह रहे थे भोजन शरीर करता है। भोजन कौन करता है? **भोजन करने वाला चेतना, आत्मा है लेकिन लगता किस में है? जाता किसमें है? भूख को देने वाला कौन है? भूख को देने वाला, भूख देने वाला शरीर है लेकिन उस भूख का अनुभव करने वाला कौन है?** वह मेरा आत्मा है। यह विज्ञान अगर आपके दिमाग में रहेगा

तो आप भोजन करने से पहले सोचोगे...क्या खाने योग्य चीज है? हम अपने शरीर को अगर चलाना ही चाहते हैं तो हम किसी को मार कष्ट देकर, किसी के उस शरीर को हम क्यों खाएँ? जिस शरीर को छोड़ने से पहले उस आत्मा को, उस जीव से उसमें निकलने का कितना कष्ट हुआ होगा। आपकी कोई गर्दन पकड़ ले तो आपकी क्या स्थिति बनती है? हमारे शरीर के अन्दर जो enzymes secrete होते हैं, वह हमारी प्रसन्नता या हमारी पीड़ा के अनुसार होते हैं। अगर आप प्रसन्न हैं तो आपकी body के अन्दर वह enzymes अपने आप release होंगे, जो आपके शरीर को पुष्ट करेंगे। अगर आप पीड़ित हैं तो आपकी body के अन्दर वह enzymes अपने आप, वह hormones अपने आप निकलेंगे, जो आपके शरीर को रुग्ण बनाते चले जाएँगे। आप सोचो, जब आपने किसी जानवर को पकड़ा। उसके हाथ पैर गर्दन सब पकड़े, उसको जबरदस्ती उसके गर्दन पर छुरा चलाया, उसके अन्दर प्रसन्नता है कि पीड़ा है? अगर वह पीड़ा उसकी आत्मा को किसी भी तरीके से दुःखी बना कर के, उस पीड़ा के कारण से, वह कष्ट के कारण से, वह अपना शरीर छोड़ रहा है, तो उस समय पर उसके अन्दर जो hormones उसके अन्दर निकलेंगे, वह किस तरह के होंगे? वह विषाक्त होंगे, वह पीड़ा देने वाले होंगे। वह सब जहरीले काम करने वाले होंगे और ऐसी चीजों का अगर आप सेवन करेंगे तो आपके अन्दर भी वह जहर जाएगा, दूसरे जानवर की पीड़ा भी आपके अन्दर जाएगी। यही कारण होता है कि आज व्यक्ति अपने भोजन-पान पर ध्यान नहीं देने के कारण से जब ऐसा भोजन करने लग जाता है, तो फिर उसे कभी कोई व्यक्ति को मारने में, काटने में सोचना नहीं पड़ता है।

जैसा खाएँ अन्न, वैसा होए मन

आज आप देख रहे हो, बच्चे से लेकर बड़ों तक, सबके हाथ में हथियार हैं। कितनी घटनाएँ रोजाना होती हैं। एक बच्चा, किसी भी बच्चे से अगर कुछ काम करने के लिए मना करता है या कोई शिक्षक उससे मना करता है, उसके गुरुजन मना करते हैं तो सीधा बच्चा उसके पेट में छुरा भोंकता है। कभी आपने सुना था कि schools में, classrooms में शिक्षकों को मारा जाता है। लेकिन आज आप देख लो, रोजाना ऐसी घटने वाली घटनाएँ हैं। कुछ highlight होती हैं, कुछ नहीं होती हैं। **इतना बच्चों का patience down हो चुका है, उनकी tolerance इतनी down हो चुकी है, उनका इतना common sense चला गया है कि उन्हें समझ ही नहीं आता है कि हम यह क्या करने जा रहे हैं?** एक 11 वीं class के बच्चे को एक बार 12वीं Class के बच्चे से कहना हुआ कि भाई! मैं smoking करता हूँ, तुम भी कर लो और वह 12वीं class के बच्चे ने मना किया कि नहीं मैं smoking नहीं करूँगा। सुन रहे हो? आपको अभी हाल की दो-चार दिन पहले की एक घटना बता रहा हूँ। उस बच्चे ने मना किया और उसने देखा कि अरे! यह 11वीं class का बच्चा smoking करता है, तो उसने उसकी शिक्षिका से उसकी शिकायत कर दी। Teacher से उसकी शिकायत कर दी कि आपकी class का बच्चा मेरे लिए smoking करने को अपने को pressure कर डाल रहा था और यह भी smoking करता है। यह बात उस बच्चे को पता पड़ गई। किसको? उस 11वीं class के बच्चे को। तो उसने 12वीं class के उस बच्चे को, जो उसके लिए एक तरह से दोस्त भी था, उसने उसके पेट में छुरा भोंक दिया, उसका murder कर दिया। कारण? तूने मेरी बात शिक्षिका को क्यों बताई? यह क्यों हो रहा है? इसके पीछे कौन सी मानसिकता है?

जीवों के प्रति दया भाव की शिक्षा प्रारंभ से होनी चाहिए

अगर हमें जीवों के प्रति दया का भाव शुरू से नहीं सिखाया जाएगा, अगर हम जीव को जीव नहीं समझेंगे, अजीब को अजीब नहीं समझेंगे तो हम इस तरह के कृत्य करने में कभी भी अपने आप को बचा नहीं पाएँगे। प्राणी को प्राणी की तरह देखना। जिन लोगों के लिए किसी भी पशु को, पक्षी को मारना सहज होता है उन्हें किसी भी मनुष्य को मारना भी उतना ही सहज हो जाता है क्योंकि आदत तो सब जगह काम कर जाती है। वह भी प्राणी है, वह भी प्राणी है। उन प्राणियों के लिए काटा जाता है तो कोई अपराध दर्ज नहीं किए जाते हैं। लेकिन जब किसी मनुष्य को मनुष्य मार देता है, तो फिर उस मनुष्य के ऊपर अपराध दर्ज किए जाते हैं। लेकिन यह अपराध आए कहाँ से? **यह आते हैं ऐसी मानसिकता से, जिसमें व्यक्ति शाकाहार और मांसाहार का अन्तर नहीं समझ पाता।** इसलिए जीवन में वह चीजें समझना जरूरी है कि हम खा रहे हैं तो खाने के लिए तो बहुत कुछ चीजें हैं। यही क्यों खाना? जिसके लिए मना किया जा रहा है वही क्यों खाना? जब यह इस तरह की बात आ जाती है कि नहीं! हम तो यही खाएँगे, हम ऐसे ही खाएँगे तो फिर उनके अन्दर की जो चेतना है, वह चेतना जाग्रत नहीं रहती है। वह सुप्त हो जाती है। वह जाग तो रहे हैं लेकिन चेतना सुप्त है। चेतना के अन्दर कोई संवेदना नहीं है इसलिए वह चेतना कैसी हो गई? सुप्त हो गई। **उस सुप्त चेतना को जगाने का काम ही उपदेश किया करते हैं।** गुरु महाराज कहा करते हैं कि आप सबकी चेतना जागे और आप सोए हुए हैं तो अपने अन्दर यह भेद करना सीखें कि हम कभी प्राणी होकर के प्राणी का कत्ल न करें, उसको न मारे और वह भी एक छोटे से अपने भोजन के लिए। अरे भाई! fuel डालना है, तो fuel तो वही होगा न, जो fuel के रूप में होगा। गाड़ी में कुछ भी डाल दोगे तो क्या करेगा? अटकेगा कि नहीं अटकेगा उसमें? गाड़ी को खराब करेगा कि नहीं करेगा? इसी तरीके से जो मानव के योग्य भोजन होता है वह भोजन अगर हम करते हैं तो फिर भी प्रकृति हमारा साथ देती है और अगर हम उस भोजन के अलावा कुछ और मांसाहार करने लग जाते हैं तो प्रकृति भी हमें जल्दी समाप्त कर देती है। इसलिए **यह जानना जरूरी है कि कौन खा रहा है? कौन खिला रहा है? किसको खिला रहा है?** जब हम यह समझेंगे कि मैं खा रहा हूँ, चेतना। तब खिलाने का काम किस में हो रहा है? शरीर में हो रहा है, तो हम इसको गलत-सलत क्यों खिलाएँ? अच्छा न खिलाएँ। यह विचार इसी विचार से आने लग जाएगा, अगर आप सोचने लगे, खाने वाला कौन? चेतना! लेकिन चेतना कभी भी खा कर के भी पुष्ट नहीं होता। खाएगा कौन? शरीर। हमसे छूटेगा कौन? यहीं पड़ा रह जाएगा, कौन? और हम इस शरीर के लिए अगर कुछ भी खा लेंगे, कुछ भी करेंगे तो यह अज्ञानता किसकी होगी? शरीर की कि हमारी? भूख की कि हमारी? भूख तो शरीर के कारण से सिर्फ लगी है। आपको उस भूख को समाप्त करने के लिए कुछ देना है, तो आचार्य कहते हैं आप उसके लिए वह दे, जो उचित है। इसलिए यह जानना जरूरी है कि हम भोजन कब करें? भोजन कौन करता है और भोजन किसके लिए किया जाता है? शरीर को चलाने के लिए। अगर यह ज्ञान आपके अन्दर आ जाएगा कि भोजन शरीर को चलाने के लिए किया जाता है, तो फिर आप शरीर को चलाने के लिए, जो अच्छी चीजें होंगी, वही देंगे क्योंकि चलाने वाला अलग है और चलने वाला अलग है। Driver अलग है और गाड़ी अलग है और fuel अलग है। लेकिन उस fuel को कैसा fuel होना चाहिए? **इसकी समायोजना करने का ज्ञान किसको होता है? Driver को कि गाड़ी को? Driver को।** पेट कभी आपसे नहीं कहता, भूख कभी आपसे नहीं कहती, मुझे यह खाना है। यह decide कौन करता है? मुझे शाकाहार लेना है कि मांसाहार लेना है? decide कौन करेगा? पेट? भूख? कौन करेगा बोलो?

शरीर और चेतना का खेल

यह अगर आपने समझ लिया तो आपको जीवन का सही खेल समझ में आ जाएगा। Tennis खेलने के बावजूद भी आपको यह खेल समझ में नहीं आया होगा, जो खेल आज आपको एक घण्टे के इस ज्ञान से समझ में आ सकता है। यह खेल हम दूसरी ball के साथ खेल रहे हैं, वह तो दूसरी चीज हो गई। लेकिन **एक खेल हमारा शरीर और हमारी चेतना के साथ हमेशा चलता है।** वह खेल जानना भी जरूरी है और यह खेल जिसमें हम ही खिलाड़ी होते हैं, हमारा शरीर ही हमारे लिए एक ball की तरह होता है और हम उसको किसी भी तरीके से खिलाएँगे तो हमें ध्यान रखना पड़ता है कि उसी तरीके से safety के साथ इस शरीर को खिलाएँ, जिससे कि शरीर में समय से पहले कोई रोग न हो जाए और शरीर अपनी स्वस्थता के साथ, पूर्ण उम्र के साथ जी सके। यह ध्यान रखना किसका काम है? **खिलाड़ी का और खिलाड़ी किसको कहते हैं? शरीर खिलाड़ी है कि चेतना खिलाड़ी है?** चेतना खिलाड़ी है और चेतना जब खेल रहा है, तो किसके साथ खेल रहा है? पहले तो शरीर के साथ खेलता है। दूसरी tennis, ball, table तो बाद में आती हैं। अगर शरीर ही आपका खड़ा होने लायक नहीं है, शरीर ही आपका स्वस्थ नहीं है, तो आप अपने हाथ में ball कैसे लोते और कैसे आप किसी भी table पर कैसे मारोगे उसको? कैसे ball को आगे बढ़ाओगे? वह कुछ नहीं हो सकेगा तो सबसे पहले खिलाड़ी खेलने के लिए किसको तैयार करता है? शरीर को तैयार करता है। दूसरी ball, table तो बाद में आती है, bat तो बाद में आते हैं। **पहले तैयारी हमारी यह होनी चाहिए कि हमारा शरीर स्वस्थ है** कि नहीं है और शरीर की स्वस्थता खेल से भी आती है। खेल के कारण से शरीर अगर स्वस्थ होता है, तो आपके लिए वह खेल उतना ही उपयोगी होना चाहिए, जितना हमें अपने शरीर में भोजन देने के लिए, शरीर को चलाने के लिए भोजन उपयोगी होता है। खेल भी जरूरत से ज्यादा खेल लिया जाए तो क्या होता है? यह भी एक दौड़ नहीं बन जानी चाहिए। यह enjoyment की चीजें हैं। ये हमारे लिए स्वास्थ्य देने वाली चीजें हैं। ये चीजें हमारी इस तरीके की tension के कारण नहीं बन जानी चाहिए कि भाई हम खेलते-खेलते district level पर पहुँचे और वहाँ पर हम पास नहीं हो पाए, वहाँ से आगे नहीं बढ़ पाए। खेल से कभी tension होगा? खेल को खेल की तरह खेलो। खेल से भी अगर आपका career बनता है, तो बनने दो कोई बात नहीं। लेकिन खेल से अगर career न भी बन पाए तो भी हमें depressed नहीं होना चाहिए कि खेल के बिना हमारा कोई जीवन नहीं है। **हमारा जीवन तो हमारी श्वासों से चलता है और साँसों से चलने वाला यह खिलौना, जिससे यह चेतना हमेशा खेलती रहती है और वह देह का यह खिलौना, जिसके कारण से चेतना उसमें हमेशा खेलती रहती है।** अगर हम संसार में किसी भी तरह के खेल खेलते हुए असफल भी होते हैं और उस समय पर हम अपने खेल को ध्यान में ले आते हैं। कौन सा खेल?

साँसों की चाबी से चलता तेरा देह खिलौना, साँसों की चाबी से चलता...

बच्चों-सा यह खेल सदा ही तुझको लगा सलोना, बच्चों सा यह खेल सदा ही...

समय मिला न आत्म ध्यान का, समय मिला न... अब मृत्यु आई

कोई भी न करे जिसे वह काम करो भाई।

अरिहंतों की प्रतिमाओं का ध्यान धरो भाई कोई भी न करे जिसे वह काम करो भाई ।।

बस! खेल थोड़ा-सा ही खेलना चाहिए। गीत भी छोटा-सा होना चाहिए। थोड़ी-थोड़ी सी ये चीजें हमारे जीवन में आनन्द भरने के लिए और आगे बढ़ने के लिए आवश्यक होती हैं। इसलिए भोजन भी थोड़ा ही करना चाहिए। उतना ही करना चाहिए, जितनी हमारी भूख कहे। लेकिन अगर कभी आप अपनी भूख को जरूरत से ज्यादा बढ़ा लेते हैं तो वह भी आपके लिए नुकसानदायक है और भूख अगर बिल्कुल नहीं लगती है, तो वह भी नुकसानदायक है। भूख भी कैसी होनी चाहिए? balanced होनी चाहिए।

भूख खोलने के उपाय

कुछ लोगों के लिए भी दिक्कत हो सकती है कि भूख नहीं लगती है महाराज! क्या करें? अगर आपको भूख नहीं लगती है, तो आप भूख लगाने के लिए भोजन से पहले टमाटर होता है न, टमाटर! tomato juice, उसका sauce भी ले सकते हो। भोजन से पहले एक गिलास, हल्का-सा उसमें थोड़ी-सी काली मिर्च डली हो, हल्का-सा उसमें नमक डला हो। अगर आपको और अच्छा-सा taste लाना हो तो थोड़ा-सा हल्की-सी उसमें मीठा भी डाल सकते हो और फिर उसके बाद में, वह जो tasty बन जाए, आप पहले एक गिलास tomato juice पी लो। फिर एक घण्टे के बाद में आप भोजन करने के लिए बैठो। समझ आ रहा है? थोड़ा-सा आपको लगेगा कि हाँ! भूख खुल कर के लगने लगी है। ऐसे भूख लगाई भी जाती है। अगर आपको कोई constipation की बीमारी है, तो आपको भूख नहीं लगेगी तो क्या करना पड़ेगा? **पहले के लोग जानते हो क्या करते थे?** जो तांबे का बर्तन होता था, तांबे के लोटे होते थे, इनमें पानी भर के रख लो। शाम को रखा हुआ पानी, रात भर का रखा हुआ पानी, सुबह उसको पी लो। अगर आपको लगे कि पानी ठण्डा है, आपके लिए नुकसान कर सकता है, तो हल्का-सा गर्म करके, गुनगुना करके, उसमें थोड़ा-सा नमक डाल लो और पी लो। जब आपके भीतर की गन्दगी साफ हो जाएगी, पेट साफ हो जाएगा, भूख अपने आप खुल करके लगने लग जाएगी। पहले के लोग तो तरह-तरह के चूर्ण भी खाते थे, आज लोग जानते भी है कि नहीं? एक कायम चूर्ण आता था, कायम चूर्ण। आज भी आता है? जमाल घोट भी लोग खा लेते थे। ये सब चीजें किसलिए? जो भीतर जमा हो गया है, उसको साफ होना चाहिए। तभी आपके लिए आंतें स्वस्थ होंगी तो स्वस्थता से आपके लिए भूख का एहसास होगा। भोजन करने के बाद भी, उस भोजन को पचाने के लिए, अगर आपके लिए भोजन ढंग से नहीं पचता है, तो भोजन के बाद भी छाछ होती है- छाछ! हल्की-सी उसमें अजवाइन डालो, हल्का-सा उसमें नमक डालो और भोजन के बाद में ऐसी छाछ लो। आपके लिए लिया हुआ भोजन सारा का सारा अच्छे से digest होगा। भूख को सही मात्रा में तो लगाओ। न ज्यादा होनी चाहिए, न कम होनी चाहिए। लेकिन धीरे-धीरे अगर आपको यह लगने लग जाए कि हे भगवन्! यह भूख भी वेदना है। हर रोज इसको दूर करना पड़ता है। फिर **आप सिद्ध भगवानों को याद करना। धन्य है वह सिद्ध भगवान, जिन्हें किसी भी प्रकार के भोजन-पानी से अब कोई प्रयोजन नहीं रहा।** हे सिद्ध भगवान! मैं आपकी शरण में आना चाहता हूँ और मैं भी इस क्षुधा रोग से हमेशा के लिए मुक्ति पाना चाहता हूँ।

सिद्ध भगवान बिना गाड़ी और ईंधन के driver हैं

यह विचार भी तो कभी-कभी किया जा सकता है। कभी नहीं किया जा सकता? भगवान की तरह कि हे भगवन्! मैं कब तक यह fuel देता रहूँगा? कब तक यह गाड़ी चलाता रहूँगा? **मैं तो driver हूँ। गाड़ी मेरी नहीं है, मेरे लिए सौंप दी गई है। भाई! तुझे इस गाड़ी को चलाना है।** मैं बिना गाड़ी के भी रह सकता हूँ कि नहीं? driver बिना गाड़ी के भी रह सकता है कि नहीं? सुन रहे हो? जो driver बिना गाड़ी के रह रहे हैं उन्हीं का नाम है- सिद्ध भगवान। क्या बोलते हैं? बिना गाड़ी के, बिना body के, बिना fuel के जो जी रहे हैं, उन्हीं का नाम है- सिद्ध भगवान। ऐसे सिद्ध भगवान को आप याद करना और अगर वह सिद्ध भगवान आपको याद रहे तो आप इस मंत्र को जपते रहना.. **‘ओं अर्ह नमः’ ‘ओं अर्ह नमः’!!**

संसार को तोड़ने के उपाय

राजा श्रेणिक ने पूछा था...भगवन्! इस संसार में रहते हुए, हम इस संसार को कैसे तोड़े? कैसे? **क्या काम करें जिससे कि हमें संसार से मुक्ति मिले? उन्हें क्या करना है? क्या करना है?** ऐसे सिद्ध भगवानों को बार-बार याद करना है। खाने से पहले भी याद करना है और खा लेने के बाद भी याद करना है। कम से कम याद तो कर लो, कोई बात नहीं। भोजन जरूरी है, खाना-पीना जरूरी है। खा लो लेकिन खाने से पहले तो भगवान को याद कर लो। **कौन से भगवान? बताओ? आज से कौन नियम लेगा?** केवल अपने अन्तर्मन में भावना लाना है जैसे ही हमारे सामने भोजन आए, हम एक second के लिए अपने अंतर्ध्यान में, अपनी भले ही आँखें खोल कर के, हम यह मन में विचार करें। ऐसे अनन्त सिद्ध आत्माएँ हैं जिन्हें भोजन की कोई आवश्यकता नहीं है। **मैं उन सिद्ध आत्माओं को स्मरण करके यह भोजन शुरू करता हूँ। बस! और कुछ नहीं करना आपको। क्या सोचना आपको? ऐसी अनन्त आत्माएँ हैं, जिन्हें भोजन की जरूरत नहीं। जो बिना भोजन के जी रहे हैं, तृप्त हैं, मैं उनकी स्मरण करके यह भोजन कर रहा हूँ।** कर पाओगे? Tennis खिलाड़ी बोलो? इतना तो कर पाओगे न? आपको कुछ सोचने की जरूरत नहीं होगी। आत्माएँ जहाँ होंगी, होंगी। जो भी pure souls हैं, जिन्हें body के बिना रहना आता है। बस! आपको इतना सोचना है कि बस भोजन करने से पहले हमें स्मरण करना है कि वे सिद्ध आत्माएँ धन्य हैं जिन्हें भोजन की जरूरत नहीं है। बस! इतना मन में विचार लाना है। बस! आपको इतना ही सोचना है। भोजन से पहले, क्या बोलोगे? बोलो? वह सिद्ध आत्माएँ धन्य हैं जिन्हें भोजन की जरूरत नहीं है। बस! इतना सोचना है। मैं धन्य नहीं हूँ क्योंकि मुझे भोजन करना पड़ रहा है। बस! इतना-सा आपको विचार लाना है। धर्म क्या है? यह आपको अपने आप समझ में आने लगेगा। soul की purity क्या होती है? यह आपको अपने आप अनुभव में आने लगेगी।

राजा श्रेणिक के अभय कुमार के लिए चतुर प्रश्न



SCAN TO WATCH

राजा श्रेणिक ने जब अभय कुमार को अपने पास में बुलाने के लिए अपने दूत भेजे तो उस समय पर उन्होंने अभय कुमार के लिए भी एक बहुत बड़ी शर्त रख दी। अब पिता और पुत्र दोनों ज्ञानी हैं। **ज्ञानी का ज्ञानी से मिलन भी ज्ञान के माध्यम से ही होगा।** राजा श्रेणिक ने अपने पुत्र अभय कुमार के लिए भी शर्त रख दी। क्या रख दी? बोलो! लेकर के आओ,

अभय कुमार को। लेकर के आना जरूरी है, राज दरबार में आना जरूरी है, राज महल में आना जरूरी है। लेकिन कैसे लाना? न भूखे पेट आना, न भरे पेट आना। कैसे आना? न दिन में आना, न रात को आना। न दिन में आना, न रात में आना और न किसी सवारी पर चढ़ के आना, न पैदल आना, ऐसे आना। अभय कुमार को ले कर आना। समझ में आ रहा है या नहीं आ रहा है? इन तीन प्रश्नों का उत्तर आप लोग सोचना और समझ में नहीं आए तो कल इसी समय पर उपस्थित होना आपको उत्तर मिलेगा।

महावीर भगवान की जय

**भाग देय यदि शून्य में, संख्या बने अनन्त।
यही शून्य की शक्ति है, करे भाग फल नंत॥२२॥**

**बाहर से सब ही भरे, पर भीतर से शून्य।
आत्म बोध निज बोध बिन, अन्तस सबका शून्य॥२३॥**

27. भक्ति और श्रद्धा

भगवान की भक्ति में श्रद्धा का स्थान



धर्म प्रेमी भव्य आत्माओं, प्रतिदिन की भाँति आज आपके समक्ष राजा श्रेणिक के माध्यम से प्रश्न पूछा गया है और भगवान के ज्ञान में जो भी पदार्थ झलकते हैं और भगवान जिस तरह से उपदेश देकर के अनेक शिष्यों को उसका ज्ञान कराते हैं, वही ज्ञान परम्परा से प्राप्त होता हुआ प्रवाहित होता रहता है और जितनी भी चर्चाएँ की जाती हैं, सब उसी ज्ञान के आधार पर की जाती हैं। वर्तमान में न हमने समवशरण देखा है, न हमने भगवान को देखा है लेकिन फिर भी **जिन्हें तीर्थकर भगवान के प्रति श्रद्धा होती है, वे भगवान को भी देखते हैं, भगवान का दर्शन भी करते हैं, भगवान के समवशरण में भी जाते हैं और भगवान से प्रश्न भी पूछा करते हैं। जब प्रश्न पूछते हैं तो उन्हें समाधान भी प्राप्त होते हैं।** जब हम भगवान की भक्ति करते हैं तो भक्ति करते हुए हमें अनेक तरह के उन भगवान के स्वरूप दिखाई देते हैं और उन अनेकों स्वरूपों में दो स्वरूप प्रमुख हुआ करते हैं। एक अरिहन्त भगवान का स्वरूप और एक सिद्ध भगवान का स्वरूप। अरिहन्त भगवान के बारे में अक्सर लोग जानते हैं, चर्चा करते हैं और अरिहन्त भगवान का दर्शन भी करते हैं, भक्ति भी करते हैं और उनकी भक्ति करने में मन भी लगता है क्योंकि उनका शरीर हमें दिखाई देता है, वह सशरीरी होते हैं।

अशरीरी सिद्ध भगवान की भक्ति तथा पूजा में द्रव्य का प्रयोजन

सिद्ध भगवान की भक्ति करना, सिद्ध भगवान के बारे में जानना, सिद्ध भगवान के गुणों में उत्सुक होना यह थोड़ा सा कम होता है। उस कमी की पूर्ति करते हुए ही यहाँ पर यह प्रयास किया जा रहा है और आपको निरन्तर सिद्ध भगवान के विषय में कुछ चर्चा करते हुए कहा जा रहा है। सिद्ध भगवान की भक्ति करते हुए आचार्य पूज्यपाद महाराज ने जो बात कही है उसी को आपके सामने प्रतिदिन रखा जाता है। कल भी आपने सुना था कि भगवान को किसी भी प्रकार के व्यंजनों से, अन्न-पान आदि से कोई प्रयोजन नहीं रहता है क्योंकि उनके अन्दर क्षुधा, तृषा आदि का अभाव हो चुका होता है। इसी तरह से आचार्य आगे कहते हैं कि भगवान के लिए किसी भी अशुचि पदार्थ का स्पर्श नहीं होने से

नार्थः क्षुत्-तृड्-विनाशाद, विविध-रस-युतै- रन्न-पानै-रशुच्या।

नास्पृष्टे-गन्ध-माल्यै-र्न हि,

आज आचार्य पूज्यपाद के इन शब्दों की ओर देखते हैं कि **किसी भी प्रकार के अशुचि पदार्थ से उनका स्पर्श नहीं होने से अर्थात् अशुचिता का किसी भी प्रकार से कोई भी उन भगवान को छूना नहीं होता या कोई अशुचि पदार्थ उन भगवान को छू नहीं पाते।** इसलिए उन्हें किसी भी प्रकार के गंध माला, पुष्प माला, गंध, सुगंध आदि की कोई जरूरत नहीं रह जाती। यहाँ हेतु बताए जा रहे हैं। भगवान के चरणों में जब हम जाते हैं, उनकी पूजा करते हैं तो हम शायद इन सब चीजों का, उनके चरणों में क्षेपण भी करते हैं। **विशेष रूप से आप लोग जब पूजा करते हैं, भगवान के सशरीर अवस्था की पूजा करते हैं, अरिहन्त**

भगवान की पूजा करते हैं और जब भगवान का स्वरूप सिद्ध अवस्था में भी आपको समझ में आता है तो आप उनकी भी पूजा करते हैं। यह पूजा के द्रव्य भी होते हैं और हम जितने भी द्रव्य पूजा के चढ़ाते हैं, उन पूजा के द्रव्यों से भगवान को कोई प्रयोजन नहीं होता है। चाहे हम विविध प्रकार के व्यंजन चढ़ाएँ, नैवेद्य चढ़ाएँ, अन्न पान आदि चढ़ाएँ उनसे भी उनको कोई प्रयोजन नहीं होता और भगवान के लिए किसी भी प्रकार की गंध आदि से भी कोई प्रयोजन नहीं होता। किसी भी तरह की फूल माला, पुष्प माला, सुगंधित पदार्थ इन पदार्थों से भी भगवान को कोई प्रयोजन नहीं होता क्योंकि भगवान के अन्दर किसी भी प्रकार की कोई अशुचिता नहीं बची है।

हमारी अशुचिता का बोध हमसे कराता है, सुगन्धित चीजों का इस्तेमाल

यहाँ कारण बताया जा रहा है...जब भी हम अपनी घ्राण इन्द्रिय के माध्यम से गंध, फूल आदि का सेवन करते हैं तो उसके पीछे एक भीतर का जो कारण रहता है, वह कारण यहाँ बताया जा रहा है। जब हमें किसी भी अशुचिता का स्पर्श होता है तब हम इस तरह की सुगन्धित चीजों का इस्तेमाल करते हैं। जब हमें अपने शरीर से भी अशुचिता का भान होने लग जाता है तब हम इस तरह की गंधों का इस्तेमाल करते हैं। पुष्प मालाएँ, फूलों की मालाएँ, तरह-तरह के चन्दन, केसर आदि की सुगंध इन पदार्थों का इस्तेमाल व्यक्ति कब करता है? वह व्यक्ति जब किसी भी तरह से अपने शरीरगत अशुचिता का स्पर्श होते हुए भी उससे बचने की कोशिश करता है, तब करता है। अथवा कोई शौक में आकर भी उसका, पदार्थों का scent आदि का विशेष रूप से इस्तेमाल किया जाता है। अशुचि पदार्थ अगर हमारे पास में नहीं हैं तो इस तरह के सुगन्धित पदार्थों का इस्तेमाल करने का कोई प्रयोजन ही नहीं रहता है। यानि जब भी आपको किसी भी तरह की सुगन्धित पदार्थों की आवश्यकता पड़ेगी तो आपके अन्दर कहीं न कहीं भीतर एक भाव होगा कि हमें जो मिल रहा है, उससे और अच्छी सुगंधि की प्राप्ति हो और यह भाव सिद्धों में नहीं होता, भगवन्तों में नहीं होता।

पूजा में द्रव्य चढ़ाने का हेतु

भगवन्तों का जब हम दर्शन करें, उनके पास में जब हम जाएँ तो हम यह जान करके रखें कि किसी भी तरह से भगवान के पास में कोई भी अशुचिता नहीं है, इसलिए उन्हें किसी भी प्रकार के गंध लेपन या सुगन्धित पदार्थों को ग्रहण करने की कोई आवश्यकता नहीं है। लेकिन हम भगवान के पास में हर वह पदार्थ चढ़ाते हैं, जो हम अपने लिए उपयोग में लाते हैं और भगवान के किसी उपयोग में नहीं होते हैं। आपने भोजन-पानी चढ़ा दिया नैवेद्य के रूप में। सुगन्धित चन्दन भी चढ़ाया जाता है- **‘भव आताप विनाशनाय चन्दनं निर्व-पामीति स्वाहा’** यह आपने सुगन्धित चन्दन चढ़ाया भगवान के चरणों में, किस लिए? चन्दन अगर भगवान के चरणों में चढ़ाया तो वह भगवान के लिए चन्दन ही आपने अर्पित क्यों किया? वह सुगन्धित पदार्थ ही आपने क्यों अर्पित किए? उस समय पर आपके ज्ञान में आना चाहिए कि जिन-जिन पदार्थों से भगवान का सम्बन्ध छूट गया है, हम वही पदार्थ भगवान के चरणों में चढ़ा रहे हैं। **जिन-जिन पदार्थों से भगवान के लिए अब कोई प्रयोजन नहीं रहा है, हम उन्हीं-उन्हीं पदार्थों को भगवान के चरणों में समर्पित कर रहे हैं, यह ज्ञान लेने के लिए कि हे भगवन्! आपका इन पदार्थों से कोई प्रयोजन नहीं रहा है।** यह ज्ञान भी, यह स्मरण भी हमें भगवान के इस तरह की पूजा की विधि से आता है।

भक्ति-भाव सहित पूजा में द्रव्य का स्थान

आप क्या समझते हैं? जब भगवान की पूजा करते हैं हमने बहुत ही महत्वपूर्ण या बहुत ही मूल्यवान अगर हमने कोई पदार्थ चढ़ा दिया है, तो भगवान के लिए ज्यादा प्रसन्नता हो जायेगी, ज्यादा भगवान खुश हो जाएँगे, आप यह समझते हैं। जबकि ज्ञानी लोग कभी भी जब भगवान की विवेक पूर्ण पूजन करते हैं तो क्या समझ कर करते हैं? हम चाहे अक्षत चढ़ाएँ, चाहे चन्दन चढ़ाएँ, चाहे हम किसी भी तरह के नैवेद्य चढ़ाएँ उसके पीछे का प्रयोजन क्या होता है? यह याद आना, **यह स्मरण आना कि हम भगवान को जो चीजें समर्पित कर रहे हैं, वह भगवान के किसी भी काम की नहीं है और भगवान को उन चीजों से कोई प्रयोजन नहीं रहा है।** इसलिए हे भगवन्! ये चीजें आपके लिए प्रयोजनीय नहीं हैं, इसलिए आपके चरणों में छोड़ी जा रही है। कौन सी चीजें भगवान के चरणों में छोड़ी जाती हैं? जिनसे भगवान को कोई प्रयोजन नहीं रहा। पूजा करते-करते शायद उम्र पूरी होने वाली होगी लेकिन जब भी हम जल, चन्दन, अक्षत, नैवेद्य, धूप आदि कोई भी चीजें चढ़ाते हैं तो उस समय पर हमारे ज्ञान में यह वाली बात आती नहीं है। हम क्या सोचते हैं? अगर हम भगवान के चरणों में धूप चढ़ाएँगे तो हमारे अष्ट कर्म दहन हो जाएँगे, इसलिए हम क्या बोलते हैं? **‘अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति, भव आताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा’** हमारे लिए कारण क्या समझ में आता है? कि भगवान के चरणों में चन्दन चढ़ाने से संसार ताप का विनाश होता है। भगवान के चरणों में धूप आदि सुगन्धित पदार्थों का क्षेपण करने से अष्ट कर्मों का नाश होता है, यही तो ज्ञान में आता है।

द्रव्य तो माध्यम है, भावों की अभिव्यक्ति में

अगर आपने बिना ज्ञान की पूजा की होगी तो यह भी ज्ञान में नहीं आएगा और कभी-कभी कोई शिविर लग गए हों, कोई पूजा आदि के अर्थ आपने पढ़ लिए हो, कोई विद्वान आ करके आपको पूजा आदि का पूरा अर्थ बता गए हो तो आपके दिमाग में अब अर्थ सहित, भाव सहित पूजा होगी। फिर क्या बैठ जाएगा आपके दिमाग में? पूजा के जब अर्थ बताए जाएँगे तब क्या पढ़ाया जाएगा? भगवान के चरणों में चन्दन इसलिए चढ़ाना चाहिए कि भगवान के चन्दन चढ़ाने से संसार ताप का विनाश होता है। धूप इसलिए चढ़ाना चाहिए कि अष्ट कर्मों का नाश होता है। क्या धूप चढ़ाने से ही अष्ट कर्म का नाश होता है? और कोई चीज चढ़ाओगे तो नहीं होगा? अगर आपने नैवेद्य चढ़ाते हुए बोल दिया **‘अष्ट कर्म विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा’** तो क्या होगा? बोलो-बोलो, पूजा गलत हो जाएगी। क्या कहोगे? इसको पूजा करना भी नहीं आता। ऐसे ही बोला जाएगा न? अगर आपने बोल दिया... **‘संसार ताप विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा’** तो भी कहा जाएगा तुम्हें पूजा के अर्थ बोलना नहीं आता। अब आप सोचो हम जिस तरह से चीजों को सीख लिए हैं, हम अपनी धारणा को जिस तरह से बना लिए हैं हमारी धारणा एक-एक अर्थ के प्रति भी बिल्कुल वैसी की वैसी बन चुकी है। अगर हमने कहीं एक अर्थ के लिए प्रयोजन दूसरा बदल दिया तो हमें लगता है कि हमने गलत कर दिया। **‘संसार ताप विनाशनाय’** यह प्रयोजन है और अगर वह प्रयोजन कहीं नैवेद्य के साथ जुड़ गया कि दीपक के साथ जुड़ गया तो आपकी पूजा गलत मानी जाएगी। आपको लगेगा हमने आज गलत पूजा कर ली है। हो सकता है कि आपको इतना गलत लगे कि आप हमसे आकर के कहने लगे महाराज! आज हमसे पूजा में गलती हो गई कोई प्रायश्चित्त दे दो। बात- बात पर लोग चले जाते हैं प्रायश्चित्त

लेने के लिए। यह दोष लग गया, आज हमें भगवान की पूजा करते हुए, चन्दन बाद में चढ़ा पाए, पहले हमने अक्षत चढ़ा दिए, चन्दन हमने बाद में चढ़ाया महाराज! दोष लग गया।

पूजा की सार्थकता भक्ति में

कितनी सावधानी से आप भगवान की पूजा करते हो? कितनी जागृति से आप भगवान की पूजा करते हो? कितने याद किए हुए पढ़े-लिखे तरीके से आप भगवान की पूजा करते हो? इतने सधे हुए तरीके से अगर आप भगवान की पूजा करोगे तो लगता है कि आपकी पूजा सार्थक होगी? पूजा के साथ-साथ भक्ति का भी एक प्रवाह होना चाहिए और पूजा के साथ-साथ अगर भक्ति का भाव होता है तो फिर उस भक्ति के भाव में गणित नहीं चलता है। यह सब क्या है? यह सब गणित है। **‘संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा’** और जल के लिए? **‘जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा’**, **‘अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा’** यह जो आपने बिल्कुल fixed pattern बना रखा है, यह आपने गणित बना रखा है। वह गणित आपके दिमाग में बैठ जाता है बिल्कुल। अब अगर कभी आप थोड़ा भक्ति के भाव में हो और आपको स्मरण न रहे। क्या करना है? अपने को तो कोई भी द्रव्य सामग्री है, चढ़ाना है और जो भी प्रयोजनीय अच्छे गुण हैं, वे भगवान से अपनी प्रार्थना में कहना है। अगर आपके दिमाग में इतना रहे तो आपके लिए यह गणित भी भूल जाना पड़ेगा और अगर यह गणित भूल गए और कुछ भी आगे-पीछे हो गया तो आपको क्या लगेगा? आज हमने सारी पूजा गलत-सलत कर डाली। आज हमारी पूजा का हमें कोई फल नहीं मिलेगा और वह आपके लिए ऐसा लगेगा कि हमने बहुत बड़ा दोष कर लिया। आपको ऐसा क्यों समझ में आता है कि हम भगवान की पूजा कर रहे हैं तो भगवान की पूजा से हमको दोष लग रहा है और वह दोष क्यों लगेगा? कहीं भगवान नाराज न हो जाएँ, कहीं पूजा गड़बड़ न हो जाए। पूजा गड़बड़ भला कैसे होगी हमें यह भी तो बताओ? यह पूजा करने के तरीके, ये fix करने के pattern जो आपके सामने आ चुके हैं, यह क्या भगवान ने बताया है कि जब भी तुम बोलना तो ऐसे ही बोलना? कि **‘संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा’** अगर बोल दिया **‘संसार ताप विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा’** तो तुम्हारे सारे नंबर zero हो गए। यह एक जो धारणा हमने इस तरीके की बना रखी है इसी के कारण से हम पूजा तो कर लेते हैं लेकिन भक्ति नहीं कर पाते हैं।

भक्ति में श्रद्धा का महत्व

आज राजा श्रेणिक ने प्रश्न पूछा है...भगवान के दर्शन कैसे श्रद्धा से, कैसे भक्ति से करना चाहिए? हम कहते हैं कि भगवान के दर्शन करने के लिए आपके अन्दर एक श्रद्धा तो होनी चाहिए लेकिन वह श्रद्धा अगर आपके अन्दर आ जाती है तो फिर वह भक्ति अपने आप अपना काम करा देती है। **भक्ति की कोई परिभाषा नहीं होती है, भक्ति में कोई गणित नहीं होता है, भक्ति का कोई pattern नहीं होता है, भक्ति तो एक साथ प्रवाहित होने वाली एक परिणति होती है। उस भक्ति में आप जो कुछ भी करेंगे, वह सब आपके लिए योग्य माना जाएगा। वह कुछ भी गलत नहीं माना जाएगा क्योंकि भक्ति आप भगवान की, वीतरागी भगवान की कर रहे हैं। भक्ति का भाव आपका है, बीच में कोई भी तरीके की सामग्रियाँ हैं, ये सिर्फ आपके आलम्बन के लिए हैं। इन सामग्रियों में आगे पीछे होने से कोई भी न पूजा गलत हो**

जाएगी, न भक्ति गलत हो जाएगी, न भगवान की श्रद्धा में कोई कमी आ जाएगी। यह विचार आपको कभी आ सकता है? हमें ऐसा लगता है कि अगर हमने भगवान की पूजा में थोड़ी सी भी आगे-पीछे कमी कर दी तो भगवान की पूजा में दोष लग गया। पूजा में कैसे दोष लग जाएगा? पूजा क्या बला है आखिर? पूजा तो भक्ति का भाव है, श्रद्धा का भाव है। आपकी श्रद्धा में कहीं कमी नहीं है, आपकी भक्ति में कहीं कमी नहीं है, तो फिर आपकी पूजा में दोष देने वाला है कौन? कौन दोष देगा आपकी पूजा में, यह बताओ? भगवान स्वयं देंगे? भगवान वीतराग हैं वह स्वयं दोष देंगे नहीं। भाव आपके हैं, भक्ति आपकी है, आप जैसी भक्ति करना चाहो वैसी भक्ति करो। आपको दोष देने वाला है कौन यह तीसरा व्यक्ति? जो बीच में आ जाता है, जो आपके मन में बार-बार कह जाता है कि हमें दोष लग गया, हमें दोष लग गया। सब लोग मेरे ऊपर उतारू मत हो जाना कि महाराज आप सब system बिगाड़ रहे हो, आप किस तरीके से हमें समझा रहे हो? आखिर पूजा हमें करनी भी चाहिए कि नहीं करनी चाहिए और करनी चाहिए तो system से करनी चाहिए कि नहीं करनी चाहिए?

स्वयं स्फूर्त भावनाओं में, प्रथानुरूप पूजा (system से पूजा) का गौणत्व

मैं आपसे फिर कह रहा हूँ....system जब भी बनते हैं यह अनपढ़ लोगों के लिए बनते हैं। **system जब भी बनते हैं जिनके अन्दर कोई भक्ति नहीं होती है, जिनके अन्दर किसी भी प्रकार के भाव नहीं होते हैं, उन्हें उस system में ढाल कर चलाने के लिए बनते हैं।** जिनके अन्दर भक्ति होती है, जिनके अन्दर अपनी स्व स्फूर्त भावनाएँ होती हैं उनके लिए कोई system नहीं होते हैं, कोई pattern नहीं होते हैं। भगवान की भक्ति कोई ऐसा नहीं है कि हम भोजन कर रहे हैं कि भाई! पहले हमें भोजन कर लेना चाहिए, फिर बीच में हमें कुछ पी लेना चाहिए, फिर हमें उसके बाद में मीठा खा लेना चाहिए, फिर हमें अन्त में सौंफ खा लेनी चाहिए। यह कोई भोजन का pattern है क्या? हम भगवान को भोजन करा रहे हैं, क्या कर रहे हैं? Pattern किस चीज का है? भगवान की भक्ति के लिए अगर हमारे भाव उमड़ते हैं तो उन भावों में किसी भी तरह का pattern कोई काम नहीं करता है।

पूजा में, साधु की सेवा में, अग्रणी होने का महत्व

आपके सामने ये बाहर से आए हुए आज अतिथिगण बैठे हुए हैं। कौन सी समाज के लोग हैं? अग्रवाल समाज के लोग हैं। अग्रवाल का मतलब जानते हो क्या होता है? जिनके आगे-आगे रहने के लिए, जिन्हें बार-बार बारी आती है, उन्हें 'अग्रवार' कहा जाता था 'र' का 'ल' हो जाता है, इसलिए वह अग्रवाल कहलाने लग जाते हैं। जो हर काम में आगे रहे, धर्म कार्य में जिन्हें आगे आने का मौका मिले, उन्हें अग्रवाल कहा जाता है, अग्रवार कहा जाता है। जो भी धर्म काम में आगे आएँगे। आप धर्म काम में पीछे आते हो इसलिए पीछे बैठे हो। ये लोग आगे आ जाते हैं, इसलिए ये अग्रवार हैं। ये पहले आकर बैठ जाते हैं उसके बाद तुम आते हो। राजा श्रेणिक पहले आ जाते हैं, उसके बाद तुम आते हो। **जो भगवान के दरबार में आगे-आगे आएँ, जो भगवान का दर्शन करने आगे-आगे आएँ, जो हमेशा उपदेश सुनने के लिए आगे-आगे रहें, जो गुरुओं की, साधुओं की सेवा करने के लिए आगे-आगे रहें, उनको अग्रवाल कहा जाता है, अग्रवार कहा जाता है।** अच्छे ढंग से ध्यान रखना। आगे आना है, जब आगे आने की बात आती

है तो आगे आने में आपको सबको एक साथ आगे आना है।

पूजा में भक्ति का आलम्बन, सर्वश्रेष्ठ आलम्बन

मान लो आपने द्रव्यों की थाली सजा कर रखी है, यहाँ अष्ट द्रव्य की थाली सजी हुई रखी है। अब जिनको भक्ति करना है उन्हें नहीं पता कि पहले क्या चढ़ाना है? बाद में क्या चढ़ाना है? वह क्या करेंगे? वह कोई भी plate उठा लेंगे, जिसमें कुछ भी रखा होगा और कोई भी सामग्री किसी के भी हाथ में चढ़ जाएगी और वह उसको चढ़ा देंगे। हमें क्या कहा गया था? हमें तो भक्ति करने के लिए एक मौका मिला था और भक्ति करने के लिए सामग्री को चढ़ाना, उसका आलम्बन लेना है और इस आलम्बन में हमें आगे-पीछे कुछ भी ध्यान नहीं रखना यह भक्ति का सही तरीका होता है। जैसे ही आपके दिमाग में गणित आने लग जाता है, आप भेद करने लग जाते हो। हे भगवन्! **‘चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा’** किस लिए? संसार ताप का विनाश करने के लिए अर्थात् आपने भेद कर दिया कि संसार ताप का विनाश जल चढ़ाने से नहीं होगा, चंदन चढ़ाने से ही होगा। चन्दन पर ही आपकी दृष्टि रहेगी और तभी आपके अन्दर भावना आएगी कि संसार ताप विनाशनाय। यह सारी जो गणित है यह गणित केवल उन लोगों के लिए है जिन्हें भक्ति करना नहीं आता।

पूजन का प्रयोजन- सिद्ध गति की प्राप्ति

जिन्हें भक्ति करना आने लग जाता है, वे भगवान के चरणों में द्रव्य चढ़ाते हुए, अपने प्रयोजन को अपने आप अपने अन्दर देख लेते हैं और कभी-कभी वह बिना प्रयोजन के भी भीतर अपने भक्ति भावना रखते हुए, केवल एक प्रयोजन के माध्यम से भी सारी द्रव्य चढ़ा सकते हैं। केवल एक प्रयोजन से और वह प्रयोजन क्या हो सकता है? हे सिद्ध भगवान! अरिहन्त भगवान! सिद्ध गति की प्राप्ति हो बस! हमें क्या हो? सिद्ध गति की प्राप्ति हो। **सिद्ध गति प्राप्तये जलं निर्वपामीति स्वाहा। सिद्ध गति प्राप्तये चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा। सिद्ध गति प्राप्तये अक्षतं, नैवेद्यं, धूपं सब चढ़ा दो। जिसके अन्दर जो भावना बलवती हो जाती है वह हमेशा उसी भावना के साथ में अपने शब्दों की अभिव्यक्ति करता है।** हमें क्या करना है? हमें अपनी आत्मा को शुद्ध बनाना है और शुद्ध बना लेने का नाम ही है कि हमने अपनी आत्मा को सिद्ध बना लिया।

सिद्ध हो जाने का अर्थ

सिद्ध! मतलब क्या होता है सिद्ध का? सिद्ध का मतलब होता है जैसे कोई चीज धीरे-धीरे सीज रही हो। सीजना जानते हो? जैसे आप चावल पकाते हो तो चावल जब पक जाते हैं तो पकने के बाद में जब पूरे सीज गए तो हम क्या बोलते हैं? यह पूरे पक गए। यह सिद्ध हो गए। उसको बोलते हैं- सिद्ध हो जाना। **सिद्ध हो जाने का मतलब? वह किसी भी प्रकार की जो वस्तु है, उसके अन्दर पूर्णता आ जाना।** अब चावल पकने के बाद में अब कुछ नहीं होगा, चावल पक गया, चावल सीज गया, हमारा काम हो गया। वह चावल के अन्दर की जितनी भी गुणवत्ता थी, वह उसकी सीज गई, प्रकट हो गई, सिद्ध हो गई।

स्वास्थ्य में लाभकारी चावल की परख

सूखा चावल होगा, उसमें गंध नहीं आएगी। चाहे कितना ही अच्छा चावल ले आना आप। लम्बा वाला ले आना, बासमती ले आना, चाहे कोई भी ले आना। वैसे आजकल यह चावल खाने को मना किया जा रहा है। अगर आपको अपने स्वास्थ्य को ध्यान में रखना है तो सारे चावल चाहे वह brown वाले हो और चाहे वह simple हो, चाहे वह लम्बे वाले हो, चाहे बासमती हो। समा चावल, कौन सा? समा का चावल। यह चावल खाने योग्य है। यह आपके लिए शरीर को स्वास्थ्य को देने वाला है। अगर आप इस तरह के चावल का सेवन करेंगे तो आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा अन्यथा समझ कर रखना पानी गिरने लगा है, मौसम बढ़ने लगा है।

भक्ति से टल सकता है- सूखा

अभी तक आपका सावन शुरू नहीं हुआ था कल सावन की एकम् थी और देखो एकम् से कैसी झड़ी लगी हुई है कि दिन भर और रात भर यह सावन शुरू हो गया इसको कहते हैं- सावन। बहुत पहले आपसे कहा था न यह जो एक महीना extra चल रहा है सावन का, यह एक महीना आपको गर्मी में ही निकालना पड़ेगा और जैसे ही सावन की एकम् आई, देखो! कल बिल्कुल भी पसीना नहीं आया। दिन भर, रात भर, इतनी भड़ भड़ भड़ भड़ भड़ भड़। Tin shades पर तो इतना पानी की आवाज आती है कि रात के तीन बजे से फिर शुरू। रात के दस बजे भी शुरू, तीन बजे फिर शुरू और इस तरह की आवाजों से कम से कम इतना तो समझ में आता है कि मेघ ऊपर भले ही न गरज रहे हो लेकिन अब जो गरजने वाले नहीं हैं, वह भी बरस रहे हैं और बरसते हुए भी आवाज कर रहे हैं कि हाँ! अब मैं बरस रहा हूँ, तुम सचेत हो जाओ। यह सावन का महीना अब शुरू हुआ है। आपके अन्दर यह भाव आना चाहिए कि इसी सावन के महीने के अन्दर अब वे सारे के सारे जो भी आपके पवित्र तिथियाँ आती हैं, जिनमें अलग-अलग तरह के आपके सामने कार्य आते हैं, वह सब इसी सावन के महीने में अब आएँगे। एक महीना तो यह extra निकल गया, सिद्ध भगवान की भक्ति करते करते, तब जाकर पानी बरसा है, बादल बरसे हैं। नहीं तो यहाँ के लोग कहने लगे महाराज! अगर दस दिन पानी नहीं बरसा तो सूखा घोषित हो जाएगा। अरे भाई! **इतनी भक्ति कर रहे हो भगवान की, सूखा कैसे घोषित हो जाएगा?** केवल जैन लोग ही नहीं कर रहे हैं, रोजाना नए-नए अतिथि लोग आते हैं और हर समुदाय के लोग आ करके यहाँ पर जब सुन रहे हैं, भगवान की भक्ति कर रहे हैं तो सूखा रह कैसे सकता है? यह बताओ।

भाव पूर्ण भक्ति, यथार्थ भक्ति

आपको यह देखना है कि सूखा हमारा मन नहीं होना चाहिए। अगर आपका मन भगवान की भक्ति में गीला है तो आपको चारों ओर हरियाली-हरियाली ही दिखाई देगी। अपने मन को भगवान की भक्ति में गीला करके रखो। **जब हमारा मन गीला होता है, भगवान की भक्ति करने का भाव होता है, तो अपने आप एक भक्ति की सुगंधी होती है, वह फूटती है।** एक भगवान के गुणों की सुगंधी होती है, वह फूटती है और वह वैसे ही फूटती है, जैसे चावल की सुगंधी फूटती है। सूखे चावल में कोई सुगंधी नहीं होती है। होती है क्या बताओ? सब व्यापारी लोग बैठे हो। चावल को कभी भी अगर हमें उसकी quality को देखना है, तो

सूखे चावल को सूँघ करके देखा जाता है क्या? उसको तो बस केवल हाथ पर रख कर के देखा जाता है। अब फूँक मार लो, कुछ कर लो। सूखे चावल में कोई गंध नहीं आती। गंध किसमें फूटेगी? जब वह क्या हो जाएगा? पक जाएगा, सीज जाएगा। इसी का मतलब है, वह सिद्ध हो जाएगा। चावल कैसा हो गया? सिद्ध हो गया। **सिद्ध होने का मतलब? जब हमारी जीव आत्मा, हमारे चैतन्य आत्मा जब क्या हो जाए? पक जाए। पूरी उसके अन्दर से जितनी भी अशुद्धियाँ हैं, वह सब निकल जाएँ और वह आत्मा बिल्कुल शुद्ध हो जाए तो उसके गुण भी ऐसे ही फूटने लग जाते हैं,** जैसे चावल अगर cooker में भी पक रहा हो तो उसके अन्दर की सीटी से अपने आप चारों ओर ऐसी सुगंध फैलने लग जाती है कि पता पड़ जाता है- हाँ भाई! यह चावल पक गया है, सीटी आ गई है। अगर कहीं अच्छे बर्तनों में पकाया जाए तो फिर तो कहना ही क्या है?

Aluminum के बर्तनों का सर्वथा निषेध

आप लोग तो ऐसे गन्दे बर्तनों में पकाते हो, जिसके कारण से चावल के गुण भी उन धातुओं के गुणों में मिलकर चावल के गुण भी नष्ट हो जाते हैं। एक चीज सीख लो अगर आपको पूरी उम्र ढंग से जीना है। उम्र के बीच में अगर आप को कोई cancer आदि की शिकायतें नहीं लाना है, तो जितने भी आपके घर में aluminium के बर्तन हैं, उन्हें आज ही उठा कर के कहीं कचड़े खाने में फेंक देना। Aluminium के cooker, aluminum के बर्तन ये सब आपके लिए नुकसानदेह है, क्योंकि जब आप चावल दाल इन बर्तनों में पकाएँगे तो वह aluminium धातु के जो भी भाव होते हैं, तत्त्व होते हैं वह भी उसके अन्दर mix हो जाते हैं। Aluminium एक ऐसी भारी धातु होती है जो शरीर के अन्दर पहुँचने के बाद में घुलती नहीं है और उस धातु के अगर वह कण आपके शरीर के अन्दर पहुँचे हैं तो वह घुलेंगे नहीं और नहीं घुलेंगे तो वे अनेक तरह की बीमारियों का रूप ले लेंगे।

हर क्रिया में होता है, विधि का अहम् स्थान

चावल की सुगंधी तब फूटती है, जब वह अच्छे पात्र में धीमी-धीमी आंच पर पकाए गया हो। कौन से पात्र में? किसका पात्र हो? काँसे का हो, ताँबे का हो, मिट्टी का भी हो, पीतल का हो। कोई भी अच्छी धातु का पात्र होगा और उसमें वह अगर चावल पकाया गया होगा, धीमी-धीमी आंच पर पकाया गया होगा, पूरा घर सुगन्धित हो जाएगा, उस चावल की गंध से। घर तो क्या पड़ोस तक में भी गंध आने लग जाएगी, सड़क पर भी गंध आ जाएगी...हाँ भाई! आज कुछ चावल बना है, बढ़िया वाला चावल, आज सुगंधी आ रही है। बताओ आपके चावलों में कहीं सुगंधी आती है? मुँह के पास रख लो, नाक के पास रख लो तब भी उसमें गंध नहीं आती। क्यों नहीं आती? क्योंकि आपको चावल पकाना आता ही नहीं। चावल पकाने बाद में वे चावल नहीं रहता, वह क्या बनना चाहिए? भात बनना चाहिए भात। भात ऐसी चीज होती है कि अगर आपके सामने वह भात आ जाए और आपको भूख न भी लगी हो तो उसकी सुगंधी के कारण से आपके अन्दर भूख लगने लग जाती है। इसलिए उसे last में खाया जाता था, खिलाया जाता था। भैया! भोजन तो कर लिया आपने, चावल नहीं खाया। चावल नहीं खाया तो भोजन अधूरा है। क्यों अधूरा है भाई? जगह तो बची नहीं। आप लेकर तो देखो, एक ग्रास ले लो बस। आप एक ग्रास लो फिर आप अपने मन से, आप

फिर देखना क्या होता है? और जैसे ही आपने एक ग्रास लिया। केवल सूखा चावल खिलाओगे क्या? क्या होता है उसमें? अच्छी दाल भी होनी चाहिए। दाल ऐसी नहीं होनी चाहिए कि पानी अलग जा रहा हो और दाल अलग जा रही हो। अगर वह मूंग के छिलके की ऐसी दाल होगी तो वह चावल क्या काम आएगा? हर चीज को खाने की, पकाने की, बनाने की, खिलाने की एक विधि होती है। अगर वह इस विधि के साथ चलेगा तो वह आपके लिए भी पौष्टिक होगा। आपके लिए भूख नहीं भी लग रही है तो लगाने वाला होगा और नहीं तो वह केवल सामान्य से पेट भरने वाला होगा।

भक्ति का सार्थ हेतु – सिद्ध भगवन्तों के गुणों की प्राप्ति

इसी तरह से जब भक्ति की जाती है तो भक्ति में हम बहुत सारी चीजें रख लेते हैं। वह हमारे पेट भरने जैसी होती है लेकिन अगर उसी भक्ति में हमारे अन्दर कोई सुगंधी है, भीतर से श्रद्धा है, तो एक रस फूटता है और जब रस फूटता है तो फिर उसमें आगे पीछे कुछ नहीं रहता। जब भात बन गया तो अब कौन सा चावल पहले? कौन सा बाद में? क्या बन गया? अब सब mix हो गया। इसलिए जब आपके लिए भावना आती है कि हम भक्ति की भावना से ओतप्रोत होकर, श्रद्धा से ओतप्रोत होकर हम भगवान के चरणों में कोई द्रव्य चढ़ाएँ तो वह द्रव्य आपके लिए चढ़ाने में तो आना चाहिए लेकिन कोई जरूरी नहीं है कि आप अपने गणित के अनुसार ही उस द्रव्य को चढ़ाएँ। एक अनजान बच्चा जिसे कुछ नहीं भी पता होता है, वह भी अगर मान लो द्रव्य को चढ़ा रहा है और वह केवल इसलिए चढ़ा रहा है कि मुझे सिद्ध भगवान के गुणों की प्राप्ति हो, मैं भी अपनी आत्मा को सिद्ध बनाऊँ। **हे भगवन्! आपकी तरह मैं भी अपनी आत्मा के लिए सिद्धत्व की प्राप्ति कर लूँ।** अगर मान लो केवल एक ही भावना उसके अन्दर है तो भी उसकी पूजा सार्थक कहलाएगी कि नहीं कहलाएगी? मैं आपसे सिर्फ इतना पूछ रहा हूँ भगवान क्या उसकी पूजा को cancel कर देंगे?

भक्ति होती है, सहज-सरल भाव की अभिव्यक्ति

आपके दिमाग में चढ़ा रहता है कहीं कुछ गलती कर दी तो! गलती कर दी तो भगवान तुम्हें दंड देने आते हैं क्या? गलती किस बात की? अरे! भक्ति हमारी, किसके प्रति? भगवान के प्रति। **हम अपनी भक्ति से भगवान के प्रति जो भी भावना कर रहे हैं, वह भावना हमारी, फिर शब्द पराए क्यों?** यह pattern कहाँ से आ गया बीच में? हमारी भावना, हमारी भक्ति के अनुसार जब चलने लग जाती है तो उसमें कुछ भी आगे-पीछे नहीं देखा जाता है और जिसमें आगे-पीछे नहीं देखा जाता ऐसी भक्ति ही, वास्तव में भक्ति कहलाती है। आगे-पीछे कब देखोगे? जब आप बड़े हो जाते हो। इसलिए जैसे-जैसे आप बड़े होते जाओगे भक्ति आपसे छूटती जाएगी। वह सिर्फ एक pattern रह जाता है। एक छोटी सी बच्ची यहाँ पर आकर कोई भी द्रव्य सामग्री उठा लेगी, चली जाएगी, फिर उठा लेगी, फिर चली जाएगी या बच्चा होगा, किसी भी तरह से नाचने के लिए खड़ा कर दिया जाएगा, वह अपने हाथ में चँवर ले लेगा नाचता रहेगा। वह क्या करता है ? वह कुछ नहीं देख रहा है...इतने बड़े-बड़े लोग बैठे हैं ये क्या सोच रहे होंगे? मैं छोटा सा बच्चा नाच रहा हूँ। अगर वह यह देखने लग जाएगा तो फिर नाच नहीं पाएगा। अगर आप आगे-पीछे देखने लग गए तो फिर आप भक्ति नहीं कर पाओगे। भक्ति में आगे-पीछे नहीं देखा जाता। भक्ति में **जब नाचा जाता है तो नाचने का मतलब ही होता है कि अब हमें आगे-पीछे नहीं देखना है। हमें सिर्फ भक्ति के भाव में जैसे**

पैर उठे, जैसे हाथ उठे, वैसे करना है। भक्ति हमारी, हाथ-पैर हमारे, तुम कौन होते हो बीच में बोलने वाले? हमें जैसा नाचना आएगा, हम नाचेंगे। हमें जैसा करना आएगा हम करेंगे, इस तरीके के जब परिणाम रहते हैं तो उन परिणामों से भक्ति का वास्तविक भाव प्रस्फुटित होता है।

असहजता में छूटती है- भक्ति

इसलिए एक बच्चा जब भक्ति करता है तो वह आगे-पीछे नहीं देखता है लेकिन जैसे ही वह बड़ा हो जाएगा आगे-पीछे देखने लग जाएगा। जब तक वह आगे-पीछे नहीं देखता है, वह कैसे भी नाचेगा? कैसे भी करेगा? उसके मन में जैसे आएगा वैसे करेगा और जैसे-जैसे बड़ा होता जाएगा, उसके दादा उसे समझाते जाएँगे...बेटा! अब तू बड़ा हो गया है। अब ऐसे नहीं करना। लोग क्या कहेंगे? यह कैसे छोटे बच्चों की तरह नाच रहा है? अब बड़े हो गए, अब यह समझदार हो गए। बच्चे को आप नासमझ बना रहे हो कि समझदार बना रहे हो? अगर बच्चा समझदारी में नहीं है, तो भक्ति के भाव में है और जिस दिन बच्चा समझदारी के भाव में आ गया उसकी भक्ति छूट गई। अब क्या है? अब pattern के अनुसार चलेगा। जब सब लोग आगे आएँ तभी तुम आगे आना। जब सब लोग नाचे तभी तुम नाचना, अकेले मत नाचने लगना। नहीं तो कोई क्या कहेगा? देखो! अकेला नाच रहा है। सब लोग देख रहे हैं। अब यह क्या हो गई? यह समझदारी हो गई। अब समझदारी हो गई तो भक्ति गई।

समझदारी कहीं भक्ति में दिखावा न लाए

अब वह क्या होगा? वह अब दिखावा होगा। सब नाचे तो हम नाचे। इसलिए कोई भी नाचने वाला होगा तो एक अपने पास में पहले उस एक को और पकड़ेगा। चल आ! नहीं तो कोई क्या समझेगा मैं अकेला नाच रहा हूँ। कभी भी सभा में हो या सड़क पर हो या किसी भी प्रकार की खुशी हो तो वह अपने साथ में दूसरे को पहले पकड़ेगा। नहीं तो, कोई यूँ न समझे कि मैं ही एक पागल हूँ, कम से कम एक के साथ दूसरा तो हो। एक के अन्दर अगर भाव उत्पन्न हो रहा है नाचने का, **एक के अन्दर भाव उत्पन्न हो रहा है गाने का तो अकेला नहीं गा पाएगा क्योंकि वह समझदार हो गया।** सुन रहे हो समझदार लोगों, बोलते नहीं हो? क्यों अग्रवाल भाई लोगों, आप भी भक्ति तो करते होंगे न? क्या देखते हैं हम? वह चले तो हम चले। वह नाचे, वह उठे तो हम उठें।

अक्सर pattern की आड़ में छुपायी जाती है- कमजोरी

यह जो pattern बन जाता है और एक के साथ दूसरे को चलने का भाव आ जाता है, **यह भाव दूसरे को लेने का नहीं होता है यह भीतर अपनी कमजोरी छिपाने का भाव होता है। पूछ लेना अपनी अन्तरात्मा से।** अगर कभी आपकी अन्तरात्मा बोलती हो तो। यह भीतर की कमजोरी को दबाने का भाव है कि कहीं कोई दूसरा मुझे बेवकूफ न समझने लग जाए, कोई मुझे पागल न समझने लग जाए कि अकेला नाच रहा है। इसलिए एक के साथ दूसरा कम से कम होना चाहिए। इसलिए जब भी कोई नाचने वाला होता है, तो अपने साथ में एक दूसरे को पकड़ लेता है। चल आ! तू मेरे साथ नाच ले। बच्चा कभी भी किसी दूसरे की अपेक्षा नहीं रखता है। बस! उसे दिखना चाहिए, माहौल है, music चल रहा है, लोग सामने खड़े हो गए

हैं और अगर उसे झूमर पकड़ा दिया जाता है, चंवर पकड़ा दिया जाता है, तो वह अपने हिसाब से थिरकने लग जाता है। **यह जो वास्तविक भक्ति का भाव होता है यह हम भूलते चले जाते हैं और हम फिर समझदारी में हम हर काम समझदारी से करते हैं।** समझदारी में जब हम आ जाते हैं तो फिर हम दूसरे को देखते हैं, आगे-पीछे देखते हैं और आगे-पीछे देखने से कभी भक्ति होती नहीं है।

छल रहित हो प्रभू की पूजा, आराधना

कुछ लोग तो सोच रहे होंगे आज तो महाराज की पूजन ऐसे ही करेंगे, उल्टी-सीधी। मुझे क्या फर्क पड़ेगा अगर कर भी लोगे तो? हमें तो यह देखना है कि बस! आप पूजन कर रहे हो कि नहीं कर रहे हो? **अगर आपके अन्दर भक्ति है, तो आगे-पीछे भी कोई हो जाएगा तो हम कहीं उठ कर नहीं चले जाएंगे।** भाई! तूने पूजन गलत कर दी। ऐसी कोई नाराजगी नहीं हो जाएगी...न महाराज की, न भगवान की। आपके अन्दर यह ज्ञान होना चाहिए कि हमारी पूजन बिल्कुल छल रहित होनी चाहिए और हमें किसी भी प्रकार से अगर भगवान की पूजन-आराधना करनी है, तो हमें कोई भी पदार्थ जब सामने लाने हैं तो हमें आगे-पीछे कुछ नहीं देखना है, हमें देखना है- अपना भाव। परसों यहाँ पर जो doctor साहब हैं उनकी माँ बहुत भक्ति के भाव से भरी हुई, जब उनके चौंके में आहार हो गया और आहार होने के बाद में सब लोग आकर बैठ जाते हैं। जैसे दर्शन कर रहे हो। अरे भाई! दर्शन तो बाद में भी कर लोगे। उन माँ के अन्दर अपने आप दर्शन करने के उपरान्त ऐसा भाव आ गया कि वह अकेले ही नाचने लग गई। अब उसने ऐसे नहीं कहा कि बेटा! तू भी आ जा। कोई नहीं, वह अकेली थी तो अकेली नाचने लग गई। उपवास था, थकी हुई भी थी लेकिन फिर भी नाचने लग गई, नाच ली। यह क्या है? यह भक्ति का भाव है। अब इसमें देखने की जरूरत नहीं है कि कौन हमारे साथ है कि नहीं है? कौन हमारी video बना रहा है कि नहीं है?

वर्तमान में भक्ति का विकृत स्वरूप

तुम तो बिना video के कोई काम करते ही नहीं हो। एक अर्घ भी चढ़ाओगे तो भी video लाओ। पहले उसको mobile पकड़ाओगे पहले मेरी photo खींचना, मैं अर्घ चढ़ा रहा हूँ। **अर्घ इधर चढ़ाते हो, मुँह उधर करते हो। कोई भी चीज तुम्हारी भगवान के सामने, पंच-परमेष्ठी के सामने भक्ति से कब होती है?** यह mobiles ने वैसे तो तुम्हारे दिमाग सब खराब कर ही रखे थे लेकिन यह भक्ति भी खराब कर दी, mobiles ने। अब हर आदमी का दिमाग mobile पर रहता है, photo पर रहता है। अरे! भगवान की भक्ति के समय पर, अभिषेक के समय पर, पूजा के समय पर तो इसे छोड़ कर आया करो घर पर। क्या करना है हमें भगवान की भक्ति के समय mobile लेने से? क्या हमने अगर भगवान की अभिषेक पूजन भक्ति में अगर अपनी photo नहीं खिंचवाई तो क्या हमारी photo भगवान सिद्धों के अन्दर नहीं खिंच गई? सिद्ध भगवान नहीं देख रहे हैं कि आप क्या कर रहे हो? बोली! देख रहे हैं न? उनके ज्ञान में सब झलक रहा है न? फिर तुम्हें चिन्ता किस बात की है? किसको दिखाना है? पत्नी को दिखाना है महाराज। बच्चे जो बाहर पढ़ते हैं, उनको दिखाना है कि देखो हमारे पापा भी पूजा करते हैं, अभिषेक करते हैं। वह दिखाने के लिए एकाध बार दिखा लिया तो कोई बात नहीं लेकिन हमेशा की ऐसी कोई आदत नहीं पड़नी चाहिए। यह भी अपने मन में रहे कि दिखाने के लिए कभी कभार photo खींच गई कोई बात नहीं लेकिन हर पूजा

photo के साथ में नहीं होनी चाहिए। **हमारे भाव धीरे-धीरे अगर बिगड़ते चले जाएंगे तो भक्ति छूट जाएगी, श्रद्धा पलायन कर जाएगी।** इसलिए जो राजा श्रेणिक ने प्रश्न पूछा है...इस प्रश्न का उत्तर है कि हम अपनी श्रद्धा को बनाए रखें। भावों को अपने अन्दर समेटे रखें और उन भावों के अनुसार हम भगवान की भक्ति करें। हमारे अन्दर भगवान की भक्ति का फल अवश्य हमें प्राप्त होगा। इसलिए आचार्य कहते हैं... **भगवान के चरणों में आप अगर गंध चढ़ा रहे हो, कोई भी सुगन्धित पुष्प माला चढ़ा रहे हो तो यह विचार करना कि भगवान को इन चीजों से क्या प्रयोजन?** भगवान तो ये चीजें कभी छूते नहीं क्योंकि इन चीजों की उपयोगिता उनके लिए है जिन्हें अशुचिता छूती हो और भगवान को कभी अशुचिता, अपवित्रता छू नहीं सकती। इसलिए भगवान के लिए कभी किसी भी सुगन्धित पदार्थों की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती।

भगवन्तों के समवशरण की महिमा

अगर आप अरिहन्त भगवान की बात करें तो उनके चारों ओर इतनी सुगंधी फैलती है कि कभी भी आप तीर्थंकर भगवान को समवशरण में देखेंगे तो वह गंधकुटी पर विराजमान होते हैं। किस पर? गंधकुटी पर। **गंधकुटी का मतलब क्या होता है? एक ऐसी कुटी है, एक ऐसा यंत्र type का वह बना हुआ है कि उसमें तमाम सुगन्धित पदार्थों की गंध हमेशा बाहर फूटती रहती है।** इसलिए उसका नाम क्या है? गंधकुटी। अब देखो जैसे ही आप समवशरण में घूमोगे, देखोगे तो आपको चारों ओर क्या दिखाई देगी? सुगंध ही सुगंध। एक तो गंधकुटी में जितने भी प्रकृति के अन्दर होने वाले बहुमूल्य सुगन्धित पदार्थ हैं चाहे वह मलयागिरी का चन्दन हो, चाहे कश्मीर की केसर हो, सारे के सारे सुगन्धित पदार्थ भगवान की उस गंधकुटी में से सुगंधी के साथ में फूट रहे होंगे। एक तो वह सुगंध और दूसरी सुगंध कौन सी? जो भगवान स्वयं उस गंधकुटी के ऊपर विराजमान है, उनके शरीर से भी स्वाभाविक सुगंधी निकलती रहती है। वह सुगन्धित शरीर को लिए हुए, उनका वह अतिशय जो जन्म से बना हुआ है, वह मरण तक अन्त समय तक चलता रहता है। सुगंधी ही सुगंधी भगवान के समवशरण में सूँघने को मिलेगी। अब वहाँ पर क्या चढ़ाओगे बताओ? वहाँ तुम्हारी छोटी सी सुगंधी क्या काम आएगी? क्या चढ़ाओगे? जहाँ पर सुगंधी ही सुगंधी फूट रही हो।

समवशरण की रचना

आप सोचो आपने भगवान के दर्शन किए, अगर कभी भगवान का समवशरण में ध्यान करना तो इस रूप में भी करना कि भगवान के समवशरण में पहुँचने के बाद में हमें सबसे बहुमूल्य पदार्थों की सुगंध सूँघने को मिलती है। कहीं भी देख लेना और कहीं भी अगर नजर उठा कर देखोगे, आपको दूसरे अरिहन्त भगवान भी दिखाई देंगे, दूसरे केवलज्ञानी भी भगवान के समवशरण में बैठे हुए दिखाई देंगे। लेकिन वह कहाँ बैठे होंगे? उनकी seat अलग reserve रहती हैं। उनका कोठा, उनके बैठने का स्थान जो गणधरों का, मुनियों का कोठा होता है वही होता है क्योंकि **अरिहन्त भगवान को भी एक स्नातक मुनि कहा जाता है। वे मुनियों में भी श्रेष्ठ स्नातक मुनि हैं।** स्नातक समझते हो न? जैसे आपके यहाँ स्नातक होते हैं न...B.A., M.A. हो गए, graduate हो गए, ऐसे ही केवली भगवान graduate हो गए। हम लोग जो मुनि महाराज हैं, वे

क्या हैं? वे अभी school में पढ़ रहे हैं। Higher secondary, कुछ भी कह लो, intermediate कह लो। हम लोग अभी 12th pass ही हैं बस अभी। **Graduate होने का मतलब क्या हो गया? अरिहन्त बन गए, स्नातक परीक्षा में pass हो गए।** ऐसे भगवान को ही केवली मुनि महाराज कहा जाता है। इसलिए अरिहन्त भगवान भी मुनि महाराज ही होते हैं, यह अच्छे ढंग से ध्यान में रख लेना। इसलिए वे कहाँ बैठेंगे? मुनि महाराज के जो स्थान बने होंगे उसी स्थान में उच्चासन पर, उन मुनि महाराज से जो 12th pass हैं उनसे ऊपर बैठेंगे। यह समवशरण की व्यवस्था है और इसी तरह से समवशरण में जब सब बैठ जाते हैं तो मुनि महाराज के बैठने का स्थान अलग होता है और जो श्रावक होते हैं उनके बैठने का स्थान, राजा होते हैं उनके बैठने का स्थान अलग होता है। राजा श्रेणिक जहाँ बैठेंगे वहाँ मुनि महाराज नहीं बैठेंगे। राजा श्रेणिक मनुष्यों के कोठे में बैठेंगे और मुनि महाराज? मुनियों के कोठे में बैठेंगे, वह गणधरों का कोठा होगा। चाहे वह श्रेणिक हो, चाहे अभय कुमार हो और अगर दोनों भी समवशरण में पहुँच गए तो वे कहाँ बैठेंगे? जहाँ मनुष्यों का बैठने का स्थान है, वहीं बैठेंगे।

राजा श्रेणिक के प्रश्न...स्वस्थ जीवन का आधार

कल आपको तीन प्रश्न दिए थे। उत्तर लाए हो? श्रेणिक ने अपने पुत्र को बुलाने के लिए तीन प्रश्न भेजे थे। क्या भेजे थे? प्रश्न भी याद हैं कि नहीं? सब भूल गए। बताओ पहला प्रश्न क्या था?



परीक्षा का **पहला प्रश्न** था। आना तो न दिन में आना न रात में आना, ऐसे समय पर आना। **दूसरा प्रश्न** क्या था? न गाड़ी पर आना न पैदल आना। यह दूसरा प्रश्न था। **तीसरा प्रश्न** क्या था? न भूखे पेट आना, न भरे पेट? ये तीन प्रश्नों के साथ में अभय कुमार को निमंत्रण दिया गया। लेकिन आना जरूर है और अभय कुमार आए। सब नन्द गाँव के लोग, नंदीग्राम के लोग सब परेशान, उन्होंने कहा...आप बिल्कुल चिन्ता नहीं करो। अब राजा ने बुला लिया है, राजा बुला रहे हैं तो अब आपकी समस्याएँ भी हमेशा के लिए शान्त हो जाएँगी। क्योंकि उन राजा को जाकर अब हम ही समझा देंगे कि बेवजह इन गाँव के लोगों को परेशान नहीं करो, ये सभी लोग भोले-भाले हैं। अब इसकी जिम्मेदारी हमारी है। तुम्हारे प्रश्न सब समाप्त हो जाएँगे, तुम्हारी समस्याएँ समाप्त हो जाएँगी और जब वहाँ पहुँचे तो वह उन्हीं शर्तों के साथ पहुँचे। जब गए तो उस समय पर न दिन था न रात थी। बीच का समय क्या होता है? शाम का समय, वही गोधूलि बेला...जब न दिन है न रात है। इस समस्या का समाधान उन्होंने ऐसे कर लिया। अब भाई! न वाहन से आना न पैदल आना तो कैसे आना? इसका क्या समाधान होगा? उन्होंने एक रथ बनवाया और उस रथ पर एक छींका लगवा दिया। छींका जानते हो? एक ऐसा स्थान होता है बैठने का, किसी भी तरह की जैसे टोकरी type की समझ लो। उस पर एक छींका लगा दिया और उस छींका में वह बैठ गए। जैसे अंजन चोर के लिए आता था न! वह छींके में बैठ गया और तलवार से काट रहा था ऐसे ही वह छींके में बैठ गए। अब छींके में बैठे वह, वाहन में नहीं बैठे। किस में बैठे? मना किसके लिए कहा था? वाहन में नहीं बैठना, गाड़ी में नहीं बैठना। हम किसमें बैठ कर आए? छींके में बैठ कर आए, पैदल चलना तो पैदल भी चल कर नहीं आए। उन्होंने अपनी बुद्धिमानी से काम ले लिया और तीसरा? वह तो तुम जानते ही हो। न बहुत ज्यादा खा लेना और न बहुत कम खा लेना। क्यों कहा ऐसा? जानते हो किस लिए कहा? इसलिए कहा था...ज्यादा खा लेने पर भी अपच हो जाती है, मंदाग्नि हो जाती

है और कम खा लेने पर भी बिल्कुल भूख से कम खाने पर भी मंदाग्नि हो जाती है, अपच हो जाती है इसलिए यहाँ पर स्वस्थ होकर आना।

संतुलित जीवनचर्या-स्वस्थ जीवन का आधार

स्वस्थ भोजन करने वाला व्यक्ति भूख के अनुसार खाता है। भूख से थोड़ा कम खा लेगा लेकिन भूख बहुत ज्यादा और बिल्कुल न खाये, थोड़ा सा खा ले तो भी उसके लिए नुकसान हो जायेगा, अपच हो जाएगी। जब आपको भूख लगी हो और उस भूख के समय पर अगर आप पानी पी लो तो भी आपका system बिगड़ जायेगा। जब आपको प्यास लगी हो और उस समय पर आप केवल भोजन कर लो तो भी आपकी अग्नि मन्दाग्नि हो जाएगी। आपका system बिगड़ जायेगा। मन्दाग्नि न हो, अपच न हो, इसलिए इस बात का ध्यान रखना पड़ता है, आप जो भोजन कर रहे हैं वह भोजन कब किया जा रहा है और कितनी मात्रा में किया जा रहा है? यह अपच की भी बहुत बड़ी बीमारी चलती है। मन्दाग्नि हो रही है, अजीर्ण हो रहा है, भोजन पच नहीं रहा है तो उसके लिए भी एक गणित होता है कि आप यह ध्यान रखें कि आपके भोजन की मात्रा भी अधिक नहीं होनी चाहिए और बिल्कुल भी कम नहीं हो जानी चाहिए। पानी ज्यादा भी नहीं हो जाना चाहिए और पानी बिल्कुल भी कम नहीं हो जाना चाहिए। अपनी भूख से भी पूछ लेना चाहिए, मन से भी पूछ लेना चाहिए कि तुम्हें भूख ज्यादा लग रही है कि प्यास ज्यादा लग रही है। अगर मन कहता है, पेट कहता है- प्यास ज्यादा लग रही है तो उसको पानी ही देना, भोजन मत देना...अपच हो जाएगी। जिस समय पर जो भीतर से demand आए, उसकी उसी रूप में पूर्ति करो तो आपकी प्राकृतिक रूप से जो अग्नि है, जठराग्नि है, वह चलती रहेगी। वह अगर कभी disturb हो जाए तो फिर आपके लिए यही करना पड़ेगा...अजवायन लो, नमक लो और थोड़ी ज्यादा हो गयी हो तो थोड़ी सी उसमें काली मिर्ची भी मिलाओ। इन सबको अच्छे ढंग से, अजवायन को गर्म करके भून करके, थोड़ी सी नमक और काली मिर्ची मिला करके भोजन के बाद में उसकी फांकी लगाओ। तब ठीक होगा। आपको अगर अजीर्ण हुआ है, अपच भी हुआ है तो उसके पीछे भी कुछ कारण होता है। **एक शारीरिक कारण यह हो गए और मानसिक कारण होता है, अगर आप की नींद पूरी नहीं हो रही है। जो लोग दिन में सोते हैं, रात में जागते हैं उनकी अग्नि जो जठराग्नि है, कभी भी balance नहीं रह सकती।** उनके लिए किया गया भोजन परिपूर्ण रूप से पचेगा नहीं, उसका पाचन सही नहीं होगा। क्योंकि आप अपनी जठराग्नि को मन्दाग्नि के रूप में बदल दिए हो और उसका कारण आपकी दिनचर्या का अस्त-व्यस्त होना। दिन में सोने वालों की भी जठराग्नि मंद पड़ जाती है, इसलिए मना किया जाता है कि दिन में नहीं सोना चाहिए। रात में जो जागते हैं, रात को समय पर नहीं सोते हैं, उनकी भी जठराग्नि मंद पड़ जाती है। आप चाहे बोलो या न बोलो लेकिन पेट की बीमारियों से हर कोई भीतर से ग्रस्त हो रहा है और उस बीमारी का सबसे बड़ा कारण है- हमारी नींद का सही समय पर नहीं होना और भोजन का भी सही समय पर नहीं होना। यह अपच का सबसे बड़ा कारण है। भोजन को सही समय पर करने के लिए आपको दिन का सही समय choose करना पड़ेगा और नींद को सही समय पर लेने के लिए आपको नींद रात्रि में ही लेनी है, समय पर लेनी है। आपको रात्रि की नींद अगर दिन में निकालोगे तो फिर आपका सारा का सारा digestion system गड़बड़ा जाएगा।

अपच का मानसिक कारण

यह एक कारण है और इसके पीछे एक और मानसिक कारण है- अगर आप इन सब कारणों के बावजूद भी मानसिक रूप से कहीं क्रोधी ज्यादा हो, दुःखी ज्यादा हो, आपके लिए कोई मानसिक रूप से ईर्ष्या आदि के भाव ज्यादा उत्पन्न होते हैं और आपका मानसिक system बिगड़ा हुआ है तो भी आपके भीतर की वह digestion system गड़बड़ा जाएगा। आप देख लेना जिस दिन आप ज्यादा क्रोधी होते हो उस दिन आपके भोजन का पाचन बिल्कुल सही नहीं हो सकता। आपके पेट पर सीधा प्रभाव पड़ता है आपके मानसिक भावों का और वह मानसिक भाव अगर सही ढंग से चलेंगे तो आपके system सही ढंग से चलेंगे, आप स्वस्थ रहेंगे। ध्यान रहें, सावन का समय आ रहा है, पानी गिरता है तो मंदाग्नि होती है। लेकिन मंदाग्नि केवल पानी गिरने से होगी तब तो संभल जाएगी और दूसरे कारणों से हुई तो संभलना मुश्किल हो जाता है। इसलिए सबसे ज्यादा पेट की बीमारियाँ इसी मौसम में होती हैं, यह ध्यान में रखना। इसलिए अजवाइन, नमक और इसके अलावा, कुछ नहीं है तो लौंग, काली मिर्च ऐसे पदार्थों का भोजन के बाद में सेवन अवश्य करना ताकि इस मौसम से होने वाली मंदाग्नि से आप बच जाओ। दिनचर्या से होने वाली मंदाग्नि से बचने के लिए आपको अलग से पुरुषार्थ करना पड़ेगा। अपने आप को स्वस्थ रखने के लिए इन बातों को भी ध्यान रखो यही श्रेणिक और अभय कुमार की चर्या का सार है।

महावीर भगवान की जय।

भीतर ना संसार तो, वसुधा बने कुटुम्ब।

अहं श्री की भावना, गह अक्षय पद थम्ब॥२५॥

28. भक्ति से परिणामों में विशुद्धता



धर्म प्रेमी भव्य आत्माओं भगवान सिद्धों की भक्ति करते हुए, उनके गुणों का गुणगान करते हुए और उनके गुणों के प्रति अपनी श्रद्धा लाते हुए हम अपने आप को उन सिद्ध भगवन्तों से जोड़ रहे हैं, जो हमारे समक्ष नहीं होते हैं, अदृश्य होते हैं, उन्हीं सिद्ध भगवन्तों की स्तुति करते हुए उनके अन्दर क्या है? क्यों है? और क्यों नहीं है? इन सब बातों का विचार भी इस सिद्ध भक्ति के माध्यम से आप लोगों के समक्ष पिछले कई दिनों से चल रहा है। एक छंद जो यहाँ पर आचार्य पूज्यपाद महाराज ने लिखा है:

**नार्थः क्षुत्-तृड्-विनाशाद्, विविध-रसयुतै- , रन्न-पानै-रशुच्या,
नास्पृष्टे-गन्ध-माल्यै- , न हि मृदुशयनै-ग्लानि-निद्राद्यभावात्।**

इस छंद के माध्यम से कल भी कुछ चर्चा हुई थी कि **भगवान के अन्दर किसी भी तरह के कोई भी ऐसे भाव जो अशुचिता के होते हैं वह उन्हें छू नहीं पाते हैं**, इसी कारण से उन्हें किसी गंधमाला आदि की कोई जरूरत नहीं पड़ती है। **इसी तरह से आज एक भाव और दिया जा रहा है कि जब उन्हें गंधमाला आदि की जरूरत नहीं पड़ती है।**

“नास्पृष्टे-गन्ध-माल्यै- , नहि मृदुशयनै-ग्लानि-निद्राद्यभावात्।

उन्हें कोमल शैय्या पर शयन करने की भी कोई आवश्यकता नहीं पड़ती है। मृदु शयन यानी कोमल शैय्या पर शयन करने की भी चेष्टा एक सुख प्राप्ति की चेष्टा है, जो संसार में हर प्राणी किया करता है। तो भगवान के लिए किसी भी तरह की मृदु शैय्या की भी आवश्यकता नहीं है, कोमल वस्त्रों की भी आवश्यकता नहीं है, किसी भी तरह के कोमल संस्तरों की भी आवश्यकता नहीं रह जाती है क्योंकि **“ग्लानि-निद्रा-द्यभावात्”** आचार्य पूज्यपाद महाराज भगवान के प्रत्येक गुण का वर्णन करते हुए उनकी जो विशेषता बता रहे हैं वह हेतु के साथ बता रहे हैं।

कार्य-कारण संबंध

हेतु कहते हैं- कारण को और जब कारण सटीक होता है तभी उससे घटित हुआ कार्य हमारी समझ में आता है। जब भी कोई कार्य हमारे जीवन में होता है तो उसके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है। बिना कारण के दुनिया में कोई भी कार्य नहीं होता है। आपको यहाँ पर पिछले दिनों में वह कारण भी समझ में आए होंगे जो हमारे दैनंदिन जीवन में घटित होते रहते हैं। अगर हमें भूख लगती है, भीतर से प्यास लगती है, तो हम बाहर के अन्नपान को ग्रहण करते हैं। **बाहर का अन्नपान ग्रहण करना कार्य है और भीतर की भूख होना कारण है।** वह भूख के लिए भी एक और कर्म होते हैं, जो उस भूख के लिए भी कारण बनते हैं। इस तरह से यह कारण-कार्य की व्यवस्था, जब हम समझ लेते हैं तब हमें अपने जीवन में घटित होने वाले हर कार्य के प्रति सजगता भी आ सकती है कि भाई! यह कार्य किस कारण से हो रहा है? अगर हमें सुग-

न्धित पदार्थों की आवश्यकता है, तो हमें कहीं न कहीं भीतर से कुछ न कुछ अस्पृश्यता का भाव या अशुचिता का भाव हमारे अन्दर आ जाता है, तब हम किसी भी सुगन्धित पदार्थ से अपने आप को पवित्र करते हैं। इसी तरह से जब हमें शयन करने की आवश्यकता पड़ती है तो उसके पीछे भी भीतरी कारण होते हैं। इन्हें हम शारीरिक कारण भी कह सकते हैं और मनोवैज्ञानिक कारण भी कह सकते हैं।

हमारे सुखों की मर्यादा

शारीरिक कारण मन के साथ जुड़कर ही चला करता है। अगर आपके लिए शयन करने की आवश्यकता पड़ती है और आप यह विचार करते हैं कि हमें शयन करने के लिए कहीं भी नहीं गिर पड़ना है। जमीन होती है, बहुत अच्छे-अच्छे आपने घरों में granite के पत्थर लगवा रखे होते हैं, अच्छे-अच्छे marble के पत्थर लगे हुए होते हैं लेकिन इतना खर्च करने के बावजूद भी आप उस जमीन पर नहीं गिर पड़ते। जबकि आपको उसी जमीन पर गिर पड़ना चाहिए था क्योंकि हमने बहुत खर्च किया है, उस फर्श को लगाने में, उस फर्श को चिकना करने में और उस पत्थर की quality को select करने में हमने बहुत उसमें ताकत लगायी है, दिमाग लगाया है इसलिए अब हमें सोना है, तो इसी जमीन पर सोना चाहिए लेकिन आप उस जमीन पर नहीं सोते। जमीन पर भी आपको एक bed चाहिए और bed पर भी बहुत ही कोमल-कोमल मलमल के, मुलायम-मुलायम dunlop के, sponge वाले अच्छे-अच्छे आपको तकिए, गद्दे और मुलायम-मुलायम चादर चाहिए तब आपको निद्रा आने की आहट होती है- हाँ! **अब निद्रा आएगी। कठोर जमीन पर लेटने से आपको निद्रा कभी आती है? कभी लेटने का भी अभ्यास किया है?** नहीं किया? जमीन पर लेटने से नींद उनको आती है, जिन्होंने अपने घरों में कभी अच्छे-अच्छे granite और marble नहीं लगाए हो। वह किसी भी platform पर, किसी भी सड़क के किसी भी कोने पर, किसी भी ऐसे सार्वजनिक स्थान पर लेट जाएँगे। उस जमीन पर न उनके नीचे कुछ गद्दा होगा, न ऊपर कोई चादर होगी और उस पर लेट करके ही उनको नींद आ जाती है। वे लोग अलग होते हैं।

अनन्त सुखी आत्माओं के सुख के वर्णन का कारण

जब लोग सुख चाहते हैं, सुख की आदत में पड़ जाते हैं तो सुख की आदत में उनके लिए वह सब चीजें चाहिए पड़ती हैं जो उन्हें सुख दे सकती हैं। यहाँ सुख की बात हो रही है। उन लोगों की बात नहीं हो रही है जो दुःखी हैं क्योंकि आपके सामने हमें सुखी लोगों की बात करना है। अगर हम दुःखी लोगों की बात करेंगे तो आप भी दुःखी हो जाओगे और कल से आना बंद कर दोगे। महाराज! आप दुःख की बातें ज्यादा करते हो, हमें दुःख होता है, दुःखी लोगों के उदाहरण देते हो, इसलिए हम आपके पास नहीं आएँगे। **आपके समक्ष हमें सुखी लोगों की बातें करनी पड़ती है क्योंकि जब आप सुखी लोगों की बातें सुनोगे, तभी आपके अन्दर सुख उत्पन्न होगा, सुख की धारणा बनेगी। सुख कैसे उत्पन्न होता है?** यह बात आपके अन्दर आएगी इसलिए हमने छोटे-मोटे सुखी लोगों को नहीं पकड़ा, अनन्त सुखी लोगों को पकड़ा, अनन्त सुखी आत्माओं को पकड़ा कि भाई! हम आपको अनन्त सुख से जोड़ने के लिए सिद्धों की स्तुति करके आपको सिद्ध भगवान से जोड़ते हैं। किसलिए? ताकि आपको भी अनन्त सुख की उपलब्धि हो। आप भी अनन्त सुख को प्राप्त करने की इच्छा करें। किसी छोटे सुख की प्राप्ति की इच्छा न करें। दुःखी लोगों की भी इच्छा न करें,

दुःखी की भी चर्चा न करें। हमें किसकी चर्चा करना है, सुखी लोगों की चर्चा करना है। आपको सुखी बनाने के लिए पिछले एक महीने से ज्यादा होने वाला है और निरन्तर प्रयास केवल आपको सुखी बनाने के लिए किया जा रहा है। लेकिन आप कितने सुखी बन रहे हैं, बन पा रहे हैं, यह आपको भीतर से महसूस होगा। सुखी बनने के लिए भी हमारे सामने सुखी लोग होने चाहिए और सुखी लोग कौन से हैं? दुनिया में हमें और कोई सुखी नहीं दिखायी देता, केवल हमें सिद्ध परमेष्ठी, सिद्ध भगवान ही सुखी दिखायी देते हैं इसलिए हमने सुख की बात करना प्रारम्भ की है।

शयन करने के लिए क्या कारण है?

जब हम सुख की बात करते हैं तो वह सुख कहाँ-कहाँ से आ सकता है? ये सब बातें भी आपके सामने आ रही हैं। शयन करने से भी सुख आता है, सोने से सुख मिलता है। सोने से मतलब? gold से नहीं, अभी उसकी बात नहीं कर रहा हूँ। शयन करने से...सोने से भी सुख मिलता है और वह सुख अगर मिलता है तो हमें भीतर के भावों को देखना पड़ता है कि उसके पीछे का कारण क्या है? **“ग्लानिनिद्रादि अभावात्”** जब हमें अपने अन्दर ग्लानि उत्पन्न होती है, जब हमारे भीतर निद्रा उत्पन्न होती है, तब हमें सुख की शैय्या ढूँढनी पड़ती है। क्या चाहिए पड़ता है? ग्लानि भीतर से उत्पन्न होती है। **शयन करने के लिए कारण उत्पन्न होना चाहिए और कारण क्या है? ग्लानि और निद्रा।** अब आप पूछेंगे ग्लानि क्या चीज है? सोने के लिए, सोने से पहले हमें कभी ग्लानि नहीं आती।

ग्लानि और निद्रा का सम्बंध

ग्लानि समझते हो? क्या समझाएँ आपको। अब ग्लानि अर्थात् ग्लानि होती है। घृणा कहोगे तो कुछ अलग ही चीज हो जाती है। **घृणा में आपकी दृष्टि दूसरे पर चली जाती है।** भाई! हम उससे घृणा करते हैं, hate करते हैं लेकिन यह **ग्लानि भी एक ऐसी चीज है, जो निद्रा के साथ चलती है।** इसका combination है और यह आपको तब महसूस होगी जब आप बहुत थके हारे हो, दिन भर आपने काम किया हो और आपको शाम के लिए इंतजार रहा हो कि भाई! दिन भर काम करके मैं थक गया हूँ और थकने के बाद में जब आप गिर पड़ने की होते हो तो उस समय पर आपके अन्दर ये दोनों भाव आते हैं, ग्लानि भी आती है और निद्रा भी आती है। तब आप सोने की इच्छा करते हो तो यह निद्रा तो हमें समझ में आती है लेकिन यह ग्लानि क्या है? ग्लानि, अगर आप इस तरह से समझो मान लो अगर हम उसे घृणा का ही रूप समझें, तो हम उसे भी समझ सकते हैं। घृणा में हम क्या करते हैं? **हम दूसरे से हटते हैं, हमारे सामने कितने भी अच्छे लोग हों, अगर हमें उससे घृणा है, तो हम उसे देखना भी पसन्द नहीं करेंगे।** हम चाहेंगे कि हम उससे दूर हट जाएँ, यह हमारे सामने से हट जाए, हमें किसी की जरूरत नहीं है। हमें यहाँ से चले जाना है, हमें यहाँ से बहुत घृणा है। घृणा में कौन सा भाव आता है? दूसरे से हटने का भाव आता है।

कार्य-कारण भाव से ग्लानि और निद्रा

आप विचार करो! जब आप को निद्रा आने की होती है, जब आप बहुत थके हुए होते हो और जब आपको केवल शैय्या ही दिखायी दे रही होती है, तो उस समय पर आपको कौन अच्छा लगता है? जो आपके अपने

लोग होंगे, वे भी आपको अच्छे लगते हैं क्या? अगर मान लो आप थके हुए आए हो, आपको नींद बहुत भरी हुई है और आप बिल्कुल लेट जाना चाहते हो। आपको कुछ नहीं दिख रहा है, मुझे सिर्फ लेटने की जगह बताओ और उसी समय पर आपका बच्चा आ जाए और वह आपके पास में आकर के कहने लग जाए... पापा! पापा! आप तो सुबह से अभी आए हो और आते ही एकदम से सो गए आपने मुझे खिलाया नहीं, मुझसे कोई बातचीत नहीं की। तुम क्या करोगे? बेटा! तू भी सो जा अभी चुपचाप से, बाद में बात करेंगे, अभी बहुत नींद आ रही है, अभी disturb मत कर। क्या हो गया आपको? **यह निद्रा का भाव तो आप feel करते हो लेकिन निद्रा के साथ-साथ आपके अन्दर एक ग्लानि का भाव भी भर जाता है।** किससे? सब लोगों से। जब निद्रा आनी होती है, तो फिर कोई दूसरी चीज अच्छी नहीं लगती। वह ग्लानि के भाव के कारण से ही आप किसी दूसरे को उस समय पर पसन्द नहीं करते, भले ही आपकी पसंदीदा कितनी अच्छी चीजें हो। कितने ही अच्छे आपके सामने पसंदीदा item रखे हुए हो। लेकिन अगर आपको नींद आ रही है, तो आप सबसे पहले कहोगे नहीं, पहले मुझे नींद ले लेने दे, उसके बाद में दूसरी बात करूँगा। यह किसके कारण से होता है? यह ग्लानि के कारण से होता है।

निद्रा का उदय व ग्लानि का भाव साथ-साथ

आखिर आपने कहीं न कहीं घृणा की न। वह घृणा का मतलब यह नहीं है कि हमने उससे द्वेष कर दिया। लेकिन अगर हम कहीं भीतर से देखें तो **वह द्वेष से होने वाली घृणा नहीं है, वह निद्रा से उत्पन्न होने वाली घृणा है।** अर्थात् निद्रा एक ऐसी चीज है जो हमें सबसे घृणा उत्पन्न करा देती है और जब हमारे अन्दर ऐसी घृणा उत्पन्न हो जाती है, कि हमें केवल सोने के अलावा और कुछ अच्छा नहीं लगता, कुछ भी अच्छा नहीं लगता। सबसे पहले हमारे लिए वही priority में रहता है तो उस समय पर उस भाव को आचार्यों ने पकड़ा और यह मनोवैज्ञानिक भाव जब आपके अन्दर उत्पन्न होता है तभी आप सो पाते हैं। यानी शयन करने के लिए बाहर में तो आपको मृदु बिस्तर चाहिए लेकिन भीतर कारण क्या है नींद आने का? सोने की इच्छा के लिए कारण क्या है? आचार्य कहते हैं...ग्लानि होनी चाहिए, निद्रा आनी चाहिए। निद्रा का उदय हो और साथ-साथ में ग्लानि का भाव हो।

निद्रा के साथ ग्लानि होने पर सभी अप्रिय

अब वह ग्लानि देखा जाए तो उस समय पर आपको दुनिया की हर चीज से होती है। मतलब आप सोना चाहते हैं और दुनिया में बहुत कुछ हो रहा हो और आप उसे देखना नहीं चाहते। **कोई दुनिया में उत्सव हो रहा हो, कोई पूरे विश्व का उत्सव चलने वाला हो और उस समय पर आपको नींद आ रही हो तो आप उस उत्सव को देखने की कोशिश करेंगे कि नींद लेने की कोशिश करेंगे?** आपको कौन सी चीज प्रिय होगी? नींद प्रिय होगी अर्थात् आपको दुनिया से ग्लानि हो गई, तभी तो आप दुनिया से अलग हट गए। अपने आपको आँखों में बंद करके सुला लिया, अपने आप को दुनिया से दूर रख लिया, इसी का नाम है-ग्लानि। जब हम दूसरे पदार्थों से किसी भी तरह से घृणा करते हैं तो वह घृणा तो हमें समझ में आती है लेकिन जब हम निद्रा के भाव में होते हैं तो उस समय पर भी हमारे अन्दर एक ग्लानि अलग तरह की उत्पन्न होती है, जिसमें हमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। हमारे सामने हमारे परिवार के लोग खड़े हो,

आपकी पत्नी खड़ी हो, बच्चे खड़े हो, सब खड़े हो लेकिन अगर आपको भीतर से निद्रा का भाव आ रहा है और ग्लानि आ रही है तो आपको कुछ भी अच्छा नहीं लगेगा।

निद्रा से ग्लानि की तीव्रता का भाव

आपने कभी सुना है कि हमारे अन्दर ग्लानि भी होती है? आप कहोगे कि मुझे किसी से भी घृणा नहीं है लेकिन जब आप नींद लेते हो तो आपको दुनिया से घृणा हो जाती है। मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा, तुम मेरे सामने से हट जाओ। न मुझे कुछ सुनना है, न मुझे कुछ देखना है और उस समय पर अगर आपकी उस नींद में कोई बाधा उत्पन्न करता है तो आपको उस पर भी गुस्सा आ जाता है। अगर उस नींद में आपका कोई भी प्रिय, घर का परिजन आपको बाधा पहुँचाएगा तो आप नींद में भी उसको चोट पहुँचा सकते हो। इसलिए कहा जाता है- जब कोई सो रहा हो तो उसे अचानक से जगाना नहीं और अगर वह सोने के भाव में है और बार-बार आप उसे उठाने की चेष्टा करो, तो उसे बार-बार उस तरह से जगाना नहीं क्योंकि उसे गुस्सा आ जाएगा।

सोते हुये व्यक्ति को जगाने की नीती सम्मत विधि

जब आप बच्चे को बार-बार जगाते हो और वह उठना नहीं चाहता है तो उसके अन्दर भी एक गुस्सा उत्पन्न हो जाता है, वह भी irritate हो जाता है। यह बात अलग है कि वह इतनी हिम्मत नहीं कर पाता कि वह आपके ऊपर गुस्सा कर पाए, आपसे कुछ कह पाए क्योंकि वह बच्चा है। अगर वहीं पर बड़ा व्यक्ति होगा तो आप समझ पाओगे कि बड़े व्यक्ति को एक बार भी कह दिया तो डर कर बोलना...भैया! time हो गया है, उठ जा। नहीं उठना चाह रहा है तो चुपचाप हट जाओ तुम। ज्यादा तुम उसको बार-बार कुछ करोगे, बार-बार उसे जगाने की कोशिश करोगे और वह अगर सोना चाहता है, तो गुस्से में वह कुछ भी उठा कर मार सकता है तुमको। इसलिए कहा जाता है- किसी को जगाना नहीं चाहिए। जो सो रहा है, उसे सोने देना चाहिए, नीति तो यह कहती है। अब कोई पढ़ा दिन भर सोता ही रहे तो फिर क्या करे? फिर सोचना पड़ता है, माता-पिता को जगाना पड़ता है। जरूरत से ज्यादा नींद किसी को आ रही हो तो फिर उसे उठाना भी पड़ता है। लेकिन सावधानी यही रखी जाती है कि निद्रा में अगर कोई है, तो उसे न जगाया जाए।

दिन की शुरुआत कैसे करें

पहले के लोग निद्रा से जगाने के लिए कोई उसका न शरीर हिलाते थे, न उसको झुलझुलाते थे, न उसके ऊपर कोई पानी डालते थे केवल सामान्य से, अगर उसे उठना होगा, आप अपनी चहलकदमी कीजिए, कुछ भी आप अपने मंत्र आदि का उच्चारण कीजिए, कोई भी आप अच्छे स्वर में उस समय पर भजन आदि गाइये, उसके सुनने से अगर उसकी नींद अच्छे से खुल जाये तो वह प्रसन्नता से उठ बैठेगा और आपको भी धन्यवाद देगा कि उठने के बाद में सबसे पहले हमारे कान में “**ओं अर्हं नमः**” की आवाज आ गयी। यह जरूरी होता है। उठ करके ही अगर आप गुस्सा करने लग गए तो आप समझ कर चलना कि दिन भर आपका गुस्से में जाएगा। उठ करके ही अगर आप सबसे पहले कुछ न कुछ दूसरे के बारे में गलत सोचने लग गये, चाहे वह अपने ही माता पिता क्यों न हो, जिन्होंने हमें उठाया उनके ऊपर ही गुस्सा आने लग जाता

है- न सोते हैं, न सोने देते हैं। बच्चों के लिए सबसे बड़ा dialogue यही रहता है। माता पिता घर में हैं, उम्र बूढ़ी हो गयी है, अर्थात् उम्र बढ़ी हो गयी है, नींद आती नहीं है, न सोते हैं न सोने देते हैं। अरे भाई, तुमको नींद नहीं आ रही तो हमको तो सोने दो। उनके लिए भी अगर disturbance होता है तो फिर उन्हें गुस्सा आता है। वह कहेंगे नहीं लेकिन आयेगा। सुबह-सुबह अगर बच्चा गुस्से में उठेगा तो वह दिन भर उसके अन्दर irritation का भाव बना रहेगा। इसलिए सुबह उठने के बाद में प्रसन्नता से उठना।

शुभ, मंगलमयी चीजों के आलंबन का महत्व

निद्रा कैसे लाई जाती है? यह तो आपको कई बार बताया गया है लेकिन जब निद्रा का समापन हो तब क्या करना, यह आज आप सीख लो। **जागरण जिस समय पर हो उस समय पर क्या करना? जागृति आने के बाद में सबसे पहले अपने भावों का कैसा समायोजन होना?** यह बहुत जरूरी है क्योंकि यह आपकी दिन भर की शुरुआत का सबसे पहला समय है, पहला क्षण है और यह क्षण अगर अच्छा बीतेगा तो दिन भर अच्छा बीतेगा। जब तक कि आप दोबारा नहीं सोते तो तब तक के लिए आपके दिमाग में यह निर्धारण हो जाता है कि आज दिन भर आप किस भावों से जिएँगे? इसलिए यह जानना जरूरी है कि सोने के बाद जब हम जागते हैं तो उस जागने पर सबसे पहले हमें क्या करना चाहिए? जागने पर हमारे सामने शुभ होना चाहिए, मंगल होना चाहिए। शुभ बातें हमारे दिमाग में आनी चाहिए, शुभ विचार आने चाहिए, शुभ ही भजन, भगवान के नाम आदि हमारे कान में पड़ने चाहिए और हमें शुभ मंगलमय चीजें ही सामने दिखनी चाहिए। पहली क्रिया हमारी शुभ होनी चाहिए जागने के बाद। अगर पहली क्रिया शुभ हो गई तो फिर आपका दिन भर आपके लिए शुभ बना रहेगा। वह पहली क्रिया शुभ कैसे होगी? आपको और कुछ नहीं करना, विचारों में शुभता लाना, सुनने वाली चीज में मंगलता लाना और अपने आँखों के सामने मंगलमय दृश्य रखना। यह तीन चीजों के साथ में अगर आप शुरुआत करते हैं अपने दिन की तो आपका पूरा दिन अच्छा बीतेगा, मंगलमय बीतेगा, शुभमय बीतेगा।

मंगलमय विचार से दिन की शुरुआत

कैसे करें? सरल सी अगर चीजें हैं तो क्या हो सकती हैं? आप सुबह उठते ही मंगलमय विचार सबसे पहले सुबह उठकर आपके लिए यह आना चाहिए;...**हे भगवन्! आज मुझे अपनी जिंदगी का एक दिन और जीने के लिए मिल रहा है। हे भगवन्! आज के दिन मैं किसी का कोई अहित नहीं करूँगा। आज के दिन मैं अपने लिए अच्छे से अच्छा करने की कोशिश करूँगा, आज के दिन मैं किसी भी तरह के कोई भी पाप कार्य में संलग्न नहीं होऊँगा।** यह मेरा आज का विचार है। यह विचार जब आपका शुरु होगा तो आपके कानों में भी कुछ अच्छे मंगलमय मंत्र आने चाहिए। भगवान के नाम का स्मरण आपको अपने मुँह से ही करके अपने कानों में डालने चाहिये। जो भगवान आपके लिए प्रिय हैं, उन भगवान का नाम बोल कर आप अपने कानों को श्रवण कराएँ कि हमें इन भगवान का स्मरण करना है, कानों से उस शब्द को सुन कर।

ओं अर्ह नमः इन बीजाक्षरों की महत्ता

अगर आपको कुछ भी नहीं आता है कुछ भी याद नहीं आता है तो 'ओं अर्ह नमः' यह पवित्र मंत्र है, इनका ही स्मरण करो। आपके दिमाग में विचार आए तो वह **ओं अर्ह नमः** के अक्षरों का विचार आ जाये। आप के लिए विचारों की पवित्रता आने लग जायेगी। सुनने के लिए आपको कोई मंत्र, कोई शुभ बात न मिले तो आप **ओं अर्ह नमः** उच्चारण करके अपने को सुना लो और सामने देखने के लिए अगर आपको कुछ अच्छा न दिखे तो आप अपने सामने जहाँ bedroom में आप सोते हैं वहाँ पर **ओं अर्ह नमः** यह लिखवा लो। किसी भी तरह से लिखवा लो चाहे वह किसी metal की sheet पर लिखवा लो, चाहे वह किसी तरह से colour से लिखवा लो, चाहे वह thermocol से लिखवा लो।

दृष्टि में पवित्रता कैसे लाएँ

आपके सामने यह मंत्र रूप शुद्ध अक्षर आपके सामने रहेंगे तो आपकी दृष्टि में पवित्रता आयेगी और उस के साथ अगर हो जाए तो आचार्य गुरुदेव की एक हँसती हुई photo अपने सामने उस समय पर रखना, जिस समय पर आप सो कर उठते हैं, तो आपके अन्दर अपने आप प्रसन्नता का, शुभता का, मंगलता का भाव आ जाएगा। **यह सुबह उठने के बाद में होने वाली प्रारम्भिक क्रियाएँ बहुत जरूरी होती हैं। क्योंकि दिन भर आपका कैसा गुजरना है?** यह सुबह के समय पर निर्धारित होता है, इसलिए पहले जो भी लोग सुबह उठते थे, ब्रह्म मुहूर्त में उठते थे और उठने के बाद में सबसे पहले परमात्मा का स्मरण करते थे। यह भारतीय संस्कृति में रहा है। ऋषि मुनि ही नहीं सामान्य श्रावक भी उठ कर के सबसे पहले परमात्मा का नाम लेता है। आपके लिए भी यही कहा जा रहा है कि सबसे पहले उठकर आपको कुछ नहीं आता है तो आप **ओंकार** का स्मरण करें, नाद कर ले, जाप कर ले, **अर्ह** का स्मरण कर ले, नाद कर ले, जाप कर ले और आप परमात्मा का स्मरण करके ही अपने दिन की शुरुआत करें। एक minute, दो minute, चार minute, दस minute जितना आपके पास में समय हो उतने में आप करके ही उठे।

परमात्मा के स्मरण से दिन की सकारात्मक शुरुआत कैसे करें?

जब आप सुबह शीय्या पर बैठे हुए हैं अपने बिस्तरों पर भी बैठे हुए हैं तो भी आपको इस तरह का स्मरण करने में कोई दोष नहीं है। हम बिस्तरों पर बैठे-बैठे क्या परमात्मा का नाम ले सकते हैं? **भाई, परमात्मा का नाम किसी भी स्थिति में आप ले सकते हैं।** बिस्तरों पर बैठे-बैठे भी ले सकते हैं और **ओं अर्ह नमः** का स्मरण भी बिस्तरों पर बैठे-बैठे कर सकते हैं। आप सबसे पहला कदम जमीन पर बाद में रखें पहले आप अपने आप को पहले थोड़ा सा सावधान कर लें। दो minute कर लिया, पाँच minute कर लिया, जितना आपके लिए समय है, उतना कर लें और एक minute भी कर लो तो भी चलेगा। एक minute भी बहुत होता है। **ओं अर्ह नमः** का पाँच बार आपने उच्चारण कर लिया, सामने आपने **ओं अर्ह नमः** का visualization कर लिया। सामने आपने गुरु महाराज के चित्र को देख लिया और उसी समय पर आपने अपने अंतरंग में उन शुद्ध, सिद्ध आत्माओं का भी स्मरण कर लिया क्योंकि **अर्ह** के स्मरण से आपको सिद्ध आत्माओं का भी स्मरण हो आएगा। बस इतना ही आपके लिए उस समय पर करना जरूरी होगा और आप अपनी हथेलियों को घिसकर आँखों पर रखें, कानों पर रखें, मुख पर रखें, पेट पर रखें, आपके शरीर में जहाँ

पीड़ा हो वहाँ पर रखें और यह भाव करें...**मैं स्वस्थ हूँ, मैं प्रसन्न हूँ**, आज का दिन मैं पूरी स्वस्थता और प्रसन्नता के साथ में गुजारूँगा। इसके बाद मैं आप अपने बिस्तर से उठ करके कोई भी काम के लिए चले। देखिए आप आपका जीवन का वह दिन और दिनों की अपेक्षा से कितना अच्छा गुजरता है, यह आप खुद महसूस करेंगे।

दिन की अच्छी शुरुआत का महत्व

निद्रा से पहले भी तैयारी करनी पड़ती है और निद्रा लेने के बाद जब हम जीवन के नए दिन की शुरुआत करते हैं, तब भी हमें एक नई तैयारी करनी पड़ती है। अगर आप दिन की शुरुआत अच्छे ढंग से नहीं करेंगे तो आपका दिन अच्छे से नहीं गुजरेगा। कितने लोग करते हैं बताओ? इस प्रक्रिया को अब ध्यान से करना है। आपके लिए यह भाव आना जरूरी है कि अगर हम दिन भर अच्छे ढंग से रहना चाहते हैं तो दिन की शुरुआत हमारे लिए अच्छे ढंग से हो। इसलिए पहले के लोग सामायिक ध्यान आदि सुबह-सुबह के समय पर ही किया करते थे उठने के बाद। इसलिए आपको जब अर्ह का भजन पढ़ाया जाता है तब कहा जाता है...

**चलते फिरते भी तू गा ले,
भोजन से पहले तू ध्या ले,
चलते फिरते भी तू गा ले,
भोजन से पहले तू ध्या ले,
सोने से पहले, जग कर के**

सोने से पहले और फिर जग करके, पूरा का पूरा आपके जीवन में अच्छा भाग्य हो आपका जीवन शुभमय हो इस पूरी की पूरी भावनाओं को ध्यान में रख कर ये शब्द आपके लिए, हितकारी भावों के साथ में समायोजित किये गए।

**सोने से पहले, जग करके,
मन को इसका नाद सुना ले
मन को इसका नाद सुना ले
सोने से पहले, जग करके
मन को इसका नाद सुना ले
मन को इसका नाद सुना ले**

कौन सुनाएगा नाद? कोई दूसरा सुनाए या न सुनाए हमें तो self depend होना है और हमें, अपने ही मन को अपने ही मन से स्वयं सुनाना है। जब हम इस तरह से करने लग जाएँगे तब हमारे जीवन में पवित्रता आना शुरू होगी।

शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध मंत्र से,
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध मंत्र से, तू अपना मुख खोल।
ओं अर्ह, ओं अर्ह, ओं अर्ह बोल।
ओं अर्ह, ओं अर्ह, ओं अर्ह बोल।
सभी कार्य की सिद्धि से तू पहले इसको बोल,
सभी कार्य की सिद्धि से तू पहले इसको बोल,
ओं अर्ह, ओं अर्ह, ओं अर्ह बोल।

‘ओं अर्ह नमः’ एक मंगल मंत्र

सभी कार्यों की सिद्धि कराने वाला, सर्व मनोरथों की प्राप्ति कराने वाला, सर्व कामनाओं की आपके जीवन में पूर्ति कराने वाले, यह मंगल मंत्र है इसलिए इन्हें मंगल मंत्र कहा जाता है। **मंगलाचरण आपके जीवन का स्वयं, स्वयं के द्वारा सुबह-सुबह इस तरह से हो जाना चाहिए।** जब ऐसा मंगलाचरण होगा तो आपको अपने आप समझ में आने लगेगा कि हम संघर्षों से भरी हुई इस जिंदगी में भी किस तरह से धर्म करें। यही धर्म करने का तरीका है।

संघर्ष के क्षणों में परमात्मा के स्मरण का महत्व

पूछा गया था राजा श्रेणिक के माध्यम से संघर्षों से हम क्या सीखें? संघर्षों में भी रहकर हम धर्म करने का समय निकाल लेते हैं, यह अगर हमने सीख लिया तो आपने जिंदगी की सबसे बड़ी सीख अपने आप प्राप्त कर ली। संघर्ष सुबह के पहले क्षण से नहीं होना चाहिए। **सुबह के पहले क्षण से ही अगर आप संघर्ष करने लग गये, पहले क्षण से ही आप किसी को देख कर के irritate होने लग गये, पहले क्षण से ही आपके अन्दर negative thoughts आने लग गये तो फिर आपका दिन पूरा का पूरा और ज्यादा, और ज्यादा, और ज्यादा धीरे-धीरे negative होता चला जाएगा।** इसलिए संघर्षों के बीच की शुरुआत में भी अगर हम अपने जीवन में ऐसे क्षण निकाल लेते हैं, जिस समय पर हम थोड़े से, परमात्मा का स्मरण करने के लिए अपने आपको तैयार रख पाते हैं तो यही हमारे ऊपर सबसे बड़ी परमात्मा की कृपा होती है, परमात्मा की छाया होती है और जब परमात्मा की छाया हमारे पास में आती है तो दुनिया में कितने भी लोग, किसी भी तरह से दुःखी हो उनको भी किसी न किसी की छाया मिल जाती है।

“मातृछाया के” कार्य की सराहना

यहाँ मातृछाया के अतिथि बैठे हुए हैं। यह अतिथि क्या करते हैं? उन शिशुओं को छाया देते हैं, उन विकलांग या अपने कर्म के कारण से पीड़ित, उन बच्चों के लिए, जिनके लिए किसी भी तरह से कोई शारीरिक सुख की प्राप्ति नहीं है। उन्हें अपने कर्म के कारण से इस तरह का दुःख मिला है कि वह जीवन जीने के लिए मजबूर हैं। माता पिता भी शायद होते हैं या नहीं होते हैं? कभी-कभी ऐसे भी अनाथ बच्चे होते हैं, जिनके माता पिता का भी कोई अता-पता नहीं होता। कौन सा शिशु कहाँ पड़ा हुआ मिल जाता है? कहाँ, किस

शिशु का पालन करने के लिए मातृ छाया में पहुँचा दिया जाता है लेकिन वह अपना जीवन जीने लग जाता है। उसके लिए जो भी कृपालु लोग होते हैं उनके ऊपर भी परमात्मा की छाया आ रही है और वे अगर बच्चे के ऊपर छाया डाल रहे हैं तो वे भी परमात्मा की छाया को उसके through पहुँचा पा रहे हैं। कम से कम उसे जीवन तो मिला जीने को, नहीं तो वह किसी न किसी पशु के दांतों का शिकार हो जाता, **पशु के पेट का शिकार हो जाता, किसी और व्यक्ति का शिकार हो जाता। अगर वह किसी अच्छी जगह पर पालन-पोषण के लिए आया है, तो यह भी उसके अच्छे कर्म के फल हैं।** जन्म के तुरन्त बाद अच्छे कर्म नहीं मिले लेकिन थोड़ी देर बाद उसे अच्छे कर्म के फल मिल गए ऐसा भी होता है। जरूरी नहीं है कि जन्म के तुरन्त बाद ही व्यक्ति के लिए अच्छे पुण्य का उदय आ जाए। श्रीकृष्ण को भी जन्म के बाद में कितने लोगों से बचाते हुए, नदियाँ पार करते हुए कहाँ से कहाँ तक ले जाया गया। जन्म के समय पर दुःख होता है लेकिन बाद में जब पुण्य का उदय आता है तो सुख ही सुख हो जाता है। ऐसे अनेक महापुरुष होते हैं इसलिए जन्म भले ही किसी का खराब हुआ हो लेकिन अगर उसे अच्छे संयोग मिल जाते हैं तो अच्छे संयोग मिलने पर भी उसके अन्दर के पुण्य का उदय जागृत हो जाता है, यह संयोग की बात है। जो भी लोग इस तरह के कार्य करते हैं, परोपकार के कार्य करते हैं, मातृ छाया बना करके रखते हैं, वह इतने परोपकार के कार्य करते हैं कि उन जीवों के अन्दर जो दुःख था उसको सुख में परिवर्तित कर देते हैं। यह परमात्मा की कृपा उनके ऊपर हमेशा बरसती रहती है।

‘ओं अर्ह नमः’ का स्मरण भावों की शुद्धता के लिए

इसी में अगर हम उन बच्चों के अन्दर इस तरह के मंत्र भी उन्हें सुनाते रहें, **अगर हम उन्हें ओं अर्ह नमः का मंत्र सुनाते रहे तो उनके भावों में, उनके विचारों में और ज्यादा शुद्धि आती जाएगी।** यह काम आप आराम से कर सकते हैं। भोजन से पहले भी उनसे कह सकते हैं...बेटा! ओं अर्ह नमः सुनना है या बोलना है, जैसी उनकी क्षमता हो। भोजन कर लिया, सो रहे हैं, उससे पहले भी कह सकते हैं। सो गए, उठ रहे हैं, सबसे पहले क्या बोलना? ओं अर्ह नमः, ओं अर्ह नमः इसमें सब कुछ है। यह मंत्र किसी जाति विशेष का नहीं, सम्प्रदाय विशेष का नहीं है। यह मंत्र सबके लिए होते हैं। **ओं एक अपने आप में universal sound है। जब ओं universal sound है, तो अर्ह भी universal sound है।** आप देखना अर्ह का उपयोग, अर्ह मंत्र का किसी भी तरह से मूल्यांकन, आपको या शब्दांकन आपको मिल जाएगा। हिंदू धर्म में भी मिल जाएगा, even इस्लाम धर्म में भी अर्ह मान्य है, सबके लिए है। यह शब्द ऐसे हैं जो सब जगह प्रचलित होते हैं और इन शब्दों के माध्यम से ही हमारे विचारों में शुद्धता आने लग जाती है। आखिर विचारों में शुद्धता आने का कारण क्या होता है? शब्द ही तो होते हैं। अगर आप सुबह-सुबह उठ कर, किसी भी शान्त अच्छी ध्वनि सुन कर उठ रहे तो आपका मन शान्त हो जाएगा और सुबह-सुबह आप गाली सुनकर उठ रहे हैं...नासपिटा उठता नहीं है और क्या बोलते हो? पड़ा-पड़ा सोता रहता है, गधा कहीं का, ऐसे गाली देकर अगर किसी को उठाया जाएगा तो बेचारा दिन भर नाश ही करता रहेगा, दिन भर गधे जैसे ही काम करता रहेगा। सुबह-सुबह अच्छा वातावरण होता है और उस सुबह के वातावरण का हमारे ऊपर सबसे अच्छा प्रभाव पड़ता है।

मंगलमयी प्रभाती

यह निद्रा आने की बात नहीं है, यह निद्रा जाने की बात है। जब निद्रा जा रही है, उस समय पर भी हमारा प्रभात सुबह का मंगलमय होना चाहिए और प्रभाती मंगलमय होगी, तो दिन भर मंगलमय होगा। लेकिन प्रभात ही तो, कुछ लोगों के जीवन में प्रभात आता ही नहीं है। **प्रभात क्या कहलाता है?** जब सुबह सूर्य की आभा निकलने वाली हो, उससे पहले उठ जाना वह प्रभाती कहलाती है और जब सूर्य सिर पर आ जाए जो 10 बजे उठ रहे हैं, 11 बजे उठ रहे हैं उनके जीवन में कभी प्रभात होता ही नहीं है। उनके जीवन में जागरण का क्षण आता ही नहीं है। वह सोते ही हुए उठते हैं और फिर सोते हुए अपने काम में ऐसे लग जाते हैं, जैसे सो ही रहे हों। मरे हुए से उनकी जिंदगी रहती है। न उन्हें स्वयं का भान होता है, न उन्हें अपने आत्म तत्त्व का भान होता है, न इस तरह की कोई विचारधारणा होती है कि हम किस लिए इस दुनिया में आए? क्यों हमने जन्म लिया? किसके लिए हम जी रहे हैं? कोई विचार करने का उन्हें समय नहीं मिलता क्योंकि दस बजे सो कर उठेंगे फिर अपने काम में लगेंगे और बारह बजे तक फिर अपने office तक पहुँचेंगे, दिन भर फिर अपने काम में लगेंगे, रात में फिर देर से सो जाएँगे, कोई उनके जीवन में प्रभाती आता ही नहीं है। प्रभाती अपने आप में बहुत बड़ी चीज है। सुप्रभात होना। सुप्रभातम् कहा जाता है।

सुप्रभात से होती है, जीवन की प्रभात

सुबह-सुबह जब आप उठें तो सबसे पहले...**सुप्रभातम्**। यहाँ तक कि आचार्यों ने सुबह का एक स्तोत्र बनाया है, सुप्रभात के नाम से '**सुप्रभात स्तोत्रम्**' सुबह-सुबह उठकर प्रभात काल में यह स्तोत्र पढ़ो। **स्तोत्र पढ़ने का समय नहीं है तो उस स्तोत्र में क्या है? सब परमात्मा के नामों का स्मरण है। आप अपने भगवान के नाम का स्मरण करो, यही सुप्रभाती है।** जब आप समय पर उठेंगे नहीं, सुप्रभात होगा नहीं, प्रभात का समय होगा नहीं, तो आपके जीवन में कहाँ से प्रभात आएगा? प्रभात अर्थात् जागरण का समय होता है। भीतर से जागृति आपके जीवन में कैसे आयेगी? आप सोते हुए ही जागेंगे और सोते हुए ही अपने जीवन को पूरा निकाल देंगे। आपको पता ही नहीं पड़ेगा हमारी जिंदगी कहाँ निकल गई। इसलिए प्रभात का बड़ा महत्व है।

अनन्त सुखदायी परमात्मा की जागृत अवस्था

निद्रा आदि का होना, समय पर होना, संसारी जीवों के लिए जरूरी है लेकिन भगवान के लिए निद्रा आदि का होना कोई जरूरी नहीं है क्योंकि निद्रा में भी हमें सोना पड़ जाता है, जागरण छूट जाता है। **भगवान का ही अगर जागरण छूट जायेगा, प्रभु ही अगर जागृत नहीं होगा तो प्रजा कैसे जागृत होगी?** इसलिए सिद्ध भगवान हमेशा जागृत हैं। निद्रा नहीं है, ग्लानि नहीं है, इसलिए उन्हें किसी शैय्या की आवश्यकता नहीं है। कोई भी तरह की शैय्या हो...चाहे मृदु हो चाहे कठोर हो। अगर शैय्या है तो भीतर निद्रा है, ग्लानि है। इसलिए यहाँ कहाँ जा रहा है...हे सिद्ध भगवान! आपके अन्दर किसी भी तरह की निद्रा और ग्लानि नहीं होने से सिद्ध हो जाता है कि आपको किसी भी तरह की शैय्या की जरूरत नहीं है। शैय्या भी अलग-अलग तरीके की होती हैं। कोई भी शैय्या हो, न नाग शैय्या की जरूरत है और न ही किसी भी तरह के बिस्तरों की शैय्या की जरूरत है, न शिला शैय्या की जरूरत है, न पर्वतीय शैय्या की जरूरत, किसी शैय्या की जरूरत नहीं है।

योगी तथा भोगी के शैय्या की मृदुता क्रम

मुनि महाराज के लिए भी शैय्या बताई जाती है बहुत अच्छी वाली। क्या बोलते हो? 'शैय्या शिला पार्वती'। मुनि महाराज की शैय्या है क्या? हाँ! शैय्या शिला पार्वती। 'ज्ञानार्णव' में लिखा हुआ है अर्थात् शिला कैसी होती है? पर्वतों की बनी हुई शिला को पार्वती शिला कहते हैं। वह मुनि महाराज की शैय्या होती है। जब तक संसार में हैं, थकेंगे, मुनि महाराज को भी सोना पड़ेगा...चाहे वह शिलाओं पर सोएँ, चाहे वह लकड़ी के पाटों पर सोएँ। उन्हें मृदु शयन की आवश्यकता नहीं है क्योंकि जो प्रभु के मार्ग पर चल पड़ा है, जो परमात्मा के मार्ग पर चल पड़ा है, अब उसे मृदु शयन की आवश्यकता नहीं है। शयन की आवश्यकता पड़ जाती है तो अब वह मृदु शयन का सुख नहीं लेता है। शयन का थोड़ा सा आराम लेता है क्योंकि शयन जरूरी है और मृदु शयन! यह सुख पूर्वक होने वाला शयन है इसलिए आप सुख पूर्वक सोया करो और मुनि महाराज अपने लकड़ी के पाटे पर, कठोर पाटे पर ही शयन करते हैं। मृदु शयन नहीं करते हैं और आप मुलायम-मुलायम mat पर, मुलायम-मुलायम गद्दों पर, चादरों पर, लेट कर सोते हैं। आपके लिए मृदु शयन कहलाता है और परमात्मा के लिए शयन है ही नहीं। एक क्रम समझना...जब तक व्यक्ति सुख चाहता है, भोग की स्थिति में रहता है उसके लिए मृदु शयन चाहिए। जब व्यक्ति योग की स्थिति में आ जाता है, योगी हो जाता है तो उसे कठोर शयन भी पर्याप्त हो जाता है क्योंकि यह choose क्यों करना? कि हमें मृदु ही चाहिए। मृदु से तो शरीर को ज्यादा सुख मिलता है। नहीं! तुम्हें केवल सोना है। शयन करना शरीर की जरूरत है तो शयन कीजिए और शयन अगर पृथ्वी पर लेटने पर भी हो सकता है, तो वह किसी भी तरह से शयन करके भी आप अपनी उस निद्रा के भाव की पूर्ति कर लीजिए। कठोर शयन ही करना है। पृथ्वी भी कठोर होती है...काष्ठ का फलक, यह भी कठोर होता है। इसलिए लकड़ी, शिला, इन चीजों को मुनि महाराज की शैय्या कहा गया है और आपकी शैय्या, वह तो आप जानते ही हैं। अच्छी-अच्छी company के गद्दे, अच्छी-अच्छी company के sponge वाले मोटे-मोटे, आपके सामने शयन के आसन होने चाहिए तब आपको नींद आती है। लेकिन परमात्मा को इस प्रकार के शयन की भी कोई जरूरत नहीं होती है। हम जब भी सिद्ध भगवान को देखें तो क्या स्मरण करें? आप हमेशा जागृत हैं। भगवान हमेशा कैसे हैं? जागृत हैं। भगवान को कभी सुलाना नहीं और कभी अपने मन में धारणा मत लाना कि भगवान सोते हैं। भगवान हमेशा जागृत हैं।

सामान्य व्यक्ति के लिए निद्रा का महत्व तथा विधि

सोना हमारा काम हो सकता है। जो शरीर के साथ हैं, जो थकते हैं, जो खाते हैं, पीते हैं, तो सोना पड़ेगा। जिनके लिए शरीर भी नहीं, खाना-पीना भी नहीं, इन्द्रियाँ नहीं, उन्हें सोने की भी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है। यह यहाँ पर हेतु दिया गया है कि हे भगवन्! आपको न मृदु शैय्या की जरूरत है, न कठोर शैय्या की जरूरत है क्योंकि आपके अन्दर ग्लानि और निद्रा का अभाव हो चुका है। कारण नहीं है भीतर तो बाहर का कार्य दिखाई नहीं देगा। निद्रा कारण है और शैय्या होना चाहे वह मृदु होना या कठोर होना, यह कार्य है। इसलिए आपने देखा होगा...शैय्या बनानी पड़ती है, सोने से पहले थोड़ा सा बिस्तर लगाना पड़ता है। अब वह बिस्तर चाहे कहीं भी लग जाए, चाहे चौराहे पर लग जाए, चाहे platform पर लग जाए, चाहे अपने घर के कमरे में लग जाए, बिस्तर तो लगाना ही पड़ता है। सोने से पहले बस आदमी देख तो लेता है कि हमें कहाँ लेटना है? नाली में तो नहीं लेट जाता? गड्ढे में तो नहीं लेट जाता? वही उसकी शैय्या हो गई

और इस तरह की शैय्या आपके दिमाग में अगर रहे कि हमें अपनी शैय्या का भी शोधन करके लेटना है तो भी यह आपकी एक सावधानी कहलाएगी। सोने से पहले की भी तैयारियाँ रखो, उठने के बाद की भी तैयारियाँ रखो। **इस तरह से जब आप समझोगे तब आपके जीवन में ऐसे सिद्ध भगवन्तों के स्मरण का कोई फायदा आपको महसूस होगा।** अन्यथा आप सुनते रहोगे एक के बाद एक, एक के बाद एक। यह जो सुनना हो रहा है, जो तर्क सहित सुनना हो रहा है यही आपकी एक तरह से परीक्षा हो रही है। क्या हो रही है? आप एक के बाद एक नई चीज सीखते जा रहे हो, हेतु सहित सीखते जा रहे हो, यह आपकी परीक्षा है और यह परीक्षा में pass होना सबके लिए जरूरी होता है।

भगवान की वाणी शाश्वत सत्य



श्रेणिक बदल सकते हैं लेकिन भगवान कभी भी बदलते नहीं हैं। श्रेणिक राजा बदल सकते हैं लेकिन भगवान की वाणी नहीं बदलेगी, भगवान कभी नहीं बदलेंगे। यह जो शाश्वत सत्य है, यह हमारे सामने रहना चाहिए और इसलिए श्रेणिक के द्वारा जब कुछ कहा जाता है, पूछा जाता है, स्मरण किया जाता है, तो आपको याद आने लग जाता है... अब तो श्रेणिक हैं, अब यहाँ पर श्रेणिक के भाई आ जाते हैं और हमारी कहानी में श्रेणिक के बेटे चल रहे हैं। क्यों? श्रेणिक के पुत्र अभय कुमार मिल गए हैं। अभय कुमार उनके साथ में और मिलने के बावजूद भी दोनों एक दूसरे के साथ में रह भी रहे हैं, प्रसन्न भी हैं और पूरी प्रजा भी प्रसन्न है कि पिता और पुत्र का मिलन हो गया। उसके मिलने के बाद में जो नंदश्री थी, वह नहीं आई थी, उनको भी बुलाया गया। उसको भी लेने गए और वह भी आ गए और पूरा घर परिवार अब प्रसन्नता के साथ में रहने लग गया।

मनोरंजन, बुद्धि चातुर्य तथा बल वृद्धियुक्त खेलों का महत्व

लेकिन कुछ आदतें होती हैं... जिसकी जैसी आदतें पड़ी रहती हैं वह भी कभी न कभी अपने लिए मनोरंजन में भी काम आती रहती हैं। **श्रेणिक की आदत है, क्या? परीक्षा लेना।** इसी तरह की कोई न कोई बुद्धि का चातुर्य देखना, फिर से उनके मन में भाव आ गया। देखो! अब अभय कुमार का एक और चातुर्य देखते हैं। उन्होंने क्या किया? अभय कुमार से कहा... 'मेरी अंगूठी कुएँ में गिर गई है इसको निकाल कर दिखाओ और यह कुएँ में से जब अंगूठी निकले तो उसके साथ में पानी नहीं आना चाहिए'। क्या कहा? कुएँ में से अंगूठी निकालो लेकिन पानी नहीं निकालना। अभय कुमार सोचने लग गए... पिताजी अभी भी हमसे खेल रहे हैं। क्योंकि वह भी समझने लग गए कि इस तरीके के कृत्य हमारी परीक्षा के लिए ही हो रहे हैं, बुद्धि के चातुर्य के लिए ही हो रहे हैं। वह भी विचार करके अपने पिता को सन्तुष्ट करते हैं और क्या करते हैं? उस कुएँ में गोबर डाल देते हैं। गोबर डालने के बाद में उसे सूखने देते हैं। सूख जाने पर वह जो अंगूठी होती है वह गोबर में फंस जाती है और फिर उसमें पानी डालते हैं side से और पानी डालने से वह गोबर ऊपर तैरने लग जाता है, ऊपर आ जाता है और गोबर ऊपर आ गया तो उसके साथ में अंगूठी भी ऊपर आ गयी और निकाल कर उन्होंने अपने पिताजी को दे दी। **ज्ञानी लोग ज्ञान से खेला करते हैं।** इसी तरीके के खेल आपको अपने घरों में, अगर ज्ञान है तो अपने बच्चों के साथ करना चाहिए और कुछ नहीं है तो फिर football खेलो, cricket खेलो। ज्ञानी होंगे तो ज्ञान से खेलोगे और ज्ञान नहीं है तो फिर दूसरे तरीके के खेल आपको जरूरत पड़ जाते हैं। फिर दूसरे तरीके की चीजों की आवश्यकता पड़ जाती है। इसलिए पहले

के लोगों के खेल भी अजीब तरह के, इसी तरह के ज्ञान पूर्वक हुआ करते थे। ज्ञानी लोगों के विषय में इस तरह की चर्चा करने से भी अपने अन्दर ज्ञान उत्पन्न होता है।

आधुनिक Gym के दुष्परिणाम

ऐसे खेलों के माध्यम से भी हम समझ सकते हैं कि आज हमारे सामने जो खेल होते हैं, वह खेल हमारे बुद्धि चातुर्य को बढ़ाते हैं या घटाते हैं। कम से कम बल बढ़ना चाहिए, चाहे बुद्धि का बढ़े चाहे शरीर का बढ़े, लेकिन जिन खेलों से न बुद्धि का बल बढ़ रहा है, न शरीर का बल बढ़ रहा है उल्टा घट रहा है तो वह खेल हमारे लिए हानिकारक हो जाते हैं। इसलिए पहले के लोग अपने आप में सतर्क रहा करते थे और हर चीज से अपने मन मस्तिष्क को, अपने शरीर को मजबूत बनाते थे। **ऐसे खेल आज भी आपके सामने होने चाहिए।** पहले भी एक बार कहा था कि यहाँ पर बच्चों के लिए, युवाओं के लिए एक ऐसी अच्छी शाला होनी चाहिए जिसमें Gym की तरह मशीनें न हो। जो पुराना एक तरीका चलता था, वैसा तरीका होना चाहिए। इस तरीके की व्यायाम शालाएँ होनी चाहिए जहाँ पर आ करके युवा अपनी शक्ति को भी उभार सके। युवाओं की शक्ति gym में जाने से नहीं बनेगी, युवाओं की शक्ति अखाड़े में जाने से बनेगी, व्यायाम-मशाला में जाने से बनेगी। इसलिए पहले अखाड़े हुआ करते थे और ये अखाड़े समाज के लिए बहुत बड़ी ताकत हुआ करते थे।

अखाड़े - बलवान समाज की आवश्यकता

आप देख लो जहाँ-जहाँ पर अखाड़े थे, होते थे, वहाँ पर समाज के लोग बहुत बलवान हुआ करते थे और समाज पर किसी भी तरह की आपत्ति आती थी तो उसको बचाने के लिए वह समर्थ हुआ करते थे। **समाज के युवाओं को इस तरीके से तैयार करो कि वह आगे चल करके किसी भी तरीके की आपत्ति आये तो उसके लिए एक समर्थ बल के रूप में हमारे सामने रहे।** आपको कोई भी प्रशासन के बल काम नहीं आयेंगे, जब समाज पर आपत्ति आयेगी। न कोई अर्द्धसैनिक बल काम आयेंगे, न कोई तुम्हारे सामने वायु सैनिक काम आयेंगे, न कोई तुम्हारे सिपाही काम आयेंगे, न कोई पुलिस बल काम आयेंगे, कुछ नहीं काम आयेगा। तुम्हारे समाज के अपने युवा, जो बलवान होंगे, जो अखाड़ों में इस तरीके से अपना समय देकर अपने बल को मजबूत किये होंगे, वही समाज के साथ खड़े होने को तैयार होंगे। **इसलिए एक मजबूत समाज का निर्माण करने के लिए आज व्यायाम-शालाएँ, अखाड़ों की जरूरत है। Gym की जरूरत नहीं है।** यह जैन समाज और अन्य समाज के लोग सभी ढंग से सीख ले। समाज को मजबूत बनाना है तो अपने-अपने युवाओं को इस तरह की जगहों पर भेज करके उन्हें मजबूती दे। इससे समाज मजबूत बनेगी और gym में जाने से समाज कमजोर बनेगी। आप देख लेना gym में जाने वाला कभी भी, किसी भी तरह की आपत्ति घर, परिवार या समाज पर आने पर सामने नहीं खड़ा होता है। लेकिन मैं आपको इस तरीके के कई उदाहरण बता सकता हूँ जिन्होंने समाज को भी, परिवारों को भी, अनेक आपत्तियों से, बड़े आतताइयों से बचाया, जिन्होंने अखाड़ों में रह करके, व्यायामशालाओं में रह करके बल अर्जित किया। यह सीख लो! समाज की सुरक्षा के लिए, समाज को बलवान बनाने के लिए इस तरह की चीजों की आज बहुत आवश्यकता है और युवाओं का रुझान भी इस तरफ होना चाहिए। भले ही उसके लिए आपको दुनिया से हट कर चलना पड़े, चले लेकिन आप उसमें उसी तरह के यंत्रों का उपयोग करें जो पहले के लोग किया करते थे।

29. श्रमण परम्परा की मौलिकता विविध संस्कृति व धर्म के परिपेक्ष में

सिद्ध भक्ति, साधक की दृष्टि से साधन, साधना और साध्य



धर्म प्रेमी भव्य आत्माओं, आज की इस सभा में राजा श्रेणिक के माध्यम से पुनः एक प्रश्न किया गया है। **साध्य, साधन और साधना, क्या होनी चाहिए?** जिसके माध्यम से हम सिद्धत्व की प्राप्ति कर सकें। यह **सिद्धत्व की प्राप्ति वस्तुतः हमारे लिए साध्य होती है।** जब हम किसी भी चीज को साधना चाहते हैं और जो हमारा लक्ष्य होता है, उस लक्ष्य की ओर अगर हमारी दृष्टि होती है तो वह लक्ष्य ही हमारा साध्य होता है। **उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जो क्रिया की जाती है, उसे साधना कहते हैं और क्रिया करने वाला जो व्यक्ति होता है, वह उसका साधक कहलाता है।** जब हम अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं तो इन तीनों चीजों को ध्यान देना आवश्यक होता है और लक्ष्य सभी के अपने-अपने अलग-अलग हो सकते हैं, होते हैं। जब व्यक्ति अपने लक्ष्यों की पूर्ति करने के लिए किसी भी तरह से आगे बढ़ता है तो वह किसी न किसी प्रक्रिया का आलंबन जरूर लेता है और उस प्रक्रिया से गुजरने के लिए उसे एक लंबे समय तक बहुत ही स्थिरता के साथ में, धैर्य के साथ में, एक अभ्यास करना पड़ता है... **उस अभ्यास का नाम ही साधना कहलाता है।**

जीवन में साधना का महत्व

जीवन में किसी भी तरह का लक्ष्य आप हासिल करेंगे, आपको साधना करनी ही पड़ती है। आज यहाँ पर Indian Medical Society (इंडियन मेडिकल सोसाइटी) के लोग बैठे हैं, जिसे IMA कहा जाता है और सभी अच्छे-अच्छे doctors हैं। इन लोगों ने भी अपने जीवन में कुछ लक्ष्य प्राप्त करने के लिए साधना की है। साधना का मतलब होता है कि अगर हमने अपने जीवन में सोचा है कि हमें एक अच्छा doctor बनना है तो उस doctor बनने के लिए जो हमने Study की है और उसके बाद में जो हमने practice की है, उससे जो हमने एक अच्छा experience लिया है, वह हमारी साधना के माध्यम से हमारे सामने आता है। आप सोचे आज के समय में अगर कोई भी व्यक्ति एक अच्छा doctor बनता है, उसे कम से कम सात साल लगते हैं और भी अच्छा experienced doctor बनने के लिए तो उसे दस साल लग जाते हैं। तब उसका नाम कहीं कोई थोड़ा सा जान पाता है। तब वह अपने लिए कहीं कोई एक छोटा सा hospital खोल पाता है या अपना नाम कहीं पर अपने घर के आगे टांग पाता है। तब अपने नाम के आगे doctor लगा कर समझ पाता है कि चलो! मेरी degree से कुछ लोग अब मुझे जानने तो लगे। यह दस साल की एक साधना होती है। बिना साधना के कभी भी, किसी के लिए कोई साध्य उपलब्ध नहीं होता। एक विद्यार्थी पढ़ता है और पढ़ते-पढ़ते अपने जीवन में कितनी तरह की subjects पढ़ता है, कितनी classes pass करता चला जाता है और कितनी तरह की स्कूलों में और कॉलेजों से गुजरता हुआ अपने जीवन को आगे बढ़ाता हुआ कुछ पाता है, यह उसकी एक साधना होती है। बिना साधना के कोई विद्यार्थी, कोई अच्छा

व्यक्ति नहीं बन सकता, अच्छे पद पर नहीं पहुँच सकता। एक अच्छा doctor बनने के लिए, एक अच्छा engineer बनने के लिए, एक अच्छा देश का कोई अच्छा सिपाही बनने के लिए भी आपको बहुत बड़ी साधना करनी पड़ती है।

सही लक्ष्य निर्धारण की आवश्यकता

बिना साधना के आप किसी का भला नहीं कर सकते और जो साधना की जाती है उस साधना को करने वाला जो व्यक्ति होता है, उसी को साधक कहा जाता है। उस साधना का जो लक्ष्य होता है, वह साध्य कहलाता है। अब यह लक्ष्य अपने-अपने तरह के अलग-अलग हो सकते हैं। यहाँ जो लोग प्रमुखता से आज अतिथि के रूप में बैठे हैं, ये doctors हैं। इन्होंने अपने जीवन का एक ही लक्ष्य बनाया होगा कि मैं एक अच्छा doctor बन जाऊँ। आप सभी अच्छे doctor बन गए, experience holder भी हो गए, आपकी अच्छी prestige भी society के अन्दर हो गयी, city के अन्दर हो गयी। **इसके बाद भी क्या कोई आपके जीवन का लक्ष्य हो सकता है?** क्या आपने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के बाद में यह इतिश्री कर ली कि अब after that अब हमें इसके बारे में कुछ भी नहीं सोचना है। हमें जो बनना था हम बन चुके, कुछ बोल सकेंगे। हमारे लक्ष्य अगर यहीं पर पूरे हो गए तो यह जिन्दगी का एक अधूरापन कहलाएगा।

जिन्दगी की सही परिभाषा

जिन्दगी केवल एक जीवन में कुछ सामाजिक या किसी देश के लिए कुछ कर देने से, कुछ अपने इस शरीर के साथ अपनी योग्यताओं को आगे बढ़ा लेने से नहीं बन जाती है। जिन्दगी बहुत बड़ी होती है। जितनी हमारी उम्र है उतनी जिन्दगी नहीं होती, जिन्दगी उससे भी बहुत बड़ी होती है। **आखिर यह जिन्दगी जीता कौन है? यहाँ doctors बैठे हैं, जिन्दगी कौन जीता है? doctor किसका उपचार करते हैं? शरीर का या जिन्दगी जीने वाले का? doctor मेरी भाषा समझ पाएँगे।** आप लोग किसका उपचार करते हैं? किसके लिए आप यह surgery करते हैं, dissection किसके लिए करते हैं? शरीर के लिए या शरीर को जो, जी रहा है उसके लिए? जिन्दगी जो, जी रहा है उसके लिए? हम जिन्दगी का मतलब क्या समझते हैं? जो हमें शरीर मिला है इस शरीर के साथ में हम जो आगे बढ़ रहे हैं, इसके साथ में हमने जो qualification या किसी भी तरीके की कोई भी हमने prestige achieve कर ली है, केवल इतना ही हमारी जिन्दगी का लक्ष्य होता है तो यह जिन्दगी जीने वाले का लक्ष्य नहीं होता है, यह आपके मन का कोई लक्ष्य हो सकता है। जिन्दगी जीने वाला बहुत लंबी जिन्दगी जीता है। doctors हम बन सकते हैं, बन भी गए हैं लेकिन doctor बनने के बावजूद भी हमारा जीवन और आगे तक चलता है केवल जीवन-मृत्यु पर्यन्त तक ही नहीं होता। मृत्यु के उपरान्त भी जीवन होता है और जिन्दगी जीने वाला वह जीवन फिर जीता रहता है। आज के पढ़े-लिखे लोगों को उसी ओर ध्यान देने की जरूरत है कि यह जो जीवन जीने वाला है, वह कौन है? जिन्दगी जीने वाला है वह कौन है? हम उस जिन्दगी जीने वाले के लिए भी कभी सोचते हैं या केवल शरीर के लिए ही सोचते हैं।

वैद्य और चिकित्सक में भेद

आप भी वैद्य हैं और जिन तीर्थकरों ने हमें इस अध्यात्म का उपदेश दिया है, उनको भी वैद्य कहा गया है, बहुत बड़ा चिकित्सक कहा गया है। आप doctor हैं, वैद्य हैं। **पहले वैद्य हुआ करते थे। वैद्य एक तरह से जो आयुर्वेद की चिकित्सा के माध्यम से चलते हैं, उन्हें वैद्य कहा जाता है।** जो नाड़ी का ज्ञान रखते हैं उन्हें वैद्य कहा जाता है, जो वात पित्त कफ को जानते हैं उन्हें वैद्य कहा जाता है और जो MBBS के through degree लेकर के doctors बनते हैं उन्हें वैद्य नहीं कहते हैं, उन्हें चिकित्सक कहते हैं। जब आपके सामने एक modernise हो करके यह जो हमारी आयुर्वेद की पद्धति है, यह सामने आयी है और यह doctors के रूप में जब आप आकर प्रतिष्ठित होते हैं तो उस समय पर आपके दिमाग में एक बात और रहनी चाहिए कि जिन्दगी जीने वाला कौन है? और उस जिन्दगी जीने वाले के पास में भी कोई रोग है कि नहीं? उसकी भी कोई चिकित्सा है कि नहीं?

तीर्थकर भगवन्त, एक चिकित्सक की अपेक्षा उनका उपदेश

हमारे तीर्थकरों ने हमें उस चिकित्सा तक पहुँचाया है, जो जिन्दगी जीने वाला है वह कभी भी रोगी हो ही नहीं सकता। इस तरीके की चिकित्सा देने वाले तीर्थकर हमारे सामने हुए हैं। **आप केवल शरीर की चिकित्सा तक सीमित रहते हैं। तीर्थकरों ने कहा कि शरीर की चिकित्सा तो केवल एक उम्र तक है, जिन्दगी जीने वाला अपने रोगों के साथ में अनेक-अनेक जन्मों तक रोगी रह सकता है, हमें उसकी चिकित्सा पर ध्यान देना चाहिए।** उसकी चिकित्सा करने के लिए तीर्थकरों को आकस्मिक वैद्य के रूप में आचार्यों ने कहा है। उन्हें बहुत बड़ा चिकित्सक कहा गया है और वह चिकित्सक बन कर दुनिया को चिकित्सा की विधि दे कर और स्वयं भी इतने निरोग हो गए, इतने निरोग हो गए कि आज हम उनकी भक्ति भी करते हैं तो हमारे अन्दर निरोगता आने लग जाती है।

भक्ति में भाव का प्रयोजन

हम क्या कर रहे हैं यहाँ पर पिछले दिनों से? सिद्ध भगवान की भक्ति कर रहे हैं। सिद्ध का मतलब pure Souls, शुद्ध आत्माएँ। उन शुद्ध आत्माओं की जब हम भक्ति करते हैं और आचार्य पूज्यपाद महाराज जैसे एक महान आचार्य हैं, जब उनकी भक्ति करते हैं तो उनकी उस भक्ति करते हुए भी अपने अन्दर यही भाव लाते हैं।

‘आतङ्कार्ते -रभावे, तदुपशमन -सद्-, भेषजानर्थतावद्’

आज देखो! कैसा संयोग है! भगवान की भक्ति करते हुए कहा जा रहा है कि हे भगवन्! व्यक्ति के अन्दर आतंक और आर्त इनका अभाव अगर हो जाता है तो फिर उसे कभी **भेषज अर्थात् औषधि** की आवश्यकता नहीं पड़ती है। **भेषज अर्थात् औषधि, दवाइयाँ।** यह किसके लिए आवश्यक है? जिसके लिए कोई आतंक उत्पन्न हुआ हो। **आतंक कहते हैं- रोग को।** आज के समय में आतंकवाद जो नाम चलता है वह अलग रूप में चलता है। **आतंक अर्थात् रोग** और उस रोग से जब दुःख उत्पन्न होता है तो उस दुःख को दूर करने के लिए चिकित्सा की जाती है, उसके लिए दवाई दी जाती है। यहाँ आचार्य एक उदाहरण दे कर बता

रहे हैं। आचार्य पूज्यपाद महाराज एक बहुत बड़े आयुर्वेद के महान आचार्य हुए हैं और वह उदाहरण दे रहे हैं, **सिद्ध भगवान की भक्ति में कि हे भगवन्! जिस तरह से जिसके अन्दर कोई रोग नहीं है, रोगों का दुःख नहीं है उसके लिए किसी भी प्रकार की औषधि व्यर्थ है, अप्रयोजनीय है, कोई मतलब नहीं है। उसी तरह से हे भगवन्! आपके अन्दर ग्लानि आदि का अभाव हो जाने के कारण से आपको मृदु शयन आदि की कोई आवश्यकता नहीं है।** ये जो पिछले दो दिनों से चर्चाएँ की हैं, उसके लिए एक उदाहरण यहाँ पर आज दिया गया है, वह उदाहरण औषधि का उदाहरण देकर यहाँ बताया जा रहा है।

शरीर का रोग, सबसे बड़ा आतंकवादी

रोग हमारे शरीर में आतंक उत्पन्न कर देता है। सबसे बड़ा आतंकवादी कौन है? हमारे शरीर में उत्पन्न हुआ रोग ही सबसे बड़ा आतंकवादी है, जो हमारे शरीर को पूरा हिला देता है। आपने कभी महसूस किया इस बात को? बुखार आ जाए पूरा शरीर आतंकित हो जाता है। जुकाम हो जाए पूरा शरीर आतंकित हो जाता है, कोई लंबी बीमारी हो जाए पूरा शरीर आतंकित हो जाता है, मन आतंकित हो जाता है। उस व्यक्ति का किसी भी चीज में, कहीं पर भी मन नहीं लगता है और वह उसी आतंक के कारण से फिर दुःखी होने लग जाता है। आतंक अर्थात् रोग जिसके कारण से हमारा मन, हमारा तन, सब कुछ बिगड़ जाए, हमारा स्वास्थ्य बिगड़ जाए और हम अपने में न रह पाएँ, उसका नाम है- आतंक, उसे रोग कहा गया है। आतंकवाद तो एक बहुत बाद की चीज है। जो सबके लिए परेशानी पैदा कर दे उसका नाम आतंक होता है और जो व्यक्ति विशेष के लिए परेशानी पैदा कर दे, उसका नाम आतंक अर्थात् रोग होता है। इसलिए पहले यह आतंक शब्द रोग के अर्थ में प्रयुक्त होता था लेकिन केवल रोग होने से भी कोई फर्क नहीं पड़ता है।

औषधि- रोग जनित दुःख के निवारण हेतु

रोग होने के बाद में आर्त होना चाहिए। आर्त अर्थात् दुःख। इसलिए यहाँ पर आचार्य पूज्यपाद महाराज ने लिखा **‘आतंककार्ते अभावे’** आतंक से उत्पन्न होने वाला जो आर्त है, दुःख है, उसका अभाव हो जाने पर औषधि की आवश्यकता नहीं है। समझने की कोशिश करना; **केवल रोग हो जाने के लिए औषधि नहीं चाहिए पड़ती है, रोग होने के बाद में अगर दुःख होगा उससे तो औषधि की आवश्यकता पड़ेगी।** अगर आपके शरीर में कोई रोग उत्पन्न हुआ है और आपको इससे कोई दुःख नहीं है तो किसी भेषज की, किसी औषधि की कोई आवश्यकता नहीं है। अगर आपको उससे दुःख हो रहा है तो उसके लिए औषधि की आवश्यकता पड़ेगी। इसलिए जब भी कभी रोग होते हैं तो रोग होने मात्र से ही वैद्यों की तरफ, चिकित्सकों की तरफ या डॉक्टरों की तरफ नहीं दौड़ा जाता है। **ऐसे अनेक साधक हुए हैं, ऐसे अनेक ऋषि मुनि हुए हैं जिनके लिए रोग होते हैं, हुए हैं लेकिन उन्होंने कभी चिकित्सा नहीं कराई। रोग हैं लेकिन चिकित्सा की आवश्यकता नहीं है।** एक ऐसे चक्रवर्ती हुए **सनतकुमार चक्रवर्ती।** चक्रवर्ती अर्थात् वैभव संपन्न एक व्यक्तित्व। सारे भूखंड का राजा और ऐसा चक्रवर्ती होने के बाद जब उनके लिए श्रमण दीक्षा लेने का एक भाव आया और उन्होंने अपने सारे राजपाट का परित्याग करके श्रमणत्व को अंगीकार कर लिया तो श्रमण बनने के बाद में उनके लिए रोग हो गए।

श्रमण परम्परा , एक सनातन संस्कृति

श्रमण समझते हैं? श्रमण अर्थात् साधु कहते हैं, श्रमण अर्थात् मुनि कहते हैं। **भगवान महावीर कौन थे? श्रमण थे।** भगवान पार्श्वनाथ उससे पहले हुए वह कौन थे? उससे भी ढाई सौ वर्ष पहले भगवान पार्श्वनाथ हो गए वह कौन थे? वह भी श्रमण थे। उससे पहले भी भगवान नेमिनाथ हो गए, वे कौन थे? श्रमण। ईसा से भी दस हजार वर्ष पहले भगवान नेमिनाथ हो गए कौन थे? वह भी श्रमण थे और उससे भी पहले, उससे भी पहले, अगर हम ऐसे चौबीस तीर्थकरों की परम्परा लागू कर दे तो भगवान ऋषभ देव पर हम पहले पहुँचते हैं, **वह भगवान ऋषभदेव कौन थे? श्रमण थे।** जीवन के अन्त में सब कुछ त्याग करके निर्ग्रन्थ रूप को धारण करना, दिगंबर रूप को धारण करना ही श्रमण कहलाता है और यह श्रमणों की परम्परा का नाम ही श्रमण परम्परा , श्रमण संस्कृति कहलाती है। यह संस्कृति, अनादि निधन संस्कृति है, सनातन संस्कृति है।

श्रमण संस्कृति एवं वैदिक संस्कृति में मौलिक अंतर

कुछ लोग केवल वैदिक संस्कृति को सनातन संस्कृति कहते हैं उन्हें इतिहास का भी पूरा ज्ञान नहीं है। **वैदिक संस्कृति अधूरी है जैन संस्कृति के बिना, श्रमण संस्कृति के बिना।** ऐसे अनेक इतिहासज्ञ हो गए हैं, ऐसे अनेक विद्वान हो गए हैं, जिन्होंने लिखा है... एक **लोकमान्य तिलक** का नाम सुना आपने? बाल गंगाधर लोकमान्य तिलक। बहुत अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे लोग हो गए हैं, आजकल की तरह आग्रही लोग नहीं होते थे। पहले के लोग, बहुत पढ़े-लिखे होते थे। इतिहास पढ़ते थे, परम्पराएँ पढ़ते थे, शास्त्र पढ़ते थे, तब जाकर कुछ निष्कर्ष निकालते थे। पहले के ब्राह्मण समाज के लोग, वैदिक संस्कृति के लोग भी पढ़ कर, समझ कर बोलते थे। आज के लोग बिना समझे कुछ भी बोलते हैं। पहले के लोग समझते थे, पढ़ते थे, उसके बाद में कुछ बोलते थे, आग्रह नहीं रखते थे। मैं **बाल गंगाधर तिलक लोकमान्य** का आपके लिए एक statement बता रहा हूँ, जिन्होंने अपने साहित्य के अन्दर एक बात लिखी है। वैदिक संस्कृति हमेशा से, एक कर्मकाण्ड प्रधान संस्कृति रही है। कर्मकाण्ड समझते हैं न? जिसमें यज्ञों की प्रमुखता रहती है, हवनों की प्रमुखता रहती है, क्रिया काण्डों की प्रमुखता रहती है। यह हमेशा से ऋग्वेद काल से ऐसी कर्म-काण्ड प्रधान संस्कृति रही है। उसी के साथ-साथ एक संस्कृति चलती आई है, जिसका नाम है- **श्रमण संस्कृति।** हम उसको न पहले की कह रहे हैं, न बाद की कह रहे हैं। हमेशा ध्यान रखना वैदिक संस्कृति और श्रमण संस्कृति दोनों साथ-साथ चले हैं और लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने इस बात को लिखा है, कहा है। वैदिक संस्कृति के साथ में श्रमण संस्कृति चली आई जो हमेशा ज्ञानकाण्ड के ऊपर विश्वास रखती थी।

ज्ञानकाण्ड और क्रियाकाण्ड में अन्तर

ज्ञानकाण्ड का मतलब... ज्ञान-ध्यान, आध्यात्मिकता की ओर चलने वाली संस्कृति को श्रमण संस्कृति कहा जाता है। हमेशा इस संस्कृति के माध्यम से क्रियाकाण्ड का विरोध होता आया। ज्ञानकाण्ड की ओर लोग ज्यादा आकर्षित होकर जब ज्ञानकाण्ड की ओर बढ़ते हैं, काण्ड मतलब होता है... एक तरह से किसी भी चीज का प्रवाह, जो प्रमुख रूप से जब हम किसी चीज को सामने रखते हैं तो उसे वह प्रवाह के रूप में,

उसे काण्ड के रूप में कहा जाता है। इतिहास में दोनों तरह का प्रवाह रहा है...**एक क्रियाकाण्ड का प्रवाह जिसे कर्मकाण्ड कहा जाता है और एक ज्ञानकाण्ड जिसमें ज्ञान की प्रमुखता से विचारक लोग हमेशा आत्म ज्ञान की ओर दृष्टि रखते हुए, परमात्म ज्ञान की ओर दृष्टि रखते हुए आगे बढ़े हैं और इस ज्ञान काण्ड में श्रमण संस्कृति का सबसे प्रमुख योगदान है।** अगर आप इतिहास पढ़ेंगे तो आपको पता पड़ेगा कि जब यह विभाजन इस तरीके से आगे चलता रहा, श्रमण संस्कृति भी चलती रही, वैदिक संस्कृति भी चलती रही।

आध्यात्मिकता-श्रमण संस्कृति का आधार

श्रमण संस्कृति हमेशा आत्मज्ञान की प्रमुखता वाली संस्कृति रही। सब कुछ राजपाट का त्याग करके आत्मा के ज्ञान के लिए, **आत्मा के ध्यान के लिए, आत्मा के शोधन के लिए, आत्मा की शुद्धि के लिए जीने का नाम...श्रमण संस्कृति कहलाता है।** ऐसे ऋषि मुनि हमेशा से होते आए और उसी श्रमण संस्कृति में जब इस तरह से लोग ज्ञान की ओर, ध्यान की ओर, आत्म ज्ञान की ओर आकर्षित होते हैं तो फिर वह क्रियाकाण्ड को छोड़ते हैं, कर्मकाण्ड को छोड़ते हैं।

भक्ति काण्ड - ज्ञान काण्ड और कर्म काण्ड का समावेशक

यह जो विसंगति बनती रही, इस विसंगति को दूर करने का प्रयास किया गया, एक भगवत गीता के माध्यम से। जहाँ पर लाकर एक तीसरा काण्ड और बनाया गया जिसका नाम रखा गया...**भक्ति-काण्ड** और उस **भक्तिकाण्ड में ज्ञान और कर्म दोनों का समावेश किया गया।** उसमें ज्ञानकाण्ड की भी प्रधानता रही और कर्मकाण्ड की भी प्रधानता रही। यह पूर्ति गीता के माध्यम से हुई। इसलिए आज लोग गीता को ज्यादा समझ रहे हैं और गीता कब रची गई व्यास के द्वारा? महाभारत के अन्तर्गत एक portion आता है- उसका नाम गीता है। उस गीता की रचना होने के बाद में भी अगर हम देखेंगे तो पूरा महाभारत हमारे सामने आ जाता है।

वैदिक परम्परा के महान ग्रन्थों में निर्ग्रन्थ मुनि के सद्भाव के सन्दर्भ

1) महाभारत

आप चाहे महाभारत युग की बात कर ले, महाभारत की रचना करने वालों की बात कर लें आपको हमेशा निर्ग्रन्थ श्रमणों का सद्भाव इस भारत की धरा पर हमेशा मिलेगा। अगर हम महाभारत की बात कर ले, वेदव्यास की अगर हम महाभारत भी पढ़ ले तो उसमें भी आपको श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हुए मिल जाएँगे...

आरोहस्य रथे पार्थ, गांडीवं करे कुरु।

निर्जिता मेदनी मन्ये, निर्ग्रन्थस्य सन्मुखे।।

श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं... हे पार्थ! हे अर्जुन! रथ पर आरोहण कर लो, गांडीव (धनुष) को धारण कर लो और आज यह मान लेना **‘निर्जिता मेदनी’** आज मैंने **मेदनी** अर्थात् मैंने सारी भूमि जीत ली है ऐसा मैं

मान रहा हूँ क्योंकि 'निर्ग्रथस्य सन्मुखे' क्योंकि आज मुझे निर्ग्रथ मुनि महाराज सामने दिखाई दे रहे हैं इसलिए आज यह जीत निश्चित है। यह महाभारत पढ़ो तब आपको पता पड़ेगा कि जब महाभारत के समय पर, महाभारत के काल में भी निर्ग्रथ मुनि होते हैं तो भला नग्नता कब से चली आ रही है, निर्ग्रथता कब से चली आ रही है, दिगंबरता कब से चली आ रही है यह आपको ज्ञान हो जाएगा। आज बिना पढ़े-लिखे लोग कुछ भी बोल जाते हैं। आपके संज्ञान में रहना चाहिए कि ऐसा कोई भी साहित्य नहीं है जिसमें दिगंबरत्व का वर्णन न हो।

2) विशाखादत्त द्वारा लिखित “मुद्रा राक्षस नाटिका”

कालिदास का साहित्य पढ़ लेना। किसी भी प्रकार के M.A. में पढ़ाएँ जाने वाले उन साहित्यों को पढ़ लेना जो संस्कृत में पढ़ाएँ जाते हैं, नाटकों को पढ़ लेना, नाटक में तुम्हें दिगंबर मिलेगा, नाम अलग मिलेगा। बिना पढ़े-लिखे लोग कुछ भी बोला करते हैं। एक 'मुद्रा राक्षस नाटक है' विशाखादत्त का लिखा हुआ वह नाटक है मैंने जब उस नाटक को पढ़ा तो उसमें लिखा हुआ है... 'अरिहंताणम् शासनम्' मतलब अरिहन्तों का शासन यह उसमें लिखा हुआ है और यह अरिहन्तों का शासन उस समय पर भी चला करता था और उसका ज्ञान भी उन लोगों को रहा करता था कि अरिहन्तों का शासन कौन सा शासन कहलाता है? यह वही शासन है जो तीर्थकरों का शासन कहलाता है। अरिहन्तों का वह शासन है और उस अरिहन्तों के शासन में हमेशा निर्ग्रथ मुनि मिलेंगे जिन्हें 'क्षपणक' के नाम से हमेशा कहा गया है। पुराने साहित्य में दिगंबर साधु का एक नाम और मिलता है क्या? क्षपणक।

3) कालिदास द्वारा लिखित काव्य

कालिदास ने एक काव्य में लिखा और वह काव्य है, जिसके अन्दर वह लिखते हैं कि विक्रमादित्य की सभा में नौ रत्न थे-

**धन्वंतरिक्षपणकोमरसिंहशंकु-
वेतालभट्ट घटकर्पर कालिदासः ।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपते सभायां,
रत्नानि संति वररुचिर्नव विक्रमस्य । ।**

विक्रमादित्य की सभा में नौ रत्न रहा करते थे और उन नौ रत्नों के उन्होंने नाम गिनाए- धन्वंतरि जिसे आप निर्ग्रथ बहुत बड़े वैद्य के रूप में जानते हैं। उसके बाद में वह लिखते हैं- क्षपणक, क्षपणक का मतलब होता है- दिगंबर साधु। राजा विक्रमादित्य की सभा में भी नौ रत्नों में दिगंबर साधु, निर्ग्रथ साधु, नग्न साधु रहा करते थे और उसी में नौ रत्नों में एक अमर सिंह जिन्होंने अमर कोष बनाया, शंकु नाम के एक और व्यक्ति हुए, एक घटकर्पर, वेताल भट्ट और स्वयं कालिदास और एक वराहमिहीर और एक वररुचि जिन्होंने प्राकृत की व्याकरण भी बनाई है। ऐसे अनेक-अनेक रत्न उस समय पर उन विक्रमादित्य की सभा में रहा करते थे। कहाँ पर निर्ग्रथता का नाम नहीं है? मुझे यह बताओ।

4) श्रीमद् भगवत पुराण

अगर आपको भागवत पुराण पर विश्वास है, श्रीमद् भागवत पर विश्वास है तो उसमें देख लेना भगवान् ऋषभदेव का नाम उसमें आया है और उसमें बहुत अच्छे शब्दों में लिखा हुआ है... पाँचवें स्कंध के छठवें अध्याय में, आप पढ़ लेना। उसमें लिखा हुआ है...

‘वातरसनानां श्रमणानाम् धर्मदर्शयितो कामः मरुदेव्याम् ऋषभौ अवततारः’

यानी ऋषभदेव का मरुदेवी के अन्दर अर्थात् मरुदेवी माँ से अवतरण हुआ, जन्म हुआ, किसलिए हुआ? उसमें लिखा है, उस समय पर अगर आप ऋग्वेद पढ़ेंगे और भी आप शिव पुराण, लिंग पुराण पढ़ेंगे तो उसमें आपको निर्ग्रन्थ मुनियों के नाम के साथ-साथ एक उनका विशेषण मिलेगा **‘वातरसना’ निर्ग्रन्थ** या **‘वात-रसना’** यानी निर्ग्रन्थों को **‘वातरसना’** कहा जाता है। जैसे हम अभी दिगंबर बोलते हैं। दिगंबर का मतलब होता है- दिशाएँ ही जिसका अंबर हो, उसे दिगंबर कहते हैं और वातरसना का मतलब होता है- रसना मतलब होती है मेखला, करधनी। हवा ही जिसकी करधनी हो अर्थात् उनका आभूषण बताया गया है, जो हवा में ही रहते हैं, कहीं दुप-छुप कर नहीं रहते हैं, उन्हें **वातरसना** नाम से कहा जाता था पहले और उनके लिए ही श्रमण नाम दिया गया है। **‘वातरसनानाम् श्रमणानाम्’** उनके धर्म को दिखाने के लिए अर्थात् श्रमण धर्म को दिखाने के लिए भगवान् ऋषभदेव का अवतार हुआ है।

श्रमण संस्कृति एक सनातन संस्कृति

अब आप समझ लो जितनी पुरानी आपकी **श्रीमद् भागवत** हो जाएगी, उससे कई गुना पुराना भगवान् ऋषभदेव का व्यक्तित्व हो जाएगा क्योंकि व्यक्तित्व पुराना होता है तब उसको शास्त्रों में लिखा जाता है। वह शास्त्र के contemporary व्यक्तित्व नहीं है। वह उससे पहले होने वाले व्यक्तित्व है। भागवत बाद में लिखी जाती है, पुराण पुरुष, महापुरुष पहले हो जाते हैं और जब वह व्यक्तित्व का नाम उसके अन्दर है, ऋषभ भगवान् का नाम उसके अन्दर है, तो आप समझ सकते हो यह ऋषभ भगवान् के द्वारा जो श्रमण संस्कृति चलाई गई है, श्रमण संस्कृति कितनी पुरानी हो सकती है। यह हर एक बच्चे को और हर एक पढ़े-लिखे व्यक्ति को यह बात सुनानी चाहिए, समझानी चाहिए। कोई भी कथावाचक कुछ भी कह देता है, कोई भी पढ़ा-लिखा व्यक्ति है, बिना सोचे-समझे कुछ भी कह देता है। आपके लिए यह विश्वास में आना चाहिए कि श्रमण संस्कृति भी एक सनातन संस्कृति है यह बोलने की हिम्मत करनी चाहिए।

ज्ञान प्रधान संस्कृति, श्रमण संस्कृति से होता है- आत्म कल्याण

वैदिक संस्कृति अगर सनातन है तो श्रमण संस्कृति भी सनातन है। अन्यथा वैदिक संस्कृति का कोई अस्तित्व नहीं रहता श्रमणों के बिना क्योंकि आत्म ज्ञान प्रधान जो संस्कृति रही है वह श्रमण संस्कृति कहलाती है। **आत्मा का उद्धार करने वाली जो संस्कृति रही है, वह श्रमण संस्कृति कहलाती है। आत्मा का कल्याण श्रमण संस्कृति से ही होता है, क्रिया काण्डों से नहीं होता है।** केवल पांडित्य रखने से, कथा वाचन कर लेने से, टीका लगाने से नहीं होता है। आत्मा का कल्याण, आत्मा का ज्ञान, आत्मा का ध्यान करने से होता है और वह आत्म ध्यान की जो पद्धति है, सब प्रकार के परिग्रह से रहित होकर

एकाकी जीवन जीने से होता है। अगर श्रमण आज समाज के बीच में भी रहते हैं तो भी वह एकाकी जीवन ही जीते हैं। समाज के बीच में रहते हुए वह समाज के लिए दिशा निर्देश दे सकते हैं, समाज को ज्ञान दे सकते हैं लेकिन अपनी साधना से कभी भी वंचित नहीं होते हैं। उनका काम केवल कथावाचक होना नहीं है, उनका काम केवल उपदेश देना नहीं होता है, उनका काम अपनी आध्यात्मिक साधना साधते हुए सिद्ध बनने का लक्ष्य पूरा करने का होता है। किसी के बीच में रह जाने से वह चीज आपत्तिजनक हो जाए, ऐसा नहीं होता है। भगवान ऋषभदेव हमेशा राजाओं के बीच में रहे, अयोध्या में उन्होंने जन्म लिया, निर्ग्रथता को धारण किया, प्रयाग और इलाहाबाद में उन्होंने तपस्या की और जब वह आहार ग्रहण करने के लिए निकले तो दुनिया के अन्दर घूमे और अयोध्या से चलकर के हस्तिनापुर तक गए और हस्तिनापुर में राजा श्रेयांस, राजा सोम के यहाँ पर उनका आहार हुआ। राजाओं के घरों में निर्ग्रथ मुनियों को जाने की जब इस तरीके की पद्धति भगवान ऋषभदेव ने बना दी तो तुम जैसे कंगालों के यहाँ जाने में आज के मुनियों को क्या दिक्कत हो सकती है? यह ऋषभदेव भगवान के द्वारा दी गई श्रमणों की जो परम्परा है, उस श्रमण की परम्परा का अस्तित्व हमेशा से रहा है। उसको पढ़े-लिखे लोग समझने की कोशिश करें पढ़ें। आपने चाहे कितनी भी degrees हासिल कर ली हो, कितने भी आपने शास्त्र पढ़ लिए हो लेकिन अगर आपने श्रमण संस्कृति को नहीं समझा तो आपका ज्ञान अधूरा कहलाएगा। इसके बिना आत्मा का कल्याण नहीं होना।

जैन धर्म एक संस्कृति— श्रमण संस्कृति, अनादि-निधन संस्कृति

आप इतिहास पढ़ें, पढ़े-लिखे लोग क्या कहते हैं? भक्तिकाण्ड गीता के माध्यम से निर्मित किया गया, जिसके माध्यम से उसमें अध्यात्म का भी उपदेश दिया गया अर्थात् ज्ञानकाण्ड भी समाहित किया गया और कर्मकाण्ड का भी उसमें उपदेश दिया गया। इसलिए आज गीता महता को प्राप्त है क्योंकि उसमें दोनों धाराओं का समावेश करने की कोशिश की गई। लेकिन श्रमण संस्कृति अपने आप में आज भी एक पृथक संस्कृति है, अलग है। **कभी भी यह कहने की कोशिश मत करना कि हिन्दू धर्म से जैन धर्म निकला। कोई धर्म किसी धर्म से नहीं निकलता है। संस्कृतियाँ अनादि निधन होती हैं। यह धर्म नहीं है, संस्कृति है। अगर आप धर्म को किसी एक व्यक्ति से जोड़ते हो तो वह धर्म होता है; लेकिन यह किसी व्यक्ति से जुड़ा हुआ धर्म नहीं है यह अनादि काल से प्रवाहित होने वाला धर्म है, इसलिए संस्कृति कहना चाहिए। जैन धर्म नहीं है जैन एक संस्कृति है, एक जीने का तरीका है, आत्म ज्ञान को प्राप्त करने की पद्धति है इसलिए इसको श्रमण संस्कृति के नाम से कहा गया। इसी को तीर्थंकरों का शासन कहते हैं, अरिहन्तों का शासन कहते हैं। यह ज्ञान अगर आपके दिमाग में होगा तो आपके इसलिए कभी यह प्रश्न ही पैदा नहीं होगा।**

हिन्दू शब्द की व्युत्पत्ति

हिन्दू धर्म से कभी भी जैन धर्म निकल ही नहीं सकता है। आखिर हिन्दू धर्म क्या बला है? हिन्दू कोई धर्म होता ही नहीं है, वैदिक संस्कृति रही है। वेदों को मानने वाले लोगों की जो संस्कृति है, उसको वैदिक संस्कृति कहते हैं। हिन्दू नाम की कोई चीज दिखा दो किसी शास्त्र में लिखी हो, किसी भी रामायण के अन्दर, किसी भी महाभारत के अन्दर, कहीं हिन्दू शब्द आया हो, बता देना मुझे। कौन सा धर्म है हिन्दू धर्म?

यह संस्कृति जो मानने में आ रही है- वैदिक संस्कृति, उसको लोग हिन्दू कह रहे हैं लेकिन यह हिन्दू शब्द आपका शब्द नहीं है, यह फारसी शब्द है, यह ध्यान रखना। भारत देश यह आपका शब्द है, इसको आप भूल रहे हो। हिंदुस्तान, यह तब कहा गया जब यहाँ पर अफगान के लोग, फारसी लोग यहाँ पर जब आए थे और सिंधु नदी के इधर उन्हें आने में दिक्कत होती थी और इस ओर आने में पर जब वे बोलते थे तो 'स' को 'ह' बोलते थे। इसलिए वह सिंधु का नाम पड़ा हिन्दू मतलब सिंधुस्तान, हिंदुस्तान बन गया। सिंधु नदी के इधर का जो स्थान था वह सारा का सारा हिंदुस्तान कहलाता है और उस हिंदुस्तान में रहने वाले जो भी लोग हैं, वे सब हिन्दू कहलाते हैं। चाहे वे जैन हो, चाहे अजैन हो, चाहे ब्राह्मण हो, चाहे वैश्य हो, कोई भी हो सारे लोग हिन्दू कहलाते हैं। हिन्दू कोई धर्म नहीं है, हिन्दू एक स्थान का नाम है इसलिए उसको हिंदुस्तान कहते हैं। यह सीखो, थोड़ा सा इतिहास सीखो। बड़ी-बड़ी degrees आने के बाद भी आपके लिए अगर इतिहास का ज्ञान नहीं होगा तो आप कभी भी अपनी संस्कृति, अपने धर्म, अपने समाज, अपने देश के साथ में न्याय नहीं कर पाएँगे।

श्रमण संस्कृति तथा वैदिक संस्कृति की प्राचीनता और मौलिक भिन्नता

जो दो संस्कृतियाँ हमेशा से प्रवाहित रही हैं, यह महान संस्कृतियाँ हैं- **श्रमण संस्कृति और वैदिक संस्कृति** और यह दोनों प्राचीन संस्कृतियाँ हैं। हिन्दू धर्म से कभी जैन धर्म निकला है, यह बात कभी सोचना भी मत, इतिहास पढ़ कर देखना। **अगर भगवान ऋषभदेव का वर्णन ऋग्वेदों में मिलता है तो ऋग्वेद बनने से पहले भी भगवान ऋषभदेव थे कि नहीं? हिन्दू धर्म से जैन धर्म कैसे निकल आया? यह बच्चों को पढ़ाओ और बड़ों को भी पढ़ना चाहिए।** भगवान ऋषभदेव के बिना कोई भी तरह का इस कर्म भूमि में प्रजा का पालन करने की कोई पद्धति नहीं थी और उन्हीं भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम से आज भी यह देश भारत देश के नाम से जाना जाता है, यह भी भागवत पुराण में लिखा हुआ है। भगवान ऋषभदेव के पुत्र भरत के नाम से इस देश का नाम भारत वर्ष पड़ा है, यह भी उन्हीं भागवत पुराण में लिखा हुआ है, शिव पुराण में लिखा हुआ है।

निर्ग्रथता एवं दिगंबरत्व श्रमण संस्कृति की विशेषता

आप कितने भी पुराण पढ़ लो सबके अन्दर लिखा हुआ है तो आज लोग कैसे कहते हैं कि लोगों के लिए निर्ग्रथ नहीं होना चाहिए, नग्न नहीं होना चाहिए, दिगंबरता समाज के बीच में अच्छी नहीं लगती है। भाई! दिगंबर तो हमेशा समाज के बीच में रहे। भगवान महावीर स्वामी राजपुत्र थे, क्षत्रिय पुत्र थे, हमेशा समाज के बीच में रहे। भगवान महावीर स्वामी क्या? जितने भी तीर्थकर हुए हैं, भगवान महावीर स्वामी तो चौबीसवें तीर्थकर हुए, ऋषभदेव से लेकर जितने भी तीर्थकर हुए हैं सब तीर्थकरों ने निर्ग्रथ मुनि बनने के बाद में सबसे पहला आहार ग्रहण किया है तो जंगलों में नहीं किया है। राजाओं के यहाँ पर उनके आहार हुए हैं, सेठों के यहाँ पर उनके आहार हुए हैं, घरों में जाकर के ही आहार होते हैं। बिना घरों में जाए मुनि महाराज का जीवन चल ही नहीं सकता है। उन्हें अगर आहार करना है तो वे आहार स्वयं नहीं बनाते हैं, उनका आहार अपनी विधि से बनता है, चलता है और उसको आहार कराने के लिए जो पद्धति होती है, वह पद्धति भी अपने आप में श्रमणों की संस्कृति में मिलती है। **दुनिया की किसी संस्कृति में यह पद्धति नहीं**

मिलती है जिसे नवधाभक्ति की संस्कृति कहते हैं। यह आहार कराने के बाद में उन मुनि महाराज की सेवा करने का भाव भी सबके अन्दर रहा है। आपको यह ध्यान रखना चाहिए अगर आपकी संस्कृति है, आपके शास्त्र हैं तो हमारी भी संस्कृति है, हमारे भी शास्त्र हैं।

दिगंबरत्व - एक महामंगलमय मुद्रा

श्रीकृष्ण अगर गोपियों के साथ में रहकर गोपियों से कहते हैं कि नग्न नहीं होना। यह तो कोई भी नहीं कह सकता है कि स्त्रियों के लिए नग्न होना, यह तो स्त्रियों के लिए नग्न होना तो दिगंबर समाज में भी मना है। यह उदाहरण कैसे दिया गया? **कथा वाचकों को यह पता होना चाहिए कि जब श्रीकृष्ण, अर्जुन से महाभारत में कहते हैं कि हमारे सामने मुनि दिख रहे हैं तो जीत निश्चित है। इसका मतलब है...श्रीकृष्ण के सामने भी मुनि महाराज रहा करते थे।** उन्हें उस तरह की कोई ग्लानि नहीं थी और जब सामने दिख रहे हैं तो जंगल में नहीं दिख रहे हैं। जिस समय पर वह अपने राजमहल से रथ से निकल रहे होंगे और रथ से प्रस्थान करते हुए दिगंबर मुनि दिखाई दे गए तो यह ज्योतिष शास्त्र के अन्दर सबसे बड़ा शगुन माना जाता है। अगर आप किसी मंगल कार्य के लिए जा रहे हो और आपको सबसे पहले निर्ग्रन्थ दिगंबर रूप दिख जाए, समझ लेना आपका कार्य मंगलमय होगा आपका कार्य पूरा होगा। यह वह रूप है। यह अश्लीलता नहीं है, यह साधना है। यहाँ कोई लिंग में ताले नहीं डालने पड़ते हैं। यह साधना की जाती है, वैराग्य की साधना होती है, विरागता के साथ में ज्ञान की साधना होती है और उस साधना के आगे अगर दुनिया आज चकाचौंध होती है तो उसे सीखना चाहिए कि साधना कैसे की जाती है? न कि इस तरह का प्रश्न चिन्ह खड़ा करना चाहिए कि दिगंबर लोगों को समाज के बीच में क्यों आना चाहिए।

शरीर की अशुचिता का बोध-वैराग्य का कारण

समाज के बीच में इसलिए आते हैं ताकि तुम भी जानो, शरीर आश्रित जीवन मत जियो। **शरीर तो क्षण भंगुर है, नश्वर है, अशुचि है, अपवित्र है, घिनावना है, उस शरीर को देख कर आपके अन्दर वैराग्य उत्पन्न हो जाए। इसलिए दिगंबर मुनि अपने शरीर को दिखाते हुए समाज के बीच में रहते हैं ताकि आपके अन्दर भी वैराग्य उत्पन्न हो। समाज के बीच में आने का यह कारण होता है- समाज के बीच में। आपके अन्दर अगर वैराग्यता का भाव नहीं आएगा तो कभी भी आत्म ज्ञान आपको प्राप्त हो ही नहीं सकता है और विरागता का मतलब है- शरीर की अशुचिता को समझना।** इन डॉक्टरों से पूछो शरीर के अन्दर कौन सा ऐसा पवित्र पदार्थ है जिसको हम अपने पास में रख लें? पूछो इनसे कितने operation किए, कितनी surgery की है, कोई ऐसा pure substance हमें बताओ, कोई ऐसी वस्तु हमें बताओ? जो रखी रहे, शुद्ध रहे और महकती रहे, बदबू नहीं आनी चाहिए? शरीर के अन्दर ऐसा कोई cell, ऐसा कोई organ है? जब आप शरीर के अन्दर किसी भी तरह की surgery करते हैं तो आपको क्या लगता है? सारा शरीर चीर-फाड़ देने के बाद भी आज तक किसी भी doctor को कभी वैराग्य उत्पन्न नहीं हुआ और बिना चीर-फाड़ किए हुए केवल शरीर का विज्ञान जो तीर्थंकरों ने हमें बताया है, उसको जान कर अनेक लोगों को वैराग्य हो जाता है और शरीर से मोह छोड़ कर के आत्मा की राह पर निकल पड़ते हैं।

शरीर के परे आत्मा के अनन्तकालीन अस्तित्व का बोध

शरीर जिन्दगी नहीं है। शरीर के भीतर जिन्दगी जीने वाला जो तत्त्व है, उसे आत्मा कहा जाता है। उसकी life infinite होती है। उसकी life केवल यह human life जब तक है तब तक उसकी life नहीं है उसकी life अनन्त है, infinite है। **अनन्त काल तक उसके अस्तित्व को कोई नहीं रोक सकता है और उस अनन्त काल तक रहने वाली उस आत्मा के प्रति अगर आपका लगाव होगा तब आपका ज्ञान, सम्यग्ज्ञान कहलाएगा।** तब आपके अन्दर आत्म ज्ञान उत्पन्न होगा। तब आपको इस जीवन की महत्ता समझ में आएगी अन्यथा शरीर की चीर-फाड़ से क्या होने वाला है? वह तो कोई भी कर देता है, कैसे भी हो जाता है? कभी हम उसको बचा भी पाते हैं, कभी नहीं भी बचा पाते हैं। आखिर चीर-फाड़ से शरीर से क्या हमें वैराग्य होगा। आश्चर्य की बात तो यही लगती है मुझे कि डॉक्टरों को वैराग्य क्यों नहीं होता है? मुझे सबसे ज्यादा आश्चर्य लगता है। जब मैं सोचता हूँ डॉक्टरों के बारे में जिन्होंने body के भीतर के हर एक inner organ को ढंग से देख रखा है, एक-एक cell को पढ़ रखा है और किसी भी cell के अन्दर कोई purity नहीं है। हर चीज सड़ी-गली है, हर चीज बदबूदार है और उसके बावजूद भी किसी भी doctor के अन्दर वैराग्य का भाव क्यों नहीं आता है कि शरीर में क्या रखा है? क्या इस शरीर के लिए जिएँ? मुझे यह दुनिया का सबसे बड़ा आश्चर्य लगता है। इतनी MBBS और MD की पढ़ाई करने के बाद में, MS की पढ़ाई करने के बावजूद भी, किसी भी surgeon को आज तक वैराग्य क्यों नहीं हुआ? जबकि वैराग्य की आधारशिला इस शरीर पर टिकी हुई है। **भगवान तीर्थंकरों ने कहा...अगर आपको शरीर की अशुचिता का ज्ञान हो जाएगा तो फिर आपका मन आपके विचार आखिर किसमें जुड़ेंगे? किससे प्रेम करेंगे? शरीर की अशुचिता के बिना आपका आत्मा की ओर inclination हो ही नहीं सकता है** और यह ज्ञान भगवान को घर में रह कर हो जाता है, महापुरुषों को यह बात केवल उन निर्ग्रन्थ मुनियों को देख कर समझ में आ जाती है और यही बात बताने के लिए निर्ग्रन्थ श्रमण इस दुनिया के अन्दर भ्रमण करते हैं कि शरीर के लिए मत जियो। शरीर में जो जी रहा है आत्मा, उस आत्मा के लिए जीने की शुरुआत करो। इसका message देने के लिए यह श्रमण वस्त्र रहित होकर, नग्न होकर के समाज के बीच में घूमा करते हैं, यह message दुनिया को बता देना। शरीर के साथ रहने वाला जो आत्मा है, वह आत्मा शाश्वत है।

शरीर की भंगुरता

शरीर तो कुछ आयु का है, इसलिए उसको क्षणभंगुर कहा जाता है। इस क्षण है, अगले क्षण है क्या पता? एक क्षण में ही वह भंगुर हो जाएगा। भंगुर अर्थात् विनाश को प्राप्त हो जाएगा, भंग हो जाएगा, विनष्ट हो जाएगा, क्षण लगेगा बस और ज्यादा नहीं लगेगा कुछ भी। एक ठोकर लगती है, आदमी वहीं पर बेहोश हो पड़ता है, जिन्दगी भर के लिए अपना होश खो बैठता है, जिन्दगी भर बेहोश भी पड़ा रह सकता है, उसी क्षण मौत भी हो सकती है। इसलिए इस जीवन को क्या कहा जाता है? यह शरीर आश्रित क्षणभंगुर है लेकिन इसको जीने वाला जो आत्मा है, वह क्षणभंगुर नहीं है वह शाश्वत है, सनातन है, वह हमेशा से रहने वाला है और उस आत्मा की चिकित्सा करने वाले कौन हैं? यह आत्मा क्यों बार-बार जन्म लेता है? क्यों बार-बार इस आत्मा को रोग उत्पन्न होते हैं?

रोग को जीतने में और रोग जनित दुःख का निवारण करने में मौलिक अन्तर

जब सनतकुमार जैसे चक्रवर्ती दीक्षा लेकर श्रमण बनकर जब अपनी तपस्या करते हैं तो उन्हें शरीर में कोढ़ उत्पन्न हो जाता है। कोढ़ समझते हैं न? skin की बहुत बड़ी बीमारी कहलाती है। अब यह कोढ़ हो गया, उसका दुःख तो हो गया उन्हें लेकिन उस दुःख से वे दुःखी नहीं हुए। मैं यह बताना चाह रहा था कि श्रमणों को भी रोग हो जाते हैं लेकिन वे उस रोग को जीतते हैं। **रोग होना अलग बात है और रोग से दुःख होना अलग बात है।** अनेक वैद्य उनके सामने आए, देव वैद्य बनकर के उनकी परीक्षा करने के लिए आ गए, मेरे पास दवाई है कोढ़ को दूर करने की, शर्तियन दवाई है। जैसे आपके यहाँ पर बसों में लोग चिल्लाते रहते हैं न, ऐसे उन सनतकुमार मुनि महाराज के सामने खड़े होकर के दो वैद्य, अच्छा भेष बनाकर एक वैद्य का और झोला लेकर, मेरे पास में इस रोग की शर्तियन दवाई है, आप इसको ले लो। आप इसको एक बार एक दवाई ले लोगे आपका यह कोढ़ हमेशा के लिए ठीक हो जाएगा। जब सनत कुमार मुनि महाराज यह सुनते-सुनते थक गए तब उन्होंने अपनी आंखें खोली और उन वैद्य से कहा...आप क्यों बार-बार हमारे आसपास परेशान होने के लिए खड़े हुए हो? हमें किसी वैद्य की आवश्यकता नहीं, हमें किसी दवाई की आवश्यकता नहीं। अरे! आपके शरीर में इतना बड़ा कोढ़ निकल रहा है, बदबू आ रही है, इतना शरीर सड़ रहा है, इसे कोई देख भी नहीं पा रहा है। हमें किसी को दिखाने की कोई जरूरत नहीं है, मेरी आत्मा का आनन्द मुझे मिल रहा है। मैं शरीर से बिल्कुल भिन्न होकर अपनी आत्मा के आनन्द में हूँ, मैं शरीर में चिपका हुआ नहीं हूँ इसलिए मुझे शरीर की कोई पीड़ा नहीं हो रही है, मुझे शरीर के रोग से कोई आपत्ति नहीं है। इतना कोढ़ होने के बावजूद भी आपको इसे दूर करने की इच्छा नहीं है? नहीं करना। क्यों नहीं करना? यह शरीर तो क्षणभंगुर है मिटेगा, मिट रहा है, मिट जाएगा लेकिन मैं जो हूँ वह कभी नहीं मिटूँगा। आपको एक बार तो मेरी औषधि इस रोग के लिए ले लेनी चाहिए, मैं इसको बिल्कुल शर्तियन ठीक कर दूँगा। यह परीक्षा करने के लिए देव लोग उनके सामने खड़े हैं और सनतकुमार चक्रवर्ती मुनि महाराज उसके लिए कह रहे हैं। नहीं! मुझे कोई दवाई की आवश्यकता नहीं है और जब वह वैद्य नहीं मानते हैं तो उन चक्रवर्ती मुनि महाराज ने अपना थूक निकाल करके अपना थूक उस अंगूठे के पास में ऐसा लगा दिया और वह अंगूठा वहाँ पर कंचन काया की तरह चमकने लग गया। जब उन देवों ने जो परीक्षा करने के लिए आए यह देखा तब उन्हें समझ में आया यह क्या है? **बोले अगर काया को हमें कंचन करना होगा तो वे तो हम कब की कर चुके होते, हमें अपनी आत्मा को कंचन बनाना है इसलिए हम यहाँ बैठे हैं।** हमें तुम्हारी औषधियों की आवश्यकता इसलिए नहीं है क्योंकि हमारी दृष्टि शरीर पर नहीं है, हमारी दृष्टि आत्म तत्त्व पर है और ऐसी आत्मा का ध्यान करने में मुझे जो आनन्द आता है, उसके लिए जब मुझे कोई दुःख ही नहीं हो रहा है शरीर का भाई, बदबू तुम्हें आ रही होगी, तुम जानो, मुझे तो नहीं आ रही। मुझे तो अपनी आत्मा की सुगंध आ रही है।

जीवन में आध्यात्मिकता का महत्व

मैं शरीर को देख ही नहीं रहा हूँ, मैं तो आंख बंद करके अपनी आत्मा के रस में निमग्न हूँ। मुझे इस शरीर के रोग से मुक्त होने की भी कोई इच्छा नहीं है और उनके अन्दर इतनी शक्ति है कि अगर वह थूक किसी भी रोगी के ऊपर लगा दे, थूक क्या? उनकी हवा भी किसी रोगी को लग जाए तो कितना ही बड़ा रोगी हो,

रोगी ठीक हो जाए। **इतनी शक्तियाँ शरीर के अन्दर नहीं आती, आत्मा के अन्दर आती हैं।** इसलिए आत्मा के लिए जीने वाला जो होता है, उसे परम वैद्य कहा जाता है। आत्मा की चिकित्सा करने की जो पद्धति बताई गई है, वह तीर्थंकरों ने बताई है। **आज के इन चिकित्सकों से मेरा कहना है, डॉक्टरों से मेरा कहना है अब थोड़ा सा अपनी life में एक spirituality लाने की कोशिश करो।** हमने बहुत किताबें पढ़ ली, बहुत operation कर लिए, अब थोड़ा सा हम अपने लिए जीने की कोशिश करें। आत्म विद्या को सीखो। यह बहुत बड़ी विद्या होती है। अध्यात्म विद्या सीखो और यह अध्यात्म विद्या सीखे बिना जीवन आपको कभी भी संतोष नहीं देगा। **यह अध्यात्म विद्या सीखने के लिए आपको अध्यात्मिक ग्रन्थ पढ़ने पड़ेंगे। चाहे आप गीता पढ़ लो और चाहे आप इधर दिगंबर जैन संतों के द्वारा लिखा हुआ इष्टोपदेश, समाधितंत्र या समयसार आदि ग्रंथों का अध्ययन करो ताकि आपको समझ में आएगा कि अध्यात्म किसे कहते हैं? आत्मा क्या कहलाती है?** आपके लिए अगर आत्मा का ज्ञान होगा तो ही सबसे बड़ा ज्ञान आपके अन्दर आएगा। मैं यही चाहता हूँ, सभी लोग आत्म ज्ञानी बनें।

आत्मा के विकारों को निवारण करना सिखाती है- श्रमण संस्कृति

शरीर ज्ञानी बनने से क्या होगा? शरीर का ज्ञान तो वैसे ही दिखाई दे रहा है सब कुछ। doctor साहब समझ रहे हो? शरीर में तो जो कुछ है वह सबको पता है और शरीर की चिकित्सा कितनी बार हो पाती है, fail हो जाती है लेकिन हमने past time में कभी भी और आज तक भी, **कभी भी अपनी आत्मा के रोगों की चिकित्सा करने का कोई भी बीड़ा नहीं उठाया और आत्मा के रोग क्या हैं? हमारे अन्दर जो अज्ञान है, हमारे अन्दर जो अनेक तरह के विकारी भाव हैं जिन्हें हम ईर्ष्या कहते हैं, मोह कहते हैं, क्रोध कहते हैं, मान कहते हैं, लालच कहते हैं, छल कपट कहते हैं, इन सब भावों को नष्ट करके अपनी आत्मा को शुद्ध बनाने की जो विधि बताई जाती है, उसी का नाम जैन धर्म कहलाता है।** यह ध्यान में रखना और उस जैन धर्म के अनुसार जो उस चिकित्सा पद्धति पर सब कुछ छोड़ कर चल पड़ते हैं उन्हीं को श्रमण कहा जाता है, उन्हीं को मुनि महाराज कहा जाता है।

अनादिकालीन दिगंबरत्व का सद्भाव

यह मुनि महाराज हमेशा से इस भारत की संस्कृति पर विचरण करते हुए, सबके लिए आत्म विद्या का ज्ञान देने के लिए हमेशा रहे हैं और हर राजाओं के समय पर इन मुनि महाराजों का सद्भाव रहा है। राजाओं की सभाओं में भी कालिदास जैसे लोग लिखते हैं... **‘ज्योतिर्विधाभरण’** नाम का एक ग्रंथ उन्होंने लिखा है। उसकी पंक्तियाँ मैंने आपको सुनाई थी। जिसमें उन्होंने नवरत्नों के नाम लिए और उन नवरत्नों में एक क्षणक का नाम लिया है, क्षणक का मतलब दिगंबर मुनि होता है। यह कोष साहित्य में पढ़ लेना। **क्षणक का मतलब जो अपने कर्मों का क्षय करने वाला होता है, उसको क्षणक कहते हैं** और यह क्षणक शब्द आपको दिगंबर शास्त्रों में भी मिलेगा और दिगंबर शास्त्रों के अलावा अन्य भी वैदिक शास्त्रों में आपको यह क्षणक शब्द मिलेगा। तो दिगंबर मुनियों का अस्तित्व हमेशा से इस धरती पर रहा है, हमेशा आप उनसे आत्म ज्ञान लेने की विद्या प्राप्त करने की कोशिश करें यही उनका उद्देश्य रहा है।

साधना वही जो आन्तरिक और मानसिक भावों की चिकित्सा करे

हर समाज के बीच में व्यक्ति आज केवल भौतिकता की चकाचौंध में दौड़ता हुआ अपने आप को राग द्वेष से आक्रांत करके, परेशान करते हुए, अपनी मौत suicide के माध्यम से कर रहा है। ऐसी स्थिति में अगर आपको कोई आत्म ज्ञान मिलेगा, आत्म शान्ति मिलेगी तो आपके लिए यह साधना समझ में आनी चाहिए। मुनि महाराज किसके लिए जीते हैं? अपनी आत्मा के लिए जी रहे हैं। **क्षणभंगुर जीवन जी रहा मैं अपने लिए।** किसके लिए? अपने लिए। बस! इतनी सी line आप लोग ध्यान रखना और इस तरह की चिकित्सा करने की कोशिश करना जिससे हमारे अन्तरंग मानसिक भावों की, आध्यात्मिक भावों की हम अपने अन्दर controlling कर पाएँ और उसके माध्यम से हम अपनी आत्मा की चिकित्सा करने के लिए अपने कर्मों के संस्कार को हमेशा के लिए नष्ट कर पाएँ, यह चिकित्सा ही महत्वपूर्ण चिकित्सा है और इसी के माध्यम से सब कुछ साध्य, साधन और साधना जानी जाती है। एक बार ऐसी साधना करना भी प्रारंभ करो। राजा श्रेणिक! किसको साध्य बना लिया है? गृहशोभा को? गृह की शोभा कब तक बनाओगे? क्या कपड़ों से केवल गृह की शोभा बढ़ती है? **साध्य क्या होना चाहिए? अपनी आत्मा को शुद्ध करना यह हमारे जीवन का साध्यभूत लक्ष्य होना चाहिए। इस सभा में बैठ कर अगर आपने केवल अपना साध्य इतना बना लिया तो समझ लेना सभा में बैठना आपका सार्थक हो गया।**

30. सिद्ध अनन्त प्रकाश से प्रकाशित हैं

आज हम पुनः प्रतिदिन की भांति राजा श्रेणिक और राजकुमार अभय कुमार के माध्यम से प्रश्नों को सुनकर के उसका उत्तर देने के लिए भगवान महावीर स्वामी की सभा में, सिद्धों की आराधना करते हुए, यहाँ पर विराजमान हैं। आचार्य पूज्यपाद महाराज ने सिद्ध भगवन्तों की भक्ति करते हुए जो हमें उपदेश दिया, जो ज्ञान दिया, वह निरन्तर चल रहा है। पिछले दिनों में आपके लिए जो एक काव्य नम्बर आठ है उसकी तीन lines का वर्णन हो चुका था।

आतङ्कार्ते-रभावे, तदुपशमन- सद्-, भेषजानर्थतावद्,

इसके आगे की एक line और बची है

दीपानर्थक्य वद् वा व्यपगत - तिमिरे, दृश्यमाने समस्ते।८।

सिद्ध सारे प्रकाशमान पदार्थों को अपने अन्दर प्रकाशित कर लेते हैं



आचार्यों ने सिद्ध भगवन्तों की भक्ति करते हुए भी उदाहरण देकर के हमें समझाने की चेष्टा की है और यहाँ पर दो उदाहरण देकर के हमें सिद्धों के लिए यह बताने का प्रयास किया है कि सिद्ध भगवानों को किसी भी अन्य पदार्थ से कोई प्रयोजन नहीं रह जाता है। एक उदाहरण आपको रोग का और औषधि का दिया था और दूसरा उदाहरण आज आपके समक्ष और आता है... **‘दीपा नर्थक्य वद् वा’** अर्थात् दीप अनर्थक्य है। उसका कोई प्रयोजन नहीं होता है। **‘व्यपगत तिमिरे’** जिसके अन्दर से तिमिर समाप्त हो जाता है... **‘दृश्य माने समस्ते’** ऐसा कोई पदार्थ अगर हमारे सामने हो जिसमें सब कुछ दिखाई दे रहा हो और जिसमें अन्धकार का अभाव हो जाता हो तो फिर उसके आगे दीपक की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। जैसे रवि का उदय होता है और उसके प्रकाश के कारण से जब सर्वत्र रेशनी फैलती है तो सारा अन्धकार भाग जाता है। सब कुछ दिखाई देने योग्य पदार्थ, दृश्यमान पदार्थ दिखाई देने लग जाते हैं और इस तरह से जब तिमिर से रहित होकर के सभी दृश्यमान पदार्थ, जब अवलोकित होने की क्षमता में आ जाते हैं तो वहाँ पर फिर दीपक से कोई प्रयोजन नहीं रह जाता मतलब सूर्य के प्रकाश के समक्ष दीपक का कोई प्रयोजन नहीं है। इसी तरह से **भगवान सिद्धों के लिए किन्हीं अन्य प्रकाश पदार्थों का भी कोई प्रयोजन नहीं है।** अब हम थोड़ा सा यहाँ पर आपकी उस धारणा की ओर चलते हैं।

सिद्ध भगवान की आत्मा अनन्त प्रकाश से स्व प्रकाशित है

अक्सर लोग यह पूछा करते हैं यह जो **सिद्ध शिला** है, सिद्ध भगवान जहाँ रहते हैं वहाँ पर महाराज **प्रकाश है कि अन्धकार है?** यह लोग पूछा करते हैं। लोग दिमाग तो लगाते हैं थोड़ा पढ़ लेते हैं श्रुत ज्ञान से उन्हें पता पड़ जाता है। चौदह राजू का यह लोक है। लोक के अग्र भाग पर सिद्ध भगवान विराजमान हैं तो

ज्योतिषी देवों का प्रकाश तो केवल इस मध्य लोक में रहता है, इधर आता है। वहाँ तो कोई ज्योतिर्लोक है? नहीं है! सूर्य चंद्रमा वहाँ होते नहीं, वहाँ कोई प्रकाश पहुँचता नहीं। वैमानिक देवों के लिए तो हम फिर भी कह लेते हैं कि चलो वहाँ पर रत्न होते हैं। देवों के यहाँ पर रत्नों का प्रकाश होता है। सिद्धों के यहाँ पर किसका प्रकाश? लोक के अग्र भाग पर सिद्ध भगवान विराजमान हैं, वह अन्धेरे में हैं कि उजाले में हैं? बोलो! उजाला तो, उजाला किसका? उजाला किसका? उन्हें किसी उजाले के लिए प्रकाश की आवश्यकता है कि हमें उजाले के लिए प्रकाश की आवश्यकता है? हमें जब प्रकाश की आवश्यकता पड़ती है, तो हमें ऐसा लगता है कि जैसे हमें प्रकाश की आवश्यकता है, वैसे सबको प्रकाश की आवश्यकता है। उन सिद्ध भगवानों को भी उजाला चाहिए, प्रकाश चाहिए, अन्धेरे में बैठे होंगे तो हमारे भगवान अन्धेरे में बैठे हो, अच्छा नहीं लगता। ऐसा ही विचार आता है कई लोगों को। आपके लिए वह विचार आज अच्छे ढंग से स्पष्ट हो जाना चाहिए। **जो भगवान होते हैं, उनकी जो आत्मा होती है उसमें जो प्रकाश होता है, वह प्रकाश भी अपने आप में कितना बलवान होता है या कितना अधिक होता है? जिसके कारण से उन्हें किसी भी और अन्य प्रकाश की आवश्यकता नहीं रह जाती।**

सिद्धों की आत्मा में अनन्त सूर्यों का प्रकाश है

आप एक विचार करें कि अगर सूरज के सामने हम यह कहें कि दीपक की आवश्यकता है तो यह हमारे लिए जैसे एक उपहास उड़ाने वाली बात है सूरज का। वैसे ही **उन सिद्ध भगवानों के सामने अगर हम यूँ कहें कि इन्हें भी किसी सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता है तो यह भी उनका एक उपहास हो जाएगा।** जो स्वयं प्रकाशमान है और प्रकाश भी कितना? जिन भगवान की आत्मा में जितने भी प्रकाशमान पदार्थ हैं वह सारे के सारे प्रकाशित हो रहे हैं। अगर जैन दर्शन के अनुसार हम विचार करें तो **सूर्य-चन्द्रमा असंख्यात** होते हैं। कितने होते हैं? केवल हम इस **जम्बू द्वीप** की बात नहीं कर रहे हैं। पूरे मध्य लोक के अन्दर, ज्योतिर्लोक में सूर्य-चन्द्रमा कितने होते हैं? असंख्यात होते हैं। अब आप सोचो कि एक सूर्य का प्रकाश इतना है तो असंख्यात सूर्यों का प्रकाश कितना होगा और यह प्रकाश भी उन आत्मा में जब तारे की तरह टिमटिमाता है, तो सोचो उनकी आत्मा का प्रकाश कितना होगा? समझ पा रहे हो?

सिद्ध भगवान ज्योति रूप हैं

प्रकाश को प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती है। जो स्वयं प्रकाशमान पदार्थ है उसे किसी प्रकाश की आवश्यकता नहीं होती है। सूरज को कभी जैसे दीपक की आवश्यकता नहीं होती, मोमबत्ती की आवश्यकता नहीं होती, उसी तरह से उन भगवान को, शुद्ध सिद्ध आत्माओं को कभी भी किसी अन्य **सूर्य, चन्द्रमा, मणि, दीपक, CFL की lights** की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती। जितना भी प्रकाश इस दुनिया में है, वह सब उनकी अन्तरात्मा में प्रकाशित हो रहा है और उससे उनकी अन्तरात्मा प्रकाशित नहीं है। उनका प्रकाश इतना है कि उन सारे प्रकाशमान पदार्थों को भी अपने अन्दर प्रकाशित कर लेता है। मतलब उनकी light इतनी ज्यादा है कि वह सारे **lighted पदार्थों को भी capture** कर लेते हैं। कोई भी पदार्थ, कोई भी दुनिया की वस्तु, चाहे वह lighted हो या न हो, वह सब उनके ज्ञान में अवश्य दिखाई देने चाहिए और देते हैं। यह जब सिद्ध भगवान की स्थिति है, उनकी अन्तरात्मा का इतना तेज, इतना प्रकाश

जब हमें ज्ञान में आ जाएगा तो हमारा यह प्रश्न जो अज्ञान जनित प्रश्न है यह कभी भी उठेगा ही नहीं। **भगवान के आसपास कैसा भी वातावरण हो? भगवान के आसपास कितना भी अन्धकार हो? लेकिन भगवान आत्मा कितना प्रकाशमान है यह आपको ध्यान में रखना है। वह अन्धकार भी उनके ज्ञान का एक विषय बनता है।** वह अन्धकार को भी एक वस्तु के रूप में जानेंगे कि आसपास जो अन्धकार है, वह हमारे लिए जानने में आ रहा है। आप सोचे! कभी आप अपने घर में बैठें हो, कमरे के अन्दर और आपका कमरा lighted हो पूरा और बाहर रात हो, अन्धकार हो। आपको क्या फर्क पड़ेगा? आप अगर बाहर देखो खिड़की से तो आपको बाहर क्या दिखाई दे रहा है? अन्धेरा-अन्धेरा दिखाई दे रहा है लेकिन आप तो उजाले में हो तो आदमी को सुकून किससे मिलता है? हमें क्या चाहिए? light किसके लिए चाहिए? अपने लिए? अपने को तो हम देख ही पा रहे हैं। हम जहाँ पर हैं, वहाँ पर हम अपने को समझ ही पा रहे हैं, पहचान ही पा रहे हैं, तो हमें अगर प्रकाश में रहने का मिल रहा है, तो दूसरा अगर कोई अन्धकार में हो या आसपास कहीं अन्धकार हो, उससे क्या फर्क पड़ेगा? समझ आ रहा है? इसी तरह से सिद्ध भगवान प्रकाशमान हैं, उनकी आत्मा में एक-एक और आत्मा में एक-एक स्थान पर **अनन्त-अनन्त और सिद्ध बैठे, वह सभी प्रकाशमान है।** वह किसको देखेंगे? आसपास के वातावरण को देखेंगे तो आसपास का सारा वातावरण उनके लिए प्रकाशमान है। सिद्ध सिद्धों को देखेंगे, दुनिया के हर पदार्थ को देखेंगे, उन्हें वह पदार्थ अपने से पृथक् दिखाई देगा। वह जैसे दूसरे प्रकाश को देखेंगे, सूर्य-चन्द्रमा आदि को, वैसे ही अन्धकार को भी देखेंगे लेकिन वह स्वयं प्रकाशमान है, इसलिए उन्हें ज्योति रूप कहा जाता है। क्या कहा जाता है? भगवान कैसे हैं? ज्योति रूप हैं, ज्योति स्वरूप हैं।

भगवान परम ज्योति रूप हैं. उन्हें अन्य प्रकाश की आवश्यकता नहीं

कई जगह पर आचार्यों ने केवल ज्योति के रूप में ही उनकी स्तुति की है। प्रभु कैसे होते हैं? शुद्ध परमात्मा कैसा होता है? परम ज्योति स्वरूप। एकीभाव स्तोत्र में आचार्य वादिराज लिखते हैं -

ज्योति रूपं दुरित निवह ध्वान्त विध्वंस हेतुं, त्वामे वाहुर्जिनवर! चिरं तत्त्व विद्या भियुक्ताः।

चेतोवासे भवसि च मम स्फारमुद्भासमान-, स्तस्मिन्नंहः कथमिव तमो वस्तुतो वस्तुमीष्टे ।।2।।

क्या लिखते हैं आचार्य? ज्योति रूपं। हे भगवन्! आप कैसे हैं? ज्योति स्वरूप। आप सिर्फ ज्योति को देखो। हम ज्यादा पढ़-लिख जाते हैं तो हमारी दृष्टि आस-पास ज्यादा घूमती है। जिस चीज पर हमें focus करना चाहिए उस पर नहीं घूमती है। पढ़-लिखे लोगों को चिन्ता रहती है सिद्ध भगवान कहाँ रहते हैं, भाई! ज्योति कहाँ होगी? ज्योति जहाँ रहेगी वह आसपास प्रकाशित होगा कि नहीं होगा? **ज्योति स्वयं प्रकाशमान है।** उसे अगर किसी दूसरे प्रकाश की आवश्यकता नहीं है, तो समझो वह ज्योति अपने आप में कितनी श्रेष्ठ है? **ज्योति के लिए भी अगर किसी और प्रकाश की आवश्यकता पड़ गई तो फिर वह ज्योति, परम ज्योति कैसे होगी? भगवान के आसपास क्या है? हमें यह समझ लेना है। सिद्ध भगवान जिस स्थान में हैं, वहाँ पर अनन्त सिद्ध भगवान विराजमान है।** सब सिद्ध भगवान अपने प्रकाश से अनन्त प्रकाश से प्रकाशित है। ज्योति रूप हैं तो अब वहाँ, अन्धकार कहाँ है? अन्धकार अगर space में भी होगा तो उस अन्धकार से उन्हें क्या प्रयोजन होगा? जो स्वयं lighted हो रहा है, स्वयं प्रकाश से भरा हुआ है, उसे बाहर के अन्धकार से क्या प्रयोजन रहेगा? चिन्ता हम और आपको हो पड़ती है।

भगवान के प्रकाश का स्मरण करने से पाप रुपी अन्धकार नष्ट होता है

भगवान, सिद्ध भगवान, सिद्ध शिला पर अन्धकार में रहते हैं। आप देखो! वह प्रकाश के कितने बड़े स्रोत है? वह इतने बड़े स्रोत हैं कि वह ज्योति स्वरूप हैं।

‘दुरित निवह ध्वान्त विध्वंस हेतुं

दुरित मतलब होता है- पाप। **पाप के समूह रुपी जो अन्धकार है, उसका विध्वंस करने के लिए वह कारण हैं-** सिद्ध भगवान। उनका प्रकाश अगर हम आज यहाँ पर बैठ करके उनकी उस ज्योति को याद करते हैं तो हमारे पाप का, अन्धकार का हमारे अन्तरंग से, हमारी आत्मा से आज भी विनाश होने लग जाता है, उसके लिए कारणभूत वह ज्योति आज भी हमारे पास में आ जाती है। भगवान कितनी दूर हैं, वह ज्योति का अगर आप स्मरण करोगे तो आपके अन्तरंग का तमस-अन्धकार दूर होने लगेगा। बस! आप उसे ज्योति रूप देखो। आज तक आपने कभी सिद्धों को ज्योति स्वरूप देखा? नहीं देखा। सिद्धों को कभी एक **भासुर प्रकाशमान**, एक ऐसा जैसे आप यह halogen देखते हो, इसके प्रकाश को मत देखो, halogen के अन्दर देखो। यह कैसा दिखाई देता है? बल्ब के प्रकाश को मत देखो, बल्ब के अन्दर देखो, वह कैसा दिखाई दे रहा है? ऐसे ही जिसके अन्दर सूर्य भी प्रकाशित हो रहा हो, वह कितना प्रकाशमान पदार्थ होगा? जिसके अन्दर हजारों नहीं, **असंख्यात सूर्य का प्रकाश भी समा** जाए और फिर भी वह प्रकाश उस वस्तु को प्रभावित न करे। जिसका प्रकाश इतना बड़ा है कि उसके प्रकाश में सारे प्रकाश समा जाते हैं, समझो वह प्रकाश कितना बड़ा होगा। ऐसे सिद्ध भगवन्तों का स्मरण करो जो प्रकाशमान हैं, **स्वयं प्रकाशमान हैं- ज्योति रूप!** जिनकी उस ज्योति रूप का ध्यान करते ही हमारे अन्तरंग के, दुरित का, पाप का, कल्मषता का जो अन्धकार हमारे मन में भरा पड़ा है, वह सारा का सारा नष्ट होने लग जाता है। बस! आप अपनी उस ज्योति को अपने अन्तरंग में ध्याओ।

जिन्होंने अन्धकार को, सारे प्रकाशमान पदार्थों को भी जीत लिया उन्हें हम सिद्ध भगवान कहते हैं

‘त्वामे वाहुर्जिनवर! चिरं तत्त्व विद्याभियुक्ताः’

जो तत्त्व विद्या से युक्त लोग हैं, हे भगवन! आपको ही **जिनेन्द्र** भगवान इसीलिए कहते हैं, जिन कहते हैं। **जिन मतलब जीत लिया।** किसको जीत लिया? इन्द्रियों को, यह तो सब पुरानी बातें हो गई। इन्द्रियों को, कषायों को, कर्मों को, तुम लोग घिसीपटी बातें बोलते रहते हो। जो तुम बोलते हो मुझे बोलने में बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। वह रटी हुई बातें क्या बोलना? इन्द्रियों को जीत लिया, कषायों को जीत लिया, कर्मों को जीत लिया। अरे भाई! उन्होंने कुछ और भी जीत लिया, उसको भी तो याद रखो। वह दुनिया के अन्धकार को जीत लिया, दुनिया के जितने प्रकाशमान पदार्थ हैं, उन सबको भी जीत लिया। वह इतने ज्यादा lighted हो गए, इतने ज्यादा प्रकाशमान हो गए। यह कभी नहीं कहोगे, यह कौन सिखाएगा? इसलिए जो तत्त्व को जानने वाले लोग हैं वह कहते हैं- भगवन, आप जिन हैं। **जिन क्यों हैं? क्योंकि आपने अन्धकार को जीत लिया।** अब जिन्होंने अन्धकार जीत लिया, उन्हीं के आसपास आप अन्धकार का ज्ञान लगाओ तो आपसे ज्यादा अन्धकार किसके अन्दर होगा? **जिन्होंने अन्धकार को जीत लिया, सारे प्रका-**

शमान पदार्थों को भी जीत लिया, उन्हें हम सिद्ध भगवान कहते हैं। यह भी एक नई परिभाषा आज से जानने लग जाओ। यह आपको शास्त्रों में, आचार्यों के द्वारा लिखी हुई नहीं मिलेगी, ये हम जैसे मुनियों के द्वारा कही हुई ही मिलेगी। आज ही कही गई है, इससे पहले कभी किसी मुनि ने कही भी नहीं है यह भी guarantee की बात है। **ऐसे भगवान जिन्होंने अन्धकार को जीत लिया, सूर्य चन्द्रमा आदि जितने भी प्रकाशमान पदार्थ हैं, अपने आप में जितनी भी ज्योति रखने वाले पदार्थ हैं वह सब उनके उस आत्मा में, एक छोटे से तारे की तरह टिमटिमा रहे हैं।** सारा प्रकाश आप समझो, सूर्य भी उनके आत्मा में एक तारे की तरह टिमटिमाता है। कब टिमटिमाएगा? जब सामने वाले का प्रकाश ज्यादा हो, इतना ज्यादा हो कि उसमें और दूसरे प्रकाशमान पदार्थ भी छोटे से तारे की तरह दिखाई देने लग जायें तो आप कल्पना करो कि उन सिद्ध भगवान की आत्मा का प्रकाश कितना होगा? यहाँ तो आचार्य कह रहे हैं... उदाहरण देकर के बता रहे हैं कि दीपक की क्या आवश्यकता रह जाती है? अगर सब कुछ हमें दिखाई देने लग जाता है हम कहते हैं उनके लिए तो सूरज की भी आवश्यकता नहीं है क्योंकि सूरज उनके ज्ञान में टिमटिमा रहा है। चन्द्रमा उनके ज्ञान में टिमटिमा रहा है, सारे भी रत्न आदि जितने भी बहुमूल्य पदार्थ हैं जो भगवान के सम-वशरण में लगे रहते हैं वह भी सब उनके ज्ञान में टिमटिमा रहे हैं।

सिद्धों का ध्यान करने से ही अपने भीतर का अन्धकार दूर होगा

उनका प्रकाश इतना अधिक है कि दूसरा प्रकाश उनके आगे टिक ही नहीं सकता है इसलिए उनको जिन कहा है।

“त्वामे वाहुर्जिनवर! चिरं तत्त्व विद्याभियुक्ताः”

ऐसे भगवान को **‘चेतोवासे’** हमारे चित्त के आवास में, स्थान में, हे भगवन्! आप आओ। बुलाओ उनको कभी। पढ़ लेते हो, सुन लेते हो, कभी भगवान का अपने चित्त में ध्यान करते हो? सिद्ध भक्ति पढ़ते-पढ़ते एक-डेढ़ महीना होने जा रहा है, सिद्धों का कभी ध्यान करना सीखोगे कि नहीं? इतना सुनने के बाद भी सिद्ध भगवान आपके दिमाग में कुछ अलग रूप में, अलग कोई imagination के साथ में आएँगे कि नहीं आएँगे? उन सिद्ध भगवान को कैसे ध्याना? **‘चेतोवासे भवसि च मम स्फारमुद्भासमान’** कैसे कहते हैं? वही प्रकाश हमारे चित्त में भासमान हो जाए, प्रकाशमान हो जाए, मेरा चित्त भी हे भगवन्! आपके आने से, आपके ध्यान के कारण से मेरे चित्त का अन्धकार भी नष्ट हो जाए, **मेरा चित्त भी प्रकाशमान हो जाए।** ऐसे भावना से जब भक्ति होती है, ध्यान होता है, तब कुछ भीतर का अन्धकार मिटता है। वह अन्धकार को दूर करने के लिए ही प्रकाशमान पदार्थों का ध्यान किया जाता है। आज आप देखोगे तो दुनिया में ऐसे बहुत से sect हैं और यूँ कहें कि कुछ institute चल रहे हैं meditation के, जिनमें सिर्फ ज्योति का ध्यान कराया जाता है। आप कहीं जाते नहीं हो, आपको पता नहीं है। जो दुनिया में बड़े-बड़े लोग हैं, दुनिया को देख रहे हैं, घूमने वाले लोग हैं, ध्यान करने के लिए निकल पड़ते हैं, किसी न किसी meditation वाली संस्थाओं के पास में पहुँच जाते हैं तो वहाँ पर उनके लिए क्या कराया जाता है? **candle** जला दी जाती है, उसकी जो light होती है उस पर उनका ध्यान टिकाया जाता है, उसका ध्यान कराया जाता है और फिर बाद में कहा जाता है कि उसको यहाँ देखो! जिसे हम ज्ञान केन्द्र कहते हैं दोनों भृकुटियों के बीच में। ज्योति को देखो बस! यहाँ आप ज्योति स्वरूप हो। मतलब दूसरे लोगों ने भी कहीं न कहीं यह ज्ञान किससे लिया?

इस जिनागम के अन्दर इतना भरा है भण्डार, सारा प्रकाश, सारा ज्ञान, अगर देखा जाए तो यह उसका एक-एक अंश का, एक-एक उदाहरण का, एक-एक line का उपयोग करके आज बड़ी-बड़ी संस्थायें चल रही हैं। ब्रह्मकुमारी जैसे लोग जिनका कोई अस्तित्व नहीं था, अभी से बीस साल पहले, चालीस साल पहले देखा जाए लेकिन आज दुनिया जान रही है ध्यान के मामले में और किसका ध्यान करा रहे हैं? ज्योति का ध्यान करा रहे हैं। अब! आप देखो आपको किसका ध्यान करना है? आपने कभी आज तक सिद्ध भगवान की ज्योति का ध्यान किया? सिद्ध भगवान कैसे हैं? **ज्योति रूपं।**

चैतन्य ज्योति को जाने

हम कहते हैं आज तक आपने सुना ही नहीं होगा कि भगवान ज्योति रूप हैं और दुनिया में आज ध्यान हो रहा है। ज्योति का ध्यान हो रहा है, अब केवल उन्होंने ज्योति पकड़ ली लेकिन उस ज्योति में क्या है? वह चैतन्य ज्योति है कि पौद्गलिक पदार्थ की ज्योति है तो लोगों को तो बस उस पुद्गल ज्योति से ही आनन्द आ रहा है। दीपक की लौ से ही आनन्द आ रहा है। candle की बस उस light से ही आनन्द आ रहा है। उसी में उनका ध्यान लग रहा है और उसी को imagine कर लेते हैं, यहाँ पर ज्ञान केन्द्र में तो बस ऐसे लग जाता है जैसे खुद शिव बन गए हो, तीसरी आँख खुल गई हो, ऐसा लगता है लोगों को। **यह ज्योति कहाँ से आई? यह ज्योति का ध्यान किसने सिखाया? आपको तो कुछ नहीं आता।** बस! सिद्ध भगवानों के लिए सिद्ध पूजा कर लो, जल-चन्दन-अक्षत चढ़ा लो, इसके अलावा आपको इससे आगे बढ़कर के कुछ ध्यान की बात करना, कुछ भगवान के स्वरूप को समझना, इसके विषय में तो अन्धकार छाया हुआ है। जब भगवान के ध्यान की बात आती है तो हम भी ज्योति रूप में ही ध्यान करें लेकिन वह ज्योति कैसी हो? यह candle की ज्योति है, candle की light का ध्यान करें? किसकी light का ध्यान करें? अब वह light हम आपके सामने ला नहीं सकते तो लोगों ने उसी candle को सामने लाकर के उसी ज्योति का ध्यान करके एक बहुत बड़ा सम्प्रदाय बना लिया और लोग ध्यान करते हैं तो कुछ भी ध्यान करोगे। अरे भाई! उनके नाम का भी ध्यान करोगे? जैसे ज्योति रूप में नाम हो गया, ज्योति यह नाम तो वहीं से आया। नाम का भी ध्यान करोगे तो भी कुछ न कुछ काम तो हो ही जाएगा और हो रहा है। वह ज्योति कौन सी है? वह ज्योति क्या किसी पौद्गलिक पदार्थ की ज्योति है कि भाई light जला दी, बुझ गई, ऐसी ज्योति है क्या? एक बार वह ज्योति जलने के बाद में कभी भी बुझती नहीं है। वह ज्योति भी अगर आपके ध्यान में आए तो देह के आकार की वह ज्योति आपके ध्यान में आनी चाहिये। चैतन्य पदार्थ से उत्पन्न हुई वह ज्योति ध्यान में आनी चाहिये। **‘चित् ज्योति कहते हैं उसे, चैतन्य ज्योति कहते हैं’ उसे, चित् प्रकाश** उसको कहते हैं। उस चित् प्रकाश को जब आप ध्यान में लाएँगे तो आपको यह बाहर की ज्योति का ध्यान करने की कोई आवश्यकता नहीं पड़ेगी। लेकिन जब हम बाहर की ज्योति का ध्यान करते हैं और भीतर की ज्योति के बारे में पता नहीं होता है कि हम **चैतन्य ज्योति स्वरूप** हैं तो उस ध्यान से आपको कितना लाभ होगा? जिन्हें पता है कि हम चैतन्य ज्योति स्वरूप हैं, वह भी उस चित् ज्योति का ध्यान नहीं कर रहे हैं तो उन्हें भी कोई लाभ नहीं हो रहा है। लाभ किसको होगा? जब हम उस **चैतन्य ज्योति को अपने ज्ञान का विषय बना कर के, अपने ज्ञान केन्द्र पर, सिद्धि केन्द्र पर जब हम उसका ध्यान करेंगे तो** इसी को कहते हैं- चित् प्रकाश, चित् ज्योति, चैतन्य आत्मा का, शुद्ध आत्मा का ध्यान करना और **यह ध्यान ही अर्ह ध्यान कहलाता है** और अर्ह ध्यान क्या होता है?

कैसे करें अर्ह ध्यान

चैतन्य आत्मा का प्रकाश, वह अर्ह-अर्ह का ध्यान करते-करते जो अर्ह के अक्षर होते हैं, 'अ' बनाओगे, फिर 'ह' बनाओ तो अ के बीच में एक मोटाई आएगी, अ बनाते हुए, समझ रहे हो क्या कहना चाह रहा हूँ मैं? अ बनाओगे तो ऐसे गोल बनाओ उसको, एक मोटाई के साथ में, तो अ के बीच में एक space आएगा, ऐसे ह बनाओ, रेफ बनाओ मोटा-मोटा तो उसके बीच में एक space आएगा। जब हम अर्ह का ध्यान करते हैं तो पहले हम उस अर्ह के अक्षरों में आ जाते हैं। आचार्यों ने क्या कहा? पहले अपने सामने अर्ह के अक्षर ले आओ। अर्ह के अक्षर आ गए...अब अक्षर देखते रहो, अब अक्षर हम कब तक देखें? आचार्य कहते हैं आपको जब तक अक्षर दिखाई दें तब तक अक्षर देखो और जब अक्षर न दिखाई दे तो फिर आप उन अक्षरों के अन्दर जो space है उसमें आप प्रकाश भरा हुआ देखो, उसमें प्रकाश ही प्रकाश है। क्या भरा हुआ है? कहीं यहाँ पर design बनवाना, अच्छी सी मोटी-मोटी अर्ह की design एक। शहपुरा के कई मन्दिरों में, ऐसे यह कौन सी plate होती है? metal की कोई plate होती है, उस पर बहुत अच्छी design बनी हुई है। हर मन्दिर में उन्होंने एक तरीके से 'logo' बनवाया है, design बनवाई। उससे भी यह फर्क पड़ता है कि आदमी के लिए दिखने लग जाता है, अर्ह ऐसा लिखा जाता है। जब वह लिखा हुआ देखता है कभी आँख बन्द करके बैठेगा उसे अर्ह अपने दिमाग में दिखाई देगा। अर्ह की ज्योति अपने आप उसके दिमाग में आने लग जाएगी, इसी को कहते हैं- **अर्ह ज्योति।**

अर्ह के प्रकाश में समाहित हो जाएँ

यह अर्ह का ध्यान करने के लिए पहले आपको अक्षर चाहिए और जब अक्षर का ध्यान हो गया तो फिर आचार्य कहते हैं- उसके अन्दर का जो प्रकाश है, उसको महसूस करो और उस प्रकाश को कैसा महसूस करो? यह सिद्धों का प्रकाश है, उसके अन्दर गहरे उतर जाओ। उस प्रकाश में कौन भरा हुआ है? सिद्ध चैतन्य आत्माएँ उसके अन्दर भरी हुई हैं। जैसे आप इस lamp के अन्दर देखो, जिसके अन्दर सिर्फ light है, अब इसमें आप ध्यान लगाओ, इसके अन्दर घुसते चले जाओ, इसका पीछे कोई छोर न हो। आप इसके अन्दर अपने दिमाग को लगाते चले जाओ तो आपके दिमाग में अपने आप एक प्रकाश ही प्रकाश, प्रकाश ही प्रकाश, प्रकाश ही प्रकाश भर जाएगा। इसको कहते हैं- **'अर्ह ही चिज्ज्योति है'** यानी अर्ह ही चैतन्य ज्योति है।

अर्ह अर्हत सिद्ध। अर्ह साधु मंगलम, अर्ह लोक प्रसिद्ध।।

इसी के लिए यह दोहा है। सुना है कभी कि नहीं सुना? कुछ नहीं सुना, महाराज! ऐसे ही पाँच महीने निकल जाएँगे। बाद में भी पाँच महीने बाद पूछे कुछ सुना है कि नहीं सुना? तब भी ऐसे कहेंगे नहीं सुना महाराज! कुछ नहीं सुना। पढ़ो हमारे साथ में-

अर्ह ही चिज्ज्योति है, अर्ह अर्हत सिद्ध।

अर्ह साधु मंगलम, अर्ह लोक प्रसिद्ध।।

यह दोहा है एक, अर्ह के लिए लिखा हुआ दोहा है। अर्ह ही चित् ज्योति है, उसमें ही सब कुछ है। अरिहन्तों

की ज्योति भी उसी में है, सिद्धों की ज्योति भी उसी में है, साधु भी जिस ज्योति का ध्यान कर रहे हैं वह साधु की भी ज्योति उसी में है। साधु क्या ध्यान करते हैं? सिद्धों का ही ध्यान करते हैं। जो सिद्धों का ध्यान नहीं करते वह साधु होते भी नहीं। इसलिए

अर्ह में साधु हैं अर्ह में अरिहन्त हैं अर्ह में सिद्ध हैं

सब कुछ है, **अर्ह लोक प्रसिद्ध** इसलिए अर्ह लोक में प्रसिद्ध है।

इस अर्ह के अन्दर अरिहन्त से लेकर के साधु तक, जब आप पढ़ते हो 'णमो अरिहन्ताणं' और अन्त में 'णमो लोए सव्वसाहूणं' तो अरिहन्त के अर्हन् शब्द को अरिहन्त कहा जाता है और वह **अरिहन्त का अ से लेकर के साधु का- साहू का ह तक**, अ से ह तक का सारा का सारा समावेश शक्ति रूप में इस **"अर्ह"** बीजाक्षर में हो जाता है और अर्ह इसका नाम है। जब हम ध्यान करते हैं तब ये चीजें प्रस्फुटित होती हैं। अर्ह की चित् ज्योति को ध्यान में लाने से जब हम अर्ह के अक्षरों को ध्यान में रख कर के फिर धीरे-धीरे उसके प्रकाश में, जब हम ध्यान में, अपने ध्यान का विषय बनाते हैं तो वह प्रकाश फिर हमारे अन्दर अपने आप ज्योति के रूप में सामने आ जाता है।

शाश्वत का ध्यान

हमें किसी बाहर की ज्योति का ध्यान करने की जरूरत नहीं पड़ती है। हम उस अर्ह की ज्योति का ध्यान करें जिसमें चैतन्य ही चैतन्य है, **चैतन्य की ही ज्योति** है। चित् ज्योति उसको बोलते हैं। लोग आजकल यह अजीब ज्योति को, अचित्-अचित् ज्योति को अपना ध्यान का विषय बना रहे हैं। यह ज्योति तो बुझ जाने वाली है, हवा से लपलपा जाने वाली है और जो चित् ज्योति होती है वह कितनी भी हवाएँ चल जाएँ? अटल रहने वाली है। एक बार वह जल गई तो बुझने वाली नहीं है। ऐसी **चित् ज्योति का, शाश्वत का ध्यान** किया जाता है, क्षणिक का ध्यान नहीं किया जाता। लोग क्षणिक के ध्यान में लगे हुए हैं, candle की ज्योति शाश्वत नहीं है, क्षणिक है और चित् ज्योति शाश्वत है। इसलिए हमेशा आचार्यों ने कहा...शाश्वत का ध्यान करो, जो eternal है उसको अपने ध्यान का विषय बनाओ। जो बहुत ही जल्दी क्षण भर में नष्ट होने वाला है उसका क्या ध्यान करोगे? आपके ध्यान का विषय जब ऐसी चित् ज्योति बन जाती है, तो वह चित् ज्योति अपने ध्यान से हमारे चित् में भी भासुर होने लग जाती है।

चेतोवासे भवसि च मम स्फारमुद्भासमान-, स्तस्मिन्नंहः कथमिव तमो वस्तुतो वस्तुमीष्टे ।।

आचार्य कह रहे हैं कि ऐसा प्रकाश जब हे भगवन्! हमारे अन्दर आ जाएगा तो फिर वह अन्धकार की वस्तु हमारे अन्दर वस्तुतः रह ही नहीं पाएगी। कोई अन्धकार हमारे अन्दर मानस में, हमारे अन्दर वह अन्धकार रह ही नहीं पाएगा। उस अन्धकार से दूर चलने की बात हर कोई कहता है- **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** सभी स्कूलों में सब जगह यह वैदिक संस्कृति का मूल मंत्र है 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' मुझे तमस से, अन्धकार से, ज्योति की ओर ले चलो। पढ़ते हो न, सबने सुना होगा कभी न कभी। कैसे जाओगे उस ज्योति की ओर?

लिखा तो रहता है किताबों में लिखा मिल जाएगा, पढ़ा दिया जाएगा लेकिन आज तक किसी ने बताया कि क्या **तमस** है और क्या **ज्योति** है?

हम क्षत्रिय थे, व्यापारी क्यों हो गए?

सुन रहे हो अभय कुमार! बहुत बड़ा-बड़ा प्रश्न करते हो, बहुत बड़ी-बड़ी बातें करते हो, **हम क्षत्रिय थे व्यापारी क्यों हो गए?** जो क्षत्रिय थे वह व्यापारी इसलिए हो गए क्योंकि क्षत्रियों ने आत्मविद्या भुला दी, आत्म ज्ञान भुला दिया। आत्म ध्यान की यह जो विद्या थी, इस विद्या को अगर फिर से स्थापित कर दोगे तो आज व्यापारी होकर के तुम भीतर से फिर से क्षत्रिय हो जाओगे। सिर्फ व्यापार में लगे रहोगे तो आत्मा के ज्ञान में रुचि नहीं आएगी। क्षत्रियता का मतलब केवल दूसरे की ही रक्षा करना नहीं होता, क्षत्रियता का मतलब है पाप से **‘छतात पाप त्रायते इति क्षत्रिय’** जो पाप से हमारी रक्षा करे उसका नाम क्षत्रिय है। अगर आज हम दूसरे की रक्षा नहीं कर पा रहे हैं या हमें कोई दूसरा सामने रक्षा के योग्य दिखाई नहीं दे रहा है, तो क्या हम क्षत्रिय नहीं कहलायेंगे? जब कोई हमारे सामने मरता हुआ दिखाई दे और हम उसको बचाएँ तभी हम क्षत्रिय होंगे क्या? क्षत्रिय तो हमारा धर्म है और वह धर्म कब बनता है? जिस समय आपने इस ज्योति रूप सिद्ध भगवान का अपने अन्दर ध्यान किया। अन्धकार से आप, अपने पाप के अन्धकार से अपने आप को बचा लिए, पाप से आपने अपनी रक्षा कर ली, आप भीतर से क्षत्रिय हो गए। सुन रहे हो क्षत्रिय महासभा के लोगों! क्या ध्यान करना है? नाम से क्षत्रिय नहीं बनना, भीतर से क्षत्रिय बनना।

सिद्ध भगवान की ज्योति का हम अपने अन्दर स्मरण करेंगे

चौबीसों तीर्थकर क्षत्रिय थे और उन तीर्थकरों ने हमें जो ज्ञान दिया, जो विद्या दी, वह भी क्षत्रिय बनने के लिए दी। **जो उस विद्या को आत्मसात करेगा वह क्षत्रिय है और जो विद्या को आत्मसात करेगा तो उसके अन्दर से पाप नष्ट होगा। इसलिए अगर आप वास्तव में क्षत्रिय बनना चाहते हो तो ऐसी चैतन्य ज्योति का ध्यान अपने अन्दर करना शुरू कर दो अब।** आज के बाद रोजाना इन सभी क्षत्रिय लोगों का यह कर्तव्य हो जाना चाहिए कि हम रोजाना ऐसे सिद्ध भगवान की ज्योति का हम अपने अन्दर स्मरण करेंगे। वह ज्योति जैसी हमें आज बताई जा रही है, इस ज्योति का हम स्मरण करेंगे। एक ज्योति है, चैतन्य ज्योति है जिसमें सब कुछ दिख रहा है। उस ज्योति का हम स्मरण करें और बस! हम उस ज्योति का नाम क्या बोले? **अर्ह-अर्ह बोले या सिद्ध-सिद्ध बोले, कुछ भी बोल सकते हैं।** इतना काम कर सकोगे? बोलो क्षत्रिय लोगों! बड़े-बड़े काम करने में भी क्षत्रिय पीछे नहीं हटते हैं तो यह छोटा सा काम करने में क्षत्रिय पीछे कैसे हट सकते हैं। करोगे न? आज से आपको कम से कम दो से पाँच मिनट, ज्यादा नहीं, दो से पाँच मिनट, आँख बन्द करके अर्ह-अर्ह बोलते हुए उस चित् ज्योति का ध्यान करना है। कैसे करना है? मैं आज करके ही बताता हूँ क्योंकि theory बहुत हो जाती है practical हो नहीं पाता है।



इस qr code को scan करके गुरु महाराज की आवाज में ध्यान का अनुभव करें

यह प्रकाश की अनुभूति करने का तरीका जो-जो अपनाएगा वही क्षत्रिय पुरुष कहलाएगा। व्यापार करो, चाहे तलवार हाथ में रखो, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह क्षत्रियता जो तीर्थकरों ने हमें सिखाई है वह भीतर से सिखाई है।

अभय कुमार की जिन भक्ति



आज अभय कुमार यहाँ आए हैं और राजा श्रेणिक की कहानी में भी अभय कुमार की यह भूमिका आज से शुरू होती है। क्योंकि **राजा श्रेणिक** के लिए जब **अभय कुमार** मिल गए, उनकी **नन्दश्री** भी घर में आ गई। सुखपूर्वक जब वह अपना जीवन व्यतीत करने लग गए तो बहुत दिनों के बाद में उनके सामने किसी एक **चित्रकार** ने लाकर के एक चित्रपट उनको दिखाया। चित्रपट समझते हो? किसी एक सुन्दर कन्या का चित्र लाकर के उन राजा श्रेणिक को दिखाया गया और उसका चित्र देखकर के वह इतने मोहित हो गए, इतने मुग्ध हो गए कि कहने लगे कि मुझे इस कन्या को जरूर प्राप्त करना है। जब उनके लिए यह भाव आने लगा तो उन्हें पता पड़ा कि यह कन्या किसकी है? पता किया तो यह कन्या **राजा चेटक** की है और राजा चेटक का यह नियम है कि वह कन्या उसी को देंगे जो **जैन धर्मावलम्बी** हो। श्रेणिक के मन में थोड़ी देर के लिए यह भाव आया कि मैं आखिर कैसे इस कन्या को प्राप्त करूँ और उनके मुख पर जब चिन्ता समाहित हो गई तो अभय कुमार ने वह चिन्ता देखी। अभय कुमार ने अपने पिता से कहा कि पिताजी आप चिन्ता नहीं करो, यह कन्या आपके लिए हम लाकर के देंगे। इसके लिए उद्योग हम करेंगे आप चिन्ता नहीं करो। यह उस जमाने की बात है आज के जमाने की नहीं।

अभय कुमार के द्वारा जिन धर्म की प्रभावना

जब अभय कुमार अपने पिता के लिए, उनकी चिन्ता को दूर करने के लिए निकल पड़े तो उन्होंने बहुत सारा राजकोष से सोना-चाँदी, धन-पैसा लेकर के और बहुत सारे सैनिकों को, बहुत सारे सेठों को, अपने साथ में लेकर के प्रस्थान किया और वह उस स्थान तक पहुँचे जहाँ पर राजा चेटक रहते थे। राजा चेटक जहाँ रहते थे, उस स्थान तक पहुँचते-पहुँचते बीच में उन्हें बहुत जगह अपना पड़ाव डालना पड़ा, रुकना पड़ा और जहाँ-जहाँ वह रुकते थे वहाँ-वहाँ पर वह सबके बीच में **जिनेन्द्र भगवान की आराधना** करते हुए जाते थे। उन्होंने पहले से यह माहौल बना दिया था कि सब लोग यहाँ जिनेन्द्र भगवान की आराधना करने वाले हैं, जो राजा चेटक के पास पहुँच रहे हैं और जब राजा चेटक के पास पहुँच गए तो उन्होंने वहाँ पहुँच करके उन राजा चेटक से कहा- हम बहुत दूर से आएँ हैं। व्यापार करने के निमित्त से आएँ हैं और यहाँ पर थोड़ा सा कोई स्थान मिल जाए। आपके द्वारा कोई रहने का अच्छा स्थान मिल जाए तो कुछ दिन यहाँ पर व्यापार के निमित्त से रुकना चाहते हैं। राजा चेटक ने अभय कुमार को देखा, उसके **राजत्व** को देखा और उसके राजकीय योग्यता, रूप-सौन्दर्य, उसको देखा तो समझ लिया कि यह कोई अच्छे घराने का पुत्र है। उसे रहने के लिए अपने ही महल के पास का एक स्थान दे दिया। उस स्थान पर वह रुक कर के रहने लग गए और फिर वहाँ पर उन्होंने एक **चैत्यालय** बनवा लिया जहाँ जिनेन्द्र भगवान की खूब अच्छे ढंग से आराधना करने लग गए। किसलिए हो रही थी आराधना? समझ रहे हो?

राजा चेटक का अभय कुमार की भक्ति से प्रभावित होना

किसलिए हो रही थी आराधना? समझ रहे हो? राजा चेटक को बताने के लिए कि हम जैन धर्म को मानने वाले जैन धर्मावलम्बी हैं और जिनेन्द्र भगवान की भक्ति करने वाले हैं और इस आराधना से इतनी अच्छी आराधना होने लगी कि वहाँ पर सब लोगों में चर्चा होने लगी। धीरे-धीरे राजमहल में राजा के चेटक के यहाँ पर भी चर्चा होने लग गई।

क्या चर्चा होने लग गई?

यह अभयकुमार तो जिनेन्द्र भगवान का ऐसा भक्त है कि इसकी भक्ति के आगे सारे भक्त फीके दिखाई देते हैं और हमेशा जिनेन्द्र भगवान की भक्ति-पूजा में ही तत्पर रहता है। व्यापार के निमित्त से जाता है लेकिन जैसे ही वापस आता है, हमेशा जिनेन्द्र भगवान की पूजा सुबह, दोपहर, शाम चलती रहती है। यहाँ तक कि दोपहर में भी, सामायिक में भी पंच परमेष्ठी का ध्यान करता है, सिद्ध भगवान का ध्यान करता है। ऐसा यह उत्तम पुरुष है और उसको देख कर के सब लोग वहाँ पर उसके माहौल में ढल गए क्योंकि राजा चेटक के यहाँ पर यही माहौल था। राजा चेटक को भी एक बार इच्छा हो गई कि मैं उसके चैत्यालय में दर्शन करने के लिए जाऊँ। चैत्यालय है तुम्हारे यहाँ? **चैत्यालय का मतलब जो कहीं अपने घर में, आलय में किसी भी रूप में जिनेन्द्र भगवान को स्थापित करके वहाँ पर पूजा आदि करने का एक क्रम बन जाता है वह चैत्यालय होता है और ऐसा ही उन्होंने वह चैत्यालय बना कर के वहाँ पर आराधना करने लग गए।** आराधना इतनी अच्छी होनी चाहिए कि राजा को भी देखने का मन हो जाए कि यहाँ पर आराधना करने वाले लोग हैं और राजा चेटक का मन बन गया। उन्होंने जाकर के देखा और वहाँ पर जाकर के देखते हैं तो राजा देख कर के ही आनन्दित हो जाते हैं। इतने सुन्दर भगवान और भक्ति करने का यह इतना अच्छा तरीका और अभय कुमार इतने तल्लीन होकर के भक्ति करते हैं और उनके साथ में जितने भी सेठ लोग आए थे, सब उनके साथ में मिल बैठ कर के भक्ति करते हैं तो राजा चेटक प्रसन्न हो गए। सुन रहे हो? बात अब आगे बढ़ती है। वह बात कैसे आगे बढ़ेगी? क्या बढ़ेगी? वह आपको आगे बताई जाएगी।

जैन धर्म क्षत्रियों का धर्म है

अभी आपको इतना ध्यान रखना है कि यह लोग भी सब क्षत्रिय पुरुष हैं, चाहे राजा श्रेणिक हो, चाहे राजा चेटक हो और सब अगर किसी भी तरह से अपने कुछ समय के लिए धर्म को छोड़ भी दिए हैं तो धीरे-धीरे उन्हें धर्म पर लाने का कोई न कोई निमित्त मिल रहा है मिल जाता है। इसलिए सबके मन के अन्दर यह भावना रहनी चाहिए कि हम **जिनधर्म में दृढ़** रहते हुए, जिनधर्म में जिनेन्द्र भगवान की भक्ति करते हुए, दूसरों को भी उसी ओर आकर्षित करने का प्रयास करें तभी आपके अन्दर का वह भाव ही क्षत्रिय का भाव कहलाएगा। यह **क्षत्रियता** है। आज अगर जैन समाज के लोगों की संख्या कम हुई है, तो किस कारण से हुई है? मैं कहता हूँ जो क्षत्रिय महासभा के लोग हैं, यह भी जैन ही हैं और यह कभी जैन हुआ करते थे। आज इन्होंने अपनी एक अलग जाति बना ली, एक अलग जाति रह गई, यह क्षत्रिय हो गए। जैनत्व क्या कहलाता है? पहले के जो लोग थे, जिन्होंने आस-पास के माहौल से डर कर के, किसी भी राजा के आतंक से डर करके, किसी भी तरह से अपने भीतर के धर्म को छोड़ दिया तो अन्य-अन्य तरह से वह परिवर्तित हो गए।

जैन धर्म हमेशा एक आचार संहिता के साथ चलता है। आप जानते हो अगर कोई जैन धर्म का अवलम्बन लेने वाला हो, **जैन धर्मावलम्बी** हो और वह मांस खाए, शराब पिए तो लोग उसको समाज में स्थान नहीं देते, आज भी नहीं देते हैं। इसी से जैन धर्म की संख्या कम होती चली गई,

जैन धर्मावलम्बियों की संख्या कम होने का कारण

लाखों करोड़ों की संख्या में रहने वाले जैन अपनी संख्या में कमी क्यों कर लिए? क्योंकि कभी न कभी, किन्हीं न किन्हीं परिस्थितियों में आकर के उन्होंने अपने आचरण को छोड़ दिया। यह कठिन लगता है। एक नियम के साथ जिन्दगी निकालना कठिन लगता है। भाई! हम नहीं खाएँगे बात अलग है लेकिन अगर कभी जरूरत पड़ गई तो!!!! लोग कहते थे तो फिर तो जाओ यहाँ से। इस कारण से जैन धर्म के लोगों की संख्या कम होती चली गई। अनेक राजाओं के आतंकों के कारण से भी संख्या कम हुई। कुछ लोगों ने अपने आचरण को इस तरीके से मिटा डाला, परिवर्तित कर दिया कि उन्होंने अपने अन्दर जैनत्व के कोई लक्षण रखे ही नहीं। लेकिन फिर भी खून है, **क्षत्रिय वंश** का अगर अंश है, तो वह कहीं न कहीं आदमी को उजागर कहीं न कभी हो ही जाता है और कभी न कभी उन्हें ऐसे निमित्त मिल जाते हैं जो मुनि महाराज के सामने आकर के बैठ जाते हैं, उपदेश सुनने लग जाते हैं और इस तरह के निमित्तों से उनके अन्दर वह फिर क्षत्रियता जागने लग जाती है। समझ आ रहा है? आज अगर देखा जाए तो दुनिया के अन्दर, भारत के अन्दर बहुसंख्यक समाज मांसाहारी होती जा रही है और क्षत्रियों का भी उसमें नाम आए तो कोई बड़ी बात नहीं है। **शाकाहारी लोग** बहुत कम रह गए हैं और मैं कह रहा हूँ कि जितने शाकाहारी लोग हैं, शुद्ध सात्विक लोग हैं, वह भीतर से आज भी क्षत्रिय हैं क्योंकि दूसरे का नष्ट करके, दूसरे को मार करके वह अपना जीवन, अपना पेट नहीं पाल रहे हैं। सही मायने में **क्षत्रिय वह कहलाते हैं जो माँसाहार का त्याग रखते हैं**, अण्डा नहीं खाते हैं, शराब नहीं पीते हैं और ऐसे क्षत्रियपना अगर सब लोगों के अन्दर रहें तो हम गर्व से कह सकेंगे जैन भी क्षत्रिय हैं और क्षत्रिय महासभा के लोग भी क्षत्रिय हैं। आप लोगों के घरानों में तो कुछ नहीं होता न ऐसा! बोलो! माँस खाया जाता है? अण्डा खाया जाता है? बोल नहीं रहे, होता है मतलब, विचार कर लेना। आज से अपने अन्दर क्षत्रियता का जगाने का **पुरुषार्थ** करना और भाव बन जाए तो कभी भी यह महासभा इस धर्म सभा में प्रवेश कर सकती है अपने परिवारों के साथ में। कभी भी आप अपने परिवारों को लेकर के आ जाना कि महाराज आज हम नियम लेते हैं कि हम और हमारे परिवार में कभी भी माँस आज के बाद में नहीं खाया जाएगा। उस दिन आपका सम्मान इस मंच से बहुत अच्छे ढंग से होगा।

महावीर भगवान की जय।

31. सिद्ध भगवान की महिमा

तादृक्-सम्पत्-समेता, विविध-नय-तपः-संयम-ज्ञान-दृष्टि-
चर्या-सिद्धाः समन्तात्, प्रवितत्-यशसो, विश्वदेवाधि-देवाः।
भूता भव्या भवन्तः, सकल-जगति ये, स्तूयमाना विशिष्टैस्,
तान् सर्वान् नौम्यन्तान्, निजिगमिषुरं तत्स्वरूपं त्रिसन्ध्यम्। 9।

विभिन्न सम्पत्तियों से सहित सिद्ध भगवान



यह अन्तिम छंद है। आचार्य कहते हैं... 'तादृक् सम्पत् समेता' 'तादृक्' अर्थात् उस तरह की 'सम्पत्' अर्थात् सम्पत्तियों से समेत वह भगवान हैं, युक्त हैं यानि जिन सम्पत्तियों का, जिन गुणों का वर्णन ऊपर के छंदों में किया गया है, उन सम्पत्तियों से सहित भगवान हैं। वह भगवान जब इन सम्पत्तियों से सहित हैं तो वह भी कुछ थोड़ा-थोड़ा सा, अलग-अलग रूपों में, अलग-अलग नामों से भी हम उन्हें जान सकते हैं, देख सकते हैं। 'विविध-नय-तपः संयम-ज्ञान-दृष्टि-चर्या सिद्धाः' अर्थात् वे जो भगवान सिद्ध हुए हैं वे अलग-अलग तरह की साधना से सिद्ध हुए हैं। जिस साधना के बारे में आपसे पिछले दिनों में चर्चा की है, जब उस साधना का कोई फल मिल जाता है तो उस साधना का नाम भी लिया जाता है कि किस साधना से इस फल की प्राप्ति हुई है। यद्यपि फल तो एक ही रहता है लेकिन उसको प्राप्त करने के तरीके मनुष्य के जीवन में कई हो सकते हैं और जो प्राप्त करने के तरीके होते हैं, उन्हीं को साधना कहते हैं।

विशेष रूप से नयों द्वारा अपने ध्येय को प्राप्त करना नय सिद्ध कहा जाता है

सामान्यतया सभी लोग यह जानते हैं कि सिद्ध भगवान एक जैसे हैं, एक समान हैं, उनमें कोई अन्तर नहीं होता है और कोई अन्तर उनमें किया भी नहीं जाता। लेकिन जब हम उनके पूर्व जीवन की कुछ साधना को देखते हैं तो उस साधना में किसी न किसी चीज की जो विशेषता रहती है, उस विशेषता से भी हम उन सिद्धों का कुछ परिचय कर पाते हैं। **आचार्य कहते हैं...अनेक सिद्ध ऐसे होते हैं जो अनेक प्रकार के नयों के माध्यम से अपने जीवन में साधना किए हैं।** नय, साधना का एक दृष्टिकोण है, जिसे हम व्यवहार नय कहते हैं, निश्चय नय कहते हैं। इन नयों के ज्ञान के माध्यम से भी ध्यान आदि किया जाता है। इस तरह के ज्ञान से भी साधना करके भी सिद्धि प्राप्त की जाती है, इसे कहते हैं...नय सिद्ध। क्या बोलते हैं? नयों से जो सिद्ध हुए हैं।

विशिष्टता के आधार पर सिद्धों में भेद

सभी सिद्ध भगवान अपने जीवन में कुछ न कुछ विशिष्ट किए हुए होते हैं। कोई ज्ञान में विशिष्टता हासिल

करता है, कोई संयम में विशिष्टता हासिल करता है, कोई तप में विशिष्टता हासिल करता है। **यह ज्ञान की विशिष्टता से जो सिद्ध हुए हैं उस ज्ञान में भी व्यवहार नय आता है, निश्चय नय आता है और व्यवहार और निश्चय इन दोनों नयों से भी सिद्ध हुआ जाता है।** यह ध्यान में रहे, नय अनेक के प्रकार के होते हैं और उन नयों से जो अपने जीवन में साधना की है, उन नयों पर भी विशेष रूप से ध्यान देकर, अपने ध्येय को प्राप्त किए, उन्हें नय सिद्ध कहा जाता है। एकान्त रूप से ऐसा नहीं समझना चाहिए कि निश्चय नय की मुख्यता से ही ध्यान होता है, व्यवहार नय से भी ध्यान होता है। व्यवहार नय के माध्यम से भी ध्यान किया जाता है और दोनों प्रकार के अभिप्रायों से ध्यान करके जो सिद्ध होते हैं उन्हें नय सिद्ध कहा जाता है।

पिछली पर्याय की अपेक्षा से सिद्ध भगवान में भेद सम्भव होता है

सिद्ध का मतलब है...अपनी आत्मिक सम्पत्ति को उपलब्ध हो जाना और यह सम्पत्ति उनकी पिछली साधना से उन्हें प्राप्त हुई। किसी ने अपने जीवन में विशेष-विशेष प्रकार के तप किये, उस तप से उन्होंने अपनी आत्मा को शुद्ध बनाया उन्हें **तप सिद्ध** कहा जाएगा। अनेक प्रकार से अपने शरीर को तपाना, अनेक प्रकार के उपवास, महाउपवास आदि करके शरीर के माध्यम से तपस्या करना और उससे सिद्ध होना वे तप सिद्ध कहलाते हैं। इसी तरह से कुछ **संयम सिद्ध** भी होते हैं जिन्होंने अपने जीवन में कुछ संयम की साधना की हो, विशिष्ट रूप से कुछ संयम अपनाया हो, जो संयम के माध्यम से अपनी आत्मा को उपलब्ध हुए उन्हें संयम सिद्ध कहा जाता है। जिन्होंने अपने जीवन में केवल ज्ञाता-दृष्टा भाव की प्रधानता रखी हो, ज्ञान-दर्शन स्वभाव की प्रधानता रखी हो वे **ज्ञान-दृष्टि सिद्ध** कहलाते हैं। जिन्होंने अपने जीवन में कुछ विशिष्ट प्रकार के आचरण होते हैं, चर्याएँ होती हैं, उनकी प्रधानता रखी हो उन्हें **चर्या सिद्ध** कहा जाता है। सिद्धों के भी हम अनेक भेद, अनेक रूप, पूर्व की अपेक्षा से बना लेते हैं और पूर्व में वे क्या थे? किस तरह से उन्होंने साधना की? उस पर निर्भर करता है और उसी के माध्यम से हम उन सिद्धों के बीच में भी कुछ भेद कर लेते हैं। वैसे तो सिद्धों में कोई भेद नहीं होता है। जो शुद्ध हो गया अब उसमें कोई भेद नहीं है। अब उसमें हम भेद कैसे करें? पिछली पर्याय की अपेक्षा से वह भेद सम्भव होता है। यह कहाँ से आये? क्या करके आये? यहाँ पर किस विशेषता के साथ में आये? यह बात जब ज्ञान में आती है, तो उस ज्ञान के माध्यम से भी उन सिद्धों में विशेषता आ जाती है।

प्रतिदिन प्रवचन सुनने से भी कुछ सिद्धियाँ होती हैं

लोग प्रवचन सभा में आते हैं। अनेक-अनेक तरह के लोग आते हैं और प्रवचन सभा में कुछ तो सामान्य लोग रहते हैं जो प्रतिदिन उपस्थित रहते हैं और कुछ विशिष्ट लोग होते हैं जो विशिष्ट अतिथि के रूप में आते हैं और कुछ ऐसे विशिष्ट लोग होते हैं जो किसी कार्यवश, किसी प्रयोजन वश ही आते हैं और अगर कोई प्रयोजन न हो तो उन्हें आना नहीं होता है। ऐसे तीन तरह के लोग सभा में उपस्थित रहते हैं। एक वह लोग हैं, जो प्रतिदिन आते हैं। सिद्ध भक्ति जब से चल रही है तब से वह सुन रहे हैं, पढ़ रहे हैं, प्रतिदिन उसका अभ्यास कर रहे हैं, चिन्तन-मनन भी चल रहा है। एक वे लोग हैं, जो प्रतिदिन अतिथि के रूप में अलग-अलग रूप से, नए-नए बदल-बदल करके आते हैं और कुछ ऐसे विशिष्ट लोग हैं जिन्हें कभी कोई प्रयोजन होता है तभी आते हैं। आज कुछ ऐसे विशिष्ट लोग भी यहाँ बैठे हैं। यद्यपि भगवान की पूजा करने रोजाना

आते हैं, दर्शन करने रोजाना आते हैं लेकिन प्रवचन सुनने के लिए आज आकर उपस्थित हुए हैं। भगवान की वेदी बनाना, भगवान का मन्दिर बनाना, भगवान के मन्दिर के लिए जमीन देना, बड़े-बड़े काम करने में अग्रणी रहते हैं लेकिन प्रवचन सुनने के लिए भी कभी-कभी उन्हें आना पड़ता है। वह काम आज हो पाया है। धन्यवाद के पात्र होते तो हैं ऐसे लोग। **प्रवचन भी रोजाना सुनने योग्य चीज होती है क्योंकि उसके माध्यम से भी कुछ सिद्धियाँ होती हैं और सबसे अच्छी सिद्धि की बात यह है कि अगर सिद्ध भक्ति का समापन हो रहा हो और कोई नया कार्य सिद्ध हो रहा हो तो समझ लेना चाहिए कि सिद्ध भक्ति आपके लिए फलित हो गई है।** देर से आए, दुरुस्त आए। कुछ लोग अगर चाहे तो रोजाना आकर भी प्रवचन का लाभ ले सकते हैं, उपदेशों का लाभ ले सकते हैं। दूरियाँ कभी भी बाधक नहीं होती हैं। केवल हमारे मन में एक interest होना चाहिए और जब interest होता है तो दूरी भी कम हो जाती है और time भी निकल कर आ जाता है, सिर्फ interest हमारे मन के अन्दर आना चाहिए। जिस तरह से हम अन्य-अन्य कार्यों में interest लेते हैं ऐसे ही समयवशरणा सभा में बैठना भी एक बहुत अच्छा कार्य माना जाता है इसमें भी interest बराबर का होना चाहिए।

सिद्ध पुरुषों की आराधना करने से हमारे ठाठ अपने आप बढ़ने लग जाते हैं

यह भी अपने आप में जब हम देखते हैं कि हम यहाँ बैठे हैं, सभा में लोग बैठे हैं तो यहाँ सामान्य से सब सभासद हैं लेकिन अभिप्राय की अपेक्षा से। पूर्व पर्याय की अपेक्षा से देखेंगे तो सबकी विशेषता अपने आप में अलग-अलग नजर आएगी। ठीक इसी तरह से सिद्ध भगवान हैं। जो आत्माएँ शुद्ध हो गई हैं, pure हो गई हैं, उनमें अब कोई अन्तर नहीं रहता है। वह अपने आप में शुद्ध हैं, सिद्ध हैं वे सब एक समान हैं। लेकिन कौन कहाँ से आया? कोई कहेगा हम प्रेमपुरी से आए। प्रेमनगर है? यह प्रेमपुरी मुझे मुजफ्फरनगर वाली याद रहती है। एक मुजफ्फरनगर में प्रेमपुरी थी, यह प्रेमनगर है। प्रेमपुरी कहो, प्रेमनगर कहो एक ही बात है और अलग-अलग कौन सी पुष्परज colony है? अलग-अलग तरीके के मोहल्ले हैं और अलग-अलग तरीके के अतिथि भी हैं। आज यहाँ पर कृषि उपज व्यापारी संघ के लोग उपस्थित हुए अतिथि के रूप में। यह पूर्व पर्याय की अपेक्षा से, अगर हम अलग-अलग दृष्टिकोण से देखें कि यह कहाँ से आये तो यह हमें भेद दिखाई देता है। राजा श्रेणिक जो कल थे वह आज नहीं हैं, यह भी बदल गए हैं। यह कौन से परिवार के हैं? यह आप जब इनका चेहरा देखते हो तो आपको याद आ जाता है, आज यह राजा श्रेणिक बैठे हैं। यह वही परिवार है, जिन्होंने सिद्ध चक्र विधान प्रारम्भ किया था और जब से सिद्ध चक्र विधान प्रारम्भ किया था तभी से सिद्ध भक्ति शुरू हुई थी और एक महीने से ज्यादा होने के बाद लगभग चार तारीख से शुरू हुआ था और आज आठ तारीख हो गई है और तब से यह सिद्ध भक्ति चल रही है। सिद्ध चक्र विधान के parallel शुरू हुई थी और यह सिद्ध भक्ति आज हम चाहें तो इसको पूर्ण कर सकते हैं। कर दें? और कुछ शुरू हो जाएगा अब आखिर चार ही तो line हैं। ज्यादा से ज्यादा चार दिन निकालेंगे और चाहे तो एक दिन में भी पूरा कर सकते हैं और सबसे अच्छा बात यही है कि आज बड़ा अच्छा सा दिन लग रहा है। सिद्ध चक्र विधान करने वाले भी आज उपस्थित हुए हैं, राजा श्रेणिक के रूप में उनका परिवार। उनको भी उनका सिद्ध चक्र आज उन्हें याद आ रहा होगा कि देखो सिद्ध भक्ति के शुरुआत में आए थे और समापन में आ गए तो हमारी सिद्ध भक्ति अभी तक भी चल रही है। एक नया कार्य लेकर कुछ लोग सामने और आने वाले हैं। उनके लिए भी कुछ सिद्धियाँ होगी। इसके लिए भी यह सिद्ध भक्ति समापन के रूप में अच्छा फल देने वाली होगी।

आज अष्टमी का दिन है, आठ ही तारीख है, अष्टमी ही तिथि है। आठ जो number होता है, वह ठाठ का number होता है। ठाठ! आज जो आप काम करेंगे, आज जो आप announce करेंगे वह ठाठ का काम होगा, ठाठ का announce होगा। महीना भी आठवाँ है और आठ गुणों से युक्त **सिद्ध भगवान की भक्ति भी आज निश्चित हो रही है, पूर्ण हो रही है**, यह सब आपके लिए ठाठ की बातें हैं। आपके पुण्य उदय आचार्य गुरुदेव की कृपा से इतने आ रहे हैं, इतने उदय में हो रहे हैं कि आपके आगे आने वाले समय में ठाठ ही ठाठ होने वाले हैं। यह आप सोच कर रखो कि यह ठाठ आगे कैसे बढ़ते चले जाते हैं। ठाठ समझते ही न? ठाठ-बाट। कैसे अच्छा बनता है ठाठ-बाट? जिन्होंने अपने जीवन में ऊँचाइयाँ प्राप्त की हैं, जिन्होंने अपने जीवन में पुरुषार्थ करके, तपस्याएँ करके, ऐसे सिद्धत्व को प्राप्त किया है। ऐसे महापुरुषों की, सिद्ध पुरुषों की अगर हम आराधना भी करते हैं, उनका नाम लेते हैं, उनका नाम सुनते हैं तो उससे भी हमारे ठाठ अपने आप बढ़ने लग जाते हैं।

सिद्ध भगवान का यश हमेशा बना रहता है

जो महान होते हैं और बड़े होते हैं, उनका नाम स्मरण भी हमारे लिए बहुत ऊँचाइयाँ देने वाला होता है। इसलिए यह सिद्ध भक्ति प्रारम्भ हुई थी और इस सिद्ध भक्ति का यह क्रम निरन्तर चल रहा है। आज हम देख रहे हैं कि सिद्ध भगवान अपनी अनेक सम्पत्तियों से सहित होकर अपने उस स्थान पर विद्यमान हैं जहाँ पर हम उन्हें यहाँ पर भी बैठे-बैठे देख पाते हैं। ऐसे सिद्धों का जब हम सब रूप से गुणगान करते हैं तो आचार्य कहते हैं... **‘प्रवितत् यशसः विश्वदेवाधि देवाः’** इनका यश बहुत फैला हुआ होता है। **यह यश किसका फैलता है? और यह यश हमेशा क्यों बना रहता है? आचार्य कहते हैं... इसमें किसी कर्म का हाथ नहीं है। यह ऐसे पुरुषार्थ का फल है, जिसके कारण से उन सिद्धों ने एक बार जो उपलब्धि प्राप्त कर ली है, उस उपलब्धि को प्राप्त होने के बाद में उनका यश हमेशा बना रहता है।** भगवान महावीर स्वामी कब हुए? आदिनाथ भगवान कब हुए? भगवान राम कब हुए? लेकिन यह सब सिद्ध पुरुष बन गए और सिद्ध होने के बाद आज भी इनका नाम लिया जाता है। इनका यश करोड़ों-करोड़ों वर्ष बीतने के बावजूद भी, असंख्यात वर्ष बीतने के बावजूद भी ज्यों का त्यों चलता रहता है क्योंकि ये क्या बन गए? सिद्ध बन गए।

सिद्ध पुरुषों का युगों-युगों तक यशगान

सिद्धों का यश हमेशा बना रहता है। हम लोगों का यश हमेशा नहीं रहेगा, सिद्धों का यश हमेशा रहता है। हम कितने भी बड़े-बड़े काम करें लेकिन हमारे गुणगान करने वाली दुनिया में आगे आने वाली पीढ़ी हमें जाने या न जाने कोई कह नहीं सकते। आप देख लो आपके पूर्वज कितने बड़े-बड़े काम करके चले जाते हैं। कितने लोग उनको याद करते हैं? कितने लोग उनको जानते हैं कि यह मन्दिर किसने बनाया? यह वेदियाँ किसने बनायीं? लेकिन जिन लोगों की स्मरण रहता है, वह स्मरण मात्र ही कर पाते हैं। कोई उनका यश गान बहुत अच्छे रूप में दुनिया में फैलता हो, समाज में फैलता हो, ऐसा कम हो पाता है और होता है तो वह कब तक होता है? जब तक जीव रहता है तब तक उसका यशगान रहता है। संसार में सब लोगों के लिए ज्यादातर यही रहता है। **जीव की उपस्थिति में ही वह यशगान रहता है और चले जाने के बाद अगर उनके कोई कार्य कलाप होंगे तो वह याद कर लिए जाएँगे। कुछ सालों तक उनका भी यशगान चल**

सकता है लेकिन युगों-युगों तक यशगान, काल बीतने के बावजूद भी यशगान होना, यह केवल और केवल सिद्ध पुरुषों का होता है। काल व्यतीत हो जाएँगे। चतुर्थ काल व्यतीत हो गया, पंचम काल आ गया। पंचम काल व्यतीत हो जाएगा, आगे आने वाले अन्य कालों में भी उनका नाम रहेगा। सिद्ध भगवन्त हमेशा स्मरण में लाए जाते हैं और उनका वह स्मरण करना ही हमारे लिए भी यश का कारण बन जाता है।

सिद्ध भगवन्त का स्मरण ही लोकयश का कारण

आचार्य कहते हैं...सिद्ध भगवानों का स्मरण किया करो क्योंकि वह सबसे बड़े यशस्वी हैं। यश को धारण करने वाले हैं और उनका अगर गुणगान करोगे, उनका अगर स्मरण करोगे तो तुम्हारा भी यश बढ़ने लग जाएगा। जो जिन गुणों की प्राप्ति करना चाहता है, उन गुणों वाले लोगों के पास में पहुँचे। यश की प्राप्ति करना चाहते हो, लोक में अपना नाम रखना चाहते हो तो सिद्ध भगवन्तों का स्मरण करते रहो, यशस्वी पुरुषों का स्मरण करते रहो। केवल उनके स्मरण मात्र से भी आपके अन्दर कुछ यशोगान होने की क्षमता आने लग जाएगी और इसीलिए आचार्य यहाँ कहते हैं... 'प्रवितत यशसो' जिनका यश फैला रहता है। जब भी हम भक्ति करते हैं तो उसमें अतीत काल में भी अनन्त जो सिद्ध हो गए हैं, उनको भी स्मरण किया जाता है... 'अतीदा णागद वड्डमाण कालत्तय सिद्धाणं' अर्थात् अतीत के भी सिद्ध, वर्तमान में हो रहे सिद्ध और अनागत काल में भी जो सिद्ध होंगे उनको भी हम आज बैठ कर पहले से ही स्मरण कर लेते हैं। यह स्मरण करना अपने आप में बताता है कि सिद्धों का यश सबसे बड़ा यश होता है। इसलिए सिद्ध भगवन्तों को स्मरण करना चाहिए। यशोगान करने से ही आपके अन्दर भी यश को प्राप्त करने की गुणवत्ता आती है और उस यशोगान के माध्यम से ही लोग आपको बाद में जानते हैं। इसलिए जो लोग भी अपना यश हमेशा के लिए बनाए रखना चाहते हैं, उन्हें सिद्ध भगवन्तों के मार्ग पर चलना प्रारम्भ करना चाहिए।

तपस्या का मार्ग ही मोक्ष का मार्ग

कौन सा मार्ग है यह? यह मोक्ष का मार्ग कहलाता है। एक श्रावक का मार्ग होता है और एक साधु का मार्ग होता है। **श्रावक का मार्ग मुख्य रूप से दान का मार्ग होता है, पूजा का मार्ग होता है और साधु का मार्ग मोक्ष का मार्ग होता है, वह तपस्या का मार्ग होता है, वह सिद्ध गति को प्राप्त कराने वाला मार्ग होता है।** वह मार्ग की प्राप्ति साधु के लिए जब होती है तो उससे पूर्व में भी वह श्रावक के रूप में अनेक तरह से दान, पूजा आदि लाभ के पुण्य से ही उस फल को प्राप्त करता है। एक अच्छा श्रावक ही एक अच्छा साधु बनता है। इसलिए यह श्रावकपने में जो आप दान, पूजा आदि कर रहे हो, यह सब आपके लिए फलित होगा और यह सब फल आपके लिए किसी न किसी रूप में अगर आप मोक्ष मार्ग के लिए करते हैं, निर्ग्रन्थ वीतराग भगवान के लिए करते हैं, गुरुओं के लिए करते हैं तो आपको भी इसी मोक्ष मार्ग की प्राप्ति इसी पुण्य के फल से धीमे-धीमे होने लग जाती है। **ऐसा यह मोक्ष मार्ग जिसे हम सिद्धि का मार्ग कहते हैं। यह सिद्ध भगवन्तों का मार्ग है और इस मार्ग पर चलने वाले जो लोग होते हैं जब वह अपनी मंजिल तक पहुँच जाते हैं तो हम उन्हें सिद्ध भगवान कहते हैं।** सिद्ध बनने के बाद भी उनका यश फैला रहता है। न उनके पास में इन्द्रियाँ हैं, न शरीर है लेकिन अब उनका यश हमेशा के लिए बना रहेगा और हमेशा उनकी गिनती श्रेष्ठ परमेष्ठियों में आयेगी।

‘त्रिसंध्यम’ अनन्त सिद्ध भगवान की भक्ति करनी चाहिए

णमो सिद्धाणं ऐसे सिद्ध पुरुषों का अगर आप हमेशा स्मरण करते हैं तो आपके अन्दर भी इस तरह से यशोगान होने की क्षमता आने लग जाएगी। भगवान का स्मरण, भगवान की पूजा, भगवान की भक्ति हमेशा करने के लिए कहा गया है। इसलिए आचार्य यहाँ कहते हैं कि ऐसे भगवान की भक्ति **‘त्रिसंध्यम’** मतलब तीनों संध्याओं में करनी चाहिए। तीन सन्ध्याएँ कब आती हैं? एक सन्ध्या होती है- सुबह की, एक सन्ध्या होती है- दोपहर की और एक सन्ध्या होती है- शाम की। तीनों सन्ध्याओं में सिद्ध भगवान का स्मरण करना चाहिए और ऐसे सिद्ध भगवान कितने हैं? **‘तान् सर्वान् नौमि अनन्तान्’** कितने हैं? अनन्तान्। उन अनन्त सिद्ध भगवन्तों को मैं नमस्कार करता हूँ। **‘निजिग-मिषु-रं’** यानि मैं भी शीघ्र ही उन सिद्धों की ओर जाने की इच्छा करता हूँ। मैं भी उसी पथ पर चलने की इच्छा करता हूँ। मैं भी सिद्ध बनने की इच्छा करता हूँ। ऐसे स्वयं आचार्य पूज्यपाद महाराज कहते हैं...मैं भी उन सिद्ध बनने की इच्छा करते हुए तीनों संध्याओं में हम सिद्ध भगवन्तों को नमस्कार करते हैं। जो इन अनेक-अनेक गुणों से सुशोभित हैं, ऐसे सिद्ध भगवन्तों को हम अगर किसी भी तरीके से नमस्कार करते हुए, उनके गुणों को ध्यान में रखते हुए, अगर हम उनके स्वरूप का स्मरण कर लेते हैं तो वह क्षणिक स्मरण भी हमारे लिए बहुत लाभदायक हो सकता है।

सिद्ध भगवान ज्योति स्वरूप हैं

कल आपको बताया था सिद्ध भगवान प्रकाश से भरे हुए हैं। सुना था कल प्रेमपुरी वालों ने? नही सुना होगा प्रेमनगर वालों ने क्योंकि ये आज ही आये हैं पहली बार, ऐसा लग रहा है। रोज आते हो? कुछ लोग रोज आते हैं, कुछ तो आज विशेष रूप से invited हैं। आपके मन में यह भाव आना चाहिए कि यह शहर एक है और इस शहर में कोई बहुत बड़ी-बड़ी दूरियाँ नहीं हैं और यहाँ पर रहने वाले सभी लोग आपस में हिल-मिल करके घुल-मिल करके रहते हैं तो हमें प्रवचन सभा में भी रोजाना उपस्थित होकर भगवान के समव-शरण में आने का एक भाव रखना चाहिए। यह भाव भी आपका आज से अब बरकरार होना चाहिए। समय जाता है, निकल जाता है लेकिन इन्हीं समयों में अगर हम अपने अन्दर कोई विशुद्धि बढ़ा लेते हैं, तो **वही विशुद्धि हमारे काम में आती है। हर कार्य हमारा विशुद्धि के लिए होता है और अगर वह विशुद्धि हमारी सिद्ध भगवन्तों के स्मरण से बढ़ती है तो हमें जरूर बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए।** कल आपसे कहा था भगवान कैसे हैं? ज्योति पुँज हैं, ज्योति रूप हैं और जब इस ज्योति की बात की जाती है, तो दुनिया में इस प्रकाश को लेकर, ज्योति को लेकर तरह-तरह की भ्रामक धारणाएँ भी आ जाती हैं। आपको मालूम है? जहाँ कहीं पर भी प्रकाश दिखाई देता है, जहाँ कहीं पर भी कुछ हमें पदार्थ दिखाई देते हैं, लोगों ने कल्पना की है कि हर जगह पर ईश्वर विद्यमान है। हर जगह पर हमें जो प्रकाश दिखाई दे रहा है, यह ईश्वर का प्रकाश है। लौकिकता में इस तरह की कल्पनाएँ बहुत जोर-शोर से चलती हैं। कल आपको बताया था कि लोग ज्योति का भी ध्यान करते हैं और वह ज्योति इस तरह से बढ़ती चली जाती है कि लोग ऐसा भी मानते हैं कि इस दुनिया में सब कुछ ईश्वर के द्वारा बनाया हुआ है। सब कुछ भगवान ही कर रहा है और भगवान का नूर ही इस दुनिया में फैला हुआ है। इसे क्या बोलते हैं? ईश्वर का नूर कहते हैं। **नूर जानते हो?** नूर का मतलब एक ऐसा प्रकाश जो सबको प्रभावित करता है और ऐसा प्रकाश इस दुनिया में अगर फैल रहा है तो किसका? ईश्वर का। क्या ईश्वर इस प्रकाश को फैलाने में मदद करता है या ईश्वर खुद प्रकाश रूप हो

जाता है?

प्रभु का प्रकाश ज्ञान से भरने वाला प्रकाश

सिद्ध भगवान को ईश्वर समझने के बाद में आपकी धारणाएँ अब बदल जानी चाहिए। यह प्रकाश ईश्वर का नहीं है, यह प्रकाश तो इस electric light का है। यह प्रकाश जो हमें sunlight का दिखाई दे रहा है, वह sun का प्रकाश है लेकिन जब हम sun को भी ईश्वर मानने लग जाते हैं, moon को भी ईश्वर मानने लग जाते हैं तो फिर हमें हर जगह पर **ईश्वर का ही प्रकाश दिखाई देने लग जाता है**। ईश्वर ही हमें कर्ता नजर आने लग जाता है। ईश्वर का ही हमें नूर जगह-जगह पर दिखाई देने लग जाता है लेकिन वास्तव में ईश्वर जिस नूर से भरा हुआ है, वह तो लोक के अग्रभाग पर सदा बैठा रहता है। वह अपना प्रकाश उन्हीं के लिए भेजता है जो उसको याद करते हैं, जो उसको स्मरण में लाते हैं। वह यह प्रकाश नहीं है, जो आपको दिखाई दे रहा है। यह sunlight, moonlight यह electric cfl की light. यह light उस ईश्वर का प्रकाश नहीं है। यह तो पौद्गलिक प्रकाश है। वह प्रकाश जिसका स्मरण करते ही आप ज्ञान से भर जाओ और आपको लगे कि हाँ! मेरे अन्दर भी ज्ञान प्रकाश आ गया है, उसे कहते हैं...प्रभु का प्रकाश हमारे अन्दर आने लगा लेकिन वह प्रकाश केवल प्रभु को स्मरण करने से आयेगा।

सिद्ध भगवान पूर्णता प्राप्त करने पर कर्ता नहीं रहते

लोग कहते हैं ईश्वर ने दुनिया बनायी। दुनिया के अन्दर कण-कण में ईश्वर विद्यमान है। कण-कण में उसने प्रकाश भर रखा है। यह गगन, यह चमन सब कुछ ईश्वर ने बनाये हैं और यह सब ईश्वर की कृति है। लेकिन ईश्वर अपने आप में कैसा है? शुद्ध है, सिद्ध है और जो सिद्ध हो जाता है वह कभी भी कोई भी कार्य फिर करता नहीं है। **जो एक बार अपने आप में पूर्ण हो गया फिर उसे कोई काम करने की आवश्यकता नहीं रह जाती है। इसलिए जो सिद्ध बन गया, जो पूर्ण रूप से प्रकाशमान हो गया, वह कभी फिर दूसरा कार्य नहीं करेगा।** जो कार्य किया जा रहा है वह अधूरेपन का प्रतीक होता है। जब तक आप कोई काम कर रहे हैं अर्थात् आप अधूरे हैं और जब आप किसी कार्य से निवृत्ति ले लो हमें अब कोई काम करना ही नहीं है तब आप पूर्ण कहलाते हैं। **पूर्णता आने पर व्यक्ति फिर कोई कार्य नहीं करता।** कुछ बनाता नहीं है, कुछ सजाता नहीं है, वह अपने आप में लीन होकर रहता है, इसका नाम पूर्णता है। जिन सिद्ध भगवन्तों की, जैन दर्शन में तीर्थंकरों ने हमें ज्ञान देकर उस ओर दृष्टि हमारी लगायी है, वह सिद्ध भगवान, वह ईश्वर इस दुनिया को बनाते नहीं हैं। इस चमन को, इस गगन को सजाते नहीं हैं। यह गगन, यह चमन सब अपने आप बना हुआ है और यह सब अपने आप में परिणमन करने के स्वभाव वाला है। ईश्वर का स्वभाव ईश्वर में परिणमन कर रहा है, प्रकृति का स्वभाव प्रकृति में परिणमन कर रहा है। लेकिन हम अपनी अज्ञानता से इस प्रकृति के परिणमन में, ईश्वर के परिणमन का आरोप कर देते हैं, तो यहीं पर हम ईश्वर को कर्ता बना कर ईश्वर के प्रति अपनी धारणा गलत बना लेते हैं।

लोक के अग्रभाग पर विराजमान सिद्ध भगवान का प्रकाश केवल उनके लिए ही है

सिद्ध भगवान प्रकाश से भरे हुए हैं, नूर से भरे हुए हैं, ज्ञान से भरे हुए हैं लेकिन वह अपना प्रकाश यहाँ पर फैला नहीं रहे हैं। उनका प्रकाश केवल उनके लिए काम में आएगा और अगर हम स्मरण करेंगे तो हमारे लिए काम में आ जाएगा। बाकी यह जो दुनिया में दिखाई दे रहा है यह प्रकाश, प्रभु का प्रकाश नहीं है। इसलिए अगर आपको ऐसे ईश्वर को, ऐसे सिद्ध भगवान को सही ढंग से मानने का भाव आए तो आप इन पंक्तियों को जरूर पढ़ना जो पंक्तियाँ हम आपको अब सुनाने जा रहे हैं।

हर घड़ी परिणमन जानता देखता, हाँ! वही है नूर।

नूर कहाँ है? जो हर घड़ी हर क्षण हर व्यक्ति के हर वस्तु के परिणमन को जान रहा है, देख रहा है और अपने आप में लीन है। उसको कहते हैं- नूर।

हर घड़ी परिणमन जानता देखता, हाँ! वही है नूर।

रोशनी का वही, दरिया ज्ञान का, हाँ! वही है जरूर।

वह किसका दरिया है? ज्ञान का दरिया है, रोशनी का दरिया है, वह कहाँ मिलेगा? वह वहीं सिद्ध भगवन्तों की आत्मा में, वह लोक के अग्रभाग पर बैठे हुए सिद्धों में मिलेगा।

ये जमीं ये गगन, सब अपने में है मगन।

क्या बना सका ईश्वर, ये कुदरत ये चमन।

वो ही तो है सुख दुख से परे, जो है सभी से दूर।

रोशनी का वही दरिया ज्ञान का, हाँ! वहीं है जरूर।

रोशनी का वही दरिया ज्ञान का, हाँ! वहीं है जरूर।

द्रव्य में परिणमन का कारण उसका निमित्त

यह गगन, यह चमन यह सब अपने में मगन हैं, सब अपने आप परिणमन कर रहे हैं। कोई भगवान इनमें परिणमन नहीं कराता। यह सब जैसे-जैसे इनके सामने निमित्त मिलते चले जाते हैं, वैसा-वैसा परिणमन करते चले जाते हैं और जो परिणमन स्वभाव वाला द्रव्य है, वह हमेशा परिणमन करता ही है। चाहे वह जीव द्रव्य हो, चाहे अजीव द्रव्य हो। हम ईश्वर के ऊपर अपना कर्तृत्व लाद देते हैं कि ईश्वर इस परिणमन को कराने वाला है उस बात को यहाँ पर हम इन lines से समझ सकते हैं कि आखिर हमें ईश्वर क्या कभी मजबूर भी करता है? कई लोग कहते हैं...ईश्वर की कृपा से हम यहाँ तक आये। ईश्वर की कृपा से हमें यह मनुष्य जन्म मिला। ईश्वर की कृपा से महाराज आपके प्रवचन सुन पाये, आपके दर्शन मिल पाये। **ईश्वर क्या हमें मजबूर करता है? यह ईश्वर की कृपा नहीं है। यह कृपा आपके अपने अच्छे कर्मों की कृपा है, जिसके माध्यम से आप उस ईश्वर को समझ भी पाते हैं और उस ईश्वर को सही ढंग से अगर समझ पाएँगे तो समझ लेना कि आपके अच्छे कर्म का फल है, जो आप अच्छे ढंग से ईश्वर को समझ पा रहे हैं।**

कर्ता कौन? ईश्वर या कर्म

यह आपके अच्छे कर्मों का प्रताप होता है, जो आप यहाँ आ पाते हैं, सुन पाते हैं, ईश्वर की बात कर पाते हैं। जब हम देखते हैं कि क्या ईश्वर हमारे लिए कुछ कराता रहता है? कहीं कोई घटना हो गई, अच्छी घटना हो गई तो ईश्वर की कृपा से हो गई। दुर्घटना हो गई तो वह भी ईश्वर की कृपा से हो गई। नहीं हुई? दुर्घटना में ईश्वर का हाथ नहीं है, केवल अच्छी घटना में ईश्वर का हाथ है? और ईश्वर ही हर काम कर रहा जगत का? यह कैसी आप partiality की बातें करते हो? यह कौन सा आपका ईश्वर के प्रति सही श्रद्धान कहलाएगा? आप जा रहे थे किसी की अन्त्येष्टि के लिए, आप जा रहे थे किसी के गम में मातम बनाने के लिए और पता पड़ा कि आपका ही गाड़ी से accident हो गया, आप ही निपट गए। यह ईश्वर का काम नहीं है? वह चला गया, वह ईश्वर का प्यारा हो गया, वह ईश्वर का काम हो गया और आप चले गए तो आप ईश्वर का काम नहीं है? आपके लिए दुर्घटना हो गई तो वह भी ईश्वर ने की, ऐसा नहीं है। यह कौन सा आप श्रद्धान रखते हो ईश्वर के प्रति? ईश्वर हमें क्या करता है? क्या करने के लिए मजबूर करता है? यह समझने की कोशिश करो। कोई दुनिया में कार्य ईश्वर से नहीं होता। सारा कार्य जैसे निमित्त मिलते हैं, जैसे संयोग मिलते हैं, वैसा होने लग जाता है। हर कार्य संयोग से होता है। बस! संयोग अच्छा बनना चाहिए। कैसे बनता है? देखो।

एक बूंद पानी की अमृत बने विष भी,
जैसी मिली संगत, ढल जाती वैसी ही।
वो ईश्वर है जो करता नहीं, हमको यहाँ मजबूर।
रोशनी का वही दरिया ज्ञान का, हाँ! वहीं है जरूर।
हर घड़ी परिणमन जानता देखता, हाँ! वहीं है नूर।

जैसी संगति वैसा फल

पानी की बूंद सर्प के मुँह में डाल दोगे तो विष बन जाएगी। मिट्टी में डाल दोगे तो कीचड़ बन जाएगी, सीप के मुँह में डाल दोगे मोती बन जाएगी। **ईश्वर हमें मजबूर नहीं कर रहा है, तुम जैसी संगति करोगे वैसा तुम्हारे लिए फल मिलने लग जाएगा।** लेकिन लोग कहते हैं कि हम ईश्वर के कारण से ऐसा कर रहे हैं। ईश्वर ने मोती बना दिये, ईश्वर ने विष बना दिया, ईश्वर ने हमें अमृत दे दिया। यह सब संगतियाँ जैसी बैठ जाती हैं, वैसा कार्य हो जाता है। इसलिए वह ईश्वर है, जो हमें मजबूर नहीं करता। ईश्वर के प्रति अपनी अगर सही धारणा बनाना है तो इस भजन को रटने की कोशिश करना, इसकी बार-बार पढ़ने की कोशिश करना।

भटका अनादि से, सबका यहाँ आतम

सबकी आत्माएँ यहाँ अनादि से भटक रही हैं। क्यों भटक रही हैं? ईश्वर को सही ढंग से नहीं समझने के कारण ही भटक रही हैं।

भटका अनादि से सबका यहाँ आतम,
जो देखता उसको मिट जाए मिथ्या भ्रम।
वो ईश्वर है, जिसको देखो, रस्ता मिलेगा जरूर।
रोशनी का वही दरिया ज्ञान का, हाँ! वहीं है जरूर।
हर घड़ी परिणमन जानता देखता, हाँ! वही है नूर।

ज्ञान, दर्शन, सुख से परिपूर्ण सिद्ध भगवान पथप्रदर्शक

उस ईश्वर में और क्या भरा हुआ है? जो सिद्ध बन गए हैं, शुद्ध बन गए हैं, जो ज्ञान, दर्शन, सुख से भरे हुए हैं, ऐसे ईश्वर को देखोगे तो सही रास्ता अपने आप आपको मिलने लग जाएगा।

सुख ज्ञान दर्शन की शक्ति अनन्त रखे
निज आत्म सुख में लीन, जग राग रोष हरे।
वो ही तो है, मेरा भगवन, भक्ति करो भरपूर।
रोशनी का वही, दरिया ज्ञान का, हाँ! वहीं है जरूर।
हर घड़ी परिणमन, जानता देखता, हाँ! वही है नूर।

आत्मा का भ्रम मिटाना है, तो ऐसे नूर को देखना सीख लो। जो दूर बैठा है, हमारे लिए जबरदस्ती कुछ नहीं कर रहा है, न हमसे कुछ करवाता है, वह केवल हम जो कर रहे हैं, उसको देखता है, जानता है, वह हमारा भगवान है। **भगवान को कर्ता बनाने की कोशिश में आपके अन्दर मिथ्या भ्रम पलता रहेगा तो आपके अन्दर का संसार कभी भी मिटेगा नहीं।** इसलिए भगवान को इस रूप में देखो कि सिद्ध भगवान ऐसे नूर के साथ में रोशनी के, ज्ञान के दरिया बनकर वहाँ बैठे हैं और वह उनके अन्दर का परिणमन अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख, अनन्त शक्ति, अनन्त शान्ति को लिए हुए है। उस परिणमन को जब हम देखेंगे तो हमें सही रास्ता मिलेगा और हम जो रास्तों से भटके हुए हैं वह हमें कभी न कभी सही रास्ता दिखाएँगे बस उनको याद करो।

अर्ह अर्थात् अनन्त सिद्धों को स्मरण करना

कल जैसे बताया था याद करो। कैसे याद करो? अर्ह अर्ह नाम लेकर उनको याद करो। यह अर्ह का मतलब उन अनन्त सिद्धों को स्मरण करना है, जिन्होंने उस रास्ते से गुजर कर मंजिल को प्राप्त कर लिया। इसलिए बस अर्ह के नाम से अपने अंतर को आनन्दित करके, प्रकाशित करके जब आप चलेंगे तो आपको सही रास्ता मिल जाएगा। दुनिया में आज हर कोई रास्ता भटका हुआ है। जो सही रास्ते थे वह तो लुप्त हो गए।

खाद्यान्न के प्रकार और उनकी विशेषता

यहाँ कृषि व्यापारी बैठे हैं अगर हम कृषि की बात करें तो जो सही कृषि थी वह भी लुप्त हो गई है। यह कृषि

उपज व्यापारी भी नहीं जानते होंगे कि सही कृषि कौन सी होती थी? जो सबके लिए उपलब्ध होती थी, सबके लिए काम में आती थी और जिसको करने के बाद में उस कृषि में न किसी भी तरीके के कोई रोग होते थे, न कृषि से उत्पन्न फसल को खाने वालों में रोग होते थे, एक ऐसी भी कृषि हुआ करती थी। खाद्यान्न विभाग ने वनस्पति विज्ञान को तीन भागों में विभाजित किया है। तीन तरीके के फसलें और food या अनाज आपके सामने रखे गए हैं। एक होते हैं- **neutral food**, एक होते हैं- **positive food** और एक होते हैं- **negative food**. यह science के अनुसार मैं आपको जो कृषि और उपज और फसलों की पैदावार है, उसका जो विभाजन किया गया है, उसके बारे में आपको थोड़ी सी जानकारी दे रहा हूँ। दक्षिण भारत में, राजस्थान में जो कृषियाँ पहले हुआ करती थी, सूखे इलाकों में भी जो कृषि हो जाती थी और आदमी के लिए कभी भी रोग नहीं पड़ता था, पानी नहीं आ रहा है, पानी नहीं आ रहा है, ऐसी भी फसलें हुआ करती थी और उन फसलों से भी लोगों के जीवन चला करते थे।

मोटा व छोटा अन्न कदन्न नाम से प्रसिद्ध

लेकिन समय बदला उस खाद्यान्न को, उस अन्न को एक कदन्न के रूप में कहा जाने लगा। संस्कृत में एक शब्द डाल दिया गया- **कदन्न**। कदन्न मतलब एक ऐसा दूषित अन्न, जिसको अच्छे लोग नहीं खाते, जो खाने के लिए वर्जित है। जिसे हम कहें **आज की भाषा में मोटा धान, मोटा अनाज और छोटा अनाज**। ये दोनों तरह के अनाज कदन्न बना दिए गए और विकसित कर दिए गई, कुछ ऐसी दूसरी फसलें जो बहुतायत से सब जगह पर होने लगीं। जिनको करने में बहुत ज्यादा पानी लगता है, बहुत ज्यादा ऊर्जा लगती है। बहुत ज्यादा उर्वरक पदार्थों का भी उसमें प्रयोग करना पड़ता है, खाद आदि का भी प्रयोग करना पड़ता है तब जाकर वह फसलें होती हैं। जो पहले की फसलें हुआ करती थी जिनमें ऐसा कुछ भी नहीं लगता था उनको अलग-अलग नामों से इस तरह से मिटा दिया गया कि लोगों के दिमाग में चढ़ गया कि यह अन्न कैसा है? कदन्न है और उस अन्न को मोटा अन्न है, बेकार अन्न होता है, ऐसा कहकर उस अन्न को खाने से लोगों को मना कर दिया गया। शब्द कोषों में उसकी परिभाषा बदल दी गयी और उसी के कारण से आज हर जगह पर गेहूँ और चावल का तो बहुतायत हो गया लेकिन ज्वार, बाजरा, रागी, कंगनी इन खेतियों के बारे में तो लोग भूल ही गये। यह सब कदन्न कर दिया लोगों ने। इतिहास में इस तरह की खिलवाड़ें हुई हैं कि हमें विकसित बनाने के लिये इस तरीके के formulae दिए गए कि हम परतंत्र होते चले जाएँ अपने स्वास्थ्य को भी मिटाते चले जाएँ और प्रकृति को भी मिटाते चले जाएँ।

Positive food स्वास्थ्य के लिए positive

जब हम positive food की बात करते हैं, तो positive food में वह अन्न आते हैं जो छोटे-छोटे दाने वाले अन्न होते हैं। अब कई लोगों ने तो नाम ही नहीं सुने होंगे। यह कंगनी, एक छोटी कंगनी अलग होती है, सामान्य कंगनी अलग होती है। एक रागी होती है, कोदों होता है, सावा होता है। ये सब छोटे अनाज positive food कहलाते हैं, positive अनाज कहलाते हैं। अब थोड़ी सी जागृति आ रही है। लोग थोड़ा सा जाग रहे हैं और यह positive क्यों कहलाते हैं? यह इसलिए positive food कहलाते हैं कि अगर आपके शरीर में किसी भी तरीके की कोई बीमारी है, **आप इस तरीके के अन्नों का सेवन करेंगे तो आप**

उस बीमारी से मुक्त हो जाएँगे, यह अन्न की guarantee है। इसलिए ये positive food हैं। किसी भी तरीके की बीमारी हो, cancer तक की बीमारियाँ, blood sugar, cancer तक की बीमारियों के लिए यह positive food काम आ रहा है। blood sugar के लिए भी blood में जो sugar mix हो जाती है, उसके लिए भी यह काम आता है यह food और किसी भी तरीके की हृदय से संबंधित होने वाली बीमारियाँ, यहाँ तक कि दिमाग से संबंधित होने वाली बीमारियों का इलाज भी इस प्रकार के भोजन में है, guarantee दी जा रही है इस बात की। जिन लोगों को नींद नहीं आती है। हमारे brain के अन्दर एक melatonin नाम का dopamine नाम के ऐसे hormones होते हैं, जिनको release करने के लिए हमें तरह-तरह के injection लगवाने पड़ते हैं, तरह-तरह के उपाय करने पड़ते थे। लेकिन इस तरह के भोजन से वे enzymes, वह hormones अपने आप निकलते हैं और वह अपने आप आपको अच्छी नींद भी देते हैं और tension से free भी रखते हैं। इसको कहा गया...positive food।

Positive व negative food का स्वास्थ्य पर असर

कृषि उपज वाले भी नहीं जानते होंगे शायद! एक होता है- neutral food. neutral food में वह खाद्यान्न रखा गया जो शरीर में बीमारी होने नहीं देता। यह classification अच्छे ढंग से समझ लेना। **Positive food** उसको कहा गया जो शरीर के अन्दर होने वाली बीमारी को जड़ से खत्म कर दे और neutral food उसको कहा गया कि जो शरीर में बीमारी ही न होने दे। अगर आप ज्वार, बाजरा, मक्का, रागी इन foods को खाते रहेंगे इस प्रकार के खाद्यान्न को खाते रहेंगे तो आपके शरीर में कभी भी बीमारी नहीं होगी इसलिए इसको **neutral food** रखा गया। **negative food** किसको कहा गया ? ये गेहूँ और चावल को negative खाद्यान्न के रूप में आज वैज्ञानिकों ने रखा है। जिसको लंबे समय तक खाने से शरीर में बीमारियाँ होती हैं। एक gluten जो बनता है, जो पेट के ऊपर चर्बी उत्पन्न होती है, यह इसी गेहूँ और चावल की देन होती है। मोटापे की बीमारी, पेट का बढ़ जाना, शरीर का भारीपन होना और इसके कारण से शरीर में अनेक तरह के रोग जन्म लेने लग जाते हैं, यह सब इसी की देन है। यह जमा होता रहता है- gluten और फिर आपके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है, तरह-तरह के उपाय करने पड़ते हैं तब भी आप अपनी उस fat को कम नहीं कर सकते, अपने वजन को कम नहीं कर सकते। लेकिन यह जो positive और neutral food हैं, यह सब आपके अन्दर धीरे-धीरे से उस तरह की सफाई कर देते हैं आंतों की, पेट की, कब्जियत की। आपके शरीर को बिल्कुल हल्का भी बना दे और आपको रोग मुक्त भी बना दे। लेकिन इनको खाने का, बनाने का, पकाने का तरीका भी लोगों को पता नहीं होता है। अगर आप अपने सामान्य से बनने वाले रोटी, चावल, भात की तरह इनको बनाएँगे तो आपको नुकसान होगा और इस तरह के भोजन अगर आप बनाएँगे तो वह कच्चे रह जाएँगे। जिन्हें positive foods कहा गया, छोटे दाने वाले जो food होते हैं, ये छोटी कंगनी, सावा, रागी इनको पहले छह से आठ घंटे तक पानी में उबाला जाता है। इनमें अच्छा खासा fiber होता है और उस fiber को कमजोर किया जाता है, उसको मुलायम किया जाता है। तब यह आपके शरीर के लिए diet में काम आने वाले होते हैं। इसलिए इसको पहले पानी में रखा जाता है, किसी को उबाला जाता है, किसी को पानी में भिगोया जाता है उसके बाद में फिर उसको बफा जाता है तब जाकर इनसे कुछ बनता है, तब जाकर वह कुछ काम में आते हैं। आप अगर इनको सीधा-सीधा बनाओगे तो यह कच्चा भोजन कहलाएगा। वह आपके लिए नुकसान देह हो जाएगा। ये ऐसे food

हैं, ऐसे खाद्यान्न हैं जिसको समय-समय पर यदि व्यक्ति अपने एक-एक दिन के अनुसार भी खाता है तो उसके लिए अलग-अलग तरह से यह लाभ देने वाले होते हैं और प्रतिदिन अगर वह अपने सप्ताह में इनको विभाजित कर लेता है तो अलग-अलग तरह के foods का लाभ उसे पूरे जीवन भर मिल जाता है। इसको आजकल millets कहा जाता है। मोदी जी ने 2023 को इसी वर्ष के रूप में घोषित किया है। कृषि उपज वालों पता है न? लेकिन खाते कुछ नहीं हो, खाते तो वही हो डोसा, इडली, वही रोटी, वही चावल।

कृषि एक अकाल धान्य

आपके लिए यह ज्ञान में आना चाहिए कि हम जो कृषि कर रहे हैं, यह कृषि को पहले तो एक तरह से अकाल धान्य के रूप में कहा जाता था। **अकाल मतलब अकाल भी पड़ जाए तो भी यह उत्पन्न होती रहती थी। इसके लिए ज्यादा पानी की आवश्यकता नहीं होती है।** अकाल में भी उत्पन्न होती रहती थी और इसको किसी-किसी ने तो इसको अनाथ भोजन भी कहा मतलब हमारे सामने कोई भी उपाय न हो तो यह वनस्पति कहीं पर भी उग जाती है और यह आसानी से उग जाती है। इनके लिए अलग से कोई हमें pesticides का उपयोग भी ज्यादा नहीं करना पड़ता है, पानी इनमें ज्यादा नहीं लगता है और गुण हमें भरपूर मिलते हैं। **ऐसी स्वास्थ्य की चीजें सब लोगों ने न जाने कहाँ भुला दी और सामने पूरी दुनिया के अन्दर गेहूँ और चावल फैला दिया।** इसलिए आज पूरी दुनिया रोग ग्रस्त है और कोई कारण नहीं है। खाना-पीना सारा बिगड़ चुका है इसलिए दुनिया रोग ग्रस्त है।

स्त्री कथा श्रवण ब्रह्मचर्य में बाधक

जो अच्छी चीजें हैं वह हम भुला देते हैं। जैसे भगवान के बारे में बताया वैसे ही आप इस भोजन के बारे में जानना। अगर हम उन्हीं अच्छी चीजों को पुनः स्थापित करेंगे तो ही हमारे जीवन में कुछ अच्छा होगा, भला होगा। **राजा श्रेणिक को यह चिन्ता होनी चाहिए कि अगर नन्दश्री हमारे पास में बैठी है तो हमें चलना की याद क्यों आ रही है?** क्या राजा श्रेणिक को एक चलना की और जरूरत है? शायद इसलिए क्योंकि कल कुछ बात छेड़ दी गई थी। अभय कुमार राजा चेटक के यहाँ पहुँच गए थे और राजा चेटक को भी अभय कुमार के आगमन का समाचार मिलने पर उन्होंने उन्हें एक जगह दे दी थी और उनका, उनके परिवार के लोगों का अभय कुमार के पास आना-जाना होने लगा और आना-जाना होने लगा तो राजा चेटक की जो दो-तीन पुत्रियाँ थी, जो अभी कुंवारी थी, वह भी अभय कुमार के पास आने जाने लगीं और अभय कुमार के पास बातें करते-करते, उससे अपने राजा की प्रशंसा सुनते-सुनते उनके मन में उस राजा के प्रति अनुराग पैदा हो गया। इसलिए कहा जाता है- स्त्री कथा श्रवण, क्या सुनने में आया? ब्रह्मचर्य रखने वालों को स्त्रियों की कथाएँ भी interest से नहीं सुनना चाहिए। यह बात इन पुराणों को पढ़ने से समझ में आती है। स्त्री कथा श्रवण यह क्या चीज है? इसका जीता जागता उदाहरण, अभी तक तत्त्वार्थ सूत्र कई बार पढ़ते आए लेकिन इसका जीता जागता उदाहरण यहाँ देखने को मिलता है।

मगध के सम्राट की सुख समपन्नता पर मोहित राजा चेटक की कन्याएँ

अभय कुमार उन कन्याओं के सामने, अपने और अनेक लोगों के सामने प्रशंसा करते हैं... मगध की, मगध

के सम्राट की और वहाँ के लोगों की, वहाँ की सुख सम्पन्नता की और वहाँ के जिनालयों की, वहाँ के लोगों के रहन-सहन की, सबकी प्रशंसा वहाँ पर करते हैं। **वे बेटियाँ, जो राजा चेटक की तीन कुंवारी कन्याएँ हैं** और वे यह प्रशंसा सुन कर सोचती है... इतना अच्छा राज्य है, इतना अच्छा राजा है, तो हमें भी उनके पास चलना चाहिए, हमारा भी उनसे विवाह हो जाना चाहिए। हमारा विवाह अगर उनसे हो जाएगा तो हमारा जीवन भी सुख-सम्पन्नता के साथ बीतेगा और यह मन हो जाता है उन लोगों का। अभय कुमार जब यह देखते हैं कि इनका मन हो रहा है, तो वह सोचते हैं कि देखो! अब हमारी बात बनने लग गयी। जिस मकसद से हम यहाँ आए थे वह काम सफल होने लग गया और उन्होंने उनको इसी तरह से, अपनी बातों से उनका mind wash किया। यह प्रक्रिया पुरानी है, जो आज तरह-तरह से चलती है। जिसे हम कोई love जेहाद के रूप में देखते हैं या कुछ देखते हैं, यह सब पुरानी प्रक्रिया है। Mind wash किया जाता है, एक बार उन्हें attraction लगना चाहिए सुनने का बस।

अभय कुमार और रानी चेलना प्रसंग



उनके लिए यही हुआ अभय कुमार की प्रशंसा हुई। इतना अच्छा **जिन भक्त है, जिनालय बना रखा है** और वह इतनी अच्छी जिन भक्ति कर रहा है सब वहाँ पर आने लग गयी और वहाँ पर आने के बाद में जब उन कन्याओं ने देखा, उनकी बातें सुनी तो वे उस पर मोहित हो गई कि हमें भी ऐसे ही राजा से चलकर विवाह करना है, तो उन अभय कुमार ने **एक सुरंग बनवा ली**। कैसी सुरंग? जहाँ उनका महल था, उस महल से वह सुरंग अपने स्थान तक आ जाए और वहाँ से हम उन्हें बाहर निकाल कर ले जाएँ, इस तरह की उन्होंने सुरंग बनवा ली और उस सुरंग से उन तीनों कन्याओं को लेकर चलने की उसने पूरी planning कर ली। वे तीन कौन थी? एक जेष्ठा थी, एक चेलना थी और एक चन्दना थी। जब वे सुरंग में प्रवेश करने लग गई, अंधेरा देखा और उसमें उनकी जाने की हिम्मत नहीं हुई तब वे वहीं पर ठिठक गयी। नहीं! हम नहीं जा सकते इतने अंधेरे में। जेष्ठा और चन्दना, तब वहीं पर रुक गयी कि हम नहीं जा सकते और चेलना को जब अभय कुमार ने देखा कि दो तो ठिठक गयी, कहीं इसके चक्कर में तीसरी भी न ठिठक जाए। तब उस चेलना को उसने हाथ पकड़ कर अपने रथ पर बिठाया और शीघ्रता से वह अपने राज्य से बाहर ले गया और उनको धीरे-धीरे ले जाकर मगध के सम्राट राजा श्रेणिक के पास में ले गया। **यह तरीका हुआ चेलना को श्रेणिक के पास तक पहुँचाने का** और वहाँ जाकर श्रेणिक राजा का ठाठ-वैभव तो सब वैसा ही देखा, जैसा सुना था लेकिन उसके मन में यह था कि देखो! मैं पिता से कहे बिना आ गयी। यह सब पुरानी परम्पराएँ हैं और वह कहे बिना आ गयी। अब आ गई तो आ गई, अब क्या करें? और वहाँ पर उसका इतना अच्छा स्वागत हुआ, इतना अच्छा सम्मान मिला, सब कुछ उसके लिए अच्छा हुआ और अच्छा होते-होते उसका राजा श्रेणिक से विवाह भी हो गया और वह राजा श्रेणिक की प्रिय रानी चेलना भी बन गयी। अब वह रानी चेलना जब राजा श्रेणिक की प्रिय रानी बन गयी तो अब उसी के साथ में उसका समय व्यतीत होने लगा और वह अनेक रानियों के बीच में सबसे ज्यादा प्रतिष्ठित रानी के रूप में प्रसिद्ध होने लग गयी। हर कोई उस जोड़ी को देख कर के मोहित होने लग गया और इस तरह से राजा श्रेणिक के सामने रानी चेलना भी आ गयी। अब इसके बाद में क्या कहानी होगी? वह बाद में पता पड़ेगी।

Team Members Involved

Editing Team

Savita Jain, Delhi
Nutan Jain, Lakhnadaun
Reema Jain, Delhi
Jayant Jain, Maharashtra
Vidhi Jain, Delhi
Preeti Jain, Indore
Shruti Jain, Agra
Virender kumar Jain, Shaidol
Shikha Jain, Malaysia
Arti Jain, Gaziabad
Prachi Jain, Kota
Rashmi Singhi, Mandsour
Ruchi Jain, Gauhati
Nikita Pahade, Germany
Aruna Jain, Agra
Ankit Pandya, Indore
Sonal Jain, Gujrat
Swati Jain, Bhopal
Deepti Jain, Delhi

Conceptualization Team

Bhawana Jain, Delhi
Ruchika Jain, Delhi
Ankur Jain, Roorkee
Kamal Naini Jain, Noida
Priyanka Jain, Meerut
Vipin Jain, Maharashtra
Sheetal Jain, Indore
Ca Anjali Jain, Kota

Direction

Prateek Jain, Delhi
Ruchika Jain, Delhi

प्रणम्यवाणी देवदूत

"गुरु प्रणम्य वाणी पहुँचे घर घर,
सम्यक् ज्ञान प्रभावना हर घर..."

'प्रणम्यवाणी देवदूत' गुरु भक्तों का एक ऐसा परिवार है जो अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी एवं अर्ह योगी **मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज** की वाणी को घर-घर तक पहुँचाने के लिए संकल्पित है। इस हेतु वे विभिन्न उपक्रम चला रहे हैं, जैसे :-

- जिनवाणी, पारस जैसे channels पर गुरु प्रवचनों की telecasting करवाना
 - YouTube, Facebook, Instagram जैसे social media platforms पर गुरु वाणी का प्रचार-प्रसार करवाना
 - book publishing के माध्यम से मुनि श्री द्वारा रचित साहित्य को जन-जन तक पहुँचाना
- यदि आप भी मागध जाति के देवों की तरह गुरु वाणी की प्रभावना करना चाहते हैं, तो **QR code को scan करें** अथवा **+91-8920491008** इस number पर call या Whatsapp के माध्यम से हमसे सम्पर्क करें।